इस वर्षके ग्राहकोंको हिन्दी-गुजराती भाषाकी ८-१० पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रकट थतुं मासिक

दिगंबर जैन

The Digambar Jain.

सुतं सुलेखै र्विविधैश्चचित्रै, दिगम्बरंजैन मिदं सुपत्रम्।
प्रभो! महावीर!! तव प्रभावात्, समुत्तमामुन्नतिमातनोतु॥

वर्ष ८ मुं. | वीर संवत २४४१ मार्गशीर्ष-पौष. विक्र. सं. १९७१. | अंक २-३जो.

ज्यारे आर्यसमाज वगेरे अन्य समाजोमा पोतानी कोमनी ... उन्नति माटे जीवन ... अर्पण करनारा ... घणा नरो जोवामां ... समाजमा पोताना धर्मनी ... अर्पण करनारा मात्र ... रुपोज नजरे पडे छे, ... जेमांनीता पुरुष जो कोई होय तो ... बाबू अर्जुनलालजी ... कंई पण (बी. ए.) थवा ... घणीज ... ताना बापदादानो ... मा जैन ... पोतानी व्यवहारिक उन्नतिने तिलांजली आपीने मात्र जैन जातिनी सेवा करवामांज पोताना जीवनने अर्पण करेलु छे. बैरी छोकरा न होय ते कदाच आवा कार्यो करी शके, पण बाबू अर्जुनलालजी तो पत्नी तथा छोकरा होवा छता पण पोतानु जीवन जैन समाजनी सेवामा अर्पण करी रहेला छे, ए जाणी कया जैनने आवा जातिसेवक माटे लागणी न थाय?

* * * *

केटलाक वर्षोथी बाबू अर्जुनलालजी दरेक मेळाओ, सभाओ, प्रतिष्ठाओ वगेरेमा जता अने धार्मिक, तात्विक, अने व्यवहारिक उन्नति माटे उत्तमोत्तम व्याख्यानो एवी तो आकर्षणीय शैलीथी आपता हता के जेनो प्रभाव घणोज पडतो अने अनेक संस्थाओनी दशा सुधरती हती. तेमनो मूळ उद्देश जो कोई होय, तो ते मात्र एज छे के जैन समाजमा व्यवहारिक तेमज धार्मिक केळवणीनो पुष्कळ फेलावो

करवो अने आ उद्देशनी पूर्ति माटे आ जाति-सेवके भारे परिश्रम अने संकटो वेठीने केटलांक वर्षोथी जेपुरमां 'जैनशिक्षाप्रचारकसमीति' स्थापन करेली छे, जेमांनी पाठशाळामां त्रणे फिरकाना विद्यार्थीओने एवी तो उत्तम शैलीथी व्यवहारिक अने धार्मिक केळवणी अपाय छे के जेनुं अनुकरण [illegible] ओ करी रही छे. उपली संस्था नीभाववाने माटे आ वीरनर दरेक सभा–मेळावडामां अनेक स्थळे वारंवार जई भारे प्रयास करी जाति सेवा माटे एक आनाथी मांडीने हजारो रुप्या सुधीनी मददो मेळवता हता अने उपली महत्ववाळी संस्था नीभावता हता तेमज एमणे ब्रीटीश राज्य विरुद्ध कईपण पोताना विचारो आज सुधी जणाव्या नथी, छोपण काळनी गति विचित्र छे के आजे ९ महिना थया आ जातिसेवकने कंई पण अपराध साबित थया वगर नजरकेद ! करवामां आव्या छे, जेथी जैन समाज उपर भारे कलंक अने आपत्ति आवी पड्या छे !

* * * *

आरा महन्तकेस अने दिल्ही कावत्रा-केसमां एमना उपर शंका ! करीने एमने पकडीने दिल्ही लई गएला, त्यांथी पछी थोडा दिवस इन्दोरमां राखेला अने ते पछी ८ महीना थया जेपुरनी जेलमां नजरकेद करेला छे; जो के आरा तथा दिल्हीना मुकदमाओनो नीकाल थई गयो छे, तेमां अर्जुनलालजी उपर कोई पण केस चलाववामां आव्यो नथी, तेम ए बाबतमां अर्जुनलालजी शामेल हता एम साबित थयुं नथी, छतां पण हजु सुधी आ जातिसेवकने जेपुर राज्यमां नजरकेद तरीके राखेला होवाथी जैनोमां केटलाक दिवसोथी हाहाकार वर्ताई गयो छे तेमां वधु जबरजस्त उमेरो ए थयो छे के एमने दर्शन करवानी तथा पोताना रसोईआ द्वारा भोजन करवानी परवानगी मळेली हती, पण जे नरना हृदयमां परोपकारनां अंकुरो फूटेलां होय तेना दिवसो ते आम केवीरीते निर्गमन थाय? तेथी चिंतामां ने चिंतामां एमनुं शरीर पुष्कळ लेवाई गयुं छे अने 'मंदाग्नि' थवाथी पाशेर अन्न पण लेवातुं नहोतुं तेमां पण एमणे एकज वखत भोजन अने पाणी लेवानो नियम करेलो हतो वळी एमनी स्त्री पण बिमार छे तथा छोकरांओ दुःखी थई रहेलां छे.

* * * *

आ विकट संजोगो उपरांत हाल जे भयंकर समाचार सांभळवामां आव्या छे ते सांभळी कया जैननुं हृदय कंप्या विना रहेशे ? आ अतीव दुःखदायक समाचार ए छे के ता. ५मी डिसेंबरे जेपुर राज्ये एवो हुकम काढयो छे केः–

मात्रनुं कर्तव्य छे के आवी दयाजनक दुःखी हालतमां अने कंई पण गुन्हो साबित थया वगर केद करायला नरने छोडाववा माटेना पुष्कळ प्रयत्नो करवाज जोईए. केटलाक दिवसो थयां जैपुर महाराजा, रेसीडेंट, रजपुतानाना एजंट (आबू)ने ए बाबतना तारो जैनो तरफथी करवामां आवे छे तेम अत्रे (सुरत)ना जैनो तरफथी पण त्रण तारो ता. ११ मीए मुकवामां आव्या हता के, "Jain Community suffers great loss owing Arjunlal Shethi being imprisoned without fault for last eight months. We pray for his early relief by which we shall be put under your highest obligation."

तेमज जे दिवसे मांदगी, अन्नपाणीत्याग अने पांच पर्व सुधी कबजामां राखवानी खबर मळी छे तेज दिवसे बीजो तार जैपुर महाराजा अने रेसीडंट अने वाईसरोयने अत्रेथी मुकवामां आव्यो छे के-(1) Maharajasaheb Jaipur (2) Resident, Jaipur (3) Viceroy, Delhi:

"Hearing Arjunlal's serious condition pray you for his immediate release."

उपर मुजबना तारो आखा हिंदमांथी हझारोनी संख्यामां तत्काळ जवानी जरुर छे अने तेनी असर जैपुर राज्य अने सरकार जशे, तो जैन कोमने नीचेथी उंचुं जोवानो वखत रहेवानो नथी, माटे-

जैन बंधुओ! तमे श्वेतांबर, दिगंबर के स्थानकवासी गमे ते हो, ते सर्व जागो अने गामे गाम सभाओ भरी ए बाबत खूब आंदोलन करी जैपुरना महाराजा, रेसीडंट अने नामदार वाईसरोयने ए बाबतना तारो हझारोनी संख्यामां करो त्यारेज तेनी कंई असर थई दयाळु महाराजा अने सरकारने दया आवशे अने तेओ एमने छोडशे.

* * * *

आ अंकमां आपेला समाचारोमांथी वांचकोने जणाशे के गत मासमां श्री सिद्धवरकूट उपर मालवा प्रां. दि. जैन प्रांतिक सभानी बेठक भारे उत्साहथी थई गई छे अने तेमां अनेक महत्वशाळी कार्यो थयां छे. एमां थयेला ठरावो पैकी केटलाक ठरावो एटला महत्वना छे के ते बाबतनुं दिग्दर्शन करवुं अत्रे योग्यज थई पडशे. जांगडा पोरवाड ज्ञातिमां परस्पर संबंध जोडवानो अने तेमां अनेक सुधाराओ दाखल करवानो जे ठराव ते ज्ञातिनी हाजरी अने संमतिपूर्वक थयो छे ते घणोज अनुकरणीय छे अने एज मुजब बधी ज्ञातिओमां सुधाराओ थवानी जरुर छे अने त्यारेज आपणी वस्ती वधी शकशे अने केळवणीमां आपणो नंबर उंचो आवशे.

मालवा प्रां. सभामां भारे सफळता.

सभा तरफथी "जैन-प्रभात" नामे मासिक पत्र काढवानी जे योजना नक्की थई छे ते ताकीदे अमलमां आवशे तो तेथी ए सभा आथी पण वधु महत्वनां कार्यो करी शकशे.

ख्यान दिया। जैन और अजैन श्रोतागण ४०० उपस्थित थे। दुसरे दिन भी मंदिरमें सभा हुई और उपदेशकजीने तात्विक विषयपर विवेचन किया था और उसी दिन बगीचेमें उत्सव भी हुआ था।

ચિત્રાવળી ભ... ગૃહસ્થોના સરનામા લખી મોકલનારને હિંદુ અનાથાશ્રમ નડિયાદ (ગુજરાત)ની ચિત્રાવળી સાંધી મફત મળે છે.

रोगाक्रान्त समयमें २०००) का दान:—मेरठसे कल्याणराय बी. ए. सूचित करते हैं कि यहां स्व. श्री. लाला दोलतरामजी रईसकी धर्मपत्नी श्रीमती चंपाबाईने अत्यन्त रोगाक्रान्त समयमें जैन कन्याशाला सदर मेरठके निमित्त २०००) रूपये श्रीमान लाला हीरालालजी रईस बेंकरको सौंप दिया है। हम श्री जिनेन्द्रदेवसे प्रार्थना करते हैं कि आप अति शीघ्र नीरोग हो जावें। आप बड़ी ही धर्मात्मा है और आपके कारण यहां के स्त्रीसमाजको बहुत कुछ लाभ होता है।

उपदेशका प्रभाव:—रतलाममें चातुर्मासमें त्यागीजी क्षुल्लक मन्नालालजीके उपदेशसे बहुत कुछ सुधारा हुआ है। हलवाईकी मीठाई, कंदमूल तथा डाक्टरकी दवाईका त्याग बहुत स्त्रीपुरुषोंने किया है और ७ पुरुषोंने नुक्तेका जीमनेका त्याग किया है। और नुक्ता नहीं करना ऐसा कुछ बंदोबस्त भी हुआ है। और कुछ स्त्री पुरुषोंने नित्य स्वाध्याय—पूजनका नियम ग्रहन किया है—

ભટ્ટારકજીનું ભ્રમણ:—શ્રી સુરેંદ્રકીર્તિજી ભટ્ટારક સોજીત્રામાં ચાતુર્માસ પૂર્ણ કરવા પછી હાલ માગસર સુદી ૫થી ગુજરાતમાં ભ્રમણ કરે છે, જેમાં ઈસણાવ, દાવોલ, રૂદેલ, ઓચાસણ વગેરે સ્થળે સભાઓ કરી ઉપદેશ આપ્યો હતો.

સોજીત્રામાં કાર્તક સુદ ૧ને દિને મંદિરમાં સભા થઈ હતી તેમાં ભટ્ટારકજીએ મહાવીરનિર્વાણ સંબંધી ઉપદેશ આપ્યો હતો તથા પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓને ઈનામ વેંચાયું હતું. અત્રેની પાઠશાળાના અધ્યાપક સોમાભાઇ વલ્લભભાઈ ઉત્સાહી હોવાથી, કાર્ય ઘણું સારૂં ચાલે છે તેમ ધર્મજાગૃતિ પણ વધતી જાય છે.

आवश्यकता है:—मालवा प्रान्तिक दि. जैन पाठशालाओंके लिये, अध्यापक व अध्यापिकाओंकी और पाठशालाओंके निरीक्षणार्थ इस सभाको एक इन्सपेक्टर तथा उपदेशकजीके साथ रह कर सभाके खर्चसे उपदेशकीका कार्य सीखनेवाले दो महाशयोंकी आवश्यकता है। जो उक्त कार्य करनेके इच्छुक हों, वे निम्न पतेपर पत्रव्यवहार करें—लाला भगवानदास, महामंत्री, दि. जैन प्रां. सभा मालवा कार्यालय—बड़नगर।

कचनेरजीका मेला:—कार्तिक शुक्ल १५ पर कचनेरजीमें तीन दिन तक बड़ा मेला हुआ था जिसमें खंडेलवाल सैतवाल भाई करीब २००० उपस्थित थे और हुकमचंदजी महाराजकी अध्यक्षतामें दो तीन सभाएं होकर व्याख्यान तथा उपदेश हुआ था और बहुतसे प्रस्ताव पास हुए थे।

इधर श्रीमान् सेठ लछीरामजी (औरंगाबाद) के परिश्रमसे बना हुआ श्री पार्श्वनाथका शिखरबंध मंदिर बहुत ही विशाल और मनोज्ञ है। इस मेलाका विस्तृत रिपोर्ट बोधेगांव निवासी बळवंत बापुराव क्षीरसागरने भेजा है परंतु स्थानाभावसे वह हम प्रकट नहीं कर सकते।

પાઠશાળા સ્થપાઈ-પાટનાકુવા (દહેગામ)માં માગસર સુદ ૧૫થી શા. અમથાલાલ ખેમચંદ તરફથી સારી રકમ અપાઇ દિ. જૈન પાઠશાળા ખોલાઇ છે, ને તેમાં પંચ તરફથી પણ મદદ મળી છે.

मुंबाईमां रथोत्सव अने नवीन मंदिरः—मागसर वदी १ थी ५ सुधी मुंबाईमां रथोत्सव अने पूजनविधान थयां हतां तथा भोईवाडाना मंदिरजीमां संकडास पडती होवाथी रुप्या दोढलाखनी जे नवी इमारत लेवायली छे तेमां भारे धामधूमथी वेदी प्रतिष्ठा थई प्रतिमाजी बीराजमान करवामां आव्या छे. आ प्रसंगे सभा पण थई हती, तथा मुंबाईमां स्व० दानवीर शेठ माणेकचंदजीना स्मरणार्थे स्थपायला फंडनी व्यवस्थापक कमीटिए मळी, ए फंडमांथी 'माणिकचंद दि. जैन ग्रंथमाला' नामे संस्कृत ग्रंथमाला प्रकट करवानो ठराव कर्यो छे.

खीचीवाडा दि. जैन प्रां. सभाकी तरफसे ता. १-१२-१४ से कोटानिवासी रासीलालजी और ईसागढ निवासी मौजीलालजी ऐसे दो उपदेशक नियत हुए हैं और भ्रमण कररहे हैं।

केशलोचः—श्री सम्मेदशिखरजीमां श्रीमत् त्यागीजी ऐलक चंद्रसागरजीए मागसर सुद ९ ने दिने संसारनी अनित्यतानुं वर्णन करी शांतिपूर्वक केशलोच कर्यो हतो.

एक होनहार नररत्नका वियोगः—दि. जैन सभा मुलतानके मंत्री लाला शंभूरामजीका गत कार्तक वदी १२ को स्वर्गवास हो गया। आप बड़े उत्साही, शान्तपरीणामी, विद्या-प्रेमी और धर्मात्मा युवक थे।

रथोत्सवपर संपः—झालरापाटनमां आसो मासमां वार्षिक रथयात्रा उत्सव थयो हतो जेमां शांतिविद्यालयना विद्यार्थीओए 'सुसंगति विजय' नामे नाटक दोढ हजार जनसमूह वच्चे भजवी बताव्यो हतो, जेमां कुसंगथी थती दुर्दशा अने सत्संगनी प्राप्तिथी थता अनुपम लाभनुं आबेहुब दिग्दर्शन कराव्युं हतुं जेनो जैन तेम अजैनो पर अच्छो प्रभाव पडयो हतो, वळी आ प्रसंगे पिडावा (टोंक) ना खंडेलवाल अने जैसवाल भाईओमां भारे कुसंप थयेलो हतो तेनुं शांतिपूर्वक समाधान थयुं हतुं.

अतिशयक्षेत्र श्री पवाजीमां कार्तक वदी १ थी ९ सुधी भरायला मेळामां न्यायाचार्य पं. गणेशप्रसादजी वर्णी (सागर) ए पधारी 'संसारकी अनित्यता' और 'हित क्या है' ए विषयो उपर व्याख्यानो आप्यां हतां तथा त्यां आवेली ७ पाठशाळाओना

४२ विद्यार्थीओनी परीक्षा लेवाई हती तथा ईनामो वेंचायां हतां. परीक्षानुं फळ संतोषकारक छे. आ पाठशाळाओ ललितपुर, सागर, सिरगन, ननौरा, सरेवाल, जखौरा अने वछीनानी छे।

पंचकल्याणक उत्सव—भोपाल स्टेटमां पोसारपिपरयाथी ३० माईल उपर बाडी गाममां फागण सुद ११ पर प्राचीन मंदिरमां पंच कल्याणक उत्सव थनार छे.

उदासीनाश्रमनी स्थापनाः—ईंदोरमां बे माईल उपर तकुगंजमां कार्तक सुद ६थी 'उदासीनाश्रम' नी स्थापना थई छे, जेना व्यवस्थापक पं. पन्नालालजी गोधा छे. अत्रे सर्वे प्रकारनी सगवड छे.

बीनाजीमां मेळोः—सागर स्टेशनथी ३६ माईल पर आवेला अतिशय क्षेत्र श्री बीनाजीमां पौष सुद १० थी १४ सुधी धार्मिक मेळो भरानार छे जे प्रसंगे धर्मप्रचारणी दि. जैन मां. सभा बीनानो प्रथम वार्षिक मेळावडो थनार छे.

ऑनररी मेजीस्ट्रेट थयाः—सोलापुर निवासी शेठ वालचंद रामचंद (हरीभाई देवकरण) ऑनररी मेजीस्ट्रेट नीमाया छे.

इन्दौरमां शेठ त्रिलोकचंद कल्याणमल स्कूल चालु थई चुकी छे, जेमां हिन्दीनी शरुआतथी अंग्रेजी पांचमा धोरण सुधीना ११ क्लासो छे तेम १९ अध्यापको छे. कुल २०१ विद्यार्थी दाखल थई चुक्या छे, जेमां ५७ जैन छे. शिक्षण तद्दन मफत अपाय छे तेम धार्मिक शिक्षण सर्वेने शीखवाय छे. हेडमास्तर रायसाहिब बाबू नानकचंदजी जैनी बी. ए. छे. धीमे धीमे आ स्कूलने हाईस्कूलना रुपमां लाववानी कोशीशो चाली रहेली छे.

आगरामां उत्सवः—कार्तक वद ५ थी १२ सुधी आगरामां जैन उत्सव थयो हतो जेमां पं. लक्ष्मीचंदजीए पधारी अनेक व्याख्यानो आप्यां हतां.

पत्रकारनी कदरः—जाणीता श्वे. 'जैन' पत्रकार मर्हूम मी. भगुभाई फत्तेहचंद कार्यभारीनां स्मरणार्थे स्मारक फंड स्थपायुंछे, जेमां रू १८००) उपर भराई चुक्या छे.

ग्राहकोंको सूचनाः—पुराने नये सभी ग्राहकोंके एड्रेस छपरहे हैं इसलिये जिनको अपना पता बदलवाना हो शीघ्रही लीखना चाहिए। जिन्होंने खास अंकके वी. पी. वापिस किये हैं उनके नाम ग्राहकश्रेणिमेंसे निकाल दियेगये हैं। इस वर्षके ग्राहकोंको हिन्दी-गुजराती भाषाकी ८-१० पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी जो तैयार होनेपर क्रमशः अश्विन मास तक सबोंको मिल जायगी। ग्राहकगण, धैर्य रक्खें; उपहारकी सभी पुस्तकें नवीन ही तैयार करानेकी हैं।

मुसल्मान जैनः—मीसीस एनीबीसेंट द्वारा प्रकट थता रोजींदा अंग्रेजी पत्र

'NEW INDIA' (न्यु इंडिया) मां प्रकट थयुं छे के राजकोटमां अलीभाई खोजा जैन धर्मना नियमो पाळे छे अने साधु जेवी जींदगी गाळवा माटे आ भाई राजकोट प्रांतमां प्रख्यात छे. वळी पोताना मृत्यु पछीनी दहनक्रिया जैन रिवाज प्रमाणे करवानी तेमणे मांगणी करी हती जे त्यांना जैनोए स्वीकारी छे.

वडवाणीमां मेळो—सिद्ध क्षेत्र श्री वडवाणी (बावनगजाजी) मां रावेता मुजब वार्षिक मेळो पोष सुद ८ थी १९ सुधी भरानार छे; जेमां सर्वेने पधारवाने कार्यकर्त्ताओ विनंति करे छे. आ तीर्थ उपर मउ (माळवा) स्टेशनथी जवाय छे. सडक पाकी छे.

नवीन भट्टारक संबंधी सेतवाल सभानी मीटींगः—सेतवाल जैन पंचनी पांचमी सभा नागपुरमां श्री सीतारामपंत पेलोरकर (अमरावती)ना प्रमुखपणा नीचे ता० ६–७ डिसेंबरे मळी हती तेमां एवा बे ठरावो थया छे कें–(१) लातुरनी श्री विशालकीर्तिनी गादीए जे अज्ञान छोकरा (माणेकचंद)ने केटलाके गादीए बेसाडयो छे एम संभळाय छे तेने कोइए भट्टारक गणवो नहि तेम मानवो नहि. (२) ए गादी उपर योग्य भट्टारक बेसाडवानो प्रयत्न करवाने जुदा जुदा प्रांतना ११ सभासदोनी कमीटी नीमवामां आवी, जेमां नेमीनाथ अनंतराज पांगळ, श्रीयुत तुलशीराम ज्ञानोचा वगेरे छे.

सिद्धक्षेत्र श्री सिद्धवरकूटमां थयली दि० प्रां. सभा–मालवानी अग्यारमी वेठक.

રૂા. ૨૫૦૦[illegible] અને ભારે સફળતા.

જણાવવા મુજબ શ્રી સિદ્ધવરકૂટ સિદ્ધક્ષેત્ર કે જ્યાં બે ચક્રી, દશ કામકુમાર અને સાડા ત્રણ કરોડ મૂનિમુક્તિપદને પામ્યા હતા ત્યાં કાર્તક માસમાં ગંજાવર મેળો બડવાહનિવાસી શ્રીમતી બેસરબાઈ તરફથી ભરવામાં આવ્યો હતો, જેમાં ૧૫ દિવસ સુધી ઠાઠમાઠથી અઢીદ્વીપ પૂજનવિધાન થયું હતું અને માલવા દિ. જૈન પ્રાંતિક સભાની ૧૧મી વાર્ષિક બેઠક કાર્તક વદ ૪થી ૬ સુધી ભારે ઠઠમાઠથી ભરવામાં આવી હતી, જે પ્રસંગે શ્રી. દાનવીર, શેઠ હુકમચંદજી, રા.બા. દાનવીર શેઠ કલ્યાણમલજી, વિનોદીરામ બાલચંદજીના ત્રણ સુપુત્રો શેઠ હરસુખદાસજી, ચાંદુલાલજી, વગેરે શ્રીમાનો તથા અનેક ત્યાગીઓ, વિદ્વાનો અને પંડિતો જેવા કે જૈનધર્મભૂષણ બ્ર. શીતલપ્રસાદજી, સ્યા. વા. પં. ગોપાળદાસજી બરૈયા, પં. બંશીધરજી શાસ્ત્રી, પં. લાલારામજી, શ્રી. કુંવર દિગ્વિજયસિંહજી, બાબૂ સુરજભાનુ વકીલ, પં. તુલસીરામ કાવ્યતીર્થ, પં. ખૂબચંદજી, પં. ઉદયલાલજી કાસલીવાલ, પં. પન્નાલાલજી ગોધા, પં. જવાહીરલાલજી શાસ્ત્રી, ક્ષુલ્લક મન્નાલાલજી, બ્ર. શાંતિદાસજી, બ્ર. દીપચંદજી, પં. ગીરધર શર્મા, બ્ર. ભગવાનદીનજી, પં. કસ્તુરચંદજી ઉપદેશક, વગેરએ હાજરી આપી હતી એટલે આશરે ૫૦૦૦ જનસમૂહ આ મેળા પ્રસંગે એકઠો થયો હતો અને તેનું સ્વાગત કરવાનું કામ શ્રી. બેસરબાઇ તરફથી રૂા. ૫૦૦૦)ના ખર્ચે એક સ્વાગત કમીટીદ્વારા ભારે શ્રમથી ઉઠાવી લેવામાં

આવ્યું હતું, જેથી કોઇને કશી પણ હરકત પડી નહોતી.

કાર્તક વદ ૬ને દિને સભાના પ્રમુખ ધુળીયાનિવાસી શ્રીમાન શેઠ **ગુલાબચંદજી** **હીરાલાલ** તથા મહીલાપરિષદના પ્રમુખ **શ્રીમતી સુંદરબાઇનું** સ્વાગત ... ઠાઠથી થતું હતું અને વદી ... આ ત્રણ દિવસોએ માળવા પ્રાં. સભાની બેઠકમાં બેઠક શેઠ ગુલાબચંદજીના પ્રમુખપણાનીચે થઇ હતી, જેમાં સ્વાગતકમીટિના પ્રમુખ **બાબૂ માણેકચંદજી બી. એ એલ એલ બી.** (ખંડવા)નું તથા પ્રમુખ શેઠ ગુલાબચંદજીનાં ભાષણો અતીવ મહત્વશાળી હતાં અને તેમાં જૈન જાતિની ઉન્નતિ થવાનાં તથા જૈન ગ્રન્થોનો ઉદ્ધાર કરવાના અનેક માર્ગો લંબાણથી સૂચવવામાં આવ્યા હતા અને ત્રણ બેઠકોમાં કુલ્લે ૨૧ ઠરાવો કરવામાં આવ્યા હતા. જેમાંના મૂખ્ય જાણવા લાયક ઠરાવો નીચે મુજબ છેઃ—

સભામાં થયેલા અગત્યના ઠરાવો.

૧ યુરોપમાં ચાલતા **મહાભારત યુદ્ધની શાંતિ માટે** તથા નામદાર બ્રીટીશ સરકારનો **જય** થવા વિષેની પ્રાર્થના.

૨ દાનવીરજૈનકુલભૂષણ શેઠ માણેકચંદજી, જૈનજાતિભૂષણ મુંશી ચંપતરાયજી, બાબૂ ધન્નુલાલજી અને શેઠ પરમેષ્ઠીદાસજીના **મૃત્યુ માટે શોક** પ્રદર્શિત કરવો.

૩ બળીદાન, માંસહાર વગેરેમાં પ્રતિદિન થતા **જીવવધ માટે** ખેદ પ્રદર્શિત અને એ હિંસા બંધ કરાવવાને જૈન કોમને અપીલ તથા **જીવદયા ખાતાના મંત્રી** તરીકે ખંડવા નિવાસી બાબૂ માણેકચંદજી બી. એ, વકીલની નિમણુંક થવી.

૪ જૈન કોમ વ્યાપારી કોમ હોવાથી **હુન્નર ઉદ્યોગના કારખાનાંઓ** ખોલવાની સૂચના.

૫ નિમાડ પ્રાંતની જાંગડા પોરવાડ જાતિ અને મલકાપુર, આસેર, શાહપુર તથા બંભાડની જાંગડા **પોરવાડ જાતિમાં પરસ્પર સંબંધ** થવા માટેની સૂચના અને તેજ પ્રસંગે તેનો અમલ કરવાની કર્ણુંશાત માટે પોરવાડભાઇઓને ધન્યવાદ; તેમજ એ કાર્ય માટે ખંડવાનિવાસી શેઠ ચંપાલાલજી, બાબૂ માણેકચંદજી અને શેઠ પોમડુસાજી, તેમજ શેઠ ચુન્નીલાલજી આત્તર એ ૪ગ્રહસ્થોની કમીટિની નીમણુંક.

૬ સિદ્ધવરકૂટની આસપાસના પહાડોની શોધખોળ માટેની કોશિશ કરવા માટે બાબૂ સૂરજમલ જૈન (હરદા) ની નીમણુંક.

૭ નિમાડ પ્રાંતની **જાંગડા પોરવાડ જાતિમાં** નીચેના સુધારા દાખલ કરવાની સૂચના. (૧) વરની ઉમર ૧૮ અને કન્યાની ઉમર ૧૨ વર્ષથી ઓછી નહિ રાખવી તથા **વરકન્યાની** ઉમર વચ્ચે પાંચ વર્ષનો તફાવત રાખવો. (૨) **લગ્ન જૈનવિધિથી** કરવા (૩) **લહાણાની રીતિ** બંધ કરવી. (૪) ૨૫ વર્ષથી ઓછી ઉમરના **મૃત્યુ પાછળ** જમણ **નહિ** કરવું. (૫) લગ્ન પ્રસંગે **વેશ્યાનૃત્ય બંધ** કરી તેને બદલે બીજા જ્ઞાન અને ગમ્મતના કાર્યો કરવાં. (૬) લગ્ન પ્રસંગે **પહેરામણીનો** રિવાજ યથાશકિત ઘટાડવો. (૭) લગ્ન પ્રસંગે વરકન્યા તરફથી **એકેક ન્યાતિ** જમણજ કરવું. (૮) છોકરાની સગાઈ ૧૩ અને છોકરીની સગાઈ ૮ વર્ષથી ઓછી ઉમરમાં નજ કરવી. (૯) કન્યાવિક્રયનો રિવાજ બંધ કરવો. (૧૦) સગાઇ પછીનાં વર્ષોમાં અપાતી ચીજોના રિવાજ બંધ કરવા વગેરે.

૮ સભાના પ્રમુખ તરીકે દાનવીર શેઠ હુકમચંદજી, મહામંત્રી લાલા ભગવાનદાસજી અને સભા તરફથી પ્રકટ થનાર **નવીન**

માસિક 'જૈન પ્રભાત' ના ઑ. સંપાદક તરીકે બાબુ સૂરજમલ (હરદા)ની તથા બીજા કાર્યકર્તાઓની નીમણુક.

(૯) વાગડપ્રાંતના પંચોની ઇચ્છા મુજબ સભાની હદમાં **વાગડપ્રાંતને સામેલ** કરવો.

(૧૦) નિમાડ પ્રાંતમાં ગામેગામ **પાઠશાળાઓ** અને લાયબ્રેરીઓ સ્થાપવાની સૂચના.

(૧૧) મહોપદેશક પં. કસ્તુરચંદજીની સાથે ભ્રમણમાં તીક્ષ્ણબુદ્ધિના બે વિદ્યાર્થીઓને રાખી સભાને ખરચે ઉપદેશકનું **કાર્ય શીખવવા માટેનો ઠરાવ.**

(૧૨) જ્ઞાનાદિ શુભ **પ્રસંગોમાં** સભા તરફથી ચાલતાં ઉપદેશ વિભાગ, અનાથાલય, ઔષધાલય, ટ્રેકટપ્રચાર વગેરે ખાતાઓને **શક્તિમુજબ મદદ** આપતા રહેવાની સૂચના.

(૧૩) સંસ્કૃત તથા ધાર્મિક વિદ્યાની **સંસ્થાઓને મદદ** આપવા માટે સભા પ્રસંગે જે ફંડ થાય તેમાંથી અડધી રકમ સભા ખાતે અને અડધી રકમમાં જૈન સિદ્ધાંત વિદ્યાલય મોરેના, સ્યાદ્વાદમહાવિદ્યાલય કાશી, મથુરા મહાવિદ્યાલય, અને ઋષભ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ હસ્તીનાપુરને **સરખે ભાગે** વેચી આપવાનો ઠરાવ.

(૧૪) **જૈન સાહિત્યને** પ્રકટ કરી તેનો પુષ્કળ ફેલાવો કરવાની સૂચનાનો અત્યંત અગત્યનો ઠરાવ.

(૧૫) દર વર્ષે સિદ્ધવરકૂટ પર **મેળો** ભરવાનો ઠરાવ થવો.

(૧૬) ૬૫૦) ઉપદેશક ખાતે, ૫૦૦) વિદ્યાવિભાગ, ૧૫૦૦) ઔષધાલય વિભાગ, ૬૧૦) દફતર અને કલાર્ક ખરચ, ૨૦૦) માસિકપત્ર માટે, ૨૦૦) બે ઉપદેશકો તૈયાર કરવા માટે, ૫૦) જીવદયા ખાતે, ૫૦) પ્રાચીન શોધખોળ માટે તથા પરચુરણ મળી **રૂા. ૨૫૨૫) વાર્ષિક ખર્ચનું** બજેટ મંજુર થયું. ઉપર મુજબના તથા બીજા પરચુરણ ઠરાવો થયા હતા, જેમાં એકજ જ્ઞાતિમાં પરસ્પર સંબંધ કરવા માટેના ઠરાવમાં ટુંકી બુદ્ધિના કેટલાક ભાઇઓએ વિરોધ ઉભો કર્યો હતો પણ તેને શાંતિથી દાબી દેવામાં આવ્યો હતો.

(વિશેષમાં ભારતવર્ષીય દિ. જૈન **મહિલા પરિષદની** બેઠક ત્રણ દીવસ સુધી મૂળીઓનિવાસી શ્રીમતી સુંદરબાઈના પ્રમુખપણા નીચે થઇ હતી, જેમાં ૬૦૦ **સ્ત્રીઓ** હાજર હતી. શ્રીમતી સુંદરબાઇએ **સ્ત્રીકેળવણી** અને **જ્ઞાતિ**સુધારા માટે ઉત્તમ વ્યાખ્યાન આપ્યું હતુ, તેમજ જૈન મહીલારત્ન શ્રીમતી મગન બ્હેન, શ્રીમતી કંચનબાઇ, શ્રીમતી કેસરબાઇ, શ્રી રતનબાઇ સૌ ગુલાબબાઇ, શ્રી દેવી બાઇ વગેરેનાં અનેક વિષયો ઉપરના વ્યાખ્યાનો થઈ. દાનવીર શેઠ માણેકચંદજીના મૃત્યુમાટે તથા જીવકોર બ્હેનના મૃત્યુ માટે શોક, સ્ત્રી જાતિના સુધારા માટે શ્રાવિકાશ્રમો અને કન્યાશાળાઓ દરેક સ્થાને સ્થાપવાની જરૂર, વિધવ ઓને એવી કેળવણી આપવાની વ્યવસ્થા થવી જોઇએ કે જેથી તે અધ્યાપિકા અને સમાજ સેવિકાનું કાર્ય કરી શકે. બાળ લગ્ન, કજોડાં, કન્યાવિક્રય, ફટાણાં ગીતો, કુદેવ પૂજા વગેરેના ત્યાગ કરવાની સૂચના વગેરે **પાંચ** ઠરાવો થયા હતા તથા ભારે પ્રશંસનીય આ પ્રસંગે એ થયું છે કે **શ્રીમતી કેસરબાઇએ** રૂ. ૨૫૦૦૦ની રકમ સ્ત્રીકેળવણીનો ફેલાવો કરવામાં અર્પણ કરી છે. તથા સભામાં આશરે ૩૫૦ ભરાયા હતા.

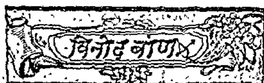
વળી માળવા પ્રાં. સભામાં આશરે રૂા. ૨૦૩૦) ભરાયા હતા તેમાંથી અડધા સભાખાતે રાખી બાકીના ચાર સંસ્થાઓને અપાયા હતા તેમજ **જૈન સિદ્ધાંત વિદ્યાલય** મોરેનાને માસિક આશરે રૂ ૩૭૫)નો અને કાશીના **સ્યાદ્વાદ મહાવિદ્યાલયને** રૂ. ૧૫)ની માસીક મદદ મળી હતી.

આ મેળા પ્રસંગે તા. ૯મીએ પૂજન વિધાન સમાપ્ત થઇ **જલયાત્રાનો** મોટો ઉત્સવ થઇ ૧૦૮ કળશથી શ્રીજીનો મહાભિષેક થયો હતો તેમજ માળવાના **પદ્માવતી પોરવાડ** ભાઇઓની એક સભા પણ થઇ હતી અને તેમાં સામાજિક તથા ધાર્મિક ઉન્નતિ માટે પં. લાલારામજી, બાબૂ મહાવીરસહાય પાંડે, અને પં. બંશીધર શાસ્ત્રીને કાર્યકર્તાઓ નીમવામાં આવ્યા હતા અને પાંચ પાંચરૂપીયા આપી કેટલાક સભાસદો નીમાયા હતા.

स्वीकार–समालोचनाः—स्थानाभावने लीधे आवता अंक माटे मुलत्वी.

हाईकोर्ट जडज नीमायाः—लाला जुग[illegible]मंदरलाल जैनी एम. ए. बेरीस्टर एट–लो इंदोरमां हाईकोर्टना जडज [illegible]मायां छे. दि. जैनोमां जडजनी पद्वी मळवनार मी. जैनी घणुं करीने प्रथमज छे.

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभानी बेठकः—दक्षिण महाराष्ट्र जैन कोन्फरंसनी वार्षिक बेठक ता० २७–२८ डिसेंबरे (पोष सुद १०–११) बेलगाममां मळनार छे, जे माटेनी स्वागत कमीटीना प्रमुख रा. सा. संगाप्पा मल्लाप्पा अंकले ऑ. मेजीस्ट्रेट अने भरमाप्पा पदमाप्पा पाटील मंत्री नीमाया छे. कोन्फरंसमां प्रमुखनुं स्थान श्रीमंत आप्पा साहेब देशाई इनगंडीकरने आपवामां आवनार छे. समय टुंक होवाथी स्वागत कमीटीए ताकीदे काम उपाडी लीधुं छे अने एमां भाग लेवाने सर्वेने जाहेर आमंत्रण अपायुं छे. ए संबंधी पत्र-व्यवहार करनारे बी[illegible] पाटील, मंत्री जैन परीषद–होसुर ([illegible]म)ने लखवुं



खरेखर गजब !

अधिपतिराज पण बडा अजायब मगजनाज छे हों ! वीरनिर्वाण सचित्र खास अंक ते बस कंइ नमुनेदार ग्रंथज छेने ! टाइटल जोइनेज बस मननी उत्कंठा उभराइने उछळकुद थइ जाय के अंदर ते कोण जाणे शुं अवनवा लेखो अने चित्रो हशे ! जेवो बहारनो देखाव तेवोज अंदरपण साहित्यनो गंजावर ढगलो! कोण जाणे एटला लेखो क्यांथी पेदा कर्या ? अने कोण जाणे एटला आकर्षणीय चित्रो पण क्यांथी ढुंढी लाव्या ? चित्रो आम तो ४९ कहेवाय, पण मोटा मोटा ग्रुपोमां एकेकमां २५-३०-४०-५० एम गणीने तो ४००-५०० चहेराना दर्शननो लाभ ! अने वळी बोर्डींगो, पाठशाळाओ, सभाओ, तीर्थो, स्वार्थत्यागी वीरो, पंडितो, दातारो वीगेरेना गुणोनुं अवलोकन करी, तेथी जे हृदय उपर अजब जेवी छाप पडे, ते तो जुदी. खरेखर आ महान् साहस खेडी संपादकजी गजब करे छे अने मिथ्यात्वमां डुबती कोमने तारवी लाववा एकले हाथे समुद्र डहोळे छे, एमां तो जराए फेर नहि ! !

ॐ ॐ ॐ ॐ

ए ते लेखो के ज्ञाननो भंडार !

ए गंजावर पोथामां लेखो पण एक बे भाषाना नहि, पण हिंदी, गुजराती, संस्कृत, मराठी, अंग्रेजी, प्राकृत वीगेरे सात भाषाना ! लेखकोए पण एवा लेखो रजु कर्या छे के जाणे थाळीमांज समुद्रनो समावेश !, उपदेश ले अने हृदयने कोमळ करी ग्रहण करे तो चीचा पथ्थर जेवो सखत हृदयनो मिथ्यात्वमां मस्त थयेलो पण सुधरी जाय, पण समजे त्यारे केनी ? आ काने सांभळी बीजे काने काढी नांखता ... छे ? "दिगंबर जैन" तो पोतान... पुरा जोरथी अने डोरथी वजाव्युंज जाय छे, जाणे पोतानो पहेलो नंबरज जैनोना समाचारपत्रोमां लइ बेठुं होय तेम.! अने जाणे आखा हिंदना जैनोमां उपदेश ! अने विद्वतानो भंडार पुरो करवानो इजारो लइ बेठुं होय तेम ! खरेखर आवुं काम आज सुधी कोइए करी बताव्युं मारी तो जाणमां नथी, पछी तमो जाणता हो तो कहेजो !

ॐ ॐ ॐ ॐ

बंदानो पाको निश्चय.

बंदो तो ए पोथो जोइ दिग्मूढज थई गयो! शुं वांचुं ने शुं रहेवा दउं ? क्यारे बधुं वांची नांखु ? एम मनमां तलपापड थाय. पहेलां तो बधां चित्रोज जोइ गयो, पण तेमां वळ्युं शुं ? ए बधां कागळनां पुतळांने ओळखुं त्यारे केनी ? पण डाह्याडमरा अधिपतिजीए चित्रपरिचय आप्यो छे, ते वांच्यो त्यारे ते बधाना गुणोनुं कंईक भान, मने पण समजायुं के आवा आवा विरला पण दुनियाना पडमां पड्या छे खरा ! पछी वांचवा मांड्या लेखो, एक मूकुं ने बीजो वांचुं ने एम थाय के हमणांज बधा वांची नांखुं, पण एम तो कंईए वळ्युं नहि ! आखरे स्वाध्याय तरीके रोज थोडुं थोडुं वांची तेनुं रहस्य समजी पुरूं कर्युं, त्यारे निरांत वळी. भला वांचको ! तमो पण मारी पेठे बधो पुरेपुरोज वांचजो, उपलकीयुं करी अभडाईपर धूळ खातो नहि

नांखता ! नहितो संपादकजीनी जेहेमत ने मेहनत नकामी वगर पाणीए डूबी जशे ! अने " भेंस पासे भागवत " जेवी कहेवत साची ठरशे माटे तेवुं कंई नहिं करता हों ! !

ॐ ॐ ॐ

कहेवा करतां करी बतावे [illegible] !

खास अंकमांथी सम[illegible] फकरो वांची बंदो तो दीलगीरी अने खुशी एम बे वेदेळामां तणायो ! अजायबी एटला माटे के एकज वर्षमां संपादकजीना शिरपर पोताना कुटुंबना सामटां चार माणसना वियोगनी असह्य आफत ! अने खुशी एटला माटे के गमे तेवा संकटो छतां पोतानुं कोमसेवानुं आरंभेलु कार्य निडरताथी कर्याज जाय छे. अने पोते रस्तो बतावी, कह्या करतां करी बतावी आगळ डगलुं भरे छे. माताना स्मरणार्थे पण रू. १५०) शास्त्रदान माटे कहाड्याज छे. प्रथम पोतानी पत्नी माणेकबाईना स्मरणार्थे पण " सुदर्शनशेठ " नामनो ग्रंथ वहेंच्यो हतो. वळी व्हेन नानीव्हेनना स्मरणार्थे गया वर्षमां " जंबूस्वामीचरित्र " ग्रंथ वहेंच्यो हतो अने वळी मातुश्रीना स्मरणार्थे पण कोइ उपयोगी ग्रंथ भेट वहेंची पोतानी शास्त्रदाननी जिज्ञासा पूर्ण करशे ! आपणी सबडती कोममां शास्त्रदाननो रस्तो खुल्लो करनार आपणा ए उत्साही संपादकजीज छे. एओनी विचारशक्तिने पण धन्य छे ! एवा एवा रस्ता पण क्यांथी शोधी कहाडे छे ? के पोते ते रस्ते जाय अने बीजाओ पण ते रस्ते जवाने ललचाय, अने साथे साथे कोमनु पण कल्याण थाय. दान ते एनुंज नाम के जेथी आत्मकल्याण थाय अने भवभ्रमणाणांथी छूटवानो रस्तो सुझे.

ॐ ॐ ॐ ॐ

एमां पण खेंचाताण !

जेम आपणे गुजरातमां भट्टारकजी महाराज(!)ने मलखेडनी गादीए बेसाडवानी खेंचाताण चालती हती, तेम हाल दाक्षिणमां लातुरनी विशाळकीर्तिजी भट्टारकनी गादीपर एक खासा चार वरसना ठरेल बुद्धिना ! पोरीयाने गादीपर बेसाडी देवानी खेंचाताण चाली रही छे ! ए बेसीने शुं घोळशे ते तो बेसाडनार जाणे ! पण आवी जोखमभरेली बाबतमां खेंचाताण शानी ? शुं एवुं ममताममतीथी कार्य करी पंचना बनेला शेठीआओ कोमनुं कल्याण करवानी इच्छा राखता हशे ? के एमां पोतानुं कंई मान समजतां हशे ? प्रभु जाणे तेओना मननी वात तो, पण विचारपूर्वक अने समयने अनुसरी सलाहसंपथी जे कार्य थाय तेमांज एकंदरे लाभ छे, बाकी ममतनुं फळ आखरे पश्चातापमांज घणी वखते आवे छे, तेम नहिं थाय तो सारुं.

ॐ ॐ ॐ ॐ

विद्यादानमां विघ्न !

विद्याप्रेमीणी श्रीमती भागाबाईए पोतानी हयातिमांज वडवाहमां बोर्डिंग माटे दश हजार रुपीआनुं ट्रस्ट करी पोतानी जींदगीनुं सार्थक कर्युं हतुं, त्यारे हालमां तेमना कोई धर्मप्रेमी (!) विद्याविरोधी जेठजी जे घणा वर्षथी तद्दन जुदोज व्हेवार चलावता हता, तेओश्री बहार पड्या छे अने ट्रस्टीओ उपर खासो चौद हजारनो दावो मांडयो छे. ए पण ठीक ! स्वार्थ माटे परमार्थने पण पाडुं मारनारनो दुन्यामां क्यां टोटो छे ? दान करवुं तो दूर रह्यु, पण दान करेलुं पण होइयां करवानी तजवीज ए ते केवी परमार्थता ! परमात्मा सद्बुद्धि प्रेरे अने एवा कुविचारो दूर थाय !

ॐ ॐ ॐ ॐ

ऊंघशे के जागशे !

वाह ! पण आपणी मुंबाई प्रांतिक सभा-बाईने होणसाल कोई नोतरुं-तेडुं केम नथी करता ? शुं ए बहुबोला बाईनो खरच भारी पडी जाय छे के ? शुं ए बाईना उपदेशथी मन-गमतां मिथ्यात्व कार्यो करवामां खलेल पडी जाय छे के ? शुं पंडीतोना ने विद्वानोना उप-देश सांभळवानी कोईने रुचि नथी ? ए छे शुं ते कांई समज पडती नथी, पण हुं तो जाणुं छुं के ए बाईना पवित्र कदम जे जे तीर्थोपर अने जे जे स्थळे थयां छे त्यांनी स्थिति, रीतभात अने व्यवस्था सुधर्या विना रही नथी, माटे धर्मप्रेमी अने सुधाराना जिज्ञासु बंधुओए अवश्य ए बाईने नोतरी परो-णागत करी एओना पवित्र हृदयनो परिचय लेवो जोईए, तो जरुर कंईने कंई फायदो थशेज. बाकी वर्ष खाली जशे तो उलटी ए बाई आळसु बनी जशे अने विद्वानोना भेजाने काट चडशे ते जुदो!! माटे जलदी नोतरुं दो !!

विनोदी.

रंगीन चित्र।

स्वर्गीय श्रीमान् दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंदजीके रंगीन चित्रकी कुछ प्रतियां अलग तैयार कराई गई हैं। ऐसे दर्शनीय चित्रसे अपने कमरेकी शोभा बढ़ाना हो तो शीघ्रही मंगाईए। मूल्य सिर्फ दो आने ०)=

जैनतिथिदर्पण सचित्र (वीर सं. २४४१) मूल्य ०)-

बुकमार्क सचित्र खास अंक १२ प्रति ०)-

मिलनेका पता—

मैनेजर, दि. जैन पुस्तकालय—सूरत।
Surat.





तळावना स्थिर जळमां जेम चंद्रनुं प्रतिबिंब साफ मालुम पडे छे, तेवीज रीते साधु पुरुषना प्रशान्त निर्मळ हृदयसरोवरमां प्रेमचंद्रनी सुधामय मूर्तिनो प्रकाश देखाई आवे छे.

२. प्रकृतिनो रमणीय देखाव जोई जे मनुष्य सर्वान्तःकरणथी प्रकृतिपर मुग्ध नथी थता, जेओ प्रकृतिमां व्याप्त थई प्रकृतिने अनेक रमणीय रुपथी सजनार अचिंतनीय ज्ञानमय परमेश्वर (आत्मा) ना मंगळमय करकमळने नथी जोता, एमनुं हृदय तद्दन कठोर छे, एमनुं मन संसारनी नीची जमीन छोडी उपर तरफ जवा इच्छतुं नथी.

३. संसारपथमां भ्रमण करतां तमे कंटाळी गया हो, तो एकवार प्राणाराम अनन्त शांतिना निकेतन परमपिता (आत्मा) नो आश्रय लो, जेथी तमारी सर्व ज्वाळा शांत थई जशे.

४. युवावस्थामां रिपुकुल (षड्रिपु) ना अत्याचारनी पीडाथी छुटकारो लेवा चाहता हो, तो प्रेममय परमात्मा (आत्मा) ने प्रेमना अगाढ बंधनथी बांधी राखो.

५. वृद्धावस्थाना जीर्ण शरीरमां शक्ति नहीं रहेवा छतां पण मनना प्रशान्त भावने स्थिर राखवा चाहता हो, तो सर्व शक्तिवान मंगळमय पिता (आत्मा) उपर विश्वास राखतां न्हानपणथी शीखो.

६. हृदयक्षेत्ररुपी मरुभूमि सुंदर उद्यान. केवी रीते बनावी शकाय ? प्रथम पश्चाताप द्वारा हृदयक्षेत्रने सारी रीते साफ करो, वैराग्य द्वारा भूमिने बराबर तैयार करो, अविश्वासरुपी पावरणने दूर करो, अने ज्ञानरुपी सूर्यना तापथी, स्वर्गीय प्रेमरुपी वर्षादथी, अविश्रता रुपी पवनना वावाथी, सद... बीज आपोआपज उगी नीकळशे ... प्रीति, दया, कृतज्ञता, विनय, धैर्यरुपी कुसुम स्वयं खीली नीकळशे अने हृदयक्षेत्र सुंदर फूल अने सुखद फलथी सुशोभित उद्यान बनी जशे. अध्यात्मिक कृषिविद्यानुं तत्व ते आज छे.

७. जे अक्षय अपरिमित धन मेळववाथी मन अने आत्मानी बधी आशाओ तृप्त थई जाय छे, जे धनने मेळव्या पछी "आ क्यां राखुं, कोई चोरी जशे तो नहीं ?" इत्यादि दुश्चिंता अने उद्वेगना विचारथी पीडाता नथी अने सर्वथी अधिक जेनी प्राप्तिथी समस्त जगत् तृणवत् गणी त्याग करी शकाय छे तेज धन परम धन छे.

८. जे ज्ञानना उदय थवाथी भ्रम, संशय, कुसंस्कार अने बधी जातना असत्यनो अस्त थई जाय छे अने हृदयमां सत्साहस तेमज अमित बळनो संचार थाय छे, जे ज्ञान मनुष्यने घास प्रमाणे नम्र अने विनयी बनावी दे छे अने तेने प्रकृतिना देवता तरफ लई जाय छे तेज यथार्थ ज्ञान छे.

९. समुद्रना गर्भमांथी रत्न काढी लाववा माटे मनुष्य पोताना प्राणने हथेलीमां राखी पाणीमां डुबकी मारे छे; शुं तमे धर्म-तत्वना लाभ लेवा माटे प्राण सादेना आवा कष्ट स्वीकारी शको छो ?

१०. एवो कदी पण ख्याल न करो के, दुष्चारित्रवान बनवाथी पोतानेज नुकशान थाय छे; परन्तु तमारा दृष्टांतने जोई सेंकडो मनुष्य पोताना जीवनने कलंकित करशे एटला-माटे सावचेत रहो अने पोतानी जोखमदारी समजो ! • आ. अ. शाह.

श्री. सौ. कंचनबाई श्राविकाश्रम खुलगया।

रु. १०००००)के दानकी व्यवस्था।

जिस इन्दौर (इन्द्रपुरी) नगरकी जैन समाजमें कुछ समय पहले स्त्रीशिक्षाका नाम तक न सुनाजाता था, स्त्रीशिक्षाकी तो बात ही क्या ? बालकोंकी शिक्षाका भी कुछ ध्यान न था, हर्षकी बात है कि वह सौभाग्य भी धीरे२ आ पहुँचा कि लोगोंका ध्यान शिक्षाकी तरफ पहुँच गया और बालकबालिकाओंका शिक्षित होना परमावश्यक समझाजाने लगा।

आपको ये समाचार तो पूर्व ही मिल चुके है कि इन्दौरके दानवीर सेठोंने बालकोंके लिये विद्यालय खोल दिये, जो वर्तमानमें योग्य रीतिसे काम कर रहे हैं। हर्ष! और परम हर्षका स्थान है कि इन्दौरमें श्रीमती सौभाग्यवती कंचनबाई (धर्मपत्नी दानवीर सेठ हुकमचंदजी सा.) के रु. एक लाखके दानसे स्त्रीशिक्षाके लिये भी विद्यालय "श्री कंचनबाई दि. जैन श्राविकाश्रम" नामका मिति पौष वदी १ गुरुवारको बड़े उत्सवपूर्वक खुलगया जिसका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

मुहूर्तकी सूचना पत्रद्वारा अनेक स्थानोंको की गई। श्राविकाश्रममें भरती

होनेवाली श्राविकाओंको भी सूचना दी गई तथा बम्बई श्राविकाश्रम व इन्दौरकी महिलाएं निमंत्रित की गई, तदनुसार ४ श्राविकाएं भर्ती होनेवाली आईं और श्रीमती मगनबाईजी मय श्राविकाश्रमकी श्राविकाएं सहित पधारीं और शहरकी महिलाएं भी उत्सवमें सम्मिलित हुई। आश्रमका मकान दर्शनीय हो रहा था और बेन्डबाजा अपनी मधुर और सरस ध्वनिसे आनंदको लहरा रहा था और मानों श्रीमतीजीके इस परमोकारका यशोगान ही कररहा था।

प्रथम सर्व महिलाएं श्रीमतीजीकी हवेलीपर एकत्र हुई। वहांसे सर्व महिलाएं बेन्डबाजे सहित नगरके प्रसिद्ध मार्गोंद्वारा मङ्गलगमन करती हुई मङ्गलकलश श्री ताराबाई सुपुत्री सेठानीजी, जिनके आगे लिये हुए चलती थी, श्राविकाश्रमके मकानको आई। वहां आकर कलशस्थापन, सरस्वती पूजन, वास्तुविधानादि मंगलाचार योग्य रीतिसे हुए। श्रीमान् सेठ कल्याणमलजीकी मातेश्वरीके सभापतित्वमें कार्य प्रारंभ हुआ। प्रथम श्रीमती ललिताबाईने आश्रमकी आवश्यकता दिखाई और श्री. मगनबाईने भी इसीपर कहा। इसके बाद श्रीमती सेठानीजीने भी अपना भाषण कहा, जिसमें आपने प्रगट किया कि ये लघु संस्था स्त्रियोंके उपकारके लिये आप सबकी सहायताकी पूर्ण आशापर ही खोली गई है। इसकी उन्नति देना आप सब समाजका कर्तव्य है इत्यादि विवेचन करते हुए अपनी लघुता प्रगट की, जिसको सुनकर सबको सन्तोष हुआ और आपकी सबने मुक्तकंठसे [illegible] की। पश्चात् ४-५ बाइयोंके नाम रजिस्टरमें लिखे गये और मंगलाचरणपूर्वक पाठप्रारंभक्रिया की गई। अन्तमें श्रीमती सेठानीजीकी तरफसे उपस्थित समूहका फूलोंके हारसे सन्मान किया गया और मिठाई भेंट की गई और श्रीमतीजीने सर्व महिलाओंको धन्यवाद दिया और इस उत्सवमें सम्मिलित होनेका आभार माना। इसप्रकार इस आश्रमका प्रारंभिकोत्सव आनंद सहित हुआ।

। श्राविकाओंको विशेष सुभीता।

इस आश्रममें सर्व प्रकारका योग्य प्रबंध किया गया है। इसमें श्राविकाओंको धर्मविद्या पढ़नेके साथ २ दस्तकारी, कसीदा काढना, सींना, पिरोना, और गोटाका काम तथा अन्य गृहस्थाश्रम संबंधी सर्व कार्य पूर्ण रीतिसे सिखाये जावेंगे जिससे लौकिक और धार्मिक कार्योंमें प्रवीण बनेंगी।

इसमें पढ़ानेवाली सुयोग्यसदाचारिणी स्त्री अध्यापिकायें बुलाई गई हैं धर्माध्यापिकाका कार्य वर्तमानमें श्रीमती ललिताबाईजी कर रही हैं। खान, पानका पूरा २ प्रबंध है। श्राविकाओंको सब जरूरी

सामान आश्रमकी ओरसे दिया जाता है। केवल घरके खाली कपड़े पहिने हुए दाखिल हो सकती है। गृहस्थीके योग्य कपड़े आदिका भी प्रबंध किया गया है। यहां की आबहवा बहुत योग्य है।

श्रीमती सेठानीजीने ..., देखरेखका कार्य अपने उपर लिया हुआ है। आप तन मन, धनसे इसकी उन्नति करनेमें प्रयत्नशील हो रही है। इसलिये ऐसा सुभीता होते हुए नीमाड, बरार, वागड़, मालवा प्रान्तकी स्त्रियोंको विद्यासे खाली नहीं रहना चाहिए। जो पढ़नेकी इच्छुक श्राविका हों उनको शीघ्र अपना प्रार्थनापत्र भेजना चाहिए—

लाला हजारीलाल-मंत्री,
दानवीर सेठ हुकमचन्दजी दि. जैन पारमार्थिक संस्थाएं, नशियां—ईन्दौर।

श्रीमती दि. जैन प्रां. सभा मालवाका
❀ शुद्ध औषधालय। ❀

हरएक औषधि विनामूल्य।

यह औषधालय प्रस्ताव नं. २ ता. ८–९–१४ के अनुसार खोला गया है जिसका उद्देश्य सर्वसाधारणमें अमूल्य शुद्ध औषधियां वितरण कर सदाचारकी रक्षा करना है।

जिस समय इसका कार्य प्रारंभ हुआ था, उस समय बहुतसे ग्रामोंमें हैजेका अधिक प्रकोप होनेके कारण प्रथम ही इस भयंकर रोगकी तत्काल गुण देनेवाली औषधि तैयार कराके सागर, दमोह, ललितपुर, झांसी, जबलपुर वीना, अमरावती, पन्ना, कोटा, टेहरी, गढ़ाकोटा, फीरोजपुर, अंबाला, जोधपुर, नेपाल, सिवनी, नरसिंहपुर, भोपाल आदि ९० ग्रामोंमें बहुतसे महाशयोंको भेजी गई। जिससे सैकड़ों रोगियोंकी प्राणरक्षा हुई। पश्चात् बुखार, स्वासकास, प्रदर, प्रमेह, अतिसार, मूत्रकृच्छ, धुन्ध और फूलका अंजन, द्राद, व विच्छू, सर्पके विष उतारने आदिकी औषधियां तैयार कराके बहुतसे नगरोंको भेजी गईं तथा स्वस्थानीय रोगियोंको भी वितरण की गईं, जिनसे आजतक सैकड़ों रोगियोंको लाभ पहुँचा है।

इस औषधालयसे एक२ स्थानके कई महाशय औषधियां मंगाते हैं। उनको अलग२ औषधियां भेजनेमें बहुत परिश्रम पड़ता है, इससे हम चाहते हैं कि प्रत्येक स्थानके प्रतिष्ठित. और धर्मात्मा सज्जन आवश्यकतानुसार एक जगह औषधियां मंगाकर वितरण किया करें तो बहुत सुभीता रहे। अतः जो इस परोपकारताके कार्य करनेकी इच्छा रखते हों वे निम्न पतेपर पत्रव्यवहार करें।

लाला भगवानदास, महामंत्री
दि. जैन प्रां. सभा मालवा-
कार्यालय—बड़नगर।

काशीमें दशम वार्षिकोत्सव।

गतवर्षकी तरह इस वर्ष भी श्री स्याद्वाद महाविद्यालय-काशीका दशम वार्षिकोत्सव मिति पौष शुक्ल ९-१० ता० २५-२६ दिसम्बरको क्वीन्स कालेजके संस्कृत प्रोफेसर डॉ. टी. के. लड्डू, बी. ए. (कैन्टब) पी. एच. डी. (जर्मनी) के सभापतित्वमें मैदागिनी टाउनहालमें होना निश्चित हुआ है। संस्कृत व इंगलिशके बड़े २ विद्वानोंको निमंत्रण दियागया है। सर्व भाइयोंसे निवेदन है कि उस समय श्री पार्श्वनाथ व सुपार्श्वनाथस्वामीके जन्मकल्याणसे पवित्र काशी नगरीमें पधारकर श्री जिनेन्द्रदेवके दर्शन करें तथा विद्यालयके उत्सवमें सम्मिलित होकर बड़े २ विद्वानोंके धार्मिक व सामाजिक व्याख्यान श्रवण करें और विद्यालयका निरीक्षण करें। इस समय विद्यालयके छात्रोंको पारितोषिक वितरण किया जायगा वा वार्षिक रिपोर्ट सुनाई जायगी तथा आगामी इसकी उन्नतिके लिये विचार किया जायगा। सबसे बड़ा लाभ इस समयपर पधारनेसे यह भी है कि श्री शिखरजीकी यात्रा भी यात्रियोंको कम खर्चमें हो जावेगी क्योंकि इस मौकेपर बड़े दिनकी छुट्टियां हो जाती हैं और बड़े दिनकी छुट्टियोंमें इन्टर क्लासतक रेलका किराया आधा हो जाता है, जिससे एक तरफके किरायेमें ही आनेजानेका खर्च चल सकता है। आशा है सर्व ही विद्याप्रेमी जैनहितैषी इस अवसरपर पधारकर अनेक लाभ उठावेंगे।

प्रभुघाट बनारस।] देवेन्द्रप्रसाद-मंत्री।

કચકડાંની વસ્તુઓ વાપરવા યોગ્ય છે કે?

ધ[illegible]માં "Humanitarian League" નામની એક [illegible]મંડળી છે. કચકડાં માટે બીચારાંનાનિક[illegible] કાચબાને કેવું ત્રાસદાયક દુ:ખે દેવામાં આવે છે. તે સંબંધી ત્રણ જુદે જુદે સ્થળે નજરે જોનારાઓએ જે વર્ણન લખ્યાં છે તે સદરહુ મંડળીએ એકઠાં કરીને છપાવ્યાં છે. તેમાંનું એક ન્યુયોર્કમાં પ્રસિદ્ધ થતાં Evening Post નામનાં વર્તમાન પત્રમા પ્રથમ છપાયલું હતું, જે નીચે પ્રમાણે છે:—

"At night the fishers conceal them selves along the shore as well as possible, and when the turtles come up out of the water on the beach they rush forth and turn them over on their backs with iron hooks, leaving them secure in this position until morning. It is the method by which the scales are loosened which is the repulsive part of the business. The turtles are not killed, as that would lead to extermination in a very few years. After capturing them the fishers wait for daylight to complete the work. the turtles are turned over again in their natural position and fastened firmly to the ground by means of pegs; then a bunch of dried leaves or sea-grass is spread evenly over the back of the turtle and set afire. The heat is not great enough to injure the shell, merely causing it to separate at the joints. A large blade, very similar in shape to a chemist's spatula, is then inserted horizontally between

the laminæ, which are gently pried from the back. Great care must be taken not to injure the shell by too much heat, and yet it is not forced off until it is fully prepared for separation by a sufficient amount of warmth. **The operation, as one may readily imagine, is the [illegible] of cruelty,** and many turtles do not survive it. Most of them do live, however, and thrive, and in time grow a new covering, just as a man will grow a new finger nail in place of one he may lose."

અર્થ—"રાતે **માછીમારો** કીનારા ઉપર જેમ બને તેમ છુપાઈ રહે છે, અને જ્યારે કાચબાઓ પાણીની બહાર નીકળીને જમીન ઉપર આવે છે ત્યારે તે માછીમારો દોડી જઈને લોઢાના આંકડા વતી તેમને ચત્તા કરી નાંખે છે, અને સવાર સુધી તેમને એજ સ્થિતિમાં રાખે છે. જે કીયાથી **એ કાચબાની ઢાલ** ઉતારવામાં આવે છે તે ત્રાસદાયક છે. કાચબાને મારી નાખવામાં આવતા નથી, કેમકે તેમ કરવાથી થોડાં વરસમાં તેઓ તમામ નાશ પામે. તેમને પકડયા પછી પોતાનું કામ પુરૂં કરવાને સવાર પડવાની માછીમારો રાહ જુવે છે. કાચબાઓને પાછા તેમની કુદરતી સ્થિતિમાં ઉધા પાડે છે (એટલેકે ઢાલ ઉપર ને પેટ નીચે) અને જમીનમાં ખોડેલી **ખીલીઓ સાથે તેમને મજબુત** બાંધે છે, પછી સુકાં પાંદડાં અથવા તો દરીયાઈ ઘાસ સરખું કરીને તેમની પીઠ ઉપર પાથરીને **સળગાવે** છે. ઢલ સાંધાઓથી છુટી પડે પણ તે બગડે નહીં એટલી ગરમી રાખવામાં આવે છે. પછી રસાયણશાસ્ત્રીઓ વાપરે છે તેના જેવી **એક મોટી છરી** ઢાલ નીચે સીધી ઘાલીને આસ્તે આસ્તે તેને કાચબાની પીઠ ઉપરથી કાપી લેવામાં આવે છે. અતિશય ગરમી થવાથી ઢાલને નુકશાન ન થાય તે માટે ઘણી સંભાળ લેવી જોઇએ, અને તો પણ પીઠથી તે ઢાલ છુટી પાડી શકાય તેટલી ગરમી કર્યા વિના તે કાપી લેવામાં આવતી નથી. કોઇ પણ માણસ સહેજે સમજી શકશે કે **એ ક્રિયા ઘણીજ ઘાતકી છે** અને ઘણા કાચબાઓ તેથી મરી જાય છે, પરંતુ ઘણાખરા તેથી મરતા નથી; અને વખત જતાં માણસની આંગળી ઉપરથી ઉખડેલો નખ પાછો ઉગે તેમ તે કાચબાઓને પણ નવી ઢાલ ઉગે છે.

ઉપર પ્રમાણે જ્યાં સુધી બીચારા કાચબાઓ જીવતા રહે અને તેમને ઢાલ આવે ત્યાં સુધી ફરી ફરીને તેમને પકડીને **ભયંકર દુઃખ** દેવામાં આવે છે. માટે દરેક દયાળુ સ્ત્રીપુરૂષની ફરજ છે કે એવી ક્રુર રીતે મેળવેલી કાચબાની ઢાલ એટલે **કચકડું** તેનાં **કરડાં, વીંટી, બટન, ઘડીયાળની સાંકળી,** કાંસકી વગેરે વસ્તુઓ બનતાં સુધી વાપરવી નહીં.

જુનાગઢ.] **લાભશંકર લક્ષ્મીદાસ**



પ્રાર્થના

રા. રા. લાભશંકરે પોતાના ઉપરના અસરકારક લખાણથી કચકડાંવાળી વસ્તુઓ મેળવવામાં કેટલું ઘાતકીપણું વાપરવામાં આવે છે તે વિષે વાંચનાર ગ્રહસ્થને સારી રીતે ખ્યાલ આપ્યો છે જેથી કચકડો, હાથીદાંત વીગેરે વસ્તુઓ બનતાં સુધી દયાળુ ભાઈ બહેનો ન વાપરે તેવી આશાથી આ હેન્ડબીલની ૫૦૦૦ નકલ મુંબઈના શ્રી જીવ દયા જ્ઞાન પ્રસારક ફંડમાંથી પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવી છે.

લલ્લુભાઇ ગુલાબચંદ ઝવેરી,

ઑન, મેનેજર, જીવદયા. જ્ઞા. પ્ર. ફંડ—મુંબઇ.

जैन जीवन अथवा दैवी जीवन.

(લેખક-વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ-મુંબાઈ)

(ગયા અંકથી ચાલુ.)

હવે આપણે બાકીનાં બે અંગ 'તપ' અને 'ભાવના' સંબંધી વિચાર કરવાનો રહે છે, જેમાંના 'તપ'ને પ્રથમ લઇશું.

તપ. દાન અને શીલ એ બે ફરમાનોને પાળનાર મનુષ્યનું સ્થૂલ તેમજ સૂક્ષ્મ શરીર નિર્મળ રહે એ દેખીતી વાત છે; પરંન્તુ તે છતાં તે બન્ને શરીરમાં મળ એટલે કચરો-અનિષ્ટ તત્વો આવવાને બે કારણથી સંભવતો રહે છે. એક તો **માણસ માત્ર ભૂલને પાત્ર** છે, પ્રમાદને પાત્ર છે; અને ભૂલ કે પ્રમાદથી જાણતાં-અજાણતાં શારીરિક કે માનસિક અતિક્રમણ, વ્યતિક્રમણ કે અનાચાર થઈ જવાનો સંભવ રહે છે. જો તેવા જાણે-અજાણે થતા શારીરિક અને માનસિક દોષોને બાળી નાંખવાના ઇલાજ-વખતસર ન લેવામાં આવે, તો તેવા ઘણા દોષો એકઠા થઇ ગંભીર નુકસાન પહોંચાડે એ દેખીતું છે. જેમકે શીલ સંબંધી **બાર વ્રતો** પૈકી સાતમા વ્રતમાં નિયમીત અને મિતાહારી થવાનું ફરમાન છે, પરન્તુ; માણસ કોઈ વખતે સ્વાદને લીધે વધારે ભોજન જમ્યો કે આકર્ષક દૃશ્ય જોવા ખાતર મોદીરાત સુધી જાગ્યો; આવું વારંવાર બનવાથી તે બીમાર પડે. પણ જો એ ગુન્હાનો દંડ કે એ ભૂલનું પ્રાયશ્ચિત તુરત લેવામાં આવે તો અનિષ્ટ પરિણામ ન આવે. જરૂર ઉપર થયેલા ભોજનને ઓછો કરવા લાંઘણ કે ઉપવાસ કરવામાં અને આરામ લેવામાં આવે, તો માઠી અસર એટલેથી દબાઈ જાય. આ પ્રમાણે જાણતાં થતા દોષોની અસરને આગળ વધતી અટકાવવા માટે એક અથવા બીજા પ્રકારની 'કુદરતી દવા' અથવા 'તપ'ની જરૂર રહે છે. તેમજ વ્યવસાય-પ્રવૃત્તિની ધાંધલમાં પડવાથી આત્મભાન ભૂલી જવાથી વિભાવરમણતા થાય છે, અસત્ય બોલાઇ જાય કે અયોગ્ય કામ કરાઇ જાય છે, માનસિક શાન્તિ ગુમાવી બેસાય છે; પણ જો તે પછી એકાંતમાં બેસી **સ્વાધ્યાય** એટલે જ્ઞાનદાયક પુસ્તકોનું વાચન-મનન કરવામાં આવે, ધ્યાન, પશ્ચાત્તાપ અને જનસેવાકાર્ય કરવામાં આવે તો ગુમાવેલી માનસિક શાન્તિ પાછી આવે છે અને થએલા દોષો ઓછાવત્તા દૂર થાય છે. વળી પૂર્વજન્મનાં કર્મો પણ શિલિકમાં હોવાથી ત્હેને પ્રજ્વાળવા માટે પણ 'તપ'ની જરૂર રહે છે. આ પ્રમાણે પૂર્વના તથા વર્તમાનના દોષોને નિવારવા માટે-શારીરિક તેમજ માનસિક અતિક્રમણની અનિષ્ટ અસરોને નાબુદ કે ઓછી કરવા માટે 'તપ'ની ખરેખર જરૂર છે.

તપ એ શરીરની અંદરના તેમજ મનની અંદરના કચરાને બાળી નાખવાની શક્તિ ધરાવતી આંચ અથવા અગ્નિ છે; અને તેટલા માટે વિશ્વગુરૂ શ્રી તીર્થંકરોએ તપને બે પ્રકારમાં વહેંચી નાખ્યો છે; **'બાહ્ય તપ'** અને **'આભ્યંતર તપ.'**

બાહ્ય તપના સંબંધમાં આજકાલ જેટલી ગેરસમજ ફેલાયલી જોવામાં આવે છે તેટલી ભાગ્યેજ બીજા કોઈ વિષયના સંબંધમાં જોવામાં આવતી હશે. શરીર શાસ્ત્ર અને વૈદક શાસ્ત્રના જ્ઞાન વગરના ઉપરટપકેનું માત્ર પાશ્ચાત્ય ભાષાજ્ઞાન ધરાવતા લોકો બાહ્ય તપને એક માત્ર વહેમ-હમ્બગ કે શારીરિક ગુન્હા તરીકે ગણવાની મૂર્ખાઈ કરે છે; ત્યારે ધર્મનાં રહસ્યોથી અજાણ્યા લોકો માત્ર લાંઘણનેજ આત્મકલ્યાણનો રસ્તો માની બેસવાની અને શારીરિક તથા માનસિક સ્થિતિનો કાંઈ પણ

ખ્યાલ કર્યા વગર ગજા ઉપરાંતની તપસ્યા કરી નિર્બળ બનવામાંજ શ્રેય માનવાની મૂર્ખાઈ કરે છે. અજ્ઞાનતાથી થતી બે છેડાની આ ભુલોથી સમજુ મનુષ્યે દૂર રહેવું જોઈએ છે, બાહ્ય તપની શરૂઆત ઉપવાસથી નહિ પણ સ્વાદત્યાગ, ઉણોદરિ, એ... વ્યસન ત્યાગ ઈત્યાદિથી કરવી જોઈએ. જેઓને મસાલા બહુ ખાવાની ટેવ પડી હોય તેમણે અમુક દિવસ સુધી સ્વાદત્યાગ રૂપી તપ કરવું, કે જેથી જીહ્વા ઉપર અંકુશ મુકવાની ટેવ પડે અને પાચનશક્તિને ઘણા મસાલાથી થતું નુકશાન અટકે તથા મનની ઉશ્કેરાઈ જાય એવી સ્થિતિ પણ ઓછી થાય. વારંવાર ખાવાની ટેવવાળાએ, પેટ ઠાંસીને ખાવાની ટેવવાળાએ, અપચાની બુમ પાડનારે, અસ્વસ્થ મન સંબંધી ફર્યાદ કરનારે ઉણોદરિ તપ કરવું અર્થાત્ ભૂખથી પણ થોડું ખાવાનો નિયમ કેટલાક દિવસ માટે કરવો, કોઇ વખત દિવસમાં એકજ વખત જમવું, બીડી-સોપારી-તમાકુ આદિના વ્યસનને તેટલા દિવસ બંધ રાખવું. આ બધી વાત 'તપ'ની શરૂઆતની છે. **આ પ્રમાણે શરીરની ખોટી (અસ્વાભાવિક) ક્ષુધા અથવા માગણીઓને અંકુશમાં રાખવાનો મહાવરો પાડયા પછી ભરવા જેવું બીજું પગલું "ઉપવાસ" છે.**

પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોએ-ખુદ શરીરશાસ્ત્રના જાણીતા અને અનુભવી અભ્યાસીઓએ આજકાલ ઉપવાસની બાબતમાં ઘણી શોધખોળ કરી છે, ઘણા પ્રયોગો દ્વારા અમુક સત્યો-અમુક સિદ્ધાંતો શોધી કહાડયા છે; માટે આ સ્થળે જૂના શાસ્ત્રોના ઉતારા ન આપતાં **આજની** વૈદકવિદ્યા-આજનું સાયન્સ આપણને આ વિષયમાં શું શિખવે છે એજ કહી બતાવીશું. બરનાર મેક્ફેડન (Bernarr Macfadden) નામના અમેરિકન શોધકના વિચારો આ નીચે ટાંકગમાં આવ્યા છેઃ--

શરીરમાં ચાલુ ઉત્પન્ન થતાં વિષો કે જે શરીરમાં લાંબો વખત રહેવાથી અનેક બીમારીઓ લાગુ પડે છે, તેવાં શારીરિક વિષોને બહાર ખેંચી કહાડી દુર કરવા માટે ઉત્તમ રામબાણ ઈલાજોમાંનો ઉત્તમોત્તમ ઈલાજ તે 'ઉપવાસ' છે.

રોગોને સાજા કરવાને કુદરત જે જે ઉપાયો પુરા પાડે છે તેમાં ઉપવાસ એ સર્વથી અગત્યનો ઉપાય છે, એમાં કશો શક નથી. જો કોઈ એવી ચીજ હોય કે જે ચીજથી બધા દરદનો ઉપાય થાય, ને માણસ સાજો ને તનદુરસ્ત થઈ શકે, તો ઉપવાસને વાજબી રીતે તેવી ચીજ કહી શકાય; કારણ કે તે બધા ઉપાયોમાં સર્વથી પહેલો ઉભો રહે છે. દરદનું જે ખરું કારણ છે તે **શરીરમાં** ઉત્પન્ન થતો અને એકઠો થતો તરેહવાર જાતોનાં **ઝેરોનો જથ્થો** છે; અને તે ઝેરને શરીરમાંથી બહાર કહાડવા માટે, બીજા બધા કુદરતી ઉપાયોમાંનો સર્વથી પહેલો અને અગત્યનો ઇલાજ તે ઉપવાસ છે.

ઉપવાસ કરવામાં જે મુશ્કેલી છે તે, **મનનું સમાધાન** કરવામાં છે, માટે તમારા મનમાં તદન ખાત્રીપૂર્વક રહેવું જોઇએ કે, ઉપવાસ કર્યાથી અર્થાત્ ભૂખ્યા રહેવાથી આપણે દુબળા થઇ હાલહવાલ થવાના નથી જ, અથવા તો થોડીક વારમાં જમીનપર તુટી પડી મરી જવાના પણ નથી જ, એવો કાંઈ પણ ભય રાખશો નહિ. લોકોમાં એવી રીતે મનાતું આવ્યું છે કે થોડો વખત પણ ભૂખ્યા રહેવાથી માણસ મરી જાય છે; અને એવું જો મનથી **માની લીધેલું** હોય તો જરૂર તે માણસ ભૂખ્યો રહેવાથી મરી જાય પણ ખરો. જે માણસને ઉપવાસનું જ્ઞાન નથી, જેને તે વિષેનો કાંઇ જ ખ્યાલ નથી તેવો માણસ,

જો સાત કે દશ દિવસ ઉપવાસ કરે તો મરણ પણ પામે. કારણ કે તેણે મનથી આની લીધું છે કે જો માણસ તેટલી લાંબી મુદત સુધી ભૂખ્યો રહે તો જરૂર મરણ પામે. એ ઉપરથી **મનનો શરીર** ઉપર કેટલો કાબુ છે ત્હેનો નિશ્ચય થાય છે. આ તકે મ્હારે ત્હમને ભાર મૂકીને કહેવું જોઇએ છે કે, જેમ મનથી ઉપજું (ખોટું) કામ થાય, તેવી જ રીતે બીજી તરેહનું સારું કાર્ય પણ મનથી કરી શકાય છે; અને જો ત્હમે મનની શક્તિ પ્રબળ છે એવું ખાત્રીથી માનો, તો ફક્ત મનથી જ કરીને ગમે એવી ભયંકર માંદગીમાંથી સાજા થઇ શકો; અને મને સાજો થવાને માટે દૃઢ સંકલ્પ કીધો, એ જ **મનની બીજી શક્તિ છે.**

ટુંકમાં, ઉપવાસથી સાજા થવું હોય તો ત્હમારે સૌથી પહેલાં ઉપવાસ સંબંધી બધી જાતની ધાસ્તી અને ફીકર મનમાંથી કહાડી નાખવી.

ઉપવાસથી શરીરમાં શું અસર થાય છે?

ઉપવાસથી શરીરમાંની બધી ગલીચ અથવા ઝેરી વસ્તુઓ બહાર નીકળી જાય છે. એનો એક જાણીતો અને અજાયબ જેવો પુરાવો એ છે કે, ઉપવાસ **દરમ્યાન** વારંવાર **જીભ ઉપર થરો** બંધાયલો માલમ પડે છે તથા ઉપવાસ વેળાએ મુખમાંથી દુર્ગંધ આવે છે. જીભ ખરાબ થઇ જાય છે, મ્હોંમાંથી ખટ્ટો નીકળે છે, અને સ્વાદ ખરાબ થઈ જાય છે; એ બધું એ દેખાડે છે કે ઉપવાસની ઘણીજ જરૂર હતી પાચનક્રિયા કરનારા બધા અવયવો કે જેઓ અત્યાર સુધી હોજરીમાં ગયેલા ખોરાકને પચાવવામાં જ ધ્યાન આપતા હતા અને પુષ્ટિકારક તત્વોને શરીરના બધા ભાગમાં વહેંચી આપવાનું કામ કરતા હતા, તેઓ (ઉપવાસ વખતે) પોતાનું કામ ઉલટાવી નાખે છે, અથવા બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો ખોરાકને પાચન કરવાને બદલે, તેઓ ઝેરને બહાર કહાડવાનું કામ કર્યા કરે છે, કે જે શરીરને તનદુરસ્ત કરવાની રીત કહેવાય; અને ઉપવાસથી દરદ સારું થાય છે; ત્હેનું મુખ્ય કારણ આજ છે.

સાધારણ સારી તનદુરસ્તીવાળા માણસના મ્હોંમાંથી વાસ (વાસ) ખરાબ હોવો જોઇએ નહિ, પણ જો ખરાબ **વાસ નીકળવા લાગે તો** જાણવું કે દરદ**ની નીશાની** છે; અને જ્યારે દરદની ઉપલી બધી નીશાનીઓ જણાય, તો પણ ત્હમો તે ઉપર ધ્યાન આપો નહિ અથવા બેદરકાર રહો તો ત્હમારે ખાત્રીથી જાણવું કે, એક વખત એવો આવશે કે જ્યારે ત્હમારું દરદ ઘણી ભયંકર હાલતમાં બહાર આવશે, કે જેથી ઘણુંખરું મરણ પણ નીપજશે અથવા એવું ચાલુ (Chronic) દરદ થઇ લાગશે, કે જેમાંથી સાજા થવાનું બહુ જ મુસ્કેલ અથવા કેવળ અશક્ય થઇ પડશે. તેમાં ખાસ કરીને સાધારણ રીતે એટલે કે આજની પશ્ચિમ તરફની Allopathy નામની વૈદક વિદ્યાની ચાલુ રીતે જો ઇલાજો લીધા કર્યા તો, તે ઇલાજો સાથે થોડોઘણો પણ ખોરાક આપવની રૂઢિ હોવાથી, **મરણ ચોકસ નીપજવાનું જ.**

જ્યારે ત્હમે દુઃખથી પીડાતા હો ત્યારે, ખોરાક લઈ ત્હમારી હોજરીને તકલીફ આપવી એ ખરેખર એક ગુન્હો જ છે. આ વાત ખોટી છે એમ પુરવાર કરવા માટે કોઇ પણ ડૉકટર અથવા વિજ્ઞાનશાસ્ત્રી (Scientist) ને હું ખુલ્લી ચેલેંજ કરું છું, (એમ મેક્ફેડન્ કહે છે.) જ્યારે ત્હમે સખત દરદથી પીડાતાહો; જેવાં કે ફેફસાંનો વરમ (Pneumonia), તાવ, વગેરે વગેરે; ત્યારે ચોકસ માનજો કે **ત્હમારી નાડ ત્હમારા હાથમાં** જ છે; આ બધાં દરદો જાતજાતનાં

ચિન્હો છે, ત્હેનો અભ્યાસ કરો, તેઓ જે ચેતવણી આપે છે તે શીખો, અને જેવાં તે ચિન્હો **નજરે પડે કે તુરંત જ ઉપવાસની રીત ચાલુ કરો.** આ એક ઉપાયથી કરીને ઘણાંક વિકટ દરદોને ત્હમારા ઉપર ધસી આવતાં ત્હમે અટકાવી શકશો, અને એ ઉપાયની સાથે ... સંભાળના ઉપાયો લેતા જશો ... ખાત્રીથી જાહેર કરું કે, આજારી પડવું, એ ત્હમારે માટે એક અસાધારણ બનાવ થઇ પડશે.

મ્હને યાદ છે કે મ્હારી જીંદગીમાં મ્હારા ઉપર "ન્યુમોનિયા" (ફેફસાનો સોજો) વગેરે દરદોનાં ચિન્હોએ તો ઘણીક વખતે હુમલો કર્યો હતો, પણ જેવાં તેઓ મ્હને આવતા લાગ્યા કે તુરતજ, ચાર કે ૭ અઠવાડીયા સુધી દુઃખી થઈ બીછાને પડી રહેવાને બદલે, તેમ થાય તે આગમચ, **આ ખરી રીત** હું અખત્યાર કરતો, જેથી ૩ થી ૫ દિવસમાં હું તેઓનો છેડો આણી શકતો. એવીજ રીતે દરેક ગંભીર દરદોમાં પણ થઈ શકે.

જ્યારે ત્હમને લાગે કે ત્હમે થાકી ગયા છો અને ત્હમને સુસ્તી જેવું લાગે, જ્યારે ત્હમારાં કામ કરતાં અવયવો નકામા જેવાં થઈજાય, જ્યારે ત્હમારા મુત્રાશય (kidneys) તેઓનું કાયદાસરનું કામ કરતા બંધ પડયા હોય એવું જણાય, અને જ્યારે ત્હમારા શરીરના કોઇ પણ ભાગ ઉપર વિકટ સોજો (inflamation) અથવા ગરમીનું જોર બહાર આવતું હોય એમ ત્હમને દેખાય, તો તેજ વખતે, ત્હમારી ફરજ છે કે તેઓને દાબી દેવાને પ્રયત્ન કરવો; જ્યાં સુધી તે દરદોના પંજામાં સપડાઇ જાઓ ત્યાં સુધી કદી પણ ઉપર કહેલા તેમજ બીજા ઉપાય લેવાને ચોલતા ના. જો ત્હમે આ સૂચનાઓને ધ્યાનમાં રાખી તે મુજબ અમલ કરશો તો ત્હમારા ડાકટરોને સેંકડો રૂપીઆનું બીલ ચુકવવામાંથી બચી જશો, એટલું જ નહિ, પણ ઘણીક વેદના અને અગવડમાં જતા પણ બચી જશો, અને કદાચ ત્હમારી જીંદગીમાં કેટલાંક વર્ષોનો વધારે પણ થવા પામશે.

આ **ઉપવાસના** સિદ્ધાંતનું જ્ઞાન મેળવશો તો તે જ્ઞાન ત્હમને હજારોબલકે **લાખો રૂપીઆની રકમો કરતાં વધુ કિમતી થઈ પડશે;** કારણ કે **'પહેલું સુખ તે જાતે નર્યા'** છે.

'દરદ' એ અવયવોનાં કાર્યમાં થતી ખલેલ છે. કેટલાક પ્રસંગોમાં ત્હમે એમ પણ કહી શકો કે **'દરદ' એ નબળી જીવનશક્તિ છે,** અથવા તો જીવન શક્તિ (શરીરમાં છે ત્હેનું) ઘટવાપણું છે; શરીરનાં કાર્ય કરતા સાંચાકામમાં કાંઈક બગાડ થયો છે. ત્હમારા ઉપર કોઈક જાતના કીડાઓ (germs) એ આવીને હુમલો કીધો નથી, કે જેથી દરદ થયું હોય ! અથવા તો કાંઇક વિચિત્ર જાતનાં સૂક્ષ્મ જંતુઓ (micropes) ત્હમો શ્વાસ વાટે ગળી ગયા નથી ! દરદ જણાયું છે એનું કારણ એ છે કે, ત્હમે તે માટે તૈયાર થયા છો અર્થાત્ **તેવી હાલત ત્હમે તૈયાર કીધી છે.** ઘણાખરા દાખલાઓમાં, દરદનું કારણ એ હોય છે કે, ત્હમે કુદરતના કાયદાનું ઉલ્લંઘન કર્યું છે, એટલે કે કાયદાથી ઉલટા ચાલ્યા છો, અને ત્હેની શિક્ષા તરીકે આ દરદને ત્હમે પાત્ર થયા છો; **છતાં એ એક દોસ્ત તરીકે જ આવ્યું છે.** તે કાંઈ એક દુસ્મન નથી; અને એ દુસ્મન નથી જ, એ વાત હું ત્હમારા મન ઉપર ખાસ ઠસાવવા માંગું છું. તે કાંઇ રાત્રે ભરાઇને આવતા ચોર તરીકે છુપાઇને આવતું નથી; તેમજ તે કાંઇ ત્હમને હેરાન કરવા આવતું નથી. તે ત્હમને ફાયદો જ કરવા આવે છે. તે ઘણાખરા દાખલાઓમાં ત્હમારા સ્થૂલ શરીરને સાફ કરવાને માટે જ આવે છે.

દરદ માત્ર એક જ છે અને તે સેંકડો **જૂદા રસ્તાથી** થઇ આવે છે ત્હેનાં હજારો ચિન્હો દેખાય છે. વૈદ લોકો તે ચિન્હોને તરેહવાર નામેથી ઓળખે છે; અને તે ચિન્હોને જૂદાંજૂદાં દરદો તરીકે નામ આપવામાં આવે છે; પણ તે બધાં એક જ **દરદનાં 'પરિણામ'** છે, અને અભ્યાસથી અથવા વ્યવહારોપયોગી રીતથી અથવા કુદરતી ઉપયોગથી જેઓ આરોગ્ય પ્રાપ્ત કરવાનું રહમજે છે તેવો દરેક મનુષ્ય માને છે કે, દરદ માત્ર એક જ છે, **અને તે દરદ બહારની (Foreign) ચીજોથી એટલે કે નાલાયક ચીજો શરીરના લોહીમાં જવાથી થાય છે.**

શરીરના જે જે અવયવો લોહી બનાવવાનું કાર્ય કરે છે, કે જેમાં ખરી જીવનશક્તિ રહેલી છે, તેઓ, (દરદ થાય ત્હારે જાણવું કે) પોતાની ફરજો બરાબર બજાવતા નથી; તેથી લોહીમાં જે કચરો ભેગો થયો છે ત્હેને સાફ કરવા તે કચરાને બહાર કહાડવો જોઈએ. પરન્તુ જ્યહારે આ કામ બજાવનારા અવયવો અશક્ત થાય છે અને વિષમય પદાર્થને લોહીમાંથી બહાર કહાડી શકતા નથી ત્યહારે મુશ્કેલી પડે છે, ત્યહારે ગુંચવણ ઉભી થાય છે, ને ત્યહારે શરીરના અગત્યના અવયવોના કાર્યમાં ખલેલ પેદા થાય છે. જ્યહારે એ અવયવો શરીરમાંથી એ ઝેરોને બહાર ધકેલી કહાડવાને અશક્ત થાય છે, ત્યહારે ત્હમારી જીંદગી બચાવવાના ખરા ઈલાજ તરીકે, તે ઝેરોને બહાર કહાડવાને માટે અવયવોને તેઓનું હમેશનું (ખોરાક પચાવવાનું) કાર્ય કરતાં અટકાવી ઝેર દૂર કરવાના કામમાં રોકવાની ત્હમને સૂચના કરવા માટે 'દરદ' દેખા દે છે! આ પ્રમાણે દરદ એક મદદગાર દોસ્ત છે!

હવે તો .૦ થી ૫૦ દિવસના ઉપવાસ કરવાનું (અમેરીકામાં) સાધારણ થઇ પડયું છે; અને જેઓએ એટલા ઉપવાસો કીધા છે તેઓ ! હું મળ્યો છું. લાંબામાં લાંબો ઉપવાસ મ્હેં જે સાંભળ્યો છે તે સીત્તેર (૭૯ દિવસનો હતો. જો કે અજાયબ જેવું લાગશે પણ ઉપવાસ એ જ અશક્તિ અને ખાધરા ... દરદોને સાજા કરવાનો ઇલાજ છે. એક ... ઉપવાસ કર્યા પછી, શરીર પોતાની મેળે, પોતાના ખરા (Ideal) નમુનેદાર વજનનું પ્રમાણ મેળવેછે.

અમેરિકાના કરોડપતિ મી. કારનેજીના રૂ. ૯ કરોડની સખાવતથી સ્થાપેલી વિદ્યાલયમાં ઉપવાસની તપાસ.

સૌથી વધુ અગત્યની અને પુરતો ભરોસો લોકોને આવે એવી વાત તો, "કારનેજી ઈન્સ્ટીટ્યુશન" (Nutrition Laboratory of the Carnegie Institution of Washington) કે જ્યહાં ઉપવાસની તપાસ પુરતી જોગવાઇ સાથે અને મ્હોટા પાયા ઉપર "સાયન્ટીફીક" રીતે કેટલોક વખત થયાં ચાલુ થઇ છે, ત્હેમાં કરવામાં આવેલા અખતરાઓ છે. વાંચનારને ખબર હશે કે, મી૦ કારનેજીએ 'વિદ્યા' ("સાયન્સ") ની શોધખોળો માટે ઉપલું મહાન ખાતું સ્થાપવાને લગભગ **નવ કરોડ** જેટલા રૂપીઆ આપ્યા છે. તે ખાતાનો વડો પ્રોફેસર ફ્રાન્સીસ ડી બેનીડીક્ટ (Frances D Benedict) છે, કે જે બહુ આગળ વધેલો અને ઉમંગી "સાયન્ટીસ્ટ" છે. એ પ્રોફેસરે એક એવો સંચો અથવા કહો કે એક ઓરડો બનાવ્યો છે, કે જેની અંદર કોઇ પણ માણસ દાખલ થાય તો ત્હેના શરીરના બધા અવયવોનાં કાર્યોની હીલચાલોની નોંધ લેવાય છે; દમ કેમ ચાલે છે, લોહી કેમ ફરે છે, તેમજ દરેક અવયવ કેમ કાર્ય કરે છે ત્હેની બારીકમાં બારીક નોંધ તે સંચો સંપૂર્ણ રીતે રાખે છે.

ખુદ આ સંસ્થાના કેટલાક અભ્યાસીઓ ઉપર જ આ ઉપવાસના અખતરા કર્યા છે,

એટલું જ નહિ પણ કેટલાક બીજા બહુરના માણસો ઉપર પણ તે અખતરા કરીને તે પ્રોફેસરે એવું નક્કી કીધું છે કે, કોઇ પણ સાધારણ માણસ, બેથી સાત દિવસ **બીલકુલ ખોરાકવિના માત્ર પાણી ઉપર** રહી શકે, અને તેથી ત્હેને કોઈ પણ એવી નુકસાની કે ઇજા થતી નથી [illegible] કરતાં તે માણસ દરેક [illegible] રતલ વજન ખુએ છે. પણ ઉપવાસ ભાંગતાં એટલે કે પાછો ખોરાક લેવાનું શરૂ કીધા પછી, ખોયેલા વજનથી બમણું વજન તે મેળવે છે અને (પ્રો૦ બેનીડીકટ કહે છે કે) વજન પાછું મેળવવાનું કાર્ય **ઘણીજ ઝડપથી થાય છે.**

સાત દિવસના ઉપવાસનું પરિણામ.

સાત દિવસના ઉપવાસથી એવું પુરવાર છે કે, ૮૧ (grammes) ગ્રામ **નાઇટ્રોજન** (nitrogen) તપસ્વીના શરીરમાંથી ઓછું થયું, કે જે પાછું ૧૨ દિવસની અંદર મેળવાયું. અને એવી એ તપસ્યા પછી એકંદર ૫૪ ગ્રામ **નાઇટ્રોજન**નો જથો ત્હેના શરીરમાં વધે છે.

આ પ્રમાણે ઉપવાસ —તપસ્યા-'બાહ્ય તપ' ના લાભ અગણીત છે,—કહો કે શરીરનો સચો સાફ કરવાને માટે અને ત્હેને શકિત આપવાને માટે બાહ્ય તપ ખાસ જરૂરનો-જેના વગર ચલાવી લેવાનું ન બની શકે એવો-છે.

આપણે પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોના અભિપ્રાયોમાં જોઇ ગયા કે આ 'બાહ્ય તપ' થી **શરીર** માત્ર જ આરોગ્ય મેળવે છે એમ નથી પરન્તુ **મનને** પણ શાન્તિ મળે છે. વળી બાહ્ય વસ્તુઓ તરફની લોલુપતા ઉપર જય મેળવવાનો સ્વભાવ પડે છે એ એક અકથ્ય લાભ છે.

પરન્તુ, ઉપવાસ બાદ થોડું જ ખાવાની, ઘણો જ સાદો ખોરાક ખાવાની અને તનદુરસ્તીના સામાન્ય નિયમો ચોકસાઇથી પાળવાની કાળજી રાખવી જોઇએ, એ ભૂલવા જેવું નથી.

બાહ્ય તપની બાબતમાં જેઓ એક યા બીજા છેડાની ભુલવાળી માન્યતાઓ ધરાવે છે તેવા આજકાલના જૈનો માટે શ્રી મુનિચંદ્ર સુરિના આ નીચેના શબ્દો ઘણા ઉપદેશી છેઃ—

कायो न केवलमयं परितापनीयो ।
मिष्टै रसैर्बहुविधैर्न च लालनीयः ॥
चित्तेन्द्रियानि न चरन्ति यथोत्पथेन ।
वश्यानि येन च तदाचरितं जिनानाम्॥

એટલે કે-આ શરીરને કેવળ પરિતાપજ ઉપજે એવો તપ ન કરવો, તેમજ બીજી બાજુએ મધુર વિવિધ પ્રકારના રસ વડે ત્હેનું લાલન ન કરવું (અર્થાત્ ઇન્દ્રિયેને ફટાડવી નહિ.) (ત્હારે શું કરવું ? તો કહે છે કે—) ચિત્ત અને ઇન્દ્રિઓ જેનાથી ઉન્માર્ગે ન ચાલે અને વશ થાય એવું જિનપરમાત્માએ આચરેલું ' તપ ' છે.

ઉપવાસ અને આરામનું રહસ્ય.

અમેરીકામાં પ્રગટ થતા " ધી ઍનલ્સ ઑફ સાઇકિકલ સાયન્સ " નામના એક માનસશાસ્ત્રને લગતા પત્રમાં ૬ વર્ષ ઉપર એક જાણવાજોગ લેખ બ્હાર પડયો હતો, કે જે " **વરાળ યંત્રની માફક મનુષ્ય શરીર પણ ખોરાકમાંથી શકિત મેળવે** છે " એવી લાંબા વખતથી ચાલી આવતી માન્યતાને ખોટી પાડે છે. તે લેખનું તારણ નીચે આપવામાં આવ્યું છેઃ—

જો ખોરાકમાંથી શકિત મળતી હોત. તો ગયેલી શકિત પાછી મેળવવાને માટે

કસરતશાળામાં નહિ, પણ ભોજનશાળામાં આપણે પહેલા જાત, કે જેથી ઘણો ખોરાક પેટમાં જવાથી વધારે તાકાદ આવત, પણ તેમ તો થતું જોવામાં આવતું નથી આપણે જ્યારે થાકયાપાકયા હોઇએ છીએ ત્યારે **ભોજનગૃહમાં** નહિ પણ **શયનગૃહમાં** જઇએ છીએ, કે જેથી શકિતઓ પાછી મેળવી શકીએ. આપણે ગમે તેટલો ખોરાક લીધો હોય અથવા ગમે તેટલી મહેનતે તથા કસરત વડે ખોરાક પચાવવાને પ્રયત્ન કર્યો હોય તો પણ, એવો એકવખત જરૂર આવે જ છે કે જ્યારે આપણે **આરામ** લેવો જ જોઇએ એટલે ઉંઘવું જોઇએ અથવા તો મરવું જ જોઇએ.

આપણે દરેક જાણીએ છીએ કે દિવસની મહેનત પછી થાકયાપાકયા આવીને ખાવા બેસવું તે વૈદ્યક શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ છે; અને સાદી આનંદી કસરત એવે વખતે ઉલટો ફાયદો કરે છે. મતલબ કે શકિત પ્રાપ્ત કરવાને માટે ખોરાક લેવો જરૂરનો નથી, પણ જ્યારે જ્યારે શકિતની જરૂર હોય ત્યારે ત્યારે આરામ, અને ઉંઘની દરકાર કરવી જોઇએ. મનુષ્યશરીર અને વરાળયંત્રમાં આજ તફાવત છે. મનુષ્ય **શરીર પોતાની મેળે ઘસારાનો ખાડો પુરે છે, જ્યારે વરાળયંત્ર તેમ કરી શકતું નથી.**

એક માણસને ઉપવાસ કરાવીએ ત્યારે તે જેવી તંદુરસ્તીમાં હોય છે તેથી વધારે તંદુરસ્ત અને વધારે શક્તિવાળો, **૧૦-૨૦ કે ૩૦ ઉપવાસ પછી,** તે થાય છે. ઘણાને આ વાત હસવા જેવી લાગશે. પણ મ્હેં (ઉપર કહેલા અમેરીકન પત્રના અધિપતિએ) પ્રયોગો કરીને જોયું છે કે, કેટલાક માણસો પહેલા ઉપવાસે નીસરણી પર ચડવાને શકિતવાન નથી હોતા પણ ત્રીશમે ઉપવાસે દિવસના પાંચ માઇલ પ્રમાણે ચાલી શકે છે. આથી જણાય છે કે શકિત રોજ લેવાના ખોરાકમાંથી મળે છે એવી માન્યતા ભૂલભરેલી છે. ખોરાકનું કર્તવ્ય એટલું જ છે કે શરીરને આખા દિવસમાં [illegible] ઘસારો પુરો પાડવો, એટલે કે કસરતથી ભાગેલા સ્નાયુઓને ટટાર કરવા. કોઈ પણ જાતનો ખોરાક કદી પણ શરીરને ઉષ્ણતા અથવા શકિત આપી શકતોજ નથી એ ઉષ્ણતા અને શકિત તદ્દન જુદીજ રીતે મળે છે. શારીરિક શાસ્ત્રના અભ્યાસીઓ **બ્હારના દેખાવોથી** ભૂલ ભરેલી માન્યતામાં પડેલા છે. **ઉષ્ણતા અને શકિત; ખવાતા ખોરાકમાંથી નહિ પણ ઉંઘ અને આરામમાંથી આવે છે.** ઉંઘના કલાકોમાં મનુષ્યશરીર ગ્રહણ કરવાની સ્થિતિ (Receptive Attitute) માં હોય છે અને ત્હેનાં સંચાઓ એટલે કે સ્નાયુઓ વગેરે, સર્વવ્યાપક શકિત (All Pervading Cosmic Energy) વડે ભરાઈ જાય છે. આ શકિતમાં-આ શકિતની અંદર આપણે રહીએ છીએ હરીએફરીએ છીએ અને જીવીએ છીએ. આ શકિત ઉંઘમાં જ્યારે આપણું શરીર ગ્રાહક ગુણ ધારણ કરે છે ત્યારે ત્હેમાં દાખલ થાય છે. અને તેથી જ સ્હવારમાં આપણે જાગીએ છીએ ત્યારે આપણામાં નવું ચૈતન્ય આવ્યું હોય એમ આપણને લાગે છે.

ખોરાકથી અગ્નિ પણ ઉત્પન્ન થતી નથી. તે ગરમી પણ ચૈતન્યનીજ છે. મડદાની અંદર ગમે તેટલો ખોરાક નાખવામાં આવે તો પણ ત્હેમાં ઉષ્ણતા લાવી શકાશે નહિ. તનદુરસ્ત સ્થિતિને માટે જેટલી ઉષ્ણતા જોઇએ એટલી ઉષ્ણતા ન હોવાની ફરીઆદ જે લોકો ઘણાં વર્ષો થયાં કર્યાં કરતા હોય છે તે લોકો **જો ઉપવાસ કરે છે તો**

જોઇતી ઉષ્ણુતા ત્હેમને આવી મળે છે શરીર તે શકિત ઉત્પન્ન કરવાનું યંત્ર નથી પણ શકિતને એક જગ્યાએથી બીજી જગ્યાએ લઇ જવાનું કામ કરનારૂં યંત્ર છે તે યંત્ર ઉંઘ અને આરામના [illegible] કામાં શકિત મેળવે છે અને [illegible] માં તે શકિત ખુટાડે છે.

ઉપવાસ અને લાંઘણ એ તદ્દન એક બીજાથી વિરૂદ્ધની સ્થિતિઓ છે. દાખલા તરીકે કુદરતના કાયદા વિરૂદ્ધ ચાલવાથી જ્હેના શરીરમાં બીગાડો થયો છે. એવો એક માણસ ઉપવાસ કરવા લાગે છે, તે માત્ર પાણી પીને જ ચલવે છે. ત્હેના મળશુદ્ધિના અવયવો હમેશ ગતિમાન રહેતા હોવાથી શરીરની અંદરનો સઘળો કચરો થોડા દિવસમાં નીકળી જાય છે. જેમ જેમ કચરો નીકળતો જાય છે તેમ તેમ ત્હેની નાડી અને ઉષ્ણુતા બરાબર સ્થિતિએ આવી જાય છે, અને ત્હેનો શ્વાસ સુગંધીદાર બને છે, ત્હેને તનદુરસ્ત ભૂખ લાગવા માંડે છે; અને એ ભૂખજ ખરી ભૂખ સમજવી.

પછી તે માણસ આસ્તે આસ્તે ખોરાક લેવો શરૂ કરે છે અને તે ખોરાક તે જીરવી શકે છે. તેથી ત્હેનું મળ દરદ નાબુદ થાય છે. જ્હારે ઉપવાસ શરૂ કર્યા ત્હારે ત્હેનું જે બળ હતું તે કરતાં હમણાં ત્હેનામાં વધુ બળ આવેલું ત્હેને લાગે છે. આમ થવાનું કારણ એ છે કે ત્હેનાં યંત્રો મળરહીત-શુદ્ધ થવાથી પહેલાં કરતાં વધુ શક્તિ તે યંત્રોદ્વારા કામ કરી શકે છે.

ઉપવાસ એએક શાસ્ત્રીય (Scientific) યોજના છે કે જે વડે રોગીષ્ટ સ્નાયુ અને કચરો શરીરમાંથી દુર કરાય છે. ઉપવાસનું પરિણામ હમેશ લાભકારક હોય છે. લાંઘણ અથવા ભૂખમરો એ તે સ્થિતિમાં નામ છે કે જે સ્થિતિમાં સ્નાયુને જોઇતું પોષણ મળતું ન હોય. લાંઘણ અથવા ભૂખમરનું પરિણામ હમેશા ભયંકર આવે છે. ઉપવાસનો છેડો ત્હારે આવે છે, કે જ્હારે કુદરતી ભૂખ ઉત્પન્ન થાય છે; અને લાંઘણની શરૂઆત ત્હારે થાય છે, કે જ્હારે કુદરતી ભૂખ ખોરાક માગે છે. ઉપવાસનું પરિણામ શકિતની પુનઃ પ્રાપ્તિમાં આવે છે, જ્હારે ભૂખમરાનું પરિણામ મ્હોતમાં આવે છે. એકની શરૂઆત આગળ બીજાનો છેડો છે !

ડૉ. ડેવી (Dr. Dewey) સુંદર શબ્દોમાં કહે છે કે "બીમાર આદમીના પેટમાંથી ખોરાક લઇ લ્યો; એટલે ત્હમે તે બીમારને નહિ પણ દરદને ભૂખે મારનારા ગણાશો." ઉપવાસની ફીલસુફી* અને ઉપવાસના સાયન્સનું એકંદર રહસ્ય આ થોડા શબ્દોમાં સમાવી લીધું છે.

બીમારનું બળ જતું ન રહે એટલા માટે એને કાંઈ નહિ ને ક્હાંઈ ખવરાવ્યાં જ કરવું એવી જે માન્યતા આજે ચાલે છે તે કેવી ભૂલભરેલી છે ને આ ઉપરથી સ્હેલાઇથી સ્હમજી શકાશે.

* શરીર છે તે શક્તિને એક જગાથી બીજી જગાએ લઈ જનાર યંત્ર માત્ર છે, તે શક્તિ આ શરીર દ્વારા દેખા દે છે. જીવનશક્તિ એ અદ્‌ભુતપ્રકારની શક્તિ છે; શરીરની

બહાર પણ હેની હયાતી સંભવે છે, અને શરીરથી તે સ્વતંત્ર છે. જેમ કાચની ચીમનીમાંથી બત્તી પ્રકાશ ફેંકે છે તેમ ઉપર કહેલી **જીવનંશક્તિ** આ શરીરદ્વારા પોતાનો પ્રકાશ ફેંકે છે. તે શક્તિ આ શરીરદ્વારા પ્રગટ[illegible] છે. જો ચીમની ઝાંખી હોય, ફૂટી[illegible] અથવા ઘેરા રંગની હોયતો હેની તે દિવ[illegible] પ્રમાણમાં અંદરનો પ્રકાશ બહાર ઓછો દેખાય છે. શરીરના સંબંધમાં પણ તેમજ સમજવું. જો શરીરમાં ખોરાકનો કચરો ભરાઇ રહ્યો હોય; જો તે રોગીષ્ટ હોય અથવા ભૂખમરાને આધીન હોય તો જીવન એવા શરીરદ્વારા બરાબર દર્શન દઈ શકે નહિ.

'બાહ્યતપ'ના ઉપયોગ, હેતુ અને ફાયદાનો વિચાર કરી ગયા પછી **આભ્યંતર તપ.** હવે આપણે 'આભ્યંતર તપ' તપાસીશું. સ્થૂલ અથવા ઔદારિક શરીરનો કચરો દૂર કરવાને તથા ગુમાવેલી શારીરિક શક્તિ પાછી મેળવવાને જેમ 'બાહ્ય તપ' ઉપયોગી છે, તેમ સૂક્ષ્મ શરીરોને (તૈજસ અને કાર્મણ શરીરોને) લગતો કચરો દૂર કરી તે શરીરોને નિર્મળ અને વધારે ઉપયોગી બનાવવા માટે 'આભ્યંતર તપ'ની જરૂર રહે છે. આ પ્રકારના તપને જૈન ફિલસુફોએ છ પ્રકારમાં વહેંચી નાખ્યો છેઃ **પ્રાયશ્ચિત, વિનય, વૈયાવૃત્ય, સ્વાધ્યાય, ધ્યાન અને કાયોત્સર્ગ.**

(૧) ધારો કે મ્હેં કોઈ સજ્જનના સમ્બન્ધમાં ખોટી વાત ફેલાવી છે અર્થાત્ હેના સમ્બન્ધમાં લોકોમાં ખોટો મત બંધાય એવી નિંદા કરી છે. હવે જો હું મ્હારી ભૂલ જોઇ શકું—મ્હારૂં આ કૃત્ય ખુની જેવું તિરસ્કારપાત્ર છે એમ સમજવા પામું—તો મ્હને તે માટે મનમાં ઘણો પશ્ચાત્તાપ થાય; મ્હારૂં માનસિક સૂક્ષ્મ શરિર પશ્ચાત્તાપની સૂક્ષ્મ અગ્નિમાં બળે અને શુદ્ધ થાય. આ શુદ્ધતાની ખાત્રી ત્હારે જ થાય કે જ્યહારે હું તે શુદ્ધિકરણની ક્રિયા બાદ તે માણસની બાબતમાં ખરી વાત લોકોને જાહેર કરવા સ્વયં બહાર પડું અને તે માણસની ખરા દીલથી ક્ષમા ચાહું; એટલું જાતે[illegible] પણ પ્રસંગ આવે ત્હારે તે માણસની હાલનાં[illegible] કે વાજબી રીતે હેની કીર્તિ નંફેલા ચૂકું નહિ. આનું નામ '**પ્રાયશ્ચિત તપ**' છે. પ્રાયશ્ચિત અમુક મંત્રો બોલવાથી કે અમુક દંડ ભરવાથી થતું હોય તો ખુનીઓ અને વ્યભિચારીઓને નરકમાં જવાનો ડર જ રહેત નહિ! આપણાથી વડીલ જ્ઞાની કે ગુણી પાસે પાપનું સ્વરૂપ પ્રકાશવાથી તે માણસ આપણને જે જ્ઞાન આપે છે તે, પાપનું નિવારણ કરવામાં ઉપયોગી થઈ પડે છે; માટે ગંભીર, વિદ્વાન, પવિત્ર પુરૂષ પાસે પાપ જાહેર કરીને પ્રાયશ્ચિત લેવાનું ફરમાન ધર્મશાસ્ત્રોએ કર્યું છે. પરન્તુ ધ્યાનમાં રાખવાનું છે કે, પ્રાયશ્ચિત તપ **બાહ્ય** તપનો વિભાગ નથી, પણ **આભ્યંતર** તપનો છે; અને એટલા માટે બાહ્ય ક્રિયાનો નહિ પણ આભ્યંતર પશ્ચાત્તાપ, અને ભૂલ સુધારવા માટે બનતું કરવાનો નિશ્ચયઃ એ બે તત્ત્વો અવશ્ય હોવાં જ જોઇએ. ભાર મુકીને કહેવું જોઇએ છે કે, જે માણસ પોતાથી થતા અપરાધો માટે આવો હાર્દિક ખેદ કરવાને તથા થએલા અપરાધની અસરનું બને તેટલા પ્રમાણમાં નિવારણ કરવાનો ઉદ્યમ કરવાને તૈયાર થઇ શકતો નથી તે માણસ ધ્યાન કે કાયોત્સર્ગ જેવા ઉચ્ચ કોટીના તપ માટે હજી લાયક થયો નથી.

(૨) વહેમો અને સંકુચિત બુદ્ધિને જડમૂળથી ઉખેડી નાખવાની શક્તિવાળા સત્ય ધર્મ, તે ધર્મની ફીલસુફી, તે ધર્મનાં ફરમાન મુજબજ વર્તનારા પવિત્ર હૃદયવાળા ધર્મગુરૂઓ, તે ધર્મના શુદ્ધ સ્વરૂપનો પ્રચાર કરનારા પુરૂષો તે ધર્મના પ્રચાર અને રક્ષણ

માટે સ્થપાયલી સંસ્થાઓ, ઇત્યાદિ તરફ માન-ની દૃષ્ટિ ધરાવવી અને સામાન્યતઃ ગુણીજનો પ્રત્યે **નમ્રતા દાખવવી એ 'વિનય તપ'** છે. જ્યહાં ગુણ-દોષ-સ્હમજવાની શક્તિ અર્થાત્ 'વિવેકબુદ્ધિ' (discrimination); નથી, ત્યહાં 'વિનય તપ'નું અસ્તીત્વ અં... વેજ નહિ. જ્યહાં ગુણ-... ...ડલા... ...આ-જેટલી શક્તિ છે ... ગુણી પ્રત્યે નમ્રતા કે વિનય બતાવવા-ની ઇચ્છા ઉત્પન્ન થાય છે, અને એવા વિનય-થી તે મનુષ્યનું હૃદય પોતામાં બીજાના સદ્-ગુણોનું આકર્ષણ કરવાને લાયક બને છે.

(૩) ઉપર જે ધર્મ, ધર્મગુરૂ, ધર્મ-પ્રચારક, ધર્મરક્ષક, ધાર્મિક સંસ્થાઓ વગેરેનો વિનય કરવાનું કહેવામાં આવ્યું તે સર્વની તરફ વિનય બતાવીનેજ નહિ અટકતાં, તેથી આગળ વધી યથાશક્તિ ત્હેમની સેવા કરવી અર્થાત્ ત્હેમને ઉપયોગી થવું એ **'વૈયાવૃત્ય તપ'** કહેવાય છે.

(૪) પશ્ચાત્તાપ, વિનય અને સેવાત-ત્પરતા એ ત્રણ ગુણો ધરાવતા માણસનું મગજ તેમજ હૃદય એટલું નિર્મળ થવા પામે છે કે, ત્હેને જ્ઞાન મેળવતાં મુશ્કેલી પડતી નથી. તેથી ચોથે નંબરે 'સ્વાધ્યાય તપ' અથવા જ્ઞાનાભ્યાસને મૂકવામાં આવેલ છે. જ્ઞાન મેળવવું-અભ્યાસ કરવો-એ ફરજ્યાત તપ છે તે ભૂલવું જોઇતું નથી. અને ત્હેને માટે પાંચ પગથીઆં સૂચવવામાં આવ્યાં છે:- (૧) 'વાચના' એટલે શિક્ષક અથવા ગુરૂ પાસેથી અમુક પાઠ લેવો, ધારવો, અથવા ગુરૂનો જોગ ન હોય તો પોતાની મેળે પુસ્તકનો અમુક ભાગ વાંચી જવો. (૨) 'પૃચ્છના' એટલે તેટલા ભાગમાં જણાતી મુશ્કેલીઓ કે સંશયો ગુરૂને કે કોઇ અનુભવીને પૂછી લેવા. (૩) 'પરાવર્ત્તના' એટલે શિખેલો ભાગ ફરીથી યાદ કરી જવો (૪) 'અનુપ્રેક્ષા' એટલે અભ્યાસ કરાયલા વિષય પર ઉંડું મનન કરવું. (૫) '**ધર્મકથા**' એટલે મેળ-વેલું જ્ઞાન બીજાઓને કહેવું, સ્હમજાવવું. વ્યાખ્યાન, વાતચીત, ગ્રંથરચના તથા શાન્ત ચર્ચા ઇત્યાદિ દ્વારા બીજાઓને જ્ઞાન આપવાનો નીયમ કરવાથી **પોતાનું જ્ઞાન વધે છે** અને કુદરતી **એોમાં જ્ઞાનપ્રચાર થાય છે**, જેથી ... પોતાનાં જ્ઞાનાન્તરાયી કર્મ ઓછાં થઈ વિશેષ પ્રમાણમાં જ્ઞાન મેળવવાની લાયકાત આવે છે.

જ્ઞાનની બાબતમાં ફરી ફરીને-જોરશોરથી કહેવાની જરૂર છે કે, જ્ઞાન અમુક પુસ્તકોમાંથી કે અમુક પુરૂષો પાસેથી મળે **તેજ ગ્રહણ કરવું એવું શિખવનારાની સોબત કદિ કરતા નહિ. તેમજ અમુક લોકપ્રિય થઇ પડેલા 'સિદ્ધાંત'થી વિરૂદ્ધ વિચાર ધરાવતા સિદ્ધાન્તની દલીલ સાંભળવા કદી આનાકાની કરતા નહિ. મન ગ્હોળું રાખો, આંખો ખુલ્લી રાખો, આખા જગતમાં તહમારા માની લીધેલા કુવા-માંના જળ કરતાં વધારે સારૂં જળ કોઈ જગાએ ન જ સંભવે એવી ઘેલ-છાને છોડીને એકવાર બહાર ફરી જુદા જુદા ફીલસુફોના સહવાસમાં આવો કે એમના સિધ્ધાંતો વાંચો, ભાષાજ્ઞાન મેળ-વો, ન્યાયશાસ્ત્ર શિખો અને પછી એ બેની મદદથી દુનિયાનું પ્રાચિન અને અર્વાચિન જેટલું જ્ઞાન મેળવી શકાય એટલું મેળવો.**

(૫) ઉપર કહેલી સઘળી જાતના તપ કરતાં 'ધ્યાન તપ' વધારે સમર્થ છે. સંસારીક વિજય માટે તેમજ આત્મિક મુક્તિ માટે-બન્ને કામમાં-આ એક તિક્ષ્ણ ઓજાર છે. ચિત્તની એકાગ્રતા અથવા ધ્યાન વડે સઘળી શક્તિઓ એકજ વિષય ઉપર એક સાથે ઉપયોગમાં આવે છે, અને તેથી ઇપ્સિ-

તાર્થ પ્રાપ્ત કરવામાં બહુ સરળતા થાય એ સ્વાભાવિક છે. અસાધારણ વિજ્યોને વરેલો મહાન નેપોલિયન લશ્કરની તોપોના મારા વચ્ચે રાજ્યની કન્યાશાળાઓ માટે ધારાઓ ઘડતો, એટલી હદ સુધી તે એકાગ્રતા રાખી શકતો. વળી લાગલાગટ કેટલાક દિવસો અને રાત્રીઓ સુધી ઘણું કામ હોવાથી સુવાનો ટાઇમ તે લડાઇના તોફાન વચ્ચે ૧૦ કે ૧૫ કે ૨૦ મીનીટ સુધી ઇચ્છા મુજબજ લઈ શકતો! આવા માણસો વિજયને મૂઠીમાં બાંધી રાખે એમાં શું આશ્ચર્ય? ગુમાવેલી ચિત્તશાન્તિ પાછી મેળવવાના કામ માટે, વ્યાપાર કે પરમાર્થના કામમાં આવતી ગુંચવડોના વ્યવહારૂ નિરાકરણ કે તોડ માટે, વસ્તુ-સ્વરૂપ ઓળખવા માટે, અને શ્રેષ્ઠમાર્ગની પ્રાપ્તિ માટે પણ 'ધ્યાન'ની ઉપયોગિતા અનિવાર્ય છે. શાસ્ત્રકારો વાજબી કહે છે કેઃ—

निर्जराकरणे बाह्याच्छ्रेष्ठमाभ्यन्तरं तपः ।
तत्राप्येकातपत्रत्वं, ध्यानस्य मुनयो जगुः॥१॥

"નિર્જરા કરવામાં (કર્મને નિર્ઝરવાના કામમાં) બાહ્ય તપ કરતાં **આભ્યન્તર તપ** શ્રેષ્ટ છે; અને તેમાં પણ '**ધ્યાન તપ**'નું તો એક છત્રપણું છે; તે તપ 'ચક્રવર્તી' છે, એમ મુનિઓ કહે છે." (કારણ કેઃ—)

अन्तर्मुहूर्त्तमात्रं यदेकाग्रचित्तत्तान्वितम् ।
तध्यान चिरकालीनां, कर्मणां क्षयकारणम् ॥

"'અન્તર્મુહૂર્ત્ત માત્ર જે એકાગ્ર ચિત્તપણું' તે 'ધ્યાન' કહેવાય છે; એવું ધ્યાન ઘણા કાળનાં બાંધેલાં કર્મનો ક્ષય કરવામાં કારણભૂત છે."

जह चिअसंचिअमिंधणमणलो य पवण सहिओ दुअं दहइ ।
तह कम्मिधणममिअं खणेण झाणाणलो डहइ ॥

"જેમ ચિરકાળનાં એકઠાં કરેલાં કાષ્ટોને પવનની સાથે રહેલો અગ્નિ તત્કાળ બાળી નાખે છે, તેમ અનન્ત કર્મ રૂપી ઇંધનને એક ક્ષણમાત્રમાંજ 'ધ્યાન' રૂપી અગ્નિ બાળી નાખે છે."

जातेऽस्यन्ति सेत्स्यन्ति, यावन्तः केऽपि मानवाः
ध्यानतो [illegible] ते सर्वेऽपि शुभाशया : ॥

"[illegible] જે કોઈ મનુષ્યો સિદ્ધ થયા છે, સિદ્ધ થાય છે અને હવે પછી સિદ્ધ થશે તે **સર્વે 'શુભ આશયવાળા ધ્યાન' તપ વડેજ સિદ્ધપણું** પામે છે એમ જાણવું."

ધ્યાનના ભેદ, રસ્તા વગેરે સંબંધમાં ઘણું ઘણું જાણવા અને શિખવા જેવું છે, પણ તે સર્વનો આ એક લેખમાં સમાવેશ કરી શકાય નહિ. 'ધ્યાન'ના સિદ્ધાંત ઉપર પાશ્ચિમાત્યોએ દરદો મટાડવાનું, કુટેવો સુધારવાનું, એક સ્થળે બેસી દુરથી સંદેશા મેળવવાનું ઇત્યાદિ અદ્ભૂત ઉપયોગી કાર્યો સાધ્યાં છે, અને આર્ય વિચારકોએ એજ ધ્યાનબળ વડે મુક્તિમાર્ગ સાધ્યો છે. એવું આ અદ્ભૂત શાસ્ત્ર બુદ્ધિશાળીઓએ-ખાસ કરીને ધર્મ ગુરૂઓએ-લક્ષપૂર્વક અને ક્રમસર શિખવા જેવું છે.

(૬) ધ્યાનથી આગળ વધતી એક સ્થિતિ 'કાયોત્સર્ગ'ની છે. એમાં કાયાને-સ્થુલ દેહને તદ્દન મુડદાલ બનાવી-'વોસીરાવી' સૂક્ષ્મ દેહો સાથે ઉચ્ચ પ્રદેશોમાં આત્માને લઈ જવાનું હોય છે. એ વખતે શરીર બળી જાય, છેદાઇ જાય તો પણ તેનું ભાન ન રહેઃ કારણકે જે 'મન'ને ભાન હોય છે, તે મન અથવા માનસિક શરિર આત્માની સાથે ઉચ્ચ પ્રદેશોમાં ઉપડી ગયું હોય છે. આને કોઈ '**સમાધિ**' પણ કહે છે. આ વિષય એટલો ઉંડો છે, કે એમાં માત્ર વાંચન કે તર્ક કામ કરી શકે નહિ; એ 'અનુભવ'નો વિષય છે; માટે એટલી યોગ્યતા વગરના મ્હારા જેવા પામરે આ બાબતમાં મૌનજ ભજવું જોઇએછે.

અપૂર્ણ

त्यागनुं नवुं स्वरुप अथवा हवे आपणने कइ जातना त्यागनी जरुर छे ?

લેખકઃ-અમૃતલાલ સુંદરજી પઢીઆર

(ગયા અંકથી ચાલુ.)

સ્વાર્થનું સ્વરૂપ.

સ્વાર્થ એ એવી મોટી વસ્તુ છે કે સારા સારા માણસોને પણ તે બહુજ નીચે ઉતારી દે છે અને ઘણી બાબતોમાં બહુ પછાત રાખી દે છે. જગતમાં કોઇપણ ગુન્હો એવો નથી કે જે સ્વાર્થમાં અંધ બનેલા મનુષ્યથી ન થાય! બધી જાતની વાસનાઓ મલિન પ્રકારના સ્વાર્થમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે. ખોટી ખોટી આશા તૃષ્ણાઓને આધારે દોડાવનાર સ્વાર્થ છે, સંકલ્પ વિકલ્પોના તરંગો ઉપર નચાવનાર સ્વાર્થ છે, બુદ્ધિને ઉંધે રસ્તે દોરી જનાર સ્વાર્થ છે, અને મનુષ્યના આત્માને કેદમાં નંખાવનાર સ્વાર્થ છે, એટલુંજ નહિ પણ સ્વાર્થને લીધેજ બધી જાતનાં પાપ થાય છે અને પાપને લીધેજ જન્મ મરણ થયા કરે છે. માટે યાદ રાખજો કે જન્મ મરણના ચક્કરમાં નાખનાર પણ સ્વાર્થ છે. આવા મજબૂત સ્વાર્થની ઉપર જો અંકુશ રાખી શકાય અને એવા પ્રબળ તથા સુક્ષ્મ સ્વાર્થને જો કાબુમાં રાખી શકાય તો એનુંજ નામ સાચોત્યાગ છે, કારણકે જો માત્ર ફક્ત એક સ્વાર્થજ કબજામાં આવી જાય તો બીજી અનેક બાબતો કાબુમાં આવી જાય છે, માટે स्वार्थ नाशस्तु वैराग्यम्:સ્વાર્થનો નાશ કરવો એનુંજ નામ વૈરાગ્ય. એ સૂત્ર હમેશાં યાદ રાખવા જેવું છે, અને તેમાં પણ હાલના જમાનામાં તો એજ જાતનો ત્યાગ આપણને કામનો છે, માટે હવે આપણે સ્વાર્થ ત્યાગ કરતાં શીખવું જોઇએ.

ત્યાગનો અર્થ અને ત્યાગનો હેતુ.

યાદ રાખજો કે લાગણીઓને મારી નાખવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, દેહનો નાશ કરવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, બુદ્ધિને બાળી નાખવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, સદ્દગુણોને …લતા અટકાવી નાખવા માટે કાંઇ ત્યાગ …થી, જીંદગીની મીઠાશ ખુંચવી લેવા માટે …ઇ ત્યાગ નથી, જીવનને શુષ્ક બનાવવા માટે …ઇ ત્યાગ નથી, બીજાઓને ગ્લાનિ ઉપજે તેવા બની જવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, જીવનને કષ્ટ આપવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, સ્નેહના અગ્નિને બુઝાવી નાખવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, જ્ઞાનના પ્રકાશનું ગ્રહણ કરી નાખવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, પોતાના દુઃખી ભાઇઓની મદદમાંથી ખસી જવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, જગતની આગળ વધતી ઉન્નતિને અટકાવવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, ઉત્તમતા છોડી દઇને જંગલી બની જવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, ચાલતા જમાનાને પાંચદશ હજાર વરસ પાછળના જમાનામાં ઘસડી જવા માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, અને માણસોને ઝાડ જેવા કે પત્થર જેવા લાગણી વિનાના જડ બનાવી દેવાને માટે કાંઇ ત્યાગ નથી, પણ યાદ રાખજો કે પાપને બાળી નાખવા માટે અને પુણ્યને મેળવવા માટે ત્યાગ છે. એટલે જેમ બને તેમ પુણ્ય મેળવવાની વધારેમાં વધારે તકો હાથમાં આવી શકે એવી જાતના ત્યાગની હવે આપણને જરૂર છે.

ત્યાગ શા માટે હોવો જોઇએ?

જગતના દરેક ધર્મવાળાઓએ તથા દરેક મહાત્માઓએ ત્યાગના વખાણ કરેલાં છે અને ત્યાગની ઇચ્છા રાખેલી છે, એનું કારણ શું? માણસમાંથી પત્થર બનવા માટે તેઓએ ત્યાગની ઇચ્છા રાખી હશે? નહિ, કદી પણ નહિ, પણ પાપને બાળી નાખવા માટે અને

પુણ્ય વધારવા માટે તેઓ ત્યાગની ઇચ્છા રાખતા હતાં, કારણકે જ્યારે પોતાના અંગત નાનકડા સ્વાર્થનો ત્યાગ થાય, ત્યારે અનેક જાતનાં પાપોમાંથી બચી શકાય છે. જેમકે ખાવાપીવાનાં પાપ, પહેરવા ઓઢવાનાં પાપ, સુવા બેસવાનાં પાપ, અવિદ્યા રૂપી વિષયો ભોગવવાનાં પાપ, અને ઇશ્વરી સગાઇ તોડી નાંખવાનાં પાપ વગેરે ઘણી જાતનાં પાપમાંથી બહુજ સહેલાઇથી બચી શકાય, તેમાટે કેટલીક જાતના ત્યાગ કરવાના હોયછે, પણ પાપ તજવું એટલુંજ કાંઈ ત્યાગનું કારણ નથી, **પણ પુણ્ય મેળવવું એ ત્યાગનો હેતુ છે,** અને એ પછી આગળ જતાં પોતાના અસલ સ્વરૂપ સુધી પહોંચવું એ ત્યાગનું તત્ત્વ છે, પણ એટલે સુધી પહોંચવું એ બહુ દૂરની વાત છે અને તે તો કોઈ મહાભાગ્યશાળીઓથીજ બની શકે છે, પણ પાપ તજવાં અને પુણ્ય મેળવવાં એ તો બહુજ સાદી અને બહુજ સહેલાઇથી બની શકે તેવી વાત છે. કારણકે ત્યાગ એ એટલી બધી મોટી વસ્તુ છે કે પાપનો નાશ એ તો તેની આગળ સ્વાભાવિક રીતેજ થઇ જાય છે અને પુણ્ય તો ત્યાગના પગમાં આવીને લોટે છે. આવું અજબ જેવું ત્યાગની અંદર બળ રહેલું છે અને એવો મહાન ત્યાગ ફક્ત પોતાના થોડાક નજીવા સ્વાર્થ તજવાથીજ થઇ શકે છે, માટે હાલના વખતમાં સ્વાર્થનો ત્યાગ એજ જાતના ત્યાગની આપણને ખાસ જરૂર છે, માટે હવે તો આપણે સમયને અનુસરતો અને ઘણા લોકોથી પાળી શકાય તેવો ત્યાગ કરતાં શીખવું જોઇએ.

નવા જમાનાનો નવો ત્યાગ.

બૌદ્ધના વખતમાં **મહાત્મા બુદ્ધ,** જેવો ત્યાગ પાળી શક્યા, તેવો ત્યાગ પાળવાનો હાલનો સમય નથી. કારણકે એ વખતે વનસ્પતિમાં જેટલાં ફળફુલો થતાં તેટલાં ફળફુલ આજે થતાં નથી. એ વખતે જંગલ ખાતાના "કાયદાઓ નહોતા", એ વખતે જમીનની માલિકી માટે સાધુએને ઝઘડા કરવા પડે તેવો વખત નહતો; એ વખતે ત્યાગીઓની તરફ લોકોની જે પુજ્યબુદ્ધિ હતી તેવી પૂજ્યબુદ્ધિ આજના વખતમાં નથી, એ વખતે ત્યાગ માટે જે જાતનું શિક્ષણ મળતું હતું; તેવું શિક્ષણ હાલનાં જોવામાં નથી, એ વખતે લોકોની તંદુરસ્તી જેવી સારી હતી તેવી હાલના વખતમાં લોકોની તંદુરસ્તી સારી નથી, એ વખતે માણસો જેટલી તિતિક્ષા સહન કરી શકતા તેવી તિતિક્ષા હાલના લોકો સહન કરી શકે તેમ નથી, એ વખતે ત્યાગીઓ ઉપર રાજાઓનો જેવો પ્રેમભાવ હતો તેવો પ્રેમભાવ આજે નથી. એ વખતે ધર્મને માટે જે જીવતી લાગણી હતી તેવી જીવતી લાગણી આજે નથી, પણ આજે તો **ધર્મને માટે માત્ર સાપ ગયા ને લીસોટા રહ્યા તેના જેવી લાગણી છે ને તેના જેવી સ્થિતિ છે.** બૌદ્ધના વખતમાં જેવું ત્યાગને માટે વાતાવરણ હતું તેવું વાતાવરણ આજે નથી. બૌદ્ધના ભિક્ષુકોને તેઓના ત્યાગ વખતે લોકો તરફથી જેવી મદદ મળતી હતી, તેવી મદદ આજના વખતમાં તેવા ત્યાગીઓને મળી શકે તેમ નથી અને બુદ્ધના વખતમાં ત્યાગના જેવા સખત નિયમો હતા તેવા સખત નિયમો હાલના જમાનામાં કોઇ પણ માણસથી પાળી શકાય તેમ નથી. **મહાત્મા મહાવીર સ્વામિનો** ત્યાગ પણ હાલના વખતમાં આપણને કામ લાગે તેમ નથી. "તારા ડાબા ગાલ ઉપર તમાચો મારે તેની આગળ તારો જમણો ગાલ પણ ધર. જે તારી પિછોડી લઇ જાય તેને તારો અંગરખો પણ આપી દે, અને જે ગાઉ વેંઢે પકડી જાય તેની સાથે એક ગાઉને બદલે બે ગાઉ ચાલ્યો જા," એવો જીસસ ક્રાઇસ્ટનો ત્યાગ પણ હાલના લોકો પાળી શકે તેમ નથી. મહાત્મા શંકરા-

ચાર્યનો ત્યાગ અને ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या એ સિદ્ધાંત પ્રમાણેની વર્તણુક હાલના પદાર્થવિજ્ઞાનના સમયમાં કામ લાગે તેમ નથી. અને એવીજ રીતે બીજા અનેક [illegible] મહાત્માઓના ત્યાગની રીતિ [illegible] વખતમાં બધા રૂપમાં આપણને અનુકુળ થઇ શકે તેમ નથી. કારણકે **સમય બદલાઈ ગયો છે.** રાજ્ય બદલાઇ ગયાં છે, ધર્મના વિચારોમાં ફેરફાર થઈ ગયો છે અને લોકોનાં શરીર અતિશય નાજુક બની ગયાં છે, એટલે વસ્ત્ર વિના ચલાવી લેવું, અન્ન વિના ચલાવી લેવું, પાણી વિના ચલાવી લેવું, સોબત વિના ચલાવી લેવું, ઘર વિના ચલાવી લેવું, "બિછાના વિના ચલાવી લેવું, મુસાફરી વિના ચલાવી લેવું, અને બહુ તો ભિક્ષાથી ચલાવી લેવું એવા નિયમો આજના જમાનામાં કામ લાગી શકે તેમ નથી. અને કદિ હઠ કરીને કોઈ માણસ એવા થોડા ઘણા નિયમો પાળે તો તેથી તેને કાંઇ ખરેખરો ફાયદો થઈ શકે તેમ નથી, એટલુંજ નહિ પણ એવા જુના કાળના નિયમો પાળનારની ઉલટી ખરાબી થાય છે. તેઓ જગતને ફાયદો આપી શકતા નથી, પોતાના આત્માનું કલ્યાણ કરી શકતા નથી અને માનસિક આનંદ ભોગવવાને બદલે માનસિક દુઃખ ભોગવીને તેઓ જલદી જલદી વિના મોતે મરી જાય છે, માટે એવા કમોતે મારનારા અને અંતરમાં વ્યથા આપનારા ત્યાગની જરૂર નથી, પણ અંતરમાં આનંદ આપે, આત્માનું કલ્યાણ કરે અને જગતની સેવા કરી શકે તેવી જાતના ત્યાગની હવે આપણને જરૂર છે. કારણકે જે વખતે પશ્ચિમનો પવન ચાલતો હોય, તે વખતે પણ પોતાના વહાણના સઢ અગાઉથી જેમ બાંધ્યા હોય તેમના તેમ બાંધેલા રાખના એ કાંઈ કામ લાગે નહિ. જે વખતે ભરતીનાં પાણી ઉતરી ગયાં હોય, તે વખતે ખાડીમાં ખૂંચી બેઠેલાં વહાણોને ચલાવવાની મહેનત કરવી એ નકામી છે. તેમજ સમય બદલાઈ ગયા છતાં, લોકોની પ્રકૃતિ બદલાઇ ગયા છતાં, પ્રજાના આચારવિચાર બદલાઇ ગયા છતાં, રાજ્યના કાયદાઓ બદલાઈ ગયાં છતાં, અને પ્રજાની ભાવનાઓ બદલાઈ ગયાં છતાં **હજારો વરસ અગાઉના ત્યાગને વળગી રહેલું તે, અને એ રીત પ્રમાણે** ચાલ્યા કરવું **એ કાંઇ વાજબી નથી,** પણ એ તો કુદરતની સામે થવા જેવું છે. અને જે કુદરતની સામે થાય તેને કોઇને કોઈ રૂપમાં **કુદરત** સખતમાં સખત શિક્ષા કરે છે. માટે યાદ રાખજો કે આપણો ત્યાગ કુદરતની વિરૂદ્ધ થવાનો ન હોવો જોઇએ, પણ કુદરતને મદદ કરી શકે તેવો હોવો જોઇએ, તોજ એ ત્યાગ નભી શકશે અને જો એવો ત્યાગ હશે તોજ જગતનાં ઘણાં માણસો એ ત્યાગનો લાભ લઈ શકશે, પણ તેને બદલે હાલના વખતમાં નહિ પાળી શકાય તેવો દુરાગ્રહી ત્યાગ પાળવામાં આવશે, તો તેથી ઉલટી ઘણી જાતની ખરાબી થશે અને ઘણા માણસો એવો ત્યાગ પાળી શકશે નહિ. માટે આપણે હવે આપણાથી હાલના વખતમાં પાળી શકાય તેવા ત્યાગની શોધ કરવી જોઈએ અને તેવો ત્યાગ પાળવાની કોશીશ કરવી જોઇએ.

જીંદગીને જરૂરની સગવડો સચવાય તેવો ત્યાગ રાખવાથી વધારે સેવા કરી શકાય છે.

બંધુઓ વિચાર કરો કે નહિ ખાવું એવા નિયમો લેવાથી વધારે કામ કરી શકાય કે દેહને પોષણ મળે તેવો સાદો ખોરાક ખાવો, મિતાહારી થવું, ન્યાયથી મેળવેલું ખાવું, જાત મહેનતથી કમાયેલું ખાવું, જ્યારે ખાસ જરૂર પડે ત્યારે ખાવું અને જે વખતે જે નિર્દોષ પવિત્ર ભોજન મળે તે ખાવું એવા નિયમો

પાળવાથી વધારે કામ કરી શકાય? અને તો લાગેછે કે જે માણસો ગજા ઉપરાંત ઉપવાસો કરે અને પોતાની ઇંદ્રિયોને શિથિલ કરી નાંખે, શરીરને વ્યાધિગ્રસ્ત બનાવી મૂકે, અને કેટલીક જાતની લાગણીઓને મારી નાખે તથા કેટલીક જાતની લાગણીઓ, જરા ધક્કો વાગતાં તૂટી જાય એવી ટાઇટ બનાવવી તે વધારે સારૂં, કે જે વખતે જે જાતનું શૂર કાઢવાની જરૂર હોય તે વખતે તે જાતનું શૂર કાઢી શકીએ અને જે વખતે જેમ વર્તવું હોય તેમ વર્તી શકે તે વધારે સારૂં ?

વસ્ત્ર પહેરવાં નહિ, અને ટાઢ, તડકો તથા વરસાદ ખમ્યા કરવાં અને તેમાં પણ કેટલાંક દુઃખો તો ઇરાદાપૂર્વક ચાહીને ખમવાં એ ત્યાગ વધારે સારો, કે દેહનું રક્ષણ થાય, બુદ્ધિ કાયમ રહે, વૃત્તિઓ શાંત રહે અને કામકાજ કરવાનું નવું બળ આવે તેવાં રૂતુઓને અનુકુળ સાદાં ને સસ્તી કિંમતનાં વસ્ત્રો પહેરવાં એ વધારે સારૂં ?

મકાનની અગવડને લીધે ઘણી જાતનાં કામો થઇ શકે નહિ અને પોતાના ઘણાએ સદ્‌ગુણોનો લાભ બીજાઓને આપી શકાય નહિ એવી સ્થિતિમાં રહેવું એ વધારે સારૂં કે અનુકુળ પડતી સાદી નાની જગ્યામાં ગુજારો કરી લેવો અને જેમ બને તેમ બીજા ઘણા લોકોને લાભ આપી શકાય તેવી જગ્યાએ રહેવું એ વધારે સારૂં ?

જંગલમાં જઇને વાઘ વરૂઓની દોસ્તી રાખવી અંગર કોઇ અંધારી ગુફામાં ઉદાસ જેવા થઇને બેસી રહેવું એ વધારે સારૂં કે પોતાના જાતિ દાખલાથી અને પોતાના જાતિ અનુભવથી લોકોની વચ્ચે રહી તેઓને સુધારવા એ વધારે સારૂં ?

ખાસ જરૂર હોય, છતાં પણ મુસાફરી કરવી નહિ અને રેલવે જેવાં વાહનોનો લાભ લેવો નહિ એ વધારે સારી વાત છે કે બિમાર માણસ હોય, ત્યારે ટ્રામમાં કે ઘોડાગાડીમાં બેસીને જલદીથી પહોંચવું એ વધારે સારી વાત છે ? જે મુલકમાં દુકાળ પડયો હોય, કોલેરા ચાલતો હોય અગર લડાઇ ચાલતી હોય તેવા દેશમાં આગબોટ, રેલવે કે વિમાન મારફત જલદીથી પહોંચી જવું ને ત્યાં જઇ સેવા કરવી, તેઓને દિલાસો આપવો [illegible] ધર્મજ્ઞાન વધે તેમ કરવું એ [illegible]રી વાત છે કે એવે વખતે પણ અમારાથી ગાડીમાં બેસાય નહિ, અમારાથી બીજાના હાથનું ખવાય નહિ, અમારાથી પૈસાને અડી શકાય નહિ એમ કરવું વધારે સારી વાત છે ?

આવીજ રીતે ત્યાગની બીજી અનેક બાબતો માટે સમજવાનું છે અને તેમાંથી એમ શીખવું જોઇએ કે બેચાર હજાર વરસ ઉપરનો ત્યાગ અંગ્રેજી રાજ્યના વખતમાં કામ લાગી શકે નહિ, પણ હવે તો આપણને **ઓનરેબલ માનવંત ગોખલેના** ત્યાગ જેવા ત્યાગની જરૂર છે. આઇના પૂત **મી૦ ગાંધીના** ત્યાગ જેવા ત્યાગની જરૂર છે. **પ્રોફેસર પ્રાંજપેના** ત્યાગ જેવા ત્યાગની જરૂર છે. અને સર્વન્ટ ઓફ ઇંડીઆ સોસાયટીમાં **મી૦ દેવધર, મી૦ જોશી, મી૦ ઠક્કર** વગેરેએ જેવો ત્યાગ કરેલો છે, તેવા સ્વાર્થનાશના ત્યાગની અત્યારે આપણા દેશને જરૂર છે. યાદ રાખજો કે હવેના લોકો કપડાંના રંગ સામે જોઇને ત્યાગની કીંમત કરનારા નથી, હવેના લોકો ઉપવાસ, એકટાણાં વગેરે સામે જોઇને ત્યાગની કીંમત કરવાના નથી, **હવેના લોકો** જટા, ભસ્મ કે માળાતિલક જોઇને ત્યાગની કીંમત કરવાના નથી, હવેના લોકો અમુક સ્તોત્ર બોલતાં આવડે તે ઉપરથી ત્યાગની કીંમત માની લે તેમ નથી, હવેના લોકો બહારના ઉપલકીયા નિયમો ઉપર રાજી થઇ જાય તેમ નથી અને હવેના લોકો વેશધારી ત્યાગીઓથી ઠગાઇ જાય તેમ નથી

પણ હવે તો લોકો સ્વાર્થત્યાગની સામે જુએ છે, હવે તો લોકો ત્યાગીઓનાં કામોની સામે જુએ છે, હવે તો લોકો એમ જુએછે કે એ માણુસ કેટલી શક્તિવાળો છે અને તેમ છતાં કેવી સાદાઈથી રહેછે ને કેવી. [illegible] ચલાવી લેછે તે સામે લોકો [illegible] લોકો એમ જુએછે કે જે માણુસ [illegible] કરે છે તેની અંદર સદ્‌ગુણો કેટલા [illegible] તેણે પોતાના માનસિક બળને કેટલું ખીલ[illegible] વેલું છે ? અને તેનું ચારિત્ર્ય કેવું છે ? એ સામે લોકો જુએ છે. કાંઇ તેના ત્યાગના બહારના રૂપ સામે જોતા નથી. આની રીતે લોકો પણ ડાહ્યા થઇ ગયા છે, સરકારી અમલદારો પણ ખોટા ત્યાગીઓની વિરૂદ્ધમાં છે, અને પોતાના સ્વાર્થનો ભોગ આપનાર વોલંટીયરોની (સ્વયંસેવકોની) તરફેણમાં છે. અને કુદરત પણ સ્વાર્થનો ભોગ આપનાર મહાત્માઓના ત્યાગની તરફેણમાં છે. માટે હવે **વીસમી સદીના** આ નવા યુગમાં આપણે આપણા **સ્વાર્થનો સાચો ત્યાગ શીખવો જોઇએ.** અને એ ત્યાગમાંથી આપણા આત્માનું કલ્યાણ થાય, આપણા દેશની આબાદી થાય અને આપણા બંધુઓનું ભલું થાય તેમ કરવું જોઇએ. જ્યારે આમ કરી શકીએ ત્યારેજ આપણે સાચો ત્યાગ શીખ્યા અને તે પાળ્યો એમ કહી શકાય, માટે ભાઇઓ અને બ્હેનો ! પોતાના **સ્વાર્થનો ભોગ** આપવાનો આવો સાચો અને સમયને અનુસરતો ત્યાગ શીખો અને એ ત્યાગથી પાપને બાળી પુણ્ય મેળવો એજ **મારી વિનંતિ** છે.

આ ત્યાગ એવો છે કે જે **જૈનોથી** બની શકે તેમ છે, હિંદુઓથી બની શકે તેમ છે, **મુસલમાનોથી** બની શકે તેમ છે, **પારસીઓથી** બની શકે તેમ છે, **ક્રિશ્ચિયનોથી** બની શકે તેમ છે, **યાહુદીઓથી** બની શકે તેમ છે, **બૌદ્ધોથી** બની શકે તેમ છે, **અંગ્રેજી ભાષા** બોલનારથી બની શકે તેમ છે, **ગુજરાતી** ભાષા બોલનારથી બની શકે તેમ છે, **રશીયન** ભાષા બોલનારથી બની શકે તેમ છે, **હોટેન્ટાટ** ભાષા બોલનારથી બની શકે તેમ છે, **અમેરિકાની** ઇન્ડિયન ભાષા બોલનારથી બની શકે તેમ છે, **રૂશિયાના** લોકોથી બની શકે તેમ છે, **ઇંગ્લાંડના** લોકોથી બની શકે તેમ છે, **હિંદના** લોકોથી બની શકે તેમ છે, **અમેરિકાના** લોકોથી બની શકે તેમ છે, **જાવાના** લોકોથી બનીશકે તેમ છે, **આફ્રિકાના** લોકોથી બની શકે તેમ છે, અને માત્ર હમણાંજ બની શકે છે એમ નહિ પણ હજારો વરસ પછી પણ સ્વાર્થ ત્યાગની વાતો બની શકે તેમ છે. અને હજારો વરસ પહેલાં પણ સ્વાર્થત્યાગ થતો હતો, માટે સ્વાર્થ ત્યાગનો જે ત્યાગ છે તે અનાદિ કાળનો સાચો ત્યાગ છે. માટે બંધુઓ ! હવે આખા જગતથી પાળી શકાય તેવો સ્વાર્થ ત્યાગનો સંન્યાસ લેતાં આપણે શીખવું જોઇએ અને આપણાં ભાઈ બ્હેનોને કહેવું જોઇએ કે હવે આ જમાનામાં તો આપણને સ્વાર્થનાશના ત્યાગની જરૂર છે. કારણ કે એ ત્યાગ સૌથી સહેલાઇથી બની શકે તેવો છે, માટે કદી બીજો વધારે ઉંચો ત્યાગ ન બને તો ફીકર નહિ પણ શરૂઆતનો **સ્વાર્થનાશનો** ત્યાગ **કરતાં તો શીખો!** જો એટલું શીખશો તો એમ.થી પણ આગળ જતાં ઘણોજ ફાયદો થશે અને એમાંથી ધીમે ધીમે વધારે ઉંચી જાતના ત્યાગમાં જઈ શકશો એમાં કાંઇ પણ શક નથી.



लोभी और फैय्याजी।

(एक उपदेशपूर्ण आख्यायिका)

[गतांकसे आगे]

शांतिदासः-देखो मैंने ऐसा सुना है कि किसनचंद चन्द्रकलाका विवाह रतनचंदके साथ करना चाहता है।

दयामयीः-(चौंककर) हैं ? क्या कहा ? क्या चन्द्रकलाका व्याह और रतनचंदके साथ ! अनर्थ ! बड़ा अनर्थ !! हाय ! मेरी बेटी चन्द्रकलाका विवाह और बुड्ढे रतनचंदके साथ ?

शांतिदासः-(शोकके साथ) हां ! मैंने ऐसा सुना है। पर देखो, मैं जाता हूं और इस बातकी ठीक तलाश करके आता हूं।

दयामयीः-हां जाओ ! और अगर यह ठीक हो तो किशनचंदको समझाना।

पाठको ! अभी तक आप शांतिदाससे अपरिचित हैं। हम आपको इनका परिचय कराते हैं। शांतिदास दयामयीके पति हैं। यह बड़े नेक, भले मानस, बुद्धिवान और दयालु पुरुष हैं। इनका ध्यान हरसमय कुरीतिनिवारण पर रहता है। यह जब किसीको दुखमें देखते हैं तो जहां तक इनसे बनता है उसका दुख दूर करनेकी कोशिश करते हैं। इन दोनोंका जोड़ा भी बहुत अच्छा मिला है जैसे " सोनेमें सुगंध " क्योंकि जैसे गुणवान यह हैं ऐसी ही इनकी पत्नी दयामयी भी है।

किशनचंद अपने कमरे में बैठा हुआ व्याहकी तैयारियां कर रहा था कि शांतिदास वहां पहुंच गये। इनको देखकर किसनचंद बोला—

किशनचंदः-ओहो ! आइए शांतिदासजी, अबके तो आपने बहुत दिनोंमें दर्शन दिये, कहिये कुशलमंगल तो है ?

शांतिदासः-आपकी कृपासे सब कुशल है। अवकाश न मिलनेसे न आसका सो मांफी मांगता हूं।

किसनचंदः-कहिये कैसे तकलीफ की ?

शांतिदासः-मैंने ऐसा सुना है कि आप चन्द्रकलाका व्याह रतनचंदके साथ करना चाहते हैं सो क्या सच बात है ?

किशनचंदः-हां ऐसा ही है....पर....

शांतिः-पर........क्या ?

किशनः-इसको गुप्त रखना ही ठीक है। मैंने यह इसलिये किया है कि रतनचंद एक बड़ा आदमी है। उसके यहां चन्द्रकला सुख पावेगी। और अपन भी....

शांतिदासः-मरा साला सुख। यह सुख काहेका ! यह तो एक प्रकारका दुख है। अरे ! तुम तो इतने बड़े हो ! क्या तुम्हारी अक्ल चक्कर खाने चली गई ? या

क्योंकि रु........आ........ग........ऐसा कह चुप होगया।

शांतिदासः-रु........आ....ग....क्या अहा हा! अब मैं समझा, ज़रूर दालमें कुछ काला है। तुमने कुछ पापमें भी कमर बांधी है और उससे तुम अपना निर्वाह करना चाहते हो। अरे! धिक्कार है तुमको! हाय! हाय! बेटी बेचते हो। राम२ ऐसा पापका कार्य! हाय! आग लगे इस लोभको! अरे! यह तुम्हारा सत्यानाश कर देगा। हाय! ऐसा पाप कभी मत करो। मेरे मनमें तो ऐसी आती है कि तुम्हारा मुंह नहीं देखूं। पर क्या करूं? बेचारी चन्द्रकलाकी दशा पर तर्स आता है। इसलिये तुम्हें समझाता हूं। अरे सुनो! यह कन्याविक्रिय ही सर्व कुरीतियोंकी जड़ है। और जातिका सत्यानाश भी इन्हीं कुरीतियोंकी वजहसे हुआ है। किसनचंद! मान जाओ और ऐसा अनर्थ करने पर उतारू मत होओ। देखो! उस बेचारी छोरीके गलेमें फांसी मत डालो। मेरा काम समझानेका है और मैं यही कहता हूं ऐसा पापका कार्य मत करो।

किसनचंदः-चाहे जो कहे जाओ। मैं तुम्हारी इन थोथीमें नहीं आनेका...... चुप होगया।

शांतिदासः-लोभी! (शांतिदास किसनचंदको लोभी कहकर पुकारने लगा) मैं समझ गया। पर मैं भी कहे देता हूं कि तूभी कीड़े पड़२ करके मरैगा। जो किसीकी बात भी नहीं मानता और अर्थ अनर्थ नहीं विचारता और अपनी आत्माकी ... ...ानी उस छोटीसी छोकरी चन्द्रकलाकी तरफ ध्यान नहीं देता और जानता पुछता कूएमें ढकेले देता है। हाय! मैं समझ गया, तुझ जैसे ही ज़िद्दवालों और लोभियों ही की वजहसे आज भारतवर्ष अथवा यों कहो कि जैन ज़ातिमें विधवाओंकी बढ़ावरी है। अरे! इन कुरीतियोंको बंद करना चाहिए या अपने पैरमें आप ही कुल्हाड़ी मारनी चाहिये? आज यही वजह है कि दस बरससे कमकी उम्रकी लड़की इस भारतवर्षमें हजारोंसे ऊपर विधवा मौजूद हैं। अरे पापी! ऐसा काम मत कर। मैं जानता हूं तू मेरी बात नहीं मानैगा। इसलिये अब ज्यादा तुझसे कहता भी नहीं। मैं क्या कहूं? मेरी तथा उस छोकड़ीकी आत्मा तुझे जन्म भर कोसेंगी जिससे तेरा सत्यानाश हो जायगा।

मैं अब तुझ जैसे पापीका मुंह तक नहीं देखना चाहता। ले! अब मैं जाता हूं। और अब तेरा मुंह भी नहीं देखूंगा। और न मैं तेरे यहां व्याह में भी आऊंगा। मुझे आजसे ही तेरे यहां पानी पीनेतककी शपथ है। मैंने तुझसे इतनीं बातें सिर्फ उस छोकड़ीकी, तथा तुझे अपना समझ कर तेरी भलाईकी ही की थीं। नहीं

मानता तो तू जान । जो तेरा जी चाहे सो कर ।

ऐसा कहकर शांतिदास वहांसे उठ गया और अपने घर जाकर दयामयीसे पूरा व्यौरा वृतांत कर कहा। सुन कर दयामयीने भी आन कर किसनचंदको बहुत समझाया पर सब निष्फल हुआ--जो कि हम यहां लिखना नहीं चाहते क्योंकि उसमें पाठकोंका बहुतसा समय नष्ट होगा।

उस लोभीने उन दोनोंकी उपदेश पूर्ण बातों पर ध्यान नहीं दिया। वह देता भी कहांसे ? वह तो एक चिकने घड़ेके तुल्य था। जैसे चिकने घड़े पर पानीकी बूंद नहीं ठहरती इसी तरह उस लोभी पर इन दोनोंकी उपदेश पूर्ण बातोंका कुछ भी असर नहीं हुआ। वह तो उस समय लोभमें अंधा हो रहा था।

अब आगे जो हुआ सो अब पाठकोंके अवलोकनार्थ लिखते हैं।

❋ ❋ ❋

चन्द्रकलाका विवाह रतनचंदके साथ हो गया। जिसका पूरा व्यौरा लिख कर हम पाठकोंका बहुतसा समय नष्ट करना नहीं चाहते, सिर्फ थोड़ेसेमें विवाहका हाल तथा उसके पीछे जो हाल हुआ सो लिखे देते हैं।

इस व्याहमें लोढ़ामलकी दोनों तर्फसे खूब पटी। उसकी पांचों उंगलियां घीमें रहीं। किसनचंद लोभीको रुपये मिल गये, लोढ़ामलकी भी मुट्ठी गरम की गई। रतनचंद फैय्याज़ीका भी मनोरथ पूर्ण हुआ। पंचोंको भी मिठाई उड़ानेको मिली। फिजूल खर्ची भी फैय्याज़ी साहबने पूरी२ की। रंडियें तथा भांड़ भी बुलाये गये और जिस समय मंदिरजीकी बात आई तो फैय्याज़ी साहबने थोड़ेसे रुपये देकर कहा कि साहब ,मेरी तो श्रद्धा इतनी ही है। पंच लोगोंने भी अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली और कानोंमें भी ठेकें लगाली। इस विवाहमें चूं तक नहीं किया। रतनचंद की वाह २ करने लगे। इस विवाह में शांतिदास, दयामयी, तथा और जो धर्मात्मा पुरुष थे उन्होंने अपना मुंह क्या बल्कि वह शहर ही छोडकर थोड़े दिन के लिये बाहर चले गये। क्योंकि अगर वहां रहते तो न मालुम कुछ आंखों में बल पड़ता। तमाम शहर इस व्याह में थूंथूं करने लगा। व्याह में इतना रूपया खर्च हुआ पर रंगत एक कौड़ी की भी न आई और सब करे कराये पर पानी फिर गया। पर वहां तो उन तीनों में से किसी को कुछ परवाही न थी।

अगर दुख हुआ तो बेचारी चन्द्रकला को या उसकी हमदर्दीवालोंको। सबका मीठा मुंह हो चुका था इसलिये कोइ भी नहीं बोला। बोलते भी कहां से ? क्योंकि जैसा कहा है--" चोरकी दाढ़ीमें तिनका " या जैसे Every body

has got fear इस मिसालको लिये हुए पंचोंने भी कुछ नहीं कहा, सब अपनी चुप्पी साधे बैठे रहे।

प्रिय पाठकों! इस विवाह से जो शांतिदास और दयामयीको दुख हुआ वह मेरी लेखनीसे बाहर है। यानी चन्द्रकलाको तो हुआ ही पर वहतो अभी अनसमझ थी।

शांतिदासने जोर देकर सभामें कुरीति निवारण पर कहा था। पर उस बेचारेकी कौन सुने? सच है "नगाड़ेकी आवाज़में तूतीकी आवाज़ कौन सुनता है?" पर हां, जो बेचारे धर्मात्मा पुरुष थे अथवा यों कहो जिनका भावी अच्छा था उन्होंने इस बातकी प्रतिज्ञा करली थी कि—

"जो कोई बेटी बेचेगा अथवा जो कोई रूपये देगा अथवा जो कोई ऐसे कार्यके बीचमें पड़ेगा उसके यहां जीमने क्या पानी तक नहीं पियेंगे"

और यही वजह थी कि इतने आदमी शांतिदासके साथ ब्याहमें क्या वह शहर ही छोड़कर थोड़े दिनोंको बाहर चले गये। बाहरसे आये तो सिवाय थोड़ा बहुत पंचोंको सुनाने के और कर ही क्या सकते थे?

दयामयी ने चन्द्रकलाको बहुत कुछ तसल्ली दी। क्योंकि अब सिवाय उपदेश के और वह देही क्या सकती थी? चन्द्रकला भी कुछ २ समझदार होने लगी थी वह भी अपनी मौसी दयामयीका उपदेश ग्रहण करने लगी थी।

[illegible]यामयीका स्त्रीशिक्षा पर सदैव ध्या[illegible] था और चन्द्रकला को वह हरसमय पतिप्रेम का ही उपदेश दिया करती थी।

❦ ❦ ❦

इन बातोंको गुजरे अरसा वरस डेढ़का होगया। इस बीचमें कोई नई बात नहीं हुई। आखिरको आज वह कम्बख्त दिन आही गया जिसका हाल हम प्रथम ही लिख चुके हैं जिस पर कि पाठकोंका दिल हिलोरे लैने लगा था यानी रतनचंद फैय्याजी अर्थात् चन्द्रकलाके पति इस दुनियासे कूंचकर गये। जिसे देखकर बेचारी दयामयी चन्द्रकलाकी अवस्था पर सिर पटक२ कर रो रही थी। चन्द्रकला बेचारी इन बातोंको क्या जाने? अभी उसमें पूरी समझ तो थीही नहीं। उसमें अपना तथा पराया पहचाननेका तो ज्ञान थाही नहीं। बेचारी सबके साथ में आप भी रौने लगी और फूट२ कर विलाप करने लगी—

हाय! मेरा इस दुनियामें कोई नहीं रहा। हाय! मैं क्या जानती थी कि ऐसा होनहार है! हे नाथ! मुझ अबलाको अब किसके भरोसे छोड़ कर चले गये? हे नाथ! ज़रा मुझसे बोल तो जाते। हाय!

शब्दों और कार्योंसे किस किस प्रकारके कर्म बंधते हैं उसका वर्णन विशद रूपसे किया गया है।

भावार्थ—कर्म सिद्धांत की जिस उत्तमतासे जैन धर्ममें व्याख्या की गई है वैसी और किसी मतमें नहीं पाई जाती। के[illegible] देनेसे कि क्रियाका नाम कर्म [illegible] समझमें नहीं आ सकता कि किस प्रकार कर्म बंधता है और किस प्रकार फल देता है। अतएव कुछ अन्य मतावलम्बियोंको यह आवश्यकता हुई कि कर्मका फल अर्थात् संसारी जीवोंको सुख दुख देनेका काम परमात्माके सपुर्द करें और परमात्माको उसके परम पदसे गिराकर संसारी आत्माके समान बनावें।

✣ ✣ ✣

तीसरा सिद्धांत जिससे जैनधर्मका महत्व प्रगट होता है परमात्माके स्वरूपके विषयमें है। कुछ मतवाले जैनधर्मको नास्तिक मत कहदेते हैं परंतु यह उनकी भूल है। निःसंदेह जैनधर्म इस बातको नहीं मानता कि समस्त आत्माओंसे भिन्न एक विशेष महान आत्मा है जिसने किसी समय जीव और पुद्गलको मिलाकर संसारको पैदा किया है और किसी समय इसका विनाश करदेगा। न जैन धर्म ऐसा मानता है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमें केवल एक ही आत्मा या ब्रह्म है कि जो निर्गुण है या जिसके गुणोंके विषयमें कुछ नहीं कहा जा सकता और उसने अपनी मायासे किसी समय विशेषमें जगतको बनाया है या स्वयं जगत् रूप हो गया है या जिसके केवल कहने मात्रसे संसार नास्तिसे अस्ति रूप हो गया और जब चाहे वह इसका नाश कर देगा? परमात्माका ऐसा स्वरूप जैनधर्म कदापि नहीं मानता। जैन धर्म यह सिखलाता है कि जो कुछ इस जगतमें है वह सदासे है और सदा रहेगा। कभी नाश नहीं होगा। इस धर्मका सिद्धांत यह है कि अस्तिसे नास्ति और नास्तिसे अस्ति कभी नहीं होता।

जिस वस्तुका अस्तित्व है वह नष्ट कभी नहीं हो सकती और जिस वस्तुका अस्तित्व ही नहीं है वह कभी उत्पन्न नहीं हो सकती, द्रव्य सदैवसे है और सदैव रहेगा। केवल उसकी पर्य्यायें बदलती हैं। इसीका नाम हम लोगोंने उत्पन्न होना और विनाश होना रख रक्खा है। वास्तवमें न कोई वस्तु उत्पन्न होती है और न कोई नष्ट होती है। केवल उसकी अवस्थाका उत्पाद व्यय होता रहता है। पर्यायकी अपेक्षा वस्तुका उत्पाद व्यय कहा जाता है। जैन धर्ममें द्रव्यके छह भेद हैं—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल। इनमेंसे जीवका स्वभाव ज्ञान है। पुद्गलका रस, रस, स्पर्श, गंध, वर्ण है। कालका स्वभाव वस्तुको परिवर्तना है। आकाशका जीव पुद्गलको स्थान देना है। धर्म जीव पुद्गलको गमन करनेमें सहायता देता है। अधर्म उनके ठेरनेमें सहायकारी होता है।

संसारमें जो परिवर्तन होते हैं वे इन छहों प्रकारके द्रव्योंके गुणों और उनके एक दूसरे पर असर करनेके कारणसे होते हैं। अतएव यदि इन छहों द्रव्यों और उनके गुणों तथा भिन्न भिन्न अवस्थाओंके समूहका नाम परमात्मा या ब्रह्म रक्खा है तो जैनधर्मको इसमें कुछ शंका नहीं। अथवा यदि सामान्य द्रव्यको कि जो अपने छहों भेदोंमें फैला हुआ है और जिसका लक्षण सत् है और जो अपने सत् होनेकी अपेक्षासे एक है, कुछ मतावलम्बियोंने

ब्रह्म माना है तो इसमेंभी जैनधर्मको कोई हानि नहीं। केवल नामका भेद है। उस द्रव्यको जैनधर्म भी मानता है परंतु जैनधर्म उसका नाम सामान्य द्रव्य वा सत्ता कहता है, ब्रह्म नहीं कहता। जैनधर्म ब्रह्म वा परमात्मा आत्माके वास्तविक स्वभावको कहता है। जैनधर्मानुसार आत्माका **वास्तविक स्वभाव** अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतवीर्य, अनंतसुख, वीतराग शुद्ध चेतनस्वरूप आदि है परंतु संसारी दशामें आत्माका यह वास्तविक स्वभाव **भावकर्म** तथा द्रव्यकर्मके संजोगके कारण अव्यक्त हो रहा है। जब भावकर्म द्रव्यकर्म आत्मासे पृथक हो जाते हैं, तो आत्माका वास्तविक स्वभाव अर्थात् परमात्मपद प्रगट हो जाता है। जैनधर्मानुसार वास्तवमें **आत्मा ही परमात्मा** है। आत्मासे भिन्न कोई दूसरा परमात्मा नहीं है, परंतु कर्मोंके आवरणके कारणसे उसकी वास्तविक दशा अव्यक्त हो रही है। कर्मोंका आवरण हटनेसे परमात्मस्वरूप जो प्रत्येक आत्मामें फैला हुआ है उस आत्मामें प्रगट हो जाता है और वह आत्मा परमात्मा होजाता है। प्रत्येक आत्मा शक्ति अपेक्षा परमात्मा है, परंतु वह आत्मा जिससे कर्मरूपी मैल दूर गया है शक्ति तथा उस शक्तिकी व्यक्ति दोनों अपेक्षाओंसे परमात्मा होजाता है।

परमात्मामें इच्छाका लगाना जैन धर्मके विरुद्ध है। जैनधर्म इच्छा व राग द्वेष आदिको आत्माका निजस्वभाव नहीं मानता किंतु ये गुण आत्मामें द्रव्यकर्मके सजोगके कारणसे पाए जाते हैं। पुद्गलका संजोग पूर्ण रूपसे आत्मासे पृथक् होनेसे ये गुण भी सर्वथा नष्ट हो जाते हैं और आत्माका निज स्वभाव प्रगट होजाता है। परमात्मामें उत्पन्न करने, विनाश करने तथा जीवोंको सुखदुख देने आदिके विशेषण लगानेसे परमात्माका सर्वज्ञपना कदापि नहीं रह सकता। जिसको भूत भविष्यत् वर्तमान [illegible] संपूर्ण पदार्थों उनकी समस्त पर्यायों सहित स्पष्ट दृष्टिगोचर होरहे हैं उसको किसी काम करनेकी इच्छा या आवश्यकता हो ही नहीं सकती। जैनधर्मानुसार परमात्मा सर्वज्ञ वीतरागी और कृतकृत्य है, **वह जगतका कर्ता हर्ता नहीं है**। परमात्मामें जगतके कर्ता हर्ता गुण माननेसे संसारी जीवको आत्मिक उन्नतिमें कुछ सहायता नहीं मिलती क्यूंकि यह कहा जाता है कि जब परमात्माने जगतको उत्पन्न किया है और सम्पूर्ण भोगविलासके सामान संचय किए हैं तो फिर संसारीजीवका उनसे अपने मनको हटाना कृतघ्नता है। और जब परमात्मा ही संसारके झगड़ोंमें फंसा हुआ है तो फिर संसारी जीव क्यों वे संसारके झगडोंमें फंसे?

भावार्थ-परमात्माको कर्ताहर्ता मानकर उसकी उपासना करनेसे संसारी जीव अधिक संसारके झगड़ोंमें फंसता है और अपने स्वभावको नहीं समझ सकता। इसके विपरीत सर्वज्ञ, वीतराग, परमानंद शांतरूप परमात्मा की उपासना करनेसे आत्माका निज स्वभाव प्रगट होता चला जाता है अर्थात् आत्मा आत्मिक उन्नति करता चला जाता है। अतएव जैन धर्ममें जो परमात्माका स्वरूप वर्णन किया गया है उससे परमात्माके अत्यंत आवश्यकीय गुण सर्वज्ञत्व तथा परमानंद आदि रहते हैं तथा संसारी जीवकी आत्मिक उन्नतिका भी कारण

होता है। और एक रीतिसे जैनधर्मके अनुसार भी परमात्माको संसारी जीवोंको सुखदुख देनेवाला कहसकते हैं।

बात यह है कि परमात्माकी बंदना उपासना करने, परमात्माके गुणानुवाद करनेसे संसारी जीवके शुभ कर्मोंका बंध होता है और वे शुभ कर्म उदयमें आकर संसारी जीवको शुभ फल अर्थात् सुख देते हैं परंतु इसके विपरीत परमात्माकी अविनय करनेसे, उसको बुरा कहनेसे, संसारी जीवके अशुभ कर्मोंका बंध होता है और वे अशुभ कर्म उदयमें आकर संसारी जीवको अशुभ फल अर्थात् दुख देते हैं। इसप्रकार व्यवहाररूपसे परमात्मा सुख दुखका देनेवाला कहला सकता है परन्तु वास्तवमें वह स्वयं यह विचार करके कि अमुक मनुष्यने मेरी पूजा अथवा अमुक मनुष्यने मेरी अविनय की, किसीको सुख दुख नहीं देता है। सुख दुख स्वयं कर्म जैसा ऊपर कहा जा चुका है, देता है। परमात्मा वीतरागी है। वह निश्चयमें न किसीको सुख देता है न दुख। केवल निमित्त कारणरूप व्यवहारमें परमात्माको सुख दुख देनेवाला कह सकते हैं और इसीप्रकार एक अर्थ विशेषमें परमात्मा संसारका कारण, संसारका कर्ता हर्ता भी कहला सकता है। व्यवहारमें जब किसी वस्तुके कई कारण होते हैं तो उन कारणोंमेंसे जो सबसे बड़ा कारण हो उसको ही उस वस्तुका कारण कह देते हैं। चूंकि छह द्रव्योंमें कि जिनसे सम्पूर्ण जगत बना हुआ है आत्मा सबसे बड़ा है इसलिए आत्माको जगतका कारण कह सकते हैं और आत्मा परमात्मा वास्तविक स्वभाव की अपेक्षा एक है, अतएव इस अपेक्षासे परमात्माको संसारका कारण कह सकते हैं।

वास्तवमें संसार क्या वस्तु है। आत्मा जो भाव कर्म तथा द्रव्य कर्मके कारण भिन्न भिन्न पर्यायोंको धारण करता है अर्थात् कभी किसी योनिमें जन्म लेता है कभी किसीमें, कभी वनस्पति होता है कभी तिर्यंच होता है, कभी मनुष्ययोनिको धारण करता है, कभी स्वर्गमें देवता होता है, कभी नर्कमें जाता है इसीका नाम संसार है और आत्मा स्वयं अपने भिन्न भिन्न शुभ अशुभ विचारों, शब्दों और कार्योंके कारण इस संसारको बनाता है और स्वयं ही जब कर्मोंका नाश करके निज स्वभावमें लीन हो जाता है, संसारका नाश कर देता है और चूंकि परमात्मा और आत्मा शक्ति वा निज स्वभावकी अपेक्षा एक हैं इस अपेक्षासे कहा जा सकता है कि परमात्मा संसारको बनाता और नाश करता है। जिस किसी प्राचीन ऋषी आचार्यने परमात्माको संसारका कारण, संसारका कर्ता हर्ता, जीवोंको कर्मफलदाता कहा है वह इस ही अर्थमें कहा है, नहीं तो निश्चयसे सर्वथा परमात्मा संसारका कारण, संसारका कर्ता हर्ता अथवा जीवोंको कर्म फलदाता नहीं होसकता है।

[दीपमन्ने].

श्रीमती ललिताव्हेननो गुजरातना भ्रमणनो रिपोर्ट.

તા. ૨-૧૦-૧૪ની ૨ત્રે મુંબાઈથી નીકળી તા. ૩જીએ સવારે અમદાવાદ પહોંચી અને ત્યાંથી તા. ૪ની સવારની ગાડીમાં બેસી ઈડર બપોરે ૧।। વાગે પહોંચી. રાત્રે શાસ્ત્ર વાંચ્યું. અને તા. ૫-૬ને દિને ત્યાંની માણેકબાઈ પાઠશાળાની ૧૫ કન્યાએની બાલબોધ જૈન ધર્મ ૧-૨-૩ ભાગ, દર્શનપાઠ, આલેચનાપાઠની પરીક્ષા લીધી. ભાઇ નાથાલાલ અધ્યાપક સારી રીતે ખંત રાખી સાથ શીખવે છે તેથી પરીક્ષાનું ફળ ઉત્તમ આવ્યું. તેમજ મેનાબાઈ સારી રીતે દેખરેખ રાખે છે તેને માટે એ બન્નેને ધન્યવાદ ઘટે છે. ત્યાંના શેઠીયાઓને મળવાથી ત્યાંના ઉદાર ભાઇઓ તરફથી શ્રાવિકાશ્રમને રૂા. ૪૬)ની મદદ મળી. તા. ૭મીએ ડુંગરપર પુજા કરી અને શ્વેતાંબરી પાઠશાળા જોઇ, ત્યાં એવો ઠરાવ છે કે દરેક સ્ત્રીએ ત્યાં હાજરી આપવીજ જોઇએ. અક્ષરજ્ઞાન ન હોય તો પણ ત્યાં જઇને મોઢે કાંઈ બોલ લે અને અને એક સામાયિક કરીને પાછી જાય અને ન જાય તેની પાસે એક પાઈ દંડ લેવામાં આવે છે. ત્યાર બાદ ૩થી ૪।। વાગા સુધી આપણી પાઠશાળામાં સભા કરી સ્ત્રી કર્તવ્ય વિષે ભાષણ આપ્યું જેમાં આશરે ૫૦ સ્ત્રીઓ હાજર હતી. આ પ્રસંગે પાઠશાળાની બે બાળિકાએ 'વિનય' અને 'વિદ્યા' ઉપર લેખ વાંચી સંભળાવ્યો હતો.

તા. ૯-૧૦-૧૪ને રોજે મેનાબાઇને સાથે લઇ વડાલી જઈ, અમીઝરા પાર્શ્વનાથની યાત્રા કરી. વડાલીથી તા. ૧૦નાએ ખેડબ્રહ્મા આવીને ઉંટની સવારીએ ત્રણ કોશ દેરોળ આવ્યાં. અહીં ત્રણ દેહેરાં ઘણાં જઉત્તમ શીખરબંધ છે અને જૈનના ઘર ૧૫ છે. રાત્રે સભા કરી. દરેક સ્ત્રી પુરૂષે હાજરી આપી હતી. સર્વની પાસે નમોકાર મંત્ર બોલાવ્યા તે ઘણા અશુદ્ધ હતા તે સુધારવાને કોશીશ [illegible]થી સુખ અને પાપથી દુઃખ' [illegible]ણ કર્યું તે ઉપરથી એવો ઠરાવ [illegible]મથી બ્હેન સામાયિક કરે તે સર્વે એ સાંભળવું અને ભાઇચંદભાઇ શાસ્ત્ર સભા કરે તે સર્વેએ સાંભળવા આવવું. બીજે દીવસે મેનાબાઈના ભાઈ જાદવજીભાઇ દેરોળના કામદાર છે તેમના પ્રયાસથી શ્રાવિકાશ્રમને રૂ.૪પાની મદદ ત્યાંના મહાજન તથા સરકાર મળીને મળી અને બે દિવસ શાસ્ત્ર સભા કરી.

તા. ૧૩મીએ કડીયાદરા ગયાં. અત્રે ૧૨ ઘર જૈનનાં અને એક મંદિર છે. અત્રેના લોકાને ધર્મ પર ભાવ સારો છે. આચાર વિચાર સારા છે, પણ સ્ત્રીઓમાં અજ્ઞાનપણું છે. એક છોકરાનું મરણ થયું હતું તેથી સભા થઇ શકી નહીં. અત્રે અમર્યાદાથી રડવા કુટવાનો રિવાજ જોઇને ઘણો ખેદ થયો અને ત્યાંના શેઠને સુચના કરી કે આ રીવાજ નાબુદ થાય તેવો પંચમાં ઠરાવ કરવો જોઇએ. તેમણે કબુલ કર્યું છે કે એ ઠરાવ વિષે પંચ મળશે ત્યારે ઠરાવ કરાવીશું. આશ્રમને રૂ. ૧૬)ની મદદ મળી.

તા. ૧૪મીએ ચોરીવાડ ગયાં. ત્યાં એક દેહરૂં શીખરબંધ અને વિશાળ જગ્યાવાળું છે અને જૈનના ઘર ૨૦ છે. બે દિવસ ધર્મનો ઉપદેશ કર્યો અને અમર્યાદાથી કુટવાને માટે ત્યાંના શેઠને કહ્યું કે બંધ કરવો. તેમણે કબુલ કર્યું કે પંચ મળશે ત્યારે જરૂર આ ઠરાવ ચર્ચાવીશું. આશ્રમને રૂા. ૧૦)ની મદદ મળી, તેમજ ચોરાસણ તા. ૧૬ને દિવસે

આવ્યા. અત્રે એક મંદિર શીખરબંધ તથા જૈનના ઘર ૪ છે, તેમને પણ ઉપર પ્રમાણે સુચના કરી અને તેઓએ કબુલ કર્યું. રૂા. ૩ાાની મદદ મળી.

તેજ દિવસે પાછાં કડીયાદરે આવ્યાં અને બેલગાડી કરીને સાંજના ગોરળ [illegible] એક દેહરૂં અને જૈનના ઘર ૨૫ [illegible] પણ પાંચ દિવસ રહ્યાં. શાસ્ત્રસભા [illegible] મર્યાદાથી કુટવાને માટે તથા રજસ્વાલા ધર્મમાં કેમ વર્તાવ કરવો તેને માટે વિવેચન કર્યું અને અત્રેની બ્હેનોએ અમર્યાદાથી કુટવું નહીં એ નિયમ લીધા. આશ્રમને રૂ ૨૬ાાની મદદ મળી.

તા. ૨૨મીએ મુડેટી ગયાં. ત્યાંથી ત્રણ ગાઉ પર ચિંતામણીની યાત્રા કરી આવ્યાં. રાત્રે શાસ્ત્રસભા કરી અને શ્રાવિકાશ્રમને રૂ ૨૩) ની મદદ મળી તા. ૨૩મીએ પાછાં ગોરળ આવ્યાં. ત્યાંથી તા૦ ૨૪. મીએ પાછા ઈડર આવ્યાં. તા. ૨૬મીએ એક સભા કરી ૭ આવશ્યક પર ભાષણ આપ્યું અને ઇડરની પાઠશાળાનાં વિદ્યાર્થીઓને રૂા. ૧૫ાા) ઈનામની ભેટ તરીકે શ્રાવિકાશ્રમ મુંબઈ તરફથી આપ્યા, તેમાં રૂા. ૩ાાની તેજ વખતે મીઠાઇ વેંચી અને રૂા. ૧૨)નું ઇનામ ૭ મહીના પછી વેંચાય તે પ્રમાણે કબુલ કરાવ્યું. એક બાઇએ કંદ મૂળ તથા એક બાઇએ અમર્યાદાથી કુટવાનો ત્યાગ કર્યો.

તા. ૨૭મીએ પ્રાંતિજ આવી રાત્રે શાસ્ત્ર સભા કરી અને તા. ૨૮મીએ બપોરે ૧ાાથી ૪ાા શ્રાવિકાશ્રમની બાઇઓની પરીક્ષા લીધી. એ વિધવા બાઇઓને છ; ઢાળા, પૂજન, બાળબોધ જૈન ધર્મ ૧-૨-૩ ભાગ વિગેરે પરચુરણ જ્ઞાન છે તથા બે કન્યા બાળબોધ ૧-૨-૩ ભાગ જાણે છે. આ ખાતું ચાલતું રહે તો ઘણું સારું, પણ ખેદની વાત છે કે પાસેના ગામની બાઇઓ લાભ લઇ શકતી નથી તેથી એવું સંભળાય છે કે આ ખાતું બંધ પડશે.

તા. ૨૮મીએ સાંજે ઓરાણ ગઈ. અત્રે એક જૈન મંદિર તથા દશાહુમડની ઘર સંખ્યા ૫૦ની છે. કેટલીક બ્હેનો સાથે સામાયિક દર્શનાદિ નિત્ય કર્મ કર્યું. ત્યાર બાદ એ મંદિરમાં દરરોજ લલ્લુભાઇ રાયચંદ શાસ્ત્ર સભા કરે છે અને તેનો લાભ રોજ [illegible] માણસ કે તેથી પણ વધુ લઈ શકે છે, ત્યાં બેસી રત્નકરંડનો સ્વાધ્યાય સાંભળ્યો. દિનપરદિન સર્વ જૈની ભાઇઓનો તથા બ્હેનોનો ઉત્સાહ ઘણોજ વધતો જોવામાં આવે છે. તપાસ કરતાં માલમ પડયું કે ૭ માસ પહેલાં કાંઇ પણ જાગૃતિ નહોતી, પણ ૭ માસથી પાઠશાળા ખુલી છે ત્યારથી દરરોજ અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજન, પાક્ષિક સભા તથા થોડા ભાઇ શિવાય સર્વે ભાઇઓ સ્વાધ્યાય કરે છે. તા. ૨૯મીએ સર્વે ૪૫ બાળકોની ૭ માસીક પરીક્ષા મારી પાસે લેવડાવી તેનું પરીણામ ૮૦ ટકા આવ્યું. આ વિદ્યાર્થીઓને બાળબોધ જૈન ધર્મ ૧-૨ ભાગ, દર્શન પાઠ, નિર્વાણ કલ્યાણક ૧, આલોચના પાઠ, ઈષ્ટ છત્તીસી, તથા જૈન બાલગુટકામાંથી પુન્ય પુરૂષની કથની સાથે શીખવવામાં આવી છે, તેથી ઘણોજ આનંદ થાય છે અને એ માટે માસ્તર લલ્લુભાઇને તથા અત્રેના ઉત્સાહી ભાઇઓને તેમજ ખંત રાખી શીખનાર વિદ્યાર્થીને જેટલો ધન્યવાદ આપીયે એટલો ઓછો છે. વળી ઓરાણથી એક કોસ પર સીતવાડા ગામ છે ત્યાંથી બે બાઇઓ રોજ શીખવને આવે છે તેને પણ ધન્યવાદ ઘટે છે. રાત્રે ૮ વાગે સદાઉનાસુવાડાવાળા શા. નેમચંદ કંકુચંદના પ્રમુખપણા નીચે સભા કરી તેમાં સંખ્યા આશરે ૨૫૦ ની હતી. મેં "જ્ઞાનથી કુરીતિ નિવારણ થાય છે" એ વિષયપર ભાષણ કર્યું અને તેનું અનુમોદન શા. લલ્લુભાઈ અધ્યાપકે કર્યું, તેપરથી સીતવાડાવાળી કેટલીક બ્હેનોએ છાણુ નહીં થાપવું તથા અમર્યાદાથી નહીં કુટવું એના નિયમો લીધા અને શ્રાવિકાશ્રમને રૂ. ૨૬ાાની મદદ મળી. પ્રમુખે પતાસાની પ્રભાવના કરી. સભા ૧૧ વાગે વિસર્જન થઈ હતી.

બોરાણથી તા. ૩૦મીએ લાકરોડા ગયાં અને રાત્રે સભા કરી. 'ઉન્નતિ કેમ થાય' એ વિષે પ્રથમ લલ્લુભાઈએ તથા ત્યાર બાદ મેં ભાષણ કર્યું. શ્રાવિકાશ્રમને રૂ. ૨૬ાની મદદ મળી. અત્રે દશા હુમડની ઘર સંખ્યા ૨૧ને કુલ સંખ્યા ૧૦૧ છે. તા. ૩૧ મીએ અત્રે શેઠ માણેકચંદજીના સ્મારક માટે ઉઘાડેલું **પુસ્તકાલય** જોયું. એની વ્યવસ્થા તથા નિયમો ઘણા સારા છે એના ૩૫ મેમ્બર, એક સેક્રેટરી, એક પ્રેસીડેન્ટ તથા પંચ સંભાળ રાખે છે. અત્રે સર્વે ભાઈઓ સ્વાધ્યાય કરે છે. સાંજના શાસ્ત્રસભા થાય છે.

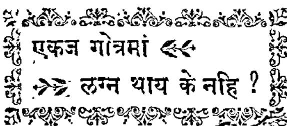
લાકરોડાથી બોરાણ થઈ તા. ૩૧ મીએ પ્રાંતીજ આવી અને શ્રાવિકાશ્રમને રૂ. ૯ાા ની મદદ મળી તથા એક બે બાઇએ નમોકાર ગણવાના તથા હાંલ્લામાં ન **રાંધવાના** નિયમ લીધા. પ્રાંતીજથી તા ૧–૧૦–૧૪ ને દિને અમદાવાદ એક રાત રહી ત્યાંથી બોરસદ એક રાત રહીને તા. ૪ થીએ દાવેલ આવી. અહીં અમારા શ્રાવિકાશ્રમની વિદ્યાર્થી બાઇ હરકોઇની તબીયત જરા અશક્ત હતી તેથી તેને ઉપદેશ સંભળાવવાને ૧૧ દિવસ રહી અને જ્યાં સુધ રહી ત્યાં સુધી દરરોજ સ્ત્રી પુરૂષોની એકઠી શાસ્ત્રસભા દહેરામાં કરતાં હતાં અને બે ત્રણ દિવસ ફક્ત સ્ત્રીઓનીજ શાસ્ત્રસભા કરી હતી. શ્રાવિકાશ્રમને રૂ. ૧૩) ની મદદ મળી. અને સર્વ સ્ત્રીઓએ અમર્યાદાથી ન કુટવું એવા નિયમો લીધા. તથા કેટલીક બેહનોએ દર્શન, નમોકાર મંત્ર ગણવાના નિયમ લીધા.) તા. ૧૩ મીએ બોરસદ આવી. સ્ત્રીઓની સભા ત્રણ દિવસ થઈ અને રાત્રે શાસ્ત્ર સભા થઇ. અને છ આવશ્યક વિદ્યા અને **સ્ત્રીઓની ઉન્નતિ કેમ થાય** એ વિષયો–પર ભાષણ કર્યું અને રાત્રે ઉપદેશરત્નમાળાનો સ્વાધ્યાય કરતાં હતાં. ત્યાંથી શ્રાવિકાશ્રમને રૂ. ૨૩ાા ની મદદ મળી અને અત્રેની કેટલીક બ્હેનોએ સ્વાધ્યાયના, દર્શનના, નમોકર ગણવાના તથા રાત્રીભોજન ત્યાગના તેમજ કંદમુળત્યાગના નિયમ લીધા.

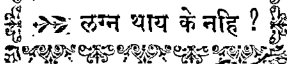
તા. ૧૯ મીએ વડોદરે આવી. અત્રે જૈન પાઠશાળા છોકરાઓની હતી તેનાજ પેટામાં [illegible] વર્ષ ૧ થી ખુલી છે તેમાં [illegible] હતાં અને પાંચ તેમાંથી સાસરે [illegible] થી સંખ્યા ૧૩ ની હતી, તેની પરીક્ષા લીધી. તેઓ દર્શનપાઠ કલ્યાણક વિગેરે જાણે છે અને થોડું અક્ષરજ્ઞાન થયુંછે. અત્રે શ્રાવિકાઓને ભણાવવાને એક સીનીયરમાં પાસ થવલી બાઇ રાખવામાં આવી છે અને છોકરાઓને માટે એક બ્રહ્મણ છે તેઓ જૈન ધર્મમાં પ્રવીણ અને ભક્ત છે. તેઓની પાઠશાળા પર સારી દેખરેખ છે, એટલુંજ નહીં પણ સ્ત્રીઓની પાઠશાળામાં એમનાં પત્ની પણ સારી મહેનત લે છે. શિક્ષક બાઈ રજા પર હોયતો ભણાવવાનું કામ પણ કરેછે. તથા આ પાઠશાળાના સેક્રેટરી માણેકલાલભાઈ, નાનચંદભાઇ તથા ભોગીલાલભાઈ ઘણા ઉત્સાહી છે. આ પાઠશાળાનું સ્થાયી ફંડ ૧૧૧) નું છે. તથા માસિક આવક ૨ાા ની છે, તે બે પાઠ–શાળાને માટે ઘણીજ ઓછી છે માટે ધન–વાન ભાઇઓએ આ ખાતાને મદદ આપવી જોઇએ.

વડોદરેથી તા. ૨૧–મીએ **અંકલેશ્વર** ગઈ અને ત્યાંથી તા. ૨૮–૧૧–૧૪ ને દિને મુંબાઈ આવી હું જ્યાં જ્યાં ફરી ત્યાંના ભાઈઓને અમર્યાદાથી સ્ત્રીઓ કુટેછે તેને વિષે પંચમાં ઠરાવ કરાવવાને સુચના આપી છે તે તે ભાઇઓએ ધ્યાનમાં રાખવું એવી મારી નમ્ર પ્રાર્થના છે, જેથી સ્ત્રીઓનો મુખ્ય ગુણ લજ્જા કાયમ રહે અને શીલની રક્ષા થાય.

સમાજસેવિકા–**શ્રીમતી લલિતાબ્હેન**
શ્રાવિકાશ્રમ––મુંબાઈ.







(લેખક—હરજીવનભાઈ રાયચંદ



સદરહુ વિષયમાં કાંઈક જાહેર ચર્ચા ઉઠાવવાની ઘણા વખતથી ઈચ્છા હતી, પણ બની શકતું નહોતું હાલમાં 'जैनमित्र' પત્રના ૧૬ મા વર્ષના ૧-૨ અંકમાં **"गोत्रीय चर्चा (शंका)"** એ મથાળા નીચે એક લેખ કુશળગઢ નિવાસી રા. રૂપચંદ અચરજલાલે હિન્દી ભાષામાં લખ્યો છે, અને મારો અભિપ્રાય પણ તેમના તરફ ઢળતો હોવાથી પ્રથમ આ નીચે તેનું ગુજરાતી ભાષામાં ભાષાન્તર આપવામાં આવે છે.

"આજકાલ ઘણે ભાગે એમ જોવામાં આવે છે કે **એક ગોત્રમાં પરસ્પર વિવાહ થતો નથી.** દાખલા તરીકે ગર્ગ ગોત્રના છોકરાનો વિવાહ તેજ ગોત્રની છોકરી સાથે થઈ શકતો નથી. પાટની ગોત્રની છોકરીનો વિવાહ પાટની ગોત્રના છોકરા સાથે થઈ શકતો નથી ઇત્યાદિ પરન્તુ આ વિવાહ **સંબંધ નહિ થઈ શકવાનું કાંઈ ખાસ પ્રબળ કારણ દેખાતું નથી.**

આ લેખ લખનારે આ બાબતમાં કેટલાક માણસો સાથે વાતચીત કરી છે પણ તેનો જુવાબ એવો મળ્યો છે કે—"એક ગોત્રના મનુષ્યો એ ભાઈઓ છે —છોકરા છોકરીનો વિવાહ તેથી ભાઈબ્હેનના વિવાહ જેવો છે. માટેજ એક ગોત્રમાં વિવાહ થઈ શકતો નથી, પણ આ ઉત્તર મારા મનમાં બરોબર ઠસતો નથી, કારણકે પ્રથમ, તો એજ બીચારવું જોઈએ કે આ ગોત્રો શી રીતે બંધાયાં ? જો મારી ભૂલ ન થતી હોય તો હું કહી શકું છું કે આ ગોત્રોમાંનાં કેટલાકની ઉત્પત્તિ તો એક ગામમાં રહેવાથી થઇ છે. જેમકે **પાટણમાં** રહેનારા **પાટણી.** કેટલાકની ઉત્પત્તિ ઋષિના ઉપદેશથી થઈ છે. જેમકે ગર્ગ ઋષિનો ઉપદેશ માનનાર ગાર્ગીય કહેવાય છે. કેટલાકની ઉત્પત્તિ વ્યાપારથી થઇ છે જેમકે સોની, લુહાર, ઈત્યાદિ,

હવે અહીં વિચારવાનું એ છે કે આ ગોત્ર બંધારણનાં કારણોમાંનું કોઈ પણ કારણ પરસ્પર વિવાહ અટકાવે એવું સબળ નથી. શું આજકાલ એકજ ગામમાં રહેનારા પોતાનાં સંતાનોના વિવાહ નથી કરતા ? એકજ ગુરૂનો ઉપદેશ માનનારા પોતાનાં પુત્ર પુત્રીઓનાં પરસ્પર લગ્ન નથી કરતાં ? એકજ વેપાર કરનારા પોતાનાં છોકરાંનો લગનસંબંધ નથી કરતાં ? જો આ બધાનો જવાબ "કરેછે" એમ હોય તો આજ કારણોથી ઉત્પન્ન થયલાં ગોત્રોનાં માણસો પોતાનાં સંતાનોનાં માંહોમાંહ્ય લગ્ન કેમ ન કરી શકે ? આનો ઉત્તર "અમારા મોટા પુરૂષો કરતા આવ્યા છે એમ અમે કરીએ છીએ" એ સિવાય અન્ય કાંઈ નથી.

આ તુચ્છ લેખકની વિનંતિ છે કે આ **ગોત્રકલ્પનાને નષ્ટ કરવી જોઈએ** અને કોઇ પણ જૈની—પછી તે ગમે તે જ્ઞાતિ અને ગમેતે ગોત્રનો હોય તોપણ—**પોતાના કુટુંબનો ન હોય તેવા માણસ સાથે જરા પણ અડચણ વિના વિવાહ સંબંધ કરી શકે એમ થવું જોઇએ.**

કુટુંબની ઓળખાણ માટે પણ ગોત્રકલ્પના અકારણ છે. કારણ કે એક ગોત્રવાળા બધા એક કુટુંબી છે, એ વાતનું નિરાકરણ ઉપર થઈ ગયું છે.

આ ઉપરાંત **'પદ્માવતી પુરવાર'** નામની જ્ઞાતિમાં ગોત્ર ન હોવાથી તે જ્ઞાતિમાં કુટુંબની બહાર વિવાહ સંબંધ થઈ શકે છે.

વળી હુમડ જ્ઞાતિમાં એવી રીતિ છે કે આત્રેશ્વર ગોત્રનો મનુષ્ય માત્રેશ્વર ગોત્ર વાળાને ત્યાં દત્તક તરીકે જાય, પછી તેના સંતાન પોતાના પિતાના મૂળ ગોત્ર આત્રેશ્વરમાં લગ્ન સંબંધ કરી શકે.

આ ઉપરાંત આ ગોત્રકલ્પના પ્રાચીન નથી કારણકે શાસ્ત્રોમાં એ વિષેનો કોઈ પણ જગાએ ઉલ્લેખ જોવામાં વા સાંભળવામાં નથી આવ્યો, ત્યારે હવે એમ વિચારો કે જે વખતે આ ગોત્રકલ્પના ન હતી ત્યારે શું વિવાહ સબંધ માંહોમાંહ્ય નહિ થતા હોય? અને જો થતા હતા તો તે સ્વકુટુંબમાંજ થતા હશે ?

આથી સાબીત થય છે કે ગોત્રકલ્પના શિવાય પણ કુટુંબની ઓળખાણ થઇ શકે છે. કારણકે પોતપોતાનું કુટુંબ સર્વ ઓળખે છે.

વાંચક ! **જૈનીયોની સંખ્યા** દિન પ્રતિદિન ઘટતી જાય છે અને તે એટલે સુધી કે જો થોડા દિવસમાં એનો ઉપાય નહિ કરવામાં આવે તો, એ જાતિનું નામ નિશાન પણ નહિ રહે. જ્ઞાતિના ઘટાડાનાં કારણોમાં બીજા કારણો ઉપરાંત ગોત્રકલ્પના પણ એક પ્રબળ કારણ છે, કારણકે એમ જોવામાં આવ્યું છે કે કોઇ કોઇ જ્ઞાતિમા માત્ર ૭ કે સાતજ ગોત્ર રહ્યાં છે, જેથી કરીને યોગ્ય વર કન્યાનું જોડું મળવુ એ ઘણે ભાગે અસંભવિત છે. અને જ્યારે યોગ્ય જોડું નથી મળતું ત્યારે કેટલો અનર્થ થાય છે તેનો વાંચક જાતેજ વિચાર કરે.

"બધા ભાઇઓને મારી પ્રાર્થના છે કે આ વિષયપર તેઓ સારી રીતે વિચાર કરે અને જો આ વિષયમાં મારી સમજણમાં ભૂલ હોય તો શાંતિપૂર્વક આ પત્રમાં ઉત્તર આપવાની કૃપા કરે."

ઉપરનો લેખ મારા સઘળા ગુજરાતી ભાષા જાણનાર દિગમ્બર જૈન બંધુઓને અને ખાસ કરીને મારી જ્ઞાતિના એટલે **નૃસિંહપુરા** ભાઇઓને હું લક્ષપૂર્વક વાંચવાની ભલામણ કરું છું. ગુજરાતના બીજા દિગમ્બર ભાઇઓની [illegible] માં ગોત્ર છે, કઈ જ્ઞાતિમાં નથી અને [illegible] માં જેટલાં જેટલાં ગોત્ર હોય તેની કુલ સંખ્યા અસલ કેટલી હતી, હાલ કેટલી છે અને તેમાંથી જેટલાં ગોત્રના નામ મળી આવે તેટલાં નામો પણ જો આ પત્રમાં પ્રસિદ્ધ થાય તથા તેની ઉત્પત્તિ વિષે જે કાંઇ દંતકથા અથવા બીજો આધાર મલી આવતો હોય તો તે આ પત્રમાં આ ચર્ચાને અંગેજ જાહેરમાં મુકવાની મારી વિનતી છે. એ હકીકતો જાહેરમાં આવવાથી પરસ્પરનો સંબંધ અને **ઐતિહાસીક અનુમાનો** જાણવાને અને સમજવાને ઘણી સુગમતા મળશે તથા આ જે વિષયની ચર્ચા ઉપાડી છે તે ચર્ચાને પણ આગળ વધારવાને સુગમ રસ્તો થશે હમારી **નૃહસિંહપુરાની** ન્યાતિમાં ૨૭ ગોત્ર છે અને **તેનાં નામ** આ પ્રમાણે છે.

નૃહસિંહ પુરાના ૨૭ ગોત્રો

૧ ખડનર ૨ કુલપગાર ૩ ભીળણહોરા ૪ રયણપારખ ૫ અભથીયા. ૬ ભદ્રપસાર ૭ ચીભડીયા. ૮ પ્રગલમથા. ૯ પદમહ, ૧૦ સુમનોહર. ૧૧ કલસધર, ૧૨ કંકુલોર ૧૩ બોરઠ ૧૪ સાંપડીઆ ૧૫ તેલીયા ૧૬ વલોગા ૧૭ ખેલન ૧૮ ખાંભી ૧૯ હરસેલ ૨૦ નાગર ૨૧ જશોહર ૨૨ જડપડા ૨૩ બોરાડ ૨૪ કંથારીયા ૨૫ પંચલોલ ૨૬ મોકલવાડ ૨૭ સુરા.

એ પ્રમાણે હમોની નાતમાં સત્તાવીસ ગોત્ર છે. ગોત્રોના નામની ભાષા સંસ્કૃત, ગુજરાતી, અને પ્રાકૃતના મિશ્રણવાળી સમજાય છે. કેટલાંકનાં નામ અર્થ સૂચક જણાય

છે, ત્યારે કેટલાંક નામનો અર્થ ભાવ અથવા કલ્પનામાં આવતો નથી. કેટલાંક નામો અશુદ્ધ થઈ ગયાં હશે અને તેને લીધે પણ તેનો, ભાવ ભાષા કે અર્થ સમજાતો નહીં હોય, તેથા આ નામોની શુદ્ધિ અશુદ્ધિ વિષે પણ જેની જાણમાં હોય તે જાહેરમાં મૂકવાની જરૂર છે.

મારી જ્ઞાતિમાં હાલ ... અમદાવાદ, મખીઆવ, કલોલ, નરોડા અને જેહરે એ પાંચ ગામનો સંભા તથા કાનમનો સંભા અને સુરત તથા મુંબાઇને સંભા મળીને કન્યાની આપ લે થઈ શકે એવો લગભગ અઢીસો ઘરનો જથ્થો છે, પણ તેમાં ઉપરનાં **સત્તાવિશ પૈકી હાલ આઠ દશ ગોત્રનાંજ નામ જોવામાં આવે છે.** અને તેમાં પણ વળી એક બે ગોત્ર તો એટલાં બધાં મોટાં છે કે તે ગોત્રવાળાઓને લાયક વર અને તે લાયક કન્યા મેળવવાની મુશ્કેલીનો ખરો અનુભવ તે ગોત્રવાળાજ જાણે છે. અને તેને લઇને કેટલાંએ વર કન્યાનાં નસીબ મારી જાણમાં ફેરવાઇ ગયાં છે અને ભવિષ્યમાં પણ હજી તે વધારે વધારે દુઃખદાયક થવાનો સંભવ છે,

એમ માનવામાં આવે છે કે-"ગોત્રમાં અથવા કુટુમ્બમાં કે સગામાં લગ્ન કરવાથી જે સંતતિ ઉત્પન્ન થાય છે તે નબળી ઉત્પન્ન થાય છે. અને તેને લીધે ઉચ્ચ વર્ણના હિંદુઓમાં એ રીવાજ એટલે ગોત્રમાં અને સગાંમાં લગ્ન કરવાનો પ્રતિબંધ છે. વિજ્ઞાન શાસ્ત્ર દ્વારા પણ એમ સિદ્ધ થઈ ચુકયું છે."

આ વિચારની બીજી બાજુ આપણે તપાસીયે છીયે ત્યારે ખરેખર ધુંચવણમાં પડાય છે. વ્હોરા મુસલમાન, પારસી, અને અંગ્રેજ લોકો કે જેઓની જ્ઞાતિમાં નજીકનાં સગાંમાં અને કુટુમ્બમાં પણ લગ્ન થાય છે. તેમની શારીરીક સ્થીતિ આપણા કરતાં રોગીષ્ટ હોય અથવા તેઓ નબલા બાંધાના હોય કે આયુષ્ય ઓછું ભોગવતા હોય કિંવા વંશ વૃદ્ધિ ઓછી થતી હોય એમાંનું કાંઇ પણ જણાતું નથી. અને ઉલટા તેઓ દરેક બાબતમાં ચઢતા હોય એમ જણાય છે. કદાચ એમ કહેવામાં આવે કે તેમનો બીજો આહાર વિહાર આપણા કરતાં ચઢતો છે અને તેથી તેઓને માંહોમાંહેમાં ગયેલી ખોટ પુરાઇ જાય છે અને ઉપરની બાબતમાં સરસાઇ ભોગવે છે, પણ એ વાત કબુલ કરશો નહીં. કેમકે તેમનો આહાર અને વિહાર આપણે "સારોછે" એમ માન્ય કરતા નથી તો પછી આ બાબતમાં ખાસ ચર્ચા કરી વિશેષ અજવાળું પાડવાની અગત્ય છે એમ વિચાર કરનાર દરેક જૈન બંધુને સમજાયા વિના રહેશે નહીં.

મને આશા છે કે આ બાબતની ચર્ચા ઉપાડવામાં જો આપણો સામાન્ય વર્ગ નિરુત્સાહ જણાય તો આ પત્રના અધિપતિ સાહેબ પોતાની લાગવગથી પત્ર વ્યવહાર ચલાવીને ઉપર જણાવી છે તે બાબતોનો શોધખોળ કરી તે જાહેરમાં મુકશે.

* स्वप्न

જોવામાં આવ્યા, જેમના પગોમાંથી એટલો બધો ..., હજારો સૂર્યનું તેજ જેથી તેમની ક્રિયાં પણ ... તેમની સ્હામે

આજથી લગભગ સાત વર્ષ ઉપર જ્યોતિષરત્ન પંડિત કાળીદાસ સાતે શ્રીમળી બ્રાહ્મણ, મુંબઇના ભૂલેશ્વર વિભાગમાં ... હતા; તેમની સાથે મિત્રતાનો સંબંધ ... તેમના જ્યોતિષ વિગેરેના ગ્રંથો જોવાને મ્હને પ્રસંગ મળેલો, જે તપાસતાં એક 'શ્રી પાર્શ્વનાથસ્વામીનો મંત્ર' મળી આવ્યો. તેનો ખુલાસો પુછતાં ઘણીજ તારીફ સાંભળી, જેથી મ્હેં તે ઉતારી લઇ ખાતરી કરવા જણાવ્યું. તેમણે શુભ મુહૂર્ત કર્ક રાશીના ચંદ્રમામાં પુષ્ય નક્ષત્રની શરૂઆતમાં રાત્રીના પહેલા પહોરમાં રવીવારે બેસવાનું જણાવ્યું. પહેરવાનું કપડું લીલા રંગનું, ડાભાસન, ઘૃતનો દીવો વિગેરે રાખવા જણાવ્યું. મ્હેં તે મુજબ કાર્ય કરવું શરૂ કર્યું.

બાર દિવસ સુધી હંમેશા રાત્રીના ત્રણ કલાક બેસવાથી મ્હારી ધારણા મુજબ ભવિષ્ય વિષેનો ખાતરીપૂર્વક જુવાબ મળ્યો. મ્હારી જૈન ધર્મ ઉપર પૂર્ણ શ્રદ્ધા હોવાથી હું દ્રઢતાથી તેને વળગી રહ્યો, તેમ તેમ મ્હને તરેહવાર ચમત્કાર દેખાવા લાગ્યા, પરંતુ જેમ રાત્રિએ દીવા વિના જોઇ શકાતું નથી તેમ ગુરૂ વિના મ્હારા કાર્યમાં હું આગળ વધી શક્યો નહીં, અને હાલ જે કાંઇ જણાય છે તે પણ કિંચિત માત્ર ! અને થોડોજ વખત ! બાકીની બીના અદ્રશ્ય રીતે ટુટક શબ્દોવડે જણાય છે, તેને યાદ કરી વિચારપૂર્વક બહાર પાડી શકું છું:—

ઉંચકી રાખેલો હતો, જેનાથી કોઇ નાખુશ જણાતું નહોતું—પછી સહવાર થઈ.

આ સિવાય ભવ્ય મંદિરો, સભાઓ, કોન્ફરન્સો, વાદ વિવાદના મંડળોમાં જૈનોનું ... અન્ય મતોનું મંડળ વિગેરે ... ત્રીસ દિવસમાં વીસ દિવસ ... વાના ... વખતે હું ... તો, જે વેળા અષાઢ માસની શરૂઆત, એમ તેમના ... હવે આવી ત્રુટામાં આવેલું. હજારો મનુષ્યો ... દર્શને જતાં હતાં. આ વખતનો દેખાવ કોઇ જાહેર તહેવાર જેવો મ્હને જણાતો હતો. તેઓ જે રસ્તે જતાં તે રસ્તેથી કોઇ પાછું

*સ્વર્ગીય શ્રીમાન દાનવીર જૈનકુલભૂષણ શેઠ માણેકચંદજીના ઓચીંતા અવસાન પછી તરતજ આ પત્રનો શોકદર્શક ખાસ અંક પ્રકટ કરવામાં આવ્યો હતો, તેમાં જે સોનાસણ નિવાસી શા. હાથીચંદ માણેકચંદ દલાલની એક મોટી શોકદર્શક ખાસ કવિતા હતી, તેમાં ૮ લીટીઓ એવી હતી કે—

યક્ષદેવે કહેલી આગાહી.

ચૈત્રમાં ચલાવ્યું મત, માંધેરા માણેક પિતા,
પર્યુષણ પહેલાં જઈ, સ્વર્ગમાં સીધાવશો ?
પણ મેં તો માન્યું નહિ,ખોટા આ આભાશ થાય;
એવું યાદ લાવી શાને દીલને દુખાવવું ?
બીજીવાર કીધી વાત, જાણી ગઇ નહિ રાત;
પત્ર તે લખાય કેમ ! ધ્રુજે તન તાપથી.
ભાદરે ભૂલાવી વાત, પ્રીતિમાંહી કીધો ઘાત;
દેવ યક્ષરાજ તીથિ આપવામાં શું ડર્યો !

ઉપલી ૮ લીટીઓ પ્રકટ થવા પછી અમારા ઉપર અનેક વાંચકોના અનેક પત્રો આવ્યા હતા કે— "આથી એમ સ્પષ્ટ જણાય છે કે દાનવીર શેઠ માણેકચંદજીના અવસાનની ખબર કોઇ યક્ષદેવે ભાઈ હાથીચંદ માણેકચંદને ત્રણ ચાર માસ થયાં અગાઉથી આપેલી હતી, પણ પર્યુષણ પહેલાં થશે, એટલે વાર છે એમ ભૂલાવો ખાવાથી તેમણે શેઠ વગેરેને એ વાત કરેલી નહીં હશે, માટે હવે તો એમને એ આગાહીની ખબર કેવી રીતે

છે, ત્યારે કેટલાંક નામનો અર્થ ભાવ અથવા કલ્પનામાં આવતો નથી. કેટલાંક નામો અશુદ્ધ થઈ ગયાં હશે અને તેને લીધે પણ તેનો, ભાવ ભાષા કે અર્થ સમજાતો નહીં હોય, તેથી આ નામોની શુદ્ધિ અશુદ્ધિ [illegible] પણ જેની જાણમાં હોય [illegible] માં મૂકવાની જરૂર છે.

મારી જ્ઞાતિમાં હજી [illegible] દાવાદ, [illegible] હશે કે કેમ [illegible] અને જહેરે એ નથી. તે દીવાલ રંગબેરંગી [illegible] નમનો સંભા નહોતી, પરંતુ જેમ ચીતારાએ [illegible] મળીને

પડી હતી, તે આપ વિસ્તારથી મેળવીને પ્રકટ કરશો તો એ બાબતમાં ઘણું અજવાળું પડી શકશે"

આ કારણથી અમોએ પત્રવ્યવહાર ચલાવીને ભાઈ હાથીચંદ માણેકચંદ દ્વારા એ આગાહીનો બીગતવાર ઈતિહાસ મેળવ્યો છે, જે આ સ્થળે અક્ષરશઃ પ્રકટ કરવામાં આવે છે. વળી આ બાબતની વધુ ખાતરી માટે ભાઈ હાથીચંદે જે જે ગૃહસ્થોને આ વાત પ્રથમથી કહી હતી તેનાં નામો અમે મેળવ્યાં છે, તે નીચે મુજબ છે— તેમના પિતા શા. માણેકચંદ ફતેચંદ વૈદ્ય, તેમની સૌ. પત્ની ચંચળગૌરી, શા છોટાલાલ છગનલાલ અને ગાંધી જીવરાજ હરચંદ સોનાસણના; શા. નેમચંદ હરચંદ અને શા. માણેકચંદ ગુલાબચંદ પ્રાંતિજના; શા નેમચંદ છગનલાલ અને શા નાનચંદ રાયચંદ ઓરાણના; શા મણીલાલ રાયચંદ (રખીઆળ), શા ચુનીલાલ નાનચંદ (અલવા.), શેઠ જાદવજી ગુલાબચંદ (વેરાબર.), કોઠારી સોમચંદ નાનચંદ, કોઠારી મણીલાલ નાનચંદ અને કોઠારી મંગલાલ નાનચંદ પેથાપુરના તથા ચુનીલાલ કાળીદાસ હજેડીયાવાળા વગેરે.

વળી ઉપલા નામોમાંથી કેટલાકને પત્રો લખી પૂછાવતાં એવાજ ખુલ્લાસાઓ મળ્યા છે કે આ આગાહીની વાત ભાઈ હાથીચંદે તેમને મોંઢે અગાઉથી કહી હતી અને તેથી તેઓ અતિશય નારાજ અને આશ્ચર્યવંત થયા હતા

સંપાદક.

તેમની શારીરીક સ્થીતિ આપણા કરતાં રોગીષ્ટ હોય અથવા તેઓ નબલા બાંધાના હોય કે આયુષ્ય ઓછું ભોગવતા હોય કિંવા વંશ વૃદ્ધિ ઓછી થતી હોય એમાંનું કાંઇ પણ જણાતું નથી. અને ઉલટા તેઓ દરેક બાબતમાં ચઢતા હોય એમ જણાય છે. કદાચ એમ કહેવામાં આવે કે તેમનો બીજો આહાર વિહાર આપણા કરતાં ચઢતો છે અને તેથી તેઓને માંહોમાંહેમાં ગયેલી [illegible] પરાઇ જાય છે અને [illegible] શકે તેવી રીતે હું સમજતો હતો. કોઇ કોઇ માણુસ મ્હારા સામું જોઇ જરા હસીને ચાલ્યા જતા, તે સિવાય બીજી કાંઇ પણ અડચણ કરતા નહીં. તેઓનો ચ્હેરો ગૌરવર્ણ, માથે મુંબાઇના સાલ–દુપટ્ટા વેચનાર પંજાબીઓની માફક ધોળા સાફા બાંધેલા હતા અને જયજયની ધ્વનિ ઉચ્ચારતા ઉપર જતા હતા. તેમના હાથમાં કાંઇ હતું કે નહીં તેની મ્હને ખબર રહી નહી. ઉપર જણાવેલા દાદરનું દરેક પગથીયું મ્હારા શરીરની ઉંચાઇ જેટલું હતું.

તે જોતાં મ્હને વિચાર થયો કે, મ્હારાં પાપના ઉદયથી મ્હારૂં શરીર ઘટી ગયું કે કેમ ? તેનો ખુલાસો હું મ્હારા આત્મા પ્રત્યે પુછવા લાગ્યો, એટલામાં યક્ષદેવ મ્હને ઉંચકી ઉપર લઇ ગયા.

ઉપરનું વર્ણન જેટલું જોયું તેટલું સંપૂર્ણ કહેવું ઘણુંજ અશક્ય છે જેમ તરેહવાર મીઠાઇઓ અને જુદી જુદી જાતનાં શાક, રાંઇતાં જમેલો માણુસ ગમે તેટલા સ્વાદનું વર્ણન કરે, છતાં બીજાને ત્હેજત આવતી નથી તેવી રીતે હું ગમે તેટલું વર્ણન કરૂં અથવા લેખ લખી જણાવું છતાં બીજાને તેની ખબર નજ પડે તે દેખીતું છે. ઉપર ગયા બાદ મુગટબંધ રાજાઓના જેવા દેખાવવાળા જમીનપર બેઠેલા એક હજારથી

* स्वप्न

...

જોવામાં આવ્યા, જેમના ...ણોમાંથી એટલો બધો ... કે, હજારો સૂર્યનું તેજ ... જેથી તેમની ક્રિયાં પણ ... ...મની સ્હામે

આજથી લગભગ સાત વર્ષ ઉપર જ્યોતિષરત્ન પંડિત કાળીદાસ દ્વારે, શ્રીમળી ... ખાસ ... વિભાગમાં ... પણ કાંઈ ત્યાં મ્હારા જોવામાં ... ...મર્ણ. આસપાસની દીવાલો પણ ફક્ત કંચનનીજ, પરંતુ બહુજ પ્રકાશવાળી હોવાથી બારીક રીતે અવલોકન કરી. શકયો નહીં. મ્હારા મનમાં ભય થયો કે, આટલો બધો પ્રકાશ, મ્હારી આંખોપર પડે છે તેથી હું આંધળો તો નહીં થાઉં ? પણ તેમાંનું કંઇ થયું નહીં.

મુગટબંધ રાજાઓ જેવા બેઠેલા, તેમની પાછળ સફેદ પોશાકવાળા આશરે બે હજારથી વધારે હશે અને તેમની પાછળ આશરે એક હજારની સંખ્યામાં લાલ વસ્ત્ર જેવા રંગીન વસ્ત્ર ઓઢીને બેઠેલાં માણસ જોયાં; જે એક તરફના ખુણા તરફ કાંઇ પાઠ કરતા હોય તેમ જણાતું હતું. હાથમાં પોથી વિગેરે કાંઇ જણાયું નહીં, પણ તેમના હોઠ હાલતા હતા. તેમને દાઢી, મૂછની નિશાની હતી નહીં, જેથી મ્હને એમ સમજાયું કે તેઓ સ્ત્રીઓ હશે !

મુગટબંધીઓની આગળ એક ખુણામાં, **હજારો મુની મહારાજ** તદન શ્યામ રંગે પણ તેજસ્વી, અને **પીંછી કમંડલુ સાથે** સજ્જ થએલા જોવામાં આવ્યા. સાદા પોશાકવાળાઓની આગળ તરેહવાર વાજીંત્રો કોઇપણ માણસની મદદ સિવાય વાગતાં હતાં. ભવ્ય મૂર્તિ પૂર્વ દિશાએ બીરાજમાન થએલી હતી પણ ચારે દિશાએ એવોજ દેખાવ જણાતો હતો. સર્વના મુખ કમળ ખુશાલીમાં પ્રફુલ્લિત હતાં, મ્હને યક્ષદેવે પોતાના બન્ને હાથમાં ઉચકી રાખેલો હતો, જેનાથી કાંઇ નાખુશ જણાતું નહોતું--પછી સહવાર થઈ.

આ સિવાય ભવ્ય મંદિરો, સભાઓ, કોન્ફરન્સો, વાદ વિવાદના મંડળોમાં જૈનોનું એ... અન્ય મતોનું મંડળ વિગેરે ...રસનો ... ત્રીસ દિવસમાં વીસ દિવસ એ જવા... ...વાના ... વખતે હું મુંબાઇ હતો, જે વેળા અષાઢ માસની શરૂઆત હતી. પ્રભાતમાં યક્ષદેવે આવી મ્હને જણાવ્યું કે, ગુજરાત, કાઠીઆવાડમાં આ સાલે દુષ્કાળ પડશે. આ વાત મ્હેં બે ત્રણ માણસોને જણાવી. એ વાત જાણવાવાળા મનુષ્યને એમ પણ કહેલું કે તમારે કોઇને વાત કરવી નહીં, તેમ છતાં મારી વાત ખોટી પાડવાની ધારણાથી કેટલાક લોકોને જાહેરથી વાત કરી. એક વખત હું માનવંતા શેઠજી માણેકચંદજીની દુકાને રાત્રે બેઠો હતો તે વખતે **મન્નાલાલ** દિ० જૈન જે હાલ કાપડની આડતનો ધંધો મુંબાઇમાં કરે છે, ને સ્વર્ગવાસી શેઠ પ્રેમચંદ મોતીચંદની ધર્મપત્ની ચંપાબાઇની માસીનો છોકરો થાય છે, તે આવી મ્હને કહેવા લાગ્યો કે શું ? આ સાલમાં હિંદુસ્તાનમાં દુકાળ પડશે એવું આપે કહ્યું છે, તે **વાત સાચી કે કેમ ?**

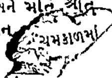
મ્હેં જુવાબ આપ્યો કે ભાઇશ્રી, હિંદુસ્તાનમાં નહિ, પણ ગુજરાત-કાઠીયાવાડ માટે જણાવ્યું છે.

મન્નાલાલ-સરકારી વાયુશાસ્ત્રી થર્મામીટર વડે સરદી ગરમીનું અવલોકન કરી તર્ક બાંધે છે અને સરકાર નામદાર તેના માટે મોટા પગાર આપે છે, તે પણ ચોકકસ વાત કહી શકતો નથી અને તમે શા આધારે વાત કરો છો તેનો કંઇ પુરવો ?

ઉત્તર-પેટમાં પીડાવાળો, માણસ જુઠું બોલે તો ચાલી શકે છે, પણ તાવવાળો માણસ

જીઠું બોલે તો ચાલી શકતું નથી અને મ્હારા તરફથી જે કહેવામાં આવ્યું છે તે **આત્મધ્યાનવડે કહ્યું છે.**

મન્નાલાલ—આત્મધ્યાન, પંચમ કાળમાં મનુષ્યો કરી શકતા નથી અને મતિ શ્રુતિ સિવાય મનુષ્યોને **અવધિજ્ઞાન** પંચમકાળમાં થાયજ નહિ.



ઉત્તર—અવધિજ્ઞાનના ત્રીની મ્હેને કેટલાક ભેદ છે, જેમાંના કેટલ પથ્થરની બનાવેલ પૂર્વક યોગથી થઈ શકે છે. (આ વખતે બીજા પણ કેટલાક માણસો (ગુજરાતીઓ) ત્યાં હાજર હતા.

પછી હું મ્હારા મકાને, મ્હારા સંબંધીઓ ઉપર કાગળ લખવાના હતા જેથી ગયો, જેમાં જણાવ્યું કે, આ સાલમાં ગુજરાત–કાઠીયાવાડમાં દુકાળ પડવા સંભવ છે, માટે તમોને યોગ્ય લાગે તેમ કરશો.

વળી એક વખત સોનાસણમાં કેટલાક માણસો વાતચીત કરતા હતા ત્યાં હું જઈ પ્હોંચ્યો, જ્યાં એવી વાત થતી હતી કે **વરસાદ ક્યારે થશે ?** (તે વખતે જ્યેષ્ઠ માસ ચાલતો હતો.) કોઇ કહે કે, આર્દ્રા નક્ષત્રમાં થવા સંભવ છે, પણ એક માણસે કહ્યું કે *કઈ તારીખે અને કેટલા વાગે થશે,* એવું કહેનાર કોઇ નથી. મ્હેં કહ્યું–"બહુ રત્ના વસુંધરા" દુનિયામાં કોઇ પણ હશે ! એટલું કહી ચાલતો થયો અને બીજે દિવસે બધાઓને એકત્ર કરી જણાવ્યું કે, અમુક તારીખ, વાર અને આટલા કલાકે વરસાદ થશે અને તે મુજબ થયું પણ ખરૂં. સાથે એટલું પણ જણાવ્યું હતું કે આ વર્ષમાં વરસાદપાણી સારાં થશે, કઠોળનો પાક સારો થશે અને અનાજના ભાવ નરમ રહેશે.

આવી બાબતોમાં જાહેર થવું એ હું **વ્યાજબી સમજતો નથી** અને તેમ કરવાથી ઘણી જાતની મુશીબતો વેઠવી પડે છે; વળી કેટલાકનું મન મનાવવા ખાતર જુઠું પણ બોલવું પડે છે. તેમજ દરેક બાબતની ખબર પડવી તે મ્હારા હાથમાં નથી, પરંતુ **યક્ષરાજની મરજી** ઉપર છે. મ્હારા ઘર કામની ઘણીખરી બાબતોનો ખુલાસો યક્ષરાજે કરેલો અને દરેકદરેક વચન સત્ય ઠરેલાં.

યક્ષદેવનો વાર્તાવિનોદ અને સત્ય આગાહી

રાત્રે સંસારી કામથી પરવારી, પથારીમાં સુતાં પછી આંખ બંધ થતાંની સાથે આગાહી શબ્દ કહે છે અને આંખ ખુલી જઇ તે શબ્દ યાદ આવે છે; પાછી આંખ બંધ થાય અને ફરીથી અદ્રશ્ય શબ્દ થઇ આંખ ખુલી જાય છે તે મુજબ શબ્દો થયા કરે છે. તે શબ્દો એટલા તો જોરથી થાય છે કે, જાણે કાનની નજીક બંદુકનો અવાજ થતો હોય અને ઝબકી ઉઠાય તે મુજબ થાય છે. આ શબ્દો ફક્ત કામ પુરતાજ થાય છે; જેમાંનો એક પણ શબ્દ નકામો થતો નથી.

માનવંતા શીરોમણી શેઠ માણેકચંદજીના સ્વર્ગવાસની આગાહી.

જૈન ધર્મની ઉન્નતિ કેમ થાય ? બીજાનું સારૂં અને હમારૂં ખામીવાળું કેમ ? જૈન ધર્મ *પાળનારા વધારે સુખી શું કરવાથી થાય ?* વિગેરે વિગેરે વિચારો રાત્રિ દિવસ મ્હારા મનને ચવાજ કરતા હતા અને થાય છે; એમાં વળી જૈન ધર્મનું મુખ્ય સુકાન સ્વર્ગીય શેઠજીના હાથમાં હોવાથી હમેશાં મ્હારા મનની ચાહના એવીજ રહેતી કે, મ્હારા આયુષ્યનો દશાંશ ભાગ પાછળ હઠે, પણ શેઠ **માણેકચંદજીના આયુષ્યમાં વધારો થાય તો** ઘણું સારૂં; કારણ કે મ્હારી જીંદગી દુનિયાને ભાર સમાન ગણાશે ! પરંતુ તેઓશ્રી દીર્ઘાયુ રહેશે, તો ઘણાં પરોપકારી કાર્યો જૈન ધર્મની ઉન્નતિ અર્થે કરી શકશે. આવા વિચારોને

લઇને ચૈત્ર માસના શુકલ પક્ષમાં રાતના દશ વાગ્યા પછી અદૃશ્ય રીતે શબ્દો થવા લાગ્યા. જેનું વર્ણન ટુંકમાં અક્ષરે અક્ષર સત્યતાપૂર્વક નીચે જણાવું છું:—

યક્ષદેવ-દિગંબરનો સંરદાર ગુજરી જશે.

મ્હેં વિચાર કર્યો કે, દિગંબરોનો સરદાર એટલે કોઇ મહાન પૂજ્ય મુની-મહારાજ કાળ કરશે, પણ તે કોણ ? કયાં રહેતા હશે ? તો તેમનું નામ શું ? વિગેરે બીના મ્હારા જાણવામાં નહિ હોવાથી; તર્કવિતર્ક થવા લાગ્યા.

યક્ષદેવ—પૂજ્ય પિતાશ્રી, જેને વ્હાલામાં વ્હાલા ગણો છે તે સ્વર્ગવાસી થશે.

મ્હેં વિચાર કર્યો કે, મ્હારા પૂજ્ય પિતાશ્રીનું આયુષ્ય હજુ કેટલાક વર્ષનું બાકી છે (એવું યક્ષદેવે પહેલાં અમુક વર્ષ અને માસ જણાવેલો છે) અને આજે આ શું? કોઇ વચન ખોટાં પડયાં નથી અને આ તો અજાયબીની વાત ગણાય. અરે પ્રભુ! ત્રીલોકના સ્વામી, દીનદયાળ! આનો ખુલાસો હવે કયાં થાય? મ્હારી કાયા કાંપવા લાગી, નિદ્રા ઉડી ગઇ, વિચારવમળમાં ગુંચાયો અને આખરે રાત્રીનો ત્રણ વાગે મીઠી નિદ્રા આવી.

યક્ષદેવ:-મુંબઇવાળા શેઠ ગુજરી જશે? મ્હેં કહ્યું—કયા શેઠ? યક્ષદેવે પ્રત્યક્ષ આવી ઉત્તર આપ્યો કે, માણેકચંદ શેઠ!

આ સાંભળતાંજ મ્હારી ગમગીનીનો પાર રહ્યો નહી, તે દિવસે બીલકુલ ચેન પડયું નહી, તેમજ ખોરાક પણ અલ્પ લેવાયો, જેથી ઘરના માણસોએ પૂછપરછ કરી, પરંતુ તેમને સત્ય હકીકત ન જણાવતાં મ્હારી તબીયત સારી નથી એમ કહી વાત છુપી રાખી.

બીજી વખતની આગાહી.

જેઠ સુદ ૩ને ગુરૂવારે રાત્રિના સાડા પાંચ વાગે યક્ષદેવે પ્રત્યક્ષ આવી કહ્યું કે;—માણેકચંદ શેઠ પર્યુષણ પહેલાં સ્વર્ગવાસી થશે.

મ્હેં પુછયું—આવો બનાવ બનવા પહેલાં મારૂં મરણ કેમ ન થાય? કે આવા દુઃખદાયક સમાચાર જોવા મટે;

યક્ષદેવ—કુદરત પોતાનું કાર્ય બજાવે છે. જુનું જુનું અને જુનાનું નવું એમાં આશ્ચર્ય શું? કાળનો સ્વભાવ છે અને કોઇ વસ્તુ અમર નથી.

આ વાત સાંભળી હું બન્ને હાથ જોડી નમોકાર મંત્ર યાદ કરી નમન કરવા લાગ્યો. સવાર થઇ. આ વાત મ્હારા મનને ચોકકસ થઇ. મ્હારે મુંબઇ તેઓશ્રીને મળવા જવું હતું અને રસ્તામાં સુરત ઉતરી મુળચંદભાઇને મળી એ વાત કરવાની હતી; પરંતુ મનમાંની મનમાં રહી ગઇ અને અત્યારે મ્હારા પસ્તાવાનો પાર રહ્યો નથી. ભાવે બનાવ બને જાય છે. શ્રી મહાવીર પ્રભુના શિષ્ય ગૌતમગણધર ઉપદેશ અર્થે ગયા હતા (ગુરૂના કહેવાથી અને પોતે પણ જાણતા હતા છતાં આવી શકયા નહોતા) અને મહાવીર પ્રભુએ ભીષ્મગ્રહમાં કાળ કર્યો હતો, તો પછી મ્હારા જેવો અલ્પબુદ્ધિવાળો, પામર ભૂલ ખાય તેમાં શું નવાઇ? વળી ભાદરવામાં પર્યુષણ એટલે તેના ભરોસે હું જઇ શકયો નહિ. આ બીના પત્રમાં લખી જણાવવી મ્હને યોગ્ય લાગેલી નહિ. આ વાત પહેલાં મ્હારા પિતાશ્રીને, અને મ્હારી ધર્મપત્નિને કરી. તે દિવસે મ્હારા ઘરના માણસોને સચોટ દીલગીરી ઉત્પન્ન થઇ હતી અને તે એટલે સુધી કે મ્હારૂં વ્હાલામાં વ્હાલું માણસ ગુજરી ગયું હોય અને જેમ દીલગીરી ફેલાય. વળી મ્હારી સ્ત્રીએ મ્હને આ વાત અગાઉથી કહી નાહકનો શોક ઉત્પન્ન કરાવવાથી રોકયો, છતાં પણ મ્હારા સ્નેહી શા નેમચંદ પ્રાતિજવાળાને અને બીજા આશરે બે ડઝન લાયક માણસોને વાત કરી હતી.

યક્ષદેવનું સ્વરૂપ અને ઓળખાણ.

રાત્રિના પહેલા અને બીજા પહોરમાં અદૃસ્ય રીતે શબ્દો સિવાય કાંઇપણ દેખાવ જણાતો નથી, તથા ત્રીજા અને ચોથા પહોરમાં પ્રત્યક્ષ દેખાવ નજરે પડે છે. તે [illegible]વનો ચ્હેરો ગૌરવર્ણી, તેજસ્વી, મ[illegible] ચાળીશ[illegible] માણસના જેવો સફેદ ફેંટો, રેનક[illegible]ળાથી [illegible]ણીથી બાંધેલો શોભી રહયો હતો, શરીરે સ[illegible] પોશાક અને સફેદ પાયજામો પહેરેલો હતો, જમણા હાથમાં જેષ્ટીકા (લાકડી) ઝાલી હતી, ચ્હોનો ચ્હેરો વિચારમાં ઘેરાયલા જેવો જણાતો હતો, જેથી વૈરાગ્યની છાપ પ્રત્યક્ષ જણાઇ આવતી હતી. આંખ તેજસ્વી, સ્વચ્છ અને ગંભીર જણાતી હતી, મૂંછઅને દાઢી વાળથી **ખીચોખીચ ભરેલી** અને માત્ર ગણી શકાય તેટલા વાળ સફેદ જણાતા હતા, ઉંચાઇ મ્હારા શરીરથી આશરે દોઢ હાથ વધારે હશે એમ અનુમાનથી જણાતું હતું. જ્યારે જ્યારે દેખાવ દેખાતો ત્યારે ખડ્ગાસન દેખાતો હતો. પ્રથમ તેમના તરફથી વાત થતી અને તે જરૂર જેટલીજ. હું વચ્ચે વચ્ચે પ્રશ્ન કરતો હતો. **એક વખત આપેલો ઉત્તર બીજી વખત મળતો નહિ,** પરંતુ બીજી વાતનો ઉત્તર મળી શકતો હતો. તેમના ચ્હેરામાં કદિપણ ફેરફાર માલુમ પડતો નહી. તેઓ મ્હારા માથા નજીક તો કોઇ વખત મ્હારા પગ પાસે દેખાવ આપતા. જૈન ધર્મની અને વ્યવહારીક બાબતો સિવાય નવીન કાંઇ મ્હને પૂછવાની જરૂર પડતી નહી; આવી રીતે વાતચીત થઇ રહ્યા પછી યક્ષદેવ અદરૂપ થતા અને મ્હારી આંખ ખુલી જતી.

મ્હારો નિત્ય નિયમ.

સાંસારિક કામકાજથી ફારગ થઇ, હંમેશના નિયમ મુજબ સુઇ જતો, અને નમોકાર **મંત્રની ધ્વનિ** ઉંઘ સુધી કરતાં કરતાં નિદ્રાવશ થતો. તે વખતે અદૃસ્ય રીતે શબ્દો થતા અને **પાછી નિદ્રા, પાછા શબ્દો** એવી રીતે થયા પછી ખરી નિદ્રા આવે છે. કોઇકોઇ વખત શબ્દ થયા સિવાય પણ નિદ્રાધિન થવાયછે. જાગ્રત થયા પછી અડધો કલાક નમોકાર મંત્રનું ધ્યાન ધરી, **શ્રી પાર્શ્વનાથસ્વામીના મંત્રનો નવ અથવા એથી વધારે વાર જાપ** જપી, રાત્રે થઇ ગએલી વાત યાદ કરી (જરૂરની હોય તો યાદ કરૂં અને બીનજરૂરી યાદ કરી છોડી દઉં) નિત્ય કર્મમાં પ્રવર્તું છું. અગાઉ કેટલાક વર્ષ ઉપર "અસિઆઉસા" નામનો જાપ **નવ લાખ વાર** જપી સિદ્ધિ મેળવી હતી, જેમાં ઉપરના મંત્રથી વૃદ્ધિ થઇ. કદાચ કોઇને સંદેહ ઉત્પન્ન થતો હશે પણ,

એ મંત્રની આમના, લખતાં નહિ લખાય;
સૌ સજ્જન સરખા નહિ, કેમ કરી બતલાય?

મ્હારા વિચારો અને વાત બહાર નહીં પાડવાનું કારણ.

મ્હેં જે કાંઈ જ્ઞાન મેળવ્યું છે તે બહુજ અલ્પ, ગુરૂ વિનાનું અને મ્હારે મન આંધળાની આંખ સમાન છે, તેમજ મંત્રની વાત યોગ્યતા પુર્વક કરવામાં આવે તો જરૂર ધારણા મુજબ કાર્ય થાય તેમાં નવાઇ નથી; તે હું મ્હારા ટુંક અનુભવથી કહી શકું છું. **મ્હારી કેળવણી**— ગુજરાતી ચોથા ધોરણ સુધી અભ્યાસ કરી શકયો છું. સંસ્કૃત, અંગ્રેજીનું બીલકુલ જ્ઞાન નથી. મુંબાઇમાં હું સોના ચાંદીની દલાલી કરતો, જ્યાં ચાંદીના ભાવનું અગાઉથી ભવિષ્ય કહેતો, જેથી ત્યાંના લોકો મ્હને હાથીચંદ "અઠાવાળા" ના નામથી ઓળખે છે. ઉપરની વાત બ્હાર પાડવાથી મહારે હેરાનગતીમાં ઉતરવું પડે એમાં નવાઇ નથી, કારણ કે સંસારી લોકોમાં કોઇ સ્રીથી, કોઇ ધનથી, કોઇ શરીરથી, કોઇ વ્યવહારિક ચિંતાથી દુઃખી હોય તે બનવા કાળ છે અને તેમાં ઉપરની

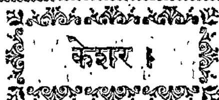
બીના જાહેર થવાથી, લોકો મ્હને જુદા જુદા પ્રશ્નો પુછવા ઇંતેજાર થાય, જેથી મ્હારે બીજાઓના માટે મ્હારૂં નિત્યકર્મ ભૂલી જવું પડે.

હું નમ્રતાપૂર્વક જણાવવા રજા લઉં છું કે, ઉપરની બાબત જાણી, કોઇએ કોઇ પણ કાર્યની આગાહી પુછવી નહીં. હું બાહ્ય સાંસારિક છું, પરંતુ મ્હારા આંતરિક વિચારો ભાવસાધુના છે. આ વાત લોકોમાં જાહેર કરી ધન, આબરૂ અને માનમરતબો મેળવવાની ઇચ્છા હું રાખતો નથી. સાંસારિક સુખ અલ્પ અને નાશવંત છે. ભલે મ્હારો સંસાર વધે યા ન વધે ત્હેની મ્હને દરકાર નથી. ભાવિભાવ બને જશે અને છેવટે સર્વ ફના થશે, જેથી આત્મકલ્યાણ સિવાયનો કોઇપણ રસ્તો પસંદ કરવાલાયક નથી. ધન પૂર્વના પુણ્યયોગ સિવાય મળતું નથી, એ મ્હને મ્હારા મંત્ર અનુભવ સિદ્ધ છે દરેક મનુષ્ય હર પ્રકારનું કાર્ય કરી શકે તેમ છે પરંતુ તેમાં દ્રઢતાપૂર્વક શ્રદ્ધા રાખવી જોઇએ.

ઉદાહરણ-ધારો કે એક માણસ હમેશના નિયમ મુજબ રાત્રિના દશ વાગતા સુઇ જાય છે અને સ્હવારના છ વાગતા જાગ્રત થાય છે. એક વખત એ માણસને રાત્રિના ત્રણ વાગતે સ્ટેશને જવાની જરૂર જણાઇ. હમેશના નિયમ મુજબ તે સુઇ રહ્યો અને ધારેલા ટાઇમે ઉઠી તૈયાર થયો, ત્યારે કહો કે, એ માણસને કોણે જગાડયો અને એવી રીતે બનવાનું કારણ? જવાબમાં એટલુંજ કહેવું બસ થશે કે, ત્હેની દ્રઢ શ્રદ્ધાથી ઉઠી શકયો. આત્મા અનંત શક્તિવાન, અનંત વીર્યવાન છે અને જે ધારે તે કરી શકે છે. વધારે જાણવાની અભિલાષાવાળાએ જૈન ગ્રંથો જોવા, જેથી યોગ્ય ખુલાસો મળી આવશે.

જૈન જાતિસેવક-

હાથીચંદ માણેકચંદ—સોનાસણ.



केशर।

लेखक-वैद्य शंकरलाल हरीशंकर जैन ता० [illegible]क, "वैद्य"-मुरादाबाद।

संस्कृतनाम, कुङ्कुम, काशमीरज, वाल्हीक, शोणिताव्हय, इत्यादि। हिन्दी-मराठी-गुजराती-केशर। बंगला-कर्णाटकी-कुंकुम। फारसी-तरकी मास। अरबी-जाफरान (करकुम)। अंग्रेजी-सेफ्रन और लैटिन भाषा में क्रोकस सेटिवस कहते हैं।

केशर-काशमीर, बुखारा, ईरान, मिश्र, साम आदि देशोंमें उत्पन्न होती है। परंतु काशमीरकी केशर सर्वोत्तम होती है। अब कुछ दिनों से उत्तर हिन्दोस्थान में भी कहीं २ इसके वृक्ष देखे जाते हैं। बहुत लोगोंका पहले यह ख्याल था कि इस देशमें केशर उत्पन्न ही नहीं हो सकती परंतु वह अब दूर हो गया। हमने देखा है कुंदरकी जि. मुरादाबाद निवासी बाबू कुंजबिहारीलालजी अपने बागीचेमें कई वर्षोंसे केशरकी खेती करा रहे हैं और उनको इसमें सफलता भी हुई है। गतवर्ष आपके बागमें कोई २०० सौ केशरके वृक्ष उत्पन्न हुए थे, उनपर केशरभी आई थी। हमारे पासभी आपने अपने बागकी थोड़ी केशर और केशर के बीज भेजे थे। केशर बहुत अच्छी थी। यद्यपि इस देश के जल वायु अनुकूल न होने के कारण उसमें

काशमीरी केशरके समान उतनी गन्ध नहीं थी किन्तु बाज़ारमें जितने प्रकारकी केशर बिकती है उन सबसे कहीं अच्छी थी। आपकी बताई बिधि के अनुसार हमने भी अपने औषधालय में ४–५ बीज ... उनमें ३ वृक्ष उत्पन्न हुये ... पर केशर भी आई थी। सायद ... अनुसरण कर और कई स्थानों में भी केशर बोई गई थी परंतु वहां इसकी कैसी उपज हुई यह हमें नहीं मालुम। बाबू कुंजबिहारीलाल काशमीर जाकर केशर बोने का तरीका सीख आये हैं और केशर की खेती के सम्बन्धमें आपने एक उर्दु भाषामें छोटी सी पुस्तकभी लिखी है।



केशरका वृक्ष अधिक से अधिक आधगज तक ऊंचा होता है। पत्ते प्याज की समान लम्बे होते हैं। फूल का रंग बैगनी होता है और फूलके भीतर लाल पीले रंगका जो जीरा या तंतु निकलता है उसी तंतुका नाम केशर है। परंतु उन तंतुओंमें जो बहुत बारीक होते हैं वे अच्छे नहीं होते। एक वृक्ष पर ३–४ फूल आते हैं और एक फूलमें १॥–२ रत्ती तक केशर निकलती है। वृक्ष उत्पन्न होने के ३–४ सप्ताह बाद फूल आजाता है। इस के फूलदार वृक्ष देखनेमें बड़े ही सुन्दर मालूम होते हैं। उनको देखनेसे चित्तमें एक प्रकारका कौतूहल सा उत्पन्न होता है। इसके फूलों की सुगंधि हवाके साथ उडकर बहुत दूर तक चली जाती है। इसका बीज प्याज की गांठ या लसुनकी समान होता है और वह पृथिवीमें भीतर दबा रहता है अर्थात् वृक्षकी जड़ को ही बीज कहते है। इसका बीज सितम्बरमें बोया जाता है और जूनमें खोदा जाता है। यदि इसको न खोदा जाय अर्थात् पृथिवीमें ही हिफाजतसे रक्खा जाय तो फिर उसमें अन्य बीज डालनेकी जरूरत नहीं होती, १० वर्षतक उसी बीजसे बराबर केशर आती रहती है। केशरकी खेतीके लिये जमीन ऊंची, ढालू, पीली और रतेली होनी चाहिए। इसमें ज्यादह पानी नहीं दिया जाता, बल्कि इस प्रकार पानी दिया जाता है कि जिससे वृक्षकी जड़ में पानी बहुत देर तक न ठहरे। इसमें किसी प्रकारके खात वगैरह देने की भी आवश्यकता नहीं होती। परन्तु वृक्षों की मेह और तुषारसे विशेष रक्षा करनी पड़ती है।

केशरकी परीक्षा।

सब प्रकारकी केशरोंमें काशमीर की केशर उत्तम वर्णवाली और मनोहर गंधवाली होती है। ईरान, मिश्र, बुखारा,

आदि देशोंकी केशर हीन वर्ण और हीन गंधवाली होती है। इस कारण वे काशमीरी केशरकी अपेक्षा मध्यम या अधम गिनी जाती है। केशरमें जितनी गन्ध अधिक आती है उतनी ही अधिक श्रेष्ट समझी जाती है। हीन गन्धवाली, बुरे रंगकी या पीलेरंगकी और जिसके तंतु बहुत वारीक होते हैं ऐसी केशर निकृष्ट होती है। परंतु आजकल जो बाजार में नकली (बनावटी) केशर बिक रही हैं वह वर्ण और गन्धमें असली केशरसे भी बढ़कर मालूम होती है। इसलिये इस समय असली केशरकी परीक्षा बहुत ही कठिन हो गई है। नाना प्रकारके अभक्ष्य और हानिकारक पदार्थोंके योगसे नकली केशर बनाई जाती है। बहुत लोगोंको परीक्षा द्वारा नकली केशरमें मांस और रुधिर तकका मेल मालूम हुआ है। कहते हैं कि मांससे बनी हुई केशरको अग्नि पर डालनेसे एक प्रकारकी दुर्गन्ध आती है और उसको हथेली पर रख थोड़ा जल डालकर धीरे२ अंगुलीसे घिसनेसे मांसके तंतु स्पष्ट मालूम होने लगते हैं। मांसके सिवाय और भी कई प्रकारके दुष्ट पदार्थोंके संयोगसे नकली केशर बनाई जाती है। असली केशरकी सबसे अच्छी यही पहचान है कि उसके गन्ध और वर्ण दोनों स्थिर रहें और जलमें घोलनेसे उसका तंतु बाकी न रहे अर्थात् सब घुलजाय। बाजारमें जो एक प्रकारकी कुछ भूरे रंगकी गुच्छीकी केशर आती है वह साधारणतः बाजारमें विकनेवाली सब केशरोंसे श्रेष्ट होती है। यद्यपि गन्ध और वर्णमें वह काशमीरी केशरकी समान [illegible]ता [illegible]रंतु उसके असली होनेमें कुछ संदेह[illegible]। वह नकली या बनावटी केशर नहीं मालूम होती। इस लिये जहां काशमीरी केशर न मिले वहां गुच्छी ही की केशर लेनी चाहिए।

केशरका व्यवहार।

इस देशमें केशरका व्यवहार अनेक प्रकारसे होता है। परन्तु औषधिकर्म्म, देवार्चन और तैलादि रंगनेके काममें यह अधिकतासे आती है। भारतवासी इसकी उपयोगिताको बहुत दिनोंसे जानते हैं। इस देशकी अनेक मातायें बालकोंको कफ, खांसी, सर्दी, जुकाम और पसली आदि की पीड़ामें केशरको दूधमें घिस कर दिया करती हैं। बहुत लोग शीतसे बचनेके लिये इसको पानमें रखकर खाया करते हैं। वैद्य लोग इसको विविध रोगोंमें प्रयोग करते हैं परंतु यूनानी चिकित्सामें इसकी जितनी प्रतिष्ठा है उतनी और किसी चिकित्सामें भी नहीं है। ईरान देशकी स्त्रियां सुखपूर्वक प्रसव होनेके लिये इसकी गोली बनाकर अपने अंचलमें बांध रखती है।

एलोपैथिक चिकित्सामें इसका अधिक व्यवहार नहीं देखा जाता। एलोपैथिक

चिकित्सक इसमें औषधि धर्म अधिक नहीं मानते, इसी लिये वे इसका उपयोग भी अधिक नहीं करते। उनके मतसे यह केवल रंगनेवाली एक चीज [illegible] होमियोपैथिक चिकित्सक [illegible] और रज सम्बन्धी अनेक रो[illegible] [illegible]का प्रयोग करते हैं।

केशरके गुण–गरम, स्वादमें कड़वी, चरपरी, तीक्ष्ण, स्निग्ध, पाचक, अग्नि–प्रदीपक, हृदयको अत्यन्त प्रिय, बलवर्द्धक, रतिशक्तिको बढ़ानेवाली, स्तम्भक, रक्तशोधक, मूत्रल और किसीर आचार्यके मतसे यह सारक और दस्तावर भी है। ज्ञान तंतुओंको जागृत करती है और स्नायुओंके संकोचको दूर करती है। वर्णको उज्जल करती है, शरीरके भीतरके क्लेद और बाहिरी दुर्गन्धको दूर करती है। तथा कफ और वातके रोग, शीत, दाह, शिरकी पीड़ा, कृमि, घाव, त्वचाके रोग, खुजली, सिध्म, कोढ़, झांई, छीप, सुजन, वमन, उबकाई स्वांस, खांसी, यकृत्का शोथ, प्लीहा, बवासीर, गर्भाशय व जरायुकी पीड़ा और बंध्यापन आदि रोगोंको दूर करती है।

यह विशेष कर रोगके आक्षेरको दूर करनेवाली और स्त्रियोंके आर्तवको शुद्ध करती है। तथा कठिनतासे पीड़ाके साथ मासिक धर्म्मका होना, रजकी अल्पता, प्रदर, शुक्रकी क्षीणता और वात तथा कफके रोगोंमें अधिक हितकर है।

मूत्र कृच्छ रोगमें भी केशर विशेष हितकारी है। चरकमें लिखा है कि–केशरको उचित मात्रासे दाखोंके क्वाथके साथ सेवन करनेसे मुत्रकी चिनक या कठिनतासे मूत्र उतरना आराम होता है। सुश्रुतमें लिखा है कि जिनको मूत्रके रोकनेसे उदावर्त्त रोग उत्पन्न हुआ है उनको केशरका क्वाथ बना कर पीना चाहिए। मूत्राघात रोगमें १ तोला उत्तम सहतको ८ तोला शीतल-जलमें मिला कर शर्बत बना ले और उसमें आधी रत्ती केशरका कल्क या पानीमें पिसी हुई केशर मिलादे। फिर उसको स्वच्छ पत्थर या कांचके बरतनमें रात्रिभर रक्खा रहने देवे। सबेरे पिये। इससे मूत्रका रोध, मूत्रकी पीड़ा और दाह वगैरह दूर होती है। (सुश्रुत)

केशर शिरोरोगकी भी अति प्रसिद्ध औषधि है। चक्रदत्तमें लिखा है कि अर्द्धावभेदक अर्थात् आधासीसी जिसमें दिनके चढ़ने पर शिरमें पीड़ा बढ़ती है। केशरको गायके घीमें भून कर फिर उसमें समान भाग शुद्ध खांड मिलाकर उसका नाश लेनेसे उक्त पीड़ा दूर होती है। वाग्भट्ट, वृद्ध वाग्भट्ट आदि ग्रंथोंमें भी केशरका थोड़ा बहुत व्यवहार देखा जाता है। यह शुक्रस्तम्भक है इस कारण इसका अनेक प्राचीन और नवीन ग्रंथोंमें वीर्य्यस्तम्भक प्रयोगोंमें उल्लेख पाया जाता है। वायुकी पीड़ामें केशरका बहुत अच्छा उपयोग होता है। केशरको गरम जलमें

पकाकर, उचित मात्रासे सेवन करनेसे वायुकी पीड़ा दूर होती है। स्त्रियोंके हिस्टेरिया रोग और और मूर्च्छादि रोगोंमें केशरका तत्काल गुण देखाजाता है।

आधी रत्ती या पौन रत्ती केशरको गूलाबके अर्कमें घिसकर पिलानेसे अथवा जरासी केशर और पीपलको सहतके साथ घिसकर चटानेसे हिस्टेरिया आदिकी मूर्च्छा दूर होती है। केशरका बनाया आसव अर्थात् कुंकुमासव हिस्टेरिया रोगमें बहुत अच्छा है। केशर और वायविडंग दोनोंको पुराने गूड़में मिलाकर खानेसे स्त्रियोंका आर्त्तवरोधजन्य शूल दूर होता है।

केशर १ रत्ती और नागकेशर १ मासे दोनोंको एकत्र पीसकर एक तोला मक्खन और १ तोला मिश्रीके साथ मिला कर सेवन करनेसे स्त्रियोंका प्रदर रोग दूर होता है। गर्भाशयकी भयानक पीड़ामें केशरको जलमें गाढ़ा पीसकर उसका फाया बनाकर योनिमें रखनेसे गर्भाशयकी पीड़ा दूर होती है।

प्रसूत संबंधी रोगोंमें भी केशर अच्छा गुण करती है। हमारे देशमें कहावत है कि जचपनेमें केशर, कस्तूरी आदि गरम पदार्थ खानेसे बालकको सरदी, जुकाम, खांसी, कफ आदि ठंडके रोग नहीं होते।

बालकको वारंवार पतले दस्त होने पर २-२ चावल केशरको जरासे गायके घृतमें मिलाकर सेवन करानेसे अधिक लाभ होता है। केशर, अफीम और हींगकी गोली बनाकर देनेसे बालकोंका बहुत पूराना अतिसार दूर होता है। रक्तातिसारमें भी केशर लाभकारक है। आमाशयकी दुर्बलतामें भी केशरका व्यवहार होता है। यकृतशोथ या यकृत्के भारीपनमें केशर, पीपल और चीता इन तीनों औषधियोंको [illegible] ता० पे सहतमें मिलाकर सेवन करनेसे [illegible] ढ़ना कम हो जाता है।

केशर रुधिरशोधक है इस कारण कुष्ट, वातरक्त, खुजली, दाद, शीतपित्त आदि रोगोंमें भी व्यवहार होती है। केशर बालछड़, छार छवीला और सफेद चंदनका बुरादा इनको एकत्र जलमें पीसकर घृतमें मिलाकर लेप करनेसे वातरक्तकी पीड़ा शांत होती है। केशर और हलदी दोनोंको केलेके अर्कमें घिसकर लेप करनेसे शरीरकी छीप, झांई, कालिमा सब दूर होती है। केशरको जलमें घिसकर नेत्रकी गूहेरीके ऊपर लगानेसे गूहेरी बैठ जाती है। केशर, सिंदूर और घृत तीनोंको एकत्र मिलाकर तत्कालके उत्पन्न हुए घावमें लगानेसे घाव भर जाता है। शरीरके किसी अंगके पिच जानेपर या साधारण घाव हो जानेपर केशरको घृतमें मिलाकर गरम करके लगानेसे आघात जल्द आराम होता है।

केशरको जलमें घिसकर शिरपर लेप करनेसे कफ वातजन्य शिरकी पीड़ा दूर होती है। आंखके रोगोंमेंभी केशरका उपयोग होता है। साधारण आंखकी पीड़ा व आंखके दुखनेमें केशर, हरड और रसौत तीनोंको एकत्र गूलाबके अर्कमें

घिसकर लेप करनेसे आंखकी पीड़ा और लाली दूर होती है।

वालकोंके माता या चेचकके निकलते समय केशरको गुलावके अर्कमें या शीतल जलमें घिसकर पिलानेसे माताकी [illegible] शीघ्रही निकल आती है। के[illegible] और कूठके चूर्णके साथ श[illegible] अनुपानसे सेवन करनेसे बुद्धिकी वृद्धि होती है।

केशर १ रत्ती, तुलसीके पत्ते ४ और बादामगिरी १ तोला इन सबको एकत्र शीतल जलके साथ घोटकर १ तोला मिश्री मिलाकर मधुमेह और वहुमूत्ररोगमें देनेसे बहुत लाभ होता है।

वातरक्तादि रोगोंपर कुंकुमादि वटिका—केशर २ मासे वड़ी हरड़का वकल ४ माले और एलुआ ४ मासे इन तीनों-को एकत्र गुलावके अर्कमें घोटकर चनेकी बराबर गोलियां बनाले। प्रतिदिन १ से ४ गोली तक खाय। अनुपान शीतल जल। यह गोली प्रतिदिन दस्त खुलासा लाती हैं। और वातरक्त, रुधिरके तरह तरहके विकार, शरीरमें दाद व चकत्तोंका पड़ना, उपदंशके विकार, मुखका आना, शरीरका फटना आदि रोगोंको दूर करती हैं। जिन स्त्रियोंके मासिकधर्म्म खुलकर नहीं होता या जिनके मासिकधर्म्मके होनेके समय अत्यंत वेदना होती है उनके लिये यह गोलियां बहुत ही लाभदायक हैं।

पं. पीतांबरदासजी उपदेशकके भ्रमणका रिपोर्ट।

ता० ११-१०-१४ को दौरा शुरू किया। ता० १४को शाहपुर (सागर) आया। जैनगृह संख्या ४० जनसं. २५० और मंदिर एक है। रातको एक व्याख्यान सच्चाधर्म इस विषयपर किया। स्वाध्याय करनवाले भाई २० व अष्ट द्रव्यसे पूजन करनेवाले १० भाई हैं। शास्त्रसभाभी प्रतिदिन रातको हुवा करती है। यहांपर पंडित भगवानदासजी परवार बड़े धर्मोत्साही और सदाचारी हैं। भाई लोकमनलालजीने प्रां. सभाका समासद होना स्वीकार किया। यहां पहिले जैन पाठशालाभी स्थापित थी परन्तु कुछ कारणविशेषसे बंद हो गई इसलिये भाईयोंको ध्यान दे पुनः चालू करना चाहिए।

२२-१०को भेळसा आया। जैनगृह सं. ८५ जनसं. ३५० मंदिर सं. ३ रात्रिको जैनियोंकाकर्तव्य इस विषयपर कहा परन्तु फूटके प्रभावसे कुछ सफलता नहीं हुई। यहां जैन पाठशाला स्थापित है। अध्यापक विधर्मी ब्राह्मण ९) वेतनपर है। विद्यार्थी भी ३ पढ़नेको आते हैं। पंचायतीको ध्यान देना चाहिए। सेठ पन्नालालजी परवार भोपालवालोंने प्रां. सभाका समासद होना स्वीकार किया।

नोट-८९ घरकी जैन समाजमें धार्मिक कार्योंकी इस तरह वेपरवाही देखकर हृदय विदीर्ण होता है। भेलसा जैसे प्रसिद्ध स्थानमें यदि यहांके बीस ही भाई इस ओर सच्ची दृष्टि देवें तो २५ हजारका फंड एकत्र कर उत्तमोत्तम पाठशाला आदि धार्मिक कार्य चलसकते हैं।

२७-१०को रतलाम आया। जैनगृह सं. १२५ जनसं. २५० मंदिर सं. ४। रात्रिको सेठ गंगाराम भूरालालजीके सभापतित्त्वमें जूने मंदिरमें एक व्याख्यान मिथ्यात्, अन्याय, अभक्षत्याग व स्वाध्याय प्रचारके विषयपर कहा। स्वाध्यायी भाई २० व श्रवण करनेवाले ३० भाई हैं। यहां पर सेठ माणेकचंद पानाचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूल स्थापित है, उसमें लायब्रेरीके रूपसे भाई कालूरामजी सुप्रिन्टेन्डेन्ट समाचार पत्र और पुस्तकें संग्रह करनेके लिये उद्योगी हैं।

२८-१०को सनावद आया। जैनगृह सं. १०० जनसं. ३०० मंदिर सं. २। रातको सेठ सरदारमलजीके सभापतित्त्वमें एक व्याख्यान स्वाध्याय और सदाचार विषयपर कहा। स्वाध्याय करनेवाले भाई ३० है और पंचायतीद्वारा नियमसे अष्ट द्रव्य द्वारा प्रतिदिन जिनपूजन होती है। यहां करीब ९ वर्षसे जैन पाठशाला स्थापित है पर उपस्थिति विद्यार्थीवर्गोंकी न होनेसे कुछ पढ़ाई भी ठीक नहीं होती, इसलिये संचालकोंको पाठशालाकी देखरेख रखना जरूरी है। सेठ सरदारमलजीने प्रां० सभाका सभासद होना ३) फीस दे स्वीकार किया।

ता० ३१-१०को आतर आया। जैन [illegible] जनसं. ३५ चैत्यालय सं. १ [illegible] एक व्याख्यान स्वाध्याय और सदाचार विषयपर कहा। स्वाध्यायी भाई ६ और मर्यादापूर्वक आटा रखना, रसोई और पानी आदिके स्थानमें चंदोवा रखना दो गृहीणियोंने स्वीकार किया।

सेठ नत्थूसा माधवसाजीने प्रां० सभाका सभासद होना ३) फीस दे स्वीकार किया। पंचायतीद्वारा २) उपदेशक फंडमें आये। यहां पहिले चैत्यालयभी नहीं था पर उत्साही भाईयोंने अनुमान ४ वर्षसे चैत्यालय स्थापित किया है। जैन पाठशाला के लिये भी २०) मासिकका चंदा यहाँके भाईयोंने आज रातको लिखा है इसलिये हाल १५) रु. मासिकका एक अध्यापक तजवीजकर प्रां० सभाको शीघ्र भेजना चाहिए। सेठ मन्नालाल संकरसाके उद्योगसे एक बाई चंदा देने मेंअधिक प्रशंसनीय है। अन्य ग्रामोंकी समाजको यहांका अनुकरण करना चाहिए।

ता० २-११ को खंडुवा आया। जैनगृह सं. ४४ जनसं २५० मंदिर सं १। रातको शास्त्रसभा की और स्वाध्यायप्रचारपर कहा। स्वाध्यायी भाई २० हैं।

यहां भी पहिले जैन पाठशाला स्थापित थी परंतु कोई कारण विशेपसे हाल बंद है। पाठशाला संचालकोंसे शीघ्र चालू करानेकी प्रेरणा की। भाई चुन्नीलालजी आदि धर्मप्रेमियोंके उद्योगसे ४ माह हुए एक लायब्रेरी भी स्थापित हुई है जिसमें दि. समाचार पत्रोंके सिवाय लौकिक स... पत्र भी आते हैं। क्याही अ... यदि यह नवयुवक मंडली जैन ग्रंथोंका संग्रह करती हुई एक २ आध २ घंटे स्वाध्याय रुपसे दृष्टि डाले तो कितने अधिक ज्ञानावर्णी कर्मोंका सत्यानाश हो।

ता० ३-११को ब्रहानपुर आया। जैनगृह सं. ८ मंदिर बहुत बड़ा और रमणीय है। प्रबंधक भाई सेठ हीराचन्द नंदरामजी हैं। मागीतुंगी सिद्धक्षेतकी यात्राको यहांके भाई गये हुए पाए इससे सभा आदि नहीं होसकी। दो भाइयों द्वारा २) रु. रसीदविक्री जैन सिद्धांत पाठशाला मोरेनाकी हुई।

ता० ४-११को नादगांव आया और जैनपाठशालाके सेक्रेटरी तथा अध्यापकसे मिला पर अध्यापक महाशयने सभा आदिके लिये मुखिया भाईयोंसे पूछा परंतु कुछ संतोषजनक उत्तर प्राप्त नहीं हुवा, इसलिये दहीगांव मेलेके कारण शीघ्रही वापिस ट्रेनसे रवाना होना पड़ा।

ता० ६-११को डिक्सल आया। यहांपर दि. जैनका एक घर तथा उसीके घर एक चैत्यालय भी स्थापित है। आज रातको यहांसे गाडीभाडा कर २२ मील दहीगांव को रवाना हुवा।

ता. ७-११ को दहीगांव अतिशयक्षेत्र आया। यहां मगसर कृष्ण ४ से अष्टमी तक बृहत् जैन मेला भराकरता है। वर्तमान मेलेमें लगभग एक सहस्र नरनारी उपस्थित थे। दो दिन शास्त्रसभायें की। सच्चा धर्म, सच्ची प्रभावना, कुरीति त्याग और सदाचार प्रचार, जिसका विशेष मराठी भाषासे पंडित नाना रामचन्द्र नाग और भाई वीरचंद कोदरजी (फलटण)ने समझाया। अनेक स्त्री पुरुषोंके समक्ष जैनधर्मकी प्रभावना हुई। इन्हीं दिनोंमें पुना निवासी एक भाई चोपड़े नाम करके जैन कीर्तनके रूपसे प्रथमानुयोगीय ग्रंथोंके कथाभागको अनेक प्रकार नाटक जैसी स्पीचियोंसे कहा करते थे। सुनते हैं कि इन्होंने इस विपयका एक स्कूल पूना शहरमें स्थापित कर रक्खा है पर कुछ विशेप मालूम नहीं हुआ कि वह किसी प्रसिद्ध संस्था व स्वतंत्र कमेटी और कौनसे कोपाध्यक्ष श्रीमान्के सहारे किस२ प्रकारके नियमोंसे चला करता है। चोपड़े महाशय द्वारा समाजका द्रव्य तथा मंदिरोंके भंडार और तीर्थक्षेत्रोंके भंडारोंका बहुतसा द्रव्य भी इस स्कूलको जाता है इसलिये समाज और प्रान्तिक सभाको

इनकी संस्थाके नियम भले प्रकार प्रचलित कर इस द्रव्यके सदुपयोग पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए।

१०-११-१४को अनुमान ४०० भाईयोंके समूहसे करीब १२९) और यहींके गांव अतिशय क्षेत्रके भंडारसे ६६) इनकी संस्थाके निमित्त गये हैं। इसी समय यहांकी पंचायती ५.१) मंदिरके भंडारसे उपदेशक फंड मां. सभामें देती थी परन्तु ऐसा देवद्रव्य लेना उपदेशक फंडके नियमसे विरूद्ध है इसलिये उपदेशकजीने लेनेसे इन्कार कर दिया।

वास्तविक न्यायदृष्टिसे इस क्षेत्रके प्रबन्धकोंको ध्यान देना चाहिये कि प्रबन्ध खातेके अतिरिक्त यदि इस प्रकार द्रव्य खर्च करनेकी उन्हें जरूरत है तो भिन्न२ प्रकारके फंड रख कर उन्हें प्रसिद्ध कर द्रव्य एकत्र करें और फिर उसका सदुपयोग करें।

यहां पर जैन भाईयोंकी गृह सं. ७ जन सं. ३९ है। स्वाध्यायी भाई १० तथा अष्टद्रव्यसे पूजन करनेवाले दो भाई हैं। मेले तथा स्थानीय भाईयोंसे १४) उपदेशकफंडमें आये।

समाज सेवक—

ठाकोरदास भगवानदास

मंत्री, उपदेशक भंडार–बम्बई।

श्राविकाश्रमने मळेली मदद.

હાલમાં શ્રીમતી લલિતાબ્હેનના ગુજરાતના ભ્રમણ દરમ્યાન શ્રાવિકાશ્રમ (મુંબઇ)ને નીચે મુજબ મદદ મળી છે, જે અમો [illegible] આભાર સહિત સ્વીકારીએ છીએ અને અમારા [illegible]ના ભાઇઓ અને બ્હેનો આ આશ્રમને [illegible] રીતે વખતો વખત મદદ આપતા રહેશે [illegible]ને આશા છે.

ઇડરે રૂા. ૪૬-૦-૦:—૫) ગાંધી ઘેલા જીવરાજ, ૫) ભટ્ટારક વિજયકીર્તિજી; ગાંધી નેમચંદ જેચંદ, દોશી કેવળદાસ રાવજી, ગાંધી સુરચંદ ઉજમ, કોઠારી પુંજારામ ઉદયચંદ, દોશી વીરચંદ પાનાચંદ, ગાંધી અમીચંદ અમથારામ, દભોડા મગન બહેચર, અને એક શેઠ તરફથી દરેકના રૂા. ૨); ગાંધી કસ્તુરચંદ રવ, સં. વીરચંદ ઉદયચંદ, રાયચંદ માણેકચંદ, પાનાચંદ નાથા, હીરાચંદ અમીચંદ, સુરચંદ બાધર, સં. લીલાચંદ વજેચંદ, નાથાલાલ સુરચંદ, દાવડા મોતીચંદ પ., સાંકળચંદ લીલાચંદ, ખુશાલ રેવાજી, માનચંદ ઉજા, ડોસી કુબેર ગુલાબચંદ, ગુલાબચંદ દેવચંદ, દોશી અમથારામ બહેચર, હીરાચંદ લવચંદ અને દોસી રેવા કુબેર એ દરેકનો રૂા. ૧) તથા રૂા. ૩) પરચુરણ.

દેરોળ રૂા. ૪૫-૪-૦:—૨૧ા મહાજન તરફથી, ૬) ઠાકોર સાહેબ હરીસીંગજી, ૫) કોઠારી જાદવજી બહેચર, ૫) ઠાકોર ઉમેદસિંહજીની ઠકરાણી તરફથી, ૩) ઠકરાણી શ્રી રહેવરજી; લાડીજી દેવડીજી સાહેબ, ઠકરાણી શ્રી દેવડીજી, કામરાજ અમીચંદ, વોરા કેવલ લાભચંદ, રેવજી ફતેચંદ, ફતેચંદ સુરચંદ, મોડાસીયા ગુલાબચંદ, અને નેમચંદ વીરચંદ એ દરેકના રૂા ૨); લાડી સાનગરીજી, ગાંધી જેચંદ રેવજી, મોડાસીયા ગુલાબચંદ; માધા લાલચંદ, દેવચંદ અમીચંદ અને કોદર રતનજી, એ દરેકે રૂા. ૧), પરચુરણ રૂા. ૨ાા અને મેતા રાયચંદ પ્રેમચંદ રૂા. ૧ાા.

કડીયાદરા રૂા. ૧૬-૦-૦:—૪) અમથા પદમશી, ૩) હીરાચંદ વસ્તા, ૨) પરચુરણ, રેવચંદ હ., પદમસી બાધર, ઉગરચંદ હ., પાનાચંદ અ., દલીચંદ ક., કેસ્તુર દેવચંદ અને સાકરચંદ પાનાચંદ એ દરેકે રૂા. ૧)

ચોટાસણ રૂા. ૨-૧૨-૦ પરચુરણ.

ચોરીવાડ રૂા. ૧૦-૦-૦:—૧ા ખેમચંદ રગજી, ૧) જોતીચંદ માણેકચંદ. ૧) તારાચંદ કસ્તુર અને ૬ાા પરચુરણ

મુડેટી રૂા. ૨૩-૦-૦:— ૫) મોતીચંદ દેવચંદ, ૫) નેમચંદ ફુલચંદ, દોસી દલુચંદ મો., કોઠારી ગુલાબચંદ આ., જીવરાજ

इस वर्षके ग्राहकोंको हिन्दी–गुजराती भाषाकी ८-१० पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रकट थतुं मासिक

दिगंबर जैन

(१) शब्दार्णवचंद्रिका [जैनेंद्रलघुवृत्ति, ...देव विरचित] (२) समयप्राभृतं ... (३) आप्त-

The Digamber Jain.

युतं सुलेखै र्विविधैश्चचित्रैः, दिगम्बरंजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुत्तमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ८ मुं.	वीर संवत २४४१ माघ. विक्र. सं. १९७१.	अंक–४थो.



गया अंकमां, आपणी कोमने जीवन अर्पण करनार तेम उंची केळवणी पामेला वीर नर पं. अर्जुनलालजी सेठी बी. ए. ने

पं. अर्जुनलालजी असह्य आफतमां.

पांच वर्ष सुधी ! जैपुरनी जेलमां वगर गुन्हाए नजरकेद राखवाना, तेमज दर्शन करवाना बंध करवाथी पं. अर्जुनलाले ८ दिवस सुधी भोजन लीधुं नहोतुं ए समाचार जाणी आली जैन कोममां हाहाकार वर्ताई गयो छे अने अनेक गामो अने शहेरोमांथी जैपुर महाराजा, रेसीडंट अने नामदार वायसरोयने तारो मुकाया छे तेम आपणा पत्रोए आ दुःखदायक हिलचाल सामे विरोध दर्शाव्यो छे, एटलुंज नहि पण अन्य सार्वजनिक पत्रो जेवा के अलाहबादनुं इंगलिश पत्र 'लीडर Leader,' कलकत्तानुं रोजीदुं पत्र 'भारतमित्र' वगेरे पत्रोमां ए विषेना लेखो प्रकट थई चुक्या छे अने तेना संपादकोए ते पर मोटी मोटी नोटो लखी ए बाबत लक्षमां लई पं. अर्जुनलालजीनो केस न्यायनी कसोटीए चढाववा सरकारने भलामणो करी छे. जोके ८ दिवस भोजन न लीधा पछी जैनोनी खटपटथी महाराजाए जेलमां एक प्रतिमाजी विराजमान ! करवा दीधा छे अने त्यांज दर्शन–पूजन करीने पं. अर्जुनलालजी हवे खोराक तो ले छे, पण एमनुं शरीर फिकरमां ने फिकरमां तद्दन लेवाई गयुं छे तथा एमनी पत्नी अने छोकरांओनी महान कफोडी स्थीति थई पडी छे तेम एमना अमूल्य प्रयासथी चालती 'जैनशिक्षाप्रचारकसमीति' नां सर्वे कार्योने हाल ढांकणां देवायां छे, जेथी केळवणीनी प्रगतिने महान फटको पड्यो छे.

* * * *

परमकृपालु न्यायी ब्रिटीश राज्य एवुं ...के जेमां गमे तेवा मोटा अमलदारनो पण ...नो होय तो तेनो पण न्यायनी अदालते ...मो थई तेने न्याय युक्त शिक्षा थाय छे. आज ... भक्युंज नथी के ब्रिटीश

દારૂ તલકચ઼ કે., પદમશી નાનચંદ બેચર એ ... બચંદ, ગુલાબચંદ મોતીચંદ, ... કોઠારણ કંકુબા એ દરેકે રૂ. ૧।।; આતરા ... કોઠારી ગુલાબચંદ, રામચંદ પદમશી કસ્તુર એ દરેકે રૂ. ૧).

...कारणे पं. अर्जुनलालजी पर कंई पण गुन्हो सावित थया वगर एमने मात्र शंकारुपे पांच वर्ष सुधी नजरकेद राखवानो हुकम नीकली चुक्यो छे! आपणा इंग्लिश मासिक 'जैन गेझेट' (Jain Gazette)ना केळवायला संपादकजी अने गवर्नमेन्ट प्लीडर बाबू अजीतप्रसादजीए डिसेंबरना अंकमां ए माटे सरकारनुं ध्यान खेंचवा मोटो आर्टिकल लखेलो छे, जेमां जणाव्युं के इनडीयन पीनलकोड ना ७३–७४मा वाईड सेकसन मुजब कोई पण माणसने एकी वखते एक अठवाडीयाथी वधू के छुटी छुटी रीते त्रण महीनाथी वधू कबजामां राखी शकायज नहि अने ते मुजब अर्जुनलालजीने आ मुजब नजरकेद राखवा न्यायनी रीते योग्य नथी, माटे ए बाबत जाहेरमां मूकी केस चलावीने जो गुन्हो सावित थाय, तो गमे ते योग्य शिक्षा करवाने सरकारने सूचना करेली छे.

ॐ ॐ ॐ ॐ

जो के जैपुर महाराजाए पांच वर्ष सुधी नजरकेद राखवानो हुकम प्रकट कर्यो छे पण ते हुकम नामदार वाईसरोयनी सूचनाथीज थयो होवो जोईए केमके ए राज्य ब्रीटीश राज्यनी छत्रछाया नीचेज छे, माटे आपणे हवे जे कांई हिलचाल करवानी छे ते एज छे के आ बाबत नामदार वॉईसराय लॉर्ड हार्डिजनी सरकार पासे प्रत्यक्षमां लई जवानी जरुर छे अने ते माटे आगेवान जैनोनुं एक डेप्युटेशन ...सराय पासे मोकलवानी अत्यंत ताकीदे छे तेमज नामदार वाईसरायनी धारा...मां तथा विलायतनी धारासभामां आ ...नो प्रश्नो पूछाववानी हिलचालो थवानी जरुर छे अने त्यारेज आ बाबत सरकारना लक्षमां आवी एनो कंई पणतोड नीकळशे. सर्व कोई न्यायनेज चाहे छे तेम जैन कोम पण न्यायज मांगे छे अने न्यायनी कसोटीए जो पं. अर्जुनलालजी गुन्हेगार सावित थाय, तो गमे तेवी भारे शिक्षा करवा जैन कोम भलामण करे छे, पण वगर गुन्हाए महीनाओ थयां नजरकेद थवाथी जैन कोम उपर महाभारत कलंक चोंटयुं छे अने ते कलंकथी क्यारे मुक्त थवाशे ए कळातुं नथी.

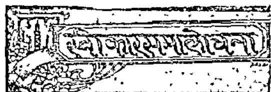
ॐ ॐ ॐ ॐ

दयालु जैपुर महाराजा जो के पं. अर्जुनलालजीना स्वास्थ्य माटे पुरती गोठवण करी रह्या छे, पण आ समाजहितैषी नरने गमे तेवुं सुख होय तो ते पण परतंत्रतानी बेडी सामे तद्दन नकामुं छे अने तेथीज एमनी स्थिति अत्यंत कफोडी थई पडी छे. वळी नजरकेद होवा छतां बीजा कोई साथे नहीं तो नैरां छोकरां साथे पण मेलाप के वार्तालाप करवा देवामां नथी आवतो, ए अतीशय अजायवी पमाडनारुं छे. हवे आ समय निरांते बेसी रहेवानो नथी पण जैन कोमे आ कलंकमांथी मुक्त थवानो ईलाज करवानी जरुर छे. आ माटे श्रीमान बाबू अजीतप्रसादजी

एम. ए. एल. एल. बी., इंदोर स्टेटना नवा जज लाला जुगमंदरलाल जैनी एम. ए. बेरिस्टर, दिल्हीना ऑ. लाला सुलतानसिंहजी, राय बहादुर लाला ईश्वरीप्रसादजी बेंकर, दानवीर शेठ हुकमचंदजी, राय बहादुर दानवीर शेठ कल्याणमलजी वगेरे विद्वा[illegible] अने श्रीमानोए मळी एक डेप्युटेशन ना[illegible] वाईसरोय पासे लई जवुं जोईए, तेम धारासभोमां पण आ हकीकतनी चर्चा उभी कराववी जोईए. अमो धारीए छीए के न्यायी ब्रीटीश राज्य कंई एवुं नथी के कदी पण अन्याय करे, माटे जो पुरती रीते आ बावत नामदार वाईसरोय ना मन उपर ठसाववामां आवशे तो तेओ नामदार तेनो योग्य नीवेडो लाव्या वगर रहेशेज नहिं. कंईक शंका पडी जवाने लीधे आवो मामलो बन्यो हशे, पण खटपट करी ते प्रत्यक्षमां पूछी तेनो खुलासो करवाथी तेनुं योग्य निराकरण थया वगर रहेशे नहीं. आटलाथीज सर्वेए बेसी रहेवानी जरुर नथी, पण दरेक शहेरोमां ए बावत सभाओ थवानी तथा नामदार वाईसरोय उपर तारो थवानी पण जरुर छे. ज्यारे आ बावत जैन कोममां पुष्कळ खळभळाट थशे त्यारेज ते सरकारना मन उपर आवी शकशे.

सामोदा (खानदेश) निवासी शेठ ढगडुसा सेवकदास गया मासमां मृत्यु पामवाथी श्री. मांगीतुंगी तीर्थनी प्रबंधक कमीटीने भारे खोट पडी छे.

बंभाडामां ब्र. शांतिदासजीना पधारवाथी १० दिवस उपदेश अपाई नित्यपूजन माटे ११५) नी वार्षिक टीप थई छे, जेथी हवे हमेश पूजा थती रहेशे.



(१) शब्दार्णवचंद्रिका [जैनेंद्रलघुवृत्ति, [illegible]देव विरचित] (२) समयप्राभृतं [कुंदकुंदाचार्य विरचित] (३) आप्तमीमांसा प्रमाण परीक्षा च [श्री समंतभद्र और विद्यानंदी विरचित] (४) शब्दानुशासनं [चिंतामणी वृत्ति सहित श्रुतकेवली देशीयाचार्य शाकटायन विरचित]:—श्रीयुत बालब्रह्मचारी पं. पन्नालालजी बाकलीवालके अटूट परिश्रम द्वारा बनारससे 'सनातनजैनग्रंथमाला' नामकी संस्कृत ग्रंथमाला प्रकट होती है जिसके यह ८–९–१०–११ वे अंक हैं, जो हरएक मंदिरजीमें और संस्कृतज्ञ विद्वानोंको संग्रहकरनेयोग्य हैं। इस संस्कृत ग्रंथमालाका वार्षिक मूल्य सिर्फ ८) है, जिसमें १२ अलभ्य संस्कृत जैन ग्रन्थ मिलते हैं। ज्यादे न होसके तो मंदिरजीके भंडारके द्रव्य द्वारा भी इस ग्रंथमालाका ग्राहक होकर हरएक मंदिरजीमें इन ग्रंथोंको विराजमान करना चाहिए। पत्रव्यवहारका पता-पन्नालाल जैन, भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्था—बनारस सिटी।

जैनतत्वप्रकाशकः —इटावासे चंद्रसेन जैन वैद्य द्वारा संपादित और प्रकाशित मासिक पत्र, वर्ष २. अंक १–२–३ यह

मासिक फिर बड़े आकारमें शुरु हुआ है। लेख अच्छे२ रहते है। जैनतत्त्वप्रकाशिनीसंभाके मेम्बरोंको विनामूल्य मिलता है, जिससे सिर्फ १) वार्षिक देनेसे सभाके मेम्बर होनेके अतिरिक्त सभाकी ट्रेक्ट... और यह मासिक मुफ्तमें पड़जाता... बहुत ही अल्प मूल्यमें भारी लाभ... है। यदि नियमित रुपसे प्रकट हो... रहेगा तो ऐसे पत्रकी ग्राहकसंख्या तो हजारों तक पहुंच जायगी।

असली पंचांगः—आयु. मा. ज्योतिषरत्न पं. जैनी जीयालालजी कृत यह सं. १९७२का चैत्री जैन पंचांग है। अब छपाई अच्छी हुई है। मूल्य ०)–। मिलनेका पता- मैनेजर, लक्ष्मीनारायण यंत्रालय—मुरादाबाद।

हिन्दी जैनशिक्षा प्रथम–द्वितीय भागः–लेखक और प्रकाशक शेठ लक्ष्मीचंदजी घीया–प्रतापगढ (मालवा)। मूल्य ०)०॥। बालकोंको भाषाके साथ धर्मका ज्ञान भी ऐसी पुस्तकोंसे सहज हो सकता है। सभी श्वे. जैन पाठशालाओंमें प्रवेशकरने योग्य है।

संसारमें सुख कहां है:—जैनतत्त्वप्रकाशिनी सभा (इटावा) की यह १०० पृष्ठकी २६वीं ट्रेक्ट है, जो 'जैनतत्त्वप्रकाशक' के ग्राहकोंको उपहारमें मिलती है और अलग मूल्य सिर्फ ०)= और सैंकडा १०)है। नामी लेखक श्रीयुत वाडीलाल मो. शाह के गुजराती पुस्तकका यह अनुवाद बहुतही अच्छा और पढ़ने योग्य है।

આનન્દકાવ્ય મહોદધિ (૧):-સુરતમાં શ્વે. જૈન ભાઇઓમાં શેઠ દેવચંદ લાલભાઈ જૈન પુસ્તકોદ્ધાર ફંડ' નામે સંસ્થા આશરે ... લાખ રૂપ્યાની થાપણની છે, જેના તરફથી ...૭૦ પૃષ્ટનો આ ૧૪મો મોટો ગ્રંથ માત્ર ... આનાની કિંમતે બહાર પડેલો છે, જેમાં શાલિભદ્ર, કુસુમશ્રી, કુમારપાળ, અશોકચંદ્ર-રોહિણી તથા પ્રેમલાલક્ષ્મીના રાસો આવશ્યક ટાંચણ સહિત પ્રાચીન ગુજરાતી કાવ્યોમાં છે. પ્રાચીન ગુજરાતી ભાષા કેવી હતી તે જાણવા આ ગ્રંથ અતીવ મહત્વનો છે. એમાં વિવેચનમાં શાલીભદ્ર રાસના કર્તા શ્રી મતિસાર બતાવ્યા છે, પણ એ રાસના પૃષ્ઠ ૧૮–૨૯–૩૫–૩૭–૩૯–૪૨ વગેરે વાંચતા જણાય છે કે એના કર્તા તો જિનરાજસુરી હોવા જોઇએ.

The Karma Philosophy (કર્મ ફિલોસોફી):—ઉપલી સંસ્થા તરફથી મર્હુમ ' જૈન ' પત્રકાર શ્રી. ભગુભાઇ કારભારીદ્વારા રચિત આ અંગ્રેજી પુસ્તક બહાર પડેલું છે, જેમાં સ્વર્ગીય **શ્રી. વીરચંદ રાઘવજી ગાંધી** બી એ. એ અમેરિકામાં આપેલાં ભાષણો અને લેખોનો **ઉત્તમ સંગ્રહ** છે. પાકી બાઇન્ડીંગ અને ૧૭૦ પૃષ્ઠનું હોવા છતાં મૂલ્ય તો માત્ર પાંચ આનાજ છે. મળવાનું સ્થળ–મગનલાલ વેલચંદ C/o શેઠ દેવચંદ લાલભાઇ ધર્મશાળા, ગોપીપુરા–સુરત.

માંગળીક ગીતો:—ભાવનગર નિવાસી શ્રીયુત મોતીચંદ ગીરધરલાલ કાપડીઆ સોલીસીટર તરફથી પાંચ વર્ષ થયાં પોતાની મર્હુમ માતા સમરથના સ્મરણાર્થે દર વર્ષે એકેક પુસ્તક ભેટ બહાર પડે છે તેનો આ પાંચમો મણકો છે, જેમાં લગ્નાદી શુભ પ્રસંગે

ગવાતાં માંગળિક ૨૦૦ ગીતોનો સમાવેશ છે જે લગ્નપ્રસંગ માટે બહુજ ઉપયોગી છે. પોસ્ટેજ એક આનાની ટીકીટ બીડવાથી આ પુસ્તક અથવા તો ત્રણ આનાની ટીકીટ (પોસ્ટેજ માટેજ) બીડવાથી પાંચે મણકાએ તદ્દન મફત મળી શકે છે. લગ્નાદિ શુભ પ્રસંગોએ આવા પુસ્તકોની સામટી પ્રતો મંગાવી લ્હાણીમાં વેંચવાની પણ જરૂર છે.

સ્વામી વિવેકાનંદ સદુપદેશ ભાગ ૧લો:—પ્રકાશક, સસ્તું સાહિત્યવર્ધક કાર્યાલય-અમદાવાદ. પૃષ્ઠ ૩૦૦ કિં. ।।=) આ સંસ્થાની વિવિધ ગ્રંથમાળાનું આ ૪૯-૫૦ મું પુસ્તક છે, જેમાં સ્વામી વિવેકાનંદના જુદા જુદા ઉપદેશોનો સંગ્રહ છે, તેમ આ પુસ્તકમાં આપણા સ્વર્ગ૦ દાનવીર શેઠ માણેકચંદજીનું સંક્ષિપ્ત જીવનચરિત્ર પ્રકટ કરી આ સંસ્થાએ દિ. જૈન કોમને મહાન આભારતળે મુકી દીધી છે.

'પટેલબંધુ' ખાસ અંક:-સુરતથી પ્રકટ થતા આ પત્રે દિવાળી ઉપર પ્રકટ કરેલો ૧૨૫ પાનાંનો આ સચિત્ર ખાસ અંક છે, જે ખેતીવાડી, કેળવણી, સાહિત્ય વગેરેના વિષયોના લેખો-કવિતાઓથી ભરપુર છે, જેમાં વસોના બાજીશાહનું હાથકારીગીરીનું ચિત્ર આકર્ષક છે તેમ 'ગુજરાતની સત્પ્રવૃત્તિઓની સમાલોચના' નામે ૨૫ પાનાંનો લેખ છે જેમાં ગુજરાતમાં કેળવણી અને સાહિત્યની જેટલી સંસ્થાઓ છે તથા જેટલાં ગુજરાતી માસિકો નીકળે છે તે બધાની વિચારપૂર્વક સમાલોચના કરવામાં આવી છે. આ લેખ તો દરેકે વાંચવા-વિચારવા લાયક છે. વાર્ષિક મૂ. માત્ર ૨ ૧ામાં આ પત્ર સારો લાભ આપે છે.

ગોપકાવ્યો:—ઉપલા માસિકના ગ્રાહકોને આ ૧૫૦ પાનાંનું પુસ્તક ભેટ અપાય છે જેમાં જુદા જુદા કવિઓના ૭૩ ગુજરાતી કાવ્યોનો સંગ્રહ આવશ્યક સમજુતી સાથે છે, જે ખાસ ખેડુતોને તેમ દરેકને પણ વાંચવા-લાયક છે. છુટક કિં. ...ના છે.

शेठ माणिकचंदजी यांचें जीवनचरित्र:-સ્વર્ગીય દાનવીર શેઠ માણેકચંદજીનું આ સંક્ષિપ્ત સચિત્ર જીવનચરિત્ર મરાઠી ભાષામાં મી. બી. પી. પાટીલ (હોસૂર-બેલગામ) દ્વારા બહાર પડ્યું છે. કિં. ૦)॥ મરાઠી વાંચકોએ અવશ્ય મંગાવવાની જરૂર છે.

આનંદ:—પુનાથી વાસુદેવ ગો. આપ્ટે ... દ્વારા પ્રકટ થતા માસિકનો આ ... સચિત્ર ખાસ અંક છે, જેમાં રંગબેરંગી પુષ્કળ ફોટાઓ અને બાળકોને ઉપયોગી સચિત્ર ઉત્તમ લેખોનો સંગ્રહ છે.

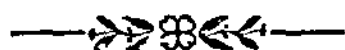
બ્રિટિશ અને હિંદી વિક્રમ:—આ નામનું ૮ પાનાંનું અઠવાડીક પત્ર ભાવનગરના મહારાણી શ્રી નંદકુંવરબા સાહેબ સી. આઈ. તરફથી બે માસ થયા **તદન મફત** બહાર પડે છે, જેમાં હાલમાં યુરોપમાં ચાલતાં મહાભારત યુદ્ધની જાણવા યોગ્ય વીગતો પ્રકટ થાય છે. આ સાહસ ખરચાળ અને તદન નવીનજ છે, જે માટે મહારાણી સાહેબને અમે મુબારકબાદી આપીએ છીએ. ગુજરાત પ્રાંતની સ્કૂલોમાં તો આ પત્રની ૨૫-૨૫ પ્રતો મફત મોકલવામાં આવે છે, તેમ ભાવનગર સ્ટેટમાં ગામેગામ મફત વેંચાય છે.

ભાઈબંધ-નવરંગ:-વડોદરાથી પ્રકટ થતા આ માસિકનો આ નવીન વર્ષનો ૧૦૦ પૃષ્ઠનો સુશોભિત સચિત્ર ખાસ અંક છે, જેમાં ઉપયોગી લેખો, કવિતાઓ તેમ ૧૭ ફોટાઓ છે, આ સાહસ ઉત્તેજનને પાત્ર છે.

શાળોપયોગી જૈન પ્રશ્નોત્તર:-પ્રકાશક-ઝવેરચંદ જાદવજી કામદાર (શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરંસ ઓફિસ-અજમેર) પૃ. ૧૦૦ કિં. ૦।=) આ પુસ્તકની આ બીજી આવૃત્તિ છે જેમાં સ્કુલોમાં ચલાવવા લાયક પ્રશ્નોત્તરો ૨૭ પાઠોમાં છે. સુલભતાથી ધાર્મિક જ્ઞાન બાળકોના હૃદયમાં ઠસાવવા માટે આવા પુસ્તકોની યોજના આદરણીય છે.

વળી નીચેનાં પુસ્તકો રિપોર્ટો વગેરે મલ્યાં છે, જે સાભાર સ્વીકારીએ છીએ.

(૧) દાનવીર શેઠ હુકમચંદજીની પારમાર્થિક સંસ્થાઓની નિયમાવળી. (૨) સદુપદેશ કુસુમમાળા (૩) પુષ્પમાળા (સુરત)ના ૨ પુષ્પો. (૪) વૈષ્ણવ સર્વસ્વ, વૃંદાવન નવીન માસિક. (૫) માંદાની માવજત. (૬) ઐલક પન્નાલાલ જૈન પાઠશાળા, ૨૯મો રિપોર્ટ. (૭) સુવર્ણમાળા નવીન અંક, કેલેંડર સહિત. (૮) દક્ષિણ મહારાષ્ટ્ર જૈન સભાનો રિપોર્ટ. (૯) ચતુર્માસ સંવત્સરી (૧૦) ખડાયતા મિત્ર (મુંબાઇ) નવીન માસિક. (૧૧) સુમનમાળા (મુંબાઇ) (૧૨) 'આયુર્વેદ રહસ્યાર્ક' ગોંડળનું નવીન વૈદ્યક માસિક. (૧૩) ગુણાનુરાગકુલક (૧૪) બીજનોર જૈન બોર્ડિંગનો રિપોર્ટ (૧૫) નડિઆદ હિન્દુ અનાથાશ્રમની ચિત્રાવળી. (૧૬) 'સુંદરી' સુબોધ અમદાવાદનો ખાસ સચિત્ર અંક વગેરે.



अर्जुनलालजी माटे मारी याचना.

શાર્દુલ વિક્રીડિત.

હૈયામાં હિત ચિત્ત જ્ઞાતિ અર્થે જેણે રૂડું સંગ્રહ્યું;
સેવા શાન્ત રહી સહાય કરવા બહાસહ્ય પ્રીતે ગ્રહ્યું,
શેઠી અર્જુનલાલ જ્ઞાતિ અર્થે આરોગ્ય પામો ફરી;
અધિવ્યાધિઉપાધિઓ શરીરની વીરમી જજો શ્રીહરિ.

હરીગીત.

નિજ સંતતીને રક્ષવા નિજ આપ્ત પ્રેમ વધારવા;
સુપથે યુવકગણ દોરવા સ્થાપી સમિતિ સુધારવા.
મહાવીરનો ઉપદેશ પ્રસરાવે વળી આ મહિ તળે;
મહાવીરપ્રભુ આરોગ્ય આપો શેઠી અર્જુનલાલને
જ્ઞાતિ દિગંબરજૈન શુભ દીપમાલને પ્રકટાવવા;
ચિરકાલ જ્ઞાતિ પ્રભા વધારી અંધકાર હઠાવવા,
જેના પ્રતાપે જૈનસંઘ સ્થલે સ્થલેજ સ્થપાય છે;
મહાવીરપ્રભુ આરોગ્ય આપો શેઠી અર્જુનલાલને

સરૈયા—સુરત.



प्राचीन तीर्थ श्री खंडगिरि।

जबसे जैनीयोंमें कुछ २ जागृतिकी चर्चा चली है तबसे जातिके विचारशील व्यक्तिओंका और २ अनेक बातोंके साथ २ ईस बातके उपर भी ध्यान गया है कि प्राचीन समयमें जैनीयोंका कहां २ अस्तित्व था ? और संसारका कितना बड़ा भाग इस जैनक्षेत्रने घेरा है ? इस धर्मध्यानने व्यक्तिओंके केवल मनकोही नहीं घेरा किन्तु कार्यरुप भी परिणत हुवा। इसका यह फल है कि आज हमें दिगम्बर जैनोंका बहुत प्राचीन 'खंडगिरि' नामक एक अतिशयक्षेत्रके दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त हुवा है।

इस पूज्य पर्वतके उपर एक छोटा और एक बड़ा इस प्रकारसे दो मंदिर हैं। इनमेंसे बड़े मंदिरकी मजबुतीको देखकर भारतीय प्राचीन गृहनिर्माण, कौशलका गौरव हृदयमें विना आये नहीं रहता। इसकी जीर्णताको देखकर लोग ईसे २५०० वर्षका पुराना कहते है। यद्यपि यह पर्वत शिखरजीके पर्वतसे छोटा है तथापि अपनी गुफाओंकी संख्यासे उससे कइगुना बड़ा है। ऐसा तो सुनते आ रहे है कि इस छोटेसे पर्वतमें ७८२ गुफाएं थीं लेकिन अमीतक तो छोटी बड़ी सब

मिलकर केवल २५० के ही लगभग मिल पाई हैं। कई बड़ी २ गुफाओंके अंदर जैन प्रतिमाएं भी हैं उनमेंसे दो गुफाओंके भीतर तो एक २ पूर्ण चौविसी भी है, जिसको उपरसे देवगण जलधारा कर रहे हैं और प्रत्येक प्रतिमाजीके नीचे दो २ ईन्द्र और दो २ यक्ष यक्षणी उन्हीं पत्थरोंमेंसे उकेरे गये हैं।

इन दोनों चौवीसीमें श्री महावीर-स्वामीकी एक भी मूर्ति नहीं है। उनके बदलेमें पार्श्वनाथजीकी दो २ प्रतिमाएं हैं जिससे यह सम्भावना होती है कि ये गुफाएं और प्रतिमाएं यातो महावीरस्वामी के समयसे पहले बनी हो या चिन्ह व्यतिक्रम हुवा हो।

इन गुफाओंके पत्थरोंपर बहुतसे प्राचीन शीलालेख उकेरे हुये हैं। इसके अत्यन्त निकट 'उदयगिरि' नामका एक प्रसिद्ध पर्वत हैं। उसमें भी थोडी बहुत गुफाएं हैं जिनके पत्थरोंपर "सीताहरण" भीम, इनका सेनाएं, जंगलका दृश्य, रामचंद्र, लक्ष्मण, आदिके ऐसे मनोहर चित्र उकेरे हुये है कि जो कागज के चित्रको भी माहात करते हैं। एक शीलालेख तो एक गज चौडा और दो गज लम्बा है। ईसके अतिरिक्त और भी अनेक शीलालेख ईस पर्वतपर हैं।

यदि इसका पूर्ण विवरण लिखे तो यह एक खास लेख हो सक्ता है ईस लिये मैं अधिक न लिखकर शिखरजीके यात्रीओंको केवल सुचना मात्र करता हुं कि अगर वे शिखरजीकी वन्दना करने के लिये आवे तो इस क्षेत्र के भी दर्शन किये विना वापिस न लोट जावे।

'खंडगिरि' को जानेवाले यात्रीओंको निम्नलिखित ३ रास्ते अत्यंत सुभीताके पडेंगे—(१) इसरी या गीरीडीह से कलकत्ता होकर। (२) ईसरी या गीरीडीह से आसनसोल होकर। (३) गया से खडगपूर

बी. ऐ. ना. के भूवनेश्वर स्टेशनपर उतरना होगा और वहांसे फिर बैलगाडी के द्वारा पर्वतपर जाना होगा।

किसी यात्री महाशयको यदि विशेष प्रबंधकी आवश्यकता हो तो वे खंडगिरिके मुनिमको सूचना दें या प्रबंधकारिणी कमेटीके मंत्रिको कलकत्ता लिखें।

प्रेमराज मुनिम

आवश्यकताएं:—श्री० कंचनबाई श्राविकाश्रम (इन्दौर) के लिये प्रवेशिकातक धर्मशास्त्र पढासके ऐसी अध्यापिकाकी आवश्यकता है। वेतन २५) से ३५) तक योग्यतानुसार। और रसोई करनेवाली दि. जैन बाईकी आवश्यकता है। भोजन और रहनेके अतिरिक्त वेतन ५) से ७) मासिक तक मिलेगा। पत्र लिखनेका पता—लाला हजारीलालजी, मंत्री, सेठ स. हु. दि. जैन संस्थाएं, नशियांजी, इन्दौर।



दक्षिण महाराष्ट्र जैन कोन्फरंस-कोन्फरंसकी १७ वीं वार्षिक बैठक ... गाममें ता. २७-२८ डिसेंबरको ... आप्पा साहेब देशाई हनगंडीकरके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें निम्न लिखित मस्ताव पास हुए थे-(१) लोर्ड हार्डिंजके ज्येष्ठ पुत्रके मृत्युके लिये शोक प्रदर्शन, (२) प्रस्तुत संग्राममें हमारे इंग्रेज सार्वभौमको यश मिलना ऐसी राजनिष्ठासे इच्छा करना, (३) जैन समाजमें इंग्लिश शिक्षणका प्रचार होना, (४) धर्मशिक्षण और जातिशिक्षणका प्रचार होना, (५) जैन स्त्रियोंमें शिक्षाका प्रचारकी आवश्यकता, (६) दा. जै. शेठ माणेकचंदजीके शोकजनक मृत्यु पर दिलगीरी प्रदर्शित करना और उनके नामका स्मारक करना इत्यादि। विशेष महत्वका कार्य यह हुआ था कि इस सभामें दक्षिण भागके कमिशनर मे. लॉरेन्स साहबका शुभागमन हुआ था और उनका एक असरकारक भाषण भी हुआ था। जैन लोगोंकी दातृत्वशक्तिकी बहुत तारीफ करके उनके सामाजिक और धार्मिक आंदोलनमें बहुत शीघ्र यश मिलना ऐसी साहब बहादुरने अपने भाषणमें इच्छा प्रकट की थी। पांजरापोल आदि स्थापन करनेके पूर्व जानवर और मनुष्य इनके लिये हॉस्पिटल्स स्थापन करना बहुत जरुर है ऐसा अपना मंतव्य उन्होंने प्रकट किया था। ता. २९को जैन महिला परिषद भी सौ. भगीरथीबाई पिराळेके सभापतित्वमें हुई थी, जिसमें सौ. ज्योत्स्नाबाई लट्ठे, सौ. पार्वतीबाई अंकले, सौ. पिराळे आदिके स्त्रीशिक्षणप्रचारके विषयमें उत्तमोत्तम भाषण हुए थे। आगामी सालके लिये जनरल सेक्रेटरीका कार्य श्री. आण्णाप्पा नानप्पा लेंगडे (शाहपुर, बेलगाम) को और कोल्हापुर बोर्डिंगके सेक्रेटरीका कार्य मी. कुबेरप्पा भरमप्पा अंकले (बेलगाम) को सर्वानुमतसे दिया गया है।

પાસ થયા:—અમદાવાદની શેઠ. પ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડિંગમાંથી આ વર્ષે મેટ્રિકની પરિક્ષામાં બેઠેલા ૧૧ વિદ્યાર્થીમાંથી ગાંધી જીવરાજ ગુલાબચંદ (સોનાસણ), શા. છોટાલાલ પીતાંબરદાસ (નરસીપુર), શા. ચુનીलाल શીવલાલ (કુડસદ) અને શા. ઇશ્વરલાલ અમથાભાઇ (વામજ) એ ૪ વિદ્યાર્થીઓ પાસ થયા છે તેમજ સ્કુલ ફાઇનલમાં પણ ભાઇલાલ કાળીદાસ (બોરસદ) અને ગાંધી જીવરાજ ગુલાબચંદ (સોનાસણ) એ બંને પાસ થયા છે. વળી આ વર્ષે બોર્ડિંગનો વિદ્યાર્થી **શાંતિલાલ** હરજીવનદાસ ગુજરાત કોલેજમાં **પ્રીવીયસની** પરીક્ષામાં પહેલે નંબરે પાસ થયો છે અને તેને સરકાર તરફથી **રૂ. ૧૫ની માસિક** સ્કોલરશીપ મંજુર થઇ છે, જે બીના સર્વે વિદ્યાર્થીઓએ ધ્યાનમાં લઈ એ પ્રમાણે પાસ થવાની ઉમેદ રાખવા ખંતથી અભ્યાસ કરવાની જરૂર છે.

बी. ए. थवा माटे मानः—ओरसदमां चोकशी मनसुखलाल बहेचरदास बी. ए. नी परीक्षामां पास थवाथी तेमने अभिनंदन आपवाने एक जाहेर मेळावडो गय ता. १लीए शेठ बहेचरदास भवानीदासना प्रमुखपणा नीचे थयो हतो जेमां परी. लल्लुभाई प्रेमानंददास एल. सी. ई. ए जणाव्युं हतुं के आ भाइए दरेक परीक्षा पहेलेज वर्षे पसार करी छे ते बीजा विद्यार्थीओए धडो लेवा योग्य छे वगेरे. ए पछी केटलांक विवेचनो थइ चाह पाणी, पान सोपारी. हारतोरा अपाई मेळावडो विसर्जन थयो हतो.

चांदखेडीमां मेळोः—अतिशय क्षेत्र श्री चांदखेडीमां फागण वद ९ थी ११ सुधी वार्षिक मेळो भरानार छे, जेमां सर्वेने पधारवाने हीरालाल मंत्री आमंत्रण करे छे.

जैन विधिथी लग्न अने सभाः—गया मासमां गोटेगाममां पं. दीपचंदजी द्वारा एक लग्न जैन विधिथी थई जाहेर सभा थई हती, तेमां हवे पछी थनारां लग्नो जैन विधिथी करवा सर्वेए कबुल्युं हतुं. वळी आ प्रसंगनी खुशालीमां कोदूलालजीए रु. ७), सिंघई दुलीचंदजीए रु. ९) अने सौ. जमनाबाईए रु. २) मळी १७) काशीनां स्या. महाविद्यालयने भेट मोकल्या हता.

तीलोकचंद जैन हाइस्कूल इन्दौर—मंत्री बुधमलजी पाटणी सूचित करते है कि इसके कार्यमें एक वर्ष पर्यंत विघ्न उपस्थित हुए थे उनसे पाठक परिचित ही है इसी कारण अभीतक श्रीमंत महाराजा तुकोजीराव होल्करके हस्तकमल द्वारा स्कूल उद्घाटन महोत्सव नहीं हो सका। इस स्कूलमें अभी मिडिल कक्षा तककी पढाई बराबर हो रही है। प्रायः २०० विद्यार्थी शिक्षण पा रहे हैं। श्रीयुत रायसाहेब नानकचंदजी बी. ए. जैन गवर्नमेंट पेन्शनर जो कि वयो- और शिक्षणशैलीके अच्छे अनुभवी स्कूलके हेड मास्तर नियत किये गये हैं तथा सुप्रसिद्ध पं. लालारामजी धार्मिक शिक्षक हैं अतएव आशा है कि यह स्कूल शनैः २ अपने उद्देशकी पूर्ति कर सकेगा।

पास थयाः—मुंबाइनी शेठ ही. गु. जैन बोर्डिंगमां सने १९१४मां ४२ विद्यार्थीओमांथी ३४ जुदी जुदी परिक्षाओमां बेठा हता, तेमांथी पहेली एस. एल. बी. १, बी. ए.मां ३, इन्टरमां ४, प्रीवीयसमां ७ अने देशी वैद्य परीक्षामां १ मळी १६ पास थया छे. वळी बहार गामथी परीक्षा आपवा आवेलां २१मांथी १३ पास थया छे.

लाकरोडामां सभाः—अत्रे गया मासमां विजापुर विभागना डेप्युटी लखाभाइ साहेबना प्रमुखपणानीचे मासिक सभा थई हती जेमां शा हाथीभाइ माणेकचंद, लल्लुभाई रायचंद वगेरेए उन्नति विषे भाषणो आपवा पछी प्रमुखे दोढ कलाक सुधी आपणी उन्नति विषे असरकारक विवेचन कर्यु हतुं बाद पतासांनी प्रभावना वेंचाई सभा विसर्जन थइ हती, वळी डेप्युटी साहेबे अत्रेनुं शेठ माणेकचंद हीराचंद दि. जैन पुस्तकालयनुं निरीक्षण करी ते माटे संतोष जाहेर कर्यो हतो.

आवश्यकताः—प्रतापगढकी श्री महावीर कन्या पाठशाला के लिये जैन अध्यापिकाकी आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार।

કુંથલગીરીનો મેળોઃ—સિદ્ધક્ષેત્ર શ્રી કુંથલગીરીમાં માગસર સુદ ૧૫ ઉપર વાર્ષિક મેળો ભરાયો હતો જે પ્રસંગે રથયાત્રા નીકળી હતી તથા ત્રણ દીવસ શેઠ કસ્તુરચંદજી પરંઢાવાળાના પ્રમુખપણા નીચે સભાઓ થઇ હતી, વળી અત્રે બ્ર. પાર્શ્વસાગરજી [illegible] અતૂટ પ્રયાસથી કુલભૂષણ દિ. જૈન વિ[illegible]લય ત્રણ વર્ષથી ચાલે છે તેનો રિપોર્ટ [illegible] હતો જેથી જણાય છે કે એ [illegible] ચાયે! માટે ગામેગામ ફરી અનાજ તથા પૈસા મેળવી આ બ્રહ્મચારીજી જેમતેમ ખરચ નીભાવે છે. હાલ ૩૩ વિદ્યાર્થી છે અને ૧૨૫) માસિક ખર્ચ છે. ૬૦૦) ગત વર્ષે ઘટારો હતો તે માટે અપીલ થતાં ૧૫૦) ભરાયા હતા. આ ઉત્તમ વિદ્યાલય માટે પરંઢા, સોલાપુર, ભૂમ, ધારાસીવ, બાર્સી વગેરેના ભાઇઓએ ખટપટ કરી સ્થાયી ફંડ કરી આપવાની જરૂર છે.

પાવાગઢ તીર્થમાં મેળોઃ—સિદ્ધક્ષેત્ર શ્રી પાવાગઢમાં **માહાસુદ ૧૩** ઉપર વાર્ષિક મેળો ભરાનાર છે જે પ્રસંગે એ તીર્થની મેનેજીંગ કમીટીની ચોથી બેઠક પણ થનાર છે. સ્ટેશનનું નામ હવે **પાવાગઢ** થયું છે માટે આ મેળામાં જનારે વડોદરાથી ચાંપાનેર રોડ જઈ પાવાગઢનીજ ટીકીટ લેવી,

નવીન ભટ્ટારક સુરેંદ્રકીર્તિજી બાકરોળ વગેરે સ્થળે થઈને હાલ કરમસદમાં નિવાસ કરી રહેલા છે અને રોજ ધર્મોપદેશ આપે છે એમ અમને જણાવવામાં આવે છે.

मद्रासना गवर्नर मुडबीद्रीनी मुलाक्रातेः—गत नवेंबर मासमां मद्रासना गवर्नर लोर्ड पेंटलान्डे मद्रास इलाकानी मुसाफरी दरम्यान जैनबीद्री–मुळबीद्रीनां दि. जैन तीर्थो अने मंदिरोनी मुलाकात लीधी हती तथा श्री गोमटस्वामीनी मूर्ति तथा त्यांना मंदिरोनी अपूर्व प्राचीनता जोई तेनी तारीफ करी हती आ प्रसंगोए त्यांना जैनो तरफथी भारे मानपान अपायुं हतुं.

उद्धारनी जरुरः—इंदोरनी पासे गंधावल, राजापुर, उन ए त्रण गामोमां प्राचीन मंदिरो छे, ज्यां वस्ती न होवाथी प्रबंध वगेरेना वाखा छे माटे इंदोरना शेठोए आ प्राचीन मंदिरोनी सारसंभाळ ताकीदे लेवानी आवश्यकता है ।

जैन पुस्तकोनो अंग्रेजीमां अनुवादः—आरानिवासी कुमार देवेंद्रप्रसादजी हाल शांतिकुंज, अलाहबादमां रही भारे परिश्रम करी एक मोटो जैन ग्रंथ अंग्रेजी भाषामां तैयार करावी रह्या छे जेमां दुनियाना सर्व धर्मोना सिद्धांतथी जैन धर्मना सिद्धांतो केटला उत्तम अने दृढ छे ते साबित करेलुं छे. आ ग्रंथ आशरे १९०० पानांनो थनार छे, जे एक गुप्त जैन विद्वाने रचेलो छे. तथा 'द्रव्य संग्रह'नो विस्तारथी दलीलो साथे अंग्रेजी अनुवाद जैनधर्मप्रेमी एक बंगाळी विद्वान पासे तैयार कराव्यो छे, जे पण टूंक समयमां छपाईने प्रकट थनार छे. कुमार देवेंद्रप्रसादजी जैन साहित्यनो अंग्रेजी भाषामां फेलावो करवाने पुष्कळ खटपट करी रहेला छे जेमने जैनोए दरेक रीते मदद आपवानी जरुर छे.

तीर्थक्षेत्रकमीटीनो ट्रेडमार्कः—भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमीटी तरफथी

हालमां 'मानस्थंभ'नो ट्रेडमार्क दरेक तीर्थनी रसीदो उपर मारवानुं शरु थयुं छे माटे हवे कोई पण यात्रीए ए ट्रेडमार्क जोया वगर रसीद लेवी नहीं.

ब्रह्मचर्याश्रमने मदद:—श्री रुषभब्रह्मचर्याश्रम (हस्तीनापुर)ने जुलाईथी नवेंबर मास सुधीमां रु. ३७९४)नी परचुरण मदद मळी हती. आज प्रमाणे आ आश्रमने वखतोवखत मदद मोकलवानी दरेक जैननी फरज छे.

संपादकपरिवर्तन:—मुंबाईथी प्रकट थता 'सत्यवादी' मासिकनुं कार्य पं. उदयलालजीए छोडी दीधुं छे अने हवे पं. खूबचंदजीने एनुं संपादनकार्य सोंपायुं छे.

स्या. महाविद्यालयका उत्सव:—स्या. महाविद्यालयका दशवां वार्षिक उत्सव बनारसमें गत ता. २५–२६ को टाउन हॉलमें बडे आनन्दके साथ संस्कृत क्वीन्स कोलेजके प्रोफेसर डॉ. टी. के लड्डुके सभापतित्वमें हुआथा जिसमें विद्यार्थीओंके कई संस्कृत संवाद हुए, पारितोषिक बांटा गया और दो दिनकी सभामें पं. तुलसीरामजी काव्यतीर्थने 'जैन साहित्य', कुंवर दिग्विजयसिंहजीने 'जैनधर्मके सौंदर्य,' पं. घनश्यामदासजीने 'स्यादवाद', पं. श्रीलालजीने 'संस्कार,' ब्र. भगवानदीनजीने 'कर्मसिद्धांत,' प. गजाधरलालजीने 'आप्तविचार, पं. उमरावसिंहजीने जैन सिद्धांत, बाबू दयाचंद्रजी गोयालीयने 'अहिंसा परमोधर्म,' पं. दीपचंदजीने 'धार्मिक शिक्षा और छात्राश्रम के उपयोग,' और जैनधर्मभूषण [illegible] शीतलप्रसादजीने 'आत्मोन्नति' [illegible] करेपूर्व व्याख्यान दिये थे। सभापतिका [illegible] व्याख्यान बहुतही महत्वका हुआथा (जिसका सारांश हम आगामी अंकमें प्रकट करेंगे)। अब विद्यालयके सभापति दानवीर शेठ हुकमचंदजी नियत हुए है। इसी अवसर पर जैन स्पोर्ट्स क्लब काशीका द्वितीय वार्षिकोत्सव बाबू दयाचंद्र गोयलीय जैन बी. ए. के सभापतित्वमें हुआ था जिसमें भी अनेक व्याख्यान होकर पारितोषक बांटा गया और आगामी वर्ष निबन्ध लिखने व व्याख्यान देने के लिये कई पारितोषक नियत हुए है।

उपदेशकनुं भ्रमण:—द. म. खंडेलवाल पंच महासभा तरफथी हाल पं. हीरालालजी खानदेशमां एवा गामडाओमां भ्रमण करीने उपदेश करी रहेला छे के ज्यां सो सो पचास पचास माईल सुधी रेल्वे तेम पोस्ट ओफिस पण नथी. आ भ्रमणथी अनेक लाभ थवा संभव छे.

बेदी प्रतिष्ठोत्सव:—परसोन (खुरई) में गत मासमें बेदी प्रतिष्ठा हुईथी, जिसमें पं. नंदनलालजी, पं. जवाहिरलालजी शास्त्री, पं. छेदालालजी आदिके अनेक व्याख्यान हुए थे।

श्वे. जैन कोनफरन्सः—नवमी श्वेतांबर जैन कोन्फरंस माहा सुद १२-१३ ता. २७थी २९ जानेवारीए प्रतिष्ठाछत्सव प्रसंगे सुजानगढ (बीकानेर)मां राधनपुरानिवासी शेठ मोतीलाल मूळजीना प्रमुखस्थाने थनार छे. डेलिगेट फी रु. २) छे. सुजानगढनुं खास स्टेशन छे.

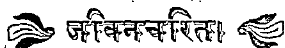
वडवाणीनो मेळोः—रीवेता मुजब सिद्धक्षेत्रश्री वडवाणीमां पोस सुद ८ थी [सुधी] रथोत्सवपूर्वक वार्षिक मेळो भरायो हतो. श्रीमान् कुंवर दिग्विजयसिंहजी तथा ब्र. भगवानदीनजीए खास पधारी अनेक सभाओमां जैनधर्म, कर्मसिद्धांत, स्त्री शिक्षा, ब्रह्मचर्य वगेरे विषयो उपर व्याख्यानो आप्यां हतां, जेमां केटलाक आर्यसमाजीओए भाग लइ शंकाओ करी हती तेनुं उत्तम समाधान करवामां आव्युं हतुं. आ प्रसंगे पं. अर्जुनलाल शेठीना छुटकारा माटे ना. वाईसरोय अने गवर्नर जनरल अजमेरने तारो मूकवामां आव्या हता, बोर्डींगनो रिपोर्ट वंचायो हतो, आ तीर्थनी कमीटीना प्रमुख दानवीर शेठ माणेकचंदजीनी खाली पडेली जग्याए लाला परभूदयालजीने नीमवामां आव्या तथा बावनगजाजीना जीर्णोद्धार माटे सरकारने अरजी करवानो ठराव एवी रीते थयो के अडधो खरच सरकारे आपवो अने अडधो तीर्थ तरफथी आपवो. तैयार छीए. वळी स्टेटना राणी साहेब तथा ओफिसरो वगेरे आ मेळामां पधार्या हता तथा 'स्त्री शिक्षा' माटे १८) मासिकनी टीप थई हती.

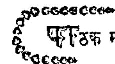
आवश्यकताएंः—मालवा प्रान्तिक पाठशालाओंके लिये कइ अध्यापक और अध्यापिकाओं की आवश्यक्ता है। वेतन १५) से ३०) तक योग्यतानुसार। पत्रव्यवहार—सोनपाल जैन, मंत्री विद्याविभाग, बडबाहा (मालवा)।

वालूजमां पं. हीरालाल उपदेशकना प्रयासथी रु. २५० नी वार्षिक टीपथी पाठशाला स्थपाइ छे

ग्राहकोंको खास सुचनाः—पत्रव्यवहार करते समय अपना नवीन ग्राहक नंबर अवश्य लिखते रहना।

मुरादाबादनिवासी स्व. पं. चुन्नीलालजीका





पाठक महाशय ! 'दिगंबर जैन' [illegible] गत सचित्र खास अंकमें २५ वां चि[illegible] स्वर्गीय पं. चुन्नीलालजीका था, जिनका बहुत संक्षिप्त परिचय उसी अंकमें दिया गया था। अब आपका अनुकरणीय विस्तृत जीवनचरित जो हमको वैद्य शंकरलाल हरीशंकर (संपादक 'वैद्य'—मुरादाबाद) द्वारा प्राप्त हुआ था वह अक्षरशः प्रकट कियाजाता हैं।

पं. चुन्नीलालजीका पवित्र नाम यद्यपि जाति और धर्मकी सेवाके लिये दिगम्बर जैन समाजमें बहुत प्रसिद्ध है, परंतु सर्व साधारण लोगोंको आपका विशेष परिचय न होनेके कारण आज आपका संक्षिप्त जीवनवृत्तान्त पाठकोंकी भेंट करते हैं।

पं. चुन्नीलालजी खंडेलवाल वैश्य थे और आपका गोत्र सोहनी था। आपका जन्म सम्वत् १८९०में मुरादाबाद जिलेके कुंदरखी ग्राममें हुआ। कुंदरखी एक छोटासा किंतु बहुत पुराना कसबा मुरादाबादसे दक्षिणकी तरफ ११ मील पर बसा हुआ हैं। यहां पहले कभी बड़ी रौनक थी परंतु इस समय तो यह बिलकुल वीरानसा मालूम होता है। जब यह वस्ती अपनी उन्नत अवस्थामें थी तब यहां जैनधर्मकी खूब चर्चा थी। २९—२६ जैनियोंके घर थे। अब यहां केवल ८—१० घर जैनियोंके हैं। सो वे भी बड़ी ही शोचनीय दशामें हैं।

पं. चुन्नीलालजीके पितामह लाला [illegible]जी बिलारीसे आकर कुंदरखीमें [illegible]। लाला सर्वसुखजीके पुत्र लाला मुन्नालालजी कुंदरखीमें एक प्रतिष्ठित पुरुष गिने जाते थे। मुन्नालालजीके तीन पुत्र हुए। १ झव्वालाल २ चुन्नीलाल और ३ मोहनलाल। इस प्रकार हमारे चरित नायक मुन्नालालजीके दूसरे पुत्र थे। पिता माताके धार्मिक भावोंको देख कर इनकी बहुत थोड़ी ही उमरमें धर्ममें प्रीति होगई थी। धार्मिक बातोंको ये बड़े चावसे सुना करते थे। इनकी बुद्धि बचपनसे ही इतनी तीव्र थी कि इन्होंने बहुतसी धर्मसंबंधी सूक्ष्म बातें ६—७ वर्षकी उमरमें ही याद करली थीं। उस समय कुंदरखीमें शिक्षाका कोई बढ़िया प्रबंध नहीं था, इसलिये १३—१४ वर्षकी उमर तक ये घर ही पर पिताजीसे साधारण रीतिसे लिखना पढ़ना सीखते रहे। फिर १४ वर्षकी उमरमें पं. किसनलालजी जैनीके पास पढ़ने बैठे। उनके पास इन्होंने थोड़े ही दिनोंमें नागरीमें अच्छी योग्यता प्राप्त करली और साथ ही साथ जैनधर्मके भी अनेक विषयोंके ज्ञाता होगये।

१४ वर्षकी उमरमें आपका रामपुरमें लाला लालजीमलकी कन्याके साथ विवाह

हुआ। विवाह होनेके बाद ९ वर्ष तक अर्थात् १९ वर्षकी उमर तक आप पं. किशनलालजीसे ही पढ़ते रहे, परंतु फिर इनका मन कुंदरखीमें न लगा, इसका कारण यही था कि ये संस्कृत पढ़ना चाहते थे और कुंदरखीमें संस्कृत पढ़नेका [illegible] प्रबंध नहीं था। इसलिये इनकी [illegible] पढ़नेकी प्रबल इच्छाने इनको रामपुर जानेके लिये बाधित किया। सम्वत् १९०९ में ये रामपुर चले गये और वहां ससुरालमें रहने लगे। रामपुरमें इनकी संस्कृत पढ़नेकी इच्छा पूरी हुई। रामपुरके प्रसिद्ध विद्वान् पं. दत्तरामजीसे इन्होंने संस्कृत पढ़ना शुरू करदिया। पं. दत्तरामजी रामपुरमें बड़े नामी और प्रतिष्ठित पुरुष थे। उनकी राजाप्रजामें बड़ा सम्मान था। रामपुरके नवाब ईसुफअलीखांकी नवरत्न-सभाके पंडितजी सभ्य थे। राज्यकी तरफसे पंडितजीको एक अच्छी वृत्ति मिलती थी। पंडितजीके घर पर सदा ही विद्वानोंका जमाव रहता था। पंडितजीने अपने घर पर एक छोटीसी संस्कृत पाठशाला भी खोल रक्खी थी। उसमें आप लड़कोंको व्याकरण, काव्य, जोतिष आदिकी शिक्षा दिया करते थे। हमारे चरित नायक चुन्नीलालजी भी इसी पाठशालामें भर्ती हुए। ये अपनी बुद्धिकी प्रखरता, नम्रता और सुशीलताके सबब शीघ्रही पंडितजीके कृपा भाजन बन गये। पंडितजी इनको बड़े हितसे पढ़ाते थे, इसलिये ये ४–९ वर्षमें ही संस्कृतके अच्छे पंडित हो गये। सारस्वत, चन्द्रिका, रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत, न्यायमुक्तावली आदि ग्रंथोंके सिवा कभी कभी आप पंडितजीसे गणित [illegible] ज्योतिषके ग्रंथ भी पढ़ा करते थे। [illegible] दत्तरामजी संस्कृतके असाधारण विद्वान् [illegible]के सिवा भाषाके भी पंड़ित थे। भाषा-साहित्यके पंडितजी बड़े ही प्रेमी थे इस कारण हमारे चरित नायकको भी पंडित-जीके पास भाषाकाव्य पढ़नेका शौक लग गया। इन्होंने सुंदर शृंगार, भाषा भूषण, विहारी सतसई, रसिक प्रिया, केशवचन्द्रिका आदि कितने ही भाषाग्रंथ पढ़ डाले। कविता पर भी इनका इतना अनुराग हो गया था कि जहां कहीं कविताकी चर्चा सुनते वहां ये जरूर जाते। कभी कभी ये कविताके रसास्वादनकी लालसासे गुरूजीके साथ नवाब साहबके दरबारमें भी जाया करते थे।

रामपुरमें जैन ग्रंथोंके पढ़नेका भी आपको अच्छा सुभीता हो गया था। उन दिनों रामपुरमें पं. जिनेश्वरदासजी जैनधर्मके एक धुरंधर विद्वान् थे। उनही-से ये जैन सिद्धांतके ग्रंथ पढ़ा करते थे। इस प्रकार सम्वत् १९१६ तक आप बड़ी वेफिक्रीके साथ लिखते पढ़ते रहे। परंतु फिर एक साथ गृहस्थकी भारी चिंता लग जानेसे पढ़ना लिखना सब एक प्रकार कम

होगया और रोज़गार करनेकी सूझी। उन दिनों रामपुरमें फरुखाबाद, हाथरस, अलीगढ़, आगरा आदि शहरोंसे किरानेका माल बैल गाड़ियोंमें लदकर बिकनेके लिये आया करता था। उसमें व्यापारी लोगोंको अच्छा मुनाफ़ा हो जाता था। हर और [illegible] चरित नायकको भी यही रोज़गार रु[illegible] जान पड़ा। आप यह धंधा रामपुरम [illegible] सम्वत् १९२४ तक करते रहे और आपको इस काममें सफलता भी अच्छी रही। बाहर अनेक स्थानोंमें जाने आनेका काम पड़नेसे बाहरके अनेक जैनी भाईओंसे आपका परिचय होगया था। इसलिये आप अपनी विद्या, बुद्धिके लिये इस प्रांतके जैनिओंमें थोड़े ही समयमें बहुत प्रसिद्ध होगये थे। फिर आपका धार्म्मिक अनुराग और भी अधिकाधिक बढ़ता ही गया। प्रतिदिन बहुतसा समय आपका धार्म्मिक कार्योंमें खर्च होजाता था। पूजन, पाठ, शास्त्राध्ययन आदि श्रावकके आवश्यक कार्य्योंके सिवा आप प्रतिदिन मंदिरमें सहधर्म्मी भाईओंके साथ धर्म्मचर्चा किया करते थे। उनको उपदेश देते थे और अनेक भाईओंको जैनधर्म्म पढ़ाया करते थे।

इसी बीचमें मुरादाबादके स्वनाम धन्य मुन्शी मुकंदरामजीसे आपका धार्म्मिक स्नेह होगया था। मुन्शीजीके अनुरोधसे सम्वत् १९२४में आप मुरादाबादमें चले आये। मुरादाबादमें आकर इन्होंने अनाजकी आढतकी दूकान की और शेष अवस्था तक बराबर यही दूकान करते रहे। अब भी इनकी दूकान ईमानदारीके लिये शहरमें प्रसिद्ध है। मुरादाबादमें [illegible]पने अनेक धर्म्म व जाति संबंधी कार्य्य [illegible]। आपका अधिकांश जीवन ऐसे ही [illegible]ोंमें व्यतीत हुआ। मुरादाबादमें प्रायः सभी धर्म्म संबंधी उत्सव आपकीही प्रधानतामें हुआ करते थे। जिस समय मुरादाबादमें पं. चुन्नीलालजी और मुन्शी मुकंदरामजी ये दोनों विद्वान् विद्यमान् थे, उस समय यहां जैनधर्म्मकी खूब धूम थी। मुरादाबादमें ही नहीं बल्कि संपूर्ण जैन समाजमें उस समय उभय महाशयोंने जागृति उत्पन्न कर दी थी। मुन्शीजी उर्दू, फारसी और अरबीके पूर्ण पंडित थे। आपकी तर्कशक्ति बड़ी प्रबल थी। आप अपनी अकाट्य युक्तियोंके द्वारा बड़े२ वादिओंको बहुत जल्द निरुत्तर करदेते थे। एकवार स्वामी दयानंद सरस्वतीजीका मुरादाबादमें जब दूसरे लोगोंसे शास्त्रार्थ होना निश्चित हुआ था, तब मुन्शीजी ही उसमें मध्यस्थ बनाये गये थे। और भी बहुतसी सर्व साधारण सभाओंमें मुंशीजी प्रधान बनाये जाते थे। मुंशी मुकंदरामजी और पं. चुन्नीलालजी दोनों मिल बाहर जगह जगह फिर कर जैनधर्म्मका प्रचार करते, जैन सभायें स्थापित करते और जैनधर्म्मका उपदेश देते थे। जैन जातिकी उन्नति विषयक

जैन पत्रोंमें लेख लिखते थे। सम्वत् १९३८में उभय मित्रोंने "जैन पत्रिका" नामका एक मासिक पत्र भी निकाला था। उससे जैन समाजका बहुत कुछ उपकार हुआ था। पीछे मुंशीजीका देहांत होनेपर "जैन पत्रिका" [illegible] हो गई। मुंशीजीके वियोगसे आपको बड़ा दुःख हुआ। "[illegible] समाजकी सेवा अब इकले कैसे करें" यही चिंता आपको दिनरात दिक करने लगी। आखिर कुछ समय तक उदासीन रह कर फिर आप जैन समाजकी सेवामें प्रवृत्त हुए और अंतिम अवस्था तक आप बराबर अविश्रान्त परिश्रमके द्वारा जाति-सेवा करते रहे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके स्थापन होनेमें आपका सबसे अधिक उद्योग और परिश्रम था। इसलिये आप महासभाके प्रधान स्थापक समझे जाते थे। और भी कितनी ही जैन संस्थाओंके आप सहायक थे। जैन महाविद्यालय मथुरासे आपकी पूर्ण-सहानुभूति थी। श्री पार्श्वनाथ—अहिक्षेत्र, रामनगरके मंदिर और मेलेका सारा प्रबंध आपको ही करना पड़ता था। अनेक जैन मेलोंमें, उत्सवोंमें और बड़ी२ जैन सभाओंमें आप जाते थे। जैनिओंके प्रायः सभी प्रसिद्ध तीर्थोंकी आपने यात्रा की थी।

आगरेके प्रसिद्ध विद्वान् पं. बलदेवदासजी, खुरजाके तार्किकसिद्ध पं. मथुरादासजी, अलीगढ़के पं. प्यारेलालजी; पं. उमरावसिंहजी, सहारनपुरके लाला उग्रसेनजी व जम्बूप्रसादजी रईस, नजीबाबादके साहू सलेखचंदजी, जुगमंदरलालजी, बिजनौरके बाबू नन्दीप्रसादजी महावीरप्रसादजी, इलाहाबादके बाबू रतनचंदजी [illegible]ल और जैन समाजके पुराने नेता [illegible]टी चंपतरायजी आदि महानुभावोंसे [illegible]की धार्मिक प्रीति विशेष थी। दिल्लीके लाला ईश्वरीप्रसादजी बेंकर, इन्दौरके दानवीर शेठ कल्याणचंद तिलोकचंद, अजमेरके शेठ मूलचंदजी सोहनी और मथुराके राजा शेठ लक्ष्मणदासजीके यहां भी आपका अधिक सम्मान था।

मुरादाबादमें लाला सोहनलालजी, लाला श्यामलालजी, ला. मोहनलालजी, ला. संतलालजी, मुंशी बाबूलालजी, ला. गौरीशंकरजी, लाला दिलसुखरायजी आदि सज्जन आपकी गोष्ठीके प्रधान सभ्य थे। ये सब लोग पंडितजीकी शास्त्रसभामें नित्य प्रति बैठते और पंडितजीसे धर्मचर्चा किया करते थे।

जैनोंके सिवा शहरके बहुतसे अजैन लोगोंसे भी आपका सौहार्द था। आर्य्यसमाजी, सनातनधर्म्मी, ईसाई, मुसलमान आदि सभी जाति और सभी मतोंके लोग आपके मित्र थे।

आपके संतान नहीं हुई, इसलिये आपने अपने बड़े भाई लाला झब्बालालजीके पुत्र वसंतरायको ११॥ वर्षकी उमरमें रामपुरमें दत्तक पुत्र बनाया। वसंतरायजी

भी बड़े ही नम्र, सुशील और सज्जन पुरुष हैं। इनमें भी पंडितजीके बहुतसे गुण देखे जाते हैं। प्रतिदिन ये अनेक दीन दुखियोंका मुफ्त इलाज करते और औषधि बांटते हैं। वसंतरायजीका पुत्र चिरंजीव नेमिचंद्र इस समय संस्कृत पढ़ता है।

पंडितजीका स्वास्थ्य बालकपनसे ही बहुत अच्छा था। ७० वर्षकी अवस्था तक इनके शरीरमें रोग या बुढ़ापेका वैसा कोई लक्षण नहीं दिखाई देता था। इस अवस्थामें भी आप जितना परिश्रम कर लेते थे उतना परिश्रम आजकलके ३० वर्षके युवक भी नहीं कर सकते। परंतु १९६१से आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होने लगा और संवत् १९६३में बहुत बिगड़ गया। पहले साधारण श्वासकी शिकायत हुई, फिर धीरे धीरे रोगने भयंकर रूप धारण करलिया। संवत् १९६५में रोग बहुत ही बढ़ गया और रोगकी पीड़ा आपको दिनरात व्याकुल करने लगी। सैंकड़ों इलाज किये परंतु कुछ लाभ नहीं हुआ। आखिर आपने अंतिम समय निकट आया समझ कर सम्पूर्ण सांसारिक विषयोंसे चित्त हटा लिया। संवत् १९६६ आश्विन मासकी विजया दशमीके दिन आपने इस अनित्य शरीरसे नाता तोड़ दिया। पवित्रात्मा अमर लोकमें चलागया।

पं. चुन्नीलालजीको इस लोकसे विदा हुए कई वर्ष होगये परंतु आपकी उज्ज्वल कीर्ति अब भी संसारमें प्रकाशित है।

पंडितजी बड़े ही शांत, गंभीर और धीर पुरुष थे। सौजन्यता की आप मूर्ति थे। सौजन्यताके लिये पंडितजीका नाम शहरमें उदाहरणमें लिया जाता था। बालकपनसे ही ये इतने नम्र थे कि छोटे, बड़े, धनी, निर्धन सबको पहले ही हाथ जोड़ कर प्रणाम कर लेते और बड़ी प्रसन्नतासे उससे कुशल समाचार पूंछते थे। ये बड़े ही सरलहृदय थे। सहज ही दूसरोंका विश्वास कर लेते थे। इसमें इन्हे कभी कभी बड़ी हानि उठानी पड़ती थी। मधुर भाषी और शिष्टाचारी भी ये इतने बड़े थे कि जो एकवार इनसे मिलता, फिर तमाम उमर इनको न भूलता था।

आपको क्रोध कभी नहीं आता था। जहां तक हमें याद है हमने पंडितजीको क्रोधाविष्ट कभी नहीं देखा। धैर्य्य भी आपमें बहुत था। आप बड़ी२ विपत्तियोंके सामने भी योंही सिंहकी समान डटे रहते थे। न्याय मार्गसे आपने कभी कदम नहीं हटाया।

आप हितमित भाषी और एक प्रमाणीक पुरुष थे। भयसे या किसीके दबावसे आपने कभी झूठ नहीं बोला।

पं. चुन्नीलालजीके पास बहुत धन नहीं था। एक बहुत ही साधारण स्थितिके मनुष्य थे। परंतु इस साधारण अवस्थामें रह कर एक साधारण पुरुषने जो जैन जातिका महदुपकार किया है, वह बड़े२ दानवीरोंसे भी

होना मुश्किल है। पंडितजीके घर पर नित्य ही अतिथियोंकी धूम रहती थी। कोई भी बाहरका जैनी मुरादाबादमें किसी उद्देशसे जाय, पंडितजीका आतिथ्य उसको अवश्य स्वीकार करना पड़ता था। पंडित जी नित्य ही ४–९ जैनी भाईओंको भोजन खिला कर भोजन किया करते थे। बहुतसे मनुष्य आपके मकान पर महीनों ठहरा करते थे। बाहरके जैनी भाईओंके ठहरनेके लिये पंडितजीका स्थान प्रसिद्ध था। भादोंमें इनके यहां किसी किसी दिन १००–२०० लोगोंकी भीड़ हो जाती थी। इनका बहुतसा द्रव्य जाति भाईओंकी सेवा सुश्रुषामें खर्च होता था। इसके सिवा बाहर अनेक सभाओं और मेलोंमें आने जानेमें और उनमें चंदा देनेमें बहुतसा व्यय हो जाता था। दूकानकी आय साधारणतः अच्छी थी परंतु इतनी अच्छी नहीं थी कि जो इतना खर्च किया जाय। परंतु इनको इसकी कुछ भी परवा नहीं थी, ये स्वभावके बड़े ही उदार थे। आखिर इस उदारताकी बदौलत ये कर्जदार बन गये। जो कुछ इनके पास जमा जथा थी सब खो बैठे। किंतु इनके आज्ञाकारी पुत्र वसंतरायजीने अपनी बुद्धिमत्ता और प्रबंधकी उत्तमतासे दूकानका काम कुछ दिनोंमें फिर वैसा ही कर दिखाया।

पंडितजी विद्वान् थे और विद्वानोंका आदर करना जानते थे। पंडितजीके यहां सदा ही विद्वानोंका जमाव रहता था, संस्कृतज्ञ, फार्सी और अंग्रेजीके विद्वान् भी आपसे मिलने आयाकरते थे। कई क्रिश्चियन और मुसलमान आपसे संस्कृत पढ़ा करते थे।

जैन विद्यार्थियोंकी भी आपके मकान पर एक खासी पाठशाला रहती थी। यद्यपि आपसे अनेक विद्यार्थी जैनधर्म्म पढ़ते रहे, परंतु पं पन्नालालजी बाकलीवाल आपके सब शिष्योंमें अधिक प्रसिद्ध हैं। पंडित पन्नालालजी बाकलीवालके द्वारा जो कुछ जैन समाजकी सेवा हुई है वह पं. चुन्नीलालजीहीकी कृपाका विशेष फल है।

पंडितजीकी अध्यक्षतामें मुरादाबादमें 'जैनविद्यावर्द्धिनी' नामकी एक सभा भी चलती थी, उस सभाकी तरफसे पंडित पन्नालालजी बाकलीवालने 'जैन हितैषी' नामक एक मासिक पत्र निकाला था। अब वही 'जैन हितैषी' पं. नाथूरामजी प्रेमीके संपादकत्वमें बम्बईसे निकलता है।

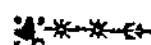
पंडितजी जातिके पंच भी थे, इसलिये पंचायत संबंधी अनेक झगड़े भी आपको तय करने पड़ते थे। परंतु पीछे आपने यह काम छोड़ दिया। पहले मुरादाबाद जिलेके खंडेलवाल जैनिओंसे दूसरे जिलेके खंडेलवाल जैनिओंका संबंध नहीं होता था। इससे इस जिलेके खंडेलवालोंमें विवाह संबंधमें बड़ी दिक्कत रहती थी। आनंदका विषय है कि अब पंडितजी और दो तीन भाईओंके उद्योगसे यहांके खंडेलवाल जैनिओंका संबंध आगरा, अलीगढ़ मथुरा, जयपुर, देहली आदि नगरोंके भाईओंसे होने लगा है।



जैनधर्मका महत्व।

(लेखक-बाबू दयाचंद्र गोयलीय जैन बी. ए.)

(गतांकसे आगे।)



चौथा सिद्धांत जिससे जैनधर्म वा अन्य धर्मोंपर दया, क्षमा, संतोष आदिकी अपेक्षा महत्व प्रगट होता है, अहिंसा है। हिंसासे बचनेका नाम अहिंसा है। हिंसाका लक्षण जैनाचार्योंने यह किया है कि कषाय व प्रमादके वश होकर अपने तथा दूसरेके प्राणोंका घात करना अर्थात् दुख पहुंचाना हिंसा है। काम, क्रोध, लोभ, मान, माया आदिके वशीभूत होकर मनुष्य अपने तथा दूसरोंको दुख पहुंचाता है। जैनधर्ममें हिंसा दो प्रकारकी कही गई है। एक भावहिंसा दूसरी द्रव्यहिंसा। आत्मामें राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मान, माया आदि भावोंका पैदा होना भावहिंसा है कारण कि इन कषायोंसे आत्माके वास्तविक स्वभाव ज्ञानको हानि पहुंचती है। इन कषायोंको मनमें स्थान देकर जब कोई दूसरेका वध करता है अथवा दूसरेको हानि पहुंचाता है यह द्रव्यहिंसा है। हिंसासे बड़ा पाप कोई नहीं है। हिंसा सब पापोंकी मां है। झूठ बोलना, चोरी करना, परस्त्री सेवन करना, अधिक परिग्रह रखना ये सब हिंसाकी शाखाएँ हैं। इन सबमें हिंसा होती है। इसलिये इनको भी पाप कहा गया है, अतएव अहिंसा सम्पूर्ण उत्तम गुणोंका मूल है। यों तो अहिंसाको किसी न किसी अंश तक समस्त मतावलम्बी मानते हैं परंतु जैनधर्ममें जो इसका स्वरूप है वह किसी धर्ममें नहीं है। अहिंसाके कारण समस्त धर्मोंके उत्तम गुण और तत्व जैनधर्ममें आ जाते हैं। एक कहता है कि अपने पड़ोसीसे प्यार करो, दूसरा कहता है कि अपनी जातिवालोंसे प्यार करो, तीसरा कहता है कि अपने देशनिवासियोंसे प्यार करो, चौथा कहता है कि मनुष्य मात्रसे प्यार करो परंतु जैनधर्म कहता है कि जीव मात्रसे प्रेम करो। किसी जीवधारीको दुःख मत दो। आत्मापेक्षा सब जीवधारी समान है। परमात्मा होनेकी शक्तिकी अपेक्षा सब जीव एक हैं। इस सिद्धांतको दृष्टिके सामने रखनेवाला कदापि किसी दूसरेको हानि नहीं पहुंचायगा। इस सिद्धांतका पालन करनेसे सदैव दूसरोंकी आत्मीक-शक्ति बढ़ेगी। भावार्थ-जैन धर्मका अहिंसा सिद्धांत सार्वधर्म है।

जैन धर्म पेटका गडढा भरनेके लिए अथवा जिव्हाके स्वादके लिए बचारे निरापराधी जीवोंकी गर्दनपर छुरी चलानेकी कदापि आज्ञा नहीं देता। जैन धर्मकी अहिंसामें स्वार्थ वा संकोचका नाम नहीं। जैन धर्मकी अहिंसा ऐसी विशाल और विस्तारित है कि जो जगतके सम्पूर्ण जीवोंको चाहे छोटे हों चाहे बड़े अभय दान देती है। सत्यार्थ यह है तो अनेकांत और अहिंसाकी अपेक्षासे जैनधर्मको समस्त धर्मोंकी जान कहा जाए तो अनुचित नहीं है।

जब यहां यदि कोई यह शंका करे कि जैसी अहिंसा जैनधर्ममें कही जाती है उसका पालन कोई नहीं कर सकता, इसलिए ऐसी अहिंसाका उपदेश देना निरर्थक है सो यह दूषण ठीक नहीं है। यदि कोई उच्च सिद्धांत है परंतु उसका पूर्ण रुपसे पालने करना कठिन

है, तो उसके ये अर्थ नहीं हैं कि उसका उपदेश न किया जाए किंतु उसका उपदेश आवश्यकीय है कि जिससे प्रत्येक मनुष्यके हृदयमें सिद्धांतका श्रद्धान और महत्व जम जाए और यथाशक्ति उसका पालन करे। हां, यह अवश्य है कि अहिंसाको अनावश्यक और निरर्थक नहीं समझना चाहिए। जैसे जो मनुष्य केवल अपने कुटुम्बियों, सम्बंधियों और पड़ोसियोंहीके साथ अहिंसा सिद्धांतका पालन करता है उसको उस दूसरे मनुष्यको कि जो सम्पूर्ण देश व जातिके साथ अहिंसा सिद्धांतका पालन करता है बुरा नहीं समझना चाहिए किंतु उसको यह विचार करना चाहिए कि अहिंसा तो जीव मात्रकी ही अच्छी है परंतु मैं कुछ कारणोंसे उसका पालन नहीं कर सकता। मैं अभी इस योग्य नहीं। इसी प्रकार सम्पूर्ण देश व जातिके साथ अहिंसा सिद्धांतका पालन करनेवालेको मनुष्य मात्र वा जीव मात्रके साथ अहिंसा सिद्धांतके पालन करनेवालेके विषयमें तुच्छ वा संकुचित विचार नहीं रखने चाहिए, किंतु उसको उसका आदर सन्मान करना चाहिए और स्वयं अपनी अहिंसाकी परिधिको बढ़ानेका प्रयत्न करना चाहिए। वास्तवमें जीव मात्रके प्रति अहिंसा एक आदर्श है। प्रत्येक मनुष्यको अपनी शक्ति और स्थितिके अनुसार जहां तक हो उसकी तरफ चलना चाहिए। वास्तवमें जीव मात्रके प्रति अहिंसा समस्त धर्मोंके प्राचीन ऋषियोंने स्वीकार की है और उसका उपदेश दिया है परंतु संसारी मनुष्य अपनी निर्बलता और स्वार्थके वश होकर उसके बड़े संकुचित अर्थ लगाते हैं और उस परिमित अहिंसाको ही पूरी अहिंसा समझ करके उससे अधिक अहिंसाको अनावश्यक और निरर्थक समझते हैं। इतना ही नहीं किंतु उसके विरुद्ध और उसके शत्रु हो जाते हैं, यह उनकी भूल है। जैनधर्म या अन्य किसी प्राचीन आर्यधर्मके उपदेशका यह अभिप्राय नहीं है कि तुम अभी जीव मात्रके प्रति अहिंसाका पालन करने लगो। न आजतक ऐसा किसीने किया और न ऐसा होना सम्भव है। उन्नति धीरे२ होती है। उसका अभिप्राय यह ही है कि जीवमात्रकी अहिंसाको अपना आदर्श बनाओ, उसका श्रद्धान करो और यथासम्भव इसीका पालन करो।

यहां पर विवश मुझको यह कहना ही पड़ता है कि यद्यपि जैनधर्मकी अहिंसा अत्यंत विशाल है परंतु इस समय हमारे कुछ जैनी भाईयोंने अपने चारित्र और व्यवहारसे उसको अत्यंत संकुचित बना दिया है। हमारे कुछ भोले भाई ऐसे हैं कि वे केवल वनस्पति आदिको ही पूरी अहिंसा समझते हैं। यह उनकी भूल है। उनको अपनी जाति, समाज, देश और मनुष्य मात्रके प्रति उपकारकी ओर भी दृष्टि डालनी चाहिए। परोपकार भी अहिंसाका मुख्य अंग है। शोक है कि अनेकांत धर्मके उपासक होकर भी बहुतसे भाई एकांतको ही पकड़ लेते हैं। मेरा अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि वनस्पतिके प्रति दया धर्मका व्यवहार न करना चाहिए किंतु प्रत्येक मनुष्यका मुख्य कर्तव्य होना चाहिए कि जहां तक उसकी शक्ति हो, वनस्पतिके प्रति भी अहिंसाधर्मका पालन करे। निःसंदेह गृहस्थ अवस्थामें वनस्पतिके प्रति अहिंसा पर विशेष जोर देनेसे तथा उसके अहिंसाके अन्य कार्यों जैसे देश, जाति तथा मनुष्योंके प्रति उपकारके कार्योंपर महत्व देना

ठीक नहीं है। मेरी सम्मतिमें प्रत्येक जैनीका कर्तव्य है कि जीवमात्रकी अहिंसाके आदर्श तथा अनेकांतको अपने सन्मुख रखते हुए द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावके अनुसार अहिंसा सिद्धांतका यथाशक्ति पालन करे।

पांचवां सिद्धांत कि जिससे जैनधर्मकी शुद्धता वा पवित्रता प्रगट होती है, वीतरागता है। राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मान, माया आदि भावोंसे स्वतंत्र होनेका नाम वीतरागता है। वीतरागता सम्पूर्ण आत्मोन्नतिकी मूल है। वीतरागताके विना कदापि आत्मकल्याण नहीं हो सकता। जैन धर्ममें स्थान२ पर यही उपदेश पाया जाता है कि पर पदार्थोंसे राग द्वेष छोड़ो, अपनी आत्माके निजरूपको समझो, आत्मा जड़ कभी नहीं हो सकता और जड़ आत्मा कभी नहीं हो सकता। तुम ज्ञान स्वरूप आत्मा हो, जड़ नहीं हो। तुम्हारी जो भिन्न२ अवस्थाएं संसारमें होती है उनमेंसे अच्छी अवस्थाओंसे राग मत करो और बुरी अवस्थाओंसे द्वेष मत करो। अवस्थाएँ कर्मजन्य है, विनाशीक हैं, नित्य नहीं हैं। तुम्हारो स्वभाव रूप नहीं हैं। इसी प्रकार जो भोगविलास तथा सुखसाधनके पदार्थ शुभ कर्मोंसे तुमको प्राप्त हुए हैं उनमें अपना आपा मानकर उनसे राग वा मोह मत करो और जो दुख-दर्द तथा कष्ट-आपत्तिके समान अशुभ कर्मोंके कारण मिले हैं उनसे द्वेष वा घृणा मत करो किंतु कर्मजन्य पदार्थोंको विना राग द्वेषके शांतचित्त होकर भोगो।

सांसारिक भोगाविलासोंमें इतने हर्षित मत होओ कि अंगमें फूले न समाओ और कष्ट, दुख, आपत्तिमें इतने व्याकुल मत होओ कि हाहा-कार करने लगो कारण कि यह सम्पूर्ण सुख दुखकी अवस्थाएँ क्षणिक और अनित्य हैं। गृहस्थी इस प्रकार अभ्यास करता हुआ वीतरागताको बढ़ा सकता है। वीतरागताका अभ्यास करनेवाला गृहस्थ खाने, पीने, पहनने, रूपया कमाने, मकान बनाने आदि सांसारिक कार्योंको गृहस्थकी आवश्यकताएँ समझकर कर्तव्य समान करता है। उनमें राग नहीं करता है और न उनमें लिप्त होता है। जैन धर्ममें साधुकी वीतरागता बहुत बढ़ी चढ़ी उच्च कोटिकी वीतरागता है। वह अपने शरीरसे भी राग छोड़ देता है। शरीरको सर्दी गर्मीसे बचानेके लिए वस्त्र भी नहीं पहनता। न शेर, वाघ, स्याल आदिसे शरीरको सुरक्षित रखनेके लिए कोई शास्त्र अपने पास रखता है और न बीमार पड़जाने पर कोई औषधि सेवन करता है। साधु महाराज शरीरपुष्टि वा स्वादके लिए आहार नहीं करते, किंतु कई कई दिनमें दो चार ग्रास केवल इस हेतुसे लेते हैं कि शरीर बना रहे, विचारोंमें शुद्धता रहे और धर्मध्यानमें आसानी रहे। जैन वीतरागताका हाल कहांतक लिखा जाए, जैन शास्त्रोंकी स्वाध्यायसे ही मालूम हो सकता है।

भावार्थ—वीतरागता वह वस्तु है कि जब वह पूर्णावस्था पर पहुंचती है तो आत्मामें सर्वज्ञता प्रगट हो जाती है। वीतरागता और सर्वज्ञता में कारण कार्यका सम्बन्ध है। जो वीतरागी होगा वह सर्वज्ञ अवश्य होगा। जो सर्वज्ञ होगा वह वीतरागी अवश्य होगा। इसी कारणसे जैन धर्ममें परमात्माका स्वरूप सर्वज्ञ वीतरागी कहा गया है।

उपर्युक्त पांच बातें जो इस समय मेरे ख्यालमें आईं उनसे जैन धर्मका महत्व बयान

किया गया। वास्तवमें तो जैन धर्मके समस्त सिद्धांत इस प्रकारके हैं कि उनमें आत्माका हित ही हित है। अहित कदापि नहीं है। जैन धर्म आत्माके निज स्वरुपको प्रगट करके ऐसे नियम बतलाता है कि जिससे अपने निज स्वभावको प्राप्त करले। अतएव यदि देखा जाए तो आत्माके धर्मका ही नाम जैन धर्म है। अनेकांत अहिंसा तथा वीतरागता जैन धर्मकी मूख्य छाप है। जहां कहीं ए तीनों बातें पाई जाएं समझ लेना चाहिए कि वह जैन धर्म है। निसंदेह जैन धर्म एक विशाल सार्वधर्म है। जैनधर्मका आदर्श कुछ संसारिक सुख या विभूति नहीं है किंतु जैनधर्मका आदर्श आत्माको परमात्मा बनाना है।

(बाबू ऋषभदासजी बी. ए. के एक उर्दू लेखका "जैन प्रदीप" से अनुवाद।)



अमेरिकामें सम्पादन-कलाका शिक्षालय।

अमेरिका देशके प्रधान नगर न्यूयार्कमें एक बड़ा प्रभावशाली दैनिक समाचार पत्र 'वर्ल्ड' नामक निकलता है। दिनमें इसके कई अंक निकलकर लाखोंकी संख्यामें बिक जाते हैं।

जान पुलिजर नामक एक प्रसिद्ध विद्वान् इस पत्रके कुछ वर्ष हुए सम्पादक थे। इनके सम्पादकत्व कालमें इस पत्रने बड़ी प्रसिद्धि और स्थिति प्राप्त की थी। सम्पादक पुलिजरकी मृत्यु सन १९११ की २९ अक्टूबरको हो गई। मृत्युके समय वह साठ लाख रुपये सम्पादनविद्यालय खोलनेके लिये छोड़ गये और किस प्रकार वह विद्यालय चलाया जावे यह भी वह अपने मित्रोंको समझा गये।

मृत सम्पादक पुलिजरके आदेशानुसार न्यूयार्क नगरके कोलम्बिया युनिवर्सिटी नामक विराट् विश्वविद्यालयके साथ और उसीकी अध्यक्षतामें १९१२ की ३० सितम्बरको संपादन-विद्यालय खोला गया। इस विद्यालयके लिये न्यूयार्क नगरके बीच एक बड़ा विशाल भवन बनवाया गया है, जिसमें सम्पादनके सब सामान इकट्ठे किये हैं। विद्यालय खुलनेके एक महीने-

के बाद १ नवम्बरको १०४ विद्यार्थी इस विद्यालयमें प्रविष्ट हो गये थे, जिनमें ग्यारह स्त्रियां थी। इसमें चार वर्ग बनाये गये। प्रथम वर्गमें ६१ विद्यार्थी थे, द्वितीय वर्गमें १९, तृतीयवर्गमें १४ और चतुर्थवर्गमें भी चौदह विद्यार्थी थे।

इस विद्यालयमें प्रवेश करनेके लिये एक परीक्षा होती है। परीक्षामें उत्तीर्ण होने पर विद्यार्थी लिये जाते हैं, किन्तु योग्य और अनुभवी पत्रोंके सम्पादक बिना परीक्षाके भी ले लिये जाते हैं। इस विद्यालयमें देश और कितने ही विदेशोंके सम्पादक सम्पादनकी-शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। चीन, जापान, टर्की, पर्शिया इत्यादि भिन्नभिन्न देशोंके विद्यार्थी इस समय यहां शिक्षा पा रहे हैं; किन्तु भारतवर्षका अभी तक यहां कोई भी विद्यार्थी नहीं है। विद्यार्थियोंको चार वर्ष तक रहना पड़ता है और चार वर्षके बाद Bachelor of Literature in Journalism " की डिग्री मिलती है। किसी युनिवर्सिटी के बी. ए. परीक्षामें उत्तीर्ण हुए विद्यार्थीको कम ही समय तक रहना पड़ता है।

इस विद्यालयमें अमेरिका देशके बड़े प्रसिद्ध और योग्य पच्चीस पत्र सम्पादक अध्यापकके कार्य पर नियुक्त किये गये हैं। इन योग्य सम्पादकोंकी अध्यक्षतामें रह कर विद्यार्थी सम्पादनकी अमली शिक्षा पाते हैं।

विद्यालयकी शिक्षा प्रणाली तथा अध्यापकोंको सम्मति देनेके लिये न्यूयार्क नगर तथा अमेरिकाके अन्य नगरोंके १२ प्रसिद्ध समाचार पत्रोंके सम्पादकोंकी एक कमेटी बनाई गई है। प्रबन्धका कार्य कोलम्बिया युनिवर्सिटीके प्रधान करते हैं। विद्यार्थियोंको देश देशांतरके इतिहास, साहित्य, विज्ञान और गणित इत्यादि विषयोंको स्वयम् कोलम्बिया युनिवर्सिटीके अध्यापक पढ़ाते हैं। केवल सम्पादनकी शिक्षाके लिये पच्चीस सम्पादक नवीन नियुक्त किये गये हैं। फिलेडेल्फिया नगरके "प्रेस" नामक दैनिक पत्रके पुराने और अनुभवी सम्पादक डाक्टर टैल्काट विलियम इस विद्यालयके मुख्याध्यापक नियुक्त हुए हैं।

अमेरिका देशमें इसके अतिरिक्त बीससे अधिक ऐसी और भी युनीवर्सिटियां हैं जो सम्पादनकी शिक्षा देती है। इनमेंसे कई में सम्पादनके पृथक विद्यालय भी हैं। किन्तु ऐसा कोई अन्य स्कूल नहीं है जिसमें इतना धन हो जितना इस न्यूयार्कके नवीन सम्पादनविद्यालयमें है। बड़ी बात तो यह है कि यह विद्यालय कोलम्बिया युनिवर्सिटीकी शाखा बना दी गई है। जिस महाविद्यालयमें पहिलेसे सात सौ चौवालिस ७४४ अध्यापक हैं, जिसमें अन्य ६७७० विद्यार्थी हैं और जिसके पुस्तकालयमें ४,५०,००० साढेचार लाख पुस्तकें भिन्न२ विषयोंपर हैं। यह विराट पुस्तकालय इस सम्पादन-विद्यालयके विद्यार्थियोंके लिये मुफ्त खुला रहता है।

इस विद्यालयमें अधिक समय अमली शिक्षामें लगाया जाता है जिसके लिये न्यूयार्कसे अधिक अच्छा अन्य कोई नगर

संसारमें नहीं हो सकता है। विद्यार्थी नगरकी घटनाओंकी जांच करनेको नगरकी गलियोंमें भेजे जाते हैं! अकेले न्यूयार्क नगरमें ८७८ पत्र निकलते है। इन पत्रोंमें सम्पादकोंके सहायतार्थ इस विद्यालयसे विद्यार्थी भेजे जाते हैं। जहां उन्हें तरह तरहके विषयों पर लेख लिखना सिखलाया जाता है। न्यूयार्कके थिएटरोंमें नाटककी आलोचना करनेको भी ये विद्यार्थी भेजे जाते हैं और विद्वानोंके भी यह समालोचक बनकर जाते हैं। इन्हें सम्पादनके सब प्रकारके कार्य अमली तौर पर सिखला दिये जाते हैं। न्यूयार्कके राजनैतिक दल भी इन्हें अपने यहां निमन्त्रण करके राजनैतिक शिक्षा देते हैं।

इस प्रकार इस स्कूलमें सम्पादनकी शिक्षा पूरी पूरी विद्यार्थियोंको दी जाती है। यदि भारतवर्षसे कुछ योग्य हिन्दी पत्रोंके सम्पादक अमेरिका जाकर इस विद्यालयमें तीन वा चार वर्ष शिक्षा ग्रहण करें तो वे हिन्दीकी बड़ी उन्नति कर सकते हैं। पत्र सम्पादनमें अधिक अनुभव प्राप्त होनेके साथ ही साथ उन्हें संसारके इतिहास, देश देशान्तरोंके कानून, राजनीति, अर्थ-शास्त्र तथा भिन्न भिन्न देशोंकी वर्तमान राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक अवस्थाका पूरा पूरा अनुभव प्राप्त हो जावेगा।

("जयाजी प्रताप" से उद्धृत।)

श्री रुषभ ब्रह्मचर्याश्रमनो मारो अनुभव.

(लेखक:—श्वे० मुनि माणेक)

હસ્તિનાગપુર તીર્થની યાત્રા કરી અહીંના 'ઋષભ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ' નામથી ચાલતા વિદ્યાલયમાં અનુભવ લેવાથી મારા મનમાં જે વિચારો ઉદ્ભવ્યા છે તે જાહેરની જાણ માટે પ્રકટ કરૂં છું.

જૈનોમાં જ્ઞાનને પ્રથમ દરજ્જો આપવા છતાં કેટલાક વખતથી જૈન બંધુઓનું લક્ષ્ય જેવું જૈન મંદીરોમાં ખેંચાયલું હતું તેવું જ્ઞાન માટે ખેંચયલું નહોતું, તેથી જૈનોમાં ધર્મજ્ઞાનની ખામી રહેલી હતી એટલુંજ નહીં પણ પશ્ચિમના કેળવણીના વધારાથી આ દેશના હુન્નર ધંધાને મોટું નુકસાન પહોંચ્યું હતું, તેમાં જૈનોને પણ ઘણું દરિદ્રતાનું દુઃખ સહન કરવું પડ્યું છે. હવે જૈનોએ પોતાની ભૂલ જોઈ છે, અને આંખો ઉઘાડી ઘોરનિદ્રાને દુર કરી વિદ્યાને ઉત્તેજન આપવા માંડ્યું છે.

વિદ્યાનું ક્ષેત્ર વિશાળ હોવાથી કઈ વિદ્યા ભણવી તે મોટો વિચાર થઇ પડ્યો છે! બી. એ. થયા પછી પણ નોકરી શોધવી પડે છે નહીં તો ઘરના પણ નહીં અને ઘાટના પણ નહીં, અથવા તો એકલી સંસારીક કેળવણી લીધાથી ઉન્મત્તતા-ધર્મભ્રષ્ટતાનું પણ કાંઈક કલંક દેખાવા લાગ્યું, ત્યારે ધાર્મિક કેળવણી સાથે આપવાની પાઠશાળા ખોલવામાં આવી છે અને બોર્ડીંગોમાં તેજ તજવીજ છે, છતાં પણ માબાપ નાની ઉમરમાં પરણાવી દે, સંસારી કાર્યમાં બાળકનો વખત વ્યર્થ ગુમાવી દે તેથી ભણના વિદ્યાર્થીને વિઘ્ન થાય તે દૂર કરવા ગુરૂકુળની યોજના ઉભી થઇ છે. જો ભણીને સાધુ થવું હોય તો એક સંસ્કૃત જ્ઞાન સર્વોત્તમ છે અને ગ્રહસ્થાવાસ ચલાવવો હોય તો સંસારીક વિદ્યા

પણ સારી રીતે જાણવી જોઇએ. હવે તે કઈ વિદ્યા ભણવી તેને માટે જુદા જુદા પુરૂષોનો જુદો જુદો મત છે. જો પૈસા મેળવવા નોકરી ન કરવી હોય તો, **ટેકનીકલ કેલવણી** સારી છે અથવા **સાયન્સનું** જ્ઞાન સર્વોત્તમ છે. પશ્ચિમના દેશોએ હીંદને નિર્ધન કર્યું તેનું કારણ સાયન્સ વિદ્યા આ દેશમાં જોઇએ તેવી નથી, તે વિદ્યા વધારવા જો જૈનો ચાહે તો લાખો રૂપિયાના ખર્ચે પ્રાપ્ત કરી શકે. ઉદાર જૈન બંધુઓ આવા આશ્રમને પૂર મદદ આપે તો આવા આશ્રમમાં બાળકોને વધારે સારી રીતે લાભ આપી શકાશે.

બાર વરસ સુધી એક સરખો લાભ અહીં મળે છે. નવ વરસનો દાખલ થઈ ૨૧ વરસ સુધી રહે તો પૂછવું શું ?

અધિષ્ટાતા ગેંદનલાલજીએ સિવિલ ઈજનેર છતાં ગાંઠનું દ્રવ્ય અર્પણ કરી અહીં **જીંદગી અર્પણ** કરી છે. **બ્ર. ભગવાનદીનજી** મહાશયે સ્ટેશનની સર્વીસ છોડી **જીંદગી અર્પણ** કરી છે, તેમજ **કુમાર દિગ્વજયસીંહે** જીંદગી અર્પણ કરી છે. આવાં અનેક રત્નોથી **આશ્રમનો વિદ્યારૂપી બગીચો** અંકુરિત થયો છે, તેને પ્રફુલ્લિત કરી તેની સુગંધી સર્વત્ર ફેલાવી જીવ માત્રને સુખી કરવા જૈન શાસનનો ડંકો બજાવવો એ જૈનોની મોટામાં મોટી અને પહેલી ફરજ છે. માટે અહીંનો અનુભવ લઈ તન મન ધનથી સહાય કરો, સારા વિદ્યાર્થીઓ મોકલો, અને સાયન્સ વિદ્યાને યોગ્ય જે જે ચીજોની જરૂરત હોય તે શીઘ્ર પૂરી પાડો.

આ સંસ્થા વિદ્વાન્ બંધુઓને પોતાની વિદ્યાનો લાભ આપવાનું સર્વોત્તમ સાધન છે તેમજ એકાંત ધ્યાન કરવાનું પણ સારૂં સ્થળ છે.

અમારા શ્વેતાંબર બંધુ પણ અહીં એકાદ પાઠશાળા પબ્લીકને માટે ખોલે, તેમ પુસ્તકાલય પણ ખોલે તો ઘણું સારૂં. તીર્થક્ષેત્રોમાં આવી જગ્યામાં પાઠશાળા અને પુસ્તકાલય હોય તોજ જૈન ધર્મની ઉન્નતિ થઈ શકે, જીવો શાંતિ મેળવી શકે તેમજ સાધુઓ સારૂં જ્ઞાન મેળવી શકે અને સર્વત્ર શાંતિ ફેલાવી શકે.



जैन जीवन अथवा दैवी जीवन.

લેખકઃ-વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ-મુંબાઈ.



(ગયા અંકથી ચાલુ.)

ભાવના.

દાન, શીલ અને તપ એ ત્રણ સંબંધે આપણે વિચાર કરી ગયા અને જીવન સાથે એ ત્રણેનો કેવો ગાઢો સંબંધ છે એ પણ જોઇ ગયા દરેક માણસ આ ત્રણ તત્ત્વો વધારે મુશ્કેલી સિવાય સ્હમજી શકે અને આદરી શકે તેવાં છે અને તે ત્રણ તત્વોના અનુપાલન સિવાય માણસ આ જીંદગીમાં આરોગ્યવાન, નિર્દોષ અને આબાદ થઇ શકે નહિ તેમજ બંધુમનુષ્યોને ઉપયોગી થઇ શકે નહિ, એટલુંજ નહિ પણ બીજી જીંદગીમાં સુખી થવાની આશા રાખી શકે નહિ. પરન્તુ આ ત્રણ કરતાં વધારે મહત્વનું તત્વ વિચારવાનું બાકી રહે છે, કે જે તત્વ દરેકે દરેક મનુષ્યની શક્તિની અંદર હોવાની ખાત્રી આપી શકાય નહિ. તે તત્વ **'ભાવના'નું** છે અને તે મન તથા બુદ્ધિ સાથે સંબંધ ધરાવતું હોઇ એનું રહસ્ય સ્હમજવામાં માનસશાસ્ત્ર (Psychology)ના અભ્યાસની તથા તીવ્ર કલ્પનાશક્તિની જરૂર પડે છે; વળી આગળ વધતાં એમાં ઉચ્ચ મનોબળની પણ જરૂર પડે છે. આમ હોઇ 'ભાવના'ના ક્ષેત્રમાં રમવું, એ ઘણા થોડા ભાગ્યશાળી પુરૂષોથી બને તેવું કામ છે. દાન-શીલ-તપ એ ત્રણનું અનુપાલન સારી રીતે કરી ચૂકેલો માણસ-આ ભવ કે પૂર્વ ભવમાં એ માર્ગ પર લાંબો રસ્તો કાપી

ચૂકેલો માણસ-'ભાવના'ના ક્ષેત્રમાં પ્રવેશ પામે છે. ભાવનાનું રાજ્ય સ્થૂલ પૃથ્વી પર નથી પણ સૂક્ષ્મ પૃથ્વી પર, માનસિક વિશ્વમાં છે, કે જ્યહાં પથિકને એકાકી-કોઇની દશ્ય મદદ વગરજ-વિચરવું પડે છે, અને તેજ કારણથી એ માર્ગ વિકટ જણાય છે. જો કે તે સાથે એ પણ કહેવું જોઇએ કે, વિકટ હો યા સરળ હો, પણ **એ માર્ગ ઘણોજ આનંદદાયક** છે એમાં તો કંઈ શક નથી, અને આત્મા કે જે મન અને બુદ્ધિથી પણ પર છે એને પામવાના માર્ગનો છેલ્લો છેડો આ તત્વજ છે, 'ભાવના' એ તત્વ કેવું વિશાળ અને ગહન છે, એનો કાંઇક ખ્યાલ સામાન્ય રીતે એના થતા અનેક અર્થો પરથી સ્હમજાઇ શકશે. ધ્યાન, મનન, ચિન્તવન, શોધન, બારીક ગવેષણા, પૂર્વસ્મરણ, પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન (Perception or cognition), શુષ્કને આર્દ્રતામય બનાવવાની વિધિ, ઈત્યાદિ ઈત્યાદિ એના અર્થો છે. આવા અનેક કાર્ય બજાવતા તત્વનું વિવેચન થોડાં પૃષ્ઠોમાં આપવું અશક્ય છે એ કારણથી, તેમજ Science તથા Metaphysics જેવા અતિ ગૂઢ વિષયો સાથે ગાઢ સંબંધ ધરાવતા વિષયમાં ઉપલકીઆ જ્ઞાનવાળાએ ડહાપણ ડોળવું એ પ્રમાણિક પણ નથી એમ સ્હમજીને, હું આ વિષયને છેડવા ઈચ્છતો નથી. અત્રે તો માત્ર આ વિષયની ગહનતા-કે જેને જૈનોનો ૯૯ાા ટકા જેટલો ભાગ જોઇ શકયો નથી-તે ગહનતાજ કાંઇક અંશે બતાવી છે અને હવે એ 'ભાવના'ના અંગ તરીકે યોજાયલી કેટલીક ધાર્મિક ક્રિયાઓ સંબંધે થોડીક સૂચનાઓ કરવા પ્રવૃત્ત થઇશ.

દરેક મનુષ્યે **મૈત્રી ભાવના, કરૂણા ભાવના, પ્રમોદ ભાવના અને મધ્યસ્થ ભાવનાનું** સેવન કરવાનો પરિચય કરવો જોઇએ. સમાન ગુણ અને સમાન વિચાર ધરાવતા જીવો તરફ મૈત્રી ભાવના, દુઃખી અને અજ્ઞાન તરફ કરૂણા ભાવના, પોતાથી ચ્હડીઆતા જ્ઞાન ગુણ-શક્તિ આદિ ધરાવનારાઓ પ્રત્યે પ્રમોદ ભાવના અને અધમ જનો તરફ મધ્યસ્થ ભાવના રાખવી જોઇએ.

સમાન ગુણ અને વિચાર ધરાવનારાઓ પ્રત્યે મૈત્રી ભાવના રાખવાથી એક બીજાના ગુણો અને વિચારો વધારે વિકાસ પામે છે; અને આથી બન્નેની આત્મિક ઉત્ક્રાન્તિ આગળ વધે છે.

દુઃખી અને અજ્ઞાન તરફ કરૂણા ભાવના ભાવવાથી એઓનાં દુઃખ અને અજ્ઞાન ટાળવાની પ્રવૃત્તિ કરવાની પ્રેરણા થાય છે, અને ત્હેને પરિણામે તે દુઃખીનાં દુઃખો કે અજ્ઞાનીનું અજ્ઞાન ઓછાવધતા પ્રમાણમાં દૂર થાય છે. એટલે કે ત્હેનો આત્મિક ઉત્ક્રાન્તિનો માર્ગ સપાટ થાય છે. બીજા હાથ ઉપર આ ભાવના આ સહાય કરનાર પાત્ર પણ ઉત્ક્રાંત થાય છે.

ચ્હડીઆતા જ્ઞાન-ગુણ-શક્તિ આદિ ધરાવનારાઓની ઇર્ષા કે દ્વેષ નહિ કરતાં ત્હેમની તે ઉત્ક્રાન્તિ જોઇ પ્રમોદ-ઉલ્લાસ-સંતોષ અનુભવવો અને એમની એ ઉત્ક્રાન્તિ હજી વિશેષ આગળ વધો એમ ઇચ્છિવું એ ઘણાં ઉદાર સ્વભાવ વગર બનવું કઠીન છે. આ ગુણથી આ ભાવનાથી-તે ભાવના ભાવનાર માણસમાં તે ગુણોનો અંશ પ્રવેશ પામે છે કે, જે ગુણો તરફ ત્હેણે પ્રમોદ અને ઉલ્લાસ ભાવ કર્યો હોય છે.

અધમ જનોની નીચ પ્રવૃત્તિઓ જોઇને **માધ્યસ્થ ભાવના** ભાવવી જોઇએ છે, એમ જ્યહારે કહેવામાં આવે છે ત્યહારે વસ્તુતઃ એટલુંજ કહેવામાં આવે છે તે પ્રવૃત્તિઓ તરફ પ્રમોદ ન કરવો તેમ તે મનુષ્ય તરફ દ્વેષ ન કરવો. આ ભાવનાનો ઘણો ભારે

અર્થ હાલ થતો જોવામાં આવે છે. નિંદા અને સ્તુતિ સિવાય બીજું કાંઈ તત્વ દુનિયામાં જાણે કે હયાતી ધરાવતુંજ ન હોય તેમ, લોકો ધર્મને બહાને એમ કહેતા સંભળાય છે કે જનસંહારક પ્રવૃત્તિના કરનારાઓ પ્રત્યે ક્ષમા આપીને ચુપ બેસી રહેવું એજ 'માધ્યસ્થ ભાવના' છે. આ સમજ દુનિઆને ઘણું નુકસાન કરનારી થઈ પડી છે. જો એવી નપુંસકતા એજ ધર્મ હોય, તો પછી 'કરૂણા ભાવના'નુ નામ ગણાવવાની પણ શી જરૂર હતી? ગુન્હેગાર કે પાપી એ પણ એક મનુષ્ય છે-આત્મા છે અને એ આત્માને અનિષ્ટ પ્રવૃત્તિમાં જોડાયલો જોઇ એક બંધુ-આત્મા તરીકે ત્હેના પર કરૂણા લાવવી, જેથી તે આત્મા સવળે રસ્તે આવી શકે અગર ઓછામાં ઓછા ભયંકર રસ્તે આવી શકે અગર તે પણ ન બને તો બીજાઓને ત્હેનાથી નીપજતું નુકશાન ઓછું થાય એવે રસ્તે જે કાંઈ કામ કરવું તે 'કરૂણા'નો વિષયજ છે. અને એવી રીતે કરૂણાભાવથી કરાતા કર્ત્તવ્ય વડે તે માણસને તાત્કાલિક અશાતા (સાચી કે કાલ્પનિક) થવા પામે તો તે તરફ હર્ષ-ખેદ ન કરવો-ઉદાસીન રહેવું-માધ્યસ્થ ભાવ રાખવો એજ 'માધ્યસ્થ ભાવના' છે. 'પાપી દુઃખી થજો' એમ એક 'માધ્યસ્થ ભાવના' નો અનુયાયી ઇચ્છી શકે નહિ; તેવીજ રીતે 'પાપી ભલે અનેકોના ઉત્ક્રાન્તિક્રમને કે શાન્તિને વિઘ્ન કર્યા કરે' એમ પણ ન ઇચ્છી શકે. આ વિષય પર ઘણા વિચારો કરવા જેવા છે, પણ અત્રે તે માટે અવકાશ નથી.

ભાવનાની નિર્મળતા અને પુષ્ટિ માટે જૈનશાસ્ત્રોએ સામાયિક, પ્રતિક્રમણ, પોષધ આદિ ક્રિયાઓ યોજી આપી છે. આ ક્રિયાઓ સબંધમાં હમણાં આપણે થોડાક વ્યવહાર મુદ્દા તપાસીશું.

આ ત્રણે ક્રિયાઓ ખરેખર મહત્વની અને અતિ લાભકારી છે એમ તર્કશાસ્ત્ર, માનસશાસ્ત્ર અને વ્યવહારશાસ્ત્રે પણ કબુલ રાખ્યા સિવાય ચાલશે નહિ. આ ત્રણ સંબંધમાં અત્રે તો થોડી છુટી છુટી સુચનાઓજ આપણે કરી શકીશું; બાકી એ ત્રણેની ફીલસુફી એટલી વિશાલ છે કે ત્હેમાંના દરેક ઉપર મ્હોટા ગ્રંથો રચાવાની જરૂર છે. હાલ મળતાં પુસ્તકો બુદ્ધિવાદને તૃપ્ત કરી શકે એવાં નથી એ અહીં સ્પષ્ટ કબુલ કરવું જોઇએ.

ø ø ø ø

સામાયિક.

આત્મા જે મહાન કાર્ય કરવા માટે-જે અસંખ્ય કે અનંત ભવો ટાળવા માટે મનુષ્ય શરીર જેવું સમર્થ હથીઆર મેળવે છે, તે હથીઆર ત્હેના હાથમાં અમુક 'મુદત' સુધીજ રહેવાનું છે; અમુક 'મુદત'નોજ એ 'પરવાનો' છે. એ 'મુદત'માં તે હથીઆર વડે તે આડાઅવળાં બીનજરૂરી પરાક્રમો કરે યા તો પોતાને ચીરકાળથી સતાવતા શત્રુઓને જડમૂળથી કાપી નાંખવાનું કામ કરે. બન્ને કામ કરી શકાય છે; કયું કરવું અને કયું ન કરવું એ ત્હેની પોતાની પસંદગી ઉપર આધાર રાખે છે. અને એ પસંદગી કરવાના ડહાપણ ઉપર ત્હેના હમેશના સુખ-દુઃખનો આધાર છે.

એટલા માટેજ, પરદુઃખભંજન મહાન 'ગુરૂ'એ 'અનર્થદંડ-વિરમણ વ્રત'નો ઉપદેશ દરેક 'શસ્ત્રધારી' અર્થાત્ 'મનુષ્ય'ને કર્યો છે. પૈસા જેવી ચીજો જે અહીંજ પડી રહેવાની છે ત્હેની પ્રાપ્તિ અને ઉપભોગમાંજ તે હથીઆરને તે રોકયું ન રાખે, અન્ન કે જે થોડા વખતમાં વિષ્ટાનું રૂપ ધારણ કરે છે તે અન્નની પ્રાપ્તિ અને ઉપભોગમાંજ તે હથીઆરને તે રોકયું ન રાખે, ક્રોધ-માન-માયા કે લોભ કે જેથી બહુ તો ક્ષણિક તૃપ્તિજ થઇ શકે તેમ છે તે ઉત્પન્ન

કરવા કે ટકાવી રાખવામાંજ તે હથીઆરને તે રોકયું ન રાખે એટલા માટે મહાન 'ગુરૂ'એ 'અનર્થદંડ-વિરમણ વ્રત' ફરમાવ્યું છે, કે જેથી કરીને સ્વહિત નહિ સ્હમજી શકનારા મનુષ્યો પોતાના તે હથીઆરને વધુ ઉત્તમ કામ માટે-ચીરસ્થાયી લાભ આપનાર કામ માટે બચાવી શકે સઘળી જાતનાં નિષ્પ્રયોજન કાર્યો, શબ્દો અને વિચારોથી અલગ રહેવાનું ફરમાવનાર એ વ્રતની ખુબી અદ્યાપિ પર્યંત સંપૂર્ણતઃ સ્હમજવા-સ્હમજાવવા ભાગ્યેજ પ્રયાસ થયો હશે. જે જિવાત્મા એ વ્રતની ખુબી બરાબર સ્હમજવા ભાગ્યશાળી થયો હશે તે તો બાઇબલમાંના પેલા ઉડાઉ છોકરાની માફક એમજ કહેશે કે; **"મ્હારા બાપના ઘરમાં ઘણા બંગલા છે; હું ત્યહાં જઈશ અને હવે વધુ વખત ભૂખે મરીશ નહિ."** ઉડાઉ થવાથી-જેમાંતેમાં પૈસો વાપરી નાખવાથી ભૂખમરાની સ્થિતિએ પહોંચેલા ઉડાઉ છોકરાને જેમ છેવટે બાપના ઘરની ગરજ પડી-ત્યહાંજ તેહેણે 'બંગલા' ભાળ્યા, એમ જે માણસો પોતાના આ શરીર રૂપી હથીઆરનો તથા વખત, બુદ્ધિ, દ્રવ્ય અને લાગવગ વગેરે ખજાનાનો દુરૂપયોગ કરે છે તથા 'શક્તિહીન'-'સાધનહીન' બની જાય છે ત્હેમને છેવટે 'બાપના ઘર' તરફ-પરમેશ્વરના સ્મરણ તરફ-'આત્મ ભાવના' તરફ વળવાની ગરજ પડે છે. પરંતુ તે ગરજ ઘણી મોડી હોવાથી સાર્થકતા પ્રાપ્ત થતી નથી. કારણ કે બાપના ઘર અથવા 'આત્મ ચિન્તવન' સુધી જઇ પહોંચવાની શક્તિ હવે ત્હેનામાં રહી નથી, આડાઅવળા દોડવામાં શક્તિ ગુમાવી દીધેલી હોવાથી તે હવે 'બાપનું ઘર' અથવા 'સ્વસ્વરૂપ,' કે જહેમાં હજારો મહેલો-આનંદસ્થાનો વસેલાં છે ત્હાં-તે દૂરના ધામમાં-તે કેવી રીતે પહોંચી શકે?

એટલા માટે તે મહાન 'ગુરૂ'એ-શ્રી મહાવીરે પ્રથમ તે શક્તિનો દુરૂપયોગ થતો અટકાવવાનો મહામંત્ર ('અનર્થ-દંડ વિરમણ-વ્રત' નામે) આપ્યો અને ત્યાર પછી તે જાળવી રાખેલી શક્તિવડે 'બાપના ઘર'માં જવાનો-સ્વાધ્યાય'માં જવાનો મંત્ર આપ્યો. **એ મંત્રનું નામ 'સામાયક વ્રત' છે.**

અને અહીં મ્હારે ખુલાસો કરવો જોઇએ કે, સામાયિક તે એક સામાન્ય 'ઘર' દેખાવા છતાં એમાં હજારો 'બંગલા' સમાયલા છે એ કાંઈ અતિશયોક્તિ નથી (કદાચ *ન્યૂનોક્તિ તો હશે !*). *સામાયિકમાં જ્યહારે* સઘળા વિતર્કોને દૂર કરી 'કાયોત્સર્ગ' કરવામાં આવે છે ત્યહારે એવા તો આનંદનાં ભવનો નજરે પડે છે કે જહેનું વર્ણન કરવાની શક્તિ કોઇ કલમ કે કોઈ જીભ ધરાવતીજ નથી. બોજા તરીકે, દેખાડા તરીકે, અંધશ્રદ્ધા ખાતર કે માત્ર લીધેલી બાધા પાળવા ખાતર જેઓ સામાયિક કરે છે તેઓ કોઈ દિવસ તે એક ન્હાનાસુના 'ઘર'માં સમાયલા હજારો ભવ્ય 'બંગલા' જોઈ શકવાના નહિ. જેઓ મન-વચન-કાયાની શક્તિને નિષ્પ્રયોજન ઉડાવી દેતા નહિ હોય, જેઓ એ શક્તિનો ખજાનો ભરપુર રાખતા હશે ત્હેમને 'સામાયિક' ખરેજ આનંદસાગર રૂપ જણાશે.

પહેલા પગથીએથી કૂદીને છેલ્લે પગથીએ જવાની આશા રાખનારાઓ કેવી મ્હોટી ભૂલ કરે છે ! દાખલા તરીકે, એક માણસ લ્યો. વિષયસેવનમાં અનિયમિત રહી શરીરને જહેણે સત્વહીન બનાવ્યું છે, જહેનુંતેહનું બુરૂં ઇચ્છવાથી-તાંદુલ મચ્છની માફક અહોરાત્રી કુતર્કો કરવાથી મનને જહેણે માંકડું અને રોગી બનાવી દીધું છે, યદવાતદવા બોલીબોલીને જીભને જહેણે વાયડી બનાવી દીધી છે-એ માણસ એ ત્રણે હથીઆરોને પોતેજ લગાડેલો કાટ (યથાશક્તિ આચરેલાં આઠ વ્રત વડે)

દૂર કર્યા **સિવાય** મન-વચન-કાયાની જાગૃતિ અથવા ઉગ્ર શક્તિની જ્હેમાં જરૂર છે એવું **'સામાયિક'** વ્રત આદરીને (ધારો કે) બેઠો છે. સામાયિક આદરવાની વિધિમાં કાયોત્સર્ગ કરવો પડે છે, તે તો ત્હમે જાણતા હશો. તે માણસ કાયોત્સર્ગ કરવા તૈયાર થાય છે ? હા, કાઉસગ્ગનો બાહ્ય દેખાવ તો ઠીકઠીક કરે છે. પલાંઠીવાળી હથેલી પર હથેલી નાંખી બેસે છે; પણ શું તે ખરેજ **ચોર્યાશીલાખ જીવાયોની**ને ખમાવવાનું ધ્યાન ધરે છે ? 'લોગ પઈવાણું' એ પાઠ બોલતી વખતે 'લોક'નું સ્વરૂપ અને ત્હેમાં **તીર્થંકર**નો પ્રકાશ નજર આગળ કલ્પવા શું તે શક્તિમાન છે ? કે, 'નમોથ્થુણું' બોલતી વખતે એના મ્હોં આગળ કોઇ સ્ત્રીના નાજુક અવયવોનો કે રૂપીઆથી ભરેલી તીજોરીનો કે ખરીદાયલા નવા ઘરના રીપેર કામનો દેખાવ આવે છે ? એવું મન કે જે અનર્થ-દંડ-વિરમણ વ્રતના અજ્ઞાનપણાને લીધે માંકડું અને રોગી બનેલું હોય છે તે ત્હેના હુકમને આધીન વર્તવાની ના કહે છે અને જે સ્વાદ ત્હેણે રાજીખુશીથી ત્હેને પ્રથમ ચખાડેલો હતો તેજ પદાર્થો તરફ તે દોડવાનું અને હાથમાંથી લગામ ખોઇ બેઠેલા સવારની પેઠે તે માણસ માત્ર ખાલી હાથ ઉંચો નીચો કરવાનો ! પણ એટલેથી બસ નથી; એ તો એના આંતરીક કાઉસગ્ગની સ્થિતિ કહી; પણ **બાહ્ય** કાઉસગ્ગ પણ શું બરાબર છે ? કાયાને તકલીફ આપી ટટાર કરવા માટે—સઘળા પ્રમાદને દૂર નસાડવા માટે કરાતા કાઉસગ્ગના અમુક આસનને ધારણ કરવા છતાં શું તે **ટટાર** બેસી શકશે ? વિષયસેવન કે બીજી નકામી તકલીફો વડે શરીરને ક્ષીણ કરી નાખવાના કારણથી તે ટટાર નહિ બેસી શકવાનો; ઘડીમાં પગ રહી જશે, ઘડીમાં બરડો દુઃખશે, અને ઘડીમાં શ્વાસ રૂંધાશે. 'ઇરીઆવહી' નો કાઉસગ્ગ કરવા પહેલાં 'તસ્સઉત્તરી' નો પાઠ બોલાય છે તે કાંઈ **બોલવા માટે નથી પણ માત્ર સ્હમજવા માટે છે**; તે પાઠમાં 'કાઉસગ્ગ'ની સરતો (conditions) વર્ણવી છે; **શ્વાસોશ્વાસ** પણ બંધ રાખવા, ખાંસી; બગાસું, છીંક, ઓડકાર વગેરે સર્વ ક્રિયાઓને પણ રોકવી; આવો પાઠ કાઉસગ્ગ કર્યા **પહેલાં** બોલવાનો રીવાજ છે, છતાં એ પાઠમાંની સરતો પળાતી નથી. અને પળાય પણ કેવી રીતે ? **શક્તિ વગર કામ થાયજ ક્યાંથી ? શું બાળક કદી હજારોના વ્યાપાર ખેડી શકશે ?**

ત્યારે સામાયિકનો 'અધિકાર' કોને ! એવો સવાલ સ્વાભાવિક રીતેજ થશે. હું કબુલ કરીશ કે હું કોઈ 'જ્ઞાની' નથી, અથવા 'માનસ શાસ્ત્ર'નો પારંગત નથી, કે જેથી કોઇ પણ 'ધોરણ' બાંધી આપવાને લાયક ગણાઉં. હું બહુ તો મ્હારા વિચારો જણાવી શકું. મ્હારા આધિન મન પ્રમાણે તો 'અનર્થ-દંડ'થી વિરક્ત રહેનારા માણસોજ શુદ્ધ સામાયિક કરી શકે. સામાયિકનો પાઠ ગમે તે માણસ બોલે તે સામે હું વાંધો લેવા ઇચ્છતો નથી; બે ઘડી એક સ્થાને બેસી 'આરંભ-સમારંભ'થી નિવર્તે તે સામે પણ મ્હારો વાંધો નથી, પરંતુ જે આત્મા પોતે તથા પોતાનાં હથીયારો સર્વ પરતંત્રતાની બેડીમાં હોય તે આત્મા સામાયિક જેવા ક્રિયાકારક Active (નહિ કે નિષ્ક્રિય Passive) વ્રતમાં કેમ દાખલ થઈ શકે ! જેના હાથ પગ બેડીઓથી સજ્જડ જકડાયલા છે એવો બંદીવાન બેડી નાંખનારને **ગાળો દેવાનું** કામ કરી શકે, પણ **તરવાર વાપરવાનું** કામ શી રીતે કરી શકે ? ધ્યાન, કાઉસગ્ગ, સામાયિક એ સર્વ ક્રિયાઓમાં પુષ્કળ **પુરૂષાતનની** જરૂર પડે છે; એ Active ક્રિયાઓ છે; માટે તે ચોતરફ જેની શક્તિઓ વેરાઈગયેલી છે તેવા આત્મા ? બની શકે નહિ.

તથાપિ, જ્હેમને સામાયિકની ઇચ્છા થાય ત્હેમને "ત્હમે તે ન કરશો" એમ કદાપિ ન કહેતા. "સામાયિક નામની (Active) ક્રિયા રૂપી વાવેતર કરવા પહેલાં જોઇતી જમીનશુદ્ધિ મેળવવા માટે યથાશક્તિ પાંચ વ્રતો (જે શ્રી બુદ્ધગુરૂએ પણ 'પંચશીલ' તરીકે ઉપદેસ્યાં છે) તથા અનર્થ-દંડ-વિરમણ-વ્રત અંગીકાર કરો; તે વ્રતોને જીંદગીના ન્હાનાં મ્હોટાં કૃત્યોમાં આચરો અને એ પ્રમાણે સામાયિકની લાયકી મેળવો." એટલું કરીનેજ ન અટકતાં, હાલ વ્રતો અશક્ય અને વાઘ જેવાં લાગે છે તે ખ્યાલ ત્હેમના મગજમાંથી દૂર કરાવી વ્રતોનું વ્યવહારૂ સ્વરૂપ સ્હમજાવો અને તે પછી સામાયિકના ચ્હડતા-ઉતરતા દરજ્જા બતાવો.

સમ એટલે સમતા-સમભાવ-ચિત્તનું સમતોલપણું (equilirbium of mind) રૂપી આય એટલે લાભ જ્હેનાથી પ્રાપ્ત થાય એવી પ્રવૃત્તિને સામાયિક કહેવાય. એને નિવૃત્તિ ગણાય છે છતાં પ્રવૃત્તિ તરીકે ત્હેની વ્યાખ્યા કરવામાં મ્હારો આશય એમ સૂચવવાનો છે કે, એ કાંઈ મુડદાલ હાલત કે નિદ્રસ્થ દશાનું નામ નથી, પણ શરીર અને મનના યોગનો રોધ કરવાની activity-ક્રિયા-action-નું નામ છે. સામાયિકની આ વ્યાખ્યા મ્હને ઘણી સુંદર લાગે છે:—

समता सर्वभूतेषु, संयमः, शुभ भावना ।
आर्तरौद्रपरित्यागः, तद्धि 'सामायिकं' व्रतं॥

સામાયિક એ સમતા (કે જેમાં સ્થિતિસ્થાપકતા અને સ્થિરતાના ગુણોનો સમાવેશ થાય છે), ને ખીલવે છે (અને એ ગુણોથી આત્મિક લાભ ઉપરાંત વ્યવહારમાં પણ અદૃશ્ય લાભ થાય છે), ભૂતમાત્રમાં પોતાને જોતાં શિખવે છે, ઇન્દ્રિય નિગ્રહ અને મનોનિગ્રહનો મહાવરો પાડે છે, શુદ્ધ અને શુભ ભાવનાઓમાં રમણ કરવાની ટેવ પડાવીને સૂક્ષ્મ પ્રદેશોમાં વિચરતાં શિખવે છે, વાણીના અને શરીરના વ્યાપારમાં 'ઉપયોગ રાખીને' પ્રવૃત્તિ કરતાં શિખવાને પરિણામે ઘણાંએક બીનજરૂરી સંકટોમાંથી બચાવે છે.

સામાયિકના જૂદા જૂદા અંગભૂત પાઠોનો હેતુ આપણે હવે તપાસીએ.

સામાયિકમાં પ્રથમ 'નમોક્કાર મંત્ર' ભણાય છે. એ મંત્ર વડે જગતના સઘળા ઉપકારી આત્માઓનું સ્મરણ થાય છે. જડ દેહની બેડીથી છૂટેલા સિધ્ધો, છૂટવાની તૈયારીમાં આવેલા અર્હંતો, છુટવાના કામી આચાર્યો-ઉપાધ્યાયો અને સાધુઓઃ-એ સર્વનું સ્મરણ કરવાથી એમની ભવ્ય મૂર્તિ આપણી કલ્પના શક્તિ આગળ ખડી થાય છે અને આપણે એવા સમર્થ આત્માઓની છાયા નીચે આવ્યા છીએ એવું ભાન થવાથી આપણો આત્મા કેટલીક હિમત અને શાન્તિ મેળવે છે અને ૪૮ મીનીટ સુધી મનોનિગ્રહ રાખવા આપણે જે વ્રતથી બંધાવાના છીએ તે વ્રત બરાબર પાળવાને શકિતમાન થઇએ છીએ.

પહેલા પાઠમાં એ સમર્થ આત્માને સ્મર્યા-આપણી કલ્પના શકિત વડે એમનાં દર્શન કર્યા-પછી બીજા પાઠમાં-આપણે ત્હેમને ભાવથી ત્રણવાર નમન કરીને એમના તરફ સત્કાર-સન્માન-પર્યુપાસના વગેરે પ્રકારે ભક્તિ-બહુમાન બતાવીએ છીએ. આથી ત્હેમના ઉચ્ચ ગુણોમાં આપણે તલ્લીન બનીએ છીએ અને એ ગુણોનો અંશ ખેંચીએ છીએ.

પછી ત્રીજા પાઠમાં સર્વ જાતના જીવો પ્રત્યે આપણે બંધુત્વ ધરાવીએ છીએ એવી ભાવના ભાવીએ છીએ. સર્વ જીવોને આપણે જે જે દુઃખ કર્યું હોય તે મિથ્યા થવા ઇચ્છીએ છીએ-સંકલ્પ કરીએ છીએ.

ચોથા પાઠમાં આપણે કાયોત્સર્ગ કરવાનું વચન દઇએ છીએ. કેવી રીતે કાયોત્સર્ગ

કરવો એ બતાવનાર ચોથો પાઠ છે. શરીરની સર્વ ક્રિયાઓ બંધ કરીને, દુર્ધ્યાનને રોકીને, એકાગ્રતાએ કાયોત્સર્ગ કરવાનો છે. આ કાયોત્સર્ગમાં મનન કરવાનો વિષય પણ **ભૂતદયા**નો છે.

આ ચાર પાઠથી હૃદયની જમીન પોચી-વાવેતરને યોગ્ય બનાવ્યા પછી પાંચમો પાઠ "લોકને વિષે ઉદ્યોત કરનાર" પુરૂષોની **પ્રાર્થના** કરવાનો છે. 'સાગર જેવા ગંભીર' સિદ્ધ પાસે 'સિદ્ધિ' માગવામાં આવે છે. જૈન ધર્મની આ મહત્વાકાંક્ષા ખાસ ધ્યાન ખેંચવા જેવી છે. તે, કોઈ **પરમેશ્વર**ની ખુશામત કરી થોડીક જમીન કે થોડાઘણા સીક્કાના કુકા માગવાનો સિદ્ધાંત શિખવતો નથી, પણ તે સર્વને પરમેશ્વર બનવાનીજ મહત્વાકાંક્ષા પ્રેરે છે. એ ધર્મની પ્રાર્થના તાબેદારીનું કે ખંડીઆ રાજાનું માન (કહો કે નાલાસી) મેળવવા માટે નથી, પણ જેની પ્રાર્થના કરવામાં આવે તે મહારાજા જેવા માહારાજા-તે પરમેશ્વર જેવા પરમેશ્વર બનવા માટે છે. આ પ્રાર્થનાના શબ્દોમાં તે પરમેશ્વરોને-સિધ્ધોને ચંદ્ર જેવા શીતળ અને તે સાથેજ સૂર્ય જેવા તેજસ્વી-પ્રકાશમય-જ્ઞાન-મૂર્તિ વર્ણવ્યા છે, કે જે ગુણોની કલ્પના પ્રાર્થના કરનારના મન અને બુદ્ધિને ચંદ્ર-સૂર્ય સમાન બનાવવામાં પરિણમે છે.

છઠ્ઠો પાઠ સામાયિક **આદરવાનો** આવે છે. સામાયિક કેવી **શરતોથી** આપણે કરીએ છીએ તે સરતો તે પાઠમાં નક્કી કરવામાં આવે છે. ૧૦૦ ટકા ખરૂં સામાયિક તો **નવ કોટિ** હોવું જોઇએ, એટલે કે મન વચન કાયાથી કોઇ 'પાપ' કરૂં નહિ-કરાવું નહિ અને કરતાંને રૂડું જાણું નહિ એમ પાપ કરવાની નવે રીતિઓથી દૂર રહેવાનું વ્રત લેવાય એ **સમ્પૂર્ણ** સામાયિક કહેવાય.

પરન્તુ તેથી એમ નથી સ્હમજવાનું કે, તેથી ઓછી 'કોટિ'એ સામાયિક નજ થઇ શકે. અબજ રૂપિયાની મુડી ધરાવતો માણસ અબજનો વ્યાપાર ખેડી શકે છે અને બસો રૂપિયા-વાળો એટલો ન્હાનોજ વ્યાપાર કરી શકે છે. બસોવાળાને કોઇ વ્યાપાર કરતાં અટકાવી શકે નહિ. એણે માત્ર એટલુંજ જોવાનું છે કે ન્હાના વ્યાપારના પ્રમાણમાં ન્હાનાજ કૉન્ટ્રાકટ કરવા જોઇએ અને તે કૉન્ટ્રાકટ સંપૂર્ણ રીતે અદા કરવા જોઇએ; નહિ તો ત્હેની 'શાખ' હલકી પડે અને વખતે જેલમાં પણ જવું પડે. તેમ તો ક્રોડપતિ પણ જો ક્રોડનો કૉન્ટ્રાકટ અદા ન કરે તો શાખ ગુમાવે અને જેલમાં જાય એ દેખીતું છે. સામાયિકમાં પણ તેમજ છે. માત્ર શરીરવડે અને વાણીવડે પાપકર્મ કરવું નહિ અને કોઇ પાસે કરાવવું નહિ એ **ચાર** શરતો અથવા ચાર 'કોટિ'થી પણ સામાયિક થઇ શકે અને સ્હેલાઇથી પળી શકે. એ મહાવરો પાડયા **પછી** 'પાપકાર્ય તરફ પસંદગી બતાવવા જેવું ચિન્હ શરીરથી (મુખમુદ્રા વગેરેથી) બતાવું નહિ' અને 'વચનથી એવી પસંદગી જાહેર કરૂં નહિ' એમ બે 'કોટિ' ઉમેરીને સામાયિક કરવાનો રિવાજ રાખવો. ત્યાર પછી 'મનથી પાપ ચિંતવું નહિ અર્થાત્ માનસિક સૃષ્ટિમાં પાપ કરૂં નહિ' અને 'માનસિક સૃષ્ટિમાં બીજાને પાપકર્મની પ્રેરણા કરૂં નહિ' એ બે શરતો ઉમેરીને આઠ કોટિએ **સામાયિક** કરવું; અને એવો મહાવરો પાડયા બાદ 'પાપકર્મ થતું જોઈ માનસિક સૃષ્ટિમાં અનુમોદના કરૂં નહિ-ઉલ્લસીત થાઉં નહિ'. એવી સર્વથી કઠીન શરત ઉમેરીને નવ કોટિએ સામાયિક કરવું. જેટલી શરતો પાળી શકાય તેમ હોય તેટલી શરતો જ પાઠ રૂપે બોલવી જોઇએ; અને એટલા માટે સામાયિકનો પાઠ બધા માણસો માટે એક સરખો-એકનો એક જ-હોઇ શકે નહિ. પરન્તુ આજકાલ બોલા-

ता સામાયિકના પાઠ, આ બાબતનો વિચાર કરતાં, મ્હોટી મુસ્કેલી ઉભી કરે છે. આ પ્રસંગે હું ખુલ્લા દીલથી અને ભાર મૂકીને જણાવીશ કે, માગધી ભાષા જ્યારથી માતૃભાષા તરીકે વપરાતી બંધ થઇ છે ત્યારથી એ ભાષામાં સામાયિક કર્યા કરવામાં મ્હને કાંઇ સાર્થકતા જણાતી નથી. જે ભાષામાં માણસ **વિચાર કરતો હોય** તે જ ભાષા ધ્યાન, પ્રાર્થના આદિ ક્રિયાઓ માટે વપરાય તોજ એકાગ્રતાપૂર્વક ક્રિયા થઇ શકે, એ ખુલ્લું સત્ય છે કે અમુક શબ્દના વાંચન, સ્મરણ કે ઉચ્ચાર સાથે બીજી જે સેંકડો અનુવર્ગણાઓ (associations) સ્વભાવતઃ ચાલી આવે છે તે, જેનો અર્થ ન સ્હમજાતો હોય કે સ્હમજવા માટે પ્રયત્ન કરવો પડતો ય તેવી ભાષાના શબ્દો બોલતાં, આવી શકે નહિ. માટે જે ભાષામાં માણસ વિચાર કરતો હોય તે ભાષામાંજ સામાયિકના પાઠ, ઉચ્ચારવા જોઇએ કે સ્મરવા જોઇએ; અને તોજ **તલ્લીનતાપૂર્વક** સામાયિક થઇ શકે; અને ભૂલવું જોઇએ નહિ કે સામાયિક એ **તલ્લીનતાનું** બીજું નામ—પર્યાયવાચક શબ્દ છે. સામાયિક એ કોઈ પાઠનું નામ નથી, એ માનસિક **સ્થિતિનું** નામ છે અને એવી માનસિક સ્થિતિ ઉત્પન્ન કરવામાં જે કોઈ શબ્દસમૂહ કામ લાગે તે શબ્દો જ પસંદ કરવા જોઇએ; પ્રસંગે મ્હારે એ પણ શુદ્ધ દીલથી કહી લેવું જોઇએ કે, આજકાલ વપરાતો સામાયિકનો પાઠ કે જે ગુજરાતી-મારવાડી અને માગધી ભાષાઓનો ખીચડો હોઇ વર્ણશંકર છે ત્હેની બનાવટ બનાવનારાઓની બુદ્ધિવિષયક શક્તિઓમાં મ્હને બહુ શ્રદ્ધા નથી અને એવા પાઠો વર્ષો સુધી લાખ્ખો માણસો કાંઇપણ ફેરફાર કર્યા વગર કેમ ચલાવી શક્યા એ વિચાર મ્હને જૈન વિચારનેતાઓ માટે બહુ માન ઉત્પન્ન થવા દેતો નથી. આ સ્થિતિચુસ્તતા (conservatism) સડાનું ચિન્હ છે; અને હું આગ્રહપૂર્વક સૂચવીશ કે અધ્યાત્મવિદ્યા **માનસશાસ્ત્ર, તર્કશાસ્ત્ર અને કાંઇક અંશે હિપ્નોટીઝમનો** autosuggestions **વાળો વિભાગઃ એ સર્વના જ્ઞાનની મદદથી સામાયિકના પાઠ ગુજરાતી, હિંદી-મરાઠી-બંગાળી અને અંગ્રેજી ભાષાઓમાં રચવાના પ્રયાસને માટે પુરેપુરો અવકાશ અને અગત્ય છે.** હવી ૧૪ વર્ષની ઉમર સુધીમાં લગભગ હંમેશ સામાયિક તથા ચાતુર્માસ દરમ્યાન હંમેશ પ્રતિક્રમણ અને વખતોવખત પોષધવ્રત કરનારો હું, જ્યારથી સામાયિકનું રહસ્ય અંશતઃ સ્હમજવા લાગ્યો ત્યારથી કોઈ દિવસ મિશ્ર માગધી પાઠદ્વારા સામાયિક કરતો નથી તેમજ પ્રતિક્રમણ પણ કોઇ દિવસ તેવી રીતે કરતો નથી મ્હારૂં સામાયિક, પ્રતિક્રમણ અને સાંવત્સરિક પ્રતિક્રમણ એકાંતમાં અને મ્હારી પોતાની રીતેજ કરાય છે અને હું અનુભવથી કહું છું કે તે કરવાથી મ્હને જે શાન્તિ અને બળ મળે છે ત્હેનો દશાંસ પણ પ્રચલિત રૂઢિ મુજબ તે ક્રિયાઓ કરતાં મ્હને કોઇ વખત મળ્યો નહોતો. 'જ્ઞાની મહારાજ સ્વીકારે તે ખરૂં' એમ કદાચ કોઇ સવાલ કરશે, તો ત્હેને મ્હારો એટલો જ જવાબ છે કે પ્રથમ મ્હારી અંદર રહેલો જ્ઞાની મહારાજ તે સ્વીકારે છે એ વાતની મ્હને ખાત્રી છે, તો બીજા જ્ઞાની મહારાજને ત્હેનો નિષેધ કરવાની કાઇ સત્તા નથી.

પછી પાઠ સાતમો, આઠમો અને નવમો એ ત્રણે નમસ્કારના પાઠ છે. નમસ્કાર અને પ્રાર્થના સંબંધમાં, આજ લેખમાં હું આગળ ઉપર જરા વિસ્તારથી લખવાનો હોવાથી અત્રે કાંઇ વિષયાન્તર કરવાની જરૂર નથી. આટલેથી સામાયિક **આદરવાની વિધિ** પુરી થાય છે. ઘણે ભાગે ૪૮ મીનીટનું આ

મન ગણાયું છે; જ્યારે આ સઘળા પાઠ તો ૧૦ થી ૨૦ મીનીટમાં બોલાઈ જાય તેવા તેવા છે. પાઠ થઇ રહ્યા પછીની ૨૮ મીનીટોની મનને ફુરસદ મળવાથી—અને મન જાતે વાંદરઃ જેવું હોવાથી—અનેક કુતર્કોમાં યા અસદ્વ્યાપારમાં તે ઉતરી પડે છે; અને એનું પરિણામ એ આવે છે કે "સમભાવ'નું આપણું આદરેલું વ્રત ભાગીને ભુક્કો થાય છે ! માટે જો સામાયિક કરવું હોય તો **મનને નવરૂં ન પડવા દેવું** એ પહેલી સાવચેતી રાખવાની છે. આ આશય પાર પાડવા માટે કાંતો વિવિધ ભાવનાઓમાં ઉતરવું, અથવા તો (તેથી ઓછી યોગ્યતાવાળો રસ્તો એ છે કે) આધ્યાત્મિક ગ્રંથો વાંચવા કે એ વિષય પર કોઇ સાથે શાન્ત ચર્ચા કરવી. અગાઉ વર્ણવેલી મૈત્રી આદિ ચાર ભાવનાઓ ભાવવાથી ફાયદાકારક રિતે એકાગ્રતા થઇ શકે છે; તેમજ **અનિત્ય** ભાવના, **અશરણ** ભાવના, **સંસાર** ભાવના, **અન્યત્વ** ભાવના, **અશુચ** ભાવના, **આશ્રવ** ભાવના, **સંવર** ભાવના, **નિર્જરા** ભાવના, **લોકસ્વરૂપ** ભાવના, **બોધ** ભાવના અને **ધર્મ** ભાવના એમાંની કોઇ પણ એવુંજ કામ આપી શકે છે. પરન્તુ અહીં મ્હને ભય છે કે, આ ભાવનાઓ આજે પ્રાયઃ ખોટા સ્વરૂપમાં શિખવવામાં આવે છે, અને કેટલીક ભાવનાઓનો તો ઘણાખરા શિક્ષકોને કાંઈ ખ્યાલ પણ નથી. દાખલા તરીકે, 'લોકસ્વરૂપ ભાવના' ભાવવાનું મ્હને આવડતું નથી; કારણ કે જૈન ગ્રંથો અને સાધુઓ પાસેથી મ્હને મળેલો લોકસ્વરૂપનો ખ્યાલ મ્હને માન્ય થઈ શકયો નથી; ભૂગોળ-ખગોળ-પ્રકરણને લગતા અનેક સંશયો એ ખ્યાલથી જન્મ પામેલા હોવાથી હું એ 'લોકસ્વરૂપ ભાવના' બરાબર ભાવી શકુંજ નહિ. જ્યહાં સુધી લોકસ્વરૂપનો ખરો અને બુદ્ધિગ્રાહ્ય ખ્યાલ મ્હારા મગજમાં આવે નહિ ત્યહાં સુધી એ ઉપર ભાવના ભાવવાનો પ્રયત્નજ અશક્ય છે. અહીં ધ્યાનમાં રાખવું જોઇએ કે, 'લોકસ્વરૂપ ભાવના'નો હેતુ વિશ્વ નિશાળના અને વિશ્વલીલાનો ખ્યાલ ઉત્પન્ન કરી એ બધામાં જ્ઞાનથી વ્યાપી રહેલા અને એ બધાપર વિજય મેળવાની સત્તાવાળા સ્વ આત્માની છૂપી શક્તિઓને વિકસાવવાનો જ છે. **બીજા** દાખલા તરીકે, 'મ્હારૂં કોઇ નથી' એ ભાવના લ્યો જે સ્વરૂપમાં આ ભાવના લોકોને આજે શિખવવામાં આવે છે તે સ્વરૂપ તો સામાયિકના મૂળ પાયાનેજ તોડી નાખે છે. હું એ ભાવનાને આવા સ્વરૂપમાં ભાવવાનું પસંદ કરૂંઃ "મ્હારૂં 'કંઈ' નથી; પણ 'કોઈ'માંનો દરેક તો મ્હારોજ છે, માટે હું 'સર્વ' છુ." સ્પષ્ટીકરણ અર્થે કહેવું જોઇએ કે, 'કાંઇ' એ શબ્દ 'પદાર્થ' અથવા 'જડ'ના અર્થમાં અને 'કોઇ' એ શબ્દ ચેતનના અર્થમાં મૂકાયો છે. 'હું એ આત્મા છે—ચેતન છે, તેથી ત્હેને પદાર્થ સાથે કાંઇ સગપણ નથી પણ સઘળા જીવો કે જે ચેતન છે અને જેનો સ્વાભાવ જ્ઞાન-દર્શનાદિ છે તે તો મ્હારા છે, કારણ કે મ્હારો સ્વભાવ પણ તેજ છે; માટે હું 'સર્વ' છું. આવી optimistic ઉત્સાહવર્ધક ભાવના જોઇએ, કે જે સામાયિકના હેતુને અનુકૂળ છે. ભાવાનાઓ મંદતાપ્રેરક-નિરૂત્સાહપ્રેરક passimistic કદાપિ ન હોવી જોઇએ. આત્મબળ ન ખીલવે—પરમેશ્વરત્વ ન પ્રકટાવે એનું નામ 'ભાવના' કહેવાયજ નહિ. દરેક ભાવના ભાવતી વખતે આ વાત ખાસ ધ્યાનમાં રાખવા જેવી છે કોઈ ભાવના માણસને પ્રેમરહિત—કર્ત્તવ્યવિમુખ—શુષ્ક બનાવી દે તો **એવી** ભાવના કરતાં માત્ર **દાન, શીલ, તપ** એ ત્રણ ધર્મપથોથીજ સંતોષ માની બેસવામાં વધારે ળહીસલામતી છે.

સામાયિક આદરવા તથા નિભાવવા સંબધી બે બોલ કહ્યા પછી હવે સામાયિક 'પારવા' સંબંધી ટુંકમાં બે બોલ કહીશ. જેઓ ખરી 'ગરજ'થી સામાયિક કરે છે ત્હેમને બાદ કરવાં બીજાઓ તો ૪૮ મીનીટ પુરી થવાની રાહ જોઇ બેસે છે અને હજી તો ૮-૧૦ મીનીટ બાકી હોય છે. ત્યહાં સામાયિક પારવાના ગોટા વાળવા માંડે છે ! કરેલા

કૉન્ટ્રાક્ટમાં જે કાંઈ વાતની ખામીઓ રહી ગઈ હોય તે યાદ કરી કરીને ત્હેને માટે દીલગીરી બતાવવાની છે એ વાતનું ત્હેમને ભાન નથી હોતું. મન, વચન અને કાયાના જે જે દોષો સંભવિત છે તે તે સક્ષેપમાં આ સામાયિક પારવાના પાઠમાં સમાવેલા છે; ત્હેનો ઉચ્ચાર કરતી વખતે તે ખાલી કોષ્ટકમાં આપણાથી થયેલા દોષોના એકડા ભરતા જવાના છે! આપણે 'ઉપયોગ' પૂર્વક (attentively) તે પાઠના ઉચ્ચાર કરવા જોઈએ અને તે પૈકી જે જે દોષો થયેલા હોય તે તે માટે "મિથ્યા હો તે મ્હારૂં દુષ્કૃત્ય!" એવો **સંકલ્પ** કરવો જોઈએ.

સમભાવને આપનારૂં-દુઃખી દેખાતી દુનિયામાં સુખનો ઘુંટડો પાનારૂં-મૃત્યુલોકમાં સિદ્ધના સુખનો નમુનો બતાવનારૂં સામાયિક વ્રત **આવું** છે. **ધન્ય** છે તે પુરૂષોને કે જેઓ શુદ્ધ સામાયિક પ્રતિદિન કરતા હશે! ધન્ય છે-**હજારો ધન્ય** છે તે મહાપુરૂષોને કે જેઓ જીંદગીભરનું અને ચોવીશે કલાકનું સામાયિક **શુદ્ધ રીતે** પાળતા હશે! એમના તે સમભાવ પ્રાપ્ત કરવા ભાગ્યશાળી થયેલા આત્મામાં જ્ઞાનનો **સાગર** દેખાય છે અને તે સાગરની છોળો ત્હેમની સમીપમાં આવવાની તક મેળવનાર દરેક આત્માને શીતળ શીતળ કરી દે છે. એ સાગર કદી ખળભળતો નથી-કદી સુકાતો નથી-એમાં કદી ઓટ થતી નથી. જગતના સર્વ જંતુઓને એ સાગરમાંથી પોષણ મળે છે. બાળક! એ સાગરનું ધ્યાન ધર અને એ સાગર અને ત્હારા તળાવડાનું સાંધન કરવા માટે **'ભાવના'** થી નીક જોડ, કે જેથી તે શુદ્ધ જળ તે નીક વાટે ત્હારામાં આવે અને ત્હને વધુ તનદુરસ્ત, વધુ શક્તિવાળો, વધુ શુદ્ધ, વધુ પ્રકાશિત, વધુ હિમતવાળો, અને વધુ દીવ્ય બનાવે. (અપૂર્ણ.)

—⊱⊱◎⊰⊰—

हृदयोद्गार.

(હરિગીત છંદ.)

શું શું કરૂં? હું ક્યાં જઉં? કંઈ ચેન તો પડતું નથી!
આ જગતના વૈભવ બધા લગીરે મ્હને રૂચતાં તથી,
કાં કે ચલિત છે તે, છતાં હું શે પરોવું ચિત્તને?
જે પ્રેરતા દુષ્કાર્યમાં ડૂબાવતા પાપાબ્ધિએ. ૧
કામિની કેરા સંગ કેરો રંગ તો બૂરો નકી,
પુત્રો અને મિત્રો બધા જ્યાં અર્થ ગાંઠે ત્યાં લગી;
માતા પિતાનો પ્રેમ તે પણ સ્વાર્થિલો સંદેહ ના,
એ પેર સૌ સંબંધિયો હોયે ભલે તે દેહના. ૨
કો રીતથી સંસારમાં હું સુખ માનું નવ જરી,
નિરખ્યું નથી શું તે પ્રભુએ સૃષ્ટિ દુઃખથી છે ભરી!
તો હું સુખેચ્છુ ચિત્ત જોડું જગત માંહે ક્યમ કરી?
ના, ના, ઘટે મુજને થવું અંતર વિરોધી આચરી? ૩
જો ના ઘટે તો શું કરૂં? કો પંથનો પંથી બનું;
જેથી ભવાબ્ધિ હું તરૂં ને સુજ્ઞ સ્નેહીને મળું;
કોને પૂછું? છે કેમકે આ જગતમાં સૌ સ્વાર્થિલાં,
મળવા દિસે દુર્લભ જગે જે કો હશે પરમાર્થિલાં. ૪

× × × × ×

પ્રીતિ કરૂં પરમેશથી પ્રેમી પૂરો ત્હેનો બનું,
અંતર કરીને શુદ્ધ તેમાં નાથની મૂર્તિ ધરૂં,
સત્કર્મ રૂપિ પુષ્પથી વ્હાલા તણું પૂજન કરૂં;
રાખી હૃદય જગદીશને આ જગતમાં હું વિચરૂં.

ચમન.

जन्म कोनका सार्थक नहीं?

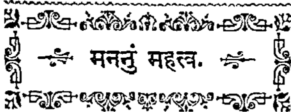
वसन्ततिलका।

जो हाथपैर अपने नहि हैं हिलाते।
खाना विना श्रम किये डटके उडाते॥
आलस्यमें समय यों अपना विताते।
वे मूढ कूच जगसे कर क्यों न जाते॥१॥

है एक काम जिनका सबको सताना।
विद्या विहीन रहना बस मांग खाना॥
बोझा समाज पर भी अपना बढ़ाना।
अच्छा न जन्म उनका जगबीच पाना॥२॥

जो आत्म पौरुष जरा नहि धारते हैं।
हा हन्त! हाथ सब ठौर पसारते हैं॥
वे आत्मगौरव महाजड़ मारते हैं।
मानुष्यजन्म अपना अहह हारते हैं॥३॥

गिरिधर शर्म्मा-झालरापाटन।



मननुं महत्व.

चोतरफ थता अवाजो तरफ जो लक्ष दोडावीए तो तेनो सारांश एज आवशे के उन्नति करो–सुधारो करो–सर्वोत्कृष्ट बनो, अने तेवाज विचारना आंदोलनो दरेक स्थळे प्रसरवाथी तेमांनो कांइक अंश अत्यारे क्रिया रुपमां मुकायो पण छे. हवे ज्यारे आपणे आपणी–जातिनी–धर्मनी अने देशनी उन्नति करवाना विचारो करीए तो जुदा जुदा मगजना विचारो जुदा जुदा होवाथी तेमां कयो उत्तम अने विशेष फळदायी हशे ते विषे दरेकने शंका उत्पन्न थाय ए स्वाभाविक छे तेम ए शंकानुं खरुं कारण छे ए पण छे के **स्वतंत्र विचार शक्तिनो अभाव.**

केटलाको पोतानी उन्नति बाह्याडंबरमांज थएली माने छे, केटलाक हुन्नरकळाथीज, केटलाक सामाजिक केळवणीथी, तेमज घणाओ **धार्मिक ज्ञानथी** पोतानी उन्नति थवाना विचारो करे छे. हवे एक जीज्ञासु पोतानी उन्नति करवा माटे आमांथी कयो रस्तो ग्रहण करशे? हुं तो धारुं छुं के पोते जे व्यवसायमां पड्यो हशे तेने उत्तम मानी पोतानी उन्नति करवा मथशे, **खरी उन्नति** क्यारे अने केवी रीते थाय ए चोक्कसपणे सर्वने अनुकूळ एवो कोई रस्तो हवे आपणे शोधवो जोईए.

उपर जणावेला सर्व कारणोने हमणां थोडी वार एक बाजुए रहेवा दई आपणे आपणी उन्नति करवानो मुख्य रस्तो शोधीए. जो आपणे आपणा मननी दृढ श्रद्धाथी एम धार्यु के, अहींथी धारेले स्थळे जई पहोंचाशेज अने एवो विश्वास राखी जे पंथी पोतानो मार्ग कापे छे ते आखरे धारेला स्थळे जई पहोंचे छेज, परंतु प्रथमथीज शंकाशील मनुष्य 'अहींथी जवाशे के नहीं? वधारे तो नहीं भटकवुं पडे' विगेरे विचारोथी भ्रमित थई ज्यांना त्यांज उभा रहे छे तो तेओ कांई पण करी शकता नथी.

आटला माटे प्रथम ते विश्वास–श्रद्धा बेसाडवा माटे **मनने काबुमां राखता शीखवानी जरुर** छे के अधवचमां फसाई जाय नहीं. मनपर जीत मेळवनार मनुष्य पोते अनिवार्य प्रसंग आवी पडवा छतां पण पोतानुं कार्य चालुज राखी शके छे, अने ज्यारे ते सतत् उद्यम अने मनना दृढ विश्वासथी ते कार्य करवामां आवे छे तो ते आखरे फत्तेहमंदीथी पार पडे छे. आटला माटे दरेक उन्नति इच्छनारा जिज्ञासुए प्रथम **मनने केळववानी जरुर** छे, अने मनने केळववा माटे **अध्यात्मशास्त्रनो अभ्यास करवो जोईए.**

मन उपरनी जीतथी **आत्मानुं खरुं स्वरुप** समजाय छे अने ज्यारे आत्मानुं स्वरुप समजायुं एटले पोतानी खरी उन्नति शामां छे ए पण तरतज जणाई आवे छे. मनने केळव्या वगर पोतानी उन्नति इच्छनारा घणी वखत अणधारी आपत्तिमां आवी पडे छे. अने त्यारे घणोज अफसोस करी ते कार्य तरफ अणगमो बतावावामां आवे छे. एक विद्वान फीलोसोफर कहे छे के:—

" जो तमारे तमारी उन्नति करवी होय तो प्रथम मनने केळवो अने तेने केळववानो उपाय एज छे के एकांतमां तेनी साथे खूब गोष्टी करी, खरा निर्णय पर आवो अने एवीज रीते घणो वखत केळववानुं कार्य चालु राख्ये, मन आपोआप केळवाई जशे. "

उपर्युक्त वचनो प्रमाणे जो मन केळववामां आवे तो शारीरिक, मानसिक अने आत्मिक **उन्नति** स्हेजे थई जाय, अने ज्यारे ए उन्नतिना चिन्हो जणायां एटले जातिनी–धर्मनी–अने देशनी पण उन्नति थतां वार नथी.

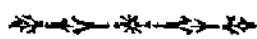
मननो केळवायलो माणस कोईना पण अविचारने ताबे थतो नथी, गाडरीआ प्रवाहमां जोडातो नथी, खोटुं-खरुं शुं ते स्हमजी शके छे विगेरे घणाज फायदाओ मननी केळवणीथी थाय छे अने ऐटलाज माटे प्रिय वांचकोने-उन्नति इच्छनारा जिज्ञासुने अंतिम प्रार्थना छे के,

मनने केळवी, मनोबळ प्राप्त करो!!

निवेदक-आ. अ. शाह-सूरत.



सनातनजैनग्रंथमालाके नये नियम।



इस ग्रंथमालामें जैनाचार्यकृत जैनदर्शन, सिद्धांत, न्याय, अध्यात्म, व्याकरण, काव्य, साहित्य, पुराण इतिहासादि सर्व प्रकारके प्राचीन ग्रंथ संस्कृत, प्राकृत तथा संस्कृत टीका सहित बड़ी शुद्धतापूर्वक छपते हैं वा छपेंगे। प्रत्येक खंड रायल वा सुपर-रायल १० फारमसे (८० पृष्ठसे) कमका नहिं होता। इसकी न्योछावर १२ अंकोंकी सर्वसाधारण जैनी भाइयोंसे वा जैन मंदिर, जैन संस्थाओंसे १०) रूपये और फुटकर एक अंककी २) रु.पेशगी ली जाती है। धनाढ्य रईसोंसे उनके पदस्थानुसार अधिक ली जाती है। डांक खर्च जुदा है सो प्रत्येक अंक (खोजानेके भयसे) पोष्टेजके वी. पी. से भेजा जाता है। इस ग्रंथमालाके १६ अंकोंमें नीचे लिखे पहिलेके आठ ग्रंथ पूर्ण छप गये हैं। आगेको शाकटायन व्याकरण, पद्मपुराण, श्लोकवार्तिकालंकारादि ग्रंथछपेंगे।

यह ग्रंथमाला वा इसमेंके सब ग्रंथोंका प्रत्येक जिनवाणी भक्त जैनीके सिवाय प्रत्येक मंदिरजी, पाठशाला, पुस्तकालयादि संस्थाओंमें संग्रह करके भगवानकी प्रतिमाजीकी तरह संरक्षपूर्वक नित्यदर्शन, पूजन, विनयादि करना चाहिये। ये ग्रंथ संस्कृत प्राकृत हैं हमारे कामके नहीं, ऐसा समझकर इनकी उपेक्षा व अविनय नहीं करना क्योंकि-देव गुरु शास्त्रकी भक्ति पूजा विनय एकसा करना चाहिये। इन महान् आर्ष ग्रंथोंकी रक्षा व प्रचार करना ही जैनधर्मकी रक्षा करना वा प्रचार करना है।

इस ग्रंथमालाके ग्राहक न होकर फुटकर ग्रंथ लेनेवालेके लिये मूल्यका नियम।

१-२	आप्तपरीक्षासटीक व पत्रपरीक्षा मूल दोनों एक जिल्दमें	२)
३	समयप्राभृततात्पर्यवृत्ति और आत्मख्याति टीका सहित	५)
४	राजवार्तिकजी पांच अध्याय	५)
४	राजवार्तिकजी शेष पांच अध्याय	५)
५	जैनेंद्रप्रक्रिया गुणनंदिकृतप्राचीन	१।।)
६	शब्दार्णवचंद्रिका (जैनेंद्रव्याकरण-की लघुवृत्ति)	५)
७-८	आप्तमीमांसा(देवागम)अकलंक भाष्य और वसुनंदिवृत्ति सहित तथा प्रमाणपरीक्षा दोनों एक जिल्दमें	२)
१०	जैनेंद्रसूत्रपाठ असली छपता है	०।।)
११	शाकटायनप्रक्रिया सूत्रपाठसहित	३।)
१२	शाकटायन धातुपाठ	०।=)
१३	गणरत्नमहोदधि स्वोपज्ञटीका	२)

नोट-धनाढ्योंसे इनका मूल्य अधिक है।

पन्नालाल बाकलीवाल
मदागिन जैनमंदिर-बनारस सीटी।

इस वर्षके ग्राहकोंको हिन्दी-गुजराती भाषाकी ८-१० पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रकट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

The Digamber Jain.

युतं सुलेखै विविधैश्चचित्रै, दिगम्बरंजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुत्तमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ८ मुं.	वीर संवत २४४१ फाल्गुन. विक्र. सं. १९७१.	अंक-५मो.



जैन कोमने जीवन अर्पण करनार एक विद्वान अने केळवायला जैन बंधु पं. अर्जुनलाल शेठी बी. ए. उपर आवी पडेली घोर आपत्तिथी अमारा वांचको सारी पेठे जाणीताज छे. त्रण चार माहिना थयां जैन कोम तरफथी पुष्कळ पोकार उठाव्या छतां तेनी कंई पण असर थती नथी अने जयपुर राज्य 'आंख आडा कान' करी निरांते बेसी रह्युं छे, तेम आपणा मला वाईसरोय नामदार लोर्ड हार्डीजनी सरकार तरफथी पण ए बाबत कंईपण तपास थई होय एवुं जणातुं नथी, ए जाणी क्या जैन बंधुने खेद नहीं थाय ? तेमां वळी

पं. अर्जुनलालजीनी पत्नीनो पोकार.

पं. अर्जुनलालजी शेठीनी धर्मपत्नीनो जे हृदयवेधक पत्र हालमां प्रकट थयो छे ते तथा ए संबंधीना 'जागो, जैनो जागो !' 'हा जैनीयों ! डूब मरो' तेमज ब्र. शीतलप्रसादजीनो पत्र ए चार लेखो आ अंकमां वांचकोना जोवामां आवशे, जे वांचवाथी गमे तेवा कठण हृदयना पुरुषने पण आंखमां आंसु आव्या वगर नहीं रहे के पं. अर्जुनलालजी शेठीनी पत्नी गुलाबबाई तथा एमनां छोकरांओ उपर केवुं घोर संकट आवी पड्युं छे, तेम पं. अर्जुनलालजी शेठीनी स्थिति पण केवी गंभीर थती जाय छे ! जैनो जीवदयाना खास हिमायती छे, तो शुं आ आपत्तिमां आवी पडेली एक अबळा अने तेनां संतानोनी दाद नहीं सांभळे ?

✤ ✤ ✤ ✤

आपणुं कर्तव्य.

दुःखीने दिलासो आपवो अने तेने दुःखमांथी मुक्त करवा बनी शकतो तन, मन, धननो भोग आपवो ए आपणे जैनोनुं

खास फरज छे, तो आवा संकटसमयमां आपणुं कर्तव्य एज छे के गामेगाम सभाओ भरी पं. अर्जुनलालजी अने एमना कुटुंब उपर आवी पडेली नाहकनी आपत्ति माटे दिलगीरी प्रकट करी तेमनी धर्मपत्नी उपर दिलासापत्र मोकलवो अने तेमने आ संकट समये सहाय करवाने ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीए 'जैनमित्र' ऑफिसद्वारा जे फंड खोलेलुं छे तेमां सर्वेए बनी शकती मदद तरतज मनीओर्डरद्वारा मोकलवी जोइए. आ फंडमां अमारा तरफथी अमो रु. १०) मोकली आपीए छीए अने एज मुजब मेनेजर, 'जैन मित्र' ओफिस, (हिराबाग, गीरगाम, मुंबाई,)ने सरनामे मदद मोकलवाने सर्वे जैन बंधुओने आग्रहपूर्वक सूचवीए छीए. तेमज नामदार वाइसरॉय (दिल्ही) उपर आ बाबतना तारो गामेगामथी पंचोना नामथी मोकलवानी जरुर छे तथा विद्वानो अने श्रीमानोनुं एक वगवालुं डेप्युटेशन नामदार वाइसरॉयनी पासे जवानी अत्यंत जरुर छे. जो आ बाबतथी पुरती रीते सरकारने वाकेफ करवामां आवशे तो आपणने खात्री छे के नामदार सरकार आ बाबतनी तपास करी जैनोने न्याय आप्या वगर रहशे नहिज. लटपट कर्या वगर मोंदे कहेवाथी कंई कार्य थई जतुं नथी माटे आ डेप्युटेशन लई जवानी गोठवण करवाने लाला जुगमंदरलाल जैनी एम. ए. बेरिस्टर, बाबू अजीतप्रसादजी एम. ए. एल. एल. बी, ब्र० शीतलप्रसादजी, मी. मणीलाल एच. उदाणी एम. ए. तथा इंदोर, दिल्ही, वगेरेना श्रीमानो शेठ हुकमचंदजी, कल्याणमलजी, कस्तुरचंदजी, लाला इश्वरीप्रसादजी, शेठ नेमीचंदजी वगेरेए एकत्र मळी आ कार्य उपाडी लेवानी जरुर छे. आ प्रश्न एक व्यक्तिने लगतोज छे एम समजवानुं नथी पण आ बाबत जो न्याय नहीं मेळवी शकीए तो जैन कोम उपर एक माहाभारत कलंक आवी पडवा उपरांत उन्नतिना कार्यने जबरजस्त आचको आववा दरेक संभव छे.

श्वेतांबर जैन कोन्फरंस.

आपणा श्वेतांबरी भाईओमां कुसंपने लीधे चार पांच वर्ष थयां कोन्फरंसनुं कार्य शिथिलचालतुं हतुं, पण जाणे एकदम उंघमांथी झबकीने उठ्या होय तेम आ कोन्फरंसे आ वर्षे एकदम जाग्रत थई कोन्फरंसनी स्थीतिमां एकदम फेरफार करी नांखशे छे एटले गया मासमांज सुजानगढ खाते आ कोन्फरंसनी नवमी बेठक प्रतिष्ठोत्सव प्रसंगे भारे उत्साहथी थई हती अने तेमां व्यवहारिक-धार्मिक-व्यापारी केळवणीने लगता, जैन कोमनी संख्यामां वधारो करवा संबंधी, सुकृतभंडार फंड-कोन्फरंस बंधारण, हानीकारक रिवाजो नाबूद करवा, जाहेर जैनतहेवार माटे सरकारने अरज, जैनसाहित्य प्रचार, जीर्ण मंदिरोद्वार वगेरे संबंधी जुदा जुदा १६ ठरावो थया छे तेमज एक वधु खुशीथवा जेवुं ए बन्युं छे के दशमी, अग्यारमी, बारमी अने तेरमी कोन्फरंस अनुक्रमे मुंबाई, मारवाड, अंबाला अने मुर्शीदाबादमां भरवाने मळेला आमंत्रणो स्वीकारायां छे. एटले चार वर्ष सुधी तो हवे आ कोन्फरंसने आमंत्रणनी जरुर रही नथी, ज्यारे आपणी मुंबाई दि. जैन प्रांतिक सभाने दर वर्षे आमंत्रणनां फांफां पडे छे तेमां आ वर्षे तो कोई स्थळेथी आमंत्रणज थयुं नथी तेथी आ वर्षे कोन्फरंसनी बेठक थशे के नहि ए एक सवाल थई पड्यो छे, ए दि. जैनोने शुं ओछुं शरमावनारुं छे ! हजु पण वखत छे, माटे लटपट करी कोईपण तीर्थ उपर के कोइ शहेरमां आ वर्षनी बेठक वैशाख मास सुधीमां भरवाने कोन्फरंस ओफिसे बनी शकती लटपट करवी जोइए.

मिथ्यात्वी भाईओना सहवासने लीधे आपणा

मिथ्यात्वी पर्व हुताशणी.

जैनो पण केटलाक मिथ्यात्वी त्हेवारो मानवा लाग्या छे तेमांनो एक हिंसामयी निर्लज्ज त्हेवार होळी अथवा हुताशणी पण छे, जे आ फागण सुद १५ उपर आवी पहोंच्यो छे, ज्यारे आ मासनी सुद ८थी१५ सुधी आपणो पवित्र पर्व अष्टानिका (अड्ढाई) पर्व पण समीपज छे.

आपणा केटलाक भाईओमां तो एटले सुधी अंधश्रद्धा वेसी गई छेके दर वर्षे जो होळीमां नालियेर न होमीये तो व्हेम आवे, तेथी अष्टानिका जेवा उत्तम धार्मिक दिवसोमां पण धार्मिक कार्यो न करतां होळीमां नालियरो, अनेक लीलोत्रीओ वगेरे होमे छे तेमज छोकराओ बिभत्स शब्दो बोले छे, लोकोनां लाकडां छाणां वगेरेनी छडेचोक चोरी करी तेने होळीमां होमे छे तथा अनेक प्रकारनां तोफानो करे छे तेने तेमनां मावापो वळी उत्तेजन आपे छे ए केटलुं शरमावनारुं छे ! ! हिंसाथी कदी धर्म थतोज नथी, माटे आ पुष्कळ हिंसामयी मिथ्यात्वी निर्लज्ज त्हेवार जैनोए कदी पण मानवो जोईए नहिं अने जे मानता होय तेने न मानवानो उपदेश आपवो जोईए अने आ अड्ढाईना पवित्र दिवसोमां दररोज नंदिश्वर-व्रतनुं विधिपूर्वक पूजन करी आ आठ दिवस धर्मध्यानमां व्यतीत करी नंदिश्वरव्रतनुं माहात्म्य एटले ' श्रीपालचरित्र ग्रंथ जे गत वर्षे ग्राहकोने भेट वेंचायलो छे, ते सर्व समक्ष वांची संभळाववो जोईए. तेमज मुंबाईमां जेम 'होळीकासंमेलन स्थापन थयेलुं छे अने ए दिवसोमां सभाओ वगेरे भरे छे तेम जैनोए पण सभाओ करी धार्मिक उपदेश आपवो जोईए.

* * * *

जैनधर्मने चिरकाळ सुधी टकावी राखवानो मुख्य आधार 'जैनसिद्धांत' उपरज निर्भर छे, जेथी जे कंई

उत्तेजन आपवानी खास जरुर.

रह्यासह्या संस्कृत-प्राकृत ग्रन्थो आपणी पासे हयात छे ते प्रकट थवानी अत्यंत आवश्यकता छे. संस्कृत ग्रंथो संशोधन करीने शुद्ध छपाववा ए काम भारे महेनतनुं अने खर्चाळ छे, छतां पण तेवुं महाभारत काम आपणा एक सिद्धांतप्रेमी बालब्रह्मचारी पं. पन्नालालजी वाकलीवाले भारे हिंमत वेठी निःस्वार्थपणे शरु करेलुं छे तेने उत्तेजन आपवानी दरेक जैन बंधुनी फरज छे. आ बाबत आ अंकमां बाबू दयाचंद्रजीनो ' जीवनमरणका प्रश्न ' ए नामनो लेख प्रकट करेलो छे, जे शब्देशब्द वांची जवाने दरेक वांचकने आग्रह करीए छीए. पं. पन्नालालजी तरफथी ए ' सनातन जैन-ग्रंथमाला ' नामे जे संस्कृत मासिक पुस्तक प्रकट थाय छे तेना मात्र आज सुधी ४२ ग्राहकज नोंधाया छे ए ओछुं शरमावनारुं छे ! अने आवी स्थितिमां जो आ ग्रंथमाला बंध पडी जशे, तो जैनसिद्धांतप्रचारना कार्यने जन्मताज मारी नांखवा जेवुं थशे, माटे जैन बंधुओ ! जाग्रत थाओ अने तमारी गांठना पैसाथी बने तो तमे जाते रु. १०) वार्षिक भरी आ ग्रंथमालाना ग्राहक थाओ अथवा तेम न बने तो मंदिरोना भंडारना द्रव्यद्वारा आ ग्रन्थमालाना ग्राहक दरेक मंदिरदीठ थवा प्रबंध करो. भंडारना द्रव्यनो उपयोग जो आवा कार्यमां न थाय अने चांदी सोनानां वासणो, उपकरणो करवामां के व्याजे नांखी मुकी वधार्या करवामां आवे तो तेथी धार्मिक उन्नति शुं थवानी छे ? चैत्र सुद १५ सुधीनी मुदतमां २०० ग्राहकपण नोंधाशे तोज आ ग्रंथमाला चालु रही शकशे तो २०० ग्राहको मेळवी आपवा ए कंई अघरुं नथी. टीपे टीपे सरोवर भराय

तेम एकेक मंदिर दीठज रु. १०)-१०) भरी नाम नोंधाववामां आवशे तो आथी पण वधु ग्राहकसंख्या सहेलथी थई शकशे. आ बाबतनो पत्र व्यवहार-पं. **पन्नालालजी बाकलीवाल जैन, मैदागिनी जैन मंदिर, बनारस सीटी** ए सरनामाथी थई शके छे. एक वर्षना संस्कृत ग्रंथो तो तयारज छे, जे पत्र लखवाथी वी. पी. थी तरत मळी जशे.

✽ ✽ ✽ ✽

जो कोई बाबतनी सगवड न होय तो ते माटेनां फांफां मारवामां आवे छे त्यारे जो **सगवड छतां बेदरकारी!** ते बाबतनी पुरती सगवड होय, तेनो लाभ न लेवो ए केटलुं वेहुंदुं छे? आपणा स्वर्गवासी परोपकारी दानी शेठ माणेचंदजीना विदुषी पुत्री श्रीमती मगनव्हेने अथाग परिश्रम अने अर्थव्यय करी मुंबाईमां 'श्राविकाश्रम' जेवी उत्तम संस्था स्थापन करेली छे अने जेनो लाभ पोते त्यां निवास करी सर्वेने अहर्निश आपवा तैयार छे, छतां अजब जेवुं छे के आ श्राविकाश्रमनो लाभ लेनारनी संख्या हाल घणीज न्यून छे. ७ वर्षथी मांडीने गमे ते उमरनी **कुमारी सधवा के विधवा** व्हेनोने रहेवानी, खावापीवानी तेमज व्यवहारिक, धार्मिक तथा गृहव्यवस्थानी **दरेक प्रकारनी** केळवणी आपवानी **उत्तम सगवड** (पोताने खरचे के आश्रमने खरचे एम बन्ने रीते) आ श्राविकाश्रममा होवा उपरांत अध्यापिका तेमज उपदेशिकाने लगतुं शिक्षण आपवानी गोठवण पण छे, माटे आ आश्रमनो लाभ थोडो के वधु वखत लेवा अमो **गुजरात दक्षिणनी**-व्हेनोने आग्रह करीए छीए. आ संबंधी पत्रव्यवहार करनारे **श्राविकाश्रम**, जुबीलीबाग, तारदेव, मुंबाई ए सरनामे पत्र लखवाथी वधो खुलासो मळी शकशे. आवुज एक बीजुं **आश्रम इंदोर** मां दानी शेठ हुकमचंदजीना पत्नी श्रीमती **कंचनबाई** तरफथी **रुप्या एक लाखनी** सखावतथी खोलायलुं छे जेनो लाभ खास करी **मालवा अने वागड** प्रांतनी व्हेनोने लेवा भलामण करीए छीए. आ आश्रमनुं नाम **'कंचनबाई श्राविकाश्रम'** छे अने पत्रव्यवहार मंत्री. हझारीलालजी (नसीयांजी, इंदोर)नी साथे थइ शके छे.

एक नजर इधर भी।

जीवनमरणका प्रश्न।

प्रिय पाठकगण! यह बात निर्विवाद सिद्ध है। इसके कहनेकी कोई आवश्यकता नहीं कि संसारमें वही धर्म जीवित रह सकता है और उसीकी गणना जीवित धर्मोंमें की जा सकती है कि जिसका प्राचीन साहित्य सुरक्षित विद्यमान हो, जिसके आर्षग्रंथोंका यथेष्ट उद्धार होता जाता हो, जिसका शास्त्रभंडार नित्यशः बढ़ता जा रहा हो और जिसके तर्क, छंद, व्याकरण, ज्योतिष, विज्ञान आदि संपूर्ण अंगोंकी यथोचित रक्षा और पुष्टि होती जाती हो। वह धर्म इस प्रकाशमई २०वीं शताब्दीमें कदापि उन्नति नहीं कर सकता और उसके सिद्धांत कदापि विश्वव्यापी सिद्धांत नहीं हो सकते, जिसका कि साहित्य अंधकारमें पड़ा हो, जिसके प्राचीन महत्वशाली ग्रंथ दीमकोंके आहार बन रहे हों, जो सात सात तालोंके अंदर अंधेरे और नमी (शरदी) में पड़े२ सड़ रहे हों। ऐसे धर्मको दो चार दिनका पाहुना कहना अनुचित न होगा। चाहे उसकी किसी समय वैसी ही उच्चावस्था रही हो, चाहे कभी वह संसारभरका धर्म रहा हो, चाहे उसके प्रचारक जगत गुरु ही क्यों न रहे हो, चाहे उसके अनुयायी राजासे लेकर रंकतक रहे हो, परंतु अब उसका उन्नति करना, नहीं नहीं, स्थित रहना भी कठिन है। यह अटल नियम है और दुनियांभरके विद्वान् इससे सहमत है।

शोक! शोक!! यह दशा, यह स्थिति इस समय हमारे सर्वश्रेष्ठ जैनधर्मकी हो रही है। आज जैनधर्मके प्राचीन साहित्यकी जो दुर्दशा हो रही है उसे देख कर छाती फटती है और अश्रुजलधारा वहने लगती है। हाय! एक वह दिन था कि जब अकलंक, समंतभद्र आदि मुनिजन अपने आत्मकल्याण और ध्यान तकको छोड़ कर संसारके उपकारके लिये निःस्वार्थ भावसे पूज्य ग्रंथोंकी रचना करते थे, जिनमें अकाट्य प्रमाणों और युक्तियोंद्वारा जैनधर्मका मंडन करते थे तथा अपने प्रभावशाली उपदेशोंसे बड़े२ मानियोंका मान गलित करते थे। यह उन्हीका माहात्म्य था, कि नगरके नगर जैनधर्मकी शरण ग्रहण करते थे और वीर भगवानके शासनकी छत्रछायामें आश्रय लेते थे। पर हा! आज वह समय आ गया, आज हमारे दुर्भाग्यने हमे इतना पतित कर दिया कि उन महर्षियोंकी कृतियोंका उन परोपकारी महात्माओंके अटूट परिश्रमका सर्वथा दुरुपयोग करने लगे! धिक् हमारी धृष्टता पर! क्या हम जिनवाणी माताके ऐसे कपूत हो गये कि स्वयं अपनी माताकी ही गर्दन पर कुठार चलाने लगे! और उसको कई२

तालोंमें बांध जकड़ कर ऐसी जगह कैदमें डालने लगे कि जहां उसे धूप और हवा भी न मिल सके।

अरे जिनवाणीमाताके नाममालके कहलानेवाले भक्तो ! जरा शोचो तो सही कि—अकलंक, समंतभद्रादि महात्माओंकी आत्माएं आज तुम्हें क्या कहती होंगी, क्या इसी भरोसे पर उन्होंने इतना श्रम किया था ? क्या तालोंके अन्दर कैद कर देने के लिये उन्होंने अटूट परिश्रम किया था ? नहीं नहीं, उन्हें विश्वास था, वे समझते थे कि इन ग्रंथोंके द्वारा आत्मकल्याणका मार्ग खुला रहेगा और जिनधर्मकी सर्वत्र प्रभावना होती रहेगी। उन्हे भरोसा था कि आजकल जैसे न्याय और युक्तिप्रधान कालमें संपूर्ण हिंदुस्थान और योरूपमें जैनधर्मकी ध्वजा फरफरायगी और चहुं ओर भूमंडलपर अहिंसाधर्मका प्रकाश होगा, परंतु शोक ! आपने उनकी आशाको खाकमें मिलादिया, आपने उनके उपकारका अपकार करदिया, आपने उदार जैनधर्मको संकुचित बना दिया और केवल गिनेचुने (थोडेसे) नाम मात्रके लोगोंका धर्म कर दिया!

नहिं समझमें आता की आप जो प्रति दोवार जिनवाणी माताको ढोक देते हो, फिर जिनवाणी माताके प्रचार और प्रकाशमें क्यों सिथिल हो रहे हो ? भक्तो ! श्रद्धा रखनेवाले सपूत पुत्रो ! जिनवाणी माताकी रक्षा करना, उसका माथा ऊंचा करना, उसका आदरसत्कार करना आपका मुख्य कर्तव्य है। आपका धर्म है कि जिनवाणी माताके लिये तन मन धन को न्योछावर करदो ! उसके लिये किसी बातमें तनिक भी संकोच न करो। आपकी भक्ति इसीमें हैं। आपका ढोकदेना तभी सफल है और तभी पुण्यका बंध करनेवाला होगा कि जब आप इस बातका प्रण कर लेंगे कि चाहे कुछ हो हम इतना रुपया जिनवाणी माताके उद्धारके लिये अवश्य ही व्यय करेंगे। यह आपका सौभाग्य है कि—चिरपरिचित बालब्रह्मचारी निःस्वार्थ परोपकारी अटूट परिश्रमी श्रीमान् पंडित पन्नालालजी बाकलीवाल जिन्होंने अपनी तमाम उमर जिनवाणी माताके प्रचारमें ही व्यय की, संस्कृतपुरी काशीमें 'जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था स्थापित की है और उसके द्वारा तत्त्वार्थ राजवार्तिक, आदि अनेक प्राचीन ग्रंथोंको बड़ी शुद्धता और सुंदरतासे प्रकाशित किया है, आगे करनेका विचार रखते हैं। परंतु हमे आँखोंमें आँसू भर कहना पड़ता है कि यद्यपि राजवार्तिकजी जैसे महान ग्रंथोंका प्रकाश किया तथापि आपको रुपये के अभावसे कार्यमें हानि उठानी पड़ी और पड़ रही है। आज हमारे सामने आपकी संस्थाकी रिपोर्ट रक्खी है जिसके देखनेसे ज्ञात होता है कि १३ लाख जैनजातिमें दो वर्षतक,

अनेक लेख, नोटिस और विज्ञापन निकालनेपर भी आपकी सनातनजैनग्रंथमालाके केवल ४२ ग्राहक हैं। सालभरके १२ अंकोंकी (जिसमें १००० पृष्ठों के बड़े आकार के बारीक सुंदर टाइप के मोटे ५० पौंड कागजमें छपे हुये ग्रंथोंकी) न्योछावर केवल १० रुपया है। गत बारह अंकोंमें राजवार्तिक, आप्तपरीक्षा, पत्रपरीक्षा, समयप्राभृत, आप्तमीमांसा, जैनेंद्रप्रक्रिया, शब्दार्णवचंद्रिका आदि कई महान् ग्रंथ सटीक हैं इन ग्रंथोंकी लिखाई—१००) रुपयोंसे भी कहीं ज्यादह है परंतु इतनेपर भी ग्राहकोंकी संख्या केवल ४२ देखकर निराशा होजाती है और वह निरासा किसी हद तक ठीक भी है। आखिर कहां तक आशा रक्खी जाय? हमे भय है और पंडितजी भी लिखते हैं कि ४२ ग्राहकोंके ४२०) सालानासे काम चलना असंभव है। हमे आशा थी कि इस संस्थासे जिनवाणी माताका उद्धार होगा और महर्षियोंके प्राचीन ग्रंथोंके प्रकाशसे जैनधर्मका एकप्रकार भूमंडलमें प्रकाश होगा! परंतु अब इस संस्थाके टूटनेमें कुछभी देर नहीं है इसे टूटी ही समझो। इस दशामें हम कहेंगे कि इसका पाप आपको लगेगा। आप जिनवाणी माताके भक्त नहीं किंतु उसके शत्रु और द्वेषी हैं! नहींतो साल भरमें १०) रुपये खर्च करना कौन बड़ी बात है? क्या आप ०॥।-) आने महीने भी जिनवाणी माताके लिये नहीं दे सकते? क्या जैन समाजके बड़े२ सेठ जो हजारों और लाखोंके दान करते हैं इस ओर ध्यान न देंगे? क्या केवल नामके लिये ही सब काम करेंगे? इस काममें क्या नाम नहीं है? एक२ ग्रंथ एक एक सेठ बातकी बातमें प्रकाशित कर सकते हैं बल्कि ऐसी कई कई संस्थायें एक एक सेठ चला सकते हैं।

इसमें संदेह नहीं कि सनातनजैनग्रंथमालामें संस्कृतके ही ग्रंथ प्रकाशित होते हैं और इससे सर्व साधारणको लाभ नहीं पहुंचता, परंतु यदि यही विचार किया जाय तो फिर संस्कृत ग्रंथोंका जिन पर तमाम जैनधर्मका अस्तित्व निर्भर है कुछ दिनमें लोप ही हो जायगा, फिर आप कहांसे किसी बातका प्रमाण दे सकैंगे और क्या अपना आधार रख सकैंगे? जैनधर्मकी स्थिति इनही ग्रंथोंपर है। इनके अभावसे जैनधर्मकाही अभाव है अतएव यह विचार करके कि जिनधर्मकी स्थितिके लिये इनका प्रकाशित होना अत्यावश्यक है। इनके खरीददार तुरंत बन जाना चाहिये। और ग्रंथोंको अपने यहांके जैन तथा अजैन पंडितोंको दिखलाना चाहिये अथवा मंदिरोंमें रख देना चाहिये अथवा स्थानीय पुस्तकालयों व लाईब्रेरियोंमें भेट कर देना चाहिये अथवा अपने पास अपने तथा अपने पुत्र पौत्रादिके लाभार्थ संग्रह करके रखना चाहिये।

इंग्लैंड आदि देशोंमें जब कोई पुस्तक प्रकाशित होता है तो वहांके लोग उसे अधिकतर इस भावसे खरीद लेते हैं कि हमारा केवल १) या ॥) लगेगा परंतु लिखनेवाले छपानेवालेकी लाखों कापियें बिक जानेसे उन्हें लाभ रहेगा और वे अच्छे२ ग्रंथ प्रकाशित कर सकेंगे जिनसे देशको बड़ा लाभ पहुंचेगा, साहित्य बढ़ेगा और धन बढ़ेगा। यही विचार इस समय आपको भी करना चाहिये। आप यदि १०) रु० खर्च करेंगे तो आप कुछ गरीब न हो जायँगे। परंतु वहां दोसो चारसौ ग्राहक हो जानेसे काम बराबर चलता रहैगा और बड़े२ ग्रंथ प्रकाशित होते रहैंगे।

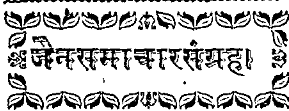
सेठोंसे, धनी और उदार महाशयोंसे प्रार्थना हैं कि आप कमसे कम १०० रुपये वार्षिक देकर पंद्रह पंद्रह प्रतियोंके ग्राहक होजाइये। आपको १००) रुपये देनेपर १५०) के ग्रंथ मिलैंगे। आपको चाहिये कि आप इन प्रतियोंको अजैन विद्वानोंको दिखावें तथा मंदिरों वा पब्लिक पुस्तकालयोंमें रख दें।

हमे आशा है और पूर्ण भरोसा है कि हमारे पाठकगण इस ओर अवश्य हीं ध्यान देंगे और इस प्रार्थना को पढते ही साधारण हैसियतवाले भाई तौ १०) रुपये भेजकर मय पिछले १२ अंक पं. पन्नालालजी मंत्री, भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था, काशीसे मगालेवें तथा आगे के लिये अपना नाम ग्राहकोंकी श्रेणिमें लिखवादेवें तथा सेठ और धनी महाशय १००) रुपये भेजकर पिछले १२ अंकोंकी पंद्रह२ प्रति मगालेवें। हम समझते हैं कि अब सौ दोसौ ग्राहक अवश्य बनजावैंगे और पंडितजी भी अपने कार्य में निराश न होकर ग्रंथप्रकाश करनेमें तत्पर हो जावैंगे।

पाठको तथा धनाढ्य महाशयो! हम एकवार फिर जोरसे कहदेते हैं कि यदि हमारे इतने चिल्लानेपर भी आप महानुभावोंने ग्राहकश्रेणीमें अपना नाम न लिखाया और एक एक ग्रंथ अपनी अपनी तरफसे छपनेको सहायता न भेजी तौ समझलीजिये कि आपकी भक्ति जिनवाणी मातामें नाम और दिखलावेकी है। यदि यही हाल रहा तौ एक दिन वह आयगा कि—जब ऋषिप्रणीत ग्रंथोंका अभाव ही हो जायगा। और आपकी ढोकदेना केवल आलमारियोंके तख्तोंकीही रह जायगी। याद राखिये कि यह प्रश्न जीवनमरणका है, साधारण नहीं।

जिनवाणी माताका सेवक,
दयाचंद्र गोयलीय—लखनऊ।

પાઠશાળા સ્થપાઇ:-અત્રે નવાપરામાં મહાવદ ૭ને દીને દશાહુમડ ભાઇઓના પ્રયાસથી પાઠશાળાની સ્થાપના થઇ છે અને ચાલુ ખર્ચ માટે આશરે રૂા. ૫૦૦)-૬૦૦)ભરાવાથી ત્રણ ચાર વર્ષના ખર્ચની સગવડ થઇ છે તેમ આશરે ૨૦ વિદ્યાર્થી લાભ લે છે.



ભાવનગરમાં ધર્મશાળા—શેઠ ગુલાચંદ અમરજી વાંગડીયાના સ્વર્ગવાસી પુત્રો શેઠ અભેચંદ તથા શેઠ મૂળચંદના સ્મરણાર્થે ભાવનગરમાં રૂ. ૩૦૦૦૦) ની સખાવતથી સ્ટેશનની પાસે એક 'ગુલાબબાગ' નામે **જૈન ધર્મશાળા** માગશર વદ ૧૦ને દીને ખુલ્લી મેલાઇ છે, જેમાં આશરે ૨૦૦ યાત્રાળુઓનો સમાવેશ થઇ શકે તેમ છે તેમજ દિગંબરી શ્વેતાંબરી સર્વે જૈનોને ઉતરવાની ગોઠવણ થઇ છે.

સુરતમાં શોકજનક મૃત્યુ અને રૂ. ૨૦૦૦) નું દાન—અત્રે શા. ડાહ્યાભાઇ રીખવદાસના પુત્ર અને અમારા બનેવી **શા છગનલાલ ડાહ્યાભાઈ** ચાર પાંચ માસની બિમારીમાં આશરે ૪૦ વર્ષની વયે માહા વદ ૧૧ ને દીને મૃત્યુ પામવાથી અમારી બ્હેન મણીબ્હેનને માત્ર ૨૫ વર્ષની વયે વૈધવ્યદશા પ્રાપ્ત થઇ છે! એમના સ્મરણાર્થે એમના પિતાશ્રી તરફથી રૂ. ૨૦૦૦) ધર્મકાર્યો માટે કાઢવામાં આવ્યા છે. આપણે ઇચ્છીશું કે આ રકમનો ઉપયોગ સ્થાયી વિદ્યાદાન અને **શાસ્ત્રદાન** માટે કરવામાં આવે.

विम्बप्रतिष्ठोत्सव और अधिवेशनः-बड़नगरमें द्वि. वैशाख मासमें बड़े समारोहकेसाथ बिम्बप्रतिष्ठा होनेवाली है, जिस समय मालवा दि. जैन प्रांतिक सभाका नैमित्तिक अधिवेशन करानेका निमंत्रण भी भेजा गया है।

ભટ્ટારક સુરેંદ્રકીર્તિજી વસો, ઉઢેળા, ત્રાજ, ત્રાણુજા, લીંબાસી, દેથલી વગેરે સ્થળે ભ્રમણ કરી હાલ માતાવાડામાં નિવાસ ! કરી રહેલા છે અને ધર્મોપદેશ આપે છે એમ અમને જણાવવામાં આવે છે.

क्षुल्लक थयाः—डावर निवासी गोरेलालजीए माहा सुद ९ ने दिने पं. धन्नालालजी पाटनीद्वारा क्षुल्लक पदवी धारण करी छे.

मृत्युके स्मरणार्थ शास्त्रदानः—कालका (अंबाला) निवासी हरदियालमल बनारसिदासने अपनी मातुश्री के स्मरणार्थ रु. १२९) निकाले है, जिसमेंसे रु. २९) 'दिगम्बर जैन'द्वारा शास्त्रदान करनेकी स्वीकारता भेजी है।

आवश्यकताः—बड़वानी क्षेत्र के लिये एक पुजारीकी आवश्यकता है। पत्रव्यवहारका पता—बाबू देवीसहाय स्टेट एकाउन्टेन्ट, बडवाणी (इन्दौर)

जैन विधिसे लग्न और सभाः—औरंगाबादमें श्रीयुत पांडुरंग सेतवाल के पुत्रका लग्न गत मासमें जैन विधिसे हुआ और एक सभा वैद्य मुरलीधरजी के सभापतित्वमें की गई, जिसमें हरएक लग्न जैन विधिसे करनेका और जैनपाठशाला खोलनेका प्रस्ताव हुआ है और कुरीति निवारणकी पुस्तकें बांटी गई थी।

यज्ञोपवित् संस्कारः—भीलोडामां माहा सुद २ ने दिने १० भाईओए भट्टारक विजयकीर्ति अने उपाध्याय वासुदेव द्वारा विधिपूर्वक यज्ञोपवित् धारण कर्युं छे. गुजरातना भाईओए आनुं अनुकरण करवुं जोईए.

अहिक्षेत्रका मेलाः—अतिशय क्षेत्र श्री अहिक्षेत्रमें चैत्र वदी ८ से १२ तक वार्षिक मेला रथोत्सवपूर्वक होगा जिसमें पांच दिन तक पूजन, शास्त्रसभा, व्याख्यानादि होंगे। यह तीर्थ बरेली जिलेमें आमले और चन्दौसी स्टेशनसे करीब २–३ कोसके फासिलेपर है।

विवाहोत्सव पर रु. ३१००) का दानः—कलकत्ता निवासी श्रीयुत सेठ सेढमलजी दयाचन्द्र फार्मके मालिक सेठ दयाचन्द्रजीने अपने पुत्र महावीरप्रसादके विवाहोपलक्षमें फाल्गुन वदि ९ को रु. ३१००) का निम्नलिखित संस्थाओंको दान दिया है.– १०१) जैन मंदिर कलकत्ता, १०१) जैनधर्म प्र. पाठशाला कलकत्ता, ६००) मलसीसरकी संस्थाओंमें, ९००) जैन सिद्धांतभवन आरा, २००) मारवाडी सहायक समीति–कलकत्ता, १००) वि. सरस्वती विद्यालय कलकत्ता, १९१) पिंजरापोल और गौशाला कलकत्ता, १००) स्या. महाविद्यालय बनारस, १००) जैन सिद्धांतविद्यालय मुरैना, १००) श्री रूषभ ब्रह्मचर्याश्रम हस्तीनापुर, १००) श्राविकाश्रम बम्बई; १००) महाविद्यालय मथुरा, ५०) जैनअनाथाश्रम देहली, १००) रुषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार, १००) आतुराश्रम कलकत्ता और ९९७) अन्य फुटकर रकमें। क्या अन्य श्रीमान भी शेठजीका अनुकरण करेंगे?

स्कोलरशीप फंडनी जरुरः—खेरोलवाला गांधी त्रीकमलाल कालीदास एक लेखद्वारा जणावेछे के ओराण प्रांतिजना दशाहुमड भाईओमां केलवणीना प्रचार माटे एक स्कोलरशीपफंड खोलवानी आवश्यकता छे अने ए बाबत प्रांतिक हितवर्धक सभाए कोशीश करवी जोईए वगेरे.

विद्वानोंसे प्रश्नः— भक्तामरकथामें ऋद्धिमंत्र और मंत्र ऐसे दो प्रकारके मंत्र बताये गये हैं तो इस दोनोका अर्थ क्या है और दोनोंमें भेद क्या२ है यह कोई विद्वान पंडित प्रकट करेंगे?

मालवा प्रां. सभा शुद्ध औषधालय—को गत मासमें ८४।।) की सहायता मिली है।

ઓરાણ, પ્રાંતિજમાં સુધારાની ચળવળઃ—ઓરાણ સંભાના તથા ૪૨ ગામના કેટલાક દશા હુમડ ભાઇઓ ઓરાણમાં પોસ વદ ૩ ઉપર એકત્ર થયા હતા અને જ્ઞાતિસુધારા માટેની ૧૧ કલમો તૈયાર કરી તે માટે સમસ્ત ગોળની સંમતિ મંગાવી છે. વળી આ પ્રસંગે એક સભા થઇ હતી જેમાં પાઠશાળા વગેરે માટે રૂ. ૨૫૦)ની ટીપ થઈ હતી, જેમાં રૂ. ૩૫) રેવચંદ ખીમચંદ પાટનાકુવા, રૂ. ૨૫) છોગાજ ખુશાલ બાલીરણા, રૂ. ૧૫) રાયચંદ પરમચંદ બાલીસણાવાળા, રૂ. ૧૦) છગનલાલ બહેચર ખાનપુરવળાના તેમજ બીજી પરચુરણ રકમો છથી એક રૂપીયા સુધીની હતી. આ સંભામાં અનેક કુરિવાજો ઘરઘાલી બેઠેલા છે, જેથી આ વિભાગના ભાઇઓ કેળવણીમાં ઘણાજ પછાત છે માટે આખા ગોળે એકત્ર થઈ પોતાની સંભાની ઉન્નતિ થાય તેવાં પગલાં એકસંપે ભરવાની જરૂર છે.

जैन स्पोर्टक्लब काशीका द्वितीय वार्षिकोत्सव गत डिसम्बर मासमें बाबू दयाचंद्र गोयलीय जैन बी. ए. के सभापतित्वमें हुआ था, जिसमें रिपोर्ट, पारितोषिक-वितरण आदि होनेके अतिरिक्त सभापति, ब्र. शीतलप्रसादजी, पं. दीपचंदजी और विद्यार्थीओंके अनेक व्याख्यान हुए थे और काशीमें एक सार्वजनिक पुस्तकालय क्लबकी ओर से खोलनेका निश्चय हुआ (जिसकी स्थापना चैत्र शुक्ल १३ को होनेवाली है।) और आगामी वर्षके लिये विद्यार्थीओंको उत्तेजनार्थ अनेक पारितोषिक देनेकी स्वीकारता प्रकट हुई थी।

आळंदमां अनुकरणीय अवसान-आळंदमां शेठ माणेकचंद मोतीचंदनी पुत्री सोनुव्हेन मात्र १७ वर्षनी वये केटलाक मास मांदगी भोगवी गत अश्विन मासमां परलोकवासी थई हती, जेना मरणनी जाणवालायक हकीकत ए बहार आवी छे के आ व्हेने धर्मज्ञान सारुं प्राप्त कर्युं हतुं, जेथी मृत्यु अगाउ पांच दीवसथी संसारने असार जाणी कुटुंब उपरनो ममत्व छोडी दई बार भावना, मृत्यु महोत्सव वगेरेनो पाठ ध्यानपूर्वक सांभळती हती, तेम पोता पाछळ रडवा कूटवानो रिवाज बंध करी बेसणामां दश दिवस सुधी शास्त्र वंचावी धर्मोपदेश करवा विषे अत्यंत आग्रहपूर्वक सूचना करी हती जे एना पिताए पाळी हती, तेम मृत्युना आठ दिवस अगाउ कर्मदहन, रविव्रत, सुगंधदशमी, सप्तरुषी उद्यापन वगेरे उद्यापनो धर्मध्यानपूर्वक कराव्यां हतां. वळी आ व्हेननी पाछळ तेमना ससरा शेठ गुलाबचंद रेवचंद गुंजोटीवाळाए रु. ५००) अने पिता शेठ माणेकचंदे रु. १००) काढेला छे, जेमांथी शास्त्रदान माटे जो सारी रकम आपवामां आवे, तो सोनुव्हेननो प्रथमनो अने अंत समयनो एवा बे चित्रो जे अमोने प्राप्त थया छे ते सहित एक धार्मिक पुस्तक भेट तरीके प्रकट करवानी अमारी आकांक्षा छे.

પાવાગઢનો મેળો-સિદ્ધક્ષેત્ર થી પાવાગઢમાં માહા સુદ ૧૩-૧૪ પર રાબેતા મુજબ મેળો ભરાયો હતો, જે પ્રસંગે એ તીર્થની મેનેજીંગ કમીટીની વાર્ષિક બેઠક થઇ હતી જેમાં ૯ મેમ્બરો હાજર હતા અને પ્રબંધને લગતા જુદા જુદા ઠરાવો થયા હતા, જેમાંના મુખ્ય નીચે મુજબ હતા-મુંબાઇના નામદાર ગવર્નર પાવાગઢ પધારે ત્યારે માન આપવા માટે રૂ. ૨૦૦) થી ૩૦૦) ની મંજુરી, દાનવીર શેઠ માણેકચંદજીની જગ્યાએ દાનવીર શેઠ હુકમચંદજીની મેમ્બર તરીકે નિમણુંક, ચાંપાનેરના ત્રણ મકાનો અને જમીનોને સુશોભિત કરવા સરકાર તરફથી ફરજ પાડવામાં આવેલી હોવાથી તે માટે ટીપ કરાવી ખર્ચ કરવો વગેરે.

अतिशय क्षेत्र श्री बीनाजीमां पौष मासमां भरायला वार्षिक मेळामां २०००नी संख्या एकठी थई हती अने बीना-बारहा जैनधर्मप्रचारिणी सभानी बीजी बेठक प्रण

दिवस सुधी थई अनेक व्याख्यानो थई ज्ञाति अने धर्मसुधाराना अनेक ठरावो थया हता

पांच नवीन ब्रह्मचारी:—कुंडलपुरमां स्थपायला उदासीन आश्रम तरफथी ब्र. पं. गणेशलालजी अने ब्र. गजाधरप्रसादजीना भ्रमणथी मार्गशीर्ष मासमां आशरे २५ गामोमां धर्मोपदेश अपायो हतो तथा रु. ३०००) उदासीनाश्रममां भराया हता तेमज पांच महाशयोए संसार, देह अने भोगनो त्याग करी ब्र. गोकलप्रसादजी द्वारा श्री नयनागीरीजीमां सुद १४ ने दिने ब्रह्मचर्य प्रतिमानी दिक्षा लीधी हती जेमनां नामो नीचे मुजब छे;—

१ कमलाप्रसादजी परवार (महेवा, वर्ष ३८), २ क्षमाधरजी (निवार, वर्ष ५५), ३ जिनेश्वरदासजी (बकस्याहा, वर्ष ३९), ४ बंशीधरजी (चौपरा, वर्ष २५), अने ५ सुखानंदजी (कोट वंडात वर्ष ५०) वळी आमांना चारे तो रु.२२३८) उदासीनाश्रमने भेट आपी दीधा छे.

शिखरजी केस चलावनाराानी फेरबदली:—श्री समेदशिखरजीना पहाडनो पटो करी आपवानो जे दावो श्रीमान शेठ परमेष्टीदासजी अने बाबू धन्नूलालजी सोलीसीटरना नामथी मांडवामां आवेलो छे,पण ए बन्ने शेठोनो वियोग थई जवाथी हवे भारत० दि.जैन तीर्थक्षेत्र क.तरफथी ए केस चलाववाने दानवीर शेठ हुकमचंदजी, रा. ब. शेठ कल्याणमलजी, लाला जंबूप्रसादजी सहारनपुर, साहू जुगमंदरदासजी नजीबाबाद, बाबू फंछेदीलालजी जबेलपुर, लाला प्रभुदयालजी मुंबाई, रा. बा. पं. शेठ मेवारामजी खुर्जा, बाबू छेदीलालजी कलकत्ता अने श्रीमान् शेठ हरसुखदासजी हजारीबाग आ ९ महाशयोने नीमवामां आव्या छे. आ महाभारत केसनो क्यारे निकाल आवशे ते कंइ कळी शकातुं नथी.

मदद मळी:—हस्तीनापुरना रुषभब्रह्मचर्याश्रमने डिसेंबर मासमां रु.६८२।≥ नी मदद मळी हती.

रायसाहब थया:—नवीन वर्षनी खुशीमां खंडवा निवासी शेठ चंपालालसा घोदरुसा ऑ. मेजीस्ट्रेटने रायसाहबनी पदवी मळी छे.

"शेठ माणेकचंद दि. जैन ग्रन्थमाला"नी स्थापना:—दानवीर शेठ माणेकचंदजी ना स्मरणार्थे जे स्मारकफंड मुंबाइमां खोलायलुं तेमां आशरे रु.४०००) भराया छे तेनी व्यवस्था करवाने एक मीटींग मुंबाईमां थई हती जेमां ए फंडमांथी "शेठ माणेकचंद दि. जैन ग्रन्थमाळा" ना नामथी संस्कृत-प्राकृत जैनग्रंथो प्रकट करवानो ठराव थयोछे अने तेना मंत्री पं. नाथूराम प्रेमीने नीमवामां आव्याछे जेमोए ए काम उपाडी लीधुं छे अने टूंक समयमां एमांथी एक बे संस्कृत ग्रंथो प्रकट करनार छे. वळी आ फंड ही. गु. जैन बोर्डींगनी ट्रस्ट कमीटीने स्वाधिन थयुंछे अने व्यवस्था माटे ११ मेम्बरोनी निमणुंक थईछे, जेमणे हवे खटपट करी आ फंडने वधारीने कंइ नहि तो दश हझार रुप्या सुधीनुं तो करवुंज जोइए.

जैन जीवन अथवा दैवी जीवन.

(ગયા અંકથી ચાલુ.)

આત્માને સમભાવમાં રાખવાનો મહાવરો પાડવા માટે ૪૮ મીનીટનું 'સામાયિક' કરવાના રીવાજવાળા

પોષધ.

મનુષ્યને હેમાં રસ પડવાથી એ રસ્તે આગળ વધવાની હેને ઇચ્છા થાય એ સ્વાભાવિક જ છે. એવા માટે 'પોષધ વ્રત' યોજવામાં આવ્યું છે; કારણ કે આત્મભાવને પોષનાર આ વ્રત છે. જે જડ પદાર્થો આત્માને મુંઝવી નાંખે છે તે જડ પદાર્થો જેવા કે આહારના પદાર્થો, ભોગના પદાર્થો, શુશ્રૂષાના પદાર્થો અને **પાપવ્યાપાર તથા વિભાવજન્ય વૃત્તિઓથી** દૂર રહેવાનો **નિશ્ચય** કરી એક અહોરાત્રિ આત્મચિન્તનમાં જ લાગ્યા રહેવું એનું નામ 'પોષધ' વ્રત છે. એ વ્રતમાં દાખલ થનારે એક નિર્દોષ જગા પસંદ કરીને હેમાં સ્વચ્છ અને માત્ર ઓઢવા-પાથરવામાં જરૂર જોઇએ તેટલાંજ વસ્ત્ર લઇ જવાં. ૨૪ કલાક સુધી કાંઇ ખાવું-પીવું નહિ. શરીરની શુશ્રૂષા+ કરવી નહિ, માત્ર એક સાદું કપડું પહેરી એક ઓઢવું, સ્ત્રી આદિનો ત્યાગ માત્ર શરીરથી જ નહિ, પણ મનથી પણ કરવો અને શરીરવડે જાણતાં-અજાણતાં કોઇ જીવને નુકશાન ન થઇ બેસે એવી 'યતના'-કાળજી રાખવી એટલે કે પોતાનું જડ શરીર આત્માથી જૂદોજ પદાર્થ છે એવો ખ્યાલ મગજમાં આવવા દેવા માટે પ્રાથમિક તૈયારીઓ તરીકે આ બધું કરવું અને ત્યાર પછી તે ૨૪ કલાકના વખતમાં જ્ઞાન-ધ્યાનમાં મશગુલ બનવું. **યતના અથવા પ્રમાદરહીતપણું (નિરંતર જાગૃતિ) તો આ વ્રતમાં મુખ્ય ભાગ ભજવે છે.** દરેક બોલ બોલતી વખતે, દરેક વિચાર કરતી વખતે, દરેક પગલું ભરતી વખતે, હાથ કે શરીરના કોઇપણ અંગને જરા પણ ગતિમાન કરતી વખતે, યત્ના- કાળજી રાખવાની છે, સાવધાનતા રાખવાની છે, જાગૃતાવસ્થાનો મહાવરો કરવાનો છે. 'હું'ને તદ્દન વિસારી દઇને સર્વ જીવને અભયદાન આપવાનું લક્ષમાં રાખવાનું છે, જડ શરીરને ભૂખ્યું રાખીને આત્માને વિવિધ ભાવનાઓ વડે **પોષવાનું** કામ કર્યા કરવાનું છે; આહારનો, વ્યાપારનો કે કોઇ પણ એવી જાતનો વિચાર મનમાં આવે કે તુરત હેની જગાએ જબરજસ્ત તપશ્ચર્યા કરનાર **મહાવીરનો**, સર્વાવ્યાપારહીત સિદ્ધનો અને એવા એવાઓનો વિચાર કરવો, કે જેથી મનનો ચીલો સહેલાઇથી બદલાઇ જશે.

આહાર, અંગસત્કાર, અબ્રહ્મસેવન અને પાપવ્યાપાર એ ચારનો ત્યાગ કરીને, આત્માને પોષવાને અથવા પ્રબળ કરવાને શક્તિમાન એવી ભાવનાઓમાં ૨૪ કલાક ગુજારવા એનું નામ 'પોષધ' વ્રત છે અને તે મુક્તિદાતા છે. જેઓ 'સાધુ' વ્રત અંગીકાર કરવાની ઉતાવળ કરેછે હેમને મ્હારી નમ્ર અરજ છે કે પ્રથમ અનર્થ-દંડ-વિરમણ વ્રત બરાબર શિખો અને અમલમાં મૂકો; પછી 'સામાયિક' ખરા રૂપમાં કરતાં શિખો; પછી ઉપર બતાવ્યા પ્રમાણે મહીનામાં ચાર પોષધ કરવાની ટેવ પાડો અને જો એવી રીતના પોષધમાં ત્હમારો આત્મા **આનંદ** અનુભવવા લાગે તો-એવી **સ્થિતિ પ્રાપ્ત થાય તોજ** પછી દીક્ષા લેવા તૈયાર થજો.

+ શુશ્રૂષા=Service, attendance, obedience, reverence, સેવા, ખીદમત, તાબેદારી, બહુમાન.

ત્યહાં સુધી આ પ્રયોગો ફરી ફરીને અજમાવજો અને પોષધ વ્રતથી આત્માને **સ્વાભાવિક રીતેજ** આનંદ ઉપજવા લાગે તે વાર પછીજ દીક્ષા લેજો. નહિ તો ભૂખ વગરનું ખાવું ઉલટો અપચો કરશે.

પ્રતિક્રમણ. 'પ્રતિક્રમણ સૂત્ર' એ એક 'લિષ્ટ' છે–'યાદી' છે–કેટલી જાતના દોષો થવા સંભવિત છે એ સૂચવનારૂં એક 'પત્રક' છે. માણસ તે દરેક દોષો રોજ કરતો નથી પરંતુ સઘળા દોષોનું 'લિષ્ટ' સાંજે યાદ કરી જવાથી ત્હેમાંનો જે કાંઇ દોષ પોતાથી તે દિવસે થઇ ગયો હોય તે દોષનું નામ બોલવામાં આવતાંજ તે ચમકે છે –તે પાઠ આગળ થોભે છે–મનમાં બળાપો કરે છે અને નિર્દોષ દેવ–ગુરૂને પોતાની સમક્ષ કલ્પી એ દોષ થઇ જવા માટે ક્ષમા માગી ફરી એ દોષ ન થવા પામે એની સાવધાની રાખવાનો **નિશ્ચય બાંધે છે.** પ્રતિક્રમણ કરતાં પહેલાં **સીમંધરસ્વામીની** આજ્ઞા મંગાય છે ત્હેનું કારણ કાંઇ એ નથી કે તે સ્વામી કોઇને રજા આપતા હશે અને કોઇને નહિ પણ આપતા હોય! એમ નહિ પરન્તુ પવિત્ર અને પ્રબળ એવા શ્રી **સીમંધર*** પરમેશ્વરને પોતાની સમક્ષ કલ્પવાથી, જે દોષો માટે તે પ્રતિક્રમણ દ્વારા પશ્ચાત્તાપ કરે છે તે દોષો ફરી ન કરવાની સંભાળ રાખવાના **નિશ્ચયમાં** ત્હેને પુષ્ટિ મળે છે.

કોર્ટમાં અપરાધની તપસીલનાં ફૉર્મ (ફારમ-પત્રક) છાપેલાં તૈયાર રખાય છે. કોઇ કારકુન તે ફૉર્મના આસન પુર્યા સિવાય અગર જેમતેમ પુરીને મૅજીસ્ટ્રેટ પાસે સહી કરાવવા જશે તો શું મૅજીસ્ટ્રેટ તે કબુલ રાખશે? શું તે ફૉર્મ પર તે સહી આપશે? કદી નહિ.

વિદ્યાર્થીઓની રોજણુકમાં જૂદાજૂદા વિષયો અને દોકડાની સંખ્યા બતાવનારાં આસન હોય છે. તે આસન પુર્યા સિવાય અગર ઇતિહાસના દોકડા ભૂગોળના ખાનામાં અને ભૂગોળના ઇતિહાસનાં ખાનામાં નોંધવાથી શું કોઇ વિદ્યાર્થીને નંબર ચઢાવવામાં આવશે કે? કદી નહિ.

પ્રતિક્રમણ સૂત્રમાં જૂદા જૂદા દોષોની યાદી આપેલી છે. તે એક 'રોજણુક' છે અથવા તો 'અપરાધની તપસીલનું ફૉર્મ' છે. તે ખાલી વાંચી જવાથી તે **પરમાત્માની** કોર્ટમાં–મહાપિતાની નિશાળમાં કદી 'પાસ' થઇ શકશે નહિ.

કોર્ટના કલાર્કો **ગુજરાતીમાં** ભરવાનું ફૉર્મ **યુરોપીઅન** કારકુન ભરી શકે નહિ, તેમ માગધીમાં લખેલા પ્રતિક્રમણના પાઠમાં નોંધાયલા દોષો તે ભાષાનું મુદ્દલ જાણપણું ન હોય એવા માણસથી સ્હમજી શકાય નહિ; અને પોતે જે પાઠ **બોલે** છે ત્હેમાં કયા કયા **દોષોની** યાદી આવે છે તે સ્હમજાય નહિ તો તેવી જાતના જે દોષો તે દિવસે પોતાથી થયા હોય તે દોષો તે **ખાલી** પત્રકમાં **નોંધી** શકાયજ કેવી રીતે? અર્થાત્ તે દોષો માટે પશ્ચાત્તાપ કરવાનું બની શકેજ નહિ.

પાપો યાદ કરવાથી શું સાર્થક થાય છે? એકાંતમાં—આત્મસાક્ષીએ પાપો યાદ કરવાથી તે પાપો માટે ખેદ ઉત્પન્ન થાય છે. એક તરફ પોતાની હમણાંની નિર્મળતા અને બીજી તરફ પાપ કર્મ કરાવનારા થોડા કલાક પહેલાંના પોતાના ભારે અધ્યવસાય એ બેની સરખામણી કરવાની સ્વાભાવિક ઇચ્છા ત્હેને થઇ આવે છે. એ બે વચ્ચે આવો આસમાન

*સીમાઓને ધારણ કરનાર તે 'સીમંધર;' One who holds all the boundaries. the Soul who is God.

જમીન જેટલો તફાવત શાથી-શા કારણથી -શા પદાર્થથી થયો તે વિચારવા તે લાગી પડે છે. પાપ કરવાની ઇચ્છા કેવી રીતે ઉત્પન્ન થઇ, તે પાપ કેવી રીતે કરવામાં આવ્યું, તે પાપ કૃત્યનું પરિણામ શું આવ્યું, પોતાને બાહ્ય લાભ કે ગેરલાભ કેટલો થયો, બીજાઓને પોતાના તે કૃત્યથી બાહ્ય લાભ કે ગેરલાભ કેટલો થયો, આ બધા વિચારો પર તે ઉતરી પડે છે; અને એ સમુદ્રમાં ડુબકી મારનારો માણસ જરૂર કાંઇ નહિ ને કાંઇ કિમતી ઝવેરાત જરૂર મેળવે છે.

પ્રતિક્રમણથી કાંઈ પણ લાભ હોય તો તે આવી રીતેજ છે; નહિ કે દોષોની યાદી બોલી જવાથી અગર આપણી વતી બીજો કોઇ બોલી જાય તેથી આપણાં પાપોની માફી મળી જતી હોય! માફી આપવાની સત્તા પરમેશ્વરને નથી. જેમ તે શિક્ષા કરતો નથી તેમજ માફી પણ કરતો નથી. તે કોઇના કામમાં વચ્ચે આવતોજ નથી. માત્ર 'દીવો' છે-'પ્રકાશ' છે. આપણે ચોરી કરીએ તેથી ત્હેના ઘરમાં નુકશાન થતું નથી કે જેથી માફી માંગવાથી તે દયા ખાય. તે તો ઠગનાર અને ઠગાનાર સર્વને માથે 'પ્રકાશ છે;'—પ્રકાશ રૂપ હોઇ, જેઓને આંખો હોય છે તેઓ તે પ્રકાશને પોતામાં ઉતરવા દે છે અને તે પ્રકાશવડે સત્યાસત્ય જોઇ શકે છે. સિવાય પ્રભુ બીજું કાંઇ કરતોજ નથી. દેવતામાં હાથ નાખનારે દાઝવુંજ જોઇએ; દેવતાની માફી માગવાથી દાઝેલી જગાએ આરામ નહિજ થાય!

પ્રતિક્રમણ શાસ્ત્રમાં આપણી સમક્ષ દોષોની યાદી રજુ કરવામાં આવી છે તે યાદી પરથી આપણાં પાપો યાદ કરવાનું સહેલાઇથી બની આવે છે; અને તે પાપો કેવી જાતનાં છે તે વિચારવાની તક મળે છે. પાપની જાત જાણ્યા પછી ત્હેની દવા કરવી સુગમ થઇ પડે છે. (૧) પશ્ચાત્તાપ વડે હૃદયશુદ્ધિ અને (૨) કોઇ પણ જાતના તપ વડે હૃદયશુદ્ધિ; એમ બે રીતે પાપમાંથી મુક્ત થવાનો પ્રયાસ તેજ વખતે થઇ શકે છે. પ્રતિક્રમણ પછી કોઇ નહિ ને કોઇ જાતનું પ્રત્યાખ્યાન જરૂર લેવુંજ પડે છે એનું કારણ આ છે.

આ ઉપરથી સ્હમજાશે કે, પ્રતિક્રમણ કરવાનું છે તે **વિચારપૂર્વક** કરવાનું છે. અને **વિચારપૂર્વક** કરવા માટે એ પણ જરૂરનું છે કે તે એકાંતમાં, પોતાની જાતે અને એકાગ્રતાપૂર્વક કરવું. બીજા લપલપ બોલી જાય અને આપણે સાંભળીએ તેથી આત્મિક શુદ્ધિનો સંભવ મ્હને તો ઓછો લાગે છે. અને પોતે કરવું તે પણ અર્થ સ્હમજીને-દરેક બોલ અંતરમાં ઉતારી ઉતારીનેજ કરવાનું છે. ટુંકમાં કહીએ તો **આત્માને નિર્મળ કરવા માટે કરાતું પ્રતિક્રમણ આત્મભાવેજ થવું જોઇએ.**

આટા સામયા પછી જ્ઞાન, દર્શન, ચરિત્ર અને તપ એ ચાર સંબંધી થયેલા અક્ષાર्-चिंतणठाए અર્થાત્ અતિચાર (દોષ) **ચિંતવવાને** करोमि काउस्सग्गं કાયોત્સર્ગ કરવામાં આવે છે. અહીં શબ્દ 'ચિંતવના' છે. દોષો ચિંતવવાને-દોષો યાદ કરી કરીને ત્હેના પર વિચાર કે મનન કરવાને માટે काउस्सग्ग કરાય છે. મન-વચન-કાયાના બધા યોગને રોકીને અર્થાત્ -નિષ્ક્રિય બનીને **આપણી સઘળી શક્તિઓ એકાગ્ર કરી** તે એકાગ્ર થયેલી શક્તિઓ વડે ૯૯ અતિચારનો काउस्सग्गं કરી—ને એકાગ્ર શક્તિઓ વડે ૯૯ જાતના અપરાધમાંનાં થયેલા અપરાધ યાદ કરી કરી, તે અપરાધો કેવા છે, ક્યાંથી આવ્યા, કેવી રીતે થયા, શું ફળદાયક થયા વગેરે ચિન્તવન કરવાનું છે.

બારે વ્રત સંબંધી દોષ પ્રતિક્રમણમાં વિસ્તારથી બોલવાનું કારણ એ છે કે, હવે પછી આવા અપરાધ ન થઇ જાય તેવી કાળજી રાખી શકાય.

વંદના વડે સર્વ શકિતવાનની શકિતનો અંશ આપણામાં આવી શકેછે. 'ખમાસણા' વડે પ્રાણી માત્રને ચ્હાવાનું શિખાય છે—સાર્વત્રિક ભ્રાતૃભાવની લાગણી આપણામાં ખીલતી જાય છે. અને જેમ જેમ તે સાર્વભૌમ પ્રેમનો વિસ્તાર વધે છે તેમ તેમ પ્રેમમૂર્તિ પ્રભુની વધારે ને વધારે નજદીકમાં આપણે આવતા જોઇએ છીએ.

ધર્મધ્યાનના કાયોત્સર્ગમાં વળી અવર્ણનીય સૌંદર્ય છે. એ ધ્યાન (Meditation)કરવાથી આત્મામાં પવિત્રતા, બલ, સ્વાત્મસંશ્રય. આત્મતુષ્ટિ (Self-satisfaction) આવે છે.

પ્રતિક્રમણમાં ત્રણે કાળ માટે કાંઇ નહિ ને કાંઇ પ્રવૃત્તિ કરાય છે. ભૂતકાળના દોષોનું નિવારણ, વર્ત્તમાન માટે અર્હંતાદિની સ્તવના અને ભવિષ્ય માટે વર્ત્તનના નિયમોનો અંગીકારઃ આ ત્રણ કાર્યો બનવાં જોઇએ.

ભૂતકાળના દોષોનું સ્મરણ પોતે જ ભવિષ્ય માટેના વર્તન સંબંધી કરવા યોગ્ય ઉપાયો સૂચવે છે. વર્તન સુધારવા માટે કઇ પદ્ધતિ સૌથી વધારે કામ લાગે તેમ છે એ બાબતમાં ઘણી સૂચનાઓ કરવા જેવી છે. પરન્તુ સ્થળ સંકોચને લીધે તે કામ બીજા કોઇ પ્રસંગ માટે મુલતવી રાખીશ.

ૡ ૡ ૡ ૡ

'પ્રાર્થના' ફીલસુફી : *એક કલ્પના

દરેક ધર્મના પવિત્ર ગ્રંથોમાં પ્રાર્થનાને ઘણું અગત્ય આપવામાં આવ્યું જોવાય છે. વેદાનુયાયી સ્હવારમાં વહેલા ઉઠી સ્નાન કરી પ્રાર્થનામાં એસી જવાનો વેદનો હુકમ પ્રથમ દરજ્જે માને છે. ક્રિશ્ચીઅનો, મુસલમાનો, પારસીઓમાં પણ પ્રેયર (Prayer) અને બંદગી માટે બહુ માન છે. વિશ્વરચના અને વિશ્વ વ્યવસ્થાથી પરમેશ્વરને દૂર રાખનાર ખુદ જૈનો પણ કહે છે કે, 'નમસ્કાર મંત્ર'. એક વાર બરાબર ભણાય તો ઇપ્સિતાર્થ સિદ્ધ થાય.

જો કે ઉપર કહેલા દરેક મનુષ્યની પ્રાર્થનાનું 'પાત્ર' એક નથી હોતું તો પણ તે દરેક પાત્ર એક સરખું ફળ આપતું માનવામાં આવે છે; એ ઉપરથી સહજ જણાઇ આવે છે કે, પ્રાર્થનાનું 'પાત્ર' અગર જેની પ્રાર્થના કરવામાં આવે છે તે કાંઇ ચીજ આપતું નથી (અને પરમેશ્વર એવો ખુશામતીઓ ન હોય શકે એ તો આપણે સારી રીતે જાણીએ છીએ) પણ જે સિદ્ધાંત—જે તત્વ પ્રાર્થનામાં ગુપ્ત રહેલું છે તે તત્વજ અમુક ફળ આપે છે. એ કેમ બને છે તે સ્હમજવા માટે આપણે થોડું વિષયાન્તર કરવું પડશે.

'હિપ્નોટીઝમ' નામની એક વિદ્યા આજકાલ જગજાહેર છે, એ વિદ્યાનો પાયો 'શ્રદ્ધા' છે. અમુક માણસ મ્હને ધારે તે કરી શકશે જ એવી શ્રદ્ધા એક માણસે રાખવી પડે છે અને ત્યાર પછી મનની એકાગ્ર શકિત, વચનની દ્દઢતા અને આંખોની સ્થીરતા વડે હિપ્નોટીસ્ટ સામા માણસને પોતાના કાબુમાં લઇને ત્હેની પાસે ઇચ્છા મુજબ કામો કરાવે છે. આમાં કાંઇ મંત્ર નથી, જંત્ર નથી જાદુ નથી, કે કોઈ પરમેશ્વરની ડખલ નથી; એ Psychology એટલે માનસશાસ્ત્રના સિદ્ધાન્તાનુસાર અને કુદરતના કાયદા મુજબ જ બનતો બનાવ છે.

હવે જેમ એક માણસ બીજા માણસને હિપ્નોટાઇઝ કરી શકે તેમજ તે માણસ પોતાને પણ હિપ્નોટાઇઝ કરી શકે. આ ક્રિયાને Self-hypnotism (સેલ્ફ હિપ્નો-

*આ કલ્પના ઉચ્ચ કોટિના વિચારો માટે લખાઇછે. નિશ્ચય નય, સામાન્ય માણસોને હમેશાં અચંબા લાગે, તથાપિ વાંચનાર વર્ગમાં બધા કાંઇ સામાન્ય માણસો હોતા નથી

ટીઝમ) કહે છે. કોઇ ચોકસ દેવને પોતાની સમક્ષ કલ્પીને ત્હેનું નામ એકાગ્ર ચિન્તે રટયા કરવું, ત્હેના ગુણગ્રામ કર્યા કરવા, તે સર્વ શક્તિમાન છે—ત્હેને કાંઇ અસંભવ નથી એવી દૃઢ ભાવના ભાવવી એથી ઇચ્છત કાર્ય સાધી શકાય છે. તેવીજ રીતે "હું સર્વ શક્તિમાન આત્મા છું—કોઇ ચીજ મ્હને અસાધ્ય નથી—હું પ્રકાશ છું—દુઃખો અને તંગીઓનો અંધકાર દૂરથી જોઇને હું તે પર હસી શકું છું "એવા દૃઢસંકલ્પમાં* જોડાવાથી પણ ઉપર મુજબ જ પરિણામ આવેછે. ક્રિશ્ચયન સાયન્સ નામની નવી વિદ્યા આ પદ્ધતિથી તમામ દરદો મટાડવાનું અને સદ્‌ગુણો ખીલવવાનું કામ બજાવે છે, જેની ખાત્રી સેંકડો સાચા બનેલા બનાવો પરથી થઇ શકે છે.

આપણી પ્રાર્થના પરમેશ્વર કે તીર્થંકર કે પેગમ્બર સાંભળે છે અને આપણા પર કૃપાદૃષ્ટિ કરે છે, એવી માન્યતા એક શ્રદ્ધા માત્ર છે—ખરેખર તો કૃપાળુ, સર્વ શક્તિમાન અને સર્વજ્ઞ પરમેશ્વર આપણા બોલ્યા સિવાય પણ આપણી તંગીઓ જાણી શકે છે અને કાલાવાલા કે પ્રાર્થનાની રાહ જોયા સિવાય તેણે મદદ કરવી જોઇએ. કોઇ કુકર્મ કર્યા પછી આપણે પશ્ચાતાપ કરીએ અને પરમેશ્વરને ક્ષમાપના માટે અરજ કરીએ તેથી તે ક્ષમા બક્ષે, તો તેવા પરમેશ્વરથી વધારે સ્વચ્છંદી અને અન્યાયી બીજો કોણ હોઇ શકે ? પરમેશ્વર જેમ દંડ કરતો નથી, તેમ ક્ષમા પણ કરતો નથી. જે દંડ કરવાનું કામ કરે તે કદાપિ ક્ષમા કરી શકે ખરો? તેમ છતાં જૂદા જૂદા તમામ ધર્મોમાં પરમેશ્વર સમક્ષ પશ્ચાતાપ કરવાનું અને ત્હેની કૃપા કે સહાય યાચવાનું ફરમાવેલ છે, તો એવી સર્વ સમ્મત માન્યતામાં કાંઇક તો રહસ્ય હોવુંજ જોઇએ ત્હેનો આશય એ જણાય છે કે, સામાન્ય અક્કલનો માણસ ગંભીર તત્વજ્ઞાન ન સમજી શકે, પણ પરમેશ્વર પાસે માફી માગવા જેવી સાદી વાત તો સમજી શકે એવા વિચારથી પશ્ચાતાપ અને પ્રાર્થનાની ક્રિયાઓ દાખલ કરી પરન્તુ એ બન્નેનાં અસલ તત્ત્વ 'એકાગ્રતા' અને 'સેલ્ફ-હિપ્નોટીઝમ' નું છે. કરેલાં કુકર્મ યાદ કરી, ત્હેને નિંદી, **હવેથી** તે ન કરવાનો **નિશ્ચય** કરવો એ પાપ ધોવામાં મદદગાર છે. એમાં પરમેશ્વરનું નામ ન લેવાય તો પણ પાપ ધોવાયજ. પરમેશ્વરનું નામ પશ્ચાતાપમાં જોડવાથી કાંઇ તાકીદે ક્ષમા મળી જતી નથી.

પ્રાર્થનાનું પણ તેમજ છે. જો ત્હમે પરમેશ્વરના નામ વગર પણ ચિત્તને એકાગ્ર બનાવી શકતા હો, અને એકાગ્ર બનેલા ચિત્ત-વડે વિવિધ ભાવનાઓ ભાવી શકતા હો, તો તેથી એક વર્ષમાં ત્હમારી જે આત્મિક ઉત્ક્રાન્તિ થાય એ કરતાં પરમેશ્વરનું **નામ આખી જીંદગી પર્યંત** રટવાથી કાંઇ વધુ ઉત્ક્રાન્તિ નહિજ થાય. આ બધી ક્રિયાઓ સામાન્ય મનુષ્યો કે જેમનાં પૂર્વ કર્મો ત્હેમને જ્ઞાનમાં ઉંડા ઉતરવા દેતાં નથી ત્હેમને માટે—ત્હેમને રસ્તે ચ્હડાવવા માટે છે. બાકી સમજી શકે ત્હેમને માટે તો પરમેશ્વરનું **નામ** નહિ પણ **પરમૈશ્વર્ય** અર્થાત્ પરમેશ્વરપણાના ગુણોની **ભાવના** એકાગ્ર મનથી ભાવવી વધારે હિતકર છે. એ ગુણોની ભાવના ભાવવાથી અનુક્રમે એવી શક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે, કે જે વડે માણસ અસાધ્યને પણ સાધ્ય કરી શકે.

હું તીર્થંકરો, પેગંબરો, અવધૂતો અને યોગીઓને વરેલી સિદ્ધિઓમાં શ્રદ્ધા ધરાવું છું. મનને તદ્દન નિર્વિકારી—નિઃસ્વાર્થી બનાવી,

* "Any type of thought, if entertained for a sufficient length of time, will, by and by, reach the motor tracts of the brain, and finally burst forth into action."

Ralf Waldo Trine.

ચિત્તની એકાગ્રતા પ્રાપ્ત કરી જગકલ્યાણમાં જેઓ દત્તચિત્ત બને ત્હેમને એ સિદ્ધિઓ કુદરતી રીતેજ પ્રાપ્ત થાય છે. કોઈને ઓછા પ્રમાણમાં અને કોઈને વધારે પ્રમાણમાં; જેવી જ્હેની યોગ્યતા. પરન્તુ આ સર્વનો આધાર તત્વમાં ઉંડા ઉતરવા ઉપર છે. સામાન્ય લોકો માટે જે કાંઇ સંતોએ સૂચવ્યું છે ત્હેમાંજ મનિ મુંઝવી ન રાખતાં તત્ત્વનો ખપ કરે અને ઉંડા ઉતરે તેઓજ નિત્ય નવા ચમત્કારો અનુભવવા શક્તિમાન બને.

'પ્રાર્થના' માં નમસ્કારનો પણ સમાવેશ થઇ જાય છે નમસ્કારની ક્રિયાને જૈન શાસ્ત્રમાં 'પુણ્ય'માં ગણેલ છે–ધર્મમાં નહિ. અન્ન–જલ–વસ્ત્રાદિ દાનથી થતાં પુણ્યો જેવું આ એક 'પુણ્ય' માનેલું છે, 'ધર્મ' નહિ. આ ઉપરથી પણ જણાઇ આવશે કે જૈન પ્રીસ્તુરી પ્રાર્થનાને આપણે બધા માનીએ છીએ તેટલું મહત્વ આપતી નથી. આજે તો લોકો એમજ સ્હમજે છે કે બીજું કાંઇ પરોપકારનું કામ ન થાય અગર આત્મજ્ઞાનપ્રાપ્તિનો પ્રયાસ ન થાય તોપણ જો ભગવાનનું નામ રટીશું તો આપણો બેડો પાર થશે! આ ભૂલભરી માન્યતા દૂર કરવા માટેજ આટલું વિવેચન કરવું પડયું છે. આપણો બેડો પાર તો ત્હેહારેજ થવાનો કે જ્હારે જ્ઞાન–ગુપ્તજ્ઞાન–આત્મજ્ઞાનમાં આપણે સમ્પૂર્ણ થઇશું. આજે ને આજે તે જ્ઞાનમાં સમ્પૂર્ણ ન થઇએ એ વાત ખરી છે, પણ દરેક ચીજ દરેક ક્રિયા દરેક કામકાજ કરતાં—દરેક અનુષ્ઠાન કરતાં રહસ્યજ્ઞાન (Mysticism) તરફ વધારે લક્ષ આપવાની જરૂર જો આપણે આજેજ સમજીશું તો એવો વખત જરૂર આવશે જ કે જ્યારે આપણે સમ્પૂર્ણ જ્ઞાની (પરમેશ્વર) બનીશું. આજે આપણે જે વસ્તુને છેક છેલ્લા પાયરીએ મૂકીએ છીએ અગર જે વસ્તુ બદલે બીજી વસ્તુથી ચલાવી લેવાનું ધારીએ છીએ તે વસ્તુ જ (અને તે એકલીજ) આપણો બેડો પાર કરનારી છે. બાકી બીજી કોઇ ચીજ–કોઇ ક્રિયા—કોઇ અનુષ્ઠાન આપણો પૂરો ઉદ્ધાર–છેવટનો ઉદ્ધાર કરવા સમર્થ નથી શાસ્ત્રકારોએ બાળ જીવોની દયા ખાઇને 'વ્રતો' યોજી આપ્યાં; પણ તે પણ 'જ્ઞાન' વગર નકામાં થઈ પડતાં શું આપણે પ્રત્યક્ષ નથી જોતા? 'અનર્થ–દંડ–વિરમણ વ્રત' જેઓ નથી સ્હમજતા ત્હેમનો અવતારજ ફોગટ છે; જૈન કે જૈનેતર કોઇ પણ મનુષ્ય જે અનર્થ દંડથી વિરક્ત નથી થતો તે મોક્ષની સડકથી હજારો ગાઉ દૂર છે. પાંચમું વ્રત ન સ્હમજે કે ન પાળે તે 'માણસ'જ ગણાય નહિ; કારણ કે જે માણસ જરૂર કરતાં વધારે પ્રમાણમાં જડ પદાર્થનો સંગ્રહ કરે તે માણસ **જડને અનિત્ય સ્હમજી શકયોજ નથી** અને આ અવતાર આત્માને જડથી–વિભાવથી મુક્ત કરી સ્વભાવમાં પાછો લાવવાના સાધન તરીકેજ પ્રાપ્ત થયો છે એ સત્યને તે હજી સ્હમજી શકયોજ નથી, એમ સાબીત થાય છે આવાં આવાં સુંદર વ્રતો શાસ્ત્રકારોએ બાંધી આપવા છતાં આજે ૧૦૦૦ માં ૧ માણસ પણ તે વ્રતનું 'જ્ઞાન'—તે વ્રતનું 'રહસ્ય' જાણવાની દરકાર કરતો નથી. વ્રત ધારણ કરનારાઓ પણ પ્રાયઃ તે જ્ઞાન થી વિમુખ હોય છે હવે ત્હેમનું 'મોક્ષ' (મુક્તપણું) કેવી રીતે સંભવે?

જેમ આપણે આ જડ શરીરમાં મોહી ન રહેતાં ત્હેમાંના આત્માને ઢુંઢવાનો છે, તેમ શાસ્ત્રોક્ત ક્રિયાઓ (વ્રતો, વાચન, પ્રાર્થના ઇત્યાદિ) માં પણ ત્હેના બાહ્ય શરીરમાં મુંઝાઇ ન રહેતાં ત્હેમાંના આત્માને–ત્હેમાંના રહસ્ય જ્ઞાનને ઢુંઢવાનું છે–ભજવાનું છે અને ત્હેનોજ ખપ કરવાનો છે.

ઌ ઌ ઌ ઌ

અને હવે, પ્રિય વાચક, છેલ્લી સલામ! જૈન જીવન સંબંધી

છેવટ

છુટી છવાઇ જે કાંઇ સૂચનાઓ આ લેખમાં કરવામાં આવી છે તે ઉપર નિષ્પક્ષપાતપણે વિચાર કરતાં ત્હને પોતાને જે સ્વીકારવા

યોગ્ય લાગે તે સ્વીકારી તે વડે આત્મિક જીવન-પવિત્રજીવન-દૈવી જીવન નિર્વહવા બનતી કોશીશ કરવામાંજ શ્રેય છે. મ્હારી શક્તિ કદાચ અપૂર્ણ જણાય, વિચારોને આકારમાં મૂકવાની મ્હારી દલીલો કદાચ અપૂર્ણ જણાય મ્હારા કથનમાં કદાચ અતિશયોક્તિ કે ન્યૂનોક્તિ માલમ પડે, તથાપિ આટલું તો ચોક્કસ માનજો કે વિજયવંતા જૈન ધર્મે અને અસાધારણ કેપ્ટન મહાવીરે દરેક પ્રાણીને 'સ્વરાજ્ય' બક્ષ્યું છે, દરેક આત્માને પરમેશ્વર માન્યો છે અને જો કોઇ જીવ ગુલામી ભોગવતો હોય તો તે આ ધર્મને કે આ ધર્મનાયકને લીધે નહિ પણ પોતાને ગુલામીમાંજ મજાહ લાગે છે ત્હેને લીધે તથા ગુલામ જેવા 'કાનટુંકા'ઓને લીધેજ ! આ ધર્મ સ્વતંત્રતાની પરિસીમા છે અહીં દંભ, ખુશામત, વહેમ, કાયરતા, અધંદશ્વતા એ કશાને કોઇ મળે તેમ નથી. રાજ્ય ગૃહસંસાર, કલા, વિજ્ઞાન, સૂક્ષ્મ પ્રદેશો અને મોક્ષનગરી: એ સર્વ ક્ષેત્રોમાં આ ધર્મ છુટથી મહાલે છે, ભળે છે અને એમને પોતાની હાજરીથી વધારે દીવ્ય-વધારે વિસ્તૃત બનાવે છે. એને અનંત આંખો છે, અનંત દષ્ટિઓ છે, અને તેથી ત્હેની દષ્ટિમર્યાદા અમર્યાદિત છે. મર્યાદા, બંધન, ગુલામી એ સર્વ શબ્દોની હયાતી એની દષ્ટિ આગળ અલોપ થાય છે. સાયન્સ અથવા પદાર્થવિજ્ઞાન એની પ્રતિષ્ટાને ખંડિત કરી શકતું નથી પણ ઉલટી વધારે છે, બુદ્ધિવાદ એની કસોટી કરવા છતાં ઓછી કિંમત આંકી શકતો નથી, બલ્કે કિંમત આંકતાં પોતેજ અંકાઇ જાય છે, ભક્તિ એનાથી દૂર રહી શકતી નથી, આખું વિશ્વ એના પેટના એક ખૂણામાં સમાઇ જાય છે અને તે અનેક વિશ્વોને ઉત્પન્ન કરી શકે છે. આવો છે આપણો જયવન્તો ધર્મ! એ ધર્મના તેજમાં સર્વ આત્માઓ તપો એજ ભાવના સાથે વિરમે છે આ—

નાગદેવી સ્ટ્રીટ મુંબાઈ } તે તેજનો પ્રેમી અને ત્હમારો આત્મબંધુ
મણીલાલ મોતીલાલ શાહ.

पं० चिंतामणदासजी उपदेशकका भ्रमणनो रिपोर्ट.

(તા૦ ૧૪ નવેંબરથી ૧૯ જાનેવારી સુધીનો.)



નાતેપુતા—ઘર સંખ્યા ૨૫ જન સં. ૧૫૦, મંદિર ૧ છે. બે શાસ્ત્રસભા અને જાહેર સભા કરી 'સ્વાધ્યાય' તથા 'સદાચાર' ઉપર વિવેચન કર્યું. અત્રે ચાર વર્ષ થયાં પાઠશાળા છે પણ તેનો ઘણોજ ઓછો લાભ લેવાય છે, માટે એ ગામના ભાઇઓએ પાઠશાળાને ઉન્નતિપર લાવવી જોઇએ. ૮ ભાઇઓ દ્વારા રૂ. ળા ઉપદેશક ફંડમાં ભરાયા.

બારામતી—ઘર સં. ૭૯, જન સં. ૯૫, મં. ૧ છે. એક સભા કરી સ્વાધ્યાય ઉપર વિવેચન કરવાથી ૧૦ જણે નિત્ય સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. અત્રે પાઠશાળા છે પણ નામનીજ છે, માટે દેખરેખ રાખવાની જરૂર છે. અત્રે ઘેરઘેર ચૈત્યાલય રાખે છે તેથી પંચાયતી મંદિરમાં બહુજ થોડા ભાઇઓ દર્શન કરવા આવે છે.

પુના—ઘર સં. ૫૦ છે. પ્લેગ હોવાથી બધા ભાઇઓનો મેલાપ થયો નહી. ચોપડેની ગાયન પાઠશાળા જોઇ તો ત્યાં બાહુબળી શર્મા સિવાય ચોપડે પણ નહોતા. વિદ્યાર્થીઓના રજીસ્ટરનું પણ ઠેકાણું નહોતું. વધુ પૂછતાં કહ્યું કે ચોપડેજી આવેથી પ્રાંતિક સભાને આ પાઠશાળાનો રિપોર્ટ મોકલીશું. અત્રે શેઠ ભગવાનદાસ શોભારામ ધર્મપ્રેમી છે, તેમના દ્વારા જો, આ પાઠશાળાનો હીસાબ વગેરે જૈનમિત્ર દ્વારા પ્રકટ કરાય તો કેવું સારું ? તેમ ભવિષ્ય માટે પ્રબંધક કમીટી નીમવાની પણ જરૂર છે.

લોનંદ—ઘર સં. ૫ જન સં. ૧૫ મં. ૧ છે. શાસ્ત્રસભા કરી બે જણે

સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. રૂ ૩) સિદ્ધાંત પાઠશાળા મોરેના માટે ભરાયા.

તડગાંવ—ઘર સં. ૧૨ જન સં. ૧૦૦, મંદિર ૧ છે. એક સભા કરી 'અભક્ષ્યત્યાગ' અને સ્વાધ્યાયપર વિવેચન કર્યું જેથી ૬ જણે સ્વાધ્યાય, અને રાત્રિભોજનત્યાગ કરવાનું કબૂલ્યું. રૂ. ૨) ઉપદેશક ફંડમાં ભરાયા.

ફુલટણ—ઘર સં. ૯૫ જન સં. ૩૦૦, મંદિર ૬ છે. બે શાસ્ત્રસભા અને વ્યાખ્યાન સભા કરી ગ્રહસ્થના ષટ્ નિત્ય કર્મ અને સમ્યગ્ દર્શનપર વિવેચન કર્યું. સ્વાધ્યાયી ભાઇ ૩૦ છે પણ મંદિરમાં બેસીને કોઇ સ્વાધ્યાય કરતું નથી. એ પ્રથા જ્ઞાનોત્તેજક અને પ્રભાવના-જનક નથી જેથી મંદિરજીમાંજ સ્વાધ્યાયી કરવાની ટેવ રાખવી જોઇએ. પ્રથમ પાઠશાળા હતી પણ તે થોડાજ સમયમાં બંધ પડી હતી. ફલટણ જૈનોનું કેન્દ્ર કહેવાય છે, પણ ૯૫ ઘર હોવા છતાં પાઠશાળાનો પ્રબંધ નથી, માટે તે થવાની જરૂર છે. રૂ ૬) ઉપદેશક ફંડમાં આવ્યા.

માંડવા—ઘર સં. ૫, જન સં. ૨૦, ચૈ. ૧ છે બે શાસ્ત્રસભા કરી જેમાં અજૈનો પણ લાભ લેતા હતા. એકે શાસ્ત્ર વાંચવાના અને ચારે શાસ્ત્ર સાંભળવાના નિયમ લીધા. રૂ. ૧) ઉપદેશક ફંડમાં ભરાયો.

આકલૂજ—ઘર સં. ૨૫. જન સં. ૨૦૦, મંદિર બે છે. એક શાસ્ત્રસભા અને ૧ વ્યાખ્યાનસભા કરી જિનપૂજન અને સ્વાધ્યાયપર વિવેચન કર્યું જેથી ચાર જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો.

પંઢરપુર—ઘર સં. ૭૬. જન સં. ૩૬૦ મં. ૧ છે. એક સભા કરી સદાચાર અને સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કરવાથી ૧૦ જણે સ્વાધ્યાયનો અને એકે નિત્યજિનપૂજનનો નિયમ લીધો. પ્રથમ પાઠશાળા હતી પણ ફંડના અભાવે તૂટી ગયેલી જેથી હવે અગ્રેસરોએ ખટપટ કરી પાઠશાળા ચાલુ કરવી જોઇએ. આ વ્યાપારપ્રસિદ્ધ શહેરમાં જૈન કોમમાં પ્રસિદ્ધ શેઠ નાથા રંગજીવાળાની સંમતિ લઇને પાઠશાળા શરૂ કરી સેતવાલ જેવી પડતી હાલતની જૈન જાતિનો ઉદ્ધાર કરવો જોઇએ.

આષ્ટી—ઘર સં. ૧૦ જન સં. ૫૦ મં. ૧ છે. એક સભા કરી સ્વાધ્યાયપર વિવેચન કર્યું. ૧૦ ભાઇને સ્વાધ્યાયનો નિયમ છે. જેમાં ચારે મંદિરમાં બેસી સ્વાધ્યાય કરવાનું સ્વીકાર્યું. શેઠ તલકચંદ મોતીચંદજીના પ્રયાસથી બાળકોને ધર્મશિક્ષણનો પ્રયત્ન ચાલુ છે. રૂા. ૨) ઉપદેશક ફંડમાં અને રૂા.૬) મોરેના પાઠશાળામાં ભરાયા.

મોડલિંબ—ઘર સં. ૯, જન સં.૫૩, મં.૧છે. એકેક શાસ્ત્ર સભા અને વ્યાખ્યાનસભા કરી અભક્ષ ત્યાગ અને સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કર્યું. એકે રાત્રિભોજનત્યાગ અને ત્રણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. ભાઇ હરીદાસ ધર્મોત્સાહી છે. ૫) મોરેના પાઠશાળામાં ભરાયા.

આરણ—ઘર સં. ૫. જન સં. ૨૫ ચૈ. ૩ છે. એક સભા કરી જેથી પાંચે સ્વાધ્યાયનો અને એકે રાત્રિભોજનત્યાગનો નિયમ લીધો. રૂા. ૪) મોરેના પાઠશાળામાં ભરાયા.

કરકમ—ઘર સં. ૨૮, જન સં ૧૩૦ મં. ૨ છે. એક સભા કરી રાત્રિભોજન ત્યાગ અને સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કર્યું જેથી બે-એ રાત્રિ ભોજન ત્યાગ. એક જણે સ્વાધ્યાય અને ૭જણે શાસ્ત્રશ્રવણનો નિયમ લીધો. રૂ. ૨) મોરેના પાઠશાળામાં ભરાયા.

લઉલ—ઘર સં. ૧૨. મં. ૧ છે. સભા કરી પણ ૪ અંગો સિવાય કોઇ આવ્યું નહિ. સદાચારપર ઉપદેશ કર્યો. અત્રે કુરિતિ અને મિથ્યાત્વનો પ્રચાર છે, મિથ્યાત્વીના બ્હેકાવવાથી લોકો જિનમંદિરમાં દર્શન કરવા જતાં પણ શર્માય છે !

મોહોલ—ઘર સં. ૨૭ જન સં. ૯૦ છે. એક સભા કરી 'શ્રાવકની ક્રિયા' પર વિવેચન કર્યું, જેથી પાંચે રાત્રિભોજનત્યાગનો નિયમ લીધો તેમ શેઠ મોતીરામે માંસભક્ષી મરાઠાના હાથનું પાણી પીવાનો ત્યાગ કર્યો. ૨૫ ભાઇઓ સ્વાધ્યાય કરે છે. રૂ. ૩) આપી શા૦ ફુલચંદ મલુકચંદ પ્રાં. સભાના મેમ્બર થયા.

માઢા—ઘર સં. ૪૦, જન સં. ૧૦૦, મંદિર ૩ છે. એક સભા કરી, જેથી એકે રાત્રિભોજનત્યાગ અને એકે માંસભક્ષીના હાથનું પાણી પીવાનો ત્યાગ કર્યો. ૫ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ પુનઃ દૃઢ કર્યો.

કુર્દુવાડી—ઘર સં. ૮. જન સં. ૪૦, ચૈ. ૨ છે. એક સભા કરી અભક્ષ્યત્યાગ અને ષટ્કર્મગ્રહણ પર વિવેચન કર્યું જેથી ૧૦ જણે સ્વાધ્યાયનો અને ૬ જણે મર્યાદાથી રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કર્યો, ત્રણ ભાઇઓ ત્રણ ત્રણ રૂપીઆ આપી સભાના મેમ્બર થયા તેમજ 'દિગંબર જૈન' ના ૨ ગ્રાહક થયા. રૂ૧) ઉપદેશક ફંડ અને રૂ.૧) મોરેના પાઠશાળા માટે આવ્યો.

પરંડા—ઘર સં. ૮, જન સં. ૩૫, મં. ૧ છે. શેઠ કસ્તુરચંદજીના પ્રમુખપણા નીચે સભા કરી, જેમાં શહેરના સારા સારા ગ્રહસ્થોએ પણ લાભ લીધો હતો ? પાંચ પાપનો ત્યાગજ સાચો ધર્મ છે, એ વિષય ઉપર ૧॥ કલાક સુધી વ્યાખ્યાન કરી એ સિદ્ધ કરી બતાવ્યું કે પાંચ પાપ રહીત આત્માજ પરમાત્મા થઇ શકે છે અને તેજ માર્ગનો ઉદ્યમી પુરૂષ ત્રૈલોક્યમાં નિર્ભયતાથી વિચરી શકે છે. મોદી માણેકચંદ મોતીચંદે પણ સારા શબ્દોમાં વ્યાખ્યાનને અનુમોદન આપ્યું હતું. એજ વખતે રૂ. ૧૦૦) આપી શેઠ કસ્તુરચંદ પરમચંદજી પ્રાં. સભાના લાઇફ-મેમ્બર થયા. મોદી માણેકચંદજી રોજ બાળક બાળીકાઓને ભણાવે છે જે સ્તુત્ય છે.

સોનારી—ઘર સં. ૧૦. જન સં. ૫૦, મં. ૧છે. અભક્ષ્યત્યાગ અને સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કરવાથી ત્રણે રાત્રિઅન્નભોજનત્યાગ અને પાંચે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. શા પાનાચંદ મૂળચંદ રૂા. ૩) ભરી પ્રાં. સભાના સભાસદ થયા, રૂા. ૨) મોરેના પાઠશાળામાં ભરાયા.

ગનેગાંવ—ઘર સં. ૪ ચૈ. ૧ છે. ઉપદેશ કરવાથી એકે સ્વાધ્યાય અને એકે રાત્રિઅન્નભોજનત્યાગનો નિયમ લીધો.

ભૂમ—ઘર સં ૧૦. મં. ૧ છે. બે સભા કરી પણ ફૂટને લીધે કંઈ પણ સફળતા મળી નહી !

સિદ્ધ ક્ષેત્ર શ્રી **કુંથલગીરી**—પ્રબંધ ઠીક છે, પણ ભંડારમાં નાણાં ભરનારને રસીદ આપાતી નથી. મૂનિમને પૂછતાં કહ્યું કે એ બાબત શેઠ હરીભાઇ દેવકરણવાળાને પુછશો. બે શાસ્ત્રસભા કરી તેમજ કુળભૂષણ દિ જૈન વિદ્યાલયનું નિરીક્ષણ કર્યું. ફળ સંતોષજનક છે. બાલબોધ જૈન ધર્મ અને રત્નકરંડશ્રાવકાચાર ભણાવાય છે. વિદ્યાર્થી ૩૫ છે. બોર્ડિંગનો પ્રબંધ પણ સારો છે. શિક્ષક કવિ દત્તાત્રય ભીમાજી રણદીવે સુયોગ્ય છે. રાત્રે હજારીલાલજી વિદ્યાર્થીઓને શાસ્ત્ર સંભળાવે છે. આ સર્વ કાર્ય બ્ર. પાર્શ્વસાગરજીના ઉત્તમ ઉદ્યોગથીજ પ્રશંસનીય થઇ રહેલું છે. જેને ધનાઢયો એ મદદ કરવાની જરૂર છે.

બાર્સી ટાઉન—સૂચના કરવા છતાં કંઇ મૃત્યુશોકને લીધે ઝાઝા ભાઇઓ એકઠા થયા નહિ. માત્ર ૭ ભાઇઓ આવ્યા, જેમાં બેએ સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો.

કરમાળા—ઘર સં. ૨૪. જન સં ૮૦ છે. એક સભા કરી કુરીતિત્યાગ અને

સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કરવાથી ૧૦ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. સભામા સ્થા. ભાઇ પ્રેમચંદે બન્ને આમ્નાય મુજબ વગર પગારે ધર્મશિક્ષણ આપવાનું જણાવ્યું પણ કોઇએ પોતાના બાળકો મોકલવા સ્વીકાર્યું નહિ. અત્રેના ભાઇઓએ અજ્ઞાનતા હઠાવવી જોઇએ.

અહમદનગર—સેનવાલ ઘર સં. ૪૫-જન સં ૧૭૫ છે. એક સભા કરવાથી ૬ એ રાત્રિઅન્નભોજનત્યાગ અને આઠ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. અત્રેના સેતવાલ ભાઇઓ ધર્મ, ધન અને આચાર વિચારથી બીલકુલ પડતી દશામાં છે. વારંવાર બોલાવવા છતાં કોઇ આવતું નથી. તદન અભણ છે. બે ચાર સિવાય બધાજ દરજીનો ધંધો કરે છે. સેતવાલના ભટ્ટારકે કંઇ ધ્યાનમાં લઇ આ લોકોને ધર્મમાર્ગમાં દઢ કરવા જોઇએ નહિતો ભવિષ્યમાં એ લોકો દરજી નામનેજ સાર્થક કરી લેવાનો ભય રહે છે.

કોપરગાંવ—ઘર સં. ૧૨ જન સં. ૮૦, મં. ૧ છે. સભા કરી મિથ્યાત્વત્યાગ અને સ્વાધ્યાયપ્રચાર પર વિવેચન કર્યું, જેથી બે સ્ત્રીઓએ કુદેવપૂજનનો ત્યાગ કર્યો. પ્રથમ પાઠશાળા હતી પણ હાલ બંધ છે, જે ચાલુ થવાની જરૂર છે. રૂ. ૧૧) ઉપદેશક ફંડમાં આવ્યા. શેઠ જગનલાલજી ધર્મોત્સાહી છે.

કોકમઠાણુ—ઘર સં. ૭ જન સં. ૩૦, ચૈ. ૧ છે. બે શાસ્ત્રસભા કરી. ૭ જણાને સ્વાધ્યાયનો નિયમ છે. બધા ભાઇઓ સદાચારી અને ધર્માત્મા છે. સ્ત્રીઓમાં ભણવાની રૂચિ વિશેષ છે. નાસિક નિવાસી શ્રી હુલાસીબાઇ તત્વાર્થસૂત્રના અભ્યાસમાં પ્રશંસનીય છે રૂ. ૫) ઉપદેશક ફંડમા આવ્યા

સંવત્સર—ઘર સં ૮. જન સં. ૩૨, મં. ૧ છે. શાસ્ત્રસભામા ઉપદેશ કરવાથી એક સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. રૂ. ૧) ઉપદેશકફંડમાં ભરાયો.

હુશંગાબાદ—ઘર સં. ૭૨ છે. સભા કરી 'જૈન ધર્મની ઉપયોગીતા' ઉપર બે કલાક સુધી વ્યાખ્યાન કર્યું. અત્રે ઘણાખરા જૈનો સમૈયા (એટલે સરસ્વતી મંદિર પૂજક અને મૂર્તિપૂજા નિષેધક) છે ! જો અત્રે વારંવાર વિદ્વાનોનું આગમન થઇ ઉપદેશ અપાય તો આ લોકો સુધારી શકે ખરા. ભાઇ મુલચંદજી ધર્મોત્સાહી છે.

મહારાષ્ટ્રપ્રાંતવાસી પિતામરદાસ ઉપદેશક.

પ્રિય જૈન બંધુઓ! ચેતો, જાગો અને જુઓ-તમારા પૂર્વજો (તીર્થંકર મહર્ષિઓ) એ જે પ્રાણ જૈનધર્મરૂપશરીરમાં આપ્યા હતા તે શરીર (જૈન ક્રિયા)ની આજે કેટલી દુર્દશા થઇ રહેલી છે? તોપણ આટલી બધી બેપરવાઇ ? અરે ! તે જૈન ક્રિયારૂપ શરીર નષ્ટભ્રષ્ટ થવા છતાં તમારો આત્મા સુખમય પ્રાણોથી કેમ જીવી રહી શકે ? જેથી પ્રમાદને છોડો અને શાસ્ત્રસ્વાધ્યાયરૂપી ભોજનથી જૈન ક્રિયારૂપ શરીરને પુષ્ટ કરી તેને તાકીદે તંદુરસ્ત કરો. જુઓ, એજ પ્રમાદથી તમારા પ્રાંતમાં સેતવાલ ચતુર્થ, પંચમ અને કસાર જાતિના ભાઇઓનો સમુહ હવે તમારો રહ્યો નથી, જેથી જો તમારામાં હજુ પણ કંઇ ધર્મનો જોશ અને અભિમાન હોયતો તેઓને ફરીથી આપણા જેવા બનાવવા પ્રયત્ન કરો. આ ભાઇઓ અજ્ઞાનતાથી વિશેષે કરીને નિર્માલ્ય દ્રવ્ય ભક્ષણ કરવા લાગ્યા છે તથા દરિદ્રતાને લોગે બીજો ધર્મ સ્વીકારી બેઠા છે તથા હલકો ધંધો કરવાના કારણથી શૂદ્ર જાતિમાં પણ નીચી દષ્ટિથી જોવાય છે, જેથી બંધુઓ, તમે આ જાતિભાઈઓ તરફ તાકીદે ધ્યાન આપો.

જાતિ સેવક—
ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી,
મંત્રી, ઉપદેશક વિભાગ—
દિ. જૈ પ્રાં. સભા-મુંબાઇ

पं. अर्जुनलाल सेठीकी धर्मपत्नीका

हृदयद्रावक पत्र।

मान्यवर महोदय,

क्या अपने अमूल्य समयका कुछ भाग आप मुझ दुःखिनीकी कथा सुननेमें दे सकेंगे? क्या मेरे पति पर आई हुई विपत्तिको दूर करनेकी चेष्टा करेंगे? क्या मेरे बच्चों पर दया करके पितृ-वियोग-जनित दुःखको निवारण करेंगे? क्या एक व्यक्तिका अन्यायसे बचानेका प्रयत्न करेंगे? मुझे विश्वास है कि यदि आप मेरी दुःख-कहानी सुनेंगे तो मेरी सहायता करना अपना परम कर्त्तव्य समझेंगे।

मेरे पति इस समय जेलमें हैं। दस महीने हुवे जब वे इन्दौरमें पकड़े गये थे, तबसे दो चार दिन छोड़कर आज तक वे कारागृहहीमें हैं। और अब उन्हें पाँच वर्षकी सजाका हुक्म हो गया है। इससे आप यह न समझिये कि उन्होंने कुछ अपराध किया था, क्योंकि आज तक यह तो कभी बतलाया ही नहीं गया कि अमुक अपराधके कारण यह दण्ड दिया गया है। आज तक उन पर कोई अभियोग भी नहीं चलाया गया, जिससे कि यह प्रमाणित हुआ हो कि वे अपराधी हैं। हाँ, यदि कुछ अपराध हो तो यही हो सकता है कि उन्होंने अपना जीवन जैन-समाजको अर्पण कर दिया था, शिक्षा-प्रचारको अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते थे, जैन-धर्मके प्रचारके उपाय सोचा करते थे, और इनके अतिरिक्त और संसारिक झगड़ोंसे दूर रहना ही पसंद करते थे। सुना गया था कि वे देहली और आरावाले मुकद्दमोंके सम्बन्धमें पकड़े गये हैं, परंतु यह विश्वास कैसे हो? ये मुकद्दमे तो थे राजनैतिक और मेरे पति राजनीतिके झगडोंसे कोसों दूर। क्या जो आत्मा जैनधर्मके लिये जीवन अर्पण करनेकी शक्ति रखता है वह उस जैनधर्मके मूल मन्त्रका तिरस्कार करनेको उद्यत हो सकता है? क्या जिनका हृदय जातिके बालकोंको अशिक्षित देख कर द्रवित हो जाता था वे नरहत्या ऐसे मामलेसे सम्बन्ध रख सकते हैं? यह नहीं हो सकता। यदि सचमुच सम्बन्ध था तो क्यों नहीं सरकारने अभियोग चलाकर प्रमाणित किया? जो हो, अपराधी थे या नहीं, उनको कारागृहमें रहनेका हुक्म हो-गया है। कौन कह सकता है कि यह अन्याय नहीं? क्या इस २० वीं शताब्दिमें भी यह न्याय समझा जा सकता है कि किसी व्यक्तिको दण्ड दे दिया जावे और उसे यह भी न बतलाया जावे कि उसने अमुक अपराध किया है? महोदय, क्या इस अन्यायके विरुद्ध आपकी अवाज़ उठेगी? क्या आप सरकारसे न्यायकी प्रार्थ-

ना करेंगे ? ऐसा करना यों तो आपका कर्त्तव्य है ही, परन्तु इस मामलेमें यह अनिवार्य्य कर्त्तव्य हो जाता है; क्योंकि उनकी तरफ़से कोई प्रार्थना करनेवाला नहीं—मैं दीन स्त्री हूँ, मेरी कौन सुनता है और विशेष कर जयपुर राज्यमें।

- यह हुई उनकी बात, अब बच्चोंकी बात सुनिये। मेरे पति कोई धनाढ्य पुरुष नहीं हैं और न उन्होंने व्यवसाय कर बहुतसा द्रव्य संचय ही कर रक्खा है। ऐसी अवस्थामें क्यों कर अपने. बच्चे 'प्रकाश' की शिक्षाका प्रबन्ध करूँ ? किस प्रकार छोटी बालिकाको पढ़ाऊँ ? शिक्षा तो एक ओर, इन बच्चोंको उचित भोजन भी किस प्रकार दूँ ! कैसे उनके शीतका निवारण करूँ ? आज दस महीने हुये किसी न किसी प्रकार काम चलाया, परन्तु अब नहीं चल सकता। मुझे इसकी पर्वाह नहीं कि मुझे भरपेट अन्न मिले, मैं पतिवियोगको भी सहन कर सकूँगी, परन्तु इन बच्चोंका कष्ट मुझसे नहीं देखा जाता। मेरे पतिको आशा थी और मेरा भी विश्वास था कि जाति और धर्मकी सेवा करनेके लिये मेरा प्रकाश योग्य बन जायगा, परन्तु अब देखती हूँ कि यह सब स्वप्न मात्र है। न जाने ये पाँच वर्ष कैसे पूरे होंगे ? इस बीचमें यदि शिक्षाका प्रबन्ध न कर सकी तो प्रकाश तो अशिक्षित रह कर दुःख उठावेहीगा परन्तु समाज और धर्मका एक सेवक खोया जायगा। जयपुरमें यद्यपि सब मेरी सहायता करना चाहते हैं और जयपुरमें ही क्यों, मुझे विश्वास है, समस्त भारतवर्षके मनुष्य मेरी सहायता करना हृदयसे चाहते हैं परन्तु वे डरते हैं कि मुझ अभागिनीके साथ कहीं उनको भी कष्ट न उठाना पड़े। इससे कोई मेरी सहायता नहीं कर सकता। यद्यपि निःसहाय अबलाका कष्टनिवारण करना कोई अपराध नहीं परन्तु पुलिससे डर लगताहै। क्या आपको भी डर लगेगा ? क्या आप जैसे उदारहृदय भी बिना कारण भयभीत हो जावेंगे ? तो फिर इन बच्चोंको क्या मुझे अशरण-शरण के भरोसे छोड देना होगा ? हा ! यह कष्ट मेरे अपने दुःखके सहने के साहस को भी तोड़ देगा।

मेरे पति आज कल कारागृहमें रोगग्रस्त हैं। प्रतिदिन सुनती हूँ कि उनका कृश शरीर और अधिक कृश होता जाता है। उनके भोजनका प्रबन्ध ठीक नहीं। हे भगवन् ! क्या उनको पाँच वर्ष इस ही प्रकार जेलमें बिना अपराध सड़ना पड़ेगा ? वे कैसे पाँच वर्ष निकाल सकेंगे ? यद्यपि मानसिक दुर्बलता उनके पास न फटक सकेगी परन्तु इस शरीरके रोगोंका वे क्या करेंगे ? प्रभो, क्या अब मैं उनके पवित्र दर्शन न कर सकूंगी ? क्या कभी उनकी चरणरज मस्तकमें लगानेका सौभाग्य मुझे न प्राप्त होगा? क्या कभी वे आकर 'प्रकाश

के शिर पर हाथ न रख सकेंगे ? क्या नन्ही लडकी को वह छातीसे फिर लगावेंगे ? क्षमा करिये, हृदय के आवेगमें आकर मैं यह लिख गई हूं। हम स्त्रियों का हृदय आप ऐसा कठोर नहीं हो सकता।

महाशय, मैं अपनी राम-कहानी आपको सुना चुकी। मुझे अब इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कहना है कि यदि मुझ अभागिनी पर आपके हृदयमें दयाका सञ्चार हुआ है तो कृपया इस मामलेको हाथमें ले लीजिये। यदि मेरे प्रकाश के अंधकारमय भविष्यसे आपका पितृस्नेहयुक्त हृदय द्रवित हुआहै तो उसे शरण दीजिये। यदि मेरी लड़कियोंके आर्त्तनादसे आपको अपनी प्रिय पुत्री याद आई है तो कृपा कर उसे असहाय न छोड़िये। यदि मेरे पूज्य पतिके संकटसे आपको यह ध्यान आया है कि यह संकट उन पर नहीं, जैन-समाज पर,—समाज-सुधार, जैन-धर्म-प्रचार और शिक्षा-प्रसार पर—पड़ा है तो शीघ्र कर्त्तव्य निश्चय कर लीजिये। यदि आप समझतेहैं कि बिना मुकद्दमा दण्ड देना अन्याय है तो उसके विरुद्ध आन्दोलन और पुकार करनेको प्रस्तुत हो जाइये। यदि मेरे पति के बिगड़े हुये स्वास्थ्य से आपके चित्तमें डर उत्पन्न होकर बच्चोंकी क्रन्दनध्वनि सुन पड़ी है और समाज-सेवक के लिये दो बूँद आँसू निकले हैं तो इस समय सहायता कीजिये। और यदि जैन-धर्म के एक सेवक की कमीसे आपके चित्तको चोट पहुँची हो तो उसे बचानेका प्रयत्न कीजिये। मैं असहाया, अबला, दु:खिनी आपसे और अधिक निवेदन नहीं कर सकती। राजपूत-रमणी ने अपरिचित और परधर्मी युवा को राखी भेजीथी और वह उसके हेतु प्राण-विसर्जन करने को उद्यत हुआथा। यदि आज मैं अति क्षुद्र हुँ परन्तु इस विपत्तिसे छुटकारा न देख मैं भी आज आपके पास राखी भेजनेका साहस करती हूँ। क्या आप जैन-समाज तक, भारत-सरकार और जयपुर-नरेश तक मेरी क्रन्दन पहुँचावेंगे ?

दयाभिलाषिणी-
जैन-जातिके सेवककी सेविका,
गूलाबबाई—जयपुर



ब्र. शीतलप्रसादजीका पत्र।

माहानुभाव, महाशय दर्शनविशुद्धिर्भवतु !

आज दश महीने न्याय की प्रतिक्षा करते हो चुके, परन्तु पण्डित अर्जुनलालजी सेठी अब तक भी अन्यायवश कारागृहही में हैं। क्या जैन-जाति भी उन पर न्याय न करेगी ! ऐसी आशंका भी हृदय में उत्पन्न होने लगी है। जानना है कि यह शंका कहां तक ठीक है। क्या आप बतला सकेंगे ?

मुझे बतलावें या नहीं किन्तु श्रीयुत सेठी जी की धर्मपत्नी को तो बतला देना

आपका कर्तव्य है। लीजिये, उनका पत्र हाथ में लीजिये और हृदय को कड़ा कर ज़रुर आदि से अंत तक पढ़ जाइये। कैसा मर्मभेदी क्रन्दन सुन पड़ता है। क्या उसमेंसे आपके कानोंमें अबलाकी आहोंका शब्द नहीं आता ? क्या उसमेंसे बच्चोंके रोनेकी आवाज़ आपको नहीं सुनाई देती ? सेठी-विहीन गृहांगणका हृदयद्रावी दृश्य क्या आपको दृष्टिगोचार नहीं होता, ? इतना कष्ट होने पर भी क्या उस रुदनमें जाति-सेवाकी गंध नहीं आती ? क्या दुःखके आसुँओंसे भीगा हुआ यह पत्र भी आपकी आँखोंमें आँसू नहीं लाता ? न सही, परन्तु क्या अन्तिम शब्द "यदि आज मैं अति क्षुद्र हूँ परन्तु इस विपात्तिसे छुटकारा न देख में भी आज आपके पास राखी भेजनेका साहस करती हूँ" भी आपके हृदयमें नहीं चुभते ! क्या बहिनकी इस दीन पुकार पर ध्यान देने को भी आपका हृदय बाध्य नहीं होता ? क्या हम उन महान् आत्माओंकी सन्तान होकर भी जिन्होंने निःसंकोच संकटग्रस्तोंकी रक्षा के लिये प्राण विसर्जन किये हैं, उस मुसल्मान युवा की बराबरी नहीं कर सकते ? नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, बरन मुझे विश्वास होता जाता है कि आप मन ही मन प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि अबलाकी पुकार अवश्य सुनेंगे; बच्चोंके दुःखको अवश्य दूर करेंगे; सेठीजीकी विपत्ति अवश्य निवारण करेंगे; राख़ीका आदर अनिवार्य है, भाईको बहिनके लिये अपना सर्वस्व दे देनेमें संकोच न होगा। धन्य आपकी उदारता और धन्य आपकी धर्मप्रियताको !तो क्या आप मुझे यह समझनेकी आज्ञा देते हैं कि आप इस कार्यके लिये प्रयत्न करेंगे ? क्या मैं आपको राखीके आदर करनेवाले पुरुषों में गिन सकता हूँ।

हमने भारतवर्ष भरके मुख्य समाचारपत्रोंमें आन्दोलन आरम्भ कर दिया है। हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू प्रायः सब ही समाचार-पत्रोंमें इस विषयके पत्र छापे हैं। उनके सम्पादकोंने उचित टिप्पणी भी की है परन्तु यह कार्य अभी और ज़ोरके साथ करना है।

श्रीमान् वाइसरायकी व्यवस्थापक सभा (Supreme Legislative Council) में भी यह प्रश्न रखा जावे, इसका प्रयत्न किया हैं। माननीय बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, माननीय मि० जी० के० गोखले, माननीय पण्डित बिशननरायन दर, इत्यादिके पास, जो उस सभाके सदस्य हैं, पत्र और तार भेजे हैं और उनमेंसे कुछसे मिले भी हैं। उन्होंने भी बहुत संतोषजनक उत्तर दिया है और ढाढस दिलाया है, परन्तु वास्तवमें बात यह है कि जब तक सारे भारतसे इसपर ज़ोर न दिया जावे तब तक उनका प्रश्न रखना उतना लाभकारी नहीं हो सकता। आशा

है कि अगामी बैठकमें यह प्रश्न अवश्य रक्खा जा सकेगा।

इसके अतिरिक्त कुछ भारतीय नेताओं ने यह भी आवश्यक बतलाया है कि यह प्रश्न विलायतकी पार्लियामेंटमें रक्खा जाना चाहिये। उसके लिये भी हमने सर विलियम वैडर्बर्नके पास पत्र भेजा है और अब वहाँके अन्य सज्जनों के पास तथा विलायती पत्रोंके पास भी इस मामलेका वृत्तान्त भेजने की चेष्टा कर रहे हैं। परन्तु वास्तविक कार्य अभी आरम्भ नहीं हुआ। श्रीमान् वाइसराय के पास एक डेप्यूटेशन जाना परम आवश्यक है। इसमें भारतवर्ष के मुख्य मुख्य लोग सम्मिलित होने चाहिए। मुझे आशा है कि आप स्वयं सम्मिलित होंगे और अपने स्थान के जैनियों से इस विषय में परामर्श करके अन्य प्रतिष्ठित पुरुषों को भी राजी करेंगे।

अबतक रुपयेकी कुछ आवश्यकता न हुई, परन्तु अब इस कार्यमें रुपयेकी बड़ी जरूरत है। जैन जाति चाहे तो लाखों रुपया बात की बात में एकत्र कर सकती है और मेरा विश्वास है कि आप स्वयं रुपयेका सदुपयोग करनेके लिये किसी अवसर को इस अवसरसे अच्छा नहीं समझतेहैं। अस्तु, क्या इसका आप प्रयत्न करेंगे कि आपके स्थान के जैनी इसके लिये चन्दा करें और "सम्पादक, जैनमित्र, हीराबाग, पोष्ट-गिरगाँव, मुंबई" के पतेसे जो रुपया इकट्ठा हो वह भेज देवें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुण्य-कार्यमें यदि आपको कुछ कष्ट भी सहना पड़े तो आप कदापि मुँह न मोड़ेंगे, क्यों कि याद रखिये यह प्रश्न केवल सेठीजीका ही प्रश्न नहीं है, इसपर सारी जैन जातिका जीवन-मरण निर्भर है। इसके अतिरिक्त मुझे बहुत संदेह है कि इसमें आपको अधिक कष्ट होगा क्योंकि जिस प्रकार आपने प्रतिज्ञा की है क्या हमारे दूसरे जैनी भाइयोंके हृदयमें भी उस ही प्रकारके भाव उदय न होंगे? क्या वे और कुछ नहीं तो थोड़ासा द्रव्य दे देनेसे भी पीछे हटेंगे? परन्तु आवश्यकता इस बातकी है कि उनके कानों तक यह बात पहुँचे तो कृपा कर आप इस पत्रको तथा इसके साथकी सेठीजी की धर्मपत्नि की चिट्ठी को मंदिरमें शास्त्र सभाके पश्चात् सबको सुना देनेका प्रबंध कर दीजिये और एक एक प्रति मंदिरजीमें लटका दीजिये ताकि सब भाइयों को इसका परिचय हो जाय तब यदि आप किसीसे भी कहेंगे तो कुछ न कुछ अवश्य दे देगा। थोड़ा थोड़ा मिलकर भी बहुत हो सकताहै।

यही दो काम इस समय आपको करने हैं। एक तो मन्दिरमें शास्त्र के बाद सबको यह पत्र सुनाकर एक सभा करके चन्देका प्रबन्ध कर दीजिये और सभाकी कार्यवाही समाचार-पत्रोंमें भेज दीजिये।

दूसरे डेप्यूटेशन में सम्मिलित होनेके लिये स्वयं अपनी अनुमति भेज दीजिये और अपने यहाँके दूसरे प्रतिष्ठित पुरुषों से भी भिजवा दीजिये। यह कार्य यथाशक्ति शीघ्र होना चाहिये। इसके अतिरिक्त जो कुछ आपको उचित जान पड़े करिये और मुझे भी लिख भेजिये ताकि मैं भी सहायता करूँ।

अन्तमे आपसे पुर्नः निवेदन है कि यह अवसर हाथसे न जाने दीजिये; जैनधर्म एक अत्यन्त अमूल्य वस्तु है, उसको अधिक काल तक संकटमें न पड़ा रहने दीजिये। पण्डित अर्जुनलालजी सेठी इस धर्मके उच्च कोटिके ज्ञाता थे और इस पर उनकी श्रद्धा इतनी अधिक है कि इस धर्मके अनुयायियोंके लिये वे सब कष्ट सहनेको प्रस्तुत रहे हैं। हमारा वात्सल्य-अंग हमें शिक्षा देता है कि उनका संकट निवारण किये विना हमें जैनी कहलानेका अधिकार नहीं। विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं। धर्मका पालन करिये और विपुल पुण्य संचय कीजिये। आशा करता हूँ कि इस पत्रका उत्तर शिघ्र मिलेगा।

उत्तराभिलाषी–

ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद.

हा! जैनियों, डूब मरो!

अय जैन समाज! क्या अभी भी तूं घोर कुम्भकर्णी निन्द्रामें सोती रहैगी? क्या अभी भी तूं आलसवस अपना सर्वस्व खोती रहैगी? क्या अभी भी तूं जगतमें पद पद पर पददलित होती रहैगी? समाज! अव बहुत सो लिया, यह समय सोनेका नहीं है। यह समय खोनेका नहीं है! अब तेरे परीक्षाका समय है। समय आया है कि तू सचेत हो! देख, इस समय तेरे सन्मुख यह प्रश्न नहीं है कि तू उन्नति करती है या अवनति, इस समय यह प्रश्न नहीं है कि सृष्टिकर्ता ईश्वर है अथवा नहीं, इस समय यह प्रश्न नहीं है कि श्वेताम्बर प्राचीन है या दिगम्बर, पर समाज! देख! तेरे सम्मुख "समय" मुस्कुराता हुआ प्रश्न कर रहा है कि "जैनियों! तुम मुर्दे हो अथवा जिन्दे?" ईसलिये यदि तू जगतमें अपना नाम उज्वल रखा चाहती है? यदि तू अपना नाम निष्कलंक रक्खा चाहती है? यदि तू जगतमें अपना मान सन्मान चाहती है? यदि तेरे हृदयमें अभी अकलंकस्वामीके रक्तका प्रवाह वह रहा है? यदि तेरे हृदयमें अभी तक किंचित् परिमाणमें भी निष्कलंक प्रभुके निःस्वार्थ धार्मिक आत्मसमर्पणकी ज्योतिका प्रकाश जग रहा है? यदि तेरे हृदयमें कुछ भी अभी तक समन्तभद्रस्वामीका भय रहित असीम साहस दमक रहा है? यदि तू विपत्में फसे हुये साधर्मी भाईयोंके प्रति सहायता करना कुछ भी अपना कर्तव्य समझती है? यदि तू सम्यक्त्वगर्भांकित वात्सल्य-

अङ्गको जैनधर्मका मर्म समझती है ? यदि तू आप्तकथित जैनसिद्धान्त पर प्रवर्तना अपना कर्म समझती है ? तो उठ ! जग ! देख ! जिसने तेरे लिये, ग्रेज्युएट, बी. ए. होनेपर भी अपनी व्यवहारिक उन्नतिको लातमार, बालबच्चोंको छोड़, आत्मसमर्पण किया था ! जिसने तेरे लिये अपना यावत् जीवन, तन मन धन, अर्पण किया था ! जिसने तेरे लिये, सर्वदाके लिये अपने सर्व सांसारिक सुखोंका तर्पण किया था ! देख, आज वह नररत्न कैसी दुर्दशामें फस रहा है ? तेरी भूलसे, प्रमादसे, जैलमें बस रहा है ! नजरकैदकी जंजीरसे कस रहा है ! शोक ! और महाशोक ! ! दुःख और महादुःख ! !

हा ! हरएक ग्राम, हरएक शहर, हरएक मेला, हरएक सभामें उपस्थित होकर धार्मिक तथा तात्विक अथवा व्यवहारिक उन्नतिपूर्ण उपदेश दे तुझे सोतेसे जगाया, जो कि मृतप्रायः संस्थाओंको उन्नति अवस्था पर लाया, जिसने अविश्रान्त परिश्रम कर अति उद्योगसे एक शिक्षाप्रचारकसमिति स्थापित की, और द्रव्य न होनेपर भी जातीय प्रेमसे द्रवीभूत हो मेला प्रतिष्ठा आदि समयोंपर एक एक पैसा मांगकर उसका कार्य चलाया। सैकड़ों बालबच्चोंको विद्याध्ययन करा उन्हें मनुष्य बनाया ! **और जिसने कभी भी गवर्नमेन्टके विरुद्ध जबान न हिलाई, न कोई राजद्रोहात्मक व्याख्यान ही दिया ! हाय ! आज वही समाजसेवक पण्डित अर्जुनलाल सेठी बी. ए. आज जैलकी हवा खाय—और तू आनन्दसे पड़ी सोवे ? ! !**

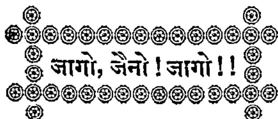
अय समाज ? तेरी भलाईका, तेरी सेवाका क्या यही बदला है ? क्या ऐसी नेकीका यही नतीजा है ? क्या ऐसे कृत्यकी यही कृतज्ञता है? तेरा एक सेवक-प्रेमी निरघ निराहार अपना जीवन तेरे रहते हुये भी व्यतित करे ? समाज, क्या यह तेरे लिये गौरवकी बात है ?—अय समाज ! क्या तेरे हृदयमें दयाका जराभी उद्वेग नहीं है ? क्या तेरे हृदयमें बिलकुल कृतज्ञताका प्रकाश नहीं है ? यदि है तो क्या १० महीनेमें तूने एक दिन भी उनको इस महान कष्टसे छुटानेका प्रयत्न किया है ? क्या १० महीनेमें तूने एक दिन भी उनकी भाक्तिको अपने हृदयमें स्थान दिया है ? इसका उत्तर स्पष्ट है कि "नहीं"। ओह ! क्या उनकी वर्षों समाजसेवाका यही प्रतिफल है? यदि पाषाण भी होता तो इस दुखमयी तापकी अग्निसे द्रवीभूत हो जाता—कठोरसे कठोर हृदय भी गल जाता, शत्रुके हृदयमें भी ऐसी स्थितिसे दयाका उद्वेग छा जाता । पर हाय ! वात्सल्य अङ्गकी **डींग मारनेवाली समाज** ! तेरा हृदय इतना कठोर है कि तू अभी तक चुपचाप कानोंमें तैल डाले सो रही है। अभी तक तेरे हृदयमें कृतघ्नताका तामसिक मेघपटल छाया हुआ है। **क्या इसीसे जगतमें तेरा नाम रह सकता है ? कभी नहीं** ! कभी नहीं ! ! तुझे अवश्य ही एक दिन इस कृतघ्नताका फल भोगना पड़ेगा। तुझे एक दिन बैमोत मरना पड़ेगा। और हरएक समाज के आगे अपना मस्तक नीचा करना पड़ेगा। यदि अभी भी तुझे अपना मान रखना है ? यदि अभी भी जगतमें तुझे जीवित रहना है ? तो प्यारी समाज ! उठ, कमरकस। खड़ी हो। अपने महोपकारीपर संकट के समय कृतज्ञता प्रकाश कर। तेरे लिये स्वार्थ की आहुति देनेवाले के लिये स्वार्थकी आहुति दे। संसारको बता

दे कि जैन समाज अभी भी जीवित है। वह अभी अपने हितैषियों के लिये सब तरह तैयार है। संसार देखे–और उत्सुकतासे देखे कि हां, जैन समाजमें कुछ दम है और वह अपने देश भाईयों के–जाति भाईयों के लिये कुछ कर सक्ती है। यदि नहीं तो जा सर्वदा के लिये मृत्यु की सान्तिमयी गोदमें सयन कर!!!

—दुःखी—

परमेष्टीदास लमेचू—कलकत्ता

मखनलाल लमेचू ,,



जागो, जैनो! जागो!!

હે! વીર શાસનના શ્રીમાનો, ધીમાનો અને આંખ આડા કાન કરી દેનારા વીર ઉપાસકો! જરા થોભો અને હ્મારા એક નિઃસ્વાર્થી દીન બન્ધુની અસહ્ય વેદના સાંભળો! આજે લગભગ દશ મહીના થયા બ્રિટિશ રાજ્યની હકુમત નીચેના જયપુર રાજ્યમાં ન્યાય વગર જેલમાં અનિવાર્ય દુઃખ પામતા-રીબાતા "જૈનશિરોમણિ" પં. અર્જુનલાલ શેઠીને છોડાવો, બચાવો અને મુકાદ્દમ અપાવો. જાગો જૈનો! જાગો!! હ્મારા મહાવીર પિતાએ આત્મદ્વારા કરી બતાવેલા અને અસંખ્ય દાર્પણ દુઃખો આપ્યા છતાં પણ "અપકાર પર ઉપકાર" કરનારી સમદૃષ્ટી, પરોપકારવૃત્તિ અને સેવા ધર્મનું રહસ્ય સમજી કંઇક અનુકરણીય બનો.

મારે અત્યંત ખેદયુક્ત હૃદયથી લખવું પડે છે કે ન્યાયપ્રિય બ્રિટિશ રાજ્યમાં અને ભારતવર્ષમાં જે કોમ શાંતિપ્રિય અને વફાદાર કહેવાય છે, જે કોમ માટે હિંદના ખેરખ્વાહ!! અને એક વખતના વૉઇસરોય લૉર્ડ કર્ઝન જેવાઓએ પણ ઉચ્ચતમ મત દર્શાવ્યો છે, જે ધર્મ માટે પ્રાશ્ચાત્ય પ્રજા માનની લાગણીથી જોવા લાગી છે, જે જૈનો જયપુર રાજ્યનો એક પ્રતિષ્ઠિત વર્ગ લેખાયો છે; આવી મહત્વશાળી કોમના સ્વયંસેવકને જયપુર રાજ્ય વગર તપાસે દશ માસ થયાં જયપુરની જેલમાં સડવે એ કેટલું શોક-જનક અને આશ્ચર્યમાં ગરકાવ કરે તેવું છે? એથી વધુ ત્રાસજનક તો એ છે કે જિનેન્દ્રપ્રભુના દર્શન ૭ દિવસ બંધ કરી લાંઘા (ભુખમરો) ખેંચાવ્યો હતો અને પત્નીને પણ મળવા માટે મના કરવામાં આવી છે. ન્યાયપ્રિય વૉઇસરોય લૉર્ડ હાર્ડીંજની સરકારના અમલ નીચેના રાજ્યમાં ગુન્હેગારને ન્યાય આપ્યા વગર આવી અધાધુંધી ચાલે એ બ્રિટિશ ન્યાયતુલાને શોભાપ્રદ કેમ કહેવાશે? શું લૉર્ડ હાર્ડીંજની સરકારની ફરજ નથી કે પોતાની રેસીડેન્સીવાળા રાજ્યમાં આવા અન્યાયયુક્ત પગલાં માટે સત્વર તપાસ કરી ભવિષ્યમાં આવો ગેરવહીવટ ન ચાલે તે માટે યોગ્ય બંદોબસ્ત કરે? જે વૉઇસરોય, જે ધર્મપિતાએ અને જે ભારતહિતૈષીએ, કાનપુર મસજીદ કેસ, અયોધ્યા ગૌવધકેસ અને દક્ષિણ આફ્રિકા જેવા મહાન્ અન્યાયયુક્ત કાર્યમાં જેણે અદલ ઇન્સાફ અપાવ્યો છે, તો શું જીવદયા હીમાયતી (જૈનો)ની દાદ ધ્યાનમાં લઇ વગર તપાસે જેલમાં પડેલા અને આરોગ્યવિમુખ બન્ધુને દયા ખાતર ન્યાય આપી છુટકારો નહિજ મળશે?

જ્યારે આ પરિસ્થિતિ બદલાઇ ગઇ છે ત્યારે આપણા દિગમ્બર જૈનબન્ધુઓએ પણ, આળસ, કુસંપ, ઇર્ષા કે કુંભકર્ણની નિદ્રામાંથી જાગ્રત થવું જોઇએ છે અને ન્યાય મેળવવા શ્રીમાનોએ પોતાનું કર્તવ્ય બજાવવા વિનાવિલંબે પોતાના કૃપણ હાથને પણ લંબાવવો જોઇએ છે. યાદ રાખજો કે આવા નિઃસ્વાર્થપણે સમાજનો ઉત્કર્ષ ઇચ્છનાર એક અગ્રગણ્ય સમાજનેતા પર આવી પડેલા અન્યાયી પગલા માટે પ્રયત્નો નહી કરીશું તો

આપણા બીજા લક્ષ્મીહિન વિદ્વાનો બહાર પડતા અચકાશે ત્યારે હિંદુસ્તાનની વસ્તીમાં નામ માત્રથી રહેલા–આંગળીના વેઢાપર ગણાય તેટલા લાખની વસ્તીવાળા જૈન સમાજને સૃષ્ટિની સપાટી પર લાવવાની વાતો કરનારાઓ કેમ લાવી શકશે ?

જાગો જૈનો ! જાગો !! વીરના વીર તનુજો, ઉઠો. અન્યધર્મીઓને સાબીત કરી બતાવો કે જૈનોના હૃદયમાં પ્રાણીમાત્રને માટે દયા જ રહેલી છે. જ્યારે આપણે આવી બાબતોપર આંખમીચામણાં કરી ચાલશું તો અને ન્યાય મેળવવા અસમર્થ બનશું ત્યારે હમારા દેશની પ્રજામાં જૈનમત ફેલાવવાની પ્રબળ ભાવના, આવા નિઃસ્વાર્થપણે સમાજની સેવા કરનાર વ્યક્તિ વગર કોણ બર લાવી શકશે ? તેમજ આવા ફીલોસોફરના સંકટ પ્રસંગે સહાય ન કરીશું તો વિલાયતમાં સ્થપાયેલી જૈન બ્રધરહુડના જેવી સંસ્થાઓનો કોણ ઉત્કર્ષ કરશે ?

જ્યારે આપણે જૈન ભાનુનો તેજોમય પ્રકાશ પ્રગટાવવા માટે અનેક સંસ્થાઓમાં લાખો રૂપિયાનું દાન કર્યું છે તો શું આપણી ફરજ નથી કે આપણા સુખને માટે અહોનિશ પ્રયત્ન કરનાર આજે દશ દશ માસ થયા વગરતપાસે વગરન્યાયે જેલખાનામાં સડે છે તે માટે ન્યાય મેળવવા તન મન ધનથી પ્રયત્નશીલ થવું ? હમારા ધર્મબન્ધુને અભયદાન અપાવવું એ હમારૂં કર્તવ્ય અને જિનેન્દ્રપ્રણિત ધર્મનું એક અંગ નથી ?

શું એ દુઃખી બન્ધુનો વાળ પણ વાંકો થાય એ સમસ્ત જૈન સમુદાયને કલંક સમાન નહિ કહેવાશે ? ધ્યાન રાખજો કે એક ભાગમાં થયેલા દર્દની હમે પરવા નહિ કરશો તો તે દર્દ પોતાનો પગ ફેલાવી હમારા શરીરના બીજા ભાગોમાં પ્રસરશે અર્થાત્ આપણી સમાજમાં આ વીર જેવા વિદ્વાનો ગણ્યાગાંઠ્યા હોવાથી આ એક પળાડી ચુપકીદીથી બેસી રહીશું તો બીજા જિનવાણી માતાના પૂજારીઓ હમારાથી સો સો ગાઉ દૂર નાસશે ! માટે હે વીરપુત્રો ! હમારાથી બનેતેટલી ખટપટ કરી આ જૈન બંધુને છોડાવો.

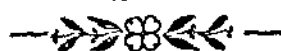
આ બાબત ત્રણે ફિરકાના જૈન સમુદાયના શ્રીમાન અને પ્રતિષ્ઠિત બંધુઓએ તેમજ મહાસભાના કાર્યવાહકોએ સમાજમાંના ગમે તેવા વિગ્રહને દૂર કરી જયપુર રાજ્યમાં નહિ પણ ન્યાયપ્રિય વૉઈસરૉય લોર્ડ હાર્ડીંજની સરકારસમક્ષ એક વગવાળું પ્રતિનિધિમંડળ લઈ જઈ એ નામદારને સત્ય હકીકતો રજુ કરી ન્યાય માંગવો ઘટે છે. તેમજ આપણા શિક્ષિત વિદ્યાસંપન્ન ઇંગ્લીશમેનો (વકીલ, બેરિસ્ટરો) એ અંગ્રેજી પત્રોદ્વારા લેખો લખી હિંદના અમલદારોનું ધ્યાન ખેંચવું ઘટે છે. ભ્રાતૃગણો ! તમારે પુરતી કોશીશ કરી જનસમાજને બતાવી આપવાની જરૂર છે કે જૈનોના હૃદયમાં પણ પોતાના બંધુઓ પ્રત્યે બીજી કોઈ પ્રજા કે સંપ્રદાય કરતાં ઓછો પ્રેમભાવ વાસ કરતો નથી.

વીરશાસનના વીર કેસરીઓ ! જાગો અને હમારા આ દીનબંધુને બની શક્તા તન–મન–ધનના ભોગે અભયદાન અપાવી, ઉગારો–બચાવો–છોડાવો. શાંતિ ! શાંતિ ! શાંતિ !

સરૈયા–સૂરત.



तीन कुप्रथाएं ।



मुझे बड़े खेद और शोक के साथ कहना पड़ता है कि हमारी जाति जो इस पृथिवी पर कमल-पुष्पके समान खिलती हुई आ रही है; मुरझानेको तैयार हो रही है। आजकल हमारे तरफ जैनियोंमें कुप्रथायें बहुत ही बढ़ चली हैं जो अकथनीय हैं। क्या हमारे भाई इस बात पर ध्यान न देंगे और उचित प्रबन्ध न करेंगे?

देखिये! विवाहादि उत्सवोंमें जिस स्थान पर मांगलिक गीत गाये जाने चाहिये, उस स्थान पर हमारी जातिकी स्त्रियां कुगीत व एक दूसरेमें गालियें गाती हैं। वे उस स्थान पर माता पिता व अन्य भाई बंधुओंको न देखकर बुरी तरहसे गाने लग जाती हैं, इस बातका किञ्चित विचार नहीं करतीं कि 'मेरे माता पिता क्या कहेंगे, क्या विचार करेंगे'?। इस बातको देखकर कलेजेमें दाह लग जाती है और कहे विना रुका नहीं जाता परंतु आंधीमें नतुल्यिे की पुकार व्यर्थ जाती है। यदि किसी स्त्रीको गालियें न गानेके हेतु समझाया जाता है तो वह समझाने वालेको असभ्य और जागलस कहनेको उद्यत हो जाती हैं। यदि इसी प्रकार हमारे तरफ़के जैनियोंकी दशा रही तो कभी भी ये जैनी उन्नति के शिखर पर नहीं पहुंच सकेंगे।

द्वितिय कुप्रथा यह है कि जैनी भाई वैश्याओंको अर्थात् कलियुगी कुलदेवियोंको बुलवाकर द्रव्य खर्च करके एक दूसरें में गालिये गवाते हैं। हाय! वह नीच जाति वैश्या हमारी उच्च जातिके मनुष्योंमें गालिये दे रही हैं। जिसको सुनकर हम प्रसन्न हो रहे हैं और अशुभको शुभ समझते हैं। बहुतसे भाई तो सभामें नाक रखनेके लिये मस्तककी पघड़ी बेच कर कलियुगी कुलदेवियोंके द्रव्य भेंट करते हैं और समाजमें बड़े आदमी कहलाने लगत हैं। यदि इन महाशयोंसे मंदिरजीके जीर्णोद्धारकी मदद के लिये अथवा श्रीजी की पूजन व पक्षाल की सामिग्री के लिये कहा जाय तो अपनी गरीबी व असमर्थता के सुबूत बतलाने लगते हैं। इन वैश्याप्रेमियोंको यह नतीजा मिलता है कि रुपयेका रुपया गया और व्याजमें जते खाये। पहले किया हुआ पाप इनको अच्छे काम करनेसे रोकता है।

प्रिय पाठकगण! क्या आपको यह मालुम नहीं कि वैश्या-प्रसंग से कितने भयंकर परिणाम मिलते हैं? देखिये—

कायासे काम जात, गांठहूंसे दाम जात।
नारीहूंसे नेह जात, रूप जात रंगसे॥
उत्तम सब कर्म जात, कुलके सब धर्म जात।
गुरुजनसे शर्म जात, अपनी मति भंगसे॥
रूपरंग दोऊ जात, शास्त्रसे प्रतीत जात।
प्रभुजीसे नेह जात, मदनकी उमंगसे॥
जप तपकी आश जात, सुरपुरका वास जात।
भूषण विलास जात, वैश्याके प्रसंगसे॥

तीसरी भयंकर कुप्रथा 'कन्याविक्रय' की है। कन्याका पिता वरको सुन्दर, चतुर और गुणवान व वरकी योग्य अवस्था न देख कर घरकी परीक्षा करता है। वरकी धनाढ्यता और उससे कुछ द्रव्य लेनेके लोभसे अपनी सुकुमार बालिकाका वृद्धके साथ विवाह कर देते हैं। इसका नतीजा यह निकलता है कि वह वृद्ध मनुष्य आयु पूर्ण होनेपर मर जाता है और वह बालिका छोटी ही अवस्थामें वैधव्यताको प्राप्त कर लेती है। यही सबब है कि हमारी जातिकी मनुष्यगणना कम होती है। वृद्धविवाह करना ऊंटके गलेमें बिल्ली बांधनेके समान है। हिलती हुई गर्दन विवाह करनेसे मना करती है और श्वेतकेश मृत्युकी निकटता बतलाते है जो पर भी हाय व नहीं मानते।

हे भाईयो! आप कृपा करके इन उपरोक्त बातों पर टुक तो ध्यान दीजिये। यदि आप ध्यान न दें तो हमारी समाजकी उन्नति होना मुश्किल है। अब सोनेका समय नहीं है। आज कल और समाजोंकी उन्नति बहुत हो रही है। लेकिन हमारी ओर के जैनियोंको तो अभी नींदसे फुरसद ही नहीं मिलती। इसका प्रबन्ध सिवाय पंचोंके कोई नहीं कर सकता। हां, अपने२ घरमें तो सब ही प्रबंध कर सकते हैं, परंतु सबके घरका प्रबंध तो पंच ही कर सकती है।

आशा है कि हमारी तरफके अर्थात् रि. कोटाके जैनी जो इस समय नींद ले रहे हैं, शीघ्रही जागेंगे और उचित प्रबंध करेंगे, जिससे हमारी समाजको भी उन्नतिके शिखर पर पहुंचनेमें किसी प्रकारका कष्ट न पहुंचे। बस, मैं आपसे 'जय जिनेन्द्र' करके मेरे लेखको पूर्ण करता हूं।

मोतीलाल पहाड़्या, कुनाड़ी-(कोटा)



*सभापतिकी वक्तृताका सारांश।



मैं पंढरपुर (जिला शोलापुर) का निवासी हूं। वहां श्रीपार्श्वनाथका जैन मंदिर है। छोटी उम्मरसे मैं जानता था की जैनियोंका यह मंदिर है परन्तु मुझे इससे अधिक ज्ञान न था। मैं पाश्चिमात्य विद्वानोंका लाभ लेने जब जर्मनी गया, तब प्रोफेसर जैकोबीसे जो गत वर्ष इसी महोत्सवमें सभापतिके पदको सुशोभित कर रहे थे, उनसे जैनधर्मका मुझे बहुत हाल मालूम हुआ।

मैं प्राकृतकी पुस्तकोंको पढ़ता था। तथा हैले (जर्मनी) में प्राकृतमें व्याख्यान भी देता था। जैनाचार्य त्रिविक्रमकृत प्राकृत व्याकरण मैंने पढ़ी है।

* स्याद्वाद महाविद्यालय [काशी] का वार्षिकोत्सवके सभापति डॉ. टी. के. लड्डू बी. ए. कैन्टम पी. एच. डी. प्रोफेसर संस्कृत क्वीन्स कोलेज (काशी) की वक्तृताका सारांश।

बुद्ध-निर्वाणके आज २४५८ वर्ष वीते मानते हैं। सो यहां मिलान खा गया कि महावीर बुद्धके पहले निर्वाण-प्राप्त हुए। नहीं तो बौद्ध गणना और "दिगंबर जैन" गणना से अर्हन्तका अन्त बुद्ध-निर्वाण से १६। १७ वर्ष पीछे सिद्ध होगा जो पुराने सूत्रों की गवाही के विरुद्ध पड़ेगा। ['पाटलिपुत्र.']

पाठकवृन्द, आज यह लेख एक आवश्यकीय प्रश्नके रूपमें देखकर आपके समक्ष रक्खा जाता है। इतिहासविज्ञ महोदय, इस प्रश्नका उत्तर शीघ्रही खोज करके प्रकट करनेका प्रयत्न करें।

संपादक.

समयनी किंमत.

દિન પ્રતિ દિન કાળ ચાલ્યોજ જાય છે, મન જાણે છે કે મોટા થઇએ કિન્તુ વસ્તુતઃ આયુષ્યમાંથી ઓછા થઇએ છીએ, તેથી આપણી મુખ્ય ફરજ એ છે કે **સમયની કિંમત સમજી તેનો સદુપયોગ કરવો જોઇએ.** એક ક્ષણની પણ ઉપક્ષા નહિ કરવી જોઇએ. આપણા જીવનને આપણે બે વિભાગમાં વહેંચી શકીએ. પ્રથમ **પ્રવૃત્તિ** માર્ગ અને દ્વીતીય **નિવૃત્તિ** માર્ગ જેને જૈન પારીભાષિક શબ્દોમાં **ગૃહસ્થાવસ્થા** અને **સાધુ અવસ્થા** એમ કહી શકીએ.

સાધું કિંવા મુનિઓ પોતાના સમયની કિંમત સમજી અધ્યાત્મમાર્ગમાં તલ્લીન રહે છે અને ધર્મની સમાન સમયનું રક્ષણ કરે છે. રાત્રિ દિવસમાં નિંદ્રા ઓછી લઇ, નિંદ્રાનો નાશ કરી જેમ બને તેમ સમય ધ્યાન, સ્વાધ્યાય તથા આવશ્યક ક્રિયાઓ કરવામાં વ્યતિત કરે છે; આવી રીતે દરેક ગૃહસ્થ અને સબ્નારીએ પોતાની અનુકુળતા પ્રમાણે સમયનો વિભાગ પાડી ટાઇમટેબલ બનાવી નિત્ય પોતાનું કાર્ય કરવું જોઇએ અને સમય, દ્રવ્ય તથા શરીર બળને હાનિ કરનાર વ્યસનોનો ત્યાગ કરવો જોઇએ અને જુગાર રમવો, પાનાં, ચોપાટ વગેરેની રમતોથી, કેફી વસ્તુઓના ખાનપાનથી, વિકારોને વધારી દે તેવી કથાઓના નિર્માલ્ય પુસ્તકોથી તથા નૃત્યો અને નાટકોમાં ફસાઇ સમયનો દુરૂપયોગ કરવો જોઇએ નહીં. જે લોકો રૂપિઆ પૈસા ખર્ચી પાના-સેતરંજ ખેલીને પોતાના જીવનના ભાગ સમયને વ્યર્થ ગાળે છે તે પોતાના અમૂલ્ય સમયને ખોવા ઉપરાંત અનેક લૌકિક અને પારલૌકિક **દુઃખોને આમંત્રણ આપે છે.**

જે લોકો ભાંગ, તંબાકુ, ચરસ, ગાંજો, અફિણાદિ કોઇ પણ પ્રકારની નીશા ઉત્પન્ન કરવાવાળી વસ્તુઓનું વ્યસન રાખે છે, તે પોતાના સમય તથા દ્રવ્યનો વિનાશ કરે છે. એટલુંજ નહિ પણ મોક્ષસુખ પ્રાપ્ત કરાવી શકે એવા શરીરનો વિનાશ કરવાના સાધનો ગ્રહણ કરે છે જે લોકો કામ ઉત્પન્ન થાય અને વિકારોને વધારી દે તેવા નિર્માલ્ય પુસ્તકો વાંચવામાં મશગુલ રહે છે તેની દરજીઓ નૃત્ય-નાટકો જોવા પ્રતિજ અધિક

इस वर्षके ग्राहकोंको हिन्दी-गुजराती भाषाकी ८-१० पुस्तकें ऊपहारमें मिलेंगी।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रकट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

The Digamber Jain.

सुतं सुलेखैं र्विविधैश्चचित्रै, दिगम्बरंजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुत्तमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ८ मुं. | वीर संवत २४४१ चैत्र. विक्र. सं. १९७१. | अंक-६ ठो.



महावीर जयंती आवी छे.

ए निमित्ते शुं करशो ?

जोतजोतामां एक वर्ष वीती गयु छे अने वळी पाछो एक वरस तेज उत्तम दिवस आवी पहोंच्यो छे के जे दिने त्रणे लोकोना जीवने साता उपजी हती. ए तेज दिवस छे के जे दिने इंद्रनुं आसन पण कंपायमान थयुं हतुं अने तेमनो मुकुट पण नमी गयो हतो. ए तेज दिवस छे के जे दिने कल्पवासी देवोने त्यां घंटनो नाद, व्यंतरवासी देवोने त्यां ढोलनो नाद, ज्योतिष देवोने त्यां भेरीनो नाद अने भवनवासी देवोने त्यां शंखनो नाद पोतानी मेळेज थयो हतो. ए तेज दिवस छे के जे दिने सौधर्म स्वर्गना इंद्रनी इंद्राणी कुंडलपुरना राजा सिद्धारथना मेहेलमा प्रवेश करीने त्रिशलादेवीना प्रसुतिग्रहमाथी तरतना जन्मेला बालकने उठावीने तेना स्थानमां मायामयी बालकने मुकी गई हती. ए तेज दिवस छे के जे दिने सौधर्म इंद्र प्रभुने ऐरावत हाथीपर आरोहण करी सुमेरु पर्वतपर लई गया हता अने ईशान स्वर्गना देवोए छत्र अने सनत्कुमार तथा माहेन्द्र स्वर्गना देवोए चमर ढाल्या हता अने बाकीना इंद्रोए जयजयकार करता आकाशमार्गेथी सुमेरू पर्वत पर पहोंचीने पांडुकशीलाउपर प्रभुनो अभिषेक कर्यो हतो अने पछी इंद्राणी प्रभुने वस्त्राभूषण पहेरावी उत्सव सहित मातापिता पासे लावी हती अने त्यां देवो सेवक थइने रह्या हता. आवो परम पवित्र अने उत्तम दिवस बीजो कोई नहि, पण चैत्र सुदी १३ नो शुभ मंगलमय दिवस छे के जे दिने अढी हजार वर्ष उपर कुंडलपुर नगरमां सिद्धारथ राजाने

त्यां त्रिशलादेवीनी कूखे आपणा जगदोद्धारक चर्म तीर्थंकर श्री **महावीरप्रभुनो** जन्म थयो हतो अने त्रणे लोकमां आनंदआनंद वर्ताइ रह्यो हतो.

हवे ज्यारे एक मातापिता पोताना पुत्र के पुत्रीनो जन्मदिन याने **वर्षगांठ** हर्षथी उजवे छे, राजा महाराजानो जन्मदिन जाहेररीते पळाय छे, अनेक धर्मो जेवाके वैष्णवोमां कृष्णनीजयंती गोकुळअष्टमी याने **जन्माष्टमी** जाहेर रीते अपूर्व उत्साहथी पळाय छे; रामचंद्रजीनो जन्म **रामनवमी** तरीके उजवाय छे, पारसी भाईओ-ना **जरथोस्तनी** जन्मतीथि जाहेररीते उजवाय छे, अने **मोटा** मोटा महा पुरुषोनो जन्मादिन याने जयंती पण आनंदथी मनाय छे, तो पछी आपणा जगदुद्धारक, परमपूज्य पिता **श्री महा-वीरप्रभुनीजयंती** याने महावीरप्रभुनो जन्मादिन **शुं भारे ठाठमाठथी उजववानी जरुर नथी ?** जो आपणे ए वीर प्रभूनी जयंती न उजवीए, तो कृतघ्नज कहेवाइए.

卐 卐 卐 卐

आपणा भाइओमां पर्युषणपर्वमां **भादरवा सुद १** दिने महावीरजन्मनो प्रसंग सांभळवामां आवतांज केटलो बधो आनंद मनाय छे अने केटलां बधां नाळियेरो वगेरे वधेरायछे के लगभग घणा भाईओनी एज मान्यता थई गई छे के महावीरप्रभूनो जन्मादिन तो भादरवा सुद १ ने दिने छे पण भाईओ, तेम नथी. ए वीरप्रभूनो खरो जन्मदिवस तो चैत्र सुदी १३ ज छे के जे शुभ दिवस हालमां एटले आवती ता. २९ मी एप्रील अने **सोमवार** ने दिने आवी पहोंच्यो छे.

हवे ज्यारे आपणा **श्वेतांबरी** भाईओमां घणे स्थळे **महावीरजयंती** केटलांक वर्षोथी उजवाय छे, पण दिगंबरी भाईओमां ते घणीज ओछी उजवायछे, तेनुं कारण आळस, बेदरकारी अने मोजमजाह सिवाय बीजुं कशुंए नथी, बे त्रण वर्ष थयां जोके केटलेक स्थळे आ जयंती उजवाय छे, पण ते जोइए तेटला उत्साहथी अने जोइए तेटला स्थानोमां उजवातीज नथी, माटे दरेक जैन बंधुनी पछी ते **दिगंबरी, श्वेतांबरी के स्थानकवासी** गमे ते होय ते दरेकनी **फरज** छे के आ जयंती तो अवश्य उजवीज जोईए. आ कंई मुसलमानी जुल्मी शासन नथी के तमने तमारो धर्म पाळता अटकावशे, पण आ तो **न्यायशील शांतिमय ब्रीटिश राज्य** छे के जेमां हरकोई व्यक्ति पोतपोताना धर्मनी मान्यता प्रमाणे पोतपोतानो धर्म पाळी शके छे, तो हवे आवा निर्भय समयने आपणे हाथमां आवेलो खाली केम जवा देवो जोईए ? ए तो देखीती वीना छे के दरेक बाबतनी चर्चा थवाथीज तेनुं भान अने याददास्त सर्वेने आवी शके छे माटे **दरेक जैन पत्रकारनी** खास फरज छे के आ विषयने पोतपोताना पत्रोमां उपाडी लई एवो प्रयास करवो जोईए के भविष्यमां एक एवो समय पण आवी लागे के **महावीरजयंतीनो पर्व एक जाहेर त्हेवार तरीके पळावी शकाय.**

卐 卐 卐 卐

जे परगोपकारक प्रभूना ए बतावेला मार्गथी आपणुं मलीन मन शुद्ध थई आपणे भवोभव तरी जईए छीए ते भगवानना यशोगान **वर्षमां** एकज **दिवस** जयंती निमित्ते गावाने कयो जैन-बंधु ना पाडे तेम छे? **सारांशके महावीरजयंती** उजववा माटे तो हरकोई जैनबंधु तत्पर थवा वगर रहेशेज नहि. हवे आ जयंती उजववी जोइए, ए तो नक्कीज थयुं, पण ते केवीरीते

उजववी जोइए ए मोटो सवाल उपस्थित थाय छे, तो तेनुं निराकरण करवाने अमो नीचेनी सूचनाओ आ प्रसंगे करवानुं उचित धारीए छीए के जे उपर सर्वे जैन बंधुओ अवश्य लक्ष आपशेज.

जयंती केवीरीते उजववी ?

१. दिगंबरी श्वेतांबरी अने स्थानकवासी त्रणे फिरकाना जैनो एकज महावीर पिताने माने छे अने ए पूज्य पितानो जन्मदिन पण चैत्र शुद १३ नोज माने छे तो आ एवो दिवस छे के जे दिवसे त्रणे फिरकाना जैनोए एकत्र मळीनेज आ जयंतीउत्सव उजववो जोइए.

२. दरेक घरो, मंदिरो, दुकानो वगेरेने वावटा, तोरण, निशानो वगेरेथी एवा तो अलंकृत करवां जोइए के जेथी सर्वे एम जाणी शके के आजे जैनोनो कोई मोटो त्हेवार छे.

३. आ दिने सर्वे मंदिरोमां महावीर प्रभुनुं पूजन अभिषेकपूर्वक गानतान अने भक्ति-भावथी थवुं जोइए.

४. महावीर प्रभु कोण अने क्यारे जन्म्या हता तथा तेमनुं पूर्व भवांतर शुं हतुं तथा तेमणे जगत उपर शा शा उपकारो कर्या हता ते जाणवा माटे सर्वे स्थळे महावीरचारित्र व्याख्यानरूपे वांचवुं अथवा वंचाववुं जोइए.

५. आ दिवसने पोताने घेर मिष्ट भोजन करीने अथवा न्यातिजमण करीने जाहेर त्हेवार तरीके पाळवो अने एने प्रख्यातिमां लाववा माटे बनेतेटलो पुष्कळ प्रयत्न करवो जोइए.

६. दरेक गामेगाम अने शहेरेशहेर त्रणे फिरकाना जैनोनी एक भेगी जाहेर सभा अनुकूळ समये मोटे ठाटमाठथी करवी अने तेमां विद्वान वक्ताओ द्वारा महावीर प्रभुनुं पवित्र जीवनवृतांत अने ते उपरथी लेवानो उत्तम बोध ए संबंधी व्याख्यानो थवा उपरांत त्रणे फिरकामां मांहोमांहे ज्ञातिओमां अनेक जातना कुसंपो अने तडो जोवामां आवेछे, ते आ प्रसंगनुं निमित्त लइ सरळ परीणाम करी ज्यां ज्यां न्यातिझघडाओ तथा तीर्थना झघडाओ पडेली होय तेनो सरळ मन करी निकाल लावी नांखवो जोइए.

८. ज्यां ज्यां सभा-पाठशाला बंध पडी गई होय अथवा न होय तो ते चालु करवानो प्रबंध थवो जोईए. सारा वक्ताओ उत्पन्न करवानो एक सहेलो उपाय जाहेरसभाओज छे माटे दरेक स्थळे अठवाडीक, पाक्षिक के पछी मासिक सभाओ अवश्य स्थापवानी जरुर छे.

९. आ शुभ दिने [illegible] बोर्डिंग, पाठशाला विद्यालय, श्राविकाश्रम, अनाथाश्रम वगेरे सर्वे जैन संस्थाओने शणगारी ते दिवसे विद्यार्थीओने मिष्ट भोजन [illegible] एक सभा भरी तेमां विद्यार्थीओ सन्मुख सुप्रीन्टेन्डन्ट के धर्मशिक्षके महावीरप्रभुनुं जिवनचरित्र अने ते परथी लेवानो बोध ए संबंधी व्याख्यान आपी विद्यार्थीओमां भ्रातृभावनो वधारो थाय एवा प्रयासो करवा जोइए तथा एवी संस्थाओमां जो अठवाडीक सभा (Debating Soci[illegible]) [illegible] थती होय तो ते शरु करवानी जरुर छे.

१०. आपणी उन्नतिना खास कारणभूत आपणी कोममांथी प्रगट थता पाक्षिक, मासिक के अठवाडीक पत्रोज छे, तेनो वधु लाभ लेवाय ते माटे सर्वेए पोतपोतानी शक्तिमुजब एक अथवा वधू तेवां पत्रो मंगाववानो निश्चय करवो जोइए.

त्यां त्रिशलादेवीनी कूखे आपणा जगदोद्धारक चर्म तीर्थंकर श्री **महावीरप्रभुनो** जन्म थयो हतो अने त्रणे लोकमां आनंदआनंद वर्ताइ रह्यो हतो.

हवे ज्यारे एक मातापिता पोताना पुत्र के पुत्रीनो जन्मदिन याने **वर्षगांठ** हर्षथी उजवे छे, राजा महाराजानो जन्मदिन जाहेररीते पळाय छे, अनेक धर्मो जेवाके वैष्णवोमां **कृष्णनीजयंती** गोकुळअष्टमी याने **जन्माष्टमी** जाहेर रीते अपूर्व उत्साहथी पळाय छे; रामचंद्रजीनो जन्म **रामनवमी** तरीके उजवाय छे, पारसी भाईओना **जरथोस्तनी** जन्मतीथि जाहेररीते उजवाय छे, अने **मोटा** मोटा महा पुरुषोनो जन्मदिन याने जयंती पण आनंदथी मनाय छे, तो पछी आपणा जगदुद्धारक, परमपूज्य पिता **श्री महावीरप्रभुनीजयंती** याने महावीरप्रभुनो जन्मदिन **शुं भारे ठाठमाठथी उजववानी जरुर नथी ?** जो आपणे ए वीर प्रभुनी जयंती न उजवीए, तो कृतघ्नज कहेवाइए.

* * * समाचार जाहेर पत्रोमां ... पर्युषण मोकलवा जोईए.

उपरोक्त उपायो सिवाय जैन कोममां संप, जाग्रति अने उन्नति थाय तेवा प्रयत्नो आ जयंती निमित्ते आदरवा जोइए. कारण वगर कार्य करवानुं मन थतुंज नथी, माटे आ महावीर जयंती जेवा परम पुण्यकारक पर्वनिमित्ते जे कंई तमे धारशो ते करी शकशो, माटे आ अल्प सूचनाओ वांचतानी साथेज ते तरणतारण त्रिलोकीनाथ, दयासागर, महापराक्रमी श्री **महावीरप्रभू** याने श्री वर्द्धमानस्वामीनी जयंती (जन्मतिथि) आ चैत्र सुद १३ ने दिने पोतपोताना गाममां बनी शके तेटला भारे उजवाय छे, पण दिगंबरी भाईओमां ते घणीज ओछी उजवायछे, तेनुं कारण आळस, बेदरकारी अने मोजमजाह सिवाय बीजुं कशुंए नथी, बे त्रण वर्ष थयां जोके केटलेक स्थळे आ जयंती उजवाय छे, पण ते जोइए तेटला उत्साहथी अने जोइए तेटला स्थानोमां उजवातीज नथी, माटे दरेक जैन बंधुनी पछी ते **दिगंबरी, श्वेतांबरी** के **स्थानकवासी** गमे ते होय ते दरेकनी **फरज** छे के आ जयंती तो अवश्य उजवीज जोईए. आ कंई मुसलमानी जुल्मी शासन नथी के तमने तमारो धर्म पाळता अटकावशे, पण आ तो **न्यायशील शांतिमय ब्रीटिश राज्य** छे के जेमां हरकोई व्यक्ति पोतपोताना धर्मनी मान्यता प्रमाणे पोतपोतानो धर्म पाळी शके छे, तो हवे आवा निर्भय समयने आपणे हाथमां आवेलो खाली केम जवा देवो जोईए ! ए तो देखीती वीना छे के दरेक बाबतनी चर्चा थवाथीज तेनुं मान अने यादुदास्त ... तेमज ...

... नुं नास थयां जेनो ... घणा खरा पत्रोए आ सवालने उपाडी लीधो छे अने पं. अर्जुनलालजीने आम वगर तपास करे अने वगर न्याय करे एक वर्ष थयां जेपुरनी जेलमां केद राखेला छे तेमने योग्य इन्साफ आपवाने जेपुरराज्य अने नामदार वाइसिरोयने अनेक आजीजीओ करी रह्या छे, छतां पण अजब जेवुं छे के तेनी जरापण असर थती नथी तेम जेपुरराज्य के सरकार तरफथी ए संबंधी कंई खुलासो मळतो नथी. आ माटे जैन अजैन सर्वेमां एटलो बधो खळभळाट चाली रहेलो छे के ते समाचार वीगतवार आपतां पानांनां पानां भराई जाय, माटे हाल सुधी ए संबंधी अमने खबर मळी छे ते टुंकमां जणावीशुं

पाठशालाकी स्थापनाः— डेरागाजी-खां में माघ मासमें मंदिर प्रतिष्ठोत्सव हुआ था जिसमौकेपर लाला देवीदासजीने २०००) देकर शंभूराम दि. जैन पाठशाला खोलना स्वीकार किया जिसका मुहूर्त भी हो गया और उसमें २०) मासिककी औरभी सहायता मिली है। इसी मौकेपर उपदेशक हकीम श्यामलालजी, ब्र. शीतलप्रसादजी, पं. दर्यावसिंहजी सोधिया आदिके महत्वपूर्ण व्याख्यान भी हुए थे और ४००० जैनों एकत्रित हुए थे।

પાવાગઢની મુલાકાતે ગવર્નરઃ— મુંબઇના નામદાર ગવર્નર લોર્ડ વીલીંગટન સાહેબ તથા તેમના બાનુએ ગઇ તા० ૧૩મી એ આપણા સિદ્ધક્ષેત્ર શ્રી પાવાગઢની મુલાકાત લીધી હતી, જે પ્રસંગે એ તીર્થની પ્રબંધકમીટીના ૧૦ મેમ્બરો હાજર હતા અને પહાડ ઉપર મંડપ બાંધી ગવર્નર સાહેબનો સારી ધામધુમથી સત્કાર કરી પાન ગુલાબ આપવામાં આવ્યા હતા, જે પ્રસંગે શ્રીયુત નાનચંદ પુંજાભાઇ બી. એ. એ ઇંગ્લિશમાં પાવાગઢ પહાડ માટે વિવેચન કરતાં જણાવ્યું હતું કે અમારી સમાજ તરફથી આપને માન આપતાં અમને ઘણોજ હર્ષ થાય છે. આ પહાડ ઉપર રામચંદ્રજીના બે પુત્રો લવ-કુશ અને પાંચ કરોડ મુનિ મુક્તિપદને પામ્યા છે જેથી એને જૈનો ઘણોજ પવિત્ર માને છે. હિંદુસ્તાનની સરકાર તથા સ્થાનિક અમલદાર સાહેબો આવા પુરાતન તીર્થનું રક્ષણ કરે છે તથા તેને ઉત્તેજન આપે છે જેથી આપ સાહેબોનો ઉપકાર માનીએ છીએ અને હાલના પ્રાથમ રણસંગ્રામમાં આપણા બ્રીટીશ સરકાર અને મિત્ર રાજ્યોને અમારા મહાવીર પ્રભુ વિજય આપે એવી પ્રાર્થના કરીએ છીએ વગેરે. એના જુવાબમાં નામદાર ગવર્નર સાહેબે આપણુના રૂપમાં જણાવ્યું હતું કે આ પ્રાચીન તીર્થનું નિરીક્ષણ કરી અમો ખુશી થયા છીએ. હું જ્યાં સુધી મુંબાઇનો ગવર્નર છું ત્યાં સુધી તમારી ધાર્મિક લાગણીને માન આપવા બનતો પ્રયત્ન કરીશ. હું સારી રીતે જાણું છું કે જૈનો ઘણા રાજભક્ત છે વગેરે. આ પ્રસંગે સુરત, મુંબાઈ, વડોદરા, અંકલેશ્વર, છાણી, બોરસદ, દાહોદ, સોજીત્રા વગેરેના ભાઇઓ પણ હાજર હતા અને આ સ્વાગતનું કાર્ય સેક્રેટરી શેઠ લાલચંદ ફુલચંદ ઠીક રીતે પાર પાડ્યું હતું.

नवीन मासिकः—काशीसे ज्येष्ठ माससे 'तरंगिणी' नामका एक बड़ा और सचित्र मासिक 'सरस्वति' के ढंगपर वसंतराम व्यासद्वारा संपादित होकर निकलनेवाला है। वार्षिक मू. ३) है, परंतु गंगा दशहरातक ग्राहक होनेवालेका २॥) है।

भट्टारक सुरेंद्रकीर्तिजी मालवाडा थइ भलाडा, परीएज, तारापुर तरफ भ्रमण करी रहेला छे अने धर्मोपदेश आपे छे तथा देथलीमां जीवदयानो उपदेश आपवाथी रु. २०१) लुहाणा जेभाइ चहेचर तरफथी खेडा ढोरनी पांजरापोळने अपाया छे एम अमोने जणाववामां आवे छे.

મૃત્યુના સ્મરણાર્થે દાનઃ—ઓરાણમાં શા. કસ્તુરચંદ જેચંદની વિધવા કસ્તુરબાઈ ફાગણ સુદ ૧૨ ને દિને મૃત્યુ પામ્યાં છે જેમની પાછળ શા. હાથીચંદ માણેકચંદ તરફથી રૂ. ૨૦૦) કાઢવામાં આવ્યા છે તે-

માંથી ૧૦) આરાણ પાઠશાલા, ૫) અર્જુનલાલજી સહાયક ફંડ, ૨૫) અમદાવાદ દિ. જૈન બોર્ડિંગમાંથી મેટ્રીકની પરીક્ષામાં પહેલે નંબરે પાસ થનાર વિદ્યાર્થીને પાંચ વર્ષ માટે વાર્ષિક પાંચ પાંચ રૂપીઆ ઇનામ આપવા માટે, ૨૫) 'દિગંબર જૈન'નાં ગ્રાહકોને સંસારસુધારાનું એક પુસ્તક ભેટ વેંચવા માટે, તથા મુંબાઇ શ્રાવિકાશ્રમ નડિયાદ અનાથાશ્રમ, રૂષભ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ, આરા સિદ્ધાંત ભવન, સોનાસણ પાઠશાલા, ઇડર પાઠશાલા તથા કેટલાંક તીર્થો અને મંદિરો ઉપર મોકલવા ઉપરાંત ૫૫) સગાંઓમાં વેંચી આપ્યા છે.

इन्दौरमें पूजनविधान और निमाड प्रां. महासभाका अधिवेशनः— इन्दौरमें चैत्र शुक्ल ४—५—५ को श्रीमान लाला जुगमंदरलाल जैनी एम. ए. बेरीस्टर एट लो और हाई कोर्ट जज के प्रमुखत्वमें श्री मालवा निमाड प्रां. महासभाका वार्षिक अधिवेशन हुआ था और उसी समयपर बड़े समारोहके साथ शेठ जयचंदजी चुनीलालजीकी ओरसे त्रिलोकसारविधान रथोत्सवपूर्वक हुआ था, जिसका विस्तृत हाल आगामी अंकमें दिया जायगा।

सभी औषधि विनामूल्यः—मालवा दि. जैन प्रांतिक सभाके शुद्ध औषधालयसे सर्व प्रकारकी औषधियां सर्वसाधारणको विनामूल्य पोस्टेज व पेकिंग खर्च मात्रसे भेजी जाती है। कई जगह प्लेगका प्रकोप होनेसे इस भयानक रोगकी औषधि भी तैयार कराकर भेजी जा रही है जिससे लाभ भी पहुंचा है। अतः सर्वसाधारणको चाहिए कि जहां२ प्लेगका प्रकोप हो वे इस औषधिको मँगाकर लाभ उठावें तथा अन्य महाशयोंको भी सूचना करदे ताकि वे भी मंगा सके। औषधि मंगाने वालेको निम्नलिखित पतेपर पत्र व तार भेजना चाहिए— लाला भगवानदास, महामंत्री, मालवा प्रां. सभा दफतर, बडनगर (मालवा)।

खास अंकके लेखकी असरः—गढाकोटासे हरिश्चंद्र बजाज सूचित करते है कि "दिगंबर जैन" के खास अंकके लेख 'लोभी और फैय्याजी' को पढकर मैंने यह प्रण किया है कि—"जो शादीमें फिजूलखर्ची करेगा या कन्याविक्रय करेगा या जैनपद्धतिसे विवाह न करेगा उस शादीमें मैं शरीक नहीं होउंगा बशर्ते कि पेश्तर तलाश करनेसे अगर मालूम हो जाय, अगर मालूम न हो तौभी इतना प्रण अवश्य पालूंगा कि अगर शरीक हो जाने पर भी मालूम हो जावे कि कन्या या वरविक्रय हुआ और जैनपद्धतिसे विवाह न होगा तो उस शादीमें भोजन नहीं करुंगा बल्कि उसके किसी भी कार्यमें योग नहीं दूंगा लेकिन फिजूलखर्चीके निस्बत इतना सख्तीसे प्रण नहीं, अगर पेश्तरसे मालूम हो जावे तो वैसाही करुंगा"। यदि सभी भाई ऐसा ही प्रण करलेवे तो बातकी बातमें कन्याविक्रय फिजूलखर्ची, अजैनपद्धतिसे विवाह आदि

कुप्रथाएं अपनेआपही बंद हो जाय।

क्षुल्लक जानकीलालजी महाराज अभी बुंदी–कोटाकी तरफ विहार कर रहे है। अन्य त्यागी ऐलक, क्षुल्लक आदि कहां२ विहार कररहे हैं उसका समाचार जिन२ भाईयोंको मालूम होवे उन्होंने हमको पत्रद्वारा सूचित करना चाहिये जिससे कि हम त्यागीयोंके भ्रमणका समाचार हरएक अंकमें प्रकट कर सकें।

ओराणमां सभा थई पं. अर्जुनलालजी ना सहायक फंडमां रु. १६। 'जैन मित्र' ओफिस (मुंबाई) ने मोकलवामां आव्या छे तथा रु. ७। त्यांनी लायब्रेरीमां भेट अपाया छे।

वडनगरमें मेला–प्रतिष्ठा और कोन्फरंसः बडनगर (मालवा) में द्वितीय वैशाख शुक्ल २ से ६ तक बिम्बप्रतिष्ठोत्सव होनेवाला है उसी अवसर पर मालवा दि. जैन प्रांतिक सभाका नैमितिक अधिवेशन होनेकी स्वीकारता हो चुकी है और जिसके लिये अभीसे तैयारीआँ हो रही हैं। स्वागत कारिणी कमीटीकी प्रथम बैठक होकर ७६ मेम्बर नियुक्त हुए हैं जिसमें सभापति सेठ धन्नालालजी पीपल्या, संरक्षक सेठ घासीलालजी उज्जैन और सेक्रेटरी सेठ पन्नालालजी बडनगर तथा सेठ कल्याणमलजी उज्जैन है। अधिवेशनके सभापति होनेके लिये सेठ सुखानंदजी, शाह जुगमंदरदासजी, रा. ब. ला. घमंडीलालजी, लाला जम्बूप्रसादजी, रा. ब. सेठ नेमीचंदजी, और रा. सा. द्वारकाप्रसादजी इन ८ महाशयोंमें क्रमशः पत्रव्यवहार करनेपर जिन महाशयकी स्वीकारता आवेगी उन्हीके सभापतित्वमें यह अधिवेशन होवेगा। इस उत्सव और अधिवेशनमें पधारनेके लिये सभी त्यागीओं, श्रीमानों, विद्वानों और सर्वसाधारणको महामंत्री लाला भगवानदासजी अभीसे सविनय आमंत्रण करते है।

विवाहमें दानः—नांदगांवमें कुंजीलालजी और भाउलालजी पहाडेकी सुपुत्रियांका लग्न जैनविधिसे हुआ, जिसके उपलक्षमें ७०७) नांदगांव मंदिर–पाठशाला, बनारस महाविद्यालय, रुपभ ब्रह्मचर्याश्रम, मोरैना विद्यालय आदिको दिये गये है।

कटनी–पाठशाला चिरस्थायी हो गईः—कटनी–मुरवाडाकी पाठशालामें ६० छात्र पढ़ते है और बोर्डिंग भी है जिसके लिये १२०००) का मकानभी बन गया है और ब्र. शीतलप्रसादजीके उद्योगसे गत ता. २५ फरवरीको वहांके भाइयोंद्वारा पाठशालाकी चिरस्थायीताके लिये रु. १०५०५) का स्थायीफंड हो गया है। धन्य है ब्रह्मचारीजी के प्रयासको!

उपंगहीन प्रतिमाओंका अविनयः—इटावासे ९ मील असाईखेडा नामका एक प्राचीन ग्राम है वहां यमुना नदीके तटपर

एक प्राचीन जीर्ण किला है जिसको राजा जयचंदका किला कहते है और वहां बड़ी२ अवगाहनाकी वीसों दि. जैन प्रतिमाएं कुछ अंगहीन कुछ उपंगहीन पडी हुई हैं उनकी अविनय हो रही है। अनेक भंगीयोंने इन्हींके पास अपने झोपड़े बना लिये हैं और झुंडके झुंड सुअर फिरते हुए इन मूर्तिओंकी अविनय करते है। संभव है किं राजा जयचंद जैनी होगा। शास्त्रोंसे प्रकट है कि मस्तक, बाहु, टांग आदि अंगसे हीन प्रतिमा अपूज्य है पर कान नाक आदि अंगोंसे छिन्न प्रतिमाओं पूज्यनीय हैं इसलिये उचित है कि पूज्यनीय प्रतिमाओंको लेजाकर किसी मंदिरजीमें विराजमान करनी चाहिये और अपूज्य हैं उनकी अविनय न कराकर एक स्थानमें विराजमान कर उनपर छायाका प्रबंध करना चाहिये। नयी बिम्ब प्रतिष्ठा करानेकी अपेक्षा, प्राचीन जीर्ण मंदिरकी प्रतिमाओंकी रक्षा करना अति पूण्यवर्द्धक है इसलिये इटावाके भाइओंको यह कार्य प्रारंभ करना चाहिये। आवश्यकतानुसार मदद भी बाहरसे मिल सकती है। उन प्रतिमाओं पर संवत् आदि क्या अंकित है वह भी इतिहासखोजी भाईओंको जाकर देखना चाहिए। इस बारेमें निम्न-लिखित पतेसे पत्रव्यहार करना चाहिये-बाबूलाल शंकरलाल जैनी अग्रवाल-इटावा

पद्मावती परिषदका उत्सवः—फिरोजाबाद स्टेशनसे १२मीलपर फरिहागंजमें चैत्र शुक्ल ९-१०-११ को रथोत्सवपूर्वक पद्मावती परिषदका तृतीय वार्षिकोत्सव होनेवाला है।

सेठीजीके बारेमें कलकत्तामें भरसक प्रयत्नः— पं. अर्जुनलालजी सेठीके बारेमें कलकत्तामें बड़ी भारी सभा होकर उनके संकटनिवारणफंडमें रु. १९००) भर गये हैं और जैनधर्मप्रबोधनीसभाकी ओरसे एक छपा हुआ लंबा मेमोरीयल नामदार जयपुरनरेशकी सेवामें भेजा जा-चुका है।

સુરતમાં મહાવીરજયંતી:—અત્રે ચૈત્ર સુદ ૧૩ ની સાંજે ૭ા વાગતે ચંદાવાડીમાં ભારે ઠાઠથી મહાવીરજયંતી ઉજવવામાં આવનાર છે, જેનું પ્રમુખસ્થાન અત્રેના નગરશેઠ બાબુભાઈ ગુલાબભાઈને આપમાં આવનાર છે અને ત્રણે ફિરકાના જૈનોને આ જયંતીમાં ભારે સંખ્યામાં ભાગ લેવાને આગ્રહપૂર્વક આમંત્રણ કરવામાં આવે છે. આ જયંતી પ્રસંગે કેટલાક ગ્રહસ્થો તરફથી પુસ્તકોની પ્રભાવના પણ થનાર છે.

જયંતી માટે તૈયારીઓ—મુંબાઇ, પાલીતાણા, ભાવનગર વગેરે અનેક સ્થળે મહાવીરજયંતી ઉજવવાની તૈયારીઓ ચાલી રહી છે.

'दिगंबर जैन' का पहिला उपहारः—इस वर्षके ग्राहकोंको कमसेकम ८ पुस्तकें उपहारमें मिलनेवाली हैं जिसमें पहिला उपहार "श्री जिनचतुर्विंशतिकाव्य"

मीलोडानिवासी लल्लुभाई गुलाबचंदकी वहिन कोदरीके स्मरणार्थ इसी अंकके साथ सभी ग्राहकोंको भेजा गया है। यद्यपि यह छोटासा उपहार है परंतु बहुतही संग्रहणीय और हरएक जैनको कंठाग्र करनेयोग्य है। उपहारका बड़ा ग्रंथ श्री सागारधर्मामृत शास्त्र मूल संस्कृतश्लोक और बड़ी हिन्दी टीका सहित छपरहा है वह तैयार होनेपर दुसरी दो तीन पुस्तकें तैयार करवाकर उपहारकी तीन चार पुस्तकें तो एकसाथ बुकपोस्टद्वारा सभी ग्राहकोंको भेजी जायंगी और शेष पुस्तकें अंकके साथ रवाना होती रहेगी। सभी पुस्तकें नवीन ही तैयार करनेकी हैं इसलिये ग्राहकगण धैर्य रखिए। इस वर्षके अंततक शनैः२ कमसेकम उपहारकी ८ पुस्तकें ग्राहकोंकी सेवामें पहुंच जायंगी। उपहारोंके बारेमें ग्राहकगण वारवार तकाज़ा लिखनेका कष्ट न उठावें।

आगामी अंकः—एक वर्षमें १२ अंक निकालनेका रिवाज़ है और आगामी वैशाख मास दो हैं इसलिये दोनों वैशाख मासका एकही अंक प्रथम वैशाख सुदी १५ तक अवश्य प्रकट किया जायगा।

ग्राहकनंबर अवश्य लिखिएः— सभी ग्राहकोंको पत्रव्यवहार करते समय अपना ग्राहकनंबर अवश्य लिखना चाहिये। एड्रेसकी साथ नवीन ग्राहकनंबर छपा हुआ रहता है उन्हींको यादरखना चाहिये।

મુંબઈમાં શેઠીજી માટે એકત્ર પોકારઃ—પં. અર્જુનલાલજી શેઠીપર આવી પડેલી નાહકની આપત્તિ માટે વિચાર કરવાને જૈનોના ત્રણે ફિરકાની એકત્ર ગંજાવર સભા મુંબઈમાં હીરાબાગમાં ફાગણ વદ ૧૪ને દિને મી. મકનજી જૂઠાભાઇ બેરિસ્ટર એટ લૉના પ્રમુખપણા નીચે ભારે લાગણીપૂર્વક થઇ હતી, જેમાં પ્રમુખ, બ્ર. શીતલપ્રસાદજી, પં. નાથુરામ પ્રેમી, શ્રી. વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ, પં. લાલન, શ્રી. મોહનલાલ દલીચંદ દેશાઇ, વગેરેનાં શેઠીજી, તેમની પત્ની ગુલાબબાઈ અને છોકરાંઓ ઉપર આવી પડેલી આફતો સંબંધી ઘણાંજ અસરકારક ભાષણો થઈ શેઠીજીની પત્ની અને બાળકો તરફ ઉંડી લાગણી દર્શાવનારો, શેઠીજીના છુટકારા માટે દરેક કાયદાસર ઈલાજ કરવાનો તથા એ માટે જેપુર મહારાજા અને નામદાર સરકારને મુંબઈના જૈનો તરફથી એક **મેમોરીયલ** મોકલવા માટેની કમીટી નીમવાનો વગેરે ઠરાવો થયા હતા. ઘણાં વર્ષો પછી મુંબાઇમાં ત્રણે ફિરકાની આવી એકત્ર સભા મળવાનો આ પ્રથમ પ્રસંગજ છે. આવીજ સભાઓ સર્વ સ્થળે થવાની જરૂર છે.

हिन्दना हीरानुं अवसान.

("वैदरभी वनमां वलवले" ए राग.)

अभिनव कोहीनूर गयुं, झलहलतुं दिनरात;
तेत्रीश कोटि जनतणां, मुख मुख एहि वात. (अभी) १.
गोपाल कृष्ण गोखले, सुंदर ए अभिधान;
कहो नथी कोण जाणतुं, आबालवृद्ध प्रमाण. (अभी) २.
लोकमान्य अति ए हता, राजमान्य विशेष;
अर्थशास्त्री वली नीपुणता, दरशावे निःशेष. (अभी) ३.
देशहितना कारणे, जलयात्रा बहु कीध;
कष्टो वेठ्या प्रवासना, करवा कारज सिद्ध. (अभी) ४.
दिन पंचाशत रही करी, लंडनमां ओ! वीर;
पंच चत्वारिंशद् भलां, आप्या भाषण धीर. (अभी) ५.
दुकाल संकट निवारणे, नीति जे हती क्रूर;
धारासभामां वखोडी तें, धरी डहापण चूर. (अभी) ६.
महेसुलनी अने चलणनी, राज्यनीति जेह;
अंदाजपत्रोनी गणतरी, हती विचित्र तेह. (अभी) ७.
सख्त टीका तेमनी, वली कीधो प्रकाश;
गणतरी जादुई उपरे, अधिकारीनी खास. (अभी) ८.
स्वदेशी अभिमानने, निरखी स्वारथ हीन;
कोन्झरवेटीव कर्झने, आप्युं पद अखिन्न. (अभी) ९.
तेथी सी. आई. ई. थया, वहाला ओ वडवीर;
गुण तारा नित्य गाईने, आंसु पाडशुं चिर. (अभी) १०.
विनीत विनवे इष्टदेवने, नमी बे कर जोड;
हिंद माताना पुत्रने, आपो शान्ति करोड. (अभी) ११.

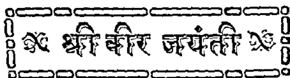
हिंदना वीरपुरुषना अवसान माटे दैवने श्राप.

(शार्दूल)

हा! हा! दैव विचार तें नहि खरे कीधो जरावार ले;
धायुं तें हरवा गमार दिलथी, चिन्तामणि गोखले.
चिन्ताचूरक हिंदनो हत थयो चित्पावनी वीररे;
ते तारा करथीज, शुं नफट हुं तारा गुणो गाउंरे.

प्रार्थी–झवेरलाल गुलाबचंद सोनी–घोघा (भावनगर).

कृतज्ञता प्रगट करनेका अवसर



प्रिय पाठको!

एक वर्षके पश्चात् पुनः हमारे भाग्योदय से वह सुअवसर कि जिसपर आप अपनी कृतज्ञता प्रगट कर सकते हैं निकट आ पहुंचा है अर्थात् श्री महावीर स्वामीका जन्मदिन चैत्र सुदी १३ तेरस (ता. २९ मार्च १९१५ इ.) का आ पहुंचा है।

यह वही दिन है जब कि हमारे अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर प्रभुने जन्म धारण करके और अपने अतुल प्रभाव से तीन लोक के जीवों को साता पहुंचाई थी। यह वही दिन है कि जब प्रभु के जन्म होते ही कल्पवासियों का घंटा, व्यंतरों का ढोल, ज्योतिषियों की भेरी और भवनवासियोंका शंख अपने आप बज उठा था। यह वही जन्मदिन है, कि जब इन्द्रका आसन कांप उठा था और अपने आप उसका मुकुट झुक गया था। यह वही दिन है, जिस दिन तीनों लोकों में क्षोभ उत्पन्न हो गया था। यह वही दिन है कि जिस दिन सौधर्म इंद्रकी इंद्रानी कुंडलपुरके राजा सिद्धार्थ के महलमें प्रवेश कर त्रशला देवी के प्रसूतिग्रहमेंसे तुरत के उत्पन्न हुवे बालक (श्री महावीर भगवान) को उठा कर और उनके स्थानमें मायामई बालक छोडकर ले आई थी और अपने पति (इंद्र) को दिया था। यह वही दिन है, जिस दिन इन्द्रने प्रभुके रुपको देखनेके एक हजार नेत्र बनाये थे, तो भी तृप्त नहीं हुवा था। यह वही दिन है जब कि सौधर्म इन्द्र प्रभुको ऐरापति पर आरोहन करके सुमेरु की ओर ले गया था, और ईशानइन्द्र क्षत्र लगाये था, सनत्कुमार और माहेन्द्र इन्द्र चमर ढौरते और शेष सुरनर इन्द्र जय जय करते हुवे आकाशमार्ग से सुमेरु पर पहुंचकर अभिषेक करते थे, पश्चात् इन्द्रानी प्रभुको वस्त्राभूषण पहिराकर पीछे उत्सव सहित माता पिताके घर लाई थी और देव सेवक होकर रहे थे।

यह सब उत्सव क्यों हुवा था? इन्द्रादिकों इससे क्या लाभ था? इसका कारण यह था कि यह महापुरुष उन महापुरुषोंमेंसे था कि जिन्होंने (इन के प्रथम ऋषभादि पार्श्वनाथ पर्यंत तेईशने) जन्म लेकर संसारके अनादि दुःखपीडित जनोंको संसारके स्वरुपका बोध कराकर सच्चा मोक्षमार्ग बताया था, इतना ही नहीं किन्तु स्वयम् उस मार्गपर चलकर मोक्ष प्राप्त किया है, इन्द्रादिको इनके गर्भमें आते ही यह आशा हो गई थी कि अमुक स्थानमें अमुक तिथि ऐसे वीर पुरुषका जन्म होगा जो आप संसारसे पार होते हुवे बहुतों को पार लगावेगा इसीलिये उसने गर्भके छःमास पहिलेसे

रत्नवर्षा आरंभ की थी, जो कि जन्म के समय तक होती रही और जब रत्नमायक ही अवतरे कि रत्नवृष्टि बंद हुई।

अहा ! यह कैसे आनन्द का दिन है? जब किसी घरमें एक पुत्र उत्पन्न होता है तो उसीके घरवालोंको हर्ष होता है, क्योंकि वह उन्हींके वंशका रक्षक व सुखदाता समझा जाता है, परंतु इस दिन तो ऐसे महावीर पुरुषका जन्म हुवा था कि जो त्रिभुवनके जीवोंको सुख (मोक्ष) का मार्ग बतला गया है। अहा ! क्या इससे भी कोई बड़ा हर्षका दिन हो सकता है ?

जिस पुरुषने हम लोगोंको कल्याणका मार्ग बताया उसके जन्मदिनका उत्सव घरों-घरमें मनाना चाहिये। वे कृतघ्न हैं, जो कि उपकारको भूल जाते हैं। भाईयों ! महावीर भगवान हमारे निःकारण बन्धु थे, निःस्वार्थ उपदेशक थे, निष्पक्ष वक्ता थे, निरपेक्ष प्रवर्तक थे, आज महावीर प्रभु इस संसारमें नहीं हैं, उनका आत्मा लोकशिखरके अंतमें परम शांति लाभ कर रहा है, तो भी उनका उपदेश जीवित है और प्रलयांत जीवित रहेगा। वही उपदेश हम्हें उनके चरित्रका स्मरण कराता है। अहा ! कैसा पवित्र उपदेश है कि जिसने देव मनुष्य पशुपक्षी सभीके कल्याणके लिये " अहिंसा परमो धर्मः " का प्रचार किया। धन्य वे उपदेश और धन्य वह उपदेष्टा !

हे वीर प्रभो ! तुम अवश्य संसारसे चलेगये, कर्मबंधनसे मोक्ष होगये हो, परंतु तुम हम लोगोंके लिये वह अमूल्य उपदेश छोड गये हो जिससे हम तुमको नहीं भूल सकते हैं। तुम चाहे पुद्गल (देह) से मृतक हो चुके हो परंतु हमारे अंतःकरणमें अब भी जीवित हो। हम आपको नहीं भूल सकते हैं। नाथ ! जब तक आप हम्हें अपने समान न बना लेंगे तब तक हम आपका पीछा छोडनेवाले नहीं है, इसलिये शीघ्र हमारे आत्मासे विषय और कषायोंको दूर करो और सम्यक रत्नत्रय प्रदान करो।

आवो भाई, आज वीर जयंती है। हम लोग मिलकर प्रभुकी पूजा करें, प्रभुका चरित्र स्मरण करें, उनके पवित्र चरित्र द्वारा अपने जीवनके लिये कुछ शिक्षा ग्रहण करें, कुछ प्रतिज्ञा करें, उनके गुणोंकी माला बनाकर कंठमें पहिरें और सानन्द हृदयसे बोलें महावीर स्वामीकी जय, श्री वीरनाथ प्रभोकी जय, श्री अतिवीर्य भगवानकी जय, श्री सन्मतिनाथ स्वामीकी जय, श्री वर्द्धमान जिनेन्द्रकी जय, जय जय जयजय जय जय जय जय !

श्री वीर गुणानुरागी—
दीपचंद परवार (*नरसींहपुर सी. पी.*)

मारी दुःखी जींदगीनो हृदयभेदक चीतार.

એક રાત્રિને સમયે સંપૂર્ણ અજ્ઞાન અવસ્થામાંજ અર્ધ જીંદગી વ્યતીત કરેલા આધેડ ઉમ્મરના એક શેઠ પોતાના જેવીજ વ્હેમી જુના જમાનાની સ્ત્રી સાથે કાંઈ ગંભીર બાબતપર વાત કરતા ચિંતાતુર ચ્હેરે એક ગામના એક ખૂણામાં આવેલા સાધારણ સ્થીતિ દર્શાવતા ઘરમાં બેઠા હતા. શેઠને ફરજંદોમાં ફક્ત એક પુત્રીરત્નજ હતું. પુત્રી શેઠને અતિશય પ્રિય હતી. પુત્રીની ઉમ્મર તેર ચઉદ વર્ષની હોઇ યુવાવસ્થામાં દાખલ થતી હતી. યુવાવસ્થાની અગમચેતી-રૂપ સર્વ અવયવો ખીલતાં હતાં. શેઠ તેમજ શેઠાણી બન્નેને પોતાની એકનીએક અતિશય પ્રિય પુત્રીને યુવાવસ્થામાં દાખલ થતી જોઇ તેના લગ્ન વિષેની ચિંતા દિવસે દિવસે વધવા લાગી. શેઠની ન્યાત ગુજરાતની ન્હાની તેમજ બીન કેળવાયલી ન્યાતોમાંની એક હતી. આગળ વધતી હીંદની અન્ય કોમોના પ્રત્યક્ષ દાખલાઓ છતાં, કોમની ઉન્નતિ કોમના મનુષ્યોની કેળવણી પર આધાર રાખે છે તે પ્રત્યક્ષ અનુભવતાં છતાં, દુનિયામાં પહેલી પંક્તિમાં ગણાતા દેશોની કેળવણીને લઇ થયેલી ચઢતીના દ્રષ્ટાંતો ઇતિહાસમાં મોજુદ છતાં શેઠની કોમનું લક્ષ કેળવણી તરફ દોરાયું નહિ હતું, પણ વખતના વહેવાની સાથે, અન્ય જનોને ઉત્કૃષ્ટ થયેલા જોઇ, કોમના કેટલાક સુજ્ઞ વિચારવંત પિતાઓએ પોતાના પુત્રોના ભવિષ્યનો સંપૂર્ણ વિચાર કરી, પોતાના પુત્રોના સારા કિંવા નરસા ભવિષ્યનો આધાર માબાપે આપેલી કેળવણીપરજ છે એમ સમજી, પુત્રોનું ભવિષ્ય સુધરી, તેમના પોતના જીવનનું સાર્થક કરી પોતાની નાત, જાત, ગામ તથા દેશનું ભલું કરવાને શક્તિવાન બને એમ વિચારી પોતાના પુત્રોને ઇંગ્લીશ કેળવણી આપતા હતા

ઇંગ્લીશ ભણુતા વિદ્યાર્થીઓમાંથી ઘણા ખરાનાં લગ્ન થયાં નહતાં. શેઠ તેમજ તેમની સ્ત્રી પોતાની પુત્રીનાં લગ્ન ક્યાં કરવાં તે વિષેના વિચાર-તરંગમાં ગરકાવ થઈ ગયા હતા. તેમના મનમાં વિવિધ પ્રકારના અનેક તરંગો ઉઠવા લાગ્યા. પુત્રી ઉમ્મરે પહોંચેલી હોઈ લગ્ન તરતજ થવાં જોઇએ. શેઠની મરજી કોઈ કુલીન, પૈસાદાર તેમજ કેળવાયલા, કીંવા કેળવણી લેતા યુવાનને પોતાની કન્યા આપવાની હતી. શેઠે ઘણી તપાસ કરી. એક પછી એક પોતાની ન્યાતના સર્વ ગામો લઈ, ગામના સર્વ કુંવારાઓને પોતાના મન સમક્ષ આણી સર્વના ગુણ, દોષ, કુળ, આબરૂ, પૈસા તથા વય વિષે વિચાર કરવા લાગ્યા. કેળવાયલો, પૈસાદાર, અને આબરૂદાર-યુવાન મળવો શેઠને મુશ્કેલ લાગ્યો, કારણ-કે આબરૂદાર ગૃહસ્થના દીકરાઓનાં લગ્ન ઘણીજ ન્હાની વયમાં થતાં હતાં અને પુત્રોનાં લગ્ન પારણામાં થાય તે ગૃહસ્થાઈનું ચિન્હ ગણાતું હતું.

હવે શેઠને વાસ્તે બેજ રસ્તા હતા. કાંતો કેળવણી લેતા, ગરીબ પિતાના વયમાં આવેલા યુવાનને પોતાની યુવાન કન્યા આપવી યા કેળવણી લેતા ગૃહસ્થ પિતાના ન્હાની ઉમ્મરના છોકરાને પોતાની યુવાન કન્યા આપવી. શેઠ તેમજ શેઠની સ્ત્રીએ અનેક તર્કવિતર્કો કર્યા. ઇંગ્લીશ કેળવણી લેતા ગરીબ માબાપના કેટલાક વયમાં આવેલા છતાં કુવારા રહેલા પુત્રો વિષે શેઠનો સારો અભિપ્રાય નહોતો. શેઠ સૌ બાજુઓથી માણસને તપાસતા હતા.

ઘડીમાં શેઠને લાગતું કે તેઓ આજ સુધી કુંવારા કેમ હશે? આજસુધી તેઓનાં લગ્ન થયાં નહિ માટે તેઓનામાં, તેમના કુટુંબમાં યા તેમના માતપિતામાં કંઇ ખોડ હશે, આજસુધી તેઓને કોઈએ કન્યા આપી નહી, માટે આપણે પણ નહિ આપવી. આપણે જો આપીશું તો જરૂર આપણું નામ ન્યાતમાં બદનામ થશે અને આપણી સાત પેઢી સુધી ન્યાતમાંથી કન્યા વગરપૈસે મળવી મુશ્કેલ પડશે. આવા અનેક ટુંક વિચારોથી શેઠનું મન તેઓના તરફ ઢળ્યું નહિ, પણ મૂર્ખ, અજ્ઞાન અને સાંકડા વિચારના શેઠને સુઝયું નહિ કે **કેળવણીની પાછળ સઘળી ચીજો ઘસડાય** છે; કેળવાયલો સુજ્ઞ મનુષ્ય સર્વત્ર સર્વ સમયે માનને પામે છે; કેળવણી પૈસો ખેંચી લાવે છે. માન, આબરૂ અને અકરામ, અક્કલ હુશિઆરી અને પૈસા **સઘળું કેળવણીમાં ગુપ્ત રીતે રહેલું** છે. જેઓ આજે અન્ન વિનાના, પૈસા વિનાના કંગાલ હાલતમાં છે, જેઓની અત્યારે કોઇ દરકાર પણ કરતું નથી, તેજ માણસો, તેજ ગરીબ કંગાલ અને માન વગરનાં માણસો કેળવણી લીધા પછી–જ્ઞાન સંપાદન કર્યા પછી–સઘળી ચીજોને લાયક બને છે, પણ પૈસાવાળાઓ જો મૂર્ખા હોય તો ટુંક સમયમાં સઘળું ગુમાવી રંક બની બેઆબરૂ થઇ જાય છે.

શેઠની મરજી કેળવણી લેતા, પુખ્ત ઉમ્મરના પણ ગરીબ યુવાનને પોતાની પુત્રી આપવાની નહિ હતી. તેમનું મન તો પોતાની એકની એક અતિશય વ્હાલી પુત્રીને એકાદ આબરૂદાર તથા પૈસાદારના પુત્રને આપવાનું હતું; પછી તે પુત્ર પુખ્ત ઉમ્મરનો હોય યા ન્હાનો હોય, ભણેલો હોય યા અભણ હોય, હુશિયાર હોય યા બાલુક હોય, સદ્ગુણી હોય યા દુર્ગુણી હોય તેની શેઠને દરકાર નહોતી, કારણકે શેઠની ન્યાતમાં સઘળાં લગ્ન એમજ થતાં હતાં, શેઠની ન્યાતમાં કેળવણીની કીંમત નહોતી, વરમાં કેટલી હોંશીયારી છે તે જોવામાં નહોતું આવતું, વરનું કુટુંબ આબરૂદારમાં ખપતું હોય એટલે ચાલે. **પુત્રીઓ ફક્ત પૈસાને તથા આબરૂદાર કુંટુબોને અપાતી હતી.**

ઘણા ઉંડા તથા ગૂઢ વિચારો કર્યા પછી શેઠ તેમજ તેમની સ્ત્રી બન્નેની મરજી પુત્રીનાં લગ્ન મારી સાથે કરવાની થઈ, કારણકે મારૂં કુંટુંબ ન્યાતનાં આબરૂદાર કુંટુંબોની ગણનામાં ગણાતું હતું અને મારા બાપ પાસે બાપદાદાથી ઉતરી આવેલી થોડીક મિલ્કત હતી. શેઠની પુત્રી સાથે મારી સગાઈ થઇ. આ સમયે **મારી ઉમ્મર ફક્ત ૧૧ વર્ષની** હતી અને હું ઇંગ્રેજી પહેલા ધોરણમાં અભ્યાસ કરતો હતો. ન્હાનપણમાં હું ઘણો ચાલાક તેમજ ચતુર હતો. દેખાવમાં પણ **અતિશય સુંદર** હતો. મારો ચહેરો ચંદ્રના જેવો ગોળ હોઇ રંગે ગૌરવર્ણો હોઇ મહા મોહક હતો. મારૂં વય અતિ અલ્પ હોવાથી મારૂં હૃદય વિશુદ્ધ હતું, અને વિચારો સંપૂર્ણ વિમળ હતા. સગાઈ શબ્દ હું સમજતો હતો લગ્ન કેમ થાય છે, કોનાં થાય છે, અને કોનાં થઇ શકે, તે મારા લક્ષમાં જરાતરા ઉતરતું હતું, પણ હજુ હું તદ્દન નિર્દોષ હતો. લગ્ન શું કરવા થતાં હશે, લગ્નનું કારણ શું, માણસો શું કામ **લગ્નથી જોડાતા હશે, તેનું મને ભાન નહોતું**, અને તેનો ભાસ પણ હજુ મને થયો નહોતો. મારા અજ્ઞાનપણામાં અને છોકરવાદમાં અન્ય જનોની સગાઈ થઇ યા લગ્ન થયાં સાંભળી, મારા માતાપિતા સમક્ષ મારી સગાઇ તેમજ લગ્ન કરાવવા હઠ પકડતો, તોફાન કરતો, અને મારી કાકી, મામી, યા ભાણીને રડીને સાથે બેસાડાવી મારાં ખોટાં લગ્ન હું કરતો. આ સઘળું મારી કાચી

બુદ્ધિનું પરિણામ હતું. ખરા લગ્નનું ગાંભીર્ય તથા જોખમદારી હજુ મારૂં 'કુમળું' મગજ ગ્રહણ કરી શક્યું નહતું. મને લગ્ન તો એક શિશુ વયના બાળકની રમતસમાન લાગતું હતું. **બારમા વર્ષમાં મારી ખરી સગાઇ** થઇ. સગાઇ થઇ સાંભળી મારા હર્ષનો પાર રહ્યો નહિ. સર્વ મિત્રો તેમજ ઓળખીતાઓને મારી સગાઈના શુભ સમાચાર અતિશય હર્ષથી નિવેદન કરવા લાગ્યો. મારા માતપિતા પણ પોતાના જીવથી અધિક વહાલા પ્રિય પુત્રની સગાઇથી અતિ આનંદ પામ્યા અને ઘરમાં નવી આવનારી વહુની વય **ચૌદ વર્ષની** છે એમ મારી પ્રેમાળ માતાને કર્ણગોચર થતાં તેનું મન આનંદસાગરમાં તરવા લાગ્યું. તેનું મન નવી આવનારી પુખ્ત ઉમ્મરની વધુ વિષેના વિચારોમાં, અને વધુ ઘરમાં આવ્યા પછી ઉછલનારા આનંદ તેમજ સુખો સંબંધી કલ્પનાઓ કલ્પવામાં ગાઢ રીતે લીન થઈ ગયું. પોતાના પ્રિય પુત્રની અર્ધાંગનાને ઉતાવળે ઘરમાં આણવાની અતિશય ઉત્કંઠા તેના અધીરા મગજમાં ઉછળવા લાગી. હવે કન્યાનો પિતા લગ્ન જલ્દી કરે એમ ઈચ્છવા લાગી અને મારા પિતાને અને પિતાની મારફતે મારા સસરાને પણ લગ્ન જલ્દી કરવા ઉપરાઉપરી દબાણ કરવા લાગી. કન્યાની ઉમ્મર લગ્નને લાયક થયેલી હોઈ કન્યાના બાપને લગ્ન જલ્દી કરવાની વધારે ઉત્કંઠા હતી તે તે પોતાના વિચારોમાં ભૂલી ગઈ. **પોતાના પુત્રના લગ્નમાં લ્હાવો તથા આનંદ લેવાને તથા લગ્ન પછી પોતાના ઘરમાં આવનારી નવીન વધુને જોઇ મળનારા ક્ષણીક આનંદને ખાતર પોતાના પ્રાણથી પણ અધિક પ્યારા પ્રિય પુત્રની મહા મુલ્યવાન જીંદગાનીને જરાવારમાં ફના કરવા, ધૂળભેગી કરવા, તદન નકામી કરવા, પુત્રના ઝળકતા ભવિષ્યને હમ્મેશને માટે ઝાંખું કરવા, તેની કેળવણીમાં અતિ વિકટ વિઘ્ન નાંખવા, તેના ખીલતા બદન તેમજ વિકાસ પામતા કોમળ મગજને ઉગતામાંજ, સંપૂર્ણ ખીલ્યા તેમજ વિકાસ પામ્યા પૂર્વે બાળી ખાખ કરવા તૈયાર થઈ.** તેની અજ્ઞાનતાએ તેને ભૂલાવી. ન્યાતના નકામા અને ન્યાતનેજ નષ્ટ કરતા અતિ **અધમ કુરિવાજોનું સાર** પોતાના સુકોમળ, સુશોભીત, સુંદર, ખીલતા ગુલાબની કળી સમાન બદનવાળા, **બાળવયના પ્રિય પુત્રનાં લગ્ન** સગાઇ પછી ૭ મહિને થવાનું નક્કી થયું. લગ્નનું મુહૂર્ત નક્કી થયું જાણી હું ઘણો હરખાયો. મુહૂર્ત દીવસે દીવસે પાસે આવવા લાગ્યું. મુહૂર્તની પહેલ્લાં ૧૫ દીવસ અગાઉ બન્ને પક્ષો **સોજીત્રે** આવી રહ્યા. મુહૂર્ત **વૈશાખ મહિનામાં** આવેલું હતું. અમારા લગ્ન સિવાય ન્યાતના બીજાં પણ અનેક લગ્નો એજ મહિનામાં થવાનાં હતાં. એટલે રાબેતા મુજબ મારી ન્યાતનો **લગ્નગાળો સોજીત્રા મુકામે વૈશાખ માસે** ધીમેધીમે ભરાવા લાગ્યો. સોજીત્રાની આસપાસ અનેક ગામડાઓમાં વસતા દૂરદૂરના મારા ન્યાતવાળાઓ ઉપરોક્ત મુકામે એકઠા થવા લાગ્યા. લગ્નવાળા અને લગ્ન વિનાના, કુંવારા, પરણેલા, રાંડેલા, યુવાન, વૃદ્ધ, ભણેલા, અભણ, વ્હેપારી નોકર સર્વ માણસો અમારી ન્યાતના સર્વે ગામોમાંથી આવી એકઠા મળવા લાગ્યા. **લગ્નગાળો** પુર દામદમામથી ભરાયો. શેરીએ શેરીએ, વાટે, ઘાટે, ચોરે, ચઉટે અને ચકલે, કુવે, હવાડે, વાવ, વાવડીએ, ઘરમાં, બારમાં, જ્યાં જુઓ ત્યાં મારી ન્યાતના પુરૂષો, બૈરીઓ, છોકરાઓ વર્ષોનાંવર્ષો થયાં, દરમાસે અને દર દિવસે કમાઈ કરેલા એકઠા પૈસાનાં ઘડાવેલાં ઘરેણાંઓ હોય તેટલા ઘરમાંથી કાઢી,

નહિ હોય તો વડોદરા, પાદરા, સોજીત્રા ઇત્યાદિ શહેરોના ચોકસીઓને ત્યાંથી **ભાડે લાવી** બહાર દેખાઈ આવે તેમ **શરીરપર ખુલ્લેખુલ્લાં** ધારણ કરી, સવારથી સાંજ સુધી, કામધંધા વગર, રસ્તા યા બજારમાં એક ઘેરથી બીજે ઘેર જતા યા આવતા હતા. સવારમાં પ્હો ફાટતાં પથારીનો ત્યાગ કરી, શૌચ સ્નાનાદી સવારની ક્રિયાઓ કરી, દેવદર્શન પછી ન્યાતવાળાઓને ખર્ચે થતી **બપોરની હાજરી** કરી બપોર પછી સર્વ લોકો સારી રીતે ઉંઘતા હતા. ઉંઘી ઉઠયા પછી સર્વ લોકો સોજીત્રાના રસ્તાપર જમા થતી ન્યાતમાં પોતાની જગ્યાઓ અગાઉથી મુક્કરર કરવા જમવાના ટાઇમ પહેલાં કેટલાકો કલાક બે કલાક અગાઉ આવી એકઠા થવા લાગ્યા. સર્વના શરીરપર વિવિધ રંગનાં સુશોભિત પીતાંબરો શોભતાં હતાં, અને શરીરપર ધારણ કરેલાં અનેક અલંકારોથી શરીરનો પ્રત્યેક અવયવ તથા અવયવનો અવયવ ભારે મરતો હતો. મફતનું મળતું ખાવાનું ખાતાં કોઇ પાછી પાની કરતું નથી. સઘળી મળી ૨૦) ન્યાતો કરવામાં આવી હતી, અને લગભગ **૫૦,૦૦૦) રૂપિયાનો વ્યય** કરવામાં આવ્યો હતો. આટલા બધા પૈસા વાપરનારાઓમાંથી કોઇ કેળવણી પાછળ પૈ આપતું નથી. દરેક **ન્યાતના ખરચ-માંથી સો બસો રૂપિયા કેળવણીને માટે આપવામાં આવતા હોય, તો શાસ્ત્રોક્ત ઉત્તમોત્તમ દાન-કેળવણી ન્યાતના ઉછરતા યુવાનોને અપાય.**

હવે મારાં લગ્ન વિષે વાત કરતાં જણાવીશ કે લગ્નનો દિવસ આવ્યો. પુર ભભકાથી વાજતે ગાજતે મારો વરઘોડો મારે ઘેરથી નીકળ્યો. પગથી માથા સુધી શરીરના એકેએક ભાગપર ધારી શકાય તેટલાં વિવિધ પ્રકારનાં અલંકારો આદીથી મારા કુદરતી સુશોભિત શરીરને વધારે સર્વાંગ સુંદર કરવામાં આવ્યું હતું. પુરૂષો તેમજ સ્ત્રીઓની વચમાં જરાજરા મંદમંદ કુદતા નાચતા ઉંચા ઉમદા અરબી ઘોડાપર સ્વાર થઈ ધીમે ધીમે હું આગળ વધતો રસ્તાપરનાં ઘરોની બારીઓ યા અટારીઓ કીંવા અગાસીઓમાંથી બ્હાર ડોકાં કાઢી ધીરી ધીરી નીરખતી સુંદરીઓનાં મન હરણ કરતો આગળ વધતો હતો. મારી પ્રેમાળ તેમજ માયાળુ માતાના મનની સુખી તેમજ અલૌકિક સ્થીતિ તેનું મનજ જાણતું હતું. ઈતરજનોને માટે તે કળવું અતિ કઠીન હતું. તેના હૃદય-સમુદ્રમાં **આનંદનાં અનહદ મોજાં** જન્મ પામી પાછાં તેમાંજ સમાઈ જતાં હતાં. સઘળા માણસોની નજર મારા તરફ કોઇ કોઇવાર પડતી, પણ મારી માતા મારા સિવાય બીજું કંઇ જોતીજ નહોતી. મન, વચન, અને કાયાએ કરી તે મનેજ જોતી હતી, મને વિચારતી હતી, અને મારા વિષેજ ઉચ્ચાર કરતી હતી, તેની આંખ સદંતર મારાપરજ ઠરેલી હતી, તેના વિચારો મારા વિષેજ હતા, અને તેના શબ્દોમાં મારા નામ સિવાય કંઈ હતુંજ નહિ. આવી **પ્રેમાળ માતા,** આવી માયાળુ માતા, આવી પોતાના પુત્રને ખાતર પ્રાણ ત્યજવાને તૈયાર થાય તેવી માતા, આજે મને મારા સર્વ સગાં સહોદર ભાઇભાંડુ મિત્ર મિત્રાદીને સાથે લઇ આજે **પોતાનાજ પ્રિય પુત્રને પોતાની અજ્ઞાનતામાં, ન્યાતના રીવાજે કરી બાળલગ્નરૂપી જ્વાળામુખીમાં, ધગધગતા બળતા યજ્ઞમાં, હોમવા તૈયાર છે, તે માતા આજે બાળલગ્નરૂપી ભયંકર સિંહના વિકાળ મોંમાં પોતાનાજ પુત્રને હડસેલવા તત્પર થઈ છે, તે માતા આજે બાળલગ્નરૂપી અગાધ**

સમુદ્રમાં, પોતાનાજ ફરજંદને ડુબાડવા ઉત્કંઠીત થઈ છે. તે માતા આજે પોતાનાજ કુમળા બીનખીલેલા, પણ ખીલતા ગુલાબને પગતળે કચડવા જતાં અચકાતી નથી.

રક્તે રક્તે મારો વરઘોડો લગ્નમંડપ સમીપ આવી પહોંચ્યો, અને મને તથા મારી ભવિષ્યની અર્ધાંગનાને યોગ્ય આસને બેસાડયાં. તત્કાળ અમારા યજ્ઞનો આરંભ થયો. મારી સામેના આસનપર પુખ્ત (૧૫) ની ઉમ્મરે પહોંચેલી, સંસારની સર્વ હકીકતથી માહીત થયેલી, પકવ મગજની, પોતાને મારા જેવા શિશુ (૧૨ વર્ષની) વયના વર સાથે પરણાવવાના છે એમ ખબર પડવાથી શોકાતુર અને દયામણો ચ્હેરો કરી પોતાની અજ્ઞાન, દયાહીન, અને નીચ માતાપિતાને અસંત ધિક્કારની નજરથી જોતી, મારી સામે જોઇ શરમ તથા શોકને લઇ નીચું નીહાળતી એક નવોઢા, મુખમંડળ લજ્જાથી પાલવામાં સંતાડતી આવી બેઠી. બંન્ને પક્ષો આનંદસાગરમાં અતિશય મગ્ન થયા હતા. મારી મુખમુદ્રા પર નિર્દોષપણાની પવિત્ર છાપ જણાતી હતી. લગ્નક્રિયાની શરૂઆતમાં મારો ચ્હેરો નિર્દોષ આનંદના પ્રકાશથી પ્રકાશતો હતો. રાત જેમ જેમ પસાર થતી ચાલી તેમ તેમ નિદ્રાદેવીએ મારાપર હલ્લો શરૂ કર્યો. લગ્નનું ગાંભીર્ય અને પવિત્રપણાવિષે હું તદ્દન અજ્ઞાન હોવાથી મારા તાત્કાળીક આનંદનો પાર આવ્યો, અને નિયમ પ્રમાણે હમેશની માફક ઉંઘવામાં વધારે આનંદ લાગવા લાગ્યો, મને ઉંઘતો જોઇ મારી સામે બેઠેલી ચતુર અને સમજુ કન્યાના મનમાં અનેક ચિંતાઓ જન્મ પામવા લાગી સાડીની અંદરથી તેની ચળકતી આંખો કોઈ કોઇવાર મારા તરફ દૃષ્ટિ ફેંકતી. તેનાં નયન મારા નયનપર પડતાં તે નીચે નીહાળતી અને તેનો ચિંતાતુર અને શોકનિમગ્ન આત્મા અતિશય નિરાશામાં ઘણો ઉંડો નિશાસો નાંખી નિશાસાની નિશાનીરૂપ એકાદ અશ્રુબિન્દુ ટપકાવતો હતો. લગ્ન નહિ કરવાને વાસ્તે તેનું મન અતિ આતુર હતું. લગ્ન કેમ અટકાવાય તેવિષેજ તેનું મન સર્વ સમયે વિચાર કરતું હતું. લગ્ન કર્યા પછી આ બાળકાપયુતી સાથે મને શું સુખ મળશે, મારી યુવાવસ્થા ચાલી ગયા પછી મારા પ્રાણ યુવાવસ્થાએ પહોંચશે, વિગેરે વિચારોએ તેનું મન ઘણુંજ ગુંચવાડામાં મૂકી દીધું હતું.

લગ્ન સમાપ્ત થતાં અમે અમારે ઘેર આવ્યા. આજ રાત્રે શુભ મુહુર્ત હોવાથી કન્યાને પણ અમારી સાથે વળાવવામાં આવી. આજથી કન્યા અમારે ત્યાં રહેવા લાગી, ઘરનાં સર્વ માણસો માતા પિતા તથા બ્હેનો નવી આવેલી વધુને અનેક રીતે રાજી રાખવા લાગ્યા. વહુની મરજીમાં આવે તે ખાવાનું આપવા લાગ્યા. કોઇપણ રીતનું કામ તેને કરવા દેવામાં આવતું નહતુ. સર્વ જનોના તેને ખુશ કરવાના પ્રયત્નો નિષ્ફળ નિવડયા. બહારની સઘળી મહેનત નકામી ગઈ. તેના અંતરમાં રહેલી અશાંતિ, શોક, અને ચિંતા, કોઇથી ટળી નહિ. દીવસ અને રાત સર્વ સમયે તેનું મન અતિશય ચિંતાતુર દીસતું હતું. તેનું મન વિચારોથી ભરપુર હતું. દિવસે દિવસે તેની કાયા ચિંતારૂપી ચીતાને લીધેલીન થતી ચાલી. અનેક પ્રકારનાં અન્ય સુખો સંસારના સુખ વિનાકુંતેને દુઃખમય દીસતાં હતાં. યુવાવસ્થાના સંપૂર્ણ વિકાસને લઈ તેને **સંસારસુખની અતિ** ઉત્કંઠા થતી હતી. રાત દીવસ તે સંસારસુખ વિના ઝુર્યા કરતી હતી. પ્રથમ પતિ પરદેશ (બોર્ડિંગમાં ભણતો) હોવાથી પતિના પ્રેમ-

દર્શનની પીપાસા તેના પ્રેમમય હૃદયમાં લાગી હતી. તેનું દયામણું મ્હોં તેની દયાજનક સ્થીતિનું દર્શન કરવાનું હતું. યુવાવસ્થાને લઈકામદેવની જવાળા તેના એકેએક અવયવમાં લાગી હતી. તેની હૃષ્ટ પુષ્ટ, સુંદર તેમજ મોહક શરીરના સર્વ ભાગોમાં કામ, કામ, અને કામ સિવાઇ કંઈ જણાતું નહતું, કામદેવ તેને અગ્નિ વિના બાળતો હતો. તેનામાં યૌવન ઉભરાતું હતું. અને હૃદયસાગરમાં યૌવનના તરંગો અતિ જોરથી ઉછળતાં હતાં. તેને કોઈની સોબત ગમતી નહિ. દુનિયાની સર્વ ચીજો પર તેને તિરસ્કાર ઉત્પન્ન થયો હતો. ઘરના માણસોથી બને ત્યાં સુધી દુર રહેતી અને અનેકવાર એકાંતમાં જઈ પોતાની સ્થીતિપર, પોતા પર પડતાં દુઃખોપર, અને પોતાને કામને લઇ પડતી અસહ્ય પીડાઓ પર શુન્ય રીતે, ચિંતાતુરપણે, અનેક વિચારો કરી, ઘડીમાં માતાપિતાને અસંખ્ય શ્રાપ આપતી, માતાપિતાને દુશ્મન તરીકે લેખતી અને બોલતી કે હે મને દુનિયામાં દાખલ કરનાર; આ અવનીપર અવતાર આપનાર; મને પાળી પોષી મારી પૂર્ણ કાળજી લઈમને નાનપણથી ઉછેરનાર, મારા પ્રાણને તમારા પ્રાણથી અધિક પ્યારો ગણનાર, મારા સુખને ખાતર તમારા સર્વ સુખોનો ત્યાગ કરનાર હે માતા પિતા! તમે મારા ભવિષ્યનો વિચાર કેમ ના કર્યો ? હે માતા! તને તારી પુત્રી પર દયા કેમ ના આવી? હે માતા! મને નરકની ખાણમાં નાંખતાં, મને દુઃખોના દરિયામાં ડુબાડતાં, મને અગ્નિમાં હોમતાં, મને બાળક પતિ સાથે પરણાવતાં તું કેમ આંધળી બની ? તારી અક્કલ કેમ નષ્ટ પામી ગઈ ? તેં શું જોઈ તારી યૌવનથી છલકાતી નવ યુવાન બાળાને એક સંસારથી તદ્દન અજ્ઞાન અને અશક્ત બાળકની સાથે પરણાવી ? તને ખબર નથી કે તારી વ્હાલી પુત્રી અસારે સર્વ સુખો છતાં સંસારના-પતિના સુખવિના ઝુરી ઝુરીને મરે છે! અરો માતા સર્વ દુઃખોને ઉત્પન્ન કરનાર તુંજ છે. તુંજ મારી ખરી શત્રુ છે. તેંજ મારી જીંદગીને નકામી કરી છે. હે પિતા! તમે મારી માતાને આવું અવિચારી કામ કરતાં કેમ અટકાવી નહીં ? તમે બન્નેએ તમારી યુવાન બાળાને પરણાવતાં કેમ અક્કલ વાપરી નહીં ? એક નજીવી ચીજની ખરીદી કરતાં જેટલો વિચાર કરોછો તેટલોય વિચાર તમારી પુત્રીને પરણાવવા સંબંધી પુત્રીના સુખ દુઃખ સંબંધી: પુત્રીના ભવિષ્ય સંબંધી કેમ કર્યો નહી ? હે ઇશ્વર! મારા દુઃખી જીવને આ દુનિયાના દુઃખોથી મુકત કર. હવે વધારે વાર હેરાન નહી કરતાં આ પાપી પ્રાણીને પરલોકમાં લઇ જા. અહીં દુઃખમાં રહેવા કરતાં અગ્નિમાં બળી મરવું, દરિયામાં ડુબી મરવું યા કોઈ પણ રીતે દેહોત્સર્ગ કરવો ઉચ્ચતર છે. હાય કંઈ! સુઝતું નથી. આ અભાગીણીને, આ અનાથને આ દયાજનકને, આસરાવિનાનીને, આ દુઃખીને દુઃખથી છોડાવો, દુઃખથી છુટાવનો માર્ગ બતાવો, આવાઆવા અનેક વિચારો કરતી દુઃખી રાતો તે ગાળતી હતી. તેની સઘળી રાતો નિંદ્રા રહીત હતી. જ્યારે સર્વ મનુષ્યો ગાઢ નિદ્રાવશ થતાં ત્યારે આ દુઃખી બાળા પથારીમાં પડી પડી ઝુરતી ઝુરતી હૃદય ફાડી નાંખે તેમ રૂદન કરતી ચોધાર અશ્રુ ઢાળતી પડી રહેતી હતી.

અપૂર્ણ.

(આવતા અંકમાં આ લેખ પૂર્ણ થશે.)

त्रैमासिक रिपोर्ट

श्री दानवीर सेठ सरूपचन्दजी हुकमचंदजी दिगम्बर जैन पारमार्थिक संस्थाएं इन्दौर।

(कार्तिक शुक्ल १ से माह बदी ३० तक)

प्रिय वाचकवृन्द! इसमें कोई संदेह नहीं कि मुम्बई प्रान्तिक सभाके पालीतानेवाले अधिवेशनपर श्रीमान् दानवीर सेठ हुकमचंदजी सा० इन्दौरद्वारा जो चार लाखके दानकी वृष्टि हुई, उसने सम्पूर्ण जैन बन्धुओंको हर्षित करते हुए यह बात सबको अच्छी तरहसे प्रगट कर दिखाई कि अब भी जैन जातिके सुपुत्रोंमें दानशीलताकी कमी नहीं है।

आप लोग जैन अजैन समाचारपत्रों द्वारा यह मालूम कर ही चुके हैं कि उक्त चार लाखके दानसे इन्दौरमें महाविद्यालय, बोर्डिंग, और श्री कंचनबाई श्राविकाश्रम, ये संस्थाएं स्थापित हो गई, वर्तमानमें अब उनका कार्य्य अच्छी तरहसे चला रहा है तथा सेठ साहबकी जो नशियां-धर्मशाला है, उसका भी कार्य योग्य रीतिसे चला रहा है। आज मैं इन सब संस्थाओंकी संक्षिप्त त्रैमासिक रिपोर्ट भी आपकी सेवामें प्रगट करनेको उपस्थित हूं, यह मेरे लिये असन्त सौभाग्य और हर्षकी बात है। आशा है आप इस रिपोर्टको पढ़ेंगे और इसमें जो त्रुटियां दृष्टिगत हों, तथा इनकी उन्नतिके लिये जो अपने शुभ विचार हों उनको सूचित कर सदैव कृतार्थ करते रहेंगे।

महाविद्यालय।

श्रीमान दानवीर द्वारा स्थापित जो "बोर्डिंग स्कूल" नामकी पहिली संस्था थी उसके महाविद्यालयमें सम्मिलित हो जाने पर महाविद्यालयके प्रारंभमें उस संस्थासे आये हुवे १७ विद्यार्थी अंग्रेजी विभागमें, और संस्कृत विभागमें १० विद्यार्थी थे। नवीन दाखिल व खारिज होकर इन तीन माहके अंतमें १६ विद्यार्थी अंग्रेजी, और २४ विद्यार्थी संस्कृत विभागमें रहे कुल मिलाकर ४० विद्यार्थी हुए।

प्रारंभमें तीन अध्यापक थे और वर्तमान में पांच अध्यापक काम कर रहे हैं, विद्यार्थिओंकी त्रैमासिक परीक्षा परीक्षक मुकरर होकर लीगई। फल संतोपदायक रहा। सब विद्यार्थी सर्व विषयों में पास रहे, दो विद्यार्थी व्याकरणमें, और दो तीन अंग्रेजी में, दो धर्म विषय में कमजोर रहे, बाकी सब ठीक रहे।

महा विद्यालय दिनमें ११से ४ तक, रात्रीमें ७ से ९ तक खुलता है। नशियां के अंदर जो सेठ साहबका एक आलीशान बंगला है उसीमें इस समय महाविद्यालयका कार्य चल रहा है। नवीन इमारत भी महाविद्यालय की बनना प्रारंभ होगई है, जिसमें ४००००) रुपये के अंदाज खर्च होगा। महा विद्यालय में वेतन वगैरह का खर्चा इन माहों में इस भांति हुआ है—७८३।)॥। वजीफा विद्यार्थी, ८८६)। वेतन अध्यापकादि, ८६७।-)॥ स्टोर फर्नीचर, ९९।=)॥ छपाई, ३२४) मुत्फारिक कामोंमें इस तरह कुल ३०२०)=) अब तक खर्च हुआ है।

बोर्डिंग

महाविद्यालयके साथमें एक बोर्डिंग है, जिसमें विद्यार्थियों के रहन, सहन, खान, पानका योग्य प्रबंध होता है। विद्यार्थियों को घरके समान आराम के साथ रखनेका ध्यान रक्खा जाता है। उनकी पढ़ाइ तथा चारित्रसुधार होनेका पूर्ण प्रबंध है। सुपरिन्टेन्डेन्ट की निग-

रानीमें सब विद्यार्थी सब कार्य समयविभागानुसार करते हैं। अष्टमी चतुर्दशी को सब मिलकर पूजा करते और पढ़ते हैं, रात्रि को **व्याख्यानसभा** होती है, जिसमें विविध विषयों पर विद्यार्थियों के व्याख्यान होते हैं, जिससे उनकी भाषणशक्ति बढ़ती हैं और प्रतिदिन **शास्त्रस्वाध्याय** शास्त्र सभाद्वारा करते हैं। इस बोर्डिंगमें तीन रसोइया (जैनी) और दो खिदमतगार हैं।

बोर्डिंग की नवीन इमारत करीब तय्यारी के है। इसमें भी अंदाजन ४००००) रुपया खर्च होगा। अध्यापकादि कर्मचारियों के रहनेके मकान ७०००) रुपये की लागतमें बनकर तैय्यार होगये, और उनमें कर्मचारीगण रहने भी लगे हैं। भोजनशाला, व्यायामशाला, स्टोररुम थता बोर्डिंगके मुलाजिमों के मकान भी ५०००) रुपये की लागतमें तय्यार होगये हैं।

श्री कंचनबाई श्राविकाश्रम

यह आश्रम शहर इन्दौर के भीतर मिती पौष वदी २ को खुला है। इसमें वर्तमानमें १६ बाई (विदेशी) शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, और शहरकी बाई भी आती हैं। १ सुपरिन्टेन्डेन्ट बाई, १ धर्माध्यापिका, १ हिन्दी पढ़ानेवाली अध्यापिका इस भांति तीन शिक्षिका हैं, चार नौकरनी, १ चौकीदार मुलाजिम हैं, एक मुनीम (भंडारी) रखनेकी तजवीज होरही है। धर्माध्यापिका दिल्ली निवासिनी श्रीमती रामदेवीबाई हैं, धर्म शिक्षा व व्यावहारिक शिक्षा का योग्य प्रबंध है। खास संचालिका श्रीमती सेठानीजी स्वयं प्रतिदिन जाकर देखरेख करती हैं, और इसकी उन्नतिका पूरा ख्याल है। मकानकी खरीदी व सफाईमें १८०००) रुपया लगा है।

धर्मशाला (नशियां)

यह संस्था बहुत दिनसे चल रही है। इसमें सर्व प्रकारका आराम है। यात्रियों को सब जरूरी सामान विना किसी चार्जके मिलता है। इन तीन माहोंमें १४२६ यात्री आये, जिनमें ४०५ वैश्णव और १०२१ जैनी थे। १००००) रुपये लगाकर इसकी कुछ पुरानी इमारतको तुड़वाकर इसके स्थानमें नवीन पक्की इमारत बनवाई गई है, जो बनकर काममें आने लगी है।

(नोट) इन्दौरमें जो "उदासीनाश्रम" खुला है वह अभी दानवीर सेठ साहब की कोठी (जो तुकोगंज में है) में ही इसका कार्य प्रारंभ किया गया है। इस समय ३ उदासीन भाई हैं। कुछ ज्यादा होनेपर इसकी भी अलग इमारत बनानेका कार्य **प्रारंभ** किया जायगा।

उपर्युक्त सम्पूर्ण संस्थाओंका कार्य वर्तमानमें बहुत अच्छी तरह पर चलरहा है और दिन व दिन उन्नति की ही आशा है। सेठ साहबका इन संस्थाओंकी उन्नति की तरफ पूर्ण ध्यान है।

विनीत:—

हजारीलाल जैनी मंत्री,

श्री. दा. से. स. हु. दि. जैन पारमार्थिक-संस्थाएं—नशियां इन्दौर

वीर भगवानसे अरजी।

हे त्रिलोक्य-पूज्य जगतगुरू वीर प्रभु! क्या आप हम को बिलकुल भूल गए ? हम कौन हैं, क्या हैं, हमारी कैसी स्थिति है, हम किस अवस्था में हैं, क्या आप को इन बातोंकी कुछ भी सुधि नहीं ? भगवन् ! आप तो सर्वज्ञ है, आप सब कुछ जानते हैं, फिर आपने क्यों मौनावलम्बन धारण कर रक्खा है ? आपका हृदय तो बड़ा उदार था, जीव मात्र से आपको प्रेम था, आप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में थे, और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड आप में था, अब न जाने आप क्यों रुष्ट हो गए, हमने क्या अपराध किया ?

करूणाकर, क्षमा कीजिए, हमारी त्रुटियोंकी ओर लक्ष्य न दीजिए। आपकी क्षमा विश्वविख्यात है। हम संसारी जीव हैं, हम कर्मोंके आधीन हैं,हमसे भूल होना स्वाभाविक है पर आप स्वाधिन हैं, आप से दया और क्षमा की ही आशा है। इस में संदेह नहीं कि जिस पाठ को आपने हमें पढ़ाया था, हम उसे भूल बैठे, जिन जिन व्रतों को आपने हमें धारण कराया था, उन्हें भी हम छोड बैठे, और जिस मार्गपर आपने हमें लगाया था, उसे भी खो बैठे, परन्तु दयानिधे ! इन में हमारा कुछ भी अपराध नहीं। हमें विश्वास था कि आप समय समय पर हमें उत्साहित करते रहेंगे, शिक्षा और ज्ञान का महात्म बताते रहेंगे और स्वधर्म और स्वकर्तव्य पर स्थित करते रहेंगे, परन्तु क्षमासिंधु, आप तो मोक्ष रूपी रमा में ऐसे रमे कि कभी स्वप्नमें भी हमारी याद न की।

परमात्मन् ! यदि हम ऐसा जानते तो उसी समय आपके समक्ष अपने पाठ को घोक लेते, और अपने मार्ग को देख लेते परंतु अब हम कहीं के भी न रहे। आशा ही आशा में अब तक गिरते चले गए। आज आप के दर्शन हों, कल आपके दर्शन हों, दर्शन न हों तो कोई चिट्ठी ही शायद आपकी आए, परन्तु स्वामिन् ! आपकी डाककी जोह करते करते आँखें रह गईं। दिन भी जागे, रातें भी जागे परंतु कभी भी अपनी इच्छा पूरी नहीं हुई। भगवन् ! क्या मोक्ष के रास्ते में सचमुच कोई घोर युद्ध हो रहा है और सुरंगें पडी हुई हैं, जिस के कारण रास्ता बंद हो रहा है, डाक आती जाती नहीं।

देवाधिदेव ! अब हम थक गए है, अब हम से इस संसार के दुःख भोगे नहीं जाते। लोगों के आक्षेप सहे नहीं जाते। आप सच जानिए हम घोर आपत्ति में हैं। अब तक हम ज्यों त्यों इन दुःखों को सहन करते रहे, कष्ट पर कष्ट झेलते रहे, पर अब हम से कुछ नहीं बन पडता। अब हम अनाथ और निराश्रित हो गए। हमारी पुकार कोई नहीं सुनता, हमारे दुःखों को कोई दूर नहीं करता। अब हम अपनी रामकहानी किस से कहे, अपने हृदय का उद्गार किसके सामने रक्खें।

वर्द्धमान भगवन्। अब हद हो चुकी, अब हमारा जीना कठीन हो गया। अब हमसे एक क्षण नहीं रहा जाता। अबतक मर मरकर ज्यों त्यों कर के जिए पर आज हमारी छाती पर वज्रपात पड रहा है। हमारी जाती के नेता, आपके सचे भक्त, आपके नामपर जान देनेवाले, आपके नामपर वर्द्धमान विद्यालय, वर्द्धमान छात्रालय खोलने वाले, सबसे पहिले जैन जातिमें वीर जयंती का उत्सव करने वाले श्री-

य वंशीय, जयपुर निवासी अर्जुनलाल सेठी निरपराध जेलमें पड़े हुए अपने जीवनके स्वांस पूरे कर रहे हैं ? !! दयासागर ! क्या आपको इनपर दया नहीं आती, क्या इनकी अबला असहाय स्त्री और नन्हें २ बच्चों पर करुणा नहीं आती ?

शर्णागत पालक ! हमने सुना है और पढ़ा भी है कि आपने आपत्ति के समय कितनोंका ही संकट निवारण किया और कितनों को प्राणदान दिया। सती सीताजीके प्रति महान जलते हुए अग्निकुंड को शीतल जलमई बनाया, द्रौपदी के चीरको बढ़ाकर पापी दुःशासन से उसके शील को बचाया, सुदर्शन सेठ को सूली से उतराया, श्रीपाल को कुष्ट रोगसे निवृत्त किया, समुद्रसे निकाला, जब कभी किसी साधु महात्मा धर्मात्मा पर कोई संकट आया आपने अपनी करुणाका परिचय दिया, परंतु इस समय आपका मौनावलम्बन हमें दुःखदाई हैं।

भगवन् ! महात्मा अर्जुनलालने अपनी तमाम उमर लोकोपकार के कार्योंमें व्यतीत की। जैन धर्म को सार्व धर्म बनाना, संसारमें जैन धर्मका प्रचार करना, ये उनके पवित्र निष्पाप जीवन के उद्देश्य थे। इसी हेतु उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पण करदिया था। " मैं सब जीवोंपर क्षमा करूं। सब जीव मुझपर क्षमा करें " यही उनकी निरंतर भावना थी। भारतवर्ष में एक आदर्श स्कूल स्थापित करके जैनधर्मकी नींवको स्थिर करदूं, इसी उद्योगमें वे रात दिन अश्रांत परिश्रम कर रहेथे कि अचानक उनको केवल संदेह! पर पकड़ लिया गया और जिस विषय में उनपर संदेह था यद्यपि वह अब तै भी होगया और उनके विरुद्ध कुछभी नहीं मिला, तथापि वे कारागार से मुक्त नहीं हुए।

अंतरयामी प्रभु ! आप घट २ के ज्ञाता हैं, चिर अचिर संसारका कोईभी पदार्थ आपके ज्ञान से बाहर नहीं, मैं कबतक कहूं और क्या क्या कहूं ? अब आप अपनी कृपा दिखलाइए और एक धर्मात्मा परोपकारी जैनी पंचेंद्रिय संज्ञी मनुष्य की रक्षा कीजीए। किस तरह रक्षा करें, यह कहना छोटा मुंह बड़ी बात है, नहीं नहीं पाप है।

आप अपने श्रेष्ठवर्य भूपति महाराजाधिराज श्रीमान महाराज जार्ज पंचम तथा उनके कर्मचारी लार्ड हार्डिंज महोदय तथा जयपुर नरेश के हृदयों को इस ओर आकर्षित करके उनके द्वारा दया और न्याय का प्रकाश कराइए।

यद्यपि आप वीतराग है, आपको किसीसे राग द्वेष नहीं, जो आपकी स्तुति करे उसपर भी आप सम हैं, जो आपकी निन्दा करे उस पर भी आप उदासीन हैं तथापि आपकी भक्ति करने वाले, आपकी पवित्र गुणावली की माला अपने कंठमें पहिरने वाले, आपके निर्मल उपदेश के अनुसार चलनेवाले भक्तजन अपने निर्मल भावों के अनुसार संसारिक आपत्तियों का टलना तो दूरही रहे, सांसारिक विभव की प्राप्ति होना तो दूर ही रहे, मोक्ष के परमानंदका विलास कर सकते हैं।

श्री मानतुंगाचार्य को मालवा के अधिपतिने अजैनोंकी दृथा चुगली सुनकर ४८ तालों के भीतर बंद करदिया था, मुनिन्द्रने पवित्र मन हो आपकी स्तुति में श्री भक्तामरकाव्य को

रचा। यतिपति के विशुद्ध भावोंसे पुण्य परमाणुओंका ऐसा आकर्षण हुआ तथा उनका ऐसा प्रबल जोर हुआ कि चकाचक चक्रेश्वरी देवीका आसन कांपा और वे ताले टूट पड़े। भूपतिने निरपराध मुनिन्द्रको पुनः पुनः बन्दीग्रह में डाला पर वे पुनः पुनः बाहर आगए। अन्त में राजाको हार कर मुनिपतिको निरपराध जान कर उनकी महिमा से मुग्ध हो हाथ जोड मुनिपति से क्षमा मांगनी पड़ी और—

हे श्री सर्वज्ञ वितराग ! आज हम आपके पवित्र आत्माकी इसी लिए स्तुति करते हैं, इसी लिए आपके चरणारीवदोंका स्मरण करते हैं कि आपके गुणानुवाद के निमित्त से हमारे भावों की ऐसी विशुद्धि हो कि जिस से हम शीघ्र परोपकारी देशभक्त शिक्षाप्रचारक सेठी अर्जुनलाल के ऊपर आई हुई विपत्ति से मुक्त होना सुनकर आनंदित हो जावे। इसी लिए यह अपने भावों को उज्वल करनेका मार्ग आपकी स्तुति व प्रार्थना के छल से ग्रहण किया है। पूर्ण आशा है कि हमारी चिन्ता निवृत्त होगी और हम शीघ्र सेठीजी को जातिसेवा में पूर्ववत् अनुरक्त देखकर हर्षित होंगे।

गोयलीय

सेठ सुखानंदजीकी उदारताका परिचय।

अनेक कला विद्याभाषादि अतुल वैभव समृद्ध इस विशाल व्यापारोपजीवि बम्बई शहर में शहर के योग्य दिगम्बरजैनमंदिर नहीं था। इस त्रुटिको दूर करनेकेलिये यहां के पंचोंने कइएक दफै विचार किया, परंतु सफल प्रयत्न नहीं हुए। इसी तरह विचार करते बहुत समय गया, बाद सम्वत् १९७० के भाद्रपद महिनेमें यहांकी पंचायत के अगुआ जोकि यहां व्यापारियोंमें प्रधान गिने जाते हैं उन फतेपुर निवासी श्रीमान् शेठ गुरुमुखरायजी के सुपुत्र श्री शेठ सुखानंदजीने समस्त पंचोंको एकत्रित कर मंदिर के योग्य करीब एक लाख रुपयेका चंदा भरवाया, उस समय आपने भी अपनी योग्यता के योग्य पांच हजार ५०००) रु. भरे थे। बाद आप चंदा वसुलकरने तथा मंदिरके लायक जगह खोजनेमें लगे रहे। भाग्यवश जगह मिली और वह ऐसे मौकेकी तथा अति उत्तम थी कि जिसके लेनेके लिये शहरके बहुतसे लोग कुछ अधिक देना चाहतेथे। शेठजीने उस जगह को पांच हजार रुपये डिपाजतमें रखकर मंदिरके नाम पक्का करा लिया, और यह भी निश्चय होगया कि अमुक मिती को सर्व रुपये भरकर जगह लेली जायगी। बाद वह समय भी नजीक आगया परंतु चंदाका पैसा आधा भी वसुल नहीं हुआथा इसलिये सेठजीने सोचा कि ऐसी उत्तम जगह हाथसे न चली जाय, चंदाका क्या ठीक जाने कबतक वसुल होय इसलिये मंदिरको कर्ज देकर जगह लेलेनी चाहिये, ऐसा विचार कर आपने मंदिरके लिये पिचोतर हजार

७५००० रुपये कर्ज दिये और उस जगहको लेकर अपूर्व पुण्यके भागी हुए। क्योंकि मंदिर भी धर्मका एक प्रधान अंग है। उसके होनेसे ही हम भगवत्की वीतराग-मुद्राका अवलोकन कर अपने स्वाभाविक वीतरागधर्ममें तत्पर होते हैं तथा इसीसे धर्मके साधक अन्य भी बहुतसे धर्मोपकरणोंका संगठन हो सकता है अतः यह कार्य प्यासेको जल देनेके समान अति प्रशंसनीय पुण्यका जनक हुआ है। बाद रंग चित्रकला व झाड़ वगैरः कांचके सामानोंसे जैसा चाहिये वैसा दुरुस्त कराकर मिती पौष वदी ५ सं. १९७१ को बड़े ही समारोहके साथ प्रतिष्ठा कार्य कुशल प्रतिष्ठाचार्य पंडित नरसिंहदासजी द्वारा शास्त्रोक्त प्रतिष्ठोत्सव कराया उस समय पंचोंने आपको इन्द्रके योग्य समझ कर बड़े आदरके साथ इन्द्रपदसे विभूषित किया उस समय आपने मंदिरके कर्जरूप भारको हलका करनेके लिये इक्कीसहजार २१०००) के दान द्वारा अपनी यथार्थ उदारता का परिचय देकर समस्त दिगम्बर जैन समाजको इस तरह आनंदाश्रुप्लुत किया जिस तरह सर्वोपकारी अति गंभीर आशयको लिये कविकी वाणी उस विषयके मर्मके वेत्ता भव्य पुरुषोंको अथवा सार्थिक मेघ गर्जना भव्य मयूरोंको आनंदित करती है। इससे यह बात स्पष्ट ही सिद्ध है कि यह हदसे भी ज्यादा आपका दान परमावश्यक जगह में हुआ है इस कारण अतिही प्रशंसनीय है। आप इतनाही करके संतुष्ट नहीं हुए किंतु प्रतिष्ठोत्सवमें दिये हुए चंदाके अलावा भी एकत्रित रकमसे जो दो हजार २०००) रुपये अधिक खर्च हुए थे वे भी आपने दान दिये तथा रथकी बोली वगैरः के दानमें भी आपकी बहुतसी फुटकर रकम गई है। इन महा दानोंके अलावा भी आप खुद मंदिरकी अपूर्व शोभा करानेमें हमेश दत्तचित्त रहते हैं। यह मंदिर आपके ही अपूर्व उदारता उद्योग व साहससे स्वर्गमासादवत् हो गया है। अतः इन अपूर्व चिरस्मरणीय व अनुकरणीय गुणोंके पात्र होने से ही आप कोटिशः धन्यवादके भी पात्र हैं। यह सामान्य तथा आपकी नवीन उदारता व धर्मतत्परता का दिग्दर्शन है। विशेषतासे तो जो आपने अपनी उमरमें आजतक स्व समाज व अन्य सर्व साधारण जीवोंका उपकार किया है उसका आगामी साल दीपमालिका के खास अंकमें सचित्र उल्लेख करूंगा जिससे कि सर्वसम्पन्न व बुद्धिशील आपके गुणोंका अनुकरण कर—अपने जीवनको सफल करें॥

भवदीय गुणानुरक्त—
बम्बईस्थ—एक दिगम्बरीय जैन

लवंगना गुण.

जुदीजुदी भाषामां लवंगना नामो—(गुजराती) लवंग, (हिंदी) लोंग, (बंगाली) लवंग, (मराठी) लवंगा, (कर्नाटकी) लवंगकळीका, (तैलंगी) लवंगलु, (इंग्लीश) क्लोवस, (लेटीन) करिमोफाइलरी, एरोमेटिक्स, (फारसी) मेहक इत्यादि नाम छे.

लवंगना गुण

लवंग चरपरूं, कडवुं, नेत्रने हितकारी शीतळ, दीपन, पाचक, रूचीकर तथा कफ, पित्त, रक्तरोग, तृषा, शर्दि, आदमान, शुल, कफ, दम, हेडकी अने क्षय रोगनो नाश करे छे.

लवंगतेलना गुण

लवंगनुं तेल अग्निजनक, वातनाशक, दांतनी पीडाने मटाडनार, कफ अने गर्भीणीनी उल्टीने मटाडनार छे.

लवंगना वृक्ष मलबार प्रांतमां वधु उत्पन्न थाय छे, जे जोवामां सुंदर होयछे अने एना पांदडांमांथी अत्यंत सुगंध आवे छे, एना फूलनी कळी ते लवंग छे. वळी लवंग जंगबारमां पण थाय छे. ए मुखनी दुर्गंधी दूर करे छे. मसालामां पण नांखी शकाय छे. एनी मात्रा त्रण मासानी होय छे (निघंटरत्नाकर)

उपयोग (लवंग चूर्ण)

१ लवंगने पाणीमां वाटी खदखदावी माथे भरवाथी माथुं उतरी जाय छे.

२ शर्दि उपर लवंगनो उकाळो उपयोगी छे.

३ बकरीना मूत्रमां घसीने अंजन करवाथी रतांधळापणुं मटे छे.

४ लवंगना अर्कनुं पुमडुं दांत उपर मुकवाथी दांतनो दुखावो मटे छे.

५ लवंग उकाळीने आपवाथी अजीर्ण अग्निमांद्य, अने कोलेरो मटे छे.

६ दंतमंजनमां लवंग नांखवाथी फायदो थाय छे.

लवंगादि वटी (गोळी)

लवंग, बेहडा, मरी अने खेरसार सरखे भागे लइ चूर्ण करी तेने बावळनी छालना उकाळामां घुंटीने वटाणा जेवडी गोळीओ वाळवी अने तेमांथी २ थी ४ गोळी रोज खावाथी कफ, श्वास अने खांसी मटे छे.

लवंगादि चूर्ण

लवंग, कपुर, एलची, तज, नागकेशर, जायफळ, वाळो, सूंठ, शाहाजीरु कृष्णागरू, जटामांसी, काळुं कमळ, पीपर, सुखड, तगर, नेत्रवाळो अने कंकोळ ए सर्वेने सरखे भागे लइ चूर्ण करी तेथी अर्धी साकर तेमां मेळवीने ते पाणी अथवा मध साथे बे वालथी आठ वाल सुधी खावाथी क्षय, उधरस, कंठरोग, खांसी, श्वास, दम, झाडो, उरःक्षत, प्रमेह, अरुची, गोळो अने संग्रहणी मटे छे.

वैद्य मुरलीधर रामकृष्ण पंडित—औरंगाबाद

शास्त्रोंकी सूचीकी आवश्यकता।



प्रिय धर्मोत्साही सज्जनो ! ज्ञानके बराबर संसारमें सुख का कारण और कोई दूसरा नहीं है, उस ज्ञानकी प्राप्तिका साधन शास्त्र हैं । इसलिये शास्त्रोंका संग्रह कर सरस्वतीभंडार स्थापित करना, प्राचीन भंडारों को संभाल कर ग्रंथोंको सुरक्षित रखना, तथा जीर्ण प्राचीन ग्रंथोंकी नवीन प्रति (जीर्णोद्धार) कराना, हरएक धर्मप्रेमी का कर्तव्य है ।

मालवाप्रान्तिकसभाने एक सरस्वती भंडार कार्यालय कायम कर रक्खा है । सभाकी इच्छा है कि स्थान २ के सरस्वती भंडारोंकी लिस्ट तैयार होकर इस कार्यालयमें आजावे तो उससे बहुत सुभीता हो सक्ता है, और यह भी मालूम हो सक्ता है कि अमुक ग्रंथ अमुक जगह है, अमुक स्थान पर अमुक २ ग्रंथोंकी ज़रूरत है ।

इसके लिये धर्मोत्साही भाइयोंकी सेवा में सविनीत प्रार्थना है कि अपने २ यहां के सरस्वतीभंडारोंकी लिस्ट (सूची) उतार कर नीचे लिखे पते पर भेजनेकी कृपा करें ।

जो महानुभाव अपने २ यहां की लिस्ट भेजने की तकलीफ उठावेंगे, वे महापुण्य के भाजन होंगे और उनके नाम धन्यवाद सहित सभाकी रिपोर्टमें तथा सामाजिक पत्रों में प्रकाशित किये जावेंगे । लिस्ट में इस भांति खाने होना चाहिये—

(१) नंबर शुमार. (२) ग्रंथका नाम. (३) कौनसी भाषामें ग्रंथ है. (४) मूल ग्रंथकर्ता का नाम. (५) भाषाकारका नाम. (६) ग्रंथके लिखे जानेका संवत. (७) ग्रंथ या ग्रंथकर्ता के संबंधमें विशेष हाल. (८) ग्रंथ पूरा लिखा हुआ है या अधूरा ।

नोटः— ये आठ खाने रक्खे गये हैं इनमेंसे जो आप भर सकें उनकी खानी पूरी करें, ऐसा नहीं करें कि यदि ये आठ न आप भर सकें तो लिस्ट ही तय्यार न करें । नंबर । १। २। ३। ६। ८। ये पांच खाना होना ज़रूरी है ।

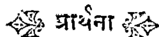
आशा है हमारे धर्मोत्साही सज्जन प्रार्थना पर ध्यान देकर शीघ्र २ अपने २ यहां के ग्रंथों की लिस्ट भेजकर अनुग्रहीत करेंगे ।

पताः—

अमोलकचन्द्र, उड़ेसरीय,

मंत्री सरस्वती भंडार नशियांजी इन्दौर

पाठशालाओंके कार्यकर्ताओंको



प्रार्थना

सर्व जैन (दिगम्बर, श्वेताम्बर और स्थानिकवासी) पाठशालाओं के मन्त्रियों, मैनेजरों, मेम्बरों और पंचों से निवेदन है कि वे अपनी २ पाठशालाओं की संक्षिप्त रिपोर्ट निम्न लिखित नकशे के अनुसार

भेजकर सेवकको अनुगृहीत करें जिससे यह अनुमान हो सके कि भारतवर्षमें कितनी जैन पाठशालाएं हैं और उनमें कितने विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। कन्यापाठशालाओंकी दशा जाननेकी अत्यन्त आवश्यकता है।

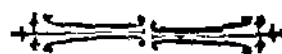
१	नाम पाठशाला	
२	नाम मन्त्री या मैनेजर	
३	अध्यापक तथा अध्यापिकाओंकी संख्या और कुल मासिक व्यय	
४	संख्या विद्यार्थियोंकी — लडके (जैन)	
	लडके (अजैन)	
	कन्याएं (जैन)	
	कन्याएं (अजैन)	
५	आम्दनी फीस यदि कुछ हो	
६	चिरस्थायी फन्ड	
७	कैफियत	

नोट–१. इस नकशे की नकल कागजपर खींच कर हरएकके सामने खानेपुरी होनी चाहिए। २. रिपोर्टें जितनी जल्द हों १५ अप्रैल सन् १५ तक आ जानी चाहिये। ३. इन के वसूल होने के बाद हम तमाम पाठशालाओं के पठन तथा नियम आदि को एक रीतिपर लाने का यत्न करेंगे, उनकी उन्नत्ति के उपाय बतलावेंगे और उनको स्वयं आकर भी देखेंगे।

जाति सेवक–

चम्पतलाल जैन, मन्त्री शिक्षा विभाग
भारत जैन महामण्डल,
अजिताश्रम–लखनऊ.

भाईयोंसे पुकार।



निद्राके बस हमारी हाय कौम सोरही है।
आशा हमारी बिलकुल बरबाद होरही है ॥ टेक ॥
भारतकी जातियें सब उन्नतिमें लगरही हैं।
तिसपर हमारी जाति पीछेको होरही है ॥ १ ॥
डूबा है हा! सितारा इस जैन जातिभरका।
उन्नतिसे हा अधोगति काहेको होरही है ॥ २ ॥
एक दिन वो भी था प्यारे जब वीर जैनियोंसे।
कांपे थी सारी पृथ्वी अब शेर होरही है ॥ ३ ॥
कुछ भाग्यके उदयसे एक **वीर नर** मिलाथा।
उसके लिये तो फिर भी यह जाति रोरही है ॥ ४ ॥
दीपक है एक हमारा **अर्जुनलालजी सेठी**]
उसके बिना यहा तो अन्धेरी होरही है ॥ ५ ॥
विद्याकी उन्नतीमें जिसने कमर थी बांधी।
अय कौम उसके लीये काहेको सोरही है ॥ ६ ॥
कुछ भी अगेचे दम है उठकर खड़ा तूं होजा।
एसे समय बतादे मुरदा क्यों होरही है ॥ ७ ॥
जिसने किया निछावर तेरे लिये तो सब कुछ।
उसके लिये ले सुन तू अब **जेल** होरही है ॥ ८ ॥
विपदा जो सेठीजीपे उसको समझ तू खुदपे।
चेतन्त अब तो होजा क्यों सुस्त होरही है ॥ ९ ॥
मिन्नत व आरजूसे जैसे बने छुटा ले।
तेरे लिये तो दिलकी हाय रत होरही है ॥ १० ॥
आंसू हमारा प्यारे तबतक रहेगा जारी।
जबतक न दूर होवे, जो कैद होरही है ॥ ११ ॥
हे **न्यायशील** मेरे महाराज **जार्जपंचम**।
कहदे विथा तू दिलकी काहेको रोरही है ॥ १२ ॥
मिलकर हमारी जाती, विनती जरातो करदे।
छूटेंगे एकदम वो क्यों रंज होरही है ॥ १३ ॥
अन्याय हो न सक्ता यह राज्य है बृटिशका।
शांती दिलको इससे आशा सो होरही है ॥ १४ ॥
कहनाथा जैनियोंसे वोह कह चुका जवाहर।
जागो समझलो जाती बदनाम होरही है॥ १५ ॥

जवाहरलाल जैन–आगरा।



आदिपुराण (महापुराण):—श्रीमद् भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणित यह बड़ा भारी ग्रन्थ बड़े टाइपमें खुले पृष्ठोंपर मूल संस्कृत श्लोकसहित सरल हिंदी भाषामें पं, लालाराम जैन द्वारा अनुवादित होकर छप रहा है, जिसके ५०० पृष्ठ तो आगे प्रकट हो चुके थे और अभी ५०१ से ७२४ तकके पृष्ठ हमारे सामने है। अबतक २०-वां पर्व पूर्ण होने आया है। हरएक पर्वमें अंदाजन २०० श्लोक है। भगवान आदिनाथस्वामी (ऋषभनाथ) का यह उत्तम बृहत् चरित्र प्रकट होनेकी बड़ी भारी आवश्यकता थी जो पं. पन्नालालजी वाकलीवालके प्रयाससे तैयार हो रहा है और यह ग्रन्थ १००)-२००) खर्च करनेपर नहीं मिलता था और अबतो अंदाजन १९) में पूर्ण ग्रन्थ सबको मिल जायगा। जैसेर छपता जाता है ग्राहकों के पास भेजा जाता है। और अग्रिम मूल्य भी ७०० पृष्टका ५) रुपया रक्खा गया है। हरएक मंदिरजीमें इसनामी ग्रन्थके रखनेकी आवश्यकता है। ग्राहक होनेके लिये निम्नलिखित पतेपर पत्र लिखनेसे ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखकर तैयार हुए ७२४ पृष्ठों वी. पी. से भेजे जाते हैं —पं. लालाराम जैन, आदिपुराण ऑफिस, मल्हारगंज—इंदौर सीटी।

शिवराम भजनसंग्रहः—कर्ता–मास्टर शीवरामसिंह, मंत्री जैन पाठशाला–रोहतक और प्रकाशक धर्मप्रकासिनीजैनसभा–रोहतक। पृष्ठ ६० और मूल्य सिर्फ ०)=) इसमें जातिसुधार, धर्मप्रचार आदि विषयों के नई तर्जके ६०जोशीले भजन हैं,जो सबको पढ़ने योग्य है। भजनोंकी रचना भी अच्छी हुई है।

हितैषी-गायन (बालक भजनसंग्रह तीसरा भाग):—कर्ता- भूरामलजी मुसरफ, हेड मास्टर जैन विद्यालय, कुचा सेठ देहली। पृष्ठ१६ और मूल्य ~) इसमें जिनेन्द्र महिमा, कर्तव्यशिक्षा, लडकोंका खेल, हितवार्ता, जातीय दुर्बलता, अनाथरक्षा बारह भावना आदि विषयोंके भजनोंका संग्रह है जो बालकोंको पढ़ाने योग्य है। सिर्फ ~।।) की टिकट भेजकर मंगा लेना चाहिए।

जैनतीर्थयात्रादीपकः —लेखक–पं. फतेहचन्द्र इन्द्रप्रस्थनिवासी और मिलनेका पता–पुस्तकालय, जैन पाठशाला,धर्मपुरा-देहली। पृष्ठ १०० और मूल्य सिर्फ ०।) इसमें १०० जैन तीर्थों और उसके मार्गमें मिलनेवाले शहरोंका यात्रोपयोगी वर्णन है। रेलमार्ग किराया आदिभी बतलाया है। यह पुस्तक पास रखनेसे यात्रामें बहुत कुछ सुभीता मिल सकती है।

स्वप्नवासवदत्तम्:—अनुवादक और प्रकाशक-बाबुलाल मयाशंकर दुबे-राजनांदगांव। पृष्ठ १०० मूल्य ०।≈) ई. पू. चौथे शतक के पहिले भास नामक महाकवि हुए थे जिनके संस्कृत काव्यमें रचे हुए १३ नाटक त्रावणकोरमहाराज के पुस्तकालयमें हैं और जिसका अनुवाद राज्यकी ओरसे प्रकट होनेका प्रबंध हुआ है उसका प्रथम नाटक यह (स्वप्नवासवदत्तम्) पुस्तक हिंदी भाषामें मूलकाव्य सहित उपरोक्त महाशयने प्रकट किया है। नाटकप्रेमियोंको अवश्य पढनेयोग्य हैं। इसको पढनेसे बहुत कुछ शिक्षा मिल सकती है।

हिन्दी शिक्षा (पहिला भाग):—प्रकाशक—मोहकमलाल, मैनेजर जैनशिक्षाप्रचारक कार्यालय, कूचा सेठ देहली। पृष्ठ ३०, सचित्र और मूल्य सिर्फ -) जैनशिक्षा सीरीजका यह प्रथम भाग है, जिसमें बालकोंको पढ़ाने योग्य १७ पाठों हैं। खूबी यह है कि सभी पाठों सचित्र हैं और पाठके अंतमें सवाल भी रक्खे हैं, जिससे पढ़ानेमें बहुत सुभीता हो सकेगी। हरएक पाठशाला, कन्याशाला, स्कूल आदि में यह पुस्तक प्रवेशकरने योग्य है। मूल्य भी बहुत कम है। दूसरा और तीसरा भाग भी प्रगट होनेकी तैयारी है ऐसा हमें मालूम हुआ है।

वैद्यः— संपादक, वैद्य शंकरलाल हरिशंकर जैन, मुरादाबाद। वर्ष २. अं. १. पहिलेसे इस मासिकमें बहुत कुछ सुधारा हुआ है। वैद्यक, आरोग्य, शरीररक्षा, रोगचिकित्सा, वनस्पतिगुण आदि अच्छे २ विषयोंके लेख रहते हैं। डाँकव्यय सह वार्षिक मूल्य १) भी कुछ अधिक नहीं है।

अनमोल बूटीः— संपादक और प्रकाशक-पं. बिहारीलालजी बी. ए., मास्टर गवर्नमेन्टहाईस्कूल, अमरोहा (मुरादाबाद)। पृष्ठ ९२ और मूल्य ०।०॥) इसमें आक (मदार) वृक्षकी जडों, डालियों, पत्तों, फूलों फलोंसे अनेक तरहके रोगोंको आराम करनेकी तरकीबें हैं। आपकी ही बनाई उर्दू पुस्तकका यह हिन्दी अनुवाद है।

नियमावली और रिपोर्टः— सूमेरचंद दि. जैन बोर्डिंग हाउस प्रयाग (इलाहाबाद) का यह रिपोर्ट देखनेसे मालूम होता है कि दो वर्षके अर्सेमें इस बोर्डिंगने अच्छी उन्नति की है। सुपीन्टेन्डन्ट और धर्मशिक्षक मास्टर दीपचंदजी बहुत ही अनुभवी होनेसे योग्यतासे कार्य कर रहे है। स्व. बाबू सुमेरचंदकी रु. २५०००) की सखावतसे इस बोर्डिंगकी स्थापना हुई है। अभी १९ विद्यार्थी लाभ ले रहे है। ज्यादे फंडकी आवश्यकता है।

सेठीजीके मामलेमें लोकमतः— जैन जातिके सेवक पं. अर्जुनलालजी सेठी क-

रिव १२ मास हुए विनाअपराधकिये विनान्यायहुए जयपुरकी जेलमें सड़ रहे हैं जिसके बारेमें जैन अजैन वहुतसे पत्र-कारोंने अपने विचारों प्रकट किये हैं और सेठीजी का शीघ्रही छुटकारा करनेके लिये सरकारसे प्रार्थना की है उन सभी लेखोंका संग्रह करके उपरोक्त नामकी एक हिन्दी और '**What India thinks of the case of Pandit Arjunlal Sethi B. A.**' इस नामकी इंग्लिश पुस्तक ऐसी २ पुस्तकें कुमार देवेंद्रप्रसाद जैन (शान्तिकुंज, ईलाहाबाद) ने भारतजैनमहामंडलकी ओरसे प्रकट की है जिसका मूल्य चार चार आना हैं। यह दोनों पुस्तकें अवश्य मंगाकर बांचनेयोग्य है।

नई रोशनीकी कुलदेवी (तमाकुदेवी):— लेखक और प्रकाशक वी. पी. सिंघी-सिरोही (राजपुताना)। इस पुस्तकमें तमाकु खाने, पीने, सुंघने आदिसे शरीरमें जो २ रोग पैदा होते हैं उनका वहुत अच्छी तरहसे व्यान किया है। कुछ कविताएं और तमाकुके बारेमें डाक्टरोंकी राएं भी संग्रहित की है। यद्यपि हिन्दी भाषामें वहुत अशुद्धियां हैं तो भी उसका सारांश समझमें आजाता है। सिर्फ –।।) की टिकट भेजनेसे ४० पृष्ठकी यह पुस्तक उपरोक्त पतेसे मिल सकती है।

जैनसिद्धांत विद्यालयकी रिपोर्ट:—स्याद्वादवारिधि वादिगजकेशरी न्यायवाचस्पति पं. गोपालदासजी बरैय्याके अटूट परिश्रमसे स्थापित मोरेनाके जैनसिद्धांत-विद्यालयकी यह चतुर्थ वार्षिक रिपोर्ट देखनेसे विदित होता है कि चार वर्षके अर्सेमें इस विद्यालयने बड़ी भारी उन्नति की है। 'पाठशालाके स्थानमें विद्यालय नाम बदला गया है यह योग्य ही है। अभी संस्कृतविभागमें २१ और हिन्दी विभागमें ९६ विद्यार्थी लाभ ले रहे हैं। बोर्डिंगका मकान भी बन गया है। इस वर्षमें गतवर्षकी बचत सहित कुल आमदनी ६०६१)≡। और खर्च ५२३५॥≈॥ हुआ है। विद्यालय द्वारा स्थान २ पर डेप्युटेशन द्वारा जाकर जाहिर व्याख्यानों द्वारा धर्मप्रचारका अच्छा कार्य होता है। स्थायी फंड ज्यादे न होनेसे मासिक, वार्षिक और एकमुष्ट सहायतासे कार्य चलता है। ६००) माहावारका खर्च है। यह संस्था ऐसी उत्तम है कि इनमें अध्ययन करके कितने ही पंडित तैयार हुए हैं। ऐसी संस्थाका स्थायी फंड तो कमसेकम एक लाख रुपयाका होजाना चाहिये। विद्यालयका नकशा सहित १२९ पृष्ठकी यह रिपोर्ट मंत्री जैनसिद्धांतविद्यालय, मोरेना (ग्वालियर) को लिखनेसे विनामूल्य मिलती है। सभीको मंगाकर अवश्य२ देखनी चाहिये।

વિમલપ્રબંધ:—સંશોધક અને પ્રકાશક, મણિલાલ બકોરભાઈ વ્યાસ, નાગરફળીઆ–સુરત. પૃ૰ ૫૦૦ પાકું પુંઠું અને કિંમત

३. ९१. આ વિમળપ્રબંધ યાને **વિમળરાસ** સં. ૧૫૬૮માં પાટણના (શ્વે) જૈન મૂનિ **લાવણ્યસમયગણિએ** રચેલો છે, જેની સં. ૧૫૮૪માં લખાયલી પ્રતિ પ્રમાણે અનુવાદ સહિત અક્ષરશઃ પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે એટલે **સોળમા સૈકાની ગુજરાતી ભાષાની વાનગીરૂપે** આ પુસ્તક છે અને એમાં ૧૧મા સૈકામાં થયેલા **વિમળશાહ** શેઠનું ચરિત્ર **જુની ગુજરાતી ભાષામાં કવિતારૂપે** છે. પુસ્તકની શરૂઆતમાં રા. મણિલાલભાઇએ ૧૦૦ પૃષ્ટની પ્રસ્તાવના એટલીબધી શોધખોળ કરીને લખી છે કે જેની જહેમતનો ખ્યાલ એ પ્રસ્તાવના વાંચવાથીજ આવી શકશે. એ પ્રસ્તાવનામાં ગુજરાતી ભાષાનો ઇતિહાસ, જ્ઞાનિઓની ઉત્પત્તિનું વર્ણન, જુની ગુજરાતીના અનેક જુદા જુદા નમૂના, જુના ખતો, પોરવાડ, શ્રીમાળી ઓસવાળ વગેરે જ્ઞાતિઓની ઉત્પત્તિ ક્યારે, ક્યાં અને કેવી રીતે થઇ, તેના ભેદ કેમ અને કેવી રીતે પડયા વગેરે ઘણીજ વીગતો આ પ્રસ્તાવનામાંથી મળી આવે છે, એટલે કે આ પ્રસ્તાવનાના અવલોકનથી ૫૦૦ વર્ષ અગાઉનું જ્ઞાતિઓનીસ્થીતિનું દિગ્દર્શન મેળવી શકાય એમ છે. **વિમળશાહ** જ્ઞાતિએ પોરવાડ હતા અને **દશાવીસાનો** ભેદ એની પછી બસો વર્ષે થયેલો માલમ પડે છે, તેમ **શ્રીમાળી જ્ઞાતિની** ઉત્પત્તિ લખતાં જણાવ્યું છે કે એના ૨૧॥ ભેદમાં મૂખ્ય ત્રણ શ્રી **શ્રીમાળી, શ્રીમાળી** અને **લાડુઆ શ્રીમાળી** તેમાં **લાડુઆ શ્રીમાળી નામ પડવાનું** કારણ **लाटदेशे गता ये तु श्रीमाला लाडुया इति** એટલે **લાટદેશ** અર્થાત્ ભરૂચ જીલ્લો અને તેની આસપાસનો મૂલક ૬૦૦ વર્ષ પહેલાં લાટદેશને નામે ઓળખાતો હતો તેથી લાટદેશમાં જઈ રહ્યા તે લાડુઆ શ્રીમાળી કહેવાયા અને હાલપણ **લાડુઆ શ્રીમાળીની વસ્તી** ભરૂચની આસપાસ ૧૨-૧૩ ગામો ઉપરાંત કોઈ પણ વિભાગમાં નથી. હવે હાલની પરિસ્થીતિ જોતાં જણાય છે કે લાડુઆ શ્રીમાળી શુદ્ધ શ્રીમાળી જ્ઞાતિ હોવા છતાં તેમને હલકી વર્ણના માનીને તેમના હાથનું પાણી પણ પીવામાં આવતું નથી એ અતિ શોચનીય છે. કહે છે કે ૧૫૦ વર્ષ ઉપર સુરતમાં લાડુઆ શ્રીમાળી અને વીસા શ્રીમાળી વચ્ચે ઝઘડો થવા પછી વીસા શ્રીમાળીઓએ (સંખ્યા અને સમૃદ્ધિવાન હોવાથી) લાગવગ વાપરી લાડુઆ શ્રીમાળીને સંઘ બહાર મૂકયા અને તે પછી તે જ્ઞાતિએ એને હલકા પાડવાના પ્રયાસો એટલે સુધી કર્યા કે આખા લાટદેશમાં તેમને હલકા પાડવાને માટે અનેક જોડકથાઓ ચલાવી એ જ્ઞાતિ તો હલકી છે એવો વ્હેમ ઠસાવી દીધો, જે આજ સુધી હયાત છે, પણ **૪૦૭ વર્ષ પૂર્વેના આ ગ્રંથમાંથી** લાડુઆ શ્રીમાળીની ઉત્પત્તિનું વર્ણન વાંચવા પછી સૂરત વગેરેના સંઘે એ બાબે પુરતો વિચાર કરવાની અત્યંત જરૂર છે અને એ બાબેના વધુ પૂરાવાઓ મેળવી એ જ્ઞાતિને ઈન્સાફ આપવાની ખાસ આવશ્યકતા છે. અસ્તુ. હવે વિમળપ્રબંધ જુની ગુજરાતી ભાષાની કવિતારૂપે છે તે **બાળબોધ** ટાઇપે મુકી તેની નીચે દરેક પાને દરેક કડીનો હાલની **ગુજરાતી** ભાષામાં **અર્થ** સારીરીતે પ્રકટ કરેલો છે, જેથી આ પુસ્તક સમજવું બહુજ સહેલું થઈ પડે છે. એ અનુવાદ તૈયાર કરવા પાછળ પ્રકાશકે ગંજાવર શ્રમ ઉઠાવેલો છે એમ સ્પષ્ટ જણાય છે. વિમળશાહના આ ચરિત્રમાં **તે સમયની સમૃદ્ધિનું તથા રિતરિવાજોનું ભાન** થઈ શકે છે. આ એક સંગ્રહ કરવાયોગ્ય પુસ્તક પ્રકટ કરવા માટે રા. મણીભાઈ જેવા એક અર્જન બંધુને અત્યંત ધન્યવાદ ઘટે છે અને એ ગ્રંથની જુની ત્રણ પ્રતો

મેળવી આપવામાં સહાયભૂત અત્રેના શા. ચીમનલાલ ખુશાલચંદ મોદીનો આભાર પણ ઓછો નથી. વળી પુસ્તકને નામદાર ગાયકવાડે ઉત્તેજન આપવા ઉપરાંત સાક્ષરોએ પણ તેને ઉત્તમ અભિપ્રાયોથી વધાવી લીધું છે જેથી દરેક ગુજરાતી બંધુએ આ પુસ્તક અવશ્ય મંગાવીને વાંચવા અને સંગ્રહ કરવાલાયક છે ૫૦૦ પાનાંનો ગ્રંથ છતાં સવા રૂપીઓ કિં. પણ નજીવીજ છે.

શ્રી આનંદ-કાવ્યમહોદધિ મૌક્તિક ૨-૩:-સુરતમાં સ્વ. શેઠ દેવચંદ લાલભાઈનું જે એક **લાખ રૂપ્યાની** થાપણનું **જૈનગ્રંથજીર્ણોદ્ધાર ફંડ** છે, તેમાંથી સંસ્કૃત, પ્રાકૃત-ગુજરાતી ભાષાના શ્વે. જૈન ગ્રંથો ઢગલાબંધ પ્રકટ થઈ રહેલા છે તેમાં હવે **પ્રાચીન જૈન કાવ્યના** ગ્રંથો (જૈન રાસો) પ્રકટ થવા લાગ્યા છે, જેમાંનો એક ગ્રંથ પ્રકટ થઈ ચુકયો છે અને બીજો તથા ત્રીજો એમ આ બે ગ્રંથો છે, જે દરેક આશરે **૫૮૦-૫૦૦ પાનાના** મજબૂત બાઈન્ડીંગના મોટા પોથાઓ હોવા છતાં **કિંમત** તો પડતરથી પણ ઓછી એટલે માત્ર **દશ દશ આનાજ** છે. બીજા મૌક્તિકમાં **રામયશોરસાયન-રાસ** યાને **રામરાસ** તથા ત્રીજા મૌક્તિકમાં **ભરતબાહુબળી રાસ, જયાનંદકેવળી રાસ, વચ્છરાજ દેવરાજ રાસ, સુરસુંદરીરાસ, નળદમયંતીરાસ, હરીબલમાછીરાસ** એ છ **રાસો** છે અને અઘરા શબ્દોનો અર્થ પણ દરેક પાને નોટમાં આપેલો છે, જેથી કાવ્યોનો અર્થ સહેલાઈથી સમજી શકાય છે. વળી બંને પુસ્તકોમાં **૧૦૦-૧૦૦** પાનાંની તો **પ્રસ્તાવનાઓ** છે જે વાંચવાથી **પ્રાચીન ગુજરાતી** ભાષાને લગતો તથા **પ્રાચીન જૈન સાહિત્યને** લગતો કેટલોક ઇતિહાસ મળી આવે છે. આ સંસ્થાનો હેતુ બર લાવવામાં મુખ્ય કાર્યવાહકો પૈકી શેઠ **જીવણચંદ સાકરચંદ ઝવેરી** અટ્ટ પ્રયાસ કરી રહેલા છે જે જણાવતાં અમને અતિ આનંદ થાય છે (અને દિગંબરી ભાઇઓમાં આવી કોઈ મોટી સંસ્થા ગુજરાતી કે હિંદી ભાષાના પ્રાચીન ગ્રંથો સુલભ રીતે પ્રકટ કરવાની નથી, તેથી અતિશય ખેદ થાય છે એટલે કે ગ્રંથપ્રકાશન કાર્ય માટે જેટલો ઉત્સાહ આપણા શ્વેતાંબરી ભાઈઓમાં છે તેનો એઆની પણ દિગંબરી ભાઇઓમાં નથી એ દેખીતી બીના છે.) આવા અમૂલ્ય ગ્રંથો માત્ર દશ દશ આના જેવી જૂજ કિંમતે અવશ્ય ખરીદી લેવા માટે અમો સર્વે ગુજરાતી જૈન બંધુઓને આગ્રહ કરીએ છીએ. મળવાનું સ્થળ-શેઠ દેવચંદ લાલભાઈ ધર્મશાળા બડેખાંનો ચકલો, ગોપીપુરા-સુરત.

અખાની વાણી:—અમદાવાદના સસ્તું સાહિત્યવર્ધકકાર્યાલયની વિવિધ ગ્રંથમાળાનું આ ૫૧-૫૨મું ૬૦૦ પૃષ્ઠનું પુસ્તક છે, જેની કિં. ાા છે, જેમાં **જ્ઞાની કવિ અખાના અનેક પદો**, દોહરા, ચોપાઈ તથા છપ્પામાં છે, જે વાંચવાથી અનેક જાતનો બોધ મળી શકે છે. આ સંસ્થા ઘણીજ પગભર થતી જાય છે અને આ વિવિધગ્રંથમાળા ૨)ના વાર્ષિક મૂલ્યમાં ગંજાવર લાભ આપે છે, એમાં કાંઇ શક નથી.

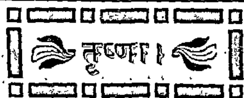
જૈન એસોશીએશનનો રિપોર્ટ:— જૈન એસોશીએશન ઓફ ઈંડિયા (મુંબઈ)નો ૧૯૭૦નો આ રીપોર્ટ છે જે જોતાં જણાય છે કે ગત વર્ષો કરતાં આ સભાએ સારૂં કામ બજાવ્યું છે. સંસ્થા પાસે રૂ. ૨૮૦૦૦)નું ફંડ છે તેની ઉપજમાંથી ગરીબ શ્વે. જૈન વિદ્યાર્થીઓને સ્કોલરશીપ, જર્મન વિદ્વાન હર્મન જેકોબીનો સત્કાર, જૈન (શ્વે.) ડિરેકટરી વગેરે અનેક કાર્યો કરવામાં આવ્યા છે. એના કાર્યવાહકો બધા કેળવાયલાજ છે અને ભવિષ્યમાં આ એસોશીએશન વધુ પ્રયાસ કરશે, તો એક કોન્ફરંસ ઠરે તે કરતાં

પણ વધુ કાર્ય નિયમીત રીતે કરી શકશે. હાલ એના ૪૫ સભાસદો છે. મેમ્બર ફી ૫૦૦)થી ૩) સુધી છે. આપણા ભારત જૈન મહામંડળને આ સ્થીતિએ આવતાં કેટલો સમય લાગશે ?

દિ. દહેરાસરનો રીપોર્ટ:—મુંબઈના પાર્શ્વનાથસ્વામીના જુના દિ. દહેરાસરનો આ રિપોર્ટ તથા યોજનાની નકલ જોતાં જણાય છે કે પ્રથમ વહીવટકર્તા શેઠ નેમચંદ સોભાગચંદ પાસે હિસાબ તથા વહીવટ બાબત તકરાર થતાં વહીવટનો સવાલ કોર્ટની દેવડીએ ચઢેલો, તેમાં બન્ને બાજુએ મળી **રૂ ૧૩૯૮૭ાાના નું પાણી** થયેલું અને પછી પતાવટ થઈ દહેરાસરના વહીવટની **કમીટી અને ટ્રસ્ટીઓ** નીમાયા છે અને એ **ચૌદ હજારનો ખરચ દહેરા ખાતે લખી વળાયો !** છે, જેથી હવે મુંબાઇ જેવા શહેરના આ દહેરાસરમાં આશરે પાંચેક હજારનીજ રોકડ સીલક છે. જોકે હવે વહીવટ માટે નવી વ્યવસ્થા થઈ છે, જેથી હવેના કાર્યવાહકો બરાબર સંભાળ રાખી ખટપટ કરશે, તો ભવિષ્યમાં આ દહેરાસરની સ્થીતિ સુધારવાનો અનેક સંભવ છે. આ રિપોર્ટમાં વહીવટની યોજનાનો જે ગુજરાતી તરજુમો પ્રકટ કરેલો છે તે દરેક દહેરાસરના વહીવટકર્તાએ વાંચવા યોગ્ય છે. હાલના સેક્રેટરી શેઠ લલ્લુભાઈ લખમીચંદ ચોકશી છે.

દ્વાદશાનુપ્રેક્ષા:—પ્રકાશક શા. નાથાલાલ શોભાગચંદ, અધ્યાપક મા. દિ. જૈન પાઠશાલા, ઈડર. આ પુસ્તકમાં શ્રીમદ્ કુન્દકુન્દાચાર્યવિરચિત સંસ્કૃત દ્વાદશાનુપ્રેક્ષા **(બારભાવના)** નો અનુવાદ દોહરા છપ્પાની કવિતા **રૂપે** ભટ્ટારક યશકીર્તિજીના ભાના પં કૃષ્ણજીએ કરેલો તે પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે જે ગુજરાતી ના દિ. જૈનોને મફત અને બીજાને ૨ ના થી મળી શકે છે.

સંસારમાં સ્વર્ગ:—લેખક અને પ્રકાશક વૈદ્ય અમૃતલાલ સુંદરજી **પઢીઆર** (કાલબાદેવી, મુંબાઈ). પૃષ્ઠ આશરે ૪૦૦ પાકું પુઠું અને કિં. રૂ. ૧ાા. મી. પઢીયારે, જેમાં સ્વર્ગ શબ્દ તો આવેજ છે એવા નામના ઘણાં પુસ્તકો પ્રકટ કરેલા છે, જેમાંનું પ્રથમ આજ પુસ્તક હોઈ તેની આ બીજી આવૃત્તિ છે, જેમાં સંસારમાં રહી મનુષ્યે શું શું કાર્ય કરવાનું છે અને તેની શું શું ફરજો છે તે તથા સંસારનું ઉત્તમ સુખ કેવી રીતે મેળવી શકાય વગેરે ૩૫૧ વિષયોનો સમાવેશ છે. મા. પઢીયારની લેખનશક્તિ જગજાહેર છે અને અમારા વાંચકોને તેની પ્રસાદી તરીકે ગત વર્ષે "આપણે આપણી સ્થીતિમાં શું સંતોષ રાખવો જોઈએ" એ નિબંધ તથા ખાસ અંકમાં 'લાગનું સ્વરૂપ' નામે લેખો અપાઈ ચૂકયા છે, જેથી વધુ ન લખતાં આ પુસ્તકની ભાષા, રચનાશૈલી, અને તેથી મળતો અનેક પ્રકારનો બોધ ગ્રહણ કરવા માટે એ પુસ્તક મંગાવીને તેનો ઉપયોગ કરવા ભલામણ કરીએ છીએ.



तृष्णे देवि नमामि मांम पर कृपा न करना ।
है तुव भक्ति गरिष्ट हृदको निश दिन छरना ॥
भक्तिवत्सले ! देवि !! कृपा है तुव धनिकोपर ।
अतः प्रथम ही नमन तुमारे ही चरणोंपर ॥१॥
पूजन हवन त्रिकाल देवि ! है प्रथम तुमारा ।
पुनः स्वदेहिक धर्म कर्म आदिक विस्तारा ॥
जिस दिन तेरी अहो भक्तिमें कसर दिखाती ।
उस दिन समझो उनकी मौसीसी मरजाती ॥२॥
यद्यपि अक्षर ढाई अरी है तृष्णा तोमें ।

होते नर अकुलीन भाल नहिं रहते गोमें ॥
करैं यदपि हम लोप पस्य रुपी लक्ष्मीका।
रहैं तृण। सम मनुज देवि हे तृणे ! नमस्का ॥३॥
होय णकार जु लोप विभव जल शुष्क होय वा।
पस्य वित्त रवि लगै तृष्णा क्षण२ में अथवा ॥
चाहें तृ का लोप लोभ मनसे वह जावै।
शौचार्थक ष्णा धातु अहो निरमल रह जावै ॥४॥
होवै जिये सन्तोष देवि ! अथवा यों कहिए।
लोभ पंक हो शुष्क मुरक सम सुयश उचरिये ॥
तव ही प्रिय सन्तोष सुक्ख हिय में आवेगा।
लोभ दुख अतिक्रूर अहो मनसे भागेगा ॥५॥
तृष्णावन्हि हमेश मनुज हिय मन्दिर जलती।
अन्य विभव ही पवन लाग कर आप सिलगती ॥
अन्त प्रशस्ति अहो वही होती सज्जन वर।
रोती घरकी दार शीस पर अपना कर धर ॥६॥
भाग्य कुम्भ दीर्घाल्प पुण्य कृत जितना पाया।
कोप कुवेर समुद्र कूप जग उसे डुवाया ॥
भरो कहीं पर उसे मिलेगा उतना ही जल।
है तुव जितना भाग्य कुम्भ उसके ही पारिमल ॥८॥
यह तृष्णा दुखदाई वही हैगी प्रिय पाठक।
प्यारे इसको तजो शीघ्रमें धनिक रु वाचक ॥
जिसने इसको त्याग अहो सन्तोष लहा है।
है कुवेर सम वही आन नहिं शास्त्र कहा है ॥८॥
अस्तु-कृपा कर पाठकगण इसको त्यागेंगें।
परम मित्र सन्तोष अहो हियमें धारेंगें ॥
तोष समान न आन सुख जगमें है शरना।
तृष्णा दुखकी खानि अन्तसुख इक है मरना ॥९॥
प्रियवर ! तृष्णा शब्द युक्तिआगमसे साधा।
शंकित जन नहीं रहे मिटावे इसकी बाधा ॥
तृष्णा सम दुखदाई आन नहिं फिर हम कैंगे।
तृष्णेदेवि ! नमामि-अन्तकर हम चल देंगें ॥१०॥

एम. डी. गुप्त-बीना (सागर)।

—>>><<—

सेठीजीके बारेमें मेरी प्रार्थना।

शशिको तो कछु भय नहीं, करत शान्ति विस्तार।
किहि कारण सों है लग्यो, करुणारस दर्बार ॥१॥
नाल पटल नभ तल लखौं, नयन जलद घनघोर।
अश्रुबूंद वर्षा करत, व्यथा राज्य चहुं ओर ॥२॥
धर धर धर छाती करै, पल पल पुलकत अंग।
छिन्न छिन्न हृदय सागर विषे, उठतीं शोक तरंग ॥३॥
फटत कहत यह हृदय गिरा, गदगद हो जावत।
विसरावत सुधि वदन, विलोचन सलिल बहावत ॥४॥
लेवत जिनको नाम, सुधारस रसना पावत।
सुनि सुनि तिन गुणान, अलौकिक आनंद धावत ॥५॥
धन्य पूज्य माता पिता, धन्य धन्य वह देश।
जेह जन्में तुम सम सुजन, स्वावलंब आदेश ॥५॥
अविरल निशदिन चाव सों, परम परिश्रम कीन।
बी. ए. जैन पंडित हुए, उच्चासन आसीन ॥६॥
विविध ग्रन्थको मथन कर, भर्यो ज्ञान भंडार।
गिरा सरितमें वहित नित, सुधा सललकी धार ॥७॥
प्राकृत पावन प्रेम युत, प्रचुर प्रशस्त सुभाव।
सत्य सिन्धु संयम सुजन, सीधा सदय सुभाव ॥८॥
ऐसे गुन गन खान जे, **सेठी अर्जुनलाल**।
बिना दोष जिनकों दीयो, कारागृहमें डाल ॥९॥
हाय कर्म निर्दई दई, यह दाह नई है।
शब्द न सकत बखान दुःसह दुखदशा भई है ॥१०॥
आज **मास कई होगये**, भोगत कष्ट अपार।
जिनको लिखते लेखनी, कांपत है हरबार ॥११॥
'जैनजाति' के सगमें कीये बहोत उपकार।
तन मन धन सब कर दीया, इस पर हीन्योद्धार ॥१२॥
वही जाति सुख से पडी, **सोवत** पॉव पसार।
वह जैपुरकी जेलमें, भोगत कष्ट अपार ॥१३॥
करत न उद्योग कुछ, उन्हें छुडावन काज।
मौन साँध बैठा अरे, कृतघ्न जैन समाज ॥१४॥
महोत दिवस तो होगये, अब तो नेत्र उघार।
कमर बाँध होओ खडे, तन धन सब दो वार ॥१५॥
यदी नही तूं कर सकें, बीरोंका उद्धार।
तो तेरा जीना वृथा, इस संसार मझार ॥१६॥
पार्श्व प्रभूसे विनती, 'प्रेमी' की हरवार।
सेठीजीको विपत्ति,सब दीजै तुरंत निवार ॥१७॥

प्रार्थी-'प्रेमी' हजारीलाल जैन-आगरा।

आवश्यकीय प्रार्थना।

महाशयों ! यह बात निर्विवाद सिद्ध है, इसके कहनेकी कोई आवश्यकता नहीं कि-संसारमें वही धर्म जीवित रह सकता है और उसीकी गणना जीवित धर्मोंमें की जा सकती है कि जिसका प्राचीन साहित्य सुरक्षित विद्यमान हो, जिसके इतिहासादि आर्षग्रंथोंका यथेष्ट उद्धार होता जाता हो, जिसका शास्त्रभंडार नित्यशः बढ़ता जा रहा हो और जिसके तर्क, छंद, व्याकरण ज्योतिष विज्ञान इतिहासादि साहित्यके समस्त अंगोंकी पुष्टि होती जाती हो। वह धर्म इस उन्नतिशील प्रकाशमयी २० वीं शताब्दीमें कदापि उन्नति नहि कर सकता और उसके सिद्धांत कदापि विश्वव्यापी नहीं हो सकते जिसका कि साहित्यभंडार अंधकूपमें पड़ाहुआ हो, प्राचीन महत्त्वशाली ग्रंथ [illegible]हार बन रहे हों इसीकारण ही सब समाज हजारों लाखों रुपये खर्च क[illegible] साहित्यकी रक्षा वृद्धि कररहे हैं—हमने भी इसी मार्गको उत्तम समझकर [illegible]हुये अपने पवित्र जैनधर्मकी स्थिति कायम रखनेकी इच्छासे सरकारी [illegible]वर्सिटियोंमें जैनन्यायव्याकरणादि ग्रंथ भरती कराने वा सर्वत्र प्रचार कर[illegible] [illegible]क भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्था खोलकर प्राचीन संस्कृत ग्रंथोंके प्रकाश[illegible] सनातनजैनग्रंथमाला और हिंदी बंगला अंगरेजीभाषामें नये ढंगके इतिहासादि ट्रेक्टें प्रकाश करनेकेलिये चुन्नीलालजैनग्रंथमाला प्रकाशित करना प्रारंभ किया [illegible]रंतु पूरी २ द्रव्य सहायता न मिलनेके कारण कलकत्ता संस्कृतयूनिवर्सिटीमें [illegible]हुए जैनन्याय जैनव्याकरणग्रंथोंका पठनक्रम (कोर्स) अभीतक छपाकर पूर्ण [illegible]हीं कर सके। लाचार ! राजवार्तिक, जैनेंद्र शाकटायनादि व्याकरण अधूरे ही रखकर [illegible]ाना बंध करना पड़ा है। परंतु अब कलकत्ता आदिके अनेक सज्जनमहाशयोंकी [illegible]रणा व सम्मतिसे उत्साहित होकर पचास२ रुपयोंके ६० और दश२ रुपयोंके २०० इसप्रकार पांचहजार रुपयोंके शेअर बेचकर उसी रकमंसे अत्यंत शुद्धतासे मनोहर छपाई करनेकेलिये एक छोटासा जैनप्रेस खोलकर उसकेद्वारा दोनों ग्रंथमालायें नये उत्साहसे बराबर निकालते रहनेका प्रबंध किया गया है। अतएव समस्त सज्जन विद्वज्जन महाशयोंसे प्रार्थना है कि नीचे लिखे नियम बांचकर आप स्वयं शेअर (हिस्से) खरीदें तथा अन्यान्य महाशयोंको खरीददार बनाकर शेअर भरनेका फारम (जो कि इसके साथ है) लिखवाकर शीघ्रही हमारे पास भेजें, विलंब करनेसे अवश्य ही पछताना पड़ेगा। सब शेअर भरतेही प्रेस टाईप मंगाकर काशी या कलकत्तेमें कार्य प्रारंभ कर दिया जायगा। पत्र और फारम भेजनेका पता—

पन्नालाल बाकलीवाल, महामंत्री

भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था ठि० मदागिन जैनमंदिर पो० बनारस सिटी।

नियमावली।

१। जो महाशय पचासरुपयोंका एक शेअर (हिस्सा) लेंगे उनको सनातनजैन-ग्रंथमालामें छपनेवाले समस्त ग्रंथोंकी तथा चुन्नीलालजैनग्रंथमालामें हिंदी बंगला अंगरेजीमें छपनेवाले किसी भी एक भाषाके समस्त ग्रंथोंकी एक एक प्रति विना मूल्य बराबर भेजते रहेंगे। यदि कोई महाशय ग्रंथमाला न लेना चाहें तो उनको ८) रुपये सैंकड़े वार्षिकके हिसाबसे ५०) रुपयोंका वियाज ४) रु. प्रतिवर्ष भेजदिया जायगा।

२। जो महाशय दश दश रुपयोंके शेअर खरीदेंगे उनको प्रत्येक शेअरके पीछे चुन्नीलालग्रंथमालामें छपनेवाले किसी एक भाषाके समस्तग्रंथोंकी एकएकप्रति विना मूल्य भेजते रहेंगे। यदि कोई महाशय ग्रंथ न लेना चाहें तो उन्हें १० रुपयोंका वियाज प्रतिवर्ष ॥।) बारह आने भेजते रहेंगे।

३। उपर्युक्त लाभके सिवाय कोई भी हिस्सेदार महाशय दानकरनेके लिये अधिक प्रतियां खरीदेंगे तो उन्हें सब ग्रंथ पौनी कीमतसे भेजदिये जायगे।

४। जो महाशय अपने शेअरके रुपये वापिस लेना चाहें तो तीनवर्ष बाद ले सकते हैं तथा जब चाहें तब किसी अन्य खरीददारको बेच सकते हैं।

५। इस संस्थाके समस्तकार्य संस्थाके मूलसंस्थापक, परमसंस्थापक, संरक्षक (कोषाध्यक्ष), संस्थापक (५०० रुपयोंके शेअर खरीदनेवाले) महामंत्री, सहायक महामंत्री, मंत्री–उपमंत्री इन सबकी बहुसम्मतिसे होते रहेंगे।

महामंत्री।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

(यह फारम भरकर भेजियेगा ।

श्रीयुत महामंत्री–भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था काशी योग्य, बाद जयजिनेंद्रके आपका प्रकाशित विज्ञापनपत्र आद्योपांत बांचकर देखा, आपके प्रकाशित नियमोंके अनुसार मैं दश दश रुपयोंके* ——— शेअर, पचासर रुपयों-वाले* ——— शेअरोंका खरीददार बनता हूं सो नीचे लिखे अनुसार मेरा नाम शेअर खरीदनेवालोंके रजिष्टरमें लिखकर सूचना दें और जब काम चलाने लायक शेअर भर जांय और कार्य प्रारंभ करना चाहैं, उस वक्त सूचना देकर रुपये मंगा लेवें । मुझे शेअरोंके बदले आपके प्रकाशित नियमके अनुसार ग्रंथ वियाज÷ भेजते रहें । तारीख सन १९१९

मेरा नाम ——————— उमर ——— वर्ष ———

मेरे पिताजीका नाम ——————— जाति ———————

ग्राम ———————————————

पोष्ट ——————— जिला ———————

पत्र पहुंचनेका पूरा ठिकाना ———————

———————

———————

---

* यहांपर जिसप्रकारके शेअर भरने हों उनकी संख्या लिखकर दूसरे प्रकारके शेअरका मजमून छेकदें ।

÷ यहांपर ग्रंथ लेना हो तो वियाज शब्द छेकदें । वियाज लेना हो तो ग्रंथ शब्द छेकदें।

शा. खुबचंद अमोचंदना श्री सुरत जैन प्रीन्टींग प्रेसमां मदुभाई भाईदासे छाप्युं.

इस वर्षके ग्राहकोंको हिन्दी-गुजराती भाषाकी ८-१० पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रकट थतुं मासिक



The Digamber Jain.

युतं सुलेखै र्विविधैश्चचित्रै, र्दिगम्बरंजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुत्तमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ८ मुं. | वीर सं. २४४१ प्र. द्वि. वैशाख. विक्र. सं. १९७१. | अंक-७ मो.



अक्षयतृतिया पर्व. आवता द्वि. वैशाख सुद ३ ने दिने एक एवो पवित्र पर्व-दिवस आवी पहोंच्यो छे के जेने जैन अजैन सर्वे भाईओ एक सामान्य त्हेवाररुपे जुदी जुदी रीते जाहेर त्हेवार तरीके पाळे छे. आ तेज शुभ दिवस छे के जे दिने आ अवसर्पिणी कालना त्रीजा (सुखमादुःखमा) आराना अंतमां आपणा आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेवस्वामी याने आदिनाथ भगवानने हस्तीनापुरना राजा श्रेयांसे पोतानी पत्नी सहित पडगाहना करीने विधिपूर्वक ईक्षुरस याने शेरडीना रसनो आहार आप्यो हतो ते दिने श्रेयांस राजाने त्यां पंचाश्चर्य थयां हतां अने भोजनशालामां एवी अक्षयरुद्धि प्राप्त थई हती के ते दिने गंजावर संख्यामां मनुष्यो भोजन करी जवा छतां पण भोजन घटी पड्युं नहोतुं. आ दिवस वैशाख सुद ३ त्रीज हतो के जे दिने भगवान ऋषभदेवे ६ महीनाना उपवास अने ६ महीना भोजनांतराय मळी एक वर्ष पछी पारणुं कर्युं हतुं, जेथी घेरेघेर आनंदआनंद मनायो हतो तथा आ अवसर्पिणी कालमां कर्मभूमिनी शरुआतमां दाननी प्रवृत्ति प्रथम शरु थई हती, जेथी आ अक्षयनिधि प्राप्त थयाथी एवा दिवसनी यादगीरी कायम राखवाने माटे आ त्हेवार दर वर्षे दरेक कोम अक्षयतृतिया याने अखात्रीजना नामथी एक खास पर्व तरीके पाळे छे अने ऋषभदेवस्वामीनो इक्षुरसथी अभिषेक करी पूजन करे छे तेमज सगांव्हालांओने तेडी मिष्टान्न भोजन करी ए दिवसने पवित्र त्हेवार तरीके पाळे

छे एटले अन्यमती भाईओमां ए दिने अनेक प्रकारे दान करवामां आवे छे, त्यारे जैनोमां कोई पण प्रकारनुं दान थतुं ए दिवसे जोवामां आवतुं नथी ए शोचनीय छे, माटे ' भूल्या त्यांथी फरीथी गणो ' ए उक्ति अनुसार ए दिने आहारदान, अभय दान, औषध-दान अने विद्यादान–शास्त्रदान ए चार दानो शक्ति मुजब करवानी जरुर छे. आहा ! आ दिवस तो एटलो बधो पवित्र गणाय छे के ए दिने कंइ पण शुभ काम कंइपण मुहूर्त जोया वगर करवामां आवे छे, तो आवा पवित्र पर्वने व्रत, नियम, पूजन, उपदेश, जागरण, दान, वगेरेथी सुशोभित करवोज जोईए. हाल ज्यां जोईए त्यां सौथी प्रथम **विद्यादान अने शास्त्रदाननी** आवश्यकता जणाय छे, तो आ शुभ दिने सर्वेए शक्तिमुजब खास करीने आपणी विद्यादाननी संस्थाओने बनी शकतुं दान करवुं जोईए, तेमज पुस्तको मंगावी ते साधर्मी बंधु-ओमां वेंचवा जोईए अथवा शास्त्रदान करवानी सगवड करी आपनार कोई पत्रकारने कोई पुस्तक भेट वेंचवा माटे अमुक रकम आ पर्व-निमित्ते मोकलवानी जरुर छे.

* * * *

પાંચમી સાહિત્યપરિષદ અને પ્રદર્શન.

અત્રે **(સુરતમાં)** આ મે માસની તા. ૨૯-૩૦-૩૧મીએ **ગુજરાતી સાહિત્ય પરિ-**પદ યાને ગુજરાતી સાહિત્ય કોન્ફરંસની પાંચમી બેઠક જાણીતા સાક્ષર રા. રા. **નરસિંહરાવ ભોલાનાથ દિવેટિયાના** પ્રમુખપણા નીચે હાઇસ્કુલના કંપાઉન્ડમાં ભરાનારી છે, જેમાં **ગુજરાતી ભાષાના** સાહિત્ય ઉપર દરેક કોમ તરફના **નિબંધો** માંગવામાં આવેલા છે, તેમજ એની સાથે **પ્રાચીન ગુજરાતી સાહિત્યને લગતું એક ઉત્તમ પ્રદર્શન** સારા પાયા ઉપર ભરવામાં આવનાર છે, જેમાં ગ્રંથવિભાગમાં **પ્રાચીન ગુજરાતી ભાષાના** હસ્તલિખિત પુસ્તકો, શિલાલેખો, દસ્તાવેજો, સિક્કાઓ વગેરે, **ચિત્ર વિભાગમાં** ગુજરાતના પ્રાચીન સ્થળોનાં ચિત્રો; કાચ, કાગળ, લાકડાં વગેરે પર પાડેલાં હાથનાં જુનાં ચિત્રો કે ચિત્રોવાળાં પુસ્તકો તથા ગુજરાતીને હાથે ચિત્રાયલાં નવાં ચિત્રો વગેરેનું **તથા વસ્તુ વિભાગમાં** કોઇ પણ જાતના પાષાણ કે ધાતૂ ઉપરના પ્રાચીન પૂતળાંઓ વગેરે, લાકડાં તથા ધાતુ વગેરે ઉપરનું જુનું કોતરકામ, ભરતકામ, દાગીનાઓ, સંગીતનાં સાધનો વગેરે અનેક **પ્રાચીન ચીજોનો ગંજાવર સંગ્રહ** કરીને તે જાહેરને બતાવવામાં આવ-નાર છે, જેમાં ગ્રંથ અને ચિત્રવિભાગમાં વડોદરામાં ગત પરિષદની બેઠકમાં બધા ધર્મી તરફથી પુસ્તકો મુકવામાં આવેલા હતાં, તેમાં આપણા શ્વેતાંબરી ભાઇઓ તરફથી કેટલુંક સાહિત્ય મુકવામાં આવ્યું હતું, પણ દિગંબરી ભાઇઓ તરફથી કંઇપણ મુકવામાં આવ્યું નહોતું કે કોઇએ એ પરિષદમાં ભાગ લીધો હોય એવું અમારી જાણમાં નથી, જેથી આ પરિષદના આ પ્રદર્શનમાં આપણા **દિગંબરી ભાઇઓનું પ્રાચીન ગુજરાતી** સાહિત્ય સંગ્રહ કરીને તે રજુ કરવાનો વિચાર અમને થોડાજ દિવસો ઉપર ઉદ્ભવ્યો અને તેની **સામગ્રી** એકઠી કરવાનો પ્રયાસ શરૂ કરતાં તેમાં અત્રેના અમારા ઉત્સાહી મિત્ર ભાઇ **છગનલાલ સરૈયા** જોડાવાથી અમારા ઉત્સાહમાં વધારો થઇ અમો બન્નેએ **વ્યારા અને મહુવા** જઇ ત્યાંના **શાસ્ત્રભંડારો** જોયા હતા, જેમાં વ્યારાના ભંડારમાં આશરે ૧૦૦-૧૫૦ શાસ્ત્રો સંસ્કૃત, પ્રાકૃત અને ગુજરાતી ભાષાના છે તથા મહુવાના **વિઘ્નહરપાર્શ્વનાથના** શાસ્ત્રભંડારમાં આશરે ૨૦૦-૨૫૦ શાસ્ત્રો

ત્રણે ભાષાના છે તેમજ સાં પં. માણેકલાલ મોહનલાલજી હસ્તકના શાસ્ત્રભંડારમાં આશરે ૨૫૦-૩૦૦ શાસ્ત્રો, ચિત્રો, ન'-શાઓ વગેરે ગંજાવર સાહિત્ય જોવામાં આવ્યું છે, જેમાંથી (ત્રણે સ્થળેથી) અમો કેટલાંક શાસ્રો, ચિત્રો, નકશાઓ વગેરે આ પ્રદર્શન માટે લાવ્યા છીએ, જેમાંના ચિત્રો અને નકશાઓ એટલા તો ઉત્તમ અને પ્રાચીન છે કે જે જોવાથી આપણને માલૂમ પડયા વગર નહીંજ રહે કે અસલના વખતમાં કેવી સારી કારીગીરી હતી અને આ દેશમાં રંગ કાગળ વગેરે કેવા સરસ બનતા હતા અને તે વખતે વિદેશના કંઇ પણ માલની આપણા પૂર્વજોને જરૂર પડતી નહોતી. આ ભંડારમાંથી પં. શીવલાલજીનો તેમને પોતાને હાથે ચીતરેલો ફોટો મળી આવ્યો છે, તેમ તેમનું વૃત્તાંત જાણતાં તે ફોટો તેમના જીવનચરિત્ર સાથે ભવિષ્યમાં પ્રકટ કરવાનો અમે નિશ્ચય કર્યો છે. આ પ્રમાણે વ્યારાનો શાસ્ત્રભંડાર જરા પણ આનાકાની વગર બતાવનાર શેઠ શીવલાલ ઝવેરચંદનો તથા મહુવાના શેઠ ઈચ્છારામ ઝવેરચંદ અને પં. માણેકલાલ મોહનલાલજીનો આપણે જેટલો ઉપકાર માનીએ તેટલો ઓછોજ છે. વળી સૂરતમાંથી ડૉ. ભુખણદાસ પરશુદાસ પાસેથી ભક્તામરકથાનું આશરે ૧૫૦-૨૦૦ રંગીન ચિત્રોવાળું પ્રાચીન પુસ્તક તથા આશરે ૨૨૫ વર્ષપર સુરતમાં થયેલા સુરેંદ્રકીર્તિ (કાષ્ટાસંઘના) ભટ્ટારકનું ચિત્ર મળ્યું છે, તેમજ અત્રેના નૃસિંહપુરાના પ્રાચીન મંદિરનો શાસ્રભંડાર કે જેની કૂંચી શેઠ કરમચંદ અભેચંદની વિધવા નવીબાઈ પાસે હતી તેમણે તે અમને આપવાથી એ શાસ્રભંડાર ખોલીને જોતાં તેમાં લગભગ ૮૦૦ થી ૧૦૦૦ શાસ્રો જોવામાં આવ્યા છે, જેમાંનો બારઆની ભાગ સંસ્કૃત અને પ્રાકૃતના ગ્રંથોનો છે જ્યારે ચારઆની ભાગ ગુજરાતી ભાષાના ગ્રંથોનો છે. આવો ગંજાવર શાસ્રભંડાર જોઇને અમારા હુર્ષનો પાર રહ્યો નથી ત્યારે બીજી બાજુએ તેની હાલહવાલી થયેલી જોઇને આંખમાં અશ્રુ આવ્યા વગર પણ રહ્યા નથી કેમકે આ શાસ્રોમાં લગભગ અડધોઅડધ શાસ્રો તો કોઈના કાગળ ખવાઈ ગયેલા, અડધા પડધા બળી ગયલા, ઉધઈ ખાધેલા, ઉંદરોએ કરડેલા કે હવાથી પાનાંઓ તદ્દન ચોંટી ગયલા તો કેટલાંક અપૂર્ણ એમ જોવામાં આવતાં અમને ઘણો ખેદ થયો છે, છતાં પણ હાલમાં તો તે સ્થીતિ અટકીને એક કબાટમાં ગાંસડીઓ બાંધીને મુકેલા છે, જેને સાફસુફ કરી તથા નવાં બાંધણો, પૂંઠાઓ વગેરે કરી તેમજ તેનું એક વીગતવાર સૂચીપત્ર તૈયાર કરાવી બે ચાર સુશોભિત કબાટો બનાવી તેમાં આ ગ્રંથોને પધરાવી તે કબાટોને નવીન બંધાયલા સુશોભિત મંદિરના મંડપમાં મુકવાની અસંત તાકીદે જરૂર છે, જેનો અમલ એ દહેરાની પંચના ભાઇઓ માંહોમાંહેનો કુસંપ દૂર કરી એકસંપે થઇ આ જિનવાણીનો જીર્ણોદ્ધાર કરવાનું ઉત્તમ કાર્ય હવે તો કરશે એવી અમો આશા રાખીએ છીએ. એ ભંડારમાંથી પણ કેટલાક નકશાઓ, જરૂરી ગ્રંથો તથા બે સચિત્ર ગ્રંથો મળી આવ્યા છે વળી અત્રેના શા. ભુખણદાસ હરજીવનદાસ પાસેના આશરે ૩૦-૪૦ ગ્રંથો જોયા તો તેમાંથી પણ કંઈક મળી આવ્યું છે. તેમજ અત્રેના ગુજરાતીના દહેરામાંથી પણ ૪૫૦ વર્ષ ઉપરનો સોનાના અક્ષરે લખાયલો અને બે ચિત્રોવાળો તત્વાર્થસૂત્રજી ગ્રંથ શા. અભેચંદ પાનાચંદ દ્વારા પ્રાપ્ત થયો છે તથા એક સ્થળે સચિત્ર 'યશોધર ચરિત્ર' સોનાના અક્ષરે લખેલું અને મોતી વગેરેથી જડેલા પુંઠાઓથી સુશોભિત તેમજ દરેક પાને જુની કારીગરીના રેશમી ટૂકડાઓ મુકેલા એવું એક ઉત્તમ કારીગીરીવાળું શાસ્ર હોવાની ખબર મળતાં તે મેળવવાની સ્વીકારતા અમને

મળી છે જેથી તે લઈ આવવ માટે અમો આ અંક તૈયાર કરી જવાના છીએ. આ મુજબ **ટુંક સમયમાં** અમારાથી બનતો પ્રયાસ કરી **આ પ્રદર્શનમાં દિગંબર જૈનોનું પ્રાચીન સાહિત્ય** બને તેટલું રજુ કરનાર છીએ, માટે આ કાર્યમાં ગુજરાતના દરેક બંધુએ અમને **મદદ કરવાની જરૂર** છે, જેથી જેજે ગામ કે શહેરમાં **પ્રાચીન ગુજરાતી ભાષાનાં પુસ્તકો, જુનાં ચિત્રો, નકશાઓ** વગેરે હોય ત્યાંના ભાઇઓ તે ચીજો **અમને ચાર પાંચ દિવસમાં** રજીસ્ટર્ડ બુકપોસ્ટથી કે પાર્સલથી **મોકલી આપશે** તો તે પણ અમે આ **પ્રદર્શનમાં મુકવાની ગોઠવણ કરી શકીશું**. વળી આ સાહિત્ય પરિષદમાં દરેક ધર્મ તરફના નિબંધો વંચાશે તેમ ભાષણો પણ કદાચ થશે તો તેવે પ્રસંગે દિગંબરી ભાઇઓમાંથી કોઇ વિદ્વાને દિ૦ જૈનોના પ્રાચીન સાહિત્ય સંબંધી નિબંધો લખી મોકલવાની અને ભાષણો આપવાની જરૂર છે. આ ઉપરાંત આ **પરિષદ** અને **પ્રદર્શનનો** લાભ લેવા **સુરત** આવવાને અમો ગુજરાતના સર્વે **જૈન બંધુઓને આગ્રહપૂર્વક સૂચના** કરીએ છીએ કે જેથી **ગુજરાતની અનેક પ્રાચીન વસ્તુઓને જોવાનો અલભ્ય લાભ મળી શકશે.**

* * * *

हवे तो अमारा वांचको जयपुरनिवासी अने जैन कोमने जीवन अर्पण करनार पं. अर्जुनलाल शेठीना उपर आवी पडेली अनहद आफतथी

अर्जुनलालजीनी आफत क्यारे टळशे?

अजाण्या नथी. लगभग एक वर्ष थवा आव्युं अने आखी जैन कोम तो शुं पण अजैन पत्रकारोए पण अनेक रीते जयपुर महाराजा अने नामदार वाइसरोय लोर्ड हार्डिजने अनेक अरजीओ, तारो, प्रार्थनाओ वगेरे कर्युं तेम अनेक स्थळे अनेक गंजावर सभाओ थई मेमोरीयलो मोकलायां, छतां पण अमने लखतां अतिशय दिलगीरी थायछे के ते एकपण तार, अरजी के मेमोरीयलनो लेशमात्र पण उत्तर जैपुरना महाराजा के नामदार वाइसरोय तरफथी मळतोज नथी, तेम पं. अर्जुनलालजी शेठीनी धर्मपत्नी गुलाबबाई के जेनां कुमळां चार बाळको उपर अनहद विपत्ति आवी पडेली छे ते अबलाए अनेक तारो जयपुरना महाराजाने कर्या तेनो जरा उत्तर सरखो पण मळ्यो नथी ए जाणी कया बंधुनी लागणी उपर कारी घा पड्या वगर रहेशे ? आमां कंई समज पडती नथी के आखी जैन कोममां हाहाकार वर्ताई रहेवा छतां नामदार वाइसरोय साहेब ते संबंधी कंई जुवाब के खुलासो कोण जाणे शा कारणे प्रकट करता नथी. आपणुं मायाळु अने शांतिमय ब्रीटीश राज्य न्यायी तरीके आखी दुनिया उपर मशहूर छे, तो आ न्यायी ब्रीटिश राज्यमां आम वगरन्याये कंई पण खुलासो प्रकट कर्या सिवाय कोमसेवामां जिंदगी अर्पण करनार एक जैन बंधुने जयपुर राज्यमां पुरी राखवामां आव्यो छे ए केटलुं अजबजेवुं छे !! आपणा मायाळु अने लोकप्रिय वायसरोय साहेबे कानपुरनी मसजीद संबंधी उठेला केसनुं निराकरण करी मुसलमानोने संतोष्या हता, वजवजना टंटानो निकाल शांतिथी कर्यो हतो तो तेओ नामदारे जीवदयानी हिमायती अने अहिंसा धर्म उत्तम रीते पाळनार जैन कोम जेवी अतीव शांत प्रजानी आ दाद शुं नहिंज सांभळवी जोईए ? टूंकमां जयपुर राज्य के जे न्यायशील

ब्रीटिश राज्यनी हकुमत नीचे छे तेना हिंदुस्तानना सुकानी नामदार वाईसरोय साहेबने अमो अनेक आजीजीपूर्वक विनति करीए छीए के हवे तो जरापण विलंब न करतां पंडित अर्जुनलालजी सेठीना संबंधमां योग्य खुलासो प्रकट करवा महेरबानी करशो. हा, जो एओ अपराधी जणाय तो ते अपराध न्यायनी देवडीए साबित करावी तेमने योग्य शिक्षा घणी खुशीनी साथे करशो पण आम वगर न्याये एक वर्ष थयां एक जैनबंधु जेलमां सबड्या करे अने तेनां बच्चांवालां अनहद आपत्तिमां आवी पडे ए कोई पण रीते योग्य जणातुं नथी. हजु पण जैन कोमे पोतानो अवाज नरम पाडवानी जरुर नथी, पण गामेगाम अने शहेरेशहेर सभाओ भरवानी तथा अरजीओ मोकल्या करवाना जरुर छे अने त्यारेज आ आपत्तिनो निवेडो आवी शकशे. वळी आवा कार्यमां नाणांनी पण घणीज जरुर छे, ए जाणीतुंज छे तो सर्वेए पोतपाताथी बनती मदद बाबू अजितप्रसादजी एम. ए. एल. एल. बी. ने अजिताश्रम-लखनोर ए सरनामे मोकलवी जोईए के जेओ ए माटे पुष्कळ खटपट करी रहेला छे अने पं. अर्जुनलालजीनी पत्नी अने चार बच्चांओने तेमणेज आसरो आपीने लखनोरमां राखेला छे.

આગમોદય સમીતિ—આપણા શ્વે. ભાઇઓમાં આ નામની સંસ્થા સ્થપાઇ છે, જે દ્વારા આગમના સર્વે સુત્રોને અનેક મુનિઓની કમીટી દ્વારા સંશોધન કરાવી છપાવીને પ્રકટ કરવામાં આવનાર છે, જે માટે રૂ. ૫૦૦૦૦)નો અડસટ્ટો નીકળ્યો છે તેમાં ૩૫૦૦૦) તો ભરાઈ ગયા છે. પુસ્તકો પ્રકટ કરવાની આવી કોઈ ગંભીર સંસ્થા દિગંબરી ભાઇઓમાં છે કે ?



શોકજનક મૃત્યુ અને દાન:-આપણી અમદાવાદ બોર્ડિંગના સેક્રેટરી શેઠ લલ્લુભાઇ લખમીચંદના સૌ. પત્ની નવીબાઈ ઉર્ફે હીરાકોર પ્ર. વૈશાખ સુદ ૫ ને દિને મૃત્યુ પામ્યા છે, જેમના સ્મરણાર્થે રૂ. ૩૦૦) કાઢી તેમાંથી રૂ. ૧૦૦) 'દિગંબરજૈન' ના ગ્રાહકોને એક પુસ્તક ભેટ વેંચવા માટે આપવામાં આવનાર છે.

તીર્થક્ષેત્ર કમીટીની સૂચના:-મહામંત્રી લાલા પ્રભુદયાલજી જણાવે છે કે **પાવાગઢ સિદ્ધક્ષેત્રના** મંત્રી શેઠ લાલચંદ કહાનદાસ તરફથી સુચના મળી છે કે એ તીર્થના મુનિમ છગનલાલ હરીલાલ તથા એક સીપાઇને પાવાગઢની અધુરી ધર્મશાળાને માટે ટીપ કરવાને માટે મોકલેલા છે, માટે જ્યાં જ્યાં તેઓ જાય ત્યાંના ભાઇઓએ ધર્મશાળાના અધૂરા કાર્ય માટે સહાયતા આપવી જોઇએ તથા ભારત. દિ. જૈન તીર્થક્ષેત્ર કમીટીના છાપ માર્કેવાળી રસીદ લેવી જોઇએ.

सीरोंजमें गत मासमें पाठशालाकी स्थापना हुई है। यहांपर जैनी घर ६१, मंदिर ६ और जनसमूह २०० है। यदि पंचान महाशय विद्योन्नति पर ध्यान देवें तो आशा है कि थोडे दिनोंमें बहुत धर्मलाभ हो।

इंदोरनी दानवीर शेठ हुकमचंदजीनी धर्मशाळामां कोई यात्रीओ चप्पु, ताळुं, पीतलना बे पवाला, कोट, कबजो, अछोडावाळुं घडियाल भूली गयेला छे, जेना

मालिको खात्री पुरावा साथे ३१-५-१५ सुधी त्यांज लखी मोकलशे, तो ते चीजो तेमने हवाले करवामां आवशे, नहितो ते पछी लीलाम थई जशे.

સુરતમાં એકત્ર મંડળ દ્વારા સભાઓઃ- સુરતમાં ત્રણે ફિરકાના ભાઇઓની 'જૈન હિતવર્ધકમંડળ' નામે એક સભા મહાવીરજયંતીને દિને સ્થપાઇ છે, તેની પ્રથમ જાહેર સભા પ્ર. વૈશાખ સુદ ૧નીરાત્રે ૮થી ૧૦ સુધી ચંદાવાડીમાં રિટાયર્ડ ફર્સ્ટકલાસ સબ જડજ રા. ચીમનલાલ લલ્લુભાઇના પ્રમુખપણાનીચે મળી હતી, જેમાં શ્રી. ગીરધરલાલ કુંગરશી શેઠે 'સેવાધર્મ' ઉપર અસરકારક ભાષણ કર્યા પછી પં. પીતામ્બરદાસજી ઉપદેશક, વૈદ્ય કસ્તુરચંદ નવલચંદ, શા. ઠાકોરદાસ નવલચંદ રિટાયર્ડ ન્યાયાધીશ વગેરેનાં વિવેચનો થઇ પ્રમુખને હાથે મંડળનું નવીન બોર્ડ ખુલ્લું મુકાયું હતું અને પ્રમુખે મંડળની ઉન્નતિ થવા સંબંધી યોગ્ય સુચનાઓ કરી હતી, જે પછી એ મંડળની સભા દરેક સુદ બીજે કરવાનો ઠરાવ થવાથી આવતી સભા **દ્વિ. વૈશાખ સુદ ૨** ની રાત્રે ૮ વાગતે ચંદાવાડીમાં મળનાર છે, જેમાં વૈદ્ય કસ્તુરચંદ નવલચંદ 'ધર્મસેવા' એ વિષય ઉપર ભાવનગરસ્ટેટના રિટાયર્ડ ન્યાયાધીશ રા ઠાકોરદાસ નવલચંદના પ્રમુખપણા નીચે જાહેર ભાષણ આપનાર છે, તેમાં સર્વ બંધુઓને પધારવાને આમંત્રણ કરવામાં આવે છે.

ભટ્ટારક સુરેંદ્રકીર્તિજી તારાપુર, ખાનપુર, છીજકા, મહીયારી, છીણુજ, જલસણ, કાણીસા, સાયમા વગેરે સ્થળે ભ્રમણ કરી ઉપદેશ આપી હાલ સોજીત્રે નિવાસ કરી રહેલા છે એમ અમને જણાવવામાં આવે છે.

बनारससे ' हिन्दी-केसरी ' नामका पाक्षिकपत्र ता. १ जूनसे प्रकट होगा जिसका वार्षिक मूल्य रु. २) नमूनाकी संख्याका मूल्य ~॥) और ता. २५ मे तक मूल्य १॥) है। पत्र मंगानेका पताः-संपादक, हिन्दी-केसरी, आर्ट प्रेस-बनारस सीटी।

बड़नगरमें अधिवेशन-मालवा दि. जैन प्रां. सभाका नैमित्तिक अधिवेशन बड़नगरमें द्वि. वै. सुद २ से ५ तक बडाभारी प्रतिष्ठामहोत्सवके प्रसंग पर सुदी ४-५ मु. ता. १८-१९ को होनेवाला है, जिसके सभापति नजीबाबादवाले शेठ ताराचंदजी रईस नियत हुए है। सभी भाईयोंको इस अधिवेशनमें पधारनेकेलिये महामंत्री लाला भगवानदासजी आमंत्रण करते हैं।

सनावदमें पं. लक्ष्मीचंद्रजीके उपदेशसे बहुत कुछ सुधारा हुआ है।

विनामूल्य दवाई-केवल डांक खर्च भेजनेसे विनामूल्य सब प्रकारकी दवाई निम्न पतेपर मिलती है-पं. ठाकुरप्रसाद जैन-*मुंगावली (ग्वालियर)* और पं. *गीरवर*दासजी, अध्यापक जैन पाठशाला-सिरोंज।

અમદાવાદમાં આપણી બોર્ડિંગમાં શ્રીમતી રૂપાંબાઇ તરફથી જે ધર્માદા ઔષધાલય ખોલાયલું છે, તેમાંથી દરેક પ્રકારની દેશી દવા ગામના દર્દીઓને આપવામાં આવે છે તથા બહારગામ પણ ટપાલથી દવાઓ મોકલાય છે. અમદાવાદ તથા ગુજરાતના ભાઇઓએ આ શુદ્ધ દેશી ઔષધાલયનો લાભ જરૂર પડવે લેવો જોઇએ.

પોદાદરમાં પાઠશાલા અને મેલાવડો-પોદાદર (મહીકાંઠા) ની પાઠશાલા

બંધ થવાની સ્થિતિમાં હતી તેને સુરતના સ્વર્ગવાસી શેઠ જેલાભાઇ હીરાચંદ તાસવાળાના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્ર શેઠ તલકચંદ જેલાભાઈ તરફથી એ પાઠશાળા એક વર્ષ થયાં ચાલુ રાખવામાં આવી છે, તેની પરીક્ષા લેવાઈ વાર્ષિક મેલાવડો ગયા માસમાં પોલીસ્ટેટના મેનેજર માધવલાલભાઈના પ્રમુખપણાનીચે થયો હતો, જેમાં રિપોર્ટ વંચાયા પછી કેલવણી સંબંધી વિવેચનો થઇ વિદ્યાર્થીઓને કપડાં, પુસ્તકો અને મીઠાઇ વેંચાયા હતા, તે પ્રસંગે ભાઇ તલકચંદે પણ હાજરી આપી શાળાને વધુ સગવડ કરી આપવાનું સ્વીકાર્યું હતું.

મુંબાઈ દિગંબર જૈન પાઠશાળાઃ— મુંબાઇમાં સ્વર્ગવાસી શેઠ માણેકચંદ લાભચંદ ચોકસી તરફથી મંદિરમાં સને ૧૯૮૬માં પાઠશાલા ખોલવામાં આવેલી, પણ ત્યાંની સંસ્કૃત પાઠશાળા બંધ પડવા પછી એ પણ બંધ પડેલી, પણ હાલ એક વર્ષ થયાં એ મંદિર પંચને હસ્તક થવાથી આ પાઠશાલાનું કાર્ય ટ્રસ્ટીઓએ હાથમાં લઈ એ પાઠશાલા એક પંડિતને રાખી ચાલુ કરવામાં આવેલી છે તે લડાઇના હિંગામને લીધે કેટલોક સમય બંધ હતી, પણ હવે તા. ૧૮-૩-૧૫થી ચાલુ થઈ છે અને ૧૯ વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે. દિગંબરી ભાઇઓની ગીચ વસ્તીવાળા સ્થાનમાં આ પાઠશાલા હોવાથી સર્વે દિ. જૈનોએ આ પાઠશાલાનો લાભ પોતાનાં બાળકોને આપવો જોઇએ.

सिरगनमें सभा—सिरगन (झांसी) में तीन वर्ष हुये नागरीशिक्षाप्रचारक दि. जैन सभा स्थापित हुई है और जिसकी ओरसे सिरगन, ननोरा, जसौरा, और सेरवास इन ४ स्थानोंमें पाठशालाएं चल रही हैं जिसमें ३१ विद्यार्थी लाभ लेते हैं वही सभाका तृतीय वार्षिकोत्सव ता. १८-३-१५ को बड़ी घूमधामसे ब्रह्मचारी पं. मोतीलालजीके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें ब्रह्मचारी पं. गणेशप्रसादजी न्यायाचार्य, श्रीमान कुंवर दिग्विजयसिंहजी आदिके व्याख्यान हुये थे जिस समयपर जैन अजैन ८०० श्रोताजनोंने लाभ लिया था।

भानपुरामें रथोत्सव—मानपुरा (इंदौर) में गत मासमें ६ दिन तक रथोत्सवका मेला हुआ था, जिसमें पं. पीतामरदासजी उपदेशक, बाबू सुखसंपत्तिराय भंडारी, शांतिप्रिय सेठी आदिके अनेक व्याख्यान हुये थे और श्रीमान त्यागी क्षुल्लक मन्नालालजी भी पधारे थे। आपने रात्रिको श्रीजीका रथ न निकालनेका उपदेश दिया तौभी रात्रिको ही रथ निकाला गया था यह आश्चर्यकी बात है।

नवीन जैनी—इंग्लंडमें आर. मीलीयन नामक अंग्रेजने जैनधर्म धारण किया है।

सोनागीरीजीमें सुप्रबंध—श्री सोनागीरीजीमें इस वर्षके मेलेपर श्रीमान दतिया नरेश, उनके दिवान साहब आदिने पधारकर तीर्थक्षेत्रकमीटीके महामंत्री और राजा फूलचंदजी, भट्टारक हरेंद्रभूषण आदिको बुलाये थे और बहुतकुछ कोशिस होनेपर इस क्षेत्रकी प्रबंधकारिणीकमीटी स्थापित होगई है। इसी समयपर श्रीमान दती-

या नरेशको दि. जैन समाजकी ओरसे मानपत्र भी दिया गया था।

इन्दौरमें मेला और निमाड़ प्रां. महासभाः—गत मासमें इन्दौरमें १० रोज तक त्रिलोकमंडलविधानका महापूजन सेठ जयचंद चुन्नीलालकी ओरसे हुआ था उसी मौकेपर मालवा निमाड दि. जैन प्रांतिक महासभाका वार्षिक अधिवेशन भी बड़ी धूमधामसे दो दिन तक बाबू जुगमंदरलाल जैनी एम. ए. बेरीस्टर और हाईकोर्ट जज—इन्दौरके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें जैनसंख्या २००० उपस्थित थी और इन्दौरके महाराजा तुकोजीराव होल्करने भी पधारकर सभाको सुशोभित कीथी। सभापतिका व्याख्यान बहुत ही प्रभावशाली हुआ था, जिसमें लंडनमें जैन लीटरेचर सोसायटी और महावीर ब्रधरहुड द्वारा जैनधर्मके तत्वोंको इंग्लिशमें प्रकट करनेके लिये रु.५०००)का चंदा इकत्र हुआ था जिसमें ११००) तो शेठ चुन्नीलालजी जोंहरीने दिये थे। इस अधिवेशनमें ब्र. शीतलप्रसादजी, श्रीमान् पं. लक्ष्मीचंदजी, पं. मक्खनलालजी आदि पधारे थे और कुल १७ प्रस्ताव हुए हैं जिसमें मुख्य २ प्रस्तावों निम्नलिखित हैं—

(१) मालवा प्रांतमें प्रत्येक जैन वस्तीमें जैन पाठशाला खोली जावे (२) बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय बंद किया जावे (३) वनेड़ा और मक्सीजी तीर्थक्षेत्रोंकी सुव्यवस्था व उन्नतिकेलिये जैन जातिसे प्रेरणा और किसनलालजी मोदीको इस कामके लिये मंत्री नियत करना. (४) जैन आर्षग्रन्थोंके अनुसार बालकोंके संस्कार करने, उनमें मुख्यतासे विवाहसंस्कार अवश्य जैन पद्धतिसे किया जावे (५) स्थान२ में जैन कन्याशालाएं और श्राविकाश्रमोंका लाभ लेनेके लिये प्रेरणा (६) अध्यापकोंकी कमी होनेसे मालवामें एक जैनशिक्षकशाला (Jain Training School) खोली जावे जिसमें मिडल पास छात्रोंको तीन वर्ष तक आवश्यकीय संस्कृत व धार्मिक विद्याका ज्ञान शिक्षण-पद्धतिके साथ दिया जावे और बाद उनसे तीन वर्षतक उचित वेतनपर काम लिया जावे और इसके लिये कमसेकम १०१) मासिक (वार्षिक रु. १२१२) का खर्चकी तजवीज होना जिसमें ६०) मासिक सेठ झुन्नालालजी जोंहरी, १५) मासिक मारवाडी मंदिर, १०) मासिक गंभीरमल चुन्नीलालजी आदिके हैं और इस कार्यके लिये किसनलालजी मोदीको मंत्री नियत करना (७) जैन विद्वानोंको जैनकानून बनानेके लिये प्रेरणा करना (८) बिरादरीके जीमनमें झूठन छोडना, विवाहमें टुण्याकी रीति, विवाहमें खोटी सुपारी बांटना, विवाहमें कई वर्ष पहले सगाई करके लेनदेनमें बहुत खर्च करना, वेश्यानृत्य कराना आदि व्यर्थव्यय और कुरीतिओं बंद करानेके लिये

शेठ वालचंदजी, शेठ मुन्नालालजी, उदयलालजी, गोपालजी सेठी, छोगालालजी, नाथूलालजी, मोतीलालजी, धन्नालालजी, नाथूलालजी काला, खूबचंदजी, बुधमलजी आदि १६ महाशयोंकी कमेटी नियत होना. (९) जैनसाहित्यप्रचारकसभा—लंडन Jain Literature Society London को दि. जैन. मंतव्योंके प्रचारहेतु सहायता देना और उसकेलिये अंदाजन रु.५०००) का चंदा होना (१०) शेठ मुन्नालालजीकी लक्ष्मीबाई औषधालयको सभाके आधीन करके ४०) मासिक देनेकी स्वीकारताकेलिये धन्यवाद देकर उसकेलिये नाथूलालजी कालाको मंत्री नियत करना। (११) जैनधर्मके पवित्र ग्रन्थों (Jain Sacred books) के प्रचारका काम जो बाबू देवेंद्रकुमारजी करा रहे हैं उससे सहानुभूति और तन मन धनसे सहायता करनेकी प्रेरणा करना। (१२) आगामी अधिवेशन बनेड़ाजी पर होना आदि।

देहलीमें वार्षिक उत्सव—पहाडीधीरजकी पाठशाला और कन्याशालाका वार्षिकोत्सव सेठ सोहनलालजीके सभापतित्वमें ता. ३–४ एप्रीलको हुआ था जिसमें तीन सभाएं होकर ब्र. शीतलप्रसादजी, बाबू दयाचंदजी गोयलीय बी. ए., बाबू जुगलकिशोरजी मुख्तार, बाबा भगीरथजी वर्णी, हकीम कल्याणरायजी आदिके विद्याप्रचार और स्त्रीशिक्षाकी आवश्यकता, जैन धर्म और ज्ञानकी महिमा, समाजसुधार, वेश्यानृत्यकी बुराई, अहिंसाधर्मका स्वरुप, मूर्तिपूजा आदि विषयोंपर महत्वशाली व्याख्यानों हुए थे जिससे जैन कॉलेजके उद्योगकेलिये बाबू ज्योतिप्रसादजी, लाला मोहकमचंदजी, लाला जगन्नाथजी व विश्वंभरदासजीने नाम लिखाये और वेश्यानृत्य न करानेका और न देखनेका कितनेक महाशयोंने नियम लिया था।

ભટ્ટારક સંબંધી સ્તુત્ય પગલું—થોડાક સમય પહેલાં લાતૂરની પંચ અને પં. રામભાઉએ મળી સોલાપુર, બાર્સી, વૈરાગ, ધારાશીવ, પંઢરપુર, નાગપુર વગેરેની સેતવાલ કોમની પંચોને પૂછ્યા વગર એક **૧૨ વર્ષના** છોકરાને વિશાલકીર્તિ **ભટ્ટારકની** ગાદીપર બેસાડી દીધો હતો અને તે ૧૨ વર્ષની ઉમરના ભટ્ટારકજી, **વિશાલકીર્તિજીના પટ્ટા** અને **મોહર** રાખી પૈસા વસૂલ કરવા મંડી પડ્યા હતા, પરંતુ રા. નેમિનાથ પાંગળ ખટપટ કરી **નિજામ સરકાર પાસે હુકમ** મેળવ્યો છે કે—"એને પરવાનગી વગર ગાદીએ બેસાડેલો હોવાથી એણે **પટ્ટા અને મોહરનો ઉપયોગ કરવો નહિ તેમ કોઇ પણ રીતે પૈસા વસૂલ કરવા નહિ,** તથા જે લોકોએ એને બેસાડવાની ખટપટ કરી છે તેના હાથમુચરકા લખાવી લેવા જોઇએ" આ મુજબ લાતૂરની પોલીસે હુકમ પણ કાઢયો છે, જેથી નાગનાથ આબાજી, તુકારામ સખારામ શાહરકર, રઘુનાથ નેમાજી ભાગવતે અને શાંતિનાથ ગિરમાજી દેશમાને આ ચાર (લાતૂરના) ભાઇઓના હાથમુચરકા લખાવી લેવાયા છે અને પં. રામભાઉના હાથમુચરકા લેવાની તજવીજ ચાલુ છે. આ પ્રમાણે સેતવાલ સમાજે તો બહાદૂરી બતાવી માત્ર લાતૂરની

પંચના જોહુકમી કાર્યને પાણીચું પકડાવી જૈન કોમને ઠગાતી બચાવી છે, જ્યારે ગુજરાતમાં ઈડરની ગાદીના ભટ્ટારક તરીકે **બ્ર. મોતીલાલજીને વિજયકીર્તિજી** નામ આપી દઇને તથા સુરતની ગાદીના ભટ્ટારક તરીકે **પં. સુંદરલાલજીને સૂરેંદ્રકીર્તિજી** નામ આપી દઇને બધી પંચોની સંમતિ મેળવ્યા વગરજ મોતીલાલજીને એકજ પંચે **ડુંગરપુરમાં** અને સુંદરલાલજીને **સોજીત્રામાં** મણીબાઈ નામની હાથીજણુની એક **સ્ત્રીએ** ઉત્સવ કરીને **ભટ્ટારકો બનાવી દીધા** છે તે માટે ગુજરાતના ભાઇઓએ કંઈ પાણી બતાવ્યું છે કે? અને શું વહીવટ ચાલી રહેલો છે તેની તકેદારી કોઇ રાખે છે કે? સેતવાલ સમાજ તો ખરી બહાદૂર કે બેઠેલા ભટ્ટારકની સત્તાને પણ પાણીચું પકડાવવામાં ફતેહમંદ થઇ! પણ ગુજરાતના ભોળા ભાઇઓ તો જે થાય તે જોયા કરે અને કોઇ ચેતાવ્યા કરે તો તે પણ ચુપકીથી સાંભળ્યાજ કરે તેવા જણાય છે.

મુંબઈ દિ. જૈન પ્રાં. સભાના પ્રમુખ તરીકે સ્વર્ગીય શેઠ માણેકચંદજીની જગ્યાપર સોલાપુર નિવાસી શેઠ હીરાચંદ નેમચંદ દોશી નીમાવાની વકી છે.

बिम्बप्रतिष्ठा—नावा (कुचामनरोड) में वैशाख शुक्ल १० को बिम्बप्रतिष्ठाउत्सव होनेवाला है।

चांदखेडीका मेला—यह मेला गत मासमें हुआ था जिसमें खीचीवाडा प्रांतिक सभाका द्वितीय वार्षिक अधिवेशन सि. प्यारेलालजी (गदा) के सभापतित्वमें हुआथा जिसमें पं. लक्ष्मीचंदजी, पं. जवाहरलाल शास्त्री, कुंवर दिग्विजयसिंहजी, ब्र. गेंदनलालजी, पं. पीतामरदासजी आदिके व्याख्यान होकर १० उपयोगी प्रस्ताव हुए थे, श्रीमन्त्यागी मन्नालालजीका केशलोच हुआथा और ६२१) रुपए ब्रह्मचर्याश्रममें सहायतार्थ मिले थे। इस मौकेपर मनुष्य संख्या अनुमान ९००० एकत्र हुई थी और रथयात्रामहोत्सव भी बहुत अच्छा हुआ था। आगामी अधिवेशनके सभापति **राघोगढनरेश राजा बहादुरसिंहजी** नियत हुए है।

जैनतत्वप्रकाशिनी सभा इटावा-का षष्ठम वार्षिकोत्सव ता. २ से ६ एप्रील तक बडे समारोहकेसाथ हुआ था, जिसमें ब्र. शीतलप्रसादजी, ब्र. दिग्विजयसिंहजी, पं. तुलसीरामजी, बाबू दयाचंद्रजी, पं. घनश्यामदासजी, पं. देवकीनंदनजी आदिके अनेक व्याख्यान हुए थे।

मृत्युसमये दान—फतेहपुर निवासी शेठ जवाहीरलालजी हालमां स्वर्गवासी थया छे तेमनी पाछळ रु. १२००) जुदेजुदे खाते काढवामां आव्या छे तेमां विद्यादान खाते तो आशरे रु. १००)ज छे. हालना समयमां तो दानमी रकमो विद्यादान अने शास्त्रदानमांज वधु वापरवानी जरुर छे.

बारावंकीमां—एक मंदिरमां ब्र. शीतलप्रसादजीना जोवामां 'जिनेंद्र पुराण' नामे महान संस्कृत ग्रंथ भट्टारक जिनेंद्रभूषण कृत ७६००० श्लोकमय जोवामां आव्यो छे, जेमां जुदांजुदां ५१ चरित्रो छे अने छुटां अने मोटां १०९३ पृष्ठोनो आ ग्रंथ छे.

भानपुरामें—गत मासमें समोसरण-विधानपूर्वक रथोत्सव हुवा था जिसमें पं. गीरीधरशर्मा, पं. पीतामरदासजी उपदेशक आदिके व्याख्यान हुए थे और एक जैन लायब्रेरीकी स्थापना की गई है।

"પ્રગતિ આણી જિનવિજય" નામે મરાઠી પત્ર જે કોલ્હાપુરથી અઠવાડિકરૂપે પ્રકટ થતું હતું તે હવે બેલગામથી પાક્ષિકરૂપે પ્રકટ થવા માંડ્યું છે.

आ अंक अने आवतो अंक—बे वैशाख मास होवाथी नियममुजब वैशाख मासनो आ एकज अंक मोटा रुपमां प्रकट करवामां आव्यो छे अने आवतो अंक ज्येष्ठ मासनी शरुआतमां अवश्य प्रकट करवामां आवशे.

आ वर्षनी भेटो संबंधी सूचना—आ वर्षनी प्रथम भेट श्री जिनचतुर्विंशतिकाव्य गया अंक साथे वेंचवामां आवी छे तथा बीजी भेट नामे 'जीवविचार' आ अंक साथे वेंचवामां आवनार हती, पण अंकनुं वजन वधी जवाथी आवता अंक साथे मोकलवामां आवशे, तेम भेटनो अपूर्व शास्त्रीय हिन्दी ग्रंथ श्री 'सागारधर्मामृतजी' (शास्त्र) छपाई रहेवा आव्यो छे जे आशरे ३२९ पृष्टनो होई एवो तो उत्तम ग्रंथ ग्राहकोने मळशे के जेवो ग्रंथ आगला सात वर्षोमां अपायोज नथी. ए महान ग्रंथ तथा बीजी बे त्रण भेटो तैयार थशे एटले सामटु एकबुकपोस्ट रवाना करवामां आवशे तेम दरेक अंक साथे पण हवे एकेक भेट वधारा तरीके मोकलाती रहेशेज. अनेक वखते छुटां छुटां बुकपोस्टो थई शकेज नहि माटे ग्राहकोए अधीरा न थतां भेटो संबंधी वारंवार उघराणी करवा तस्दी लेवी नहि. आ वर्षना अंत सुधीमां (आसो महिना सुधीमां) ओछामां ओछा ८ अने वधुमां वधु १० पुस्तको ग्राहकोने अवश्य पहोंची जशेज, ते माटे ग्राहकोए निश्चित रहेवुं.

दिल्लीमें पशुवध बंधः—देहलीमें कुछ समयसे कालकामाताके मंदिरमें नवरात्रोंपर हजारों निरपराध बकरे आदि पशुओंका वध होता था जो अबका नवरात्रोंपर यहांके जैनियों तथा दयावान हिंदुओंकी कोशिशसे पंडोंने खुद इश्तहार बटवा दिया कि कोई वध न करे और न यहां मेलेमें कसाइयोंकी दुकानें आवें। ऐसा प्रशंसनीय और जीवदयाका कार्य करनेके लिये यहांके भाईओंको अनेक धन्यवाद हैं। दिल्हीमें सरेबजार मांस बेचनेकी दुकानें हैं उनको अलग एक ही स्थानपर निकलवानेकी कोशिस होनेकी बड़ी आवश्यकता है।

श्री रुषभ ब्रह्मचर्याश्रमने—मार्च मासमां १३७६)≡॥ छुटक मदद मळी छे ज्यारे ए मासमां रु. ८९३) खर्च थयो छे.

मुंबाईना श्राविकाश्रममां ता. १-५-१५ थी १९-६-१५ सुधीनी रजा पडी छे, तेथी नवीन दाखल थनार स्त्रीओए ता. १-६-१५ सुधीमां दाखल थवानुं फोर्म भरीने मोकलवुं जोइए.

वडनगरमें महिला परिषद:—वै. सुद ५ से ९ तक वडनगरमें होनेवाला प्रतिष्ठा महोत्सव और मालवा दि. जैन कोन्फरन्सके नैमित्तिक अधिवेशनके मौकेपर भारतवर्षीय दि. जैन महिला परिषदका नैमित्तिक अधिवेशन सौ. गुलाबबाई धर्मपत्नी रा. बा. शेठ कल्याणमलजीके सभापतित्वमें होनेवाला है जिसमें पधारनेकेलिये श्रीमती मगनबाई सभी भगनीयोंको आमंत्रण करते हैं।

'दिगंबर जैन' पत्रे उघाडेला दानवीर शेठ माणेकचंदजीना स्मारक फंडना उपयोगनी तथा गुजरातना बंधुओने गुजराती भाषामांज घणीज सस्ती किंमते अनेक पुस्तको वारंवार मळी शके एवी वे जुदी जुदी योजनाओ आवता अंकमां प्रकट थशे.

आ अंकमां पं. पन्नालालजी बाकलीवाल तरफथी 'सनातनजैनग्रंथमाला' नुं कार्य चालु राखवा माटे प्रेस खोलवाने जे शेरो भरवानी योजना प्रकट थई छे ते आखी वांची जोई सर्वे जैनोए शक्तिमुजब शेरो लेवानां फारमो तरत ताकीदे भरी मोकली जिनवाणीना उद्धारना आ कार्यमां मदद करवानी खास जरुर छे. वळी आज अंकमां 'सनातनजैनग्रंथमाला' द्वारा केवा केवा उत्तम ग्रंथो बहार पडेला छे तेनुं सूचीपत्र लेखरुपे प्रकट करेलुं छे ते वांचतां आ ग्रंथमालानी महत्वता वांचकोने जणाया वगर रहेशे नहिज.

वडनगर (मालवा) में श्री बिम्ब प्रतिष्ठोत्सव व मालवा दि. जैन कॉन्फरंस।



सम्पूर्ण सज्जनोंको विदित हो कि यहांपर श्री १००८ देवाधिदेवका पंचकल्याणक विधान द्वितीय वैशाख सुद २ से ६ तक होना निश्चय हुआ है। इसीके अन्तर्गत श्रीमती दि. जैन मालवा प्रां. सभाका नैमित्तिक अधिवेशन चौथ, पंचमी मु. ता. १८–१९ मईको बड़े समारोहके साथ होगा, जिसमें दूर२ से बड़े२ विद्वान् श्रीमान् व त्यागी महाशय पधारकर समाजोन्नति पर विचार और व्याख्यानादि करेंगे। अतएव समस्त बांधवोंको ऐसे सुअवसर पर कोटि गृहकार्य छोड़ कर सकुटुम्ब अवश्यमेव पधारना चाहिये।

निवेदक, प्रतिष्ठाकारक–
हेमराजजी धन्नालाल।
घासीलालजी कल्याणमल।

नोट–उतरने, पानी, छाया आदिका समुचित प्रबंध किया गया है। रेलवे स्टेशनसे शहर व मेलेका स्थान अति निकट है। स्टेशन पर सवारी आदिका सुभीता रहेगा।

यह शहर इन्दौर रतलामके बीचमें स्टेशन है।



महावीरजयंती उत्सव.

આ વર્ષે ચૈત્ર સુદી ૧૩ ને સોમવારે શ્રી મહાવીર જયંતી ઉત્સવ નીચેનાં સ્થળોએ નીચે મુજબ ઉજવાયાના સમાચાર અમોને મળ્યા છે—

સુરત— અત્રે આ ઉત્સવ ભારે ધામધુમથી અને ઘણાજ ઉત્સાહથી ચંદાવાડીમાં રાત્રે ૮થી ૧૧ સુધી **નગરશેઠ બાબુભાઈ ગુલાબભાઇના** પ્રમુખપણા નીચે ઉજવાયો હતો, જેમાં ત્રણે ફિરકાના આશરે ૧૦૦૦ સ્ત્રી પુરૂષો ઉપરાંત મહાજનશેઠ વગેરેએ હાજરી આપી હતી અને વાડીને વાવટા, તોરણ, ધ્વજપતાકા, ફુલપાન, બેંડ વગેરેથી ખૂબ શણગારવામાં આવી હતી. પ્રથમ સ્તુતિ, ગાયનો થવા બાદ પ્રમુખનું વિવેચન થયા પછી મૂલચંદ કસનદાસ કાપડીઆએ જયંતીનો ઉદ્દેશ અને તેની આવશ્યકતા ઉપર લંબાણથી અસરકારક વિવેચન કરી મહાવીર જયંતી ઉત્સવ દરેક સ્થળે ત્રણે ફિરકાના ભાઇઓએ એકત્ર મળીને ભારે ઠાઠથી ઉજવવાની આવશ્યકતા દાખલા દલીલોથી જણાવીને કહ્યું કે પાંચેક વર્ષથી આ ઉત્સવ ઉજવવાનું સજીવન થયું છે અને અત્રે બે વર્ષથી ઉજવાય છે. અગાઉના વર્ષોમાં મુસલમાની જુલ્મી રાજ્યના સમયમાં એ ઉજવાતી બંધ પડી હશે, પણ હાલ તો શાંતિમય ન્યાયી બ્રીટીશ રાજ્ય છે કે જેમાં દરેક વ્યક્તિ પોતપોતાનો ધર્મ પોતપોતાની માન્યતા પ્રમાણે છૂટથી પાળી શકે છે. મહાવીર પ્રભુનું ૭૨ વર્ષનું આયુષ્ય હતું તેને આજે ૨૪૪૧ વર્ષ થયાં એટલે મહાવીર જન્મને ૨૫૧૩ થયાં જેથી આ **૨૫૧૩મી જયંતી** છે. આટલી સભાઓ ભરી બેસી ન રહેતાં અનેક **સભાઓ, વરઘોડાઓ**, ઉત્સવો વગેરે કરી આ ઉત્સવને તો એવા ઠાઠથી ઉજવવો જોઇએ કે જેમ **રામનવમીનો** જાહેર તહેવાર સરકાર તરફથી પણ પળાય છે તેમ આપણે પણ મહાવીર જયંતી ઉત્સવ **જાહેર તહેવાર** તરીકે પાળવાને **સરકારને અર્જ** કરી શકીએ. દિગંબરી, શ્વેતાંબરી અને સ્થાનકવાસી ત્રણે એકજ મહાવીરના પુત્રો છીએ તો ત્રણેને માન્ય બાબતોમાં તો એકત્ર ભાવેજ લાભ લેવાની જરૂર છે. મુંબાઇ, અમદાવાદ, ભાવનગર વગેરે સ્થળે **નોકારશી** કે જેમાં નમોકાર મંત્ર ગણનાર દરેક લાભ લઈ શકે છે એવાં જમણો થાય છે પણ અત્રે તેવું થતું નથી તો તેવો પ્રયાસ અત્રે થાય તો ભાતૃભાવમાં ઘણોજ વધારો થઇ શકે વગેરે. એ પછી શા. રતનચંદ ખીમચંદ કાપડિયા, ગીરધરલાલ ડુંગરશી શેઠ, શા. ચુનીલાલ છગનચંદ શ્રોફ, શા. નગીનદાસ જમનાદાસ, મી. મણીભાઈ બકોરભાઇ, શા. તલકચંદ તારાચંદ વૈદ, છગનલાલ સરૈયા વગેરેએ મહાવીરનું ચરિત્ર અને તેપરથી લેવાના બોધ વિષે અસરકારક વિવેચનો કર્યા હતાં, જે પછી ડૉ. **અમીચંદ છગનલાલે** દર વર્ષે જયંતી ઉજવી શકાય તથા મહિને કે પંદર દિને સભાઓ થઇ શકે તે માટે એક **'જૈન હિતવર્ધક મંડળ'** નામે સભા માત્ર આઠ આનાની ફીથી સ્થાપન કરી તેના પ્રમુખ નગરશેઠ બાબુભાઇને અને સેક્રેટરીઓ તરીકે મેસર્સ. મૂલચંદ કસનદાસ કાપડીઆ, રતનચંદ ખીમચંદ કાપડીઆ, અને સાકેરચંદ મગનલાલ જરીવાળાને નીમવાની દરખાસ્ત મુકતાં તે સ્વીકારાઇ આશરે ૩૦ મેમ્બરોનાં નામ નોંધાયાં હતાં. એ પછી પ્રમુખનું વિવેચન તથા ઉપકારો મનાયા હતા અને આ ઉત્સવની ખુશાલીમાં **સ્વર્ગીય વીરચંદ રાઘવજીએ** અમેરિકાના ચીકાગોમાં આપેલાં **ભાષણોનું** અંગ્રેજી-ગુજરાતી પુસ્તક જે પં. લાલને તૈયાર કરી મહુંમ માણેકલાલ ઘેલાભાઈ ઝવેરીએ

પ્રકટ કરેલું તે તેમની તરફથી શા. રતનચંદ ખીમચંદ કાપડીઆની મારફતે, અમારી તરફથી **ઉપદેશમાલા, ઈશ્વરકા કર્તૃત્વ, પંચકલ્યાણક પાઠ**, જૈન જ્ઞાનવર્ધક સભા તરફથી આત્મનિત્યભાવના અને સંગીતમોહનસુધાકર એ મળી આશરે **રૂા. ૧૫૦)નાં પુસ્તકો** તથા જ્ઞાનવર્ધક સભા, છગનલાલ સરૈયા અને જીવણલાલ કસનદાસ કાપડીયાની એકત્ર મદદથી પતાસાંની **પ્રભાવના** વેંચાઈ હતી. એકંદરે સુરતમાં સમગ્ર જૈનોનો આવો એકત્ર અને ગંજાવર મેળાવડો ઘણાં વર્ષો પછી થવા પામ્યો હતો.

અમદાવાદ–અત્રે આપણી બોર્ડિંગમાં આ ઉત્સવ રાત્રે ૭ાા થી ૧૧ સુધી ભારે દબદબાથી શા. ચીમનલાલ જેશંગભાઇના પ્રમુખપણા નીચે ઉજવાયો હતો, જેમાં સુપ્રી. માસ્તર ગંગાશંકર તથા પં. કાશીભાઇએ તથા વિદ્યાર્થીઓએ **મહાવીરના** ગુણાનુવાદ ગદ્ય તેમજ પદ્યમાં તથા સંવાદરૂપે સારી રીતે કરવા પછી ફોનોગ્રાફ અને બીજી **રમતગમત** કરવામાં આવી હતી તેમજ એ દિને એક ગ્રહસ્થ તરફથી રૂા. ૧૧) અપાઈ વિદ્યાર્થીઓને શીખંડપુરીનું જમણ અપાયું હતું. વળી અત્રે શ્વેતાંબરી ભાઇઓ તરફથી પણ એ ઉત્સવ ભારે હાંઉથી ઉજવાયો હતો, જેમાં ૨૦૦૦ની સંખ્યા હાજર હતી.

બોધેગાંવ:—શા. બલવંત બાપુરાવ ક્ષીરસાગર જણાવે છે કે અત્રે આ ઉત્સવ પુજન, અભિષેક, મિષ્ટાન્ન ભોજન, રોશની તથા ઉત્સવપૂર્વક ઉજવાયો હતો અને રાત્રે ૧૧ વાગતા સુધી સભા ભરાઇ ગીતનૃત્યો થઇ અનેક રીતે મહાવીર પ્રભુનાં ગુણાનુવાદનાં વિવેચનો થયાં હતાં જેમાં જૈન તેમ અજૈનોની ભારે સંખ્યા હાજર હતી

સોજીત્રા–માસ્તર સોમાભાઈ જણાવે છે અત્રે આ ઉત્સવ પૂજા, અભિષેક તથા ઉત્સવ પૂર્વક ઉજવી મહાવીર ચરિત્રનું વર્ણન થઈ ઉજાણી પણ થઈ હતી.

પાલીતાણા–અત્રે આ ઉત્સવ શ્વેતાંબરી ભાઇઓ તરફથી બે ત્રણ સ્થળે ઘણાજ હોંઉથી ઉજવાઈ ભારે સંખ્યામાં તેનો લાભ લેવાઈ **પુસ્તકો, પેંડા, પતાસાં** વગેરેની પ્રભાવના થઇ હતી.

छींदवाडा——नूतन जैन मंडल सूचित करता है कि इधर यह उत्सव महावीर पूजन और अभिषेकपूर्वक होकर रात्रिको श्वे. दि. सभी जैनोंकी खास सभा हुई थी जिसमें शेठ गुलाबचंदजी पाटनी, दलसुखजी पाटनी, गुलालचंदजी वाकलीवाल आदिके व्याख्यान होकर प्रमुखकी ओरसे पाठशालाके विद्यार्थीओंको मीठाई बांटी गई थी।

वडवाहा–पं. सोनपालजी जणावे छे के आ उत्सव भारे उत्साहथी उजवाई पाठशामां रजा पाडी बोर्डिंगना विद्यार्थीओने मिठाईनुं मोजन कराव्युं हतुं तथा सभा थई व्याख्यानो थयां हतां तथा "विद्यावर्धिनी कन्या पाठशाला"मां स्त्रीओनी खास सभा थई हती जेमां श्रीमती बेसरबाई, जयकुमरबाई, अनोखीबाई, श्रीदेवीबाई, लाडकीबाई वगेरेनां विवेचनो थई श्रीमती बेसरबाई तरफथी कन्याओने पुस्तको तथा सर्वेने मीठाई वेंचाई हती।

આશાણુ–અત્રે શ્વે. દિ. સર્વએ જાહેર રહેવાર પાળી એકત્ર સભા શા. મણીલાલ કાળીદાસના પ્રમુખપણા નીચે ભરાઈ અનેક રીતે મહાવીરના ગુણાનુવાદનાં વિવેચનો થઈ પ્રમુખ તરફથી પ્રભાવના થઇ હતી.

નાતેપુતા—અત્રે આ ઉત્સવ પૂજન અભિષેક ગાનતાન વગેરે પૂર્વક થઈ સભા પણ ભરાઇ હતી, જેમાં ૧૦૦ સ્ત્રીપુરૂષો હાજર હતા.

આમોદ—શા. સોભાગચંદ જેઠાભાઇ જણાવે છે કે અત્રે નૃસિંહપુરા યંગમેન્સ એસોશીએશન તરફથી આ ઉત્સવ સારા ઠાઠથી ઉજવાઈ શ્વે. દિ. જૈનોની ભેગી સભા ભરાઇ હતી, જેમાં શા. નાગરદાસ નરોતમદાસ સંઘવીએ મહાવીરના પવિત્ર જીવન ઉપર ભાષણ આપવા પછી શ્રીયુત શંકરલાલ તાપીદાસ વગેરેનાં વિવચનો થઇ પતાંસાની પ્રભાવના વેંચાઇ રાત્રે ૧૧ વાગતે સભા વિસર્જન થઇ હતી.

જાલેર—અત્રે આ ઉત્સવ પૂજન, ગાનતાન, **વરઘોડા**વગેરેપૂર્વક થઇ સભા પણ ભરાઈ હતી જેમાં ૨૦૦ પુરૂષો હાજર હતા.

કુરમાળા—શા. કાશીદાસ ભાઇચંદ જણાવે છે કે અત્રે આ વર્ષે આ ઉત્સવ સારી રીતે ઉજવાઈ ત્રણે ફિરકાની એકત્ર સભા સોલાપુરવાળા મી. માણેકચંદ અમીચંદ બી. એ. ના પ્રમુખપણાનીચે થઇ હતી, જેમાં મી. ધારશી જીવન દેશાઇએ મહાવીરસ્વામીનું ચરિત્ર લંબાણથી જણાવ્યું હતું તથા બીજાં વિવચનો થઇ સર્વેને **પેંડાની પ્રભાવના** વેંચાઇ હતી.

મહુવા (કાઠીયાવાડ)—શ્રીયુત ઓધવજી રામજી જણાવે છે કે અત્રે આ ઉત્સવ આનંદથી ઉજવાઈ બંને ફિરકાની ભેગી સભા ભરાઇ ગોરજી રૂપચંદજી તથા અમારૂં વિવેચન થઇ પ્રભાવના વેંચાઈ હતી.

કંથારીયા—અત્રે આ ઉત્સવ ધર્મધ્યાનપૂર્વક ઉજવાઈ સર્વેએ વ્યાપારધંધો બંધ રાખી ખાસ ત્હેવાર તરીકે પાખી પાળી હતી.

ઇડર—શા. નાથાલાલ સોભાગચંદ જણાવે છે કે અત્રે આ ઉત્સવ પૂજા પ્રભાવનાપૂર્વક ઉજવાઇ રાત્રે સભા પણ ભરવામાં આવી હતી.

मलकापुर—मनोहरलाल वापुसा सूचित करते है कि यहां महावीरजयंतीउत्सव बड़े समारोहके साथ हुआ था जिसमें ब्र. शांतिदासजीके उपदेशसे बंद हुई पाठशाला पुनः स्थापित की गई ।

વડોદરા—અત્રે વાડીના મંદિરમાં મહાવીર પૂજન, અભિષેક વગેરે ગાનતાનથી થયાં હતાં તથા રાત્રે સભા ભરાઈ મહાવીરચરિત્રનું વર્ણન થયું હતું જેમાં સ્ત્રી પુરૂષોએ સારી સંખ્યામાં હાજરી આપી હતી, જે પ્રસંગે મંદિરને ધ્વજાપતાકા તોરણો સોનેરી બોર્ડ વગેરેથી ખૂબ શણગાર્યું હતું.

ડુંગરપુર—શ્રીયુત પ્રેમજી સવજી વખારીઆ જણાવે છે કે અત્રે આ દિને મહાવીર પૂજન થઇ વિદ્યાર્થીઓને મીઠાઇ વેંચાઇ હતી.

ભાવનગર—ધામી નારણદાસ જણાવે છે કે અત્રે આ દિને મહાવીર પૂજન ભજન વગેરે થઇ સભા દ્વારા મી. ચુનીલાલ વેણીચંદે મહાવીરસ્વામીનું ચરિત્ર ભાષણ દ્વારા સંભળાવ્યું હતું અને પંચ તરફથી સંતોકબાઈ જૈન પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓને **ઇનામો** વેંચાયાં હતાં તથા શ્વેતાંબરી ભાઇઓ તરફથી પણ આ ઉત્સવ સારી રીતે ઉજવાયો હતો.

નીંબગામ કેતકી—આ ઉત્સવ પૂજન અભિષેક મિષ્ટાન્નભોજન વગેરેપૂર્વક ઉજવાઇ પ્રભાવના પણ વેંચાઈ હતી.

સેટફલા—અત્રે આ જયંતી પૂજન અભિષેકપૂર્વક ઠાઠમાઠથી ઉજવાઇ હતી.

મુંબઇ—અત્રે તો આ જયંતી ઉત્સવ ભારે ઉમંગથી ઉજવાયો હતો. સવારમાં **૩૦૦૦ વિદ્યાર્થીઓનું બાળસંમેલન** થઈ મહાજનવાડીમાં **શ્વે. મુનિ સુખસાગરજીના** પ્રમુખપણાનીચે સભા થઈ હતી જેમાં અનેક વિવેચનો થવા પછી અનેક જાતનાં પુસ્તકો

અને મીઠાઇ બધા વિદ્યાર્થીઓ તથા બાળકીઓને વેંચાયાં હતાં. તેમજ પં. અર્જુનલાલ શેઠીના છુટકારા માટે વિવેચનો થઈ વાઇસરોયને મેમોરીયેલ મોકલવાનો ઠરાવ થયો હતો. તથા દેશભક્ત ગોપાળ ગોખલેના મૃત્યુનો શોક પ્રકટ થયો હતો, **સ્ત્રી સંમેલન** પણ શ્રીમતી જમનાબાઇ સક્કાઇના પ્રમુખપણા નીચે થયું હતું જેમાં શ્રીમતી મગનબ્હેન, માનબાઈ, સોજબાઇ વગેરેનાં વિવેચનો થયાં હતાં. રાત્રે અનંતનાથના દહેરાસર નીચે પં. **લાલનનાં** પ્રમુખપણાનીચે જાહેર મેલાવડો માસ્તર કાનજી કરમસી માંડવી સ્કુલ તરફથી થયો હતો તેમાં ગાયનો, સંવાદો થવા પછી પ્રમુખ તથા અનેક ગ્રહસ્થોનાં ઉત્તમ વિવેચનો થયાં હતાં. વળી હીરાબાગમાં સવારે **સ્થાનકવાસી મિત્રમંડળ** તરફથી ત્રણે ફીરકાની ગંજાવર સભા મી. સુરજમલ ભોજુભાઈ મ્હેતા સોલીસીટરના પ્રમુખપણાનીચે ભરાઈ હતી, જેમાં મી. મોહનલાલ દલીચંદ દેશાઈ બી. એ. એલ. એમ. બી., પં. નાથુરામ પ્રેમી, પં. લાલનવગેરેનાં મહત્વશાળી વ્યાખ્યાનો થયાંહતાં.

આ ઉપરાંત આગ્રા, પાચોરા, જુનાગઢ, અંકલેશ્વર, વઢવાણ, બીલીમોરા, જામનગર, વેરાવળ, સોલાપુર,આણંદ,વળા, ઉદેપુર, રંગુન, કલકત્તા, બનારસ, નારાયણગઢ, કચ્છમાંડવી, બીકાનેર, જંગબાર, (આફ્રિકા), અંબાલા, ઇદોર, વર્ધા, છીંદવાડા, અજમેર, પેરાજી, મોરબી, ગઢડા, પસાલા, વાસદ વગેરે અનેક શહેરો અને ગામોમાં આ વર્ષે મહાવીરજયંતી ઉત્સવ ઉજવાયો હતો, જેથી એમ આશા રખાય છે ભવિષ્યમાં આ ઉત્સવ ગામેગામ અને શહેરેશહેર જાહેર રીતે ઉજવાયાનો સમય આવી પહોંચશે કે જ્યારે આપણે સરકારને મહાવીર જયંતીનો પવિત્ર દિવસ જાહેર તહેવાર તરીકે પાળવાને અર્જ કરી શકીશું.





સાચું સ્વર્ગઃ—લેખક વૈદ્ય અમૃતલાલ સુંદરજી પઢિયાર અને પ્રકાશક **સસ્તું સાહિત્યવર્ધક કાર્યાલય,** (વિવિધ ગ્રંથમાલા પુસ્તક ૫૩ થી ૫૬) અમદાવાદ, પૃષ્ઠ ૬૩૧. ગુજરાતી ભાષાના આ પુસ્તકની આ બીજી આવૃત્તિ છે, જેમાં જ્ઞાન સાથે ગમ્મત મળી શકે એવી **ઉત્તમ શૈલીથી** રા૦ પઢિયારે લગભગ ૩૫૦ વ્યવહારિક તથા ધાર્મિક બાબતોનો સંગ્રહ કરેલો છે કે જે એક વખત વાંચવા લીધા પછી પુરૂં કર્યા વિના છોડવાનું મન થતુંજ નથી. આ પુસ્તકમાંનો બધો બોધ રસીલી વાર્તા રૂપે છે. રા. પઢિયારની લેખનશૈલીથી અમારા વાંચકો જાણીતાજ છે, માટે વધુ ન લખતાં એટલુંજ જણાવીશું કે સસ્તા સાહિત્ય વર્ધક કાર્યાલયે આ પુસ્તકની બીજી (સસ્તી) આવૃત્તિ પ્રકટ કરી ગુજરાત ઉપર મહાન ઉપકાર કર્યો છે. વિવિધગ્રંથમાલા દ્વારા વાર્ષિક બે રૂપીઆમાં આ સંસ્થા ઢગલાબંધ વાંચનનો લાભ આપે છે, જેથી એનો લાભ દરેક ગુજરાતી બંધુએ લેવાની જરૂર છે. વાર્ષિક ફાળે કાચાં–પાકાં પુંઠાની કિંમત ๑।। અને ๑।।। અનુક્રમે છે જ્યારે છુટક મૂલ્ય એથી દોઢું છે, જેથી આ ગ્રંથ ખરીદનારે **વિવિધગ્રંથમાલાના** ગ્રાહક થઇનેજ એનો લાભ લેવો જોઇએ.

કમલિનીઃ—આ એક ૨૩૪ પૃષ્ઠનું ઓપોપયોગી વાર્તાનું પુસ્તક છે, જે 'કમલા' નામની અંગ્રેજી વાર્તાનું ભાષાંતર છે અને રા. નરસિંહરાવ ભોળાનાથ દિવેટિયાએ પ્રકટ કર્યું છે અને અમદાવાદથી પ્રકટ થતા જાણીતા સ્ત્રીઓપયોગી માસિક **'સુંદરી સુબોધ'** ના ગ્રાહકોને

ભેટ અપાયું છે જ્યારે છુટક મૂલ્ય ૧) છે. ભુજ લવાજમમાં આ માસિક પણ ઘણોજ ઉત્તમ લાભ આપે છે. દરેક સ્ત્રીએ આ પુસ્તક વાંચવાથી સંસારિક અનેક બાબતોમાં ઉત્તમ બોધ મળે તેમ છે.

બાલબોધ જૈનધર્મ ભાગ ૩-૪:—બાબૂ દયાચંદ ગોયલીય જૈન બી. એ. એ જૈન પાઠશાળાઓમાં ચલાવવા લાયક બાલબોધ જૈન ધર્મના ૪ ભાગો બહાર પાડયા છે, તેનો ૩-૪ ભાગ સંયુક્તરૂપે સુધારાવધારા સાથે શ્રીયુત રાવજીભાઈ સખારામ દોશી (સોલાપુર) એ **મરાઠી ભાષામાં** પ્રકટ કર્યો છે, જે ૧૦૦ પૃષ્ઠનું હોવા છતાં મૂલ્ય માત્ર ૪ આના છે. આ પુસ્તક દક્ષિણની દરેક જૈન પાઠશાળા, બોર્ડિંગ, સ્કૂલ વગેરેમાં ચલાવવા લાયક છે. જૈન બુક ડેપો, સોલાપુરથી મળી શકે છે. (૧-૨ ભાગ પણ સંયુક્ત રૂપે ०)॥ થી બહાર પડી ચુકેલો છે.)

हिन्दी-शिक्षा दूसरा भागः— लेखक और प्रकाशक मोहकमलाल जैन, मेनेजर जैन शिक्षाप्रचारक कार्यालय (कुचा सेठ देहली) पृष्ठ ४६ और मूल्य सिर्फ डेढ आना। इस भागमें कुल २० उपयोगी पाठ हैं जो वालकोंको पढानेसे व्यवहारिकके साथ धार्मिक शिक्षा भी वहुत मिल सकती है। छपाई सफाई भी अच्छी है, मूल्य भी कम है और सभी हिंदी जैन पाठशालाओंमें यह पुस्तक प्रवेश करने योग्य है।

'जैनसिद्धांतभास्कर' चतुर्थ किरणः— आराना श्री जैन सिद्धांत भवन तरफथी श्रीमान् **शेठ पदमराजजी रानीवाला** (नं. ९ बडुजी-की कोठी—कलकत्ता) द्वारा जे जैन ऐतिहासिक त्रिमासिक पत्र प्रकट थवा मांडयुं हतुं, तेनां त्रण किरणो प्रकट थवा पछी हाल लांबे समये गंजावर रुपमां आ चोथुं किरण प्रकट थयुं छे, जे लगभग २२५ पृष्ठनुं एक उत्तम पुस्तकरुपे होई तेमां महाराजा **चंद्रगुप्तनो इतिहास**, भट्टारक शुभचंद्राचार्यनी पट्टावली अने परिचय, विक्रम संवतनी समस्या, मूलसंघ, नंदीसंघ, काष्टासंघ वगेरेनी पट्टावलीओ, मथुराना अजायवगढनी जैन मूर्तिओ, आरानगरनी प्राचीनता, भारतीय प्राचीन चित्रकला वगेरे ३६ विषयो होवा उपरांत **चंद्रगुप्तनां १६ स्वप्नो**, सीताजीनो अग्नि प्रवेश, अने सतीत्वनुं फल ए त्रण चित्रो (रंगीन) तथा बीजां १० चित्रो मळी १३ फोटाओ छे, जेनी छपाई सफाई घणीज उत्तम अने उडीने आंखे वळगे तेवी छे. पट्टावळीना लेखो मूल संस्कृतसहित हिंदी भाषामां भाषांतर करीने आपेला छे. आ ऐतिहासिक मासिक तो दरेक साहित्यप्रेमीए तेमज सर्वे जैन बन्धुओए जोवा वांचवा अने संग्रह करवायोग्य छे. आ मासिकनो विषय एतिहासिक तथा जैन सिद्धांतने लगतो छे जेथी संपादकीय नोंध अने साहित्य-समालोचनामां जे केटलीक सामान्य बाबतो उपर पण टीका करवामां आवी छे ते योग्य नथी. आ अंक जोतां एम तो जणाया वगर रहशे नहि के एनी किं. आथी चार घणी होय, तोपण ओछी छे. जो त्रण त्रण महीने नज तैयार थई शकतुं होय, तो शेठ पदमराजजीए छ छ महीने एटले वर्षमां बे वखत पण ते बराबर वखतसर बहार पाडवानी गोठवण करवानी जरुर छे, के जेथी वांचको अधीरा थाय नहि. श्रीमान् साथे विद्वान अने इतिहासप्रेमी जो कोई नर दि. जैनोमां होय, तो ते शेठ पदमराजजीज छे के जेओ प्राचीन जैन इतिहासनी शोधखोळ करी तेने उत्तम रीते प्रकट करवानो गंजावर श्रम उठावी रहेला छे. आ त्रिमासिकनुं वार्षिक

मूल्य रु. ३) छे. ज्यारे छुटक अकनी किं. १) छे जे एना कार्य तरफ जोतां जूजज छे.

બ્રાહ્મણધર્મ:—વર્ષ ૬ અં. ૧ વાર્ષિક ફી રૂ. ૧) પોસ્ટેજ સાથે. મુંબાઈથી પ્રગટ થતું આ એક માસિક છે, જે તપોધન બ્રાહ્મણોના લાભાર્થે પ્રકટ થાય છે, પણ એમાંના વિષયો એવા છે કે જે દરેક **ધર્મવાળાને વાંચવાલાયક** છે. આ અંકમાં ઉદ્યોગ, ગર્ભાધાન સંસ્કાર, વિવાહ, ગૃહસ્થાશ્રમ, વિધવાશ્રમ, પારબ્ધ અને પુરૂષાર્થ, જ્ઞાતિભોજન, વનિતા–વિચાર વગેરે ૧૭ ઉપયોગી વિષયો છે.

નૃસિંહપુરા–એસોશીએશનનો રિપોર્ટ:- આમોદ (ભરૂચ)માં નૃસિંહપુરા જ્ઞાતિની ઉન્નતિ માટે એક નૃસિંહપુરા **યંગમેન્સ એસોશીએશન** દોઢ વર્ષ થયાં સ્થાપન થયું છે જેનો આ પ્રથમ રિપોર્ટ જોતાં જણાય છે કે ટૂંક સમયમાં આ મંડળે ઉત્તમ કાર્ય બજાવ્યું છે. એના સેક્રેટરી શા. સોભાગચંદ જેઠાભાઈ (આમોદ) છે. નૃસિંહપુરા જ્ઞાતિનો ૧૫થી વધુ ઉમરનો કોઇ પણ બંધુ એમાં દાખલ થઇ શકે છે. આ રિપોર્ટમાં કહાનમના પંચના ધારાઓ, દહેરાસરની હકીકત અને પંચના હિસાબનું સરવાયું, આમોદના દહેરાસરનાં **પુસ્તકો, દાગીના, વાસણો તેમજ પ્રતિમાઓની વીગત સાથે નોંધ**, ન્યાતિની પંચના નીકળતા રૂપ્યા, તેનું વ્યાજ વગેરેની વીગત, આમોદની પંચનું સરવાયું, પંચના વાસણોની યાદી વગેરેનો સગ્રહ કરેલો છે. જે દરેક જ્ઞાતિ બંધુએ વાંચવાથી માલૂમ પડશે કે **દરેક જ્ઞાતિમાં આવા મંડળની** જરૂર છે કે જેથી ન્યાતિ [illegible]ઓ ઓછા થઈ દરેક પંચ નિયમીત રીતે કાર્ય કરતાં શીખી શકશે. આ રિપોર્ટની કિં. ०)- છે, જે સેક્રેટરીને લખવાથી મળી શકશે.

નવમી શ્વે. જૈન કોન્ફરંસનો રિપોર્ટ:- ગત જાનેવારી માસમાં સુજાનગઢમાં આપણા શ્વે. જૈન બંધુઓની નવમી કોન્ફરંસ ભારે ઉમંગથી મળી હતી તેના કામકાજનો આ ૧૨૫ પૃષ્ઠનો સવિસ્તર રિપોર્ટ છે, જેમાં મંદિર, મેળો અને પ્રમુખ વગેરેનાં ૬ ચિત્રો પણ છે. આ કોન્ફરંસનું કાર્ય જરા શિથિલ થયું હતું તે પાછું એકદમ તેજીપર આવતું જાય છે. તેમ એમાં ફંડ પણ સારૂં છે, જે જોઈ અમને આનંદ થાય છે અને આપણી **મુંબઈ દિ. જૈન પ્રાંતિક 'સભાનું'** કાર્ય શિથિલ થતું હોઈ આ વર્ષે વાર્ષિક અધિવેશન પણ થઇ શકયું નથી, તે માટે ખેદ થાય છે. આપણા શ્વેતાંબરી ભાઇઓની આ પ્રગતિ જોઇ આપણી પ્રાંતિક સભા જાગશે કે?

જીવદયા જ્ઞાનપ્રસારક ફંડનો રિપોર્ટ:—મુંબાઈ ઈલાકામાં ગંજાવર ખર્ચના ભોગે જીવદયાને લગતું ઉત્તમ કાર્ય બજાવનારૂં ખાતું મુંબઇનું જીવદયા જ્ઞાનપ્રસારક ફંડ છે, જેનો આ ચોથો રિપોર્ટ જોતાં જણાય છે કે ચાર વર્ષના અરસામાં આ સંસ્થાએ અજબ કાર્ય બજાવ્યું છે. સ્થાયી ,થાપણ ન હોવા છતાં જુદી જુદી રીતે ચાલુ મદદો મેળવી એક વર્ષમાં રૂા. ૧૨૦००) જેટલો ખર્ચ કરી જીવદયાને લાગતાં લાખો પુસ્તકો છપાવી વેંચવા, ઉપદેશકો ફેરવવા, જીવદયા, માંસાહારથી થતા ગેરફાયદા માટે નિબંધો લખાવી તેની પરીક્ષાઓ કરી ઈનામો વેંચવા, અનેક રાજ્યોમાં થતો પશુવધ બંધ કરાવવો વગેરે કાર્ય કંઇ સહેલું નથી, જે પાર પાડવા માટે એના ઉત્સાહી સેક્રેટરી શેઠ લલ્લુભાઈ ગુલાબચંદ ઝવેરી (૩०૯ શરાફબજાર, મુંબઇ)-ને અનેક રીતે ધન્યવાદ ઘટે છે. આ સંસ્થાને દરેક બંધુએ ગમે તે પ્રકારે વખતોવખત મદદ આપવાની જરૂર છે. ૧०० પૃષ્ઠનો આ રિપોર્ટ સેક્રેટરીને કાર્ડ લખવાથી મફત મળે છે.

—⋙⊛⋘—

प्राचीन सटीक संस्कृत-प्राकृत जैन ग्रंथ।

दो वर्ष हुये बनारसमें एक सनातन-जैनग्रंथमाला नामकी प्राचीन ग्रंथमाला निकलती है जिसमें नीचे लिखे महान प्रभावशाली ग्रंथ संस्कृतज्ञ व धर्मपिपासु जैन अजैन समस्त विद्वानोंके हितार्थ छपे हैं। कोई भी विद्वान् क्यों न हो इन ग्रंथोंको थोड़ासा बांचते ही इनकी महत्ताको नमस्कार करैगा। इन ग्रंथोंका सर्वसाधारणमें प्रचार करनेसे जैनधर्मकी बड़ी भारी प्रभावना होगी। इसलिये प्रत्येक जैनमंदिर, जैनपाठशाला व जैन लाइब्रेरी वाचनालयोंमें एक२ सीट अवश्य ही मंगाकर संग्रहीत करना चाहिये। और जो कोई भी संस्कृतज्ञ विद्वान् हो या आवे उनको दान करें अथवा देकर पढ़नेको कहेंगे तो बड़ा भारी लाभ होगा। दान करनेवालोंके लिये बहुत ही किफायत की जाती है। २७०) रुपयोंके १० सीट ग्रंथ सिर्फ १००) रुपयोंमें भेज देते हैं। एक सीट ग्रंथोंके २६॥।=) होते हैं सो सबके सब (एकसीट) लेनेसे केवल १४) रुपयोंमें भेज देते हैं। डांक खर्च जुदा लगैगा। फुटकर (छूटा) लेनेवालोंसे नीचे लिखी न्योछावर ली जाती हैं। ये सब ही ग्रंथ मोटे पुष्ट कागजपर बंबइया टाइपमें छपे हुये हैं।

१-२-आप्तपरीक्षासटीक और पुत्रपरीक्षा ये दोनों ग्रंथ स्याद्वादविद्यापति सकलतार्किकतर्कचूड़ामणि श्री विद्यानंदस्वामीके बनाये हुये हैं। आप्तपरीक्षा पर टीका भी स्वोपज्ञ है। इसमें स्याद्वादमंजरीके ढंगका सर्व मतोंका निराकरणपूर्वक सत्यार्थ आप्तकी सिद्धि की है। यह ग्रंथ कलकत्ता गवर्नमेंटकी संस्कृत परीक्षाकी जैन न्यायमध्यमा परीक्षामें भरती हो गया है। मूल्य २) रु.।

३-समयप्राभृत (समयसार नाटक) दो टीकासहित छपा है मूल कर्त्ता इसके प्रसिद्ध श्रीमद्भगवत्कुंदकुंदस्वामी हैं। इसपर जयसेनाचार्यकृत प्राचीन तात्पर्यवृत्ति और अमृतचंद्रसूरिकृत आत्मख्याति टीका साथमें हैं। जैनसमाजकी तीनों समाजमें अध्यात्म विषयका अन्य कोई भी ग्रंथ नहीं है। यह ग्रंथ बंबई यूनिवर्सिटीकी एम. ए. परीक्षामें भरती हो गया है। इसीसे इसकी महत्ता समझना चाहिये।

४. तत्त्वार्थ राजवार्त्तिक-यह ग्रंथ उमास्वामी कृत मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्रपर स्याद्वादविद्यापति भट्टाकलंकदेवकृत है। यह जैनदर्शन पर सबसे बड़ी प्राचीन व सर्वोपयोगी टीका है। एक एक सूत्रपर चालीस २ वार्तिके तक बनाई हैं और फिर उनकी विस्तृत व्याख्या है। जैनदर्शनके सिद्धांत जाननेकी इच्छा रखनेवाले विद्वानोंकेलिये यह बहुत ही उपयोगी महान ग्रंथ है (न्योछावर ९) रुपये।

५. जैनेंद्रप्रक्रिया-पूज्यपाद गुणनंदिकृत-यह जगत्प्रसिद्ध आठ व्याकरणोंमेंसे प्रसिद्ध जैनेंद्रव्याकरणसमुद्रमें प्रवेश करनेके लिये नौकाकी समान बहुत ही सरल प्रक्रिया टीका है। संस्कृत पढनेवाले विद्यार्थियोंके लिये बहुत ही उपयोगी है। इसीलिये यह ग्रंथ भी

कलकत्ता संस्कृत यूनिवर्सिटीकी प्रथमा-परीक्षामें भरती हो गया है। न्योछावर १॥)रु.

६. **शब्दार्णवचंद्रिका**–सोमदेवकृत। यह भी उक्त जैनेंद्रव्याकरणकी शब्दार्णवचंद्रिका नामकी बहुत ही सुगम **टीका** है। यह भी कलकत्ता संस्कृत परीक्षाकी व्याकरण मध्यमा परीक्षामें भरती है। मूल्य ५)रु.

७-८. **आप्तमीमांसा सटीक सभाष्य और प्रमाणपरीक्षा** मूल–ये दोनों ग्रंथ एक ही जिल्दमें है। आप्तमीमांसा भगवत्समंतभद्राचार्यकृत ८४००० श्लोकमय गंधहस्त-महाभाष्यके मंगलाचरण स्वरूप ११५ कारिका हैं। इसका नाम देवागमन्याय व देवागम स्तोत्र भी है। इसी ग्रंथको सुनकर पात्रकेशरी नामके वैदिक विद्वान् जैन होकर जैनी दीक्षा लेकर **विद्यानंदस्वामी** हो गये हैं। इसपर एक तौ वसुनंदि सिद्धांतचक्रवर्त्तिकृत टीका है। दूसरा अकलंकदेवकृत अष्टशती नामका भाष्य छपा है। इस अष्टशती भाष्यपर ही उक्त विद्यानंदस्वामीने अष्टसहस्री (आप्तमीमांसालंकृति) नामकी मानी पंडितोंके गर्वको खर्व करनेवाली टीका बनाई है। और अष्टसहस्रीपर प्रसिद्ध जैन नैयायिक *श्री यशोविजयजी* महाराजने ८ हजार टिप्पणी लिखी है। दूसरा ग्रंथ प्रमाणपरीक्षा भी विद्यानंदस्वामीकृत प्रमाणनिर्णयविषयक बहुत ही उपयोगी ग्रंथ है। यह ग्रंथ भी कलकत्ताकी जैनन्यायमध्यमापरीक्षामें भरती है मूल्य २) रुपये।

९. **शब्दानुशासन सटीक**–यह भी जगत्प्रसिद्ध अष्टव्याकरणोंमेंसे शाकटायन व्याकरणकी यक्षवर्मकृत चिंतामणिटीका सहित छपा है। इसी व्याकरणके तीन सूत्रोंका तात्पर्य पाणिनीय महाराजने अपने व्याकरणमें ग्रहण किये हैं। इसका प्रथम खंड मात्र छपा है। मूल्य २) रुपये.

१०. **शाकटायन धातुपाठ**–यह दूसरेका छपाया हुवा है। मूल्य ०।≈)

ये सब ग्रंथ २६॥।≈) के हैं, परंतु सबके सब एक साथ लेनेसे १४) रुपयोंमें और हजार प्रति दान करनेकेलिये लेनेवालोंको १००) रुपयोंमें भेज देंगे। डांकखर्च वा रेलखर्च खरीददारके जुम्मे।

किसी एक ही ग्रंथकी पांच२ प्रति लेनेवालोंको १ प्रति भेटमें (कमीशनमें) दी जायगी।

मिलनेका पता—
पन्नालाल बाकलीवाल
व्यवस्थापक–भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी-संस्था ठि–मदागिन जैनमंदिर
पो. बनारस सिटी।

अक्षय तृतीयाका माहात्म्य।

यह तिहवार प्रायः अखती व आखातीज के नामसे प्रसिद्ध है और जैनी तथा अजैनियोंमें समानतासे प्रचलित है। इस दिन (वैशाख सुदी ३) प्रायः प्रत्येक घरोंमें सौभाग्यवती स्त्रियां नये (कोरे) मिट्टीके घड़ोंमें पानी भरकर उनके मुंहपर खाजा, पूरी, पपरिया, पकोड़ी, मीठीपूरी, गूझा आदि पकान्न रखती हैं, पास ही उन घड़ों के मिट्टीके पुतला पुतलियें (गुड्डा गुड़ियां) खूब वस्त्रादिसे सजाकर रखती हैं। दीवालमें चरणपादुका आदि अनेक प्रकारका चित्र लेखन करती हैं और हाथ जोड कर प्रणाम करती हैं। घड़ोंपर नवीन वस्त्र ढांककर ऊपरसे पीले चांवल (पुष्प) छिड़कती हैं, घड़ोंपर फूलके हार भी पहिना देती हैं, घड़ोंपर हल्दी आदि लगाती है, पानीकी धार भी दीवालके चरणपादुका (चित्राम) की ओर देती हैं, गाना गाती हैं, अपने सम्बन्धी आदि को निमंत्रण करके जिमाती हैं और भी यथाशक्ति दान करती व सारे दिन हर्ष मनाती हैं, उक्त प्रथा प्रायः मध्यप्रदेशमें विशेषरूपसे प्रचलित है; परंतु शायद अन्य प्रदेशोंमें भी कुछ न्यूनाधिक रूपमें अवश्य प्रचलित होगी, यह कहांसे और कबसे चली? इसी बात पर विचार करना है।

मेरे विचारसे तो यह प्रथा जैनियोंसे ही प्रचलित हुई है और यह तिहवार (पर्व) जैनियोंका ही है, जो कि जैन व अजैनोंका परस्पर भिन्नभाव न होनेसे देखादेखी सबमें प्रचलित हो गया है, दूसरी बात यह है कि जिससमयसे यह पर्व प्रसिद्ध हुवा है, उस समय कोई मतमतांतरका झगड़ा न था, इसलिये भी सब लोगोंमें समानतासे प्रचार होना संभव है।

यह पर्व बहुत प्राचिन अर्थात् तृतीय (सुखमा दुखमा) कालके अंतमें जब कि भगवान ऋषभनाथस्वामीको हस्तिनापुरके राजा श्रेयांसने अपनी पत्नी सहित पड़गाह कर इक्षुरसका (भोजन) दान दिया तब उस दिन राजा श्रेयांसके घर पंचाश्चर्य हुवे थे और भोजनशालामें अक्षय ऋद्धि हो गई थी, अर्थात् उस दिन उस रसोईघरमें कितने ही मनुष्योंके भोजन कर जानेपर भी घटी (कमी) नहीं आई थी। वह दिन भी वैशाख सुदी ३ का दिन था। उसदिन भगवान ऋषभदेवने ६ मासके उपवास और छःमासके भोजनांतराय अर्थात् एक वर्षके बाद पारणा किया था, इसलिये घरोघर सबजगह हर्ष मनाया गया था और इस अवसर्पिणीकालमें कर्मभूमिकी आदिमें प्रथम ही दानकी प्रवृत्ति आरंभ हुई थी, इसीलिये उस पवित्र दिनकी यादगीरी (स्मरण) रखनेकेलिये ही लोकमें यह प्रथा उसी

समयसे चली आती है, अर्थात् प्रति वर्ष लोग ऊपर कहे अनुसार उत्सव मनाते हैं। भगवान ऋषभदेव जैनियोंके आदि (प्रथम) तीर्थंकर इस अवसर्पिणी कालमें हुवे थे और यह पर्व भी उन्हींके निमित्तसे हुवा, इसलिये यह पर्व जैनियोंसे चतुर्थ कालके आदि अथवा तृतीयके अंतसे चला ऐसा कहना अत्युक्त नहीं है।

भगवान ऋषभदेवके स्थानमें उनके चरणपादुका आदि बनाते और नमस्कार करते हैं, इक्षुरसके घड़ोंके बदले पानीके घड़े भरते हैं, उसदिन अक्षयनिधि भोजनशालामें हो गई थी, इसीसे अक्षय तृतिया नाम पड़ा जो बिगड़ कर अखती व अखातीज होगया, राजा श्रेयांस और उनकी रानीने मिलकर पड़गाहा था इसीसे उनके स्थानमें पुतला पुतलीया श्रृंगार कर उनका गंठजोड़ा कररखते हैं। देवोंने पंचाश्चर्य किये थे इसीके स्थानमें पुष्प बखेरना, जलधार करना, गाना बजाना आदि करते हैं। दानका अनुकरण करनेकेलिये अतिथि व साधुओंके बदले साधर्मीजनोंको, सम्बन्धियोंको, कुटुम्बीजनोंको, भोजन कराते हैं, और दुःखित भुखित जनोंको भी भोजनादि दान देते हैं। उसदिन हर्ष मनाया गया था, उसीप्रकार हर्ष भी मनाते हैं और इस दिनको यहांतक शुभ माना जाता है कि कोई भी मंगल कार्य करना होवे, तो उसका मुहूर्त भी विना देखे उसदिन प्रायः कर डालते हैं। कहावत है कि-भरे घड़ोंका मुहूर्त शुद्ध ही है इसमें कुछ पूछनेकी आवश्यकता नहीं है इत्यादि।

तात्पर्य यह है कि यह दिन (अक्षय तृतिया) विशेषकर जैनियोंकाही है, और इसका प्रचार होना आवश्यक है। इस दिन हमारे भाई बहिनोंको व्रत रखना, पूजा विधान करना, स्वाध्याय व उपदेश करना और सुनना, भजन जागरण करना, और यथाशक्ति चारों प्रकारके दानमें भी प्रवृत्ति करना चाहिये और भले प्रकार उत्सव मनाना चाहिये। मेरी रायमें तो जो समर्थ है, इस दिन शास्त्रदानकेलिये यथाशक्ति कुछ द्रव्य निकालें और उससे कोई प्राचीन ग्रन्थ प्रकाशित (मुद्रित) कराकर विनामूल्य या अल्पमूल्यमें बंटवावे या अहिंसादिके ट्रेक्ट छपवाकर बंटवावे या जैनतत्वप्रकाशिनीसभा इटावह आदिसे कुछ ट्रेक्ट मंगवाकर बंटवावे अथवा किसी पत्र जैसे " दिगम्बर जैन " " जैनमित्र " आदि पत्रोंके साथ उपहार बंटवावें ताकि शास्त्रदान भी हो और समाचारपत्रोंके ग्राहक भी बढ़ेंगे। " आमके आम गुठलीके दाम " वाली कहावत चरितार्थ होगी। पर्व दिन भी स्मरणार्थ स्थिर रहा, दान आदि शुभ कार्योंसे पुण्यकर्म भी संचित हुवा, शास्त्रोंके व समाचारपत्रोंके प्रचारसे धर्मकी बढ़वारी हुई, इससे प्रभावना भी होगई। वाह ! ऐसा शुभावसर कदापि नहीं छोड़ना चाहिये और यथासंभव दान तपसंयम आदि शुभ कार्योंमें प्रवर्तना चाहिये।

जैनजातिसेवक—
मा. दीपचंद परवार-नरसिंहपुर (सी.पी.)

आमके अपूर्व गुण और किंचित् दोष।

आम सम्पूर्ण फलोंमें उत्तम फल है। हिन्दोस्थानकाही नहीं बल्कि संसारका कोई फल भी आमकी बराबरी नहीं कर सकता, जो जो गुण आममें हैं वे और किसी फलमें नहीं देखे जाते, इसीलिये बहुत लोग इसको फलोंका राजा कहते हैं कविलोग इसको अमृतफल कहते हैं। कवियोंकी कल्पना है कि जिसप्रकार स्वर्गमें अमृत है, उसी प्रकार पृथिवीमें यह अमृतफल आम है।

आम सबको प्रिय है। बालकसे लेकर वृद्धतक सभी लोग आमको पसन्द करते हैं। आमकी अनेक जातियां है। देशी, विलायती, कलमी, लंगड़ा, गोला, मालदया, राजभोग इत्यादि सैकड़ों प्रकारके आम देखनेमे आते हैं। सब आमोंमें लंगड़ा आम अधिक प्रसिद्ध है। बनारसका लंगड़ा आम सबसे अच्छा होता है, बंबईका लंगड़ा मध्यम प्रकारका समझा जाता है। पूरबका गोला, लखनऊका सुफेदा, रामपूरका फजरी और मुरादाबादका कलमी आम भी खूब प्रसिद्ध है।

आमके संस्कृत नाम—आम्र, रसाल, सहकार, कामाङ्ग, मधुदूत, पिकवल्लभ, फलश्रेष्ठ, मनोज्ञ, मोदाख्य इत्यादि आमके संस्कृत नाम हैं।

अन्य भाषाओंमें आमके नाम-हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी आदि भाषाओंमें आम, केरी, आंबो या आंब कहते हैं। कर्णाटकी भाषामें माविनफल, तैलिंगी भाषामें माविडि; अंग्रेजीमें मंगो; लैटिनमें मंगीफराईडिका; फार्सीमें अंबा और अरबी भाषामें इसको अम्बज कहते हैं।

आमके गुण-आममें अवस्थाके भेदसे भिन्न भिन्न प्रकारके अनेक गुण हैं। परन्तु शरीरको पुष्टि करना, बलकी वृद्धि करना, और वीर्यको उत्पन्न करना आदि जो आमके प्रसिद्ध गुण हैं वे सब अच्छे प्रकारसे पके हुए और मीठे ही आममें पाये जाते है। आम जितना अधिक मीठा होता है उतनेही उसमें गुण भी अधिक होते हैं। खट्टा आम शरीरकी भारी हानि करता है पके और मीठे आमके गुण आगे लिखे हैं।

कच्चा आम-अत्यन्त खट्टा, गरम, कषैला रुचिकारक, रुधिर और पित्तके रोगोंको उत्पन्न करता है। इसमें खटाईका भाग अधिक होनेसे यह पाकस्थलीमें जाकर अधिकतर अम्लता (खटाई) उत्पन्न करता है, इसकारण जिनको अम्लपित्तकी शिकायत रहती है या जिनके भोजनके बाद दाह उत्पन्न होजाती है और जिनको खटाई ना मुआफिक पड़ती है, उनको कच्चा आम या आमकी खटाई सेवन करनी उचित नहीं है। इसके सिवा सर्दी, जुकाम, खाँसी, श्वांस, प्रमेह, धातुदौर्बल्य आदि रोगोंमें भी कच्चे आमका सेवन अत्यन्त हानिकारक है। कच्चे आमका अधिक उपयोग करनेसे हृदयमें जलन, खट्टी डकारोंका आना, वीर्यपात, मंदाग्नि आदि अनेक विकार उत्पन्न होजाते हैं।

कच्चे आममें उपरोक्त सब अवगुणोंके होने पर भी कई अच्छे अच्छे गुण भी देखे जाते हैं। संसारमें ऐसा कोई भी पदार्थ नहीं है कि जिसमें

निरे दोष ही दोष हों या निरे गुणही गुण हों। हां, गुण दोषोंकी न्यूनाधिकता अवश्य होती है। कई रोगोंमें कच्चा आम बहुत अच्छा गुण करता है। जब गरमीके मोसममें गरमीसे पृथिवी तथा आकाश संतप्त होजाते हैं और भयंकर गरम लूं चलती है, उससमय कच्चे आमको आगमें भूनकर जलके साथ घोटकर उसमें थोड़ी खांड या मिश्री मिलाकर पीनेसे शरीरपर लूं और गरमीका असर कुछ भी नहीं होता। विशेषकर लूंके सताये मनुष्योंको उपरोक्त विधिसे बनाया कच्चे आमका शर्बत बहुत ही लाभदायक है। कच्चे आमके शर्बतको पीनेसे तत्काल लूंकी पीड़ा, पियास, दाह, और उसके सब उपद्रव दूर होजाते हैं। डाक्टरी मतसे शीताद आदि दंतरोगोंमें भी कच्चा आम विशेष हितकारी है।

बहुत लोग कच्चे आमका झोल (रस) बनाकर उसमें जीरा, इलायची, सोंठ, हींग, नमक वगैरह डालकर खाते हैं। आमका झोल बड़ा ही स्वादिष्ट और रुचिकारक होता है।

कच्चे आमकी सैकड़ों प्रकारकी अचार और चटनियें बनाई जाती हैं। इस देशमें खटाईके लिये सबसे अधिक आमहीका व्यवहार होता है।

आमका अमचूर-कच्चे आमके ऊपरका छिलका छीलकर उसे चाकूसे तरासकर धूपमें सुखा देवे, उस सूखी हुई खटाईको अमचूर कहते हैं। अमचूर खट्टा, स्वादिष्ट, कषैला, मलादिको भेदन करनेवाला, वात और कफको दूर करता है।

पका आम-पके और मीठे आममें शरीरके पोषणकर्त्ता प्रायः सब पदार्थ मौजूद हैं। इसलिये केवल पके आमको खाकर भी मनुष्य बहुत दिनोंतक जीवन निर्वाह कर सकता है।

वैद्यक शास्त्रमें पके आमके गुण इसप्रकार लिखे हैं—

पक्वं त्वाम्रफलं सुगंधि मधुरं स्निग्धं परं बृंहणं,
रुच्यं वातहरञ्च हृद्यमलघु ग्राही प्रमेह प्रणुत्।
शीतं वर्ण्यमपित्तलं व्रणहरं श्लेष्मास्ररोगापहं,
यदृष्ट्वा मन उल्ल सत्यपिमुनेः किं वर्णनं भूतले ॥

अर्थात्—पका आम सुगंधियुक्त, मधुर, स्निग्ध, अत्यन्त पुष्टिकारक, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, वातनाशक, हृदयको प्रिय, भारी मलरोधक, प्रमेहनाशक, शीतल, शरीरके वर्णको सुंदर करनेवाला, अपित्तल अर्थात् पित्तको कुपित नहीं करनेवाला, तथा व्रण (घाव) कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करता है। जिस आमको देखकर मुनियोंका मन भी उल्लसित (प्रफुल्लित) होजाता है। उसकी अधिक क्या प्रशंसा की जाय?

पका आम अनेक प्रकारका होता है, जैसे वृक्ष पर पका हुआ, पालका पका, पककर वासी हुआ या घुला हुआ, अधिक पका हुआ इत्यादि।

वृक्षपर पका आम (डालका आम) मधुर, किंचित् खट्टा, भारी, वातनाशक और पित्तको कुपित करता है।

पालका आम-अत्यन्त मीठा, अम्ल, रसहीन और पित्तको दूर करता है। पेड़के पके आमकी अपेक्षा गुणोंमें बहुत अच्छा है। इसका पतला रस होनेके कारण यह बहुत जल्द पच जाता है। और शरीरमें किसी प्रकारकी गरमी वगैरहकी शिकायत भी नहीं करता।

पककर वासी हुआ आम पालके आमसे भी अधिक मीठा होजाता है। अत्यन्त रुचिकारक, बल और वीर्यको बढ़ानेवाला, हलका,

शीतल, शीघ्र पचनेवाला, वात और पित्तको शमन करनेवाला तथा कुछ कुछ दस्तावर होता है।

पके आमका वस्त्रमें निचोडा रस-बलकारक, भारी, वातनाशक, सारक (मलमूत्रादिको प्रवर्त्तन करनेवाला) हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक और कफको बढाता है। यदि उस रसमें दूध मिलालिया जाय तो वह अत्यन्त स्वादिष्ट होजाता है। तथा विशेषकर वीर्य्यको बढाता और शरीरमें कांति उत्पन्न करता है।

चूसकर खाया आम-बलवर्द्धक, रुचिकारक और वीर्यको उत्पन्न करता है, तथा लघुता, शीतलता, शीघ्रपाकिता और वातपित्तको दूर करता है तथा ग्राही है।

चाकूसे तरासकर खाया आम-जड़ता, मधुरता, शीतलता और रुचिको उत्पन्न करता है। देरमें पचता है, शरीरमें बल और रक्तादि धातुओंको बढ़ाता है वात तथा पित्तके रोगोंको शमन करता है।

आंबट-पके आमके रसको वस्त्र पर निचोड़कर धूपमें सुखा लेते हैं, उसको संस्कृतमें आम्रावर्त्त और हिन्दी भाषामें आंबट कहते हैं। आंबट-पियास, वमन और वात पित्तनाशक है। कुछ कुछ दस्तावर, रुचिकारक और धूपमें सुखानेके कारण आमकी अपेक्षा अधिक हलका होता है।

अनुपान विशेषसे आमके गुण-सहतके साथ आम राजयक्ष्मा (खईरोग) प्लीहा, वात और कफके रोगोंको दूर करता है। घृतके साथ अग्निको दीपन करता है, बलकी वृद्धि करता है, वर्णको उज्वल करता है और वायुके तथा पित्तके रोगोंको दूर करता है।

दूधके साथ आम—अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, स्वादिष्ट, भारी रुचिकारक, शीतल, वात पित्तनाशक और शरीरमें तत्काल बलको उत्पन्न करता है। जो लोग दिनरात बड़ी बड़ी शक्तिवर्द्धक और उत्तेजक औषधियां खाकार शरीरको पुष्ट और बलिष्ट बनाना चाहते हैं उनको एकबार इस आम और दूधके नुसखेकी भी आजमायश करनी चाहिए। जो गुण ८०) रुपये तोलेके **मकरध्वजसे नहीं आता, वह गुण केवल आम और दूधके सेवनसे प्राप्त हो सकता है।**

भिन्नभिन्न रोगोंमें आमका सेवन—**आममें पौष्टिक और गुरुपाकी गुण** होनेके कारण यह वायुको नष्ट करता है। इसलिये वातव्याधिमें आमका सेवन बहुत ही लाभदायक है, वातरोगी आमको वे खटके खा सकते हैं।

प्रायः सर्व प्रकारके मधुरसवाले पदार्थ मूत्रमें शर्करा उत्पन्न करते हैं, इसलिये वे प्रमेह और मधुमेहादि रोगोंमें अनुकूल नहीं पडते। परन्तु आममें यह बात नहीं है। **आम अत्यन्त मधुर रसान्वित होनेपर भी शर्कराको उत्पन्न नहीं करता।** अतएव इसको प्रमेह रोगी, मधुमेही और बहुमूत्र रोगी भी मजेमें खा सकते हैं।

जब सारा शरीर **शोथरोगसे** फूलजाता है, तब शरीरमें नमकका भाग अधिक बढ़जाता है, उससे शोथकी वृद्धि होती है। इसकारण चिकित्सक लोग शोथमें नमक खानेकी सलाह देते हैं। बहुतसे वैद्य शोथमें नमक और जलका त्याग कराकर केवल दूधका ही सेवन कराते हैं कई डाक्टरोंका मत है कि आममें नमकका

भाग बहुत कम होनेके कारण शोथ रोगमें आमका सेवन कुछ भी हानिकारक नहीं है। साधरण कब्जकी शिकायतमें भी आमोंका सेवन विशेष हितकर है। जब कोठेमें रहनेवाली वायु बिगडकर कोठेमें कठिनता उत्पन्न कर मलको रोक देती है तब प्रतिदिन ३-४ अच्छे पके आमोंको खानेसे उक्त शिकायत दूर हो जाती है।

आममें मधुरता, स्निग्धता और सारक गुण होनेके कारण दस्तको साफ लाता है। कभी कभी आम जुल्लाबका काम भी कर जाता है। इसके सिवा हृदयरोग, धातुकी क्षीणता, नपुंसकता, शरीरकी कृशता, रुधिरकी कमी, क्षय और बालकोंके अस्थि विकृत्यादि रोगों में भी **पका आम हितकारी है**, किन्तु अजीर्ण, मन्दाग्नि, आमाशयके रोग, अतिसार, संग्रहणी, पेटकी पीड़ा, रुधिरकी उष्णता, और नेत्रके **अभिष्पन्दादि रोगोंमें** आमोंका सेवन किसी-प्रकार ठीक नहीं है।

सेवनकरनेयोग्य आम— स्वस्थ और अस्वस्थ प्रायः सभी अवस्थाओंमें पका और मीठा ही आम खाना चाहिए। जो पककर अच्छी तरह घुलगया हो या पालका काहुआ जिसकी गुठली छोटी हो और जिसमें असार पदार्थ (फोकट) कम हो, खानेमें अत्यंत मीठा और सुगंधियुक्त ऐसा आम हमेशा सेवन करने योग्य है।

खानेके अयोग्य आम—तत्काल पेड़परसे गिरा हुआ, खटेरसवाला, जिसकी गुठली बहुत बडी हो और जिसमें असार पदार्थ अधिक हो ऐसा आम शरीरका कुछ उपकार नहीं करता बल्कि और उल्टी हानि करता है। आम खानेसे मन्दाग्नि, अजीर्ण, पेटमें पीडा, नेत्ररोग और रुधिर विकारादि जो रोग उत्पन्न हो जाते है, वे प्रायः ऐसे ही आमोंको खानेसे ही होजाया करते हैं।

अधिक आम खानेके विकार और उनका यत्न – अधिक आमोंके खानेसे कभी २ अजीर्ण, मंदाग्नि और शरीरपर छोटी छोटी **फुंसियां** उत्पन्न हो जाया करती हैं। इसलिये **अधिक आमोंका सेवन भी अच्छा नहीं**। आम ही क्यों कोई पदार्थ भी चाहे कितना ही उपयोगी क्यों न हो हृदसे ज्यादह कभी नहीं खाना चाहिए। कदाचित् अधिक आमोंके खानेसे अजीर्ण, पेटमें दर्द आदिकी शिकायत हो जाय तो **सोंठको जलमें पीसकर उसमें किंचित् काला नमक डालकर** पिये। अथवा जीरेके पानीमें काले नमकका चूर्ण डालकर पिये, किम्वा आमके अजीर्णमें **जामुन खाय**, यह एक पूराने यूनानी हकीमकी सम्मति है।

जो अधिक आमोंके खानेसे शरीरपर बहुतसी छोटी छोटी फुंसियें उत्पन्न हो जांय तो आधा मासा या एक मासा चंदनका इत्र ज्यादह पानीमें मिलाकर उन फुंसियोंके ऊपर लगावे अथवा चन्दनको जलमें घिसकर या नीमको जलमें घिसकर शरीर पर लेप करें, इससे आमकी फुंसियां शीघ्र ही दूर होजाती हैं। मेहके पानीमें नहानेसे भी आमकी फुंसियें सहजमें आराम होजाती हैं। खानेके अतिरिक्त आमका कई रोगोंमें औषधिरूपसे भी व्यवहार होता है। वैद्यलोग धातुक्षय, राजयक्ष्मा (सई) हृदय आदि रोगोंमें आमका पाक, आम्रखंड, आमकी गठली (बिजली), आमके बीजोंका तेल, आमके वृक्षकी छाल पत्ते, फूल (मौर) आदिका व्यवहार भी बहुतेरे रोगोंमें देखा जाता है।

आमकी गुठली–कषैली, मधुर और किंचित् खट्टे रसवाली होती है। वमन, अतिसार, रक्तातिसार, संग्रहणी आदि रोगोंको दूर करती है। रुधिरकी बवासीर, रक्तप्रदर और कृमिरोगमें भी इसका अच्छा गुण देखा जाता है। हमारे देशकी स्त्रियां इसके गुणोंको बहुत दिनोंसे जानती हैं। इसीलिये वे इसको जलमें या गुलाबके अर्कमें घिसकर बालकोंके वमन वगरह रोगोंमें पिलाया करती हैं। रक्तप्रदर और खूनके दस्तोंमें इसका चूर्ण नमक मिलाकर दहीके साथ खानेसे बहुत लाभ होता है। इसको धूपमें सुखाकर इसके बराबर सोंठ और बेलागिरी तीनोंका एकत्र चूर्ण बनाकर उसमें किंचित् काला नमक डालकर मट्ठेके साथ सेवन करनेसे अतिचार रक्तातिसार और संग्रहणी रोगमें विशेष उपकार होता है।

१–आम्रास्थि मध्यमाद्र फलक्वाथ समाक्षिकः।
निहन्या च्छर्दतीसारं तृष्णां दाहं ज्वरं भ्रमम्॥

अर्थात्–आमकी बिजली, और बेलागिरी दोनोंको समान भाग लेकर क्वाथ बनाकर उसमें थोड़ा सहत डालकर पीनेसे वमन, अतिसार, पियास, दाह, ज्वर, और भ्रम वगैरह दूर होते हैं।

(२) आम्रास्थि धातकीविल्वं मुस्तालोध्रकलिंगकम्।
पिबेन्माहिष तक्रेण पक्वातिसारनाशनम्॥

अर्थात्–आमकी बिजली धायके फूल, नागरमोथा, लोध और इन्द्रजौ इन सब औषधियोंको समान भाग लेकर सबका एकत्र चूर्ण बनाकर भैंसके मट्ठे साथ पीनेसे रक्तातिसार (खूनके दस्त) दूर होते हैं। इत्यादि, वैद्यक ग्रन्थोंमें इसके सैकड़ों प्रयोग लिखे हैं। इसको सुखाकर औषधिके काममें लेना चाहिये, यह पुरानी होजाने पर और भी अच्छा गुण करती है। मात्रा १ मासे से २ मासेतक।

आमका तेल–(आमकी बिजलीका तैल) कषैला, मधुर, रूखा, कड़वा, सुगन्धियुक्त, तथा मुहके मुहासे, वात और कफके रोगोंको दूर करता है। कुछ पित्तको उत्पन्न करता है परन्तु रुधिरके विकारोंको नहीं करता। हमारे देशमें आमका तैल अधिक व्यवहार नहीं होता।

आमके वृक्षकी छाल–कषैली, अति शीतल, स्तम्भक और इसको जलमें पीसकर इसका शरीरके ऊपर लेप करनेसे दाह, रुधिर, और पित्तके विकारोंको दूर करती है।

आमके वृक्षका भीतरका सार (आमके भीतरकी छाल)–मलको रोकनेवाला, शरीरके भीतर दाह उत्पन्न करनेवाला तथा पितके रोग, प्रमेह और कफके रोगोंमें अत्यन्त हितकारी है और योनिको शुद्ध करता है। आमकी जड़के गुण भी प्रायः आमकी छालके समान हैं।

आमके कोमल पत्ते–स्वादमें कषैले, मलरोधक, रुचिको उत्पन्न करनेवाले तथा वात और पित्तके रोगोंको दूर करते हैं प्रदर और खूनके दस्तोंमें भी लाभदायक हैं।

(१) जम्बाम्रमामलकीनाञ्च पल्लवोत्थोरसोमयेत्।
मध्वाज्यक्षीरसंयुक्तो, रक्तातीसारशूलणम्॥

जामुनके पत्ते, आमके पत्ते, और आमलेके पत्ते इन तीनोंको समान भाग लेकर इनका वस्त्रमें रस निचोड़कर उसमें सहत घी मिलाकर दूधके साथ सेवन करनेसे अत्यन्त बढ़ा हुआ भी रुधिरका अतिसार दूर होता है।

आमका मौर (फूल) शीतल, वाह्यकारक (बादी), मलरोधक जठराग्निको दीपन करनेवाला, तत्काल रुचि उत्पन्नकर्ता तथा कफ, पित्त, प्रमेह, प्रदर और अतिसारादि रोगोंमें विशेष हितकारक है।

'वैद्य' (मुरादाबाद) से उद्धृत।

दि. जैन समाज की सेवामें

नम्र निवेदन



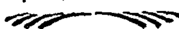
कुम्हलाने लगे सिञ्चन करो ! सिञ्चन करो !!
यह कल्पवृक्ष लगा हुआ है,
सर्व प्रताप आपका सधा हुआ है;
अपनी कमाई की तिलक विचार देखो,
नहिं पछताओगे यार मानो संदेशो ॥१॥
होंयगे फल अनूपम,
सुस्वाद मिष्ट महान्,
सिञ्चन करेंगे जो नर,
पावेंगे मोक्ष निदान ॥२॥
करो प्रयास तन धनसे
जमाओ वीज विद्याका ।
लगाओ ज्ञानके पौधे
चखोगे सुक्ख भवभवका ॥३॥

जैनियों जागो! सोनेका समय नहीं है। तुम्हारे साम्हने अमूल्य समय ललकार कर डंका बजा रहा है! फफक २ कर पूर्वजों के नामपर दो २ आंसू बहा रहा है और कह रहा है—अपनी गठरी सम्हालो "गई सो गई अब राख रही को" तुम उन कर्मवीरोंकी संतान हो, जिनने तुम्हारे लिये सर्वस्व अर्पण कर दिया, जिन्होंने संसारसुख पर लात मार कर सच्चे सुखका साधन किया। क्या भूलें गये अकलंकको जिन्होंने आत्मप्राणमापनमें रंचभी रंज न किया। धन्य है उस पवित्र आत्माको! पश, अगर धर्मका उत्थापन चाहते हो तो समय यही कह रहा है कि पतित जीर्ण शास्त्रका पुनरुद्धार करा डालो, लाखों प्रतियां अनेक भाषाओंमें लिपि कराकर समाजको आ पूरित करदो। जिस जातिने उन्नति की है तो केवल धार्मिक विद्याके बल से, उन्हीं आर्ष ग्रन्थोंसे! सच है हमारी संकोचता हमें सताकर डुबा रही है! कहा भी है—! "प्रधानं सर्व धर्माणां जैनं जयतु शासनं" पुनः बाबावाक्य प्रमाण क्यों!

देखो, जो कुछ कार्य होता है सिर्फ ज्ञान ही के बलसे चन्द्र रोजका नमुना जापान, जर्मन, इग्लेंड आदि देख रहे हो कि कुछ दिन पहिले क्या दशा थी, अब क्या चमत्कार हो रहा? हमारे यहां तो जो कुछ इनीगिनी संस्थायें हैं सो आर्थिक सहायताके विना कुम्हला रही हैं—अगर जल नहीं दोगे तो अवश्य ही मुरझा कर सूख जांयगी! श्रीमानो! चेतो, आंखें खोलकर देखो कि तुम्हारे धर्मकी और धर्मके धारी धर्मात्माओंकी संपत्ति क्या दुर्दशा हो रही है। समाजके नेता कहो धर्मवाहक कहो जो कुछ हो सो तुम्हीं हो। तुम्हारी ही कुदृष्टिका फल आज महात्मा अर्जुनलाल सेठी कारागृहमें विना अपराध दुःख भोग रहे हैं तथा तुम्हारी ही कृपाकटाक्षसे समिति जयपुर पर पानी फिर गया। अगर ऐसा रहा तो १०० वर्ष बाद जैनधर्मका नाम शेष रह जायगा अतः महात्माओंके वाक्यों पर ध्यान देवो।

सदकतके लिये गर जान जाती हो तो जाने दो।
मुसीबत पर मुसीबत आती हो तो आने दो॥

दास—हीरालाल परवार पापेर



भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीकी-
अत्यंत आवश्यकीय
सूचना।



उपर्युक्त मार्क कमेटीका रजिस्टर्ड चिन्ह है। जो महाशय कमेटीको धोखा देनेके लिये इसकी नकल बनावेंगे वे सर्कारी कानूनके मुताबिक दंडके भागी होंगे।

उपरोक्त हेडिंगका एक लेख जैनमित्रमें देकर तीर्थक्षेत्रोंके मुखियाओंसे प्रार्थनाकी गई थी कि अपने २ यहांकी रसीद बुकोंपर कमेटीका मार्क लगवा लेवें। जिससे एक ही प्रकारकी रसीद हर क्षेत्रपर होनेसे कमेटीको प्रबन्ध करनेमें और जैनियोंके दिये हुये धर्मार्थ पैसेको दगाबाज़ चोरोंसे बचानेमें विशेष सुभीता होगा, और यात्रियोंको भी इस मार्ककी रसीद ले पैसा देनेमें हानि न होगी। इस सूचनाके अनुसार कुंडलपुर (दमोह,) बड़वानीजी, गजपंथाजी, आबूजी, श्री सम्मेदशिखरजी तेरापंथी और बीसपंथी कोठी, पावापुरी, राजगृही, कुंडलपुर (विहार), गुणावाजी, विहारमंदिर, सतरंजाजी (पालीताना) और सोनागिरजी, आदि जगहोंकी रसीदोंपर ट्रेडमार्क लगाकर भेज दी गई हैं तथा और दूसरी जगहकी भी शीघ्र ही भेजी जांयगी। जिन२ प्रबन्धकर्त्ता महाशयोंने अभी इधर ध्यान नहीं दिया है उनको अब अपने यहांकी रसीद बुकें ट्रेडमार्क लगवानेके लिये भेजनेमें विलम्ब न करना चाहिये कारण ३० मार्च तकका समय दिया गया था सो पूरा हो चुका है अब यात्रीगण बगैर ट्रेडमार्ककी रसीद न पानेसे भंडारादिकमें द्रव्य देनेसे इन्कार करेंगे तो तीर्थके कारखानोंको तथा द्रव्य-दाताओंके हृदयके उत्साहको मुफ्त हानि होना ठीक नहीं; अतएव प्रबन्धकर्त्ताओंको आलस्य तज इधर शीघ्र ध्यान देना चाहिये तथा हमारी दि. जैन सम्प्रदायके मात्र जैनी भाईको उचित है और जाहिर किया जाता है कि कमेटीके इस मार्कको अपने ध्यानमें लें और परिश्रमसे कमाये हुए अपने धनको जो लोग तीर्थक्षेत्रोंपर धर्महेतु देते हैं यदि उसका सदुपयोग देखनेकी इच्छा रखते हों तो ता. ३० मार्च सन् १९१५के पश्चात् जिस तीर्थक्षेत्रपर आप जावें उक्त ट्रेडमार्कवाली रसीद मिलनेपर ही द्रव्य प्रदान करें। अन्यथा द्रव्य प्रदान

करनेसे कमेटी उसका हिसाब या उस रुपयेकी जांच कदापि नहीं कर सकती है। इसलिये आम दिगम्बर जैन सम्प्रदायका फर्ज है कि अपनी 'भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' की उचित सूचना (प्रार्थना) को पूर्णतया ध्यानमें ले किसीं भी तीर्थपर द्रव्य प्रदान करनेमें उपर्युक्त मार्ककी ही रसीद ले द्रव्य देवें, जिससे कमेटी उनका दिया हुआ द्रव्य उनकी इच्छा प्रमाण ही धर्ममें लगवानेको, दत्त-चित्त हो सके। और अगर किसीभी तीर्थ-की तरफसे (यानी नामसे) कोई व्यक्ति कभी चंदा चिट्ठा आदि कराने, मांगने आवे तो उसकेपास तीर्थक्षेत्र कमेटीके मार्केकी रसीद होनेसे तथा जैनमित्र, दिगंबर जैन, जैनगजटमें उनके निकलनेकी सूचना आदि वांचकर ही विश्वास कर उनको द्रव्य देना चाहिये अन्यथा उनका दिया हुआ द्रव्य तीर्थके कार्यमें लगना कदापि संभव नहीं हो सकता है।

निवेदक—भागमल प्रभुदयाल,
महामंत्री—भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग—बम्बई.

केशलोच महोत्सवपर—नवीन मुनि और ब्रह्मचारी।

गत चैत्र शुक्ला ३को ऐलक चन्द्रसागरजी महाराजके केशलोंचका महोत्सव निश्चित किया गया था, झालरापाटनमें चैत्र कृष्ण चतुर्दशीको प्रथम रथयात्रा हुई और श्रीजी रथमें विराजमान होकर प्रभावनाके साथ नगरके बाहर मंडपमें विराजे, ४ दिनतक सार्द्धद्वय द्वीप विधानके मंडलकी पूजन बडे समारोहके साथ की गई। उक्त ऐलकजी महाराज के भाव कोपीन त्याग दिगम्बर मुनिव्रत धारन करनेके पहलेहीसे हो रहे थे और एक दो मर्तबा अपने अभिप्राय झालरापाटनके जैन पञ्चोंके समक्ष प्रगट भी कियेथे उस समय पञ्चोंने यह प्रार्थना की थी कि देश काल राज्यका वर्ताव देखकर व्रत धारन करना चाहिए, अभी कलिकाल विकराल है तिसपर ऐलकजी महाराजने फर्माया कि यह देश बहुत उत्तम है यहांके राजा धर्मात्मा विद्वान और न्यायवान हैं यहांकी प्रजा धर्मवत्सल है यहांके सर्व ही निवासियोंकी धर्मवासना अच्छी है सर्व प्रकारकी योग्यता है फिर मुनिव्रत क्यों न धारण किया जाय?

मुनिव्रत धारण करनेका मनमें सङ्कल्प कर लिया और कुछ दिन पहलेही से सिर्फ चावल और छाछका आहार करते

रहे। और किसीसे प्रगट नहीं किया कि केशलोंच समय ही कोपीन त्याग कर देंगे.

इस दृढ संकल्पका प्रकाश केशलोंच के ऐन समय पर बहुत ही वैराग्य भावोंके साथ करके कोपीन खोलकर फेंकदी और गम्भीरतासे वैराग्यका उपदेश देकर केशलोंच बहुत ही स्थिरताके साथ चैत्र शुक्ला ३ को ८ बजेसे ११ बजे प्रभातको किया।

इस ही शुभअवसरमें यहां बांधूपुरा जिला इटावानिवासी क्षत्रीकुलभूषण ब्रह्मचारी कुंवर दिग्विजयसिंहजी महाराजने भी श्री चन्द्रसागर मुनि के समक्ष आजन्म ब्रह्मचर्य्य प्रतिमा धारण की और ८ दिन तक झालरापाटन सदर और शहर में दिनमें और रात्रिके समय पबलिक सभाओंमें धर्मोपदेश देकर जैन धर्मकी पूर्ण प्रभावना की, यहांके अन्य धर्मावलम्बियोंको जैन धर्मोपदेश श्रवन करनेका बहुत ही उत्तम मौका मिला, हस्तिनापुर ब्रह्मचर्य्याश्रम के अधिष्ठाता ब्रह्मचारी गेंदनलालजी महाराज तथा बम्बई प्रान्तिक सभाके उपदेशक पीताम्बरदासजी और पंचपहाड के पंडित रामनाथ शर्म्मा दिगम्बर जैन और खीचीवाडा प्रान्तिक सभाके उपदेशक भी इस समय पधारे और अपने धर्मोपदेशोंसे पबलिकको फायदा पहुंचाया।

हस्तिनापुर ब्रह्मचर्य्याश्रमकी व्यवस्था नियमावली और रीपोर्ट भी समझाई गई जिसका फल यह हुआ कि करीब ४५१) के नगदी रुपया दातारोंने भेट किया—

पबलिक सभाके अतिरिक्त झालरापाटन सदरमें एक खास सभा की गई थी जिसमें राज्यप्रतिष्ठित महाराजा साहब श्री चालिभद्रसिंहजी महाराजा और हाकिम साहब दीवानी, रेवेन्यू आफिसर, ऐंजिनीयर साहब, मदरसे के हेडमास्टर साहब व अन्य मास्टर लोक आदि कई विद्वान अन्य मतावलम्बी तथा कई आर्य समाजी भाई भी पधारे थे। सबके सामने ब्रह्मचारी कुंवर दिग्विजयसिंहजी महाराजने "जैन धर्मकी प्राचीनता, महत्वता और शुद्धता और जैन धर्मसे सर्व जीवोंकी रक्षा तथा कल्याण होना ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र सर्व वर्णवालोंने जैनधर्मको अपनी २ योग्यतानुसार प्राचीन कालमें पालन कर स्वर्ग अपवर्गकी प्राप्ति की है और अब भी कर सकते हैं" यह बहुत ही खूबीके साथ सिद्ध किया; जिसको श्रवण कर महाराजा साहबने अपने मुखारविन्दसे प्रशंसा की और जैन धर्मके असली तत्वरहस्योंको समझकर बहुत आभार माना।

देशदेशान्तरमें इस उत्सवकी खबर बहुत ही कमलोगोंके पास पहुंची इसहीसे बाहर देशान्तरके भव्य जीव इस मुनिदिक्षाके महोत्सवके अवलोकनके पुण्य लाभसे वञ्चित रहे।

मुनिमहाराजकी वैराग्यमई शान्त मुद्रा सर्व जीवोंको कल्याणकारी है । यह झालावाड देश अतिशय भाग्यशाली है जिसमें मुनिपदका प्रादुर्भाव हुआ है। मुनि महाराज इस ही देशमें बिहार करते रहेंगे कारण झालरापाटणसे १६ सोलह कोस याने दिशा विदिशामें सोलह कोस तक ही गमनागमन करना रखा है इस हद्के बाहार गमनके त्याग करदिये हैं। सर्व दिगम्बरी भाईयोंको और अन्य भव्य जीवोंको प्रगट हो कि झालावाड देशमें पधारकर जहां मुनि महाराज विराजें वहां दर्शन कर अपना जन्म सफल करें। इस कलिकालमें इस देशमें सतयुग वर्त रहा है, वैराग्यकी वर्षा वर्ष रही है, मुनिमहाराज शहर और ग्रामके बाहर उपवनमें विराजते हैं शहरमें केवल भिक्षा निमित्त आहारके समय ही आते हैं। आशा है सर्व भाई जो इस लेखको पढे अवश्य वैराग्यमई मूर्तिके दर्शन कर लाभ उठावें । यहां पधारनेवालोंको दूसरा लाभ यह भी होगा कि श्री शान्तिनाथ महाराजके अतिशय प्राचीन विम्बके भी दर्शन होंगे । इस अवसरको न चूकें यही विज्ञप्ति है । मुनि महाराजकी अवस्था ९४ वर्षकी है इनका जीवनचरित्र अलग छपा है।

हितैषी–

मुन्दरलाल वैनाड़ा–झालरापाटन शहर.



लग्नगाळो अने जमणवार.



ન્યાતના સર્વે ગૃહસ્થો એકજ જગ્યાએ એકઠા થઈ લગ્ન કરે, એવો રિવાજ ગુજરાતમાં તો ફક્ત **વીસા મેવાડા** જ્ઞાતિમાંજ હશે. આ રિવાજ આજના ખર્ચાળ જમાનામાં કેટલો લાભદાયી થઈ પડ્યો છે, તે વિષે લખવાની જરૂર નથી. ન્યાતના બધા માણસો આવવા લલચાય એવી કઈ વસ્તુ છે, તેનો વિચાર કરતાં માલુમ પડે છે કે તે ફક્ત **જમણવારજ** છે, કારણકે જો કોઇ લગ્નગાળે એક પણ ન્યાત થવાની નથી હોતી, તો ફક્ત લગનવાળા અને તેમના થોડા સંબંધી વગર કોઇ જવાની તસ્દી લેતું નથી, માટે **જમણવાર નહીં કરવી એમ જે બૂમો પાડવી તે કાર્યસાધક નથી, પણ જે સુધારો ઇષ્ટ લાગે તેને માટે સ્થિતિસ્થાપક ઉપાય યોજવાની જરૂર છે.**

આવા સમુહના જે લાભો જેવા કે ભ્રાતૃભાવ, ઐક્યતા, ઓળખાણ, નિર્દોષ આનંદ વગેરે જો મેળવતા બંધ પડીએ, તો પછી જાન, કોન્ફરન્સ વગેરે નવીન ભૂતો જાગે! અને આખરે ગઢવી ઘેરના ઘેર એના જેવો ઘાટ થાય, માટે આવા લાભ ન ખોતાં ઇષ્ટ સુધારા કરવા ઘટે છે. ખરૂં છે કે ઘણીવાર **વીસ પચ્ચીસ ન્યાતો** થાય છે અને ત્રીસ ચાળીશ હજારનો ધૂમાડો થાય છે, પણ એ ન્યાતો કરવી કંઈ ફરજ્યાત નથી. એથી ઉલટું શ્રાવકના સંઘને જમાડવામાં પુણ્ય, વાત્સલ્ય વગેરે ગુણો સમાયલા છે, માટે ન્યાત બંધ નહીં કરતાં જમાનાને જેની વધારે જરૂર પડે તેની તરફ વધારે લક્ષ આપો. આપણી જ્ઞાતિ ખાતે **કેલવણીના ફંડની ઘણી જરૂર છે.** જે ગૃહસ્થ હજાર બારસો રૂપીઆ જમણવારમાં ખર્ચવા તૈયાર થાય, તે જરા વધારે ઉદાર

થઈ ફક્ત સો રૂપીઆ કેલવણી ફંડ ખાતે જૂદા કાઢે, તો વીસ ન્યાતે રૂ. ૨૦૦૦) અને પાંચ લગ્નગાળે રૂ. ૧૦૦૦૦) થાય. એ પ્રમાણે દરેક નાના મોટા પ્રસંગે જુજ રકમ પણ કાઢીએ, તો શું આપણે થોડો લાભ મેળવી શકીએ ?

આ લગ્નગાળે પેહેલી ન્યાત કરનાર મુબારક ગૃહસ્થને મારી નમ્ર વિનંતી છે કે આવો ઉત્તમ દાખલો બેસાડવા ઇચ્છા મુજબ રકમ જુદી કાઢી જાહેર કરશે, તો ભવિષ્યમાં થનારા વિદ્યાના પુણ્યનો મુખ્ય અધિકારી તે પોતેજ બનશે. ન્યાતની રજા આપનારાઓને ભલામણ છે કે તેમણે ખાસ દાબીને આ બાબત ન્યાત કરનારના મગજમાં ઉતારવી જોઇએ.

લી. વીસામેવાડાજ્ઞાતિનો શુભેચ્છક.

નોટઃ-આખા સંભાના ભાઈઓ એકજ સ્થળે મળી લગ્નો કરે છે તથા તે પ્રસંગે જે ૨૦-૨૫ જમણવારો થાય છે તે યોગ્ય છે કારણકે એથી સાધારણ તથા ગરીબ સ્થિતિવાળાને ખર્ચમાં ઘણોજ ઉગારો થઈ ટૂંક ખર્ચમાં લગ્ન થઇ શકે છે, પણ આ જમણવારોની ખુશાલી નિમિત્તે દરેક ન્યાત દીઠ સો રૂપીઆ કે એથી ઓછા વધારે ફરજ્યાત આપવાનો ઠરાવ જો એ ન્યાતની પંચ કરે, એટલે અમુક રકમ કેલવણી ફંડમાં આપે તોજ જમણવારની રજા આપવી એવો ઠરાવ કરે તો એક મોટું ફંડ ઉભું થઇ શકશે અને તેનો ઉપયોગ કેલવણીના કાર્યમાં થવાથી ન્યાતનાજ બાળકોને સ્કોલરશીપ, ઈનામો વગેરે આપી શકાશે. આ વખતના લગ્નગાળા પ્રસંગે આ બાબત ઉપર ખાસ લક્ષ આપવા અમો એ ન્યાતિના સુજ્ઞ અગ્રેસરોને સૂચના કરીએ છીએ.

સંપાદક.

मारी दुःखी जींदगीनो हृदयभेदक चीतार.

(ગયા અંકથી ચાલુ)

દિવસો જતાં તેના મનની સ્થીતિ ફરવા લાગી. મદને તેના વિશુદ્ધ મનને મલીન વિચારોથી મલીન કર્યું. તેના ખીલતા યૌવનને લઇ તેના શરીરના પ્રત્યેક અવયવમાં લાગેલી કામાગ્નિની આગ પૂર જોરથી બળવા લાગી, તેના વિશુદ્ધ વિચારો તે આગમાં બળી ગયા, પાતિવ્રત્ય અને શિયળના વિચારો તેના મનમાંથી અદૃશ્ય થયા. આજ સુધી દુઃખોમાં દિવસ કાઢતી બાળા-આજ સુધી શુદ્ધ રહેલી બાળા-આજ સુધી ચિંતાતુર રહેતી બાળા હવે પ્રસન્નવદની દીસવા લાગી, તેના ચ્હેરાપર નિશદિન રહેતી ચિંતા તેમજ નિરાશાની છાંય હવે નષ્ટ થઇ ગઇ. તેનું હૃદય તેણે સામે ઘેર રહેતા એક સુંદર યુવાનને અર્પ્યું, તેની સાથે તે પ્રેમપાસમાં પડી. કામદેવે તેને કુમાર્ગે દોરી, તેના માતાપિતાએ તેને બાળપતિ સાથે પરણાવી, તેથી તે પવિત્ર મટી અપવિત્ર બની, સદ્‌ગુણી મટી દુર્ગુણી બની, કુળને કલંક લગાડનાર બની, માની કુખ લજવનાર બની, ટૂંકામાં માતપિતા તથા સાસુસસરાના કુટુંબોને લાંછન લગાડનારી નીવડી. લાગ મળતાં ઘરનાં માણસોની નજર ચુકાવી કંઈ પણ બ્હાનું કાઢી પ્રતિદિન તેના ઘરમાં જવાં લાગી.

મારી સ્ત્રીને આવું અધમ કૃત્ય કરતાં રોકનાર કોઇ નહોતું. મારી આખી ન્યાતમાં તે ગામમાં ઘેરઘેર લોકો અમારા વિષે વાતો કરવા લાગ્યા, અને ધીમેધીમે લોકવાયકા પવનની માફક ફેલાઇ ગઇ તથા મારા

પિતાને કહેવું પડી. નજીકના સગાંએ મારે ઘેર આવી મારા પિતાને કહેવા લાગ્યા કે તમારા પુત્રને **ભણવાનું છોડાવી ઘેર બોલાવો**, નહિ તો આબરૂ નષ્ટ થશે. બીજેજ દિવસે ઘેરથી કાગળ આવ્યો કે ભણવાનું મૂકી દઇ ઘેર આવો. આવા પત્રનું કારણ કળવું **અતિ કઠીન** લાગ્યું, પણ પિતાની આજ્ઞાનું પાલન કરવાને ખાતર એકદમ હું ઘેર ગયો.

હવે હું ઘેરજ રહેવા લાગ્યો. આ સમયે મારી ઉમ્મર માત્ર **પંદર વર્ષની** હતી હવે હું પહેલ્લાંના જેટલો નિર્દોષ નહતો. હવે મારૂં શરીર પહેલાંના જેવું ન્હાનું નહતું. હવે મારા વિચારો, આચારો અને કાર્યોમાં જરા જરા ફેર પડતો જતો હતો. સંસારની બાબતો હવે હું જરા તરા વધારે સમજતો હતો. હવે હું તદન કાચી બુદ્ધિનો બાળક નહતો હવે હું **યુવાવસ્થામાં દાખલ થવાની શરૂઆત** કરતો હતો. હવે મારા શરીરનું બંધારણ બરાબર બંધાતું હતું. હવે મારા મગજની ખીલવણીનો પાયો નંખાતો હતો. યુવાવસ્થા દર્શાવતી કાળી ભમરો જરાજરા સ્પષ્ટ દીસતી હતી. ટૂંકામાં હવે હું મારી જીંદગીની **યુવાવસ્થાની શરૂઆતના પહેલ્લા પગથીઆપર** ચઢતો હતો, પણ હું યુવાવસ્થાની સંપૂર્ણ ટોંચે પહોંચું તે પહેલ્લાં, મારા શરીરનું બંધારણ બરાબર બંધાય તે પહેલ્લાં, મારી શારીરિક તેમજ માનસિક શક્તિઓના વિકાસની પૂર્વે સર્વ મનોરથોને હંમેશને માટે નષ્ટ કરતો, પુરૂષત્વથી માણસને રહિત બનાવતો, શારીરિક તેમજ માનસિક શક્તિનો જલ્દીથી ક્ષય કરતા અને ટૂંકમાં આ અમુલ્ય જીંદગીને જરાવારમાં નકામી કરી, શરીરમાંના સર્વ તત્ત્વ અને સત્વને બાળી ખાખ કરી માંસ અને રૂધીર બંન્નેનો શરીરમાંથી લોપ કરી માણસને માત્ર હાડપીંજર બનાવી જીંદગીનો અંત લાવતા મારા પોતાનાંજ **વ્હાલાં માતાપિતાએ પોતાના વ્હાલા જીવજાન પ્યારા પુત્રને માટે બનાવેલા-ખોદેલા, બાળલગ્નરૂપી ખાડામાં-યા બાળલગ્નના ખરા અર્થમાં પડયો.**

❀હાસ્યજનક કજોડાનો સંસાર❀

અમારા હાસ્યજનક કજોડાના સંસારનો આરંભ થયો. દિવસે દિવસે મારા શરીરનું સત્વ આવતા પહેલાં પસાર થવા લાગ્યું અને શરીરની શક્તિનો હોજ ભરાતા પહેલાં ખાલી થવા લાગ્યો. શરીરનું બંધારણ બંધાતાં પહેલાં ઢીલું થવા લાગ્યું. બદન ખીલતા પહેલાં કરમાવા લાગ્યું. **શરીરનો સૂર્ય પ્રકાશતાં પહેલાં ઝાંખો થવા લાગ્યો.**

શરીર વધવા પહેલાં ક્ષીણ થતું ચાલ્યું, **બ્રહ્મચર્યનું તેજ આવતા પહેલાં નષ્ટ થઈ ગયું.** યૌવનનાં સર્વ ચિન્હો દેખાતાં પહેલાં **વૃદ્ધાવસ્થાનાં ચિન્હો** દીસવા લાગ્યાં. શરીર સબળ થતા પહેલાં દુર્બળ થયું.

ધીમે ધીમે મારામાં પુરૂષત્વનો લોપ થયો શરીરમાંથી શક્તિ અદ્રશ્ય થઇ. સર્વ ચીજો પર અભાવ ઉત્પન્ન થવા લાગ્યો. માતા પિતા તરફના પ્રેમનો પ્રલય થયો. વાળ ધોળા થવા લાગ્યા. બ્રહ્મચર્યનો લોપ થવાથી ચહેરો ફીકો પડયો અને નેત્રોનું તેજ કમી થયું. હાથપગ ગળી જવા લાગ્યા. શરીર હાડપીંજર સમાન દીસવા લાગ્યું. શક્તિનો તદન અભાવ થયો, ટેકા વિના બેસતાં કમર દુખવા લાગી. ચાલતાં પગ લથડાવા લાગ્યા, ઉત્સાહ નિરૂત્સાહમાં ફેરવાઇ ગયો. સુખને બદલે દુઃખના દરિયામા પડ્યો, અક્કલ કમી થઈ અને યાદ શક્તિ અદ્રસ્ય થઇ. વિચારશક્તિ આસ્તેઆસ્તે ઓછી થઇ. સમસ્ત શરીરપર કાળી છાંય

પ્રસરી રહી. શરમનો શેરડો શરીરપર સ્પષ્ટ ભાસવા લાગ્યો. બોલતાં અચકાવા લાગ્યો. કોઈપણ માણસની સાથે વાત કરતાં સામે જોઇ શકતો નહિ. સામે માણસ મળતાં નિચે નિહાલતો. માણસોના જમા થયેલા ટોળામાંથી બને તેટલો જલ્દી બહાર નિકળતો, સદંતર એકાંત શોધવા લાગ્યો અને એકાંતમાં જઈ મારી કરૂણામય, મારી દયાજનક દુઃખી જીંદગીના દુઃખનો આબેહુબ ચીતાર મારા ચિત્ત સમક્ષ ચિતરતો, ચિતરી ચોધાર અશ્રુ વર્ષાવતો, ડુસકાં ભરતો, અંદરનો ઉભરો બ્હાર અત્યંત જોરથી કાઢતો, માતાપિતાને અનહદ ધિક્કારતો. ન્યાતના નાશકારક અનિષ્ટ રિવાજો જલ્દીથી નષ્ટ થાય એમ ઈચ્છતો. બીજા ન્હાનપણમાં નહિ પરણેલા, મારીજ ઉમ્મરના, મારી સાથે ભણનારા, મારી સાથે આનંદ કરનારા, મારી માથે ફરનારા અને મારી સાથેજ હાથમાં પુસ્તક લઈ નિર્દોષ આનંદ કરતા હસતાકૂદતા સ્કુલમાં જનારા મારા સુખી મિત્રોના સુખોની સરખામણી મારી દુખી જીંદગીનાં દુઃખો સાથે કરતો અને **મારાં સર્વે દુઃખોનાં મૂળ મારાં માતાપિતાને** તેમના યુગોયુગ ભયંકર દુઃખોમાં જાય એમ ઉપરાઉપરી **હજારો શ્રાપ** આપતો. મારા મહાન મનોરથો મારા મનમાંજ મરણ પામ્યા. **મારી અભ્યાસ કરવાની તીવ્ર ઉત્કંઠા મનમાંજ દબાઈ** ગઈ. મારા સ્વાભાવિક હસતા ચહેરાએ **ગમગીનીનું** ગંભીર રૂપ ધારણ કર્યું. મારૂં ઝળકતું ભવિષ્ય મારાંજ માતાપિતાએ ઝાંખું કર્યું, મારૂં મરણ મારાંજ માતાપિતાએ પાસે આણ્યું. મારી પીડાઓ મને પેદા કરનારાઓએજ પેદા કરી.

મારો ચિંતાતુર ફિક્કો ચ્હેરો અને અશક્ત શરીર જોઇ મારા પીતાનું દીલ દિલગીર થયું. રાતદિવસ ઉદાસીન દીસવા લાગ્યું મને તન્દુરસ્ત અને સશક્ત બનાવવા તરફ લક્ષ દોરાયું. **જુદા જુદા વૈદરાજોની સલાહ તથા** દવા લેવા લાગ્યા. વિવિધ તરેહની પેટંટ દવાઓ દિનપ્રતિદિન મંગાવવા લાગ્યા રૂપિયાનો વ્યય વિચાર કર્યા વિના મને સશક્ત બનાવવા પાછળ કરવા લાગ્યા. તેમનાં **સર્વે પ્રયત્નો નિષ્ફળ** નીવડ્યા-ખર્ચેલા પૈસા નકામા ગયા. મારા શરીરમાં લેશમાત્ર પણ ફેર પડ્યો નહિ. કુદરતના કાયદાનો ભંગ કરી **૨૦ વર્ષ સુધી અખંડ પાળવા જોઈતા બ્રહ્મચર્યના નિયમને નહિ પાળી આવક જાવકના હિસાબની દરકાર વિના અકાળે કરેલા વીર્યના અતિશય વ્યયથી પેદા થએલી અસંખ્ય વ્યાધિઓ અને અત્યંત અશક્તિ માણસ જાતના અનહદ પ્રયત્નથી પણ ટાળવી મુશ્કેલ માલૂમ પડી.** મારા શરીરની આવી ભયંકર સ્થીતિ જોઇ મારા **માતાપિતાને** પોતે કરેલા અવિચારી કામથી-પોતાના પ્યારા પુત્રને બાળપણમાં પરણાવ્યાથી અતિશય **પશ્ચાતાપ** થયો.

કર્મયોગે મારી સ્ત્રીને **એક પુત્રનો** પ્રસવ થયો. પુત્ર બે વર્ષનો થઈ મરણ પામ્યો. મારા શરીરની શક્તિનો લોપ થયેલો હોવાથી બીજો પુત્ર થાય તે અસંભવિત છે. જીંદગીનો ભાર જેમ તેમ કરી હું ખેંચું છું અને મારા મરણની જલ્દીથી રાહ જોતો આ સંસારમાં હું જીવું છું. મારા જીવનની દોરી વધારે લંબાયલી જોવાને હું ઇચ્છતો નથી. અને તે લંબાય તેમ છે પણ નહિ. બહુ તો એક બે યા પાંચ વર્ષની અંદર મારે જરૂર મરણને શરણ થવું પડશે, કરેલા કર્મનું ફળ જરૂર ભોગવવું પડશે. **મારા કુળના ક્ષયનું સંપૂર્ણ વિનાશનું કારણ મારા માતાપિતાજ છે,** હવે મારા લગ્ન વખતે ઘરમાં આવનારી નવીન વધુને જોઇ આનંદ માનનારી મારી માયાળુ માતાની સમક્ષ મારા મરણ

પછી મારી બાળ વિધવા તેના જીવને દુ:ખિત બનાવવા હાજર રહેશે. મારાં માતાપિતાના ઘડપણમાં તેમના જીવને આનંદ આપનાર કોઈ રહેશે નહિ. નાના જીવોને ઉગારનાર અને 'અહિંસા'ને માટે જગજાહેર થયેલા જૈનો આજે પોતાનેજ હાથે પોતાના ધર્મના, પોતાના પુત્રોને પંચેન્દ્રીય જીવોને બાળ લગ્ન કરી અનહદ દુ:ખમાં નાંખી રીબીરીબીને મારે છે! દયાને માટે જીવ આપનાર તથા પોતાનું સર્વસ્વ આપનાર જૈનો આજે દયાને ભૂલી જઈ-અહિંસાને ભૂલી જઇ માણસોને મારી અઘોર હિંસા કરવા લાગ્યા છે. આજના જૈનો પોતાનાંજ ફરજંદોને બાળલગ્નના ભયંકર વિનાશકારક ખાડામાં નાંખી તેમનાં સર્વ શારીરિક તેમજ માનસિક સુખોનો વિનાશ કરી તેમના હડહડતા શત્રુ બને છે. પોતાના મહાન શત્રુને પણ નહિ દેવાય તેવાં દુ:ખો આજે જૈનો પોતાનાં પ્યારાં બચ્ચાંઓને દે છે. હે જૈન બંધુઓ! અમારા બાળલગ્ન યા મરણયજ્ઞથી હવે પછી તમારાજ કુળનો તથા ધર્મનો નાશ કરતાં અટકજો. ઉપરની વાત મારા એક બાળલગ્નથી પીડાતા જ્ઞાતિબંધુએ મને પ્રગટ કરવાના હેતુથી જણાવતાં અને તે કોમને અતિ ઉપયોગી થશે, એમ લાગતાં આ પત્રદ્વારા પ્રકટ કરી છે.

એક વીસામેવાડા જ્ઞાતિબંધુ

નોટ:—આ લેખનો પ્રથમ ભાગ ગયા અંકમાં પ્રકટ થયો છે, તે એક વખત ફરીથી વાંચી જઇ આ લેખ ઉપરથી દરેક વાંચકે ગંભીરપણે વિચાર કરવો ઘટે છે કે બાળલગ્ન અને કજોડાથી કેટલાં બધાં અનિષ્ટ પરીણામો ઉપસ્થિત થાય છે, તેમાં વિશેષે કરીને કુળને કલંક લાગવા ઉપરાંત કુંટુંબ પરિવારનો વધારો થતો સમૂળગો અટકી જાય છે તેમજ કેળવણી તો તદ્દન અધુરીજ રહેવાથી દરેક રીતે જ્ઞાતિની ઉન્નતિ થઇ શકતી નથી, માટે વીસામેવાડા જ્ઞાતિ તથા બીજી બધી જ્ઞાતિની પંચોએ એકત્ર મળી બાળલગ્ન અને કજોડાંનો રિવાજ દૂર કરવાને ૧૦ વર્ષની ઉમરની થયા વગર કન્યાની સગાઇ કરવી નહિ તથા કન્યા ઓછામાં ઓછી ૧૩ વર્ષની થયા સિવાય લગ્ન કરવાં નહિ તેમજ કન્યા કરતાં વરની ઉમર ૬ વર્ષ મોટીજ હોવી જોઇએ એવો ફરજ્યાત ઠરાવ કરવાની જરૂર છે અને ત્યારેજ નાની વયમાં સગાઇ તથા લગ્ન કરી દેવાની જે પડાપડીઓ ચાલે છે, તે બંધ થશે. સોજીત્રાના આ લગ્નગાળામાં આ બાબત ઉપર પૂરતું લક્ષ આપવાને અમો એ જ્ઞાતિની પંચને આગ્રહ કરીએ છીએ.

સંપાદક

स्वर्गीय दानवीर शेठ माणेकचंदजीनी उच्च मनोभावना.

शतेषु जायते शूरः सहस्रेषु च पंडितः ।
वक्ता दशसहस्रेषु दाता भवति वा न वा ॥

શ્રીમાન દાનવીર જૈનકુલભૂષણ શેઠ **માણેકચંદ હીરાચંદ ઝવેરી જે. પી.** વિક્ર. સં. ૧૯૦૮ માં જન્મ્યા હતા. તથા સં. ૧૯૭૦ માં (તા. ૧૮-૭-૧૪ ના રોજ) સ્વર્ગસ્થ થયા. તે-વરસ દરમ્યાન તેમની કાર્કીર્દિ કેવી હતી તથા તેમણે **જ્ઞાતિસેવા, દેશસેવા** તથા **પરોપકારી** કાર્યો કેવાં ને ક્યારે કર્યાં તથા કેલવણીના ઉત્તેજનાર્થે અને પોતાના પુજ્ય વડીલના સ્મરણાર્થે પોતાના કુટુંબની **કમાણીનો સદ્ઉપયોગ** કેવી રીતે અને તેમાં કેટલું દ્રવ્ય ખરચ કર્યું તે સર્વ હકિકત તેમના **જીવનચરિત્ર** લખનાર તરફથી બહાર પડશે. જોકે તે હકિકત પણ જોઇએ તેટલી વીગતપૂર્ણ હશે કે કેમ ? તે એક શંકાસ્થાન રહેશે કેમકે આપણા લોકોમાં (**Biography**) જીંદગીના બનાવો નોંધી રાખવાની ટેવ કે ઉપયોગી બાબતોની નોંધપોથી (Diary) રાખવાની ખંત હોતી નથી, જેથી કરીને જીવનચરિત્ર લખનાર લેખકના ઘણાખરા વિચારો તથા માહીતિ ઉપરજ આધાર રાખવો પડે છે, તોપણ આ શેઠના જીવનચરિત્રની બાબતમાં તેમ ફક્ત લેખક ઉપરજ આધાર નહીં રાખવો પડે એમ ઇચ્છીશું. આ લેખ લખનારના હાથમાં તેવી નોંધપોથી કે તેમનાં સત્કાર્યોનો સંગ્રહ નથી તથાપિ તેના સ્વર્ગસ્થ શેઠની સાથના **પ્રથમ પરીચયવાળા સન ૧૮૯૫ ની સાલથી** લગભગ ૧૯ વરસના **જાતિ અનુભવ ઉપરથી** સ્વર્ગસ્થ શેઠના મનમાં કેવી ઉચ્ચ **ભાવનાઓ** હતી, તેનું ટૂંક દિગ્દર્શન તેમના તરફના માનાર્થે પ્રદર્શિત કરવાનો પ્રયત્ન કરે છે, જે લખનારના મનનું તેમના માન માટેનું ગુણદર્શક ચિત્ર હોવાથી અન્ય મિત્રો કે સંબંધીઓના વિચારથી કદાપિ ભિન્ન દેખાય અથવા મતભેદ લાગે, તોપણ ઉપરની દૃષ્ટિએ લખનારનો દોષ મનમાં નહીં વસાવતાં તેને લખનારનો અભિપ્રાય લેખી વાંચનાર ક્ષમા બક્ષશે, એવી આશાથી આ **પ્રથમ પ્રયાસ** આદરે છે.

મનુષ્યજીવનના વિભાગ.

મનુષ્ય જીવનના સાધારણ રીતે બે વિભાગ પાડી શકાય છે. એક **બાહ્ય જીવન** અને બીજું **આન્તર જીવન.** પોતે જે બોલે, જે વર્તન કરે અને જેના પરિણામે મનુષ્યનું જીવનચરિત્ર તેની જીંદગીના બનેલા બનાવોની નોંધરૂપે બહાર પડે તેવાં જીવનને **બાહ્ય જીવન** કહે છે, પરંતુ પોતાની આજુબાજુના સંજોગો, મિત્રમંડળ, ગૃહ સંસ્કાર વગેરે સંયોગોથી તેના મનમાં જે કલ્પનાઓ ઉભી થાય તેમાંની થોડીનો અમલ થયો હોય અને કેટલીક અનિવાર્ય સંયોગોને લીધે અકાર્ય રહી વિચારમાંજ પડી રહી હોય, તોપણ તેવી સર્વ ઉચ્ચ કલ્પનાઓને **આન્તર જીવન** કહે છે. બીજા રૂપમાં **વાણી** અને **શરીરથી** જે ક્રિયા થાય તે બાહ્ય જીવનના પ્રદેશમાં આવી જાય છે અને **મનથી** જે ક્રિયા થાય તે આન્તર જીવનનો ભાગ ગણાય છે. આન્તર જીવનનું તાદશ જીવન ખડું કરવું એ બાહ્ય જીવન કરતાં વધારે કઠીન છે કેમકે તેની તુલના બાહ્ય દૃષ્ટિથીચર્મચક્ષુથી થઈ શકેજ નહીં, પરંતુ **જ્ઞાનચક્ષુથી** થઈ શકે અને તે કરવા જતાં દરેક ચક્ષુ ઉપર જે મલીન પડદા લાગેલા હોય તેની અંદરથી થતો દૃષ્ટિપાત નિર્મલ હોતો નથી, તેથી ભિન્ન ભિન્ન વિચારવાળી વ્યક્તિઓ

ભિન્ન ભિન્ન દૃષ્ટિએ જોઇ શકે છે અને તેના પરિણામે દરેકના **વિચારની ભિન્નતા** દેખાઇ આવે છે. જોકે મલીન પડદાથી રહિત જ્ઞાનચક્ષુએ મનુષ્યની આન્તર લાગણી વધારે નિર્મલ અને સ્પષ્ટ રીતે બહાર પાડી શકે છે. વિચારભિન્નતા મોટે ભાગે દરેક કાર્યમાં દેખાઇ આવે, માટે તેવા વિચાર બહાર ન પાડવા એ કોઇરીતે લાભપ્રદ નથી, તેથી પોતાના પ્રમાણિક વિચારો દરેકે કોઇપણરૂપે બહાર પાડવા જોઇએ કે જેથી બીજાના વિચાર સાથે આપણા વિચારની તુલના કરવાનો અને સુધારવાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થાય.

बाह्य वर्तन अने आंतर्भावनानी वैषम्यता.

આ જમાનામાં મુખ્યત્વે કરીને જોવામાં આવે છે કે મનુષ્યનું બાહ્ય વર્તન અને વર્તન તેની આંતર્ભાવનાથી તદન જુદા પ્રકારનું હોય છે. આવી ભિન્નતા આવવામાં પરતંત્રતા, મનોબળની કચાસ અને મિત્રપરિચય વગેરે મુખ્ય ભાગ ભજવે છે. મનુષ્યના વિચાર ઘણા ઉચ્ચ હોય, પરંતુ તે **પરતંત્ર અવસ્થામાં** મનની ઇચ્છાને વર્તનમાં મુકી શકે નહીં. જો કે ઘણી બાબતોમાં **જ્ઞાતિ રિવાજ અથવા નૈતિક બંધન** વગેરેને લીધે તેને મનવિરૂદ્ધ વર્તવું પડે છે. કેટલાક મનુષ્યોને બીજી સબલતા સાથે **મનોબળની કચાસ** એટલે મન ઉપર કાબુ નહીં હોવાથી તેઓ બીજા ઉપદેશ આગળ સત્ અસત્ની પરીક્ષા કરી શકે નહીં અથવા પોતાના વિચારને પુરતા રૂપમાં બાહ્ય ટેકાઓની ગેરહાજરીને લીધે મનવિરૂદ્ધ વર્તન કરે છે અને કેટલાકને એવા મિત્રમંડળમાં રહેવાની ટેવ પડી ગઈ હોય છે કે તેઓ ફક્ત સમયવર્તી સ્વાર્થ સાધી પોતાનું કામ કાઢી લેવા તરફજ દૃષ્ટિ રાખે છે પછીથી તે પોતાના નિયમોથી વિરૂદ્ધ હોય, તોપણ મહેનત બચાવવાના હેતુથી તેમ વિરૂદ્ધ વર્તવા લાગે છે. આવા ઘણા કારણોને લીધે વર્તનમાં થોડા ઘણા અંશે પણ ભિન્નતા માલૂમ પડી આવે, પરંતુ **દાનવીર શેઠ માણેકચંદજીની** બાબતમાં તેઓના પરીચયમાં હું આવ્યો, ત્યારથી મેં **તેમનું બાહ્યજીવન તેમની આંતર્ભાવનાના એક આદર્શ (આરસા) સમાન જોયું** છે. તેમના મનની વિશુદ્ધતા હોવાથી ઘણી વખતે તેમના વર્તનમાં **ભોળપણ** માલૂમ પડી આવતું, ત્યારે તેમના પરીચયમાં આવનાર દરેક ગૃહસ્થ તેમને **ભોળા કહેતા** અને સામા માણસો જ્યારે તે ભોળપણનો લાભ લેવા ઈરાદો રાખતા, ત્યારે તે વિષે પોતે પણ કહેતા-'હું **એવી આંટી ઘુંટીમાં સમજું નહીં.**'

Face is the index of mind

मनुष्यनुं मुखारविंद तेना अंतःकरणनुं चित्र छे.

મનુષ્યના અંતઃકરણનો કંઇક ખ્યાલ તેના મુખારવિંદ ઉપરથી આવી શકે છે. ઉમરથી વયોવૃદ્ધ થયેલા તથા આવી ચિકિત્સાના અભ્યાસીને આ બાબત ઘણી સહેલી લાગે છે એટલે કે અમુક મનુષ્યના ગાઢ પરીચયમાં આવતાં પહેલાં તેની **મુખમુદ્રા ઉપરથી તેના મુખ્ય ગુણ અવગુણ કહી શકે** છે, તો પછી પરીચયમાં આવ્યા બાદ તે વિષે અભિપ્રાય બેધડક આપી શકાય. શ્રીયુત **દાનવીર શેઠ માણેકચંદજીના** દેખાવમાં કંઈ વિશેષ ચમત્કારીપણું નહોતું. પ્રથમ નજરે આવનારને તે સાધારણ સારી સ્થીતિના, મોટે ભાગે જુના વિચારના, પરંતુ ઠરેલ **ભોળા દીલના, નીખાલસ મનના** અને **વિચારવંત પુરૂષ** લાગતા. જરા વધારે બારીક નજરે જોતાં તેમની મુખમુદ્રામાં સાધુતા અને સદ્ગુણશીલતાના ગુણો માલૂમ પડતા. તેમનો ચ્હેરો

હસમુખો ને ચિકિત્સાવાળો દેખાતો, **આંખમાં અમી દૃષ્ટિ** દેખાતી, અને **કપાળ** સાધારણ ભવ્ય દેખાઈ તે ઉપર **તેજ** નજરે પડતું, એકંદરે મનની વિશુદ્ધતાની નિશાનીઓ વધારે દેખાતી. એમનું શરીર મધ્યમ કદ અને બેવડીઆ કાઠાનું હતું. જન્મથી ખાવાપીવાની અને બીજી ટેવો નિયમપણે જાળવી રાખવાથી આરોગ્યતા સાચવી રહ્યા હતા. નાનપણથી કામ કરવાની ટેવ હોવાથી મોટી ઉમરે અને મરતા સુધી પણ એમની આકૃતિ કે શરીરમાં **આળસાઇનો અંશ સરખો પણ નહોતો.** અને નાનપણમાં **ટાયસીફલ** ઉપરથી પડવાથી **પગે ખોડ** આવેલી, છતાં તેમની કામ કરવાની શક્તિ કે **શારીરિક ચાલાકી ઓછી થઈ નહોતી.** ધર્મ કે પરોપકારના કામ માટે તેમણે ટાઢ, તડકો કે વરસાદ કોઈ પણ બાબતની **દરકાર કરી નથી,** તે શ્રી શિખરજીના મુકદમાની વાત વિષે જાણે છે તેમને માલુમ છે. **રાતના બાર–એક વાગતાં સુધી** ઉજાગરા પડે, તોપણ **સવારના છ વાગે તાજા થઈ કામે લાગતા ને સાથે કામ કરનારને તેમ કરવાની** પ્રેરણા **કરતા** અને કોઇ વખતે પગની ખોડ ટાઢમાં દુઃખી આવતી, તોપણ તેની દરકાર કર્યાવિના કોઇને ઉપકાર કરવો હોય કે કોઇનું ભલું થતું હોય તો તેઓ તૈયાર થતા. આવી રીતે નાનપણથી મોટી ઉમરે પણ કામ કરતા, ત્યારે ઘણાને તાજુબી લાગતી.

पहेरवेश तथा खाधापीधामां सादाई.

ઘણી સાધારણ સ્થીતિમાં જન્મેલા, પરંતુ ઉચ્ચ સંસ્કારોના પાસ લાગેલા હોવાથી તે દરેક બાબતની ઉપયોગીતાના નિયમો (Principles of utility) ઉપર ખાસ કરીને ચાલતા. કપડાં ઘણાં સાદાં પણ સ્વચ્છ પહેરતા. **દેશી** માલ તરફ વધુ લક્ષ રહેતું, છતાં તે પાકા નિયમથી પાળી શકતા નહીં. મુંબાઈ જેવા શહેરમાં ઇંગ્રેજ પારસી વગેરેના પરીચયમાં વ્યાપાર અર્થે આવતા છતાં **ઇંગ્લીશ ડ્રેસ કે જમાનાની ફેશનના પાસમાં ફસાયલા નહોતા,** તોપણ સુધરતા અને જમાના બાહારના ન દેખાય તેવા સાદા ચાલુ ફેશનનાં કપડાં રાખતા, ખાવાપીવાની બાબતમાં **નિર્મળ સાદો ખોરાક** વધુ પસંદ કરતા. બહારગામ જાય ત્યાં ભારે ખોરાક ખાવા તરફ રૂચિ રાખતા નહીં, તેમ બહુ ખર્ચાળ તથા ભારે કિંમત તરફ લક્ષ રાખતા નહીં. શરીર તંદુરસ્ત રહે તેટલા પુરતું લક્ષ આપતા. આ બાબત એક દાખલો આપવો ઠીક પડશે. **સન ૧૯૦૩**ની સાલમાં જ્યારે **અમદાવાદ બોર્ડીંગની સ્થાપના** કરવા આ લેખ લખનાર સાથે ગયા હતા તે વખતે શરૂઆતના મેલાવડામાં ગુજરાતના દરેક ભાગના દિગંબર જૈનોને આમંત્રણ હતું. ગુજરાતમાં આમંત્રણ કરનાર ગૃહસ્થ પરોણાઓને મિષ્ટાન્ન આપી સંતોષે એવો રિવાજ હોય છે છતાં તે વખતે ફક્ત સાદા, નિર્મળ બીનખર્ચાળ ખોરાકથી ચાલશે તથા ભવિષ્યમાં તેજ બોર્ડિંગને લાભપ્રદ થઇ પડશે, એવા ભાવાર્થનો મત આપવાથી હાલ તે રિવાજ બધા પસંદ કરે છે. મિષ્ટાન્ન આપવાનો ખર્ચાળ રિવાજ પડયો હોત, તો વાર્ષિક મેલાવડા કરવા કઠીન થઇ પડત. વળી **દિગંબર જૈન કોન્ફરન્સમાં** પણ તેવાજ નિયમથી ચાલવાથી કોન્ફરન્સ ભરવી એ કામ બીજી કોમોની ખર્ચાળ કોન્ફરન્સો માફક બંધ નહીં પડતાં દરવરસે **ધીમેથી પણ મક્કમ**પણે **આગળ વધે જાય છે (Plain living & high thinking** સાદાઈમાં રહેવું **અને ઉચ્ચ વિચાર કરવા** એ સૂત્ર એમના

પરીચયમાં આવનારને હંમેશ યાદ આવ્યા કરતું અને તે પ્રમાણે અનુકરણ કરવા જીંદગીની દરેક હાજતો ઉપર કાબૂ રાખવા તેમનું જીવન શિક્ષણ આપતું. ખાસ કરીને ઉપયોગીતા વિના સૌન્દર્યતાને પ્રથમ સ્થાન આપવું અથવા તે માટે ભારે ખરચ કરવો એ વાત એમના નીખાલસ મગજમાં કદી પ્રવેશ કરતી નહીં. પોતે બાહારગામ જાય, ત્યાં પણ જરૂર પુરતી વસ્તુઓ પાસે રાખતા. ઘણી વખત કહેતા કે **જીંદગીની હાજતોને એક વખત કાબૂમાં ન રાખીને ચાલુ ખરચ વધારી દેવાય તો પછી તે ખરચ કમી થઈ શકતો નથી,** એ ખાસ અનુભવની વાત છે, માટે નાના બાળકોના અને ખાસ કરીને બોરડીંગના વિદ્યાર્થીઓના મગજ ઉપર એવાજ સંસ્કાર પાડવા જોઇએ કે તેઓ કોઈ પણ સ્થીતિમાં આનંદી જીંદગી ગુજારી શકે. (અપૂર્ણ)



शारिरिक शक्तिका सदुपयोग

[पं. पीतांबरदास उपदेशक दि. जैन प्रां. सभा-बंबई]

सर्वोत्कृष्ट शक्तियोंके धारक भ्रातृगणों ! आपको यह जानना परमावश्यक है कि पदार्थ मात्रके आश्रय कौनसी शक्तियां विद्यमान रहा करती हैं ? जहांतक हम अपनी विचारस्वरूप द्रष्टि उन पदार्थोंकी शक्तियों के उपर डालते हैं, तो यही प्रतीत होता है, कि उन पदार्थोंकी शक्तियां मुख्य करके दो प्रकार की हैं-एक तो चेतना और दूसरी अचेतना। इन मुख्य शक्तियोंके कारण वे पदार्थ गुण-गुणीकी अभिन्नतासे संसारमें इस नामसे पुकारे जाते हैं। एक जीव जो कि चेतना गुणमय शक्तिसे सम्पन्न हैं दूसरे अजीव जो कि अचेतना गुणमय शक्ति एवम् अज्ञानतासे अभिन्न हैं। अब इन दो पदार्थोंकी शक्तियों पर क्रमसे ध्यान दिया जाता है तो हमारे क्रमवर्ती ज्ञानमें यही प्रतीत होता है कि इन पदार्थोंकी शक्तियां अनन्त गुणात्मक धर्मोंसे सम्पन्न हैं एवम् इन अनन्त गुणमय धर्मोंकी शोध लगानेवाली शक्तियां तीन प्रकारकी हैं-

(१)-मनशक्ति (विचार),
(२)-वचनशक्ति (वाक्य बोलना)
(३)-कायशक्ति (ताकत)

ये तीनों शक्तियां चेतना गुण सम्पन्न जीव नामके पदार्थ (वस्तु) के आश्रय हैं और क्रमसे वे शक्तियां द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावके निमित्तानुसार व्यक्त (प्रकाश) होती है। इन तीनों शक्तियोंका सम्पूर्ण श्रेय (हिस्सा) जो कि अनन्त पदार्थोंके अनन्तानन्त शक्तियोंको व्यक्त करनेवाला है, मनुष्य मात्रके ही हिस्सेमें आया है। हम आज उच्च श्रेणिके मनुष्य कहलाते हैं। हम ही उपर्युक्त तीन शक्तियोंके धारक हैं, इसलिये हम अपनी तीन शक्तियोंके द्वारा अपने सुखस्वरूप आर्थिक् (लौकिक) तथा पारमार्थिक (पारलौकिक) अनन्त शक्तिधारक पदार्थोंके निमित्तसे अपने सुखको व्यक्त करके दिखावें। परंतु यह कर्तव्य हम तब ही कर सकते हैं जब कि हमारी तीनों शक्तियां प्रबल हो और उन शक्तियोंकी प्रबलता (बलिष्ट) के कारण हम सच्चे मनुष्य कहलाए जावें।

अब बलिष्ट (काय) शक्ति पर ध्यान दिया जाता है और विचार किया जाता है कि इन शक्तियोंके अप्रबल होनेका यथार्थ कारण क्या है। मूल शक्ति यह है जिसके आश्रय क्रमसे

मन व वचनशक्ति रहा करती है जिसके निर्बल होनेसे मन व वचनशक्ति हमेशा हीनाहीन रहती है। जैसे पात्र जर्जर होनेके कारण उसमें रक्खा हुवा मिष्ट रसमय व्यंजन नष्ट हो जाता है। ठीक, इसीप्रकार निर्बल कायशक्ति (शारीरिक बल) में रक्खा हुआ मन व वचन शक्तिरूप व्यंजन कार्यकारी नहीं होता, इसलिये **सम्पूर्ण सुखके श्रेय रखनेवाले मनुष्योंका कर्तव्य है कि अपनी२ कायशक्तिको सुदृढ बनावें।**

अब यहां पर यह जानना परमावश्यक होगा कि स्वयं शक्तिवान कायशक्ति किस कारण निर्बल हो रही है तो उसके उत्तरमें यही उपचार कारण (निमित्त) प्रतीत होता है कि उस कायशक्तिके उत्तरोत्तर जन्मदाता (पितावर्ग) कुछ कालसे हिताहितके ज्ञानसे शायद रहितहीसे होरहे हैं और इसीसे वे अपनी कायशक्तिको सदुपयोगके रूपमें व्यक्त नहीं कर सक्ते. (काम पुरुपार्थको सेवन करना नहीं जानते)

यदि भारतके सुशिक्षित पितावर्ग वर्तमान समयमें अपनी सुशिक्षाका ध्यान रखते हुये अन्य सहयोगी पितावर्गोको योग्य पितावर्ग बनाना चाहते हैं, तो पकी हुई (व्यक्त) **वीर्यमय कायशक्तिको** सदुपयोगके रूपमें व्यक्त करने व करानेका प्रयत्न करें, जिससे कि पितावर्गोंकी काय शक्ति व उसके आश्रय रहनेवाली सर्व शक्तियां सुदृढ होती हुई सुदृढ कायशक्तिवाली सन्तानको पैदा करें, **सांसारिक सुखोंमें सन्तानकी उत्पत्ति ही अन्तमें सुखकी सफलताका कारण समझीजाती है** इसलिये सबसे पहिले उत्तरोत्तर पितागणोंका परम कर्तव्य यही है कि अपने ही समान अपने चिरंजीवों (पुत्रों) को सुशिक्षित और सुरक्षित **कायशक्तिमय भोजनसे** उन्हें पालन करें—वर्तमान भारतमें जो दुखडा दिन प्रतिदिन अधिकतासे रोया जाता है उस दुखडे रोनेका यथार्थ कारण एक मात्र यही है कि उनकी कायशक्ति सुदृढ (मजबूत) एवं साहसयुक्त नहीं है, इसीसे वे अपनी मनशक्तिके विचारोंको उच्चश्रेणी पर नहीं पहुँचा सकते।

और जब **मनशक्तिके** विचार ही शिथिलताको धारण कर रहे हैं, तो उसके आश्रय रहनेवाली **वचनशक्ति** मुख्य करके कितने अधिक उपयोगी विचारोंको स्पष्ट कर उभय जन्मोंका कल्याण कर सकती है, तो हमारे अनुभवी पाठक, ऐसे मनहीनोंका अनुभव स्वयं ही कर सकते हैं। **सर्व शक्तिके सदुपयोगियों!** शारीरिक शक्तिके प्राणभूत वीर्यपर ध्यान दो और उसका उपयोग विपयासक्त एवं अज्ञानतासे (जररूप नशा) कभी मत करो। स्पर्शेन्द्रियका विषस्वरूप विपय (वीर्यनिपातकी इन्द्री) ही तुम्हारी कायशक्तिको निर्बल कर रहा है जिसके प्रतापसे तुम ऐसे गयेबीते हो गए हो कि उभय (दोनों) लोकोंका अपना कुछ भी श्रेय उपार्जन नहीं कर सकते *तथा तुम्हारा जीवन ऐसा निरर्थक हो गया है* कि जैसे बकरीके गलेमें स्तन होते हुए कुछ भी अर्थकारी नहीं होते। विचारशील व्यक्तियोंकी आज वह दशा तुम जैसे शक्तिहीन सन्तानोंको देखकर ही हो रही है कि जिसतरह मयूर (मोर) वनमें अति सुन्दर नृत्य करते हुए भी अपने नृत्यकारक पगों (पैरों) पर द्रष्टिमय ध्यान देता है तो उसे उसीसमय अपने (बुरे बेढंगे) पगोंके कारण अपनी सुन्दरता पर रोना आता है। ठीक, इसी प्रकारसे आज भारतके विचारशील व्यक्ति इसभांति

रो रहे हैं कि भविष्य कालमें यह शक्तिहीन सन्तान क्या कठपुतलेसे भी अधिक अचेत काम करके दिखलावेगी ?

इतना रोना रोनेके पश्चात् आज वे विचारशील व्यक्ति फिर भी अपने श्रेय पर स्थिर होते हुए इस नितिका अवलम्बन करते हैं–

धिक् सुमेरु तुव कनकमय,; तो परिवार पाषाण; धन सुवास मलयागिरि, कीनो आप समान।

प्रिय शक्तिसदुपयोगियों ! तुम्हारा कर्तव्य वही हैं कि चाहे भारतीय सन्तान कितनी ही न्यून अशक्तियुक्त क्यों न हो जावे और तुम्हे कोई कितनी ही निरादरकी द्रष्टिसे क्यों न देखे, परंतु तुम्हें तो मलयागिरि (चंदन) नीति का मार्ग ही श्रेष्ठ है, एवं स्वयं शक्तिशालितासे सबको शक्तिशाली बनाना ही तुम्हारा काम है। आज विदेशी सन्तानें भारतमें आकर जो शक्तिका सदुपयोग कर रही हैं तो कितने उन्नतिके मार्ग पर चढ़ी हुई हैं जिन्होंकी उपयोगिता देखकर यही कहना पडता है कि भारतीय संतान क्या बिलकुल ही अशक्तियुक्त है ? नहीं, कदापि नहीं, किन्तु भारतीय सन्तान एक दूसरेकी देखादेखी (नकल) करते हुए ऐसआरामकी निंदसे सो रही है। इस नींदमय तिमिरके कारण उसे यह भी नहीं सूझता कि हमारी सारी शक्तियां शारीरिक विकारके भ्रमजनित उपचारमें ही वीर्यनिपातकी तरह नष्टभ्रष्ट हो रही हैं और यह ऐशआराम ही हमको शक्तिहीन बनार कर अशक्तियुक्त अज्ञानमय कर रहा है, इसलिये शक्तिसदुपयोगियोंका पहिला कर्तव्य यही होगा कि सबसे पहिले अपनी शारीरिक विकारके भ्रमजनित उपचारकी नींद् छोडनेका प्रयत्न करें। प्रिय शक्तिको व्यक्त करनेवालों ! तुम्हारी कायशक्ति (शारीरिक बल) में पांच इन्द्रियां (स्पर्श, रसना घ्राण चक्षू श्रोत्र) निवास कर रही हैं जो कि अपने२ विषस्वरूप ऐसे विषयमय रोगसे हमेशा पीडित रहती हैं, जिस पीड़ामय रोगका उपचार (औषधि) करना ही स्वतंत्रतासे तुम्हारा काम है न कि उनके रोग उपचारोंमें आनंद मान कर शक्तिहीन बनाना जिससे कि आज तुम भारत जैसे शक्तिशाली देशमें निवासकर इतने हीनशक्ति हो रहे हो कि–– किसी भी इन्द्री विषयका उपचार, जो तुम्हारे देश तथा जाति एवं तुम्हारी सन्तानकेलिये स्वतंत्र शक्तिपूर्वक उपार्जन कर कामयावी हो सकते और जो उपचार तुम शक्ति वृद्धि करनेकी गरजसे करते हो वही उपचार विपर्यय वृत्ति धारण कर तुम और तुम्हारी सन्तानके लिये शक्तिहीन बनानेका कारण होता है।

अब हम अपने शीर्षककी शक्ति पर ध्यान देते हुए उसके दुरुपयोग तथा सदुपयोग पर ध्यान देते हैं और क्रमसे यह भी दिखाते हैं कि तुम और तुम्हारी सन्तान इस उपचारसे शक्तिहीन बन रही है––

स्पर्शस्वरूप कामशक्तिके उपचार (ब्रह्मचर्य) कर सन्तानके सारे शरीरको ऐसा कट्टर बनाना जो कठिनसे कठिन कार्यमें विद्वता (चातूर्यता) के साथ प्रवेश कर सके तथा जिससे हरतरहके कलाकौशल्य आदि लौकिक उन्नतिके साधक कारणों पर अटलवृत्ति उसकी निसन्देह स्थिर रहे, इसीप्रकार पारमार्थिक उन्नति की सुविधासे उसका शरीर ऐसा कट्टर (दृढ़) बनाना जो कि अटल वृत्तिसे ध्यान और तप करनेमें साहसयुक्त हो सके, इससे विपर्यय कायशक्ति (स्पर्शेन्द्री)

काउपचार आज यह हो रहा है कि १०-१२ वर्षके कायशक्तिवाले ऐसे शरीरनामधारी बालक अपनी२ जातिके पितागणोंके स्वयं हाथसे ही कामरूपी अग्नि (ब्याह) में प्रवेश किये जाते हैं जिससे उनकी शारीरिक, मानसिक, और वाचनिक, तीनों प्रकारकी शक्तियां भस्म हो जाती हैं और वे फिर थोथे मनुष्य अपनी अवस्थामें कहलाए जाते हैं अर्थात् शक्ति हीनतासे सन्तानहीन होकर अपने शरीरको नाना प्रकारके रोगोंकी प्रभृतियोंसे पीड़ित देखते हैं। पूर्वजोंकी शक्तियोंद्वारा उपार्जन किये हुये आर्थिक धनका जो नाश होता है सो हमारे अनुभवी पाठक स्वयं जानते हैं। मूल कायशक्तिका दुरुपयोग होनेका कारण कच्चे वीर्यका निपात ही है। जिधर दृष्टि दो उधर ही तीनों शक्तियोंका कारोवार दिखाई देता है। इसलिये इन तीनों शक्तियोंका सदुपयोग करना ही उन्नतिका मूल साधन है। प्राचीन महार्षियोंने इन तीन शक्तियोंके बलसे ही मंत्र, तंत्र, यंत्र और सबके सारभूत ऐसे मोक्षमार्गको उपार्जन किया है इसलिये प्यारे शक्तिशाली वीरो ! अपनी शारीरिक शक्तिको कामव्याधिके भ्रमजनित आनंदमें दुरुपयोग मत करो किन्तु उत्तमोत्तम सन्तान पैदा करने और लौकिक पारलौकिक श्रेय उपार्जन करनेके अर्थ सब शक्तिकी मूलभूत ऐसी शारीरिक शक्तिका सदुपयोग करो।

लार्ड हार्डिंज महोदयसे प्रार्थना।

सार्थ लाग इस ब्रिटिश राज्यका,
पृथ्वीमें है छाय रहा।
युद्ध न्यायका कारण है जो,
इनको उच्च बनाय रहा॥
प्रजा सुखी इस ब्रिटिश राज्यमें,
पहिलेसे अति दिखती है।
कहीं जरा अन्याय हुआ तो,
धारा बांह पकड़ती है॥ १॥
शासक भी झट न्याय शस्त्र ले,
रण बाजे बजवाते हैं।
बैरीको झट उचित दंड दे,
यमपुरको भिजवाते हैं॥
न्याय परायण शासक पाकर,
क्यों न हमारा गर्व बढ़े ?
पूर्ण चन्द्रमा पाकर वारिध,
पूनमको वह स्वयं चढ़े॥ २॥
इस कारण अर्जुनके खातिर,
प्रजा न्याय चिल्लाती है।
पत्नी पुत्र पुत्रियां उनकी,
पड़ी २ बिलखाती हैं॥
स्वामी ! सारे भारतवासी,
हार्दिक दुःख दर्शाते हैं।
अपने २ मनोभावको,
लेखोंसे झलकाते हैं॥ ३॥
जैपुरकी करतुती पर वे,
हार्दिक दुःख दर्शाते हैं।
न्याय हमारा होवेगा सब,
यही भावना भाते हैं॥
बज बजके दंगे को श्रीमन् !
कितने शीघ्र मिटाया था।
मसजिदके उस गिरे भागको,
श्रीमन्‌ने बनवाया था॥ ४॥
लेकिन स्वामी ! जैन जातिका,
सेवक सच्चा जहल पड़ा।
जैन जातिके ऊपर द्वादश
महिनेसे यह वज्र पड़ा॥
सेठीजी अपराधी हों तो,
दंड आप उनको दीजे।
वरना हुक्म राज्यको देकर
शीघ्र मुक्त कर यश लीजे॥५॥

दुलीचंद सिंघई-बम्बई।

डंकेकी चोटपर—आखिरी रियायत—ध्यान दीजिये।

इश्वरने दुनिया नहीं बनाई।



इस विषयकी अद्वितीय नवीन पुस्तक आश्चर्यजनक सुबूतों, दलीलों और पवित्र विचारोंका संग्रह जैनमतका बहुत मजबुत सिद्धांत कि ' इस दुनियांको किसी ईश्वरने नहीं बनाया और न मेट ही सकता है ' अगर देखनेकी इच्छा हो तो "ज्ञानसूर्योदय" नामक पुस्तक सिर्फ ०॥)में हमसे मंगाकर अवश्य देखो। थोड़े ही कालमें यह पुस्तक ऐसी प्रसिद्ध होगई है कि जैन अजैन सभी इसकी प्रशंसा कर रहे हैं। थोड़ी ही रह गई हैं जल्द मंगाकर देखिये।

२. गुल्शन जांफिजां हिन्दीः—एक अपूर्व हंसाने-दिल बहलानेवाला उपन्यास, पृष्ठ १६४ और मूल्य ०॥)

रियायत देखियेः—जो साहब ज्ञानसूर्योदय या गुलशने जांफिजां हमसे मंगावेंगे उनको १ पुस्तक ५२ पृष्ठोंकी जिसमें अन्यमतावलंबियोंकी पोल हास्यरूपमें खोली गई हैं मुफ्त उपहारमें दी जावेगी।

रियायत पर रियायतः—और जो भाई उपर लिखी पुस्तकें एकही दफे २९ लेंगे उनको अलावा उपहारकी २९ पुस्तकोंके डाकखर्च भी हमही देंगे।

पताः—मैनेजर, विद्याविनोद बुकडिपो—कायमगंज (फर्रुखाबाद)

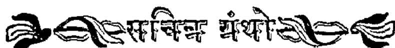
॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

पांचमी गुजराती साहित्य परिषद्ना प्रदर्शनमां

दिगंबर जैनोनुं प्राचीन साहित्य.

સોનાના અક્ષરે લખેલો તથા સોનાના અને રંગબેરંગી ચિત્રોવાળો તેમજ પાનેપાને રેશમની પ્રાચીન કારીગીરીના ટુકડાઓ મુકેલા તથા કસબટીકી અને મોતી-માણેકથી મઢેલા પુંઠાવાળો પ્રાચીન સુશોભિત ગ્રંથ.

અત્રે **પાંચમી સાહિત્ય પરિષદ્** પ્રસંગે ભરાયલા પ્રાચીન સાહિત્યના **પ્રદર્શનમાં** અનેક સ્થળેથી સંગ્રહ કરીને તથા તેને યોગ્ય વ્યવસ્થાપૂર્વક તૈયાર કરીને અમારા તરફથી ગ્રંથો, ચિત્રો, નકશાઓ, બંધનો, પુંઠાઓ, પાટીઆંઓ વગેરે મળી ૧૫૫ પ્રાચીન વસ્તુઓ રજુ કરવામાં આવી છે, જેની સંક્ષિપ્ત માહીતિ નીચે મુજબ છે—



(१) यशोधर चरित्र (સંસ્કૃત. સોનાના અક્ષરે સં. ૧૫૫૧નો લખેલો સોનાના ચિત્રયુક્ત)

આ પ્રાચીન ગ્રંથ એટલી બધી ઉત્તમ કારીગીરીવાળો છે કે જેનું વર્ણન થવું અશક્ય છે, છતાં ટુંકમાં જણાવીએ છીએ કે મૂળ દેશી કાગળનો સ્વભાવ પતલો અને પીળાસ પડતો મેલો હોવા છતાં તે ઉપર બન્ને તરફ ચારે બાજુએ હાંસીયો છોડી કાળા, લાલ, ભુરા, સફેદ, કીરમજી, જામલી વગેરે રંગોની જમીન બનાવીને તે ઉપર સોનાના અક્ષરો લખેલા છે તથા હાંસીયામાં પણ રંગબેરંગી ભોંય બનાવી તે ઉપર રંગીન તથા સોનેરી ચિત્રો છે તેમજ આ ૬૦ પૃષ્ઠના ગ્રંથમાં સોનાના તથા રંગબેરંગી અતીવ ઉત્તમ બારીક કારીગરીના ગ્રંથની વાર્તાના ભાવના ૨૫ મોટાં ચિત્રો છે. એ ઉપરાંત સોનાના અક્ષરો તથા ચિત્રો જરા પણ બગડવા ન પામે, તે માટે દરેક **પાને** દેશી કારીગીરીના **હાથવણાટના અનેક** જાતના **રેશમના** કકડાઓ મુકેલા છે. જે ઘણાં વર્ષો થવાથી સડી જતા આવેલા છે. વળી આ ગ્રંથનાં પાનાં વાંચવા માટે એક પુંઠું છે, જે રેશમી કાળા કકડા ઉપર **સોનેરી** કસબટીકીનું કામ બનાવી તે ઉપર સાચા **મોતીના ૩ સાથીયા અને ૨૭ ફુલો** બનાવી ચારે બાજુએ સાચા મોતીનીજ બોર્ડર કરેલી છે. તેમજ સાથીઆંઓ તથા ફુલોમાં **માણેકની** કકડીઓ જડેલી છે તેમ કેટલાંક ખાલી છિદ્રો છે, તેમાં **નીલમ-હીરા** હશે તે ઉખડી ગએલા જણાય છે. આવો આ ગ્રંથ તથા પુંઠું ૪૨૦ વર્ષ ઉપરના બનેલા છે, તે એની નીચેની પ્રશસ્તિથી સ્પષ્ટ જણાય છે.—

मंगलाचरणं ।

प्रणम्य शंकरं देवं सर्वज्ञं जितमन्मथं । जिनेंद्रं सर्वदोषघ्नं मोहतंद्राविवर्जितं ॥ १ ॥ अर्हतः परया भक्त्या सिद्धान्सूरीश्वरांस्तथा । पाठकान्साधवश्चेति नत्वा परमया मुदा ॥२॥ यशोधरनरेंद्रस्य जनन्या सहितस्य हि । पवित्रं चरितं वक्ष्ये समासेन यथागमं ॥३॥ कुलकं । जिनेंद्रवदनोद्भूतां नमामि शारदां परां । श्रीगुरूंश्च प्रमोदेन श्रेयसे प्रणमाम्यहं ॥४॥ यत्प्रोक्तं हरिषेणाद्यैः पुष्पदंतपुरस्सरैः । श्रीमद्वासवसेनाद्यैः शास्त्रस्यार्णवपारगैः ॥५॥ तच्चारित्रं मया नूनं बालेन शक्यते कथं । बाहुभ्यां सागरं घोरं केनापि तरितुं यथा ॥६॥ तेषां हि क्रमयोर्द्वंद्वं नमस्कृत्याति भक्तितः । समुपार्ज्य महत्पुण्यं कुर्वे दूरेण पातकं ॥७॥ कथ्यमानं तु संक्षेपात्संसारदुःखनाशनं । शृण्वतां कथकानां हि श्रोतव्यं साधुभिस्ततः ॥८॥

અર્થ—સુખને આપવાવાળા, કામદેવને જીતવાવાળા, સર્વે દોષોનો નાશ કરવાવાળા, મોહનીયકર્મરૂપી નિદ્રાથી રહિત એવા સર્વજ્ઞ જિનેંદ્રદેવને નમસ્કાર કરીને તથા અરિહંત, સિદ્ધ, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય અને સર્વસાધુને ઘણાજ ઉલ્લાસથી નમસ્કાર કરીને માતાસહિત યશોધર મહારાજનું પવિત્ર ચરિત્ર પૂર્વાગમપ્રમાણે સંક્ષેપથી કહીશ. ૧-૨-૩. પરંતુ એના પહેલાં જિનેંદ્રભગવાનને મોઢેથી ઉત્પન્ન થયેલી સર્વોત્કૃષ્ટ શારદાને તથા પ્રસન્નતાપૂર્વક મંગલકાર્યને માટે મારા દીક્ષાગુરૂને નમસ્કાર કરૂં છું. ૪. જે યશોધરમહારાજના ચરિત્રને પુષ્પદંત હરિષેણ વગેરે તથા શ્રીમદ્વાસવસેનાદિ શાસ્ત્રસમુદ્રના જાણનારા આચાર્યોએ કહ્યું છે તે ચરિત્ર મારા જેવા બાળકબુદ્ધિથી કેમ કહી શકાશે કેમકે અથાગ ભયાનક સમુદ્રહાથે તરી શકાતો નથી. ૫-૬. તોપણ ઉક્ત આચાર્યમહારાજના ચરણોને અતિશય ભક્તિથી નમસ્કાર કરીને પાપોને દૂર કરી દીધા છે અને મહાન પુણ્યને ઉપાર્જન કર્યું છે તેથી આ ચરિત્ર કહેવાને માટે હું તૈયાર થયો છું. ૭. આ ચરિત્ર સંક્ષેપથી કહેલું હોવા છતાં પણ શ્રોતાવક્તાઓના સંસારના દુઃખોને નષ્ટ કરવાવાળું છે, જેથી સજ્જન પુરૂષોએ અવશ્ય સાંભળવું જોઇએ. ૮.

अंतःप्रशस्तिः ।

नंदीतटाख्यगच्छे वंशे श्रीरामसेनदेवस्य । जाता गुणार्णवैकः श्रीमांश्च श्रीभीमसेनेति ॥५८॥ निर्मितं तस्य शिष्येण श्रीयशोधरसंज्ञिकं । श्रीसोमकीर्तिमुनिना विशोध्याधीयतां बुधाः ॥ ५९ ॥ वर्षे षट्त्रिंशसंख्ये तिथिपरिगणनायुक्तसंवत्सरेवै । (१५३६) । पंचम्यां पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोत्तरास्थे हि चंद्रे । गौढिल्यां मेदपाटे जिनवरभवने शीतलेंद्रस्य रम्ये । सोमादिकीर्तिनेदं नृपवरचरितं निर्मितं शुद्धभक्त्या ॥६०॥ ग्रंथाग्रं तु सहस्रैकमष्टादशसमन्वितं । चरित्रेदं चिरं जीयात् पवित्रं पापनाशनं ॥६१॥ इति श्रीयशोधरचरित्रे श्रीसोमकीर्त्याचार्यविरचिते अभयरुचिभट्टारकस्वर्गगमनो नाम अष्टमः सर्गः ॥ ग्रंथाग्रं ॥१०१८॥

અંતની પ્રશસ્તિનો અર્થ.

નંદીતટ ગચ્છ નામે આચાર્યના વંશમાં ગુણોના સમુદ્ર શ્રી **રામસેન** થયા. તેની પછી શ્રી **ભીમસેનાચાર્ય** થયા. તેમના શિષ્ય સોમકીર્તિમુનિએ યશોધરમહારાજનું આ પવિત્ર

ચરિત્ર સં. ૧૫૨૬ પોષ વદ પાંચમ રવીવારે ગોઢિલી મેદપાટના શીતલનાથ ભગવાનનાં મનોહર મંદિરમાં બેસીને બનાવ્યું છે, તેમાં ભૂલચુક હોય તો વિદ્વાન પુરૂષો તે સંશોધનપૂર્વક વાંચે. ૫૮-૫૯-૬૦.

આ પ્રમાણે શ્રી સોમકિર્તિ આચાર્યકૃત યશોધર ચરિત્રમાં અભયરૂચિ ભટ્ટારકના સ્વર્ગગમન નામનો આઠમો સર્ગ સમાપ્ત થયો. શ્લોક સંખ્યા ૧૦૧૮.

लेखनसमयस्य प्रशस्तिः ।

स्वस्तिश्री संवत्सरे सत्तिथिसंज्ञके वै। वर्षे शुभेऽन्हैकपंचयुक्ते॥१५५१॥लिखापितं मार्गशुदेश्च तस्यां त्रयोदशी या बुधवारयुक्ता॥१॥नंदितटाख्ये विमले सुगच्छे श्रीरामसेनो गुणवारिराशिः बभूव तस्यान्वयशोभकारी श्री रत्नकीर्तिर्दुरितापहारी ॥२॥श्रीलक्ष्मसेनोऽत्र ततो बभूव शीलालयः सर्वगुणोरुपेतः। तस्यैव पट्टोद्दरणैकधारिः श्रीधर्मसेनः प्र[illegible]णः प्रवीणः ॥ ३ ॥ श्रीलक्ष्मसेनस्य सुशिष्य रम्यः श्रीभीमसेनः प्रथितः पृथिव्यां । कामारिविध्वंसकपापमर्द्दी । स एव सेव्यो [illegible] किमन्यैः ॥४॥ तयोः पट्टविभूषणौ सकल श्रीसंघरिपक्षज्ञ्वसन्मानौ [illegible] गच्छगुरुभट्टारक श्री ६ सोमकीर्ति भट्टारक श्रीविमलसेनौ विजयेते [illegible] सत्पापर्यंति ते नित्यं जयंतु श्रावकोत्तमः ॥ श्री हुतंबट ज्ञातीय पंखीस्वरगोत्रे सुश्रावक सदाचारसमाचार प्रभावकः सद्गुणपवित्रः शुद्धपदवी सच्चरित्रः शिष्टजनपंक्तिधुरीणः परमेश्वरप्रणीतदानमार्गप्रवीणः कोटडीया प्रतापसिंहः समजायत। तस्य च पत्नी शुद्धशीला श्राविका पूरी नाम्नी। तत् कुक्षि प्रसुतौ–द्वौ पुत्रौ । तयोः ज्येष्ठः सं० राणाख्यो विजयते । द्वितीयः कनी[illegible] सं० राउल नामा विजयते । तस्य पत्नी श्राविका मांजी तत्कुक्षि प्रसूताः चत्वारः पुत्रास्तेषु ज्येष्ठोभिनववेणुवच्छकः वेणाख्यो जातः । ततः कनीयान् चापाख्यो जातः ॥ ततश्च कनीयान् सिंघाह्वयः सद्गुण महोजातः। ततश्च लघुरभिनवसिंह इव सीहाख्यो विजयते। तथा द्वेपुत्र्यौ तत्रैका वहिनू नाम्नी द्वितीया गृहीतसंयमा आर्यका ज्ञानश्री नाम्नी विजयतः। कोटडीया वेणासुश्रावकपत्न्याः सुश्राविका चंगाई जनन्याश्च शीलालंकारधारिण्या । सकलदुरितनिवारिण्या श्रीजिनवरेंद्रशासन प्रभाविकया चानरि सुश्राविकया श्रीमत् श्रीयशोधरचरित्रं सुवर्णाक्षरैर्लेखितं । श्रीनंदीतटगच्छा धिराजभट्टारक श्रीमत् श्री ५ विमलसेनगुरुणामुपकारितं तच्छिष्य श्रीविशालकीर्ति पंडिताचार्ययशःपालमुख्यमतिभिः प्रतिवत्सरमुदितोदिते महोत्सवपुरस्सरं चतुर्विधश्री संघसाक्षिकं वाच्यमानं चिरंजेजयीतु । शुभं भवतु मंगलमस्तु । औदीच्यज्ञातीया जो. बहुआ लिखितं । शीरस्तु ।

ગ્રંથ લે[illegible] પ્રશસ્તિનો અર્થ

આ ગ્રંથ વિક્રમ સંવત્ ૧૫[illegible] સુદ ૧૩ને બુધવારે લખાઇ પૂર્ણ થયો. નંદીતટ નામના નિર્મળગચ્છમાં ગુણોના [illegible] રામસેન થયા તેમની પાટ પાપોનો નાશ કરવાવાળા રત્નકીર્તિ થયા. તેમના શિષ્ય [illegible] અને સદ્ગુણી લક્ષ્મણ[illegible] થયા તેમની પાટ ઉદ્ધાર કરવામાં ધુરંધર પંડિત શ્રી ધર્મસેન થયા. તેમના શિષ્ય લક્ષ્[illegible], તેમના સુશિષ્ય કામશત્રુનો નાશ કરવાવાળા અને પાપોનું મર્દન કરવાવાળા શ્રી ભીમસેન પૃથ્વિમાં

પ્રસિદ્ધ થયા. એવાજ ગુરૂ સેવન કરવાયોગ્ય છે અને બીજા નહિ. આ બન્નેના પટ્ટને સુશોભિત કરવાવાળા તથા સંઘની સભાઓમાં સન્માન પામવાવાળા નદીતટ ગચ્છના ગુરૂ શ્રીશ્રીશ્રીશ્રીશ્રી **સોમકીર્તિ** અને ભટ્ટારક **વિમળકીર્તિ** થયા.

શ્રી હુતંબટ (હુમ્મડ) જ્ઞાતિના પંખીશ્વર ગોત્રમાં સુશ્રાવક સદાચારે સમાચારની પ્રભાવના કરવાવાળા, સદ્ગુણોથી પવિત્ર, શુદ્ધ પદ્દિધારક, સદાચારી, સાધુ પુરૂષોમાં અગ્રગણ્ય, ભગવદ્પ્રણિત દાનમાર્ગમાં પ્રવિણ કોટડીઆ **પ્રતાપસિંહ** નામના શેઠ થયા, જેમની પત્નિ શુદ્ધ શીલવતી **પૂરી** નામની થઇ, તેમની કૂખે બે પુત્ર થયા, જેમાં મોટાનું નામ સંઘહી (!) **રાણા** અને નાનાનું નામ સંઘહી (!) **રાઉલ** હતું. રાઉલની સ્ત્રી માંજીના ઉદરે ચાર પુત્ર થયા, તેમાં સૌથી મોટાનું નામ અભિનવવેણુવચ્છક પદ્દિના ધારક **વેણા** હતું, તેથી નાનાનું નામ **વાધા**. તેથી નાનાનું નામ **સીંધા** અને સૌથી નાનાનું નામ અભિનવસિંહના જેવું **સીહા** હતું. તેમને બે બ્હેનો થઇ. મોટીનું નામ **બહિનું** અને નાનીનું નામ સંયમ લીધેલી એવી આર્જીકા **જ્ઞાનશ્રી** હતું. સૌથી મોટા ભાઇ કોટડીઆ વેણાની સ્ત્રી શ્રાવિકા **ચંગાઈ** માતાની પુત્રી શુદ્ધ શીયળવતી, સમસ્ત પાપોનો નાશ કરનારી, અને જીનશાસનના પ્રભાવને વધારવાવાળી સુશ્રાવિકા **વાનરીબાઇએ** (એના સુવર્ણ જિન) **આ સચિત્ર યશોધરચરિત્ર સોનાના અક્ષરે લખાવીને** શ્રી શ્રી શ્રી શ્રી શ્રી વિમળસેન ગુરૂના શિષ્ય શ્રી વિશાલકીર્તિ પંડીતાચાર્ય વિગેરે મુનિયો દ્વારા, દરેક વર્ષે ઉત્તમોત્તમ ઉત્સવો સહિત ચતુર્વિધ સંઘની સમક્ષ વંચાતું રહીને ચીરકાળ સુધી જયવંત રહે. લેખક ઔદિચ્ય જ્ઞાતિ વડુઆ **જોષી**

ઉપર મુજબ શ્રી **સોમકીર્તિ** આચાર્યકૃત આ ગ્રંથ સં. ૧૫૩૬માં રચાઇ ૧૫૫૨માં ગોઢિલ્યા પેદપાટ નગરમાં લખાયલો છે, અને તેને હુતંબટ (હુંમડ) જ્ઞાતિ પંખીસ્વર ગોત્રી કોટડીયા પ્રતાપસિંહના વંશમાં **વાનરી** નામે સુશ્રાવિકાએ **વડુઆ** નામે લેખક પાસે સુવર્ણાક્ષરે લખાવેલો છે અને તે અમોને **કરમસદ** (આણંદ)ના શાસ્ત્રભંડારમાંથી પ્રાપ્ત થઇ શક્યો છે.

(૨) તત્ત્વાર્થસૂત્રજી સચિત્ર:—આ ગ્રંથ **સં. ૧૫૨૬માં** સોનાના અક્ષરે લખાયલો હોઇ એમાં ચોવીસ તીર્થંકર અને ક્ષેત્રપાળનું સંયુકત ચિત્ર તથા શ્રાવકોને ઉપદેશ આપતા નિર્ગ્રંથ મુનિનું, એવા **બે સોનેરી ચિત્રવાળો** આ ગ્રંથ છે, જેમાં દરેક પાને રેશમના ટુકડા ન હોવાથી સોનાના અક્ષરો જરા ઝાંખા પડેલા છે. આ ગ્રંથ સાથે પણ સોનેરી કસબનું ભરેલું રેશમી પુઠું છે અને એ **સુરત**ના ગુજરાતીના દહેરામાંથી શા૦ અમેચંદ પાનાચંદ દ્વારા પ્રાપ્ત થયો છે.

(૩) જિનસહસ્રનામ સ્તોત્ર:—આ વાગટીય ભગવત્ જિનસેનાચાર્યકૃત સહસ્રનામ સ્તવન ૨૨ પૃષ્ઠોમાં સફેત અને ભુરા કાગળ ઉપર **સોનાના અક્ષરોએ સં. ૧૭૨૬માં** લખેલો છે, જેમાં પણ દરેક પાને હાથવણાટના રેશમી ટુકડા છે અને **કરમસદ**ના શાસ્ત્રભંડારમાંથી પ્રાપ્ત થયેલો છે.

(૪) ભકતામર-કથા સચિત્ર—આ ગ્રંથ પ્રાચીન ગુજરાતી ભાષાનો હોઇ એમાં ભકતામરસ્તોત્રની ૩૩ કથાઓ પૈકી ૩૧ કથાનો ૧૦૮ પૃષ્ઠનો અપૂર્ણ ગ્રંથ છે, જેમાં કથાના ભાવના આશરે **૧૫૦ રંગીન ચિત્રો** છે. ભાષા ઘણીજ જુની ગુજરાતી માલુમ પડે છે અને ઘણોજ જીર્ણ થયેલો છે. અપૂર્ણ હોવાથી કર્તાનું નામ તથા સંવત જણાતો નથી, પણ ચારસો પાંચસો

વર્ષ ઉપરનો તો આ ગ્રંથ હોવોજ જોઇએ એમ અનુમાન થયા વગર રહેતું નથી. (આ ગ્રંથ **સુરત**માંથી ડૉ. ભુખણદાસ પરભુદાસ પાસેથી પ્રાપ્ત થયેલો છે.)

(૫) **સ્ત્રીવારકથા સચિત્ર**—સં. ૧૬૭૯માં જ્ઞાનસાગરકૃત આ **ગુજરાતી** ગ્રંથ ૧૯૧૬માં લખાયલો હોઈ તેમાં કથાના ભાવનાં રંગીન સોનેરી અને સુશોભિત પુષ્કળ ચિત્રો છે (કરમસદથી પ્રાપ્ત)

(૬) **ભવિષ્યદત્તચરિત્ર પ્રાકૃત**—૧૫૦–૨૦૦ રંગીન ચિત્રોવાળો સુરતના નૃસિંહપરાના દહેરાના શાસ્ત્રભંડારમાંથી પ્રાપ્ત..

(૭) **શાંતિનાથચરિત્ર** સચિત્ર અને અપૂર્ણ (સુરતમાંથી ઉપલાજ ભંડારમાંનો)

(૮) **શ્રીપાલચરિત્ર સચિત્ર**—(આ ગુજરાતી ગ્રંથ શ્વેતાંબરી આમ્નાયનો હોઈ સં. ૧૭૩૭માં યશવિજય અને વિનયવિજય કૃત સં. ૧૭૮૬માં લખાયલો. ૧૫૦–૨૦૦ રંગીન ચિત્રોયુક્ત છે જે સુરત વડાચૌટાના જ્ઞાનભંડારમાંથી પ્રાપ્ત થયો છે.

(૯) **મૃગાવતીરાસ સચિત્ર**-(શ્વેતાંબરી, અપૂર્ણ. રંગીન ચિત્રોયુક્ત સુરતમાંથી ચીમનલાલ ફતેહચંદ દ્વારા પ્રાપ્ત)

(૧૦) **બારસા (કલ્પસૂત્ર) સચિત્ર**, પૃષ્ઠ ૧૨૪ (સુરત-વડા ચૌટા જ્ઞાનભંડારમાંથી પ્રાપ્ત)

(૧૧) **ત્રિલોકસારનાં ત્રણ જીર્ણ અને અપૂર્ણ ગ્રંથો સચિત્ર** (સંસ્કૃત. સુરત નૃસિંહપુરાના દહેરાના શાસ્ત્રભંડારમાંથી પ્રાપ્ત)

प्राचीन गुजराती ग्रंथो

(૧૨) **સામાધિતંત્ર**-(સંસ્કૃત-ગુજરાતી. પદ્યમાં)

(૧૩) **અનીરૂદ્ધહરણ** -(બ્રહ્મ શ્રી જયસાગરકૃત, રચાયો, સં. ૧૭૩૨ લખાયો.. સં. ૧૮૨૨)

(૧૪ **અષાઢભૂતિ ધમાલ રાસ** (પં. માનસિંહકૃત. રચ્યો ૧૬૩૮. લખ્યો સં. ૧૬૬૫)

(૧૫) **પાસાકેવલી પોથી**-(ગર્ગઋષીકૃત)

(૧૬) **આદિનાથ પુરાણ**-(બ્રહ્મજિનદાસકૃત. લખ્યો સં. ૧૮૨૪)

(૧૭) **તત્ત્વાર્થસૂત્ર ટીકા** (ખીવસી મંત્રી કૃત. લખ્યો સં. ૧૬૮૫)

(૧૮) **પ્રદ્યુમ્ન ચરિત્ર**-(દેવેંદ્રકીર્તિ ભટ્ટારક કૃત. લખ્યો ૧૭૨૨)

(૧૯) **પદ્મપુરાણ** –**રામપુરાણ**—(ખુશાલદાસ કૃત. રચ્યો-લખ્યો ૧૭૮૩)

(૨૦) **પદ્માવતી સ્તોત્ર**—(સંસ્કૃત—પ્રાકૃત. ૧૮૧૮)

(૨૧) **પદ્માવતી કલ્પ** (સંસ્કૃત-પ્રાકૃત સચિત્ર યંત્રમંત્ર સહિત)

(૨૨) **શ્રેણિક પ્રશ્નોત્તર** (ગુણભૂષણકૃત. લખ્યો-રચ્યો. ૧૬૩૦)

(૨૩) રાસોનો મોટો પોથો (પૃ. ૩૭૪ લખાયો. ૧૭૭૭)

(૨૪) **યશોધર રાસ**-(દેવેંદ્રકવિકૃત. રચ્યો ૧૬૩૮. લખ્યો ૧૮૯૨)

(૨૫) **શાંતિનાથ ચરિત્ર**-(બ્રહ્મશ્રી જયસાગરકૃત. રચ્યો ૧૭૪૫ લખ્યો ૧૭૮૪)

(૨૬) **હરિવંશ પુરાણ રાસ**-(બ્રહ્મજિનદાસ કૃત. લખ્યો-રચ્યો ૧૫૨૦)

(૨૭) **ચંદ્રપ્રભુ ચરિત્ર** (ભટ્ટારક યશકીર્તિ કૃત રચ્યો-લખ્યો. ૧૮૫૫)

(૨૮) **સમ્યક્ત કૌમુદી**-(યશકીર્તિ કૃત હીંદી-ગુજરાતી. રચ્યો ૧૮૧૧ લખ્યો ૧૮૮૦)

(૨૯) ત્રિલોકસાર ધર્મધ્યાનવિચાર રાસ(સુમતિકીર્તિ કૃત. ૧૮૫૧માં)
(૩૦) આદિનાથ ફાગ (જ્ઞાનભૂષણ ભટ્ટારક કૃત)
(૩૧) જીવંધર રાસ (જ્ઞાનભૂષણ ભટ્ટારક કૃત)
(૩૨) સગરચક્રવર્તિ રાસ (બ્રહ્મશ્રી જયસાગરકૃત. રચ્યો ૧૭૧૭ લખ્યો ૧૭૯૮)
(૩૩) શ્રાવકાચાર રાસ (૧૭૬૯માં લખાયલો)
(૩૪) આદિનાથ રાસ (બ્રહ્મજિનદાસકૃત)
(૩૫) પંચતંત્ર (પંચાખ્યાન) (વિષ્ણુશર્મા કૃત. લખાયું ૧૮૩૧)
(૩૬) રામાયણ રાસ-(બ્રહ્મ વિનયસાગર કૃત. રચ્યો ૧૫૭૮ લખ્યો ૧૬૭૭)
(૩૭) ત્રિલોકસાર વર્ણન (જિનસેનાચાર્યકૃત. કર્ણાટકી લીપી અને સંસ્કૃત ભાષામાં સચિત્ર રચાયો ૧૬૫૪)
(૩૮) શ્રીપાલચરિત્ર-(વિજયપ્રભસુરીકૃત. રચ્યો ૧૭૩૮ લખ્યો ૧૮૭૦)
(૩૯) આદિનાથફાગ-(સોમપ્રભાચાર્યકૃત. લખાયો ૧૬૯૦)
(૪૦) ધર્મપરીક્ષા રાસ-(સુમતિકીર્તિ કૃત. રચ્યો-લખ્યો ૧૬૨૫)
(૪૧)રામપુરાણ ભાષા (બ્રહ્મજિનદાસ કૃત.) રચ્યો. ૧૫૭૮. લખ્યો ૧૮૯૦).
(૪૨) અંકાવલી તથા ગણિતના અનેક આંકો-

આ નાનકડી બુક અતીવ ઉપયોગી છે, જેમાં અઢીયાં ઉઠાં ઉપરાંત બધા આંકો, સાડાચાર કે જેને ઢોંસો કહેતા હતા તે આંક છે, તેમ દોઢા દોઢાના આંક છે, તેમ જ્યારે પરાર્ધ સુધી ૧૯ અક્ષરનાજ નામ બોલી શકાય છે ત્યારે એમાં પરાર્ધથી વધુ અક્ષરની ગણત્રી બોલી શકાય તેનાં ૫૭ જુદા જુદા નામો ઉપરાંત પલ્ય અને સાગરની ગણત્રી પણ બતાવેલી છે. (મહુવાના શાસ્ત્રભંડારમાંથી પ્રાપ્ત.)

(૪૩) સીતાહરણ વગેરે ૩ રાસનો પોથો (લખાયો ૧૭૩૨ બ્રહ્મશ્રી જયસાગરકૃત)
(૪૪) પરચુરણ કથાઓ (અપૂર્ણ, જીર્ણ અને પ્રાચીન)
(૪૫) રાસો-કથાઓનો પોથો (૧૬૦૦ ની લગભગનો)
(૪૬) આરાધનાપ્રતિબોધ કથાઓ બ્રહ્મશ્રી જયસાગર કૃત. લખાયો ૧૭૨૧)
(૪૭) બળીભદ્ર આખ્યાન (બ્રહ્મશ્રી દયાસાગરકૃત. રચ્યો ૧૭૩૨ લખ્યો ૧૭૫૭)
(૪૮) પદ્માવતીની કથા-(લખાઇ ૧૮૪૨)
(૪૯) હનુમાન કથા (સુરદાસ મુનિકૃત. રચી. ૧૬૧૬ લખી. ૧૭૪૧)
(૫૦) સંબોધિપંચાસીકા વગેરે કથાઓ (૧૬૬૪ની લખેલી)
(૫૧) સામુદ્રિકશાસ્ત્ર (૧૮૨૫નું)
(૫૨) લવઅંકુશવ્યાખ્યાન વગેરે (૧૭૨૮નું)
(૫૩) સમાધિતંત્ર (પર્વતધર્માર્થીકૃત. લખ્યો ૧૭૪૯)
(૫૪) હરીવંશરાસ—(બ્રહ્મજિનદાસ કૃત. રચ્યો, ૧૫૨૦)
(૫૫) પટ્ટવિધાનરાસ—(શુભચંદ્ર ભટ્ટારક કૃત. લખ્યો. ૧૭૨૧.)
(૫૬) શ્રેણિક પ્રશ્નોત્તર—(શુભકીર્તિ ભટ્ટારક કૃત. રચ્યો ૧૬૩૦. લખ્યો ૧૬૬૭)
(૫૭) લોંકામત નિરાકરણ—(સુમતિકીર્તિ ભટ્ટારક કૃત. રચ્યો ૧૬૨૭ લખ્યો ૧૬૬૭.)

(૫૮) **સમયસાર નાટક વગેરેનો ગુટકો**–(રાજમલ્લ પાંડેકૃત. રચ્યો ૧૬૧૩ લખ્યો ૧૭૧૪)
(૫૯) **હરીવંશ રાસ**—(બ્રહ્મજિનદાસકૃત. રચ્યો ૧૫૨૦ લખ્યો ૧૭૫૧).
(૬૦) **ચોર્યાશી વૈશ્ય જ્ઞાતિના નામ**—(ભટ્ટારક લક્ષ્મીચંદ્રકૃત. લખ્યો ૧૬૯૮)
(૬૧) **ધર્મપરીક્ષા રાસ**—(બ્રહ્મશ્રીચંદ્રસાગરકૃત. રચ્યો ૧૬૨૫. લખ્યો. ૧૮૨૯)
(૬૨) **લોકાનુયોગ સચિત્ર**—(જિનસેનાચાર્યકૃત)
(૬૩) **સુદર્શનચરિત્ર**—(સકલકીર્તિ ભટ્ટારક કૃત, લખ્યો ૧૫૬૪)
(૬૪) **માંડનબંધન ઉખાણુ રાસ**—(ભ. સોમતિકીર્તિ કૃત પ્રાચીન.)
(૬૫) **સમયસાર નાટક**--(બનારસીદાસ કૃત. રચ્યો ૧૬૯૩ લખ્યો ૧૭૫૧)
(૬૬) **રામસીતા રાસ**-(બહારસી ધના કૃત. લખ્યો ૧૬૫૨)
(૬૭) **પાંડવપુરાણ** (અપૂર્ણ)
(૬૮) **આદિતવાર કથા**-(બ્રહ્મશ્રી સાગર કૃત. લખાઇ ૧૬૮૧)
(૬૯) **રેણુકાનો રાસ** (બ્રહ્મજિનદાસ કૃત)
(૭૦) **આદિશ્વર સમોસરણ રચના** (સુરેંદ્રકીર્તિ ભટ્ટારક કૃત. લખાઇ ૧૭૪૭)
(૭૧) **ચંદના, ધર્મપરીક્ષા વગેરે ૯ રાસો**-(વાદિચંદ્ર, પ્રભાચંદ્ર વગેરે કૃત ૧૬૨૫ થી ૧૭૦૦ના)
(૭૨) **ધર્મધ્યાનવિચારરાસ** (ભટ્ટારક સુમતિકીર્તિ કૃત. રચ્યો ૧૬૨૭ લખ્યો ૧૬૩૬)
(૭૩) **ભક્તામરકથા** (વિનોદીલાલ કૃત ૩૮ કથાઓ. રચાઇ ૧૭૦૭ લખાઇ ૧૯૨૭)
(૭૪) **આદિશ્વર રાસ**-(બ્રહ્મચારી જિનદાસ કૃત. લખ્યો-રચ્યો ૧૭૮૫)
(૭૫) **નાટકસમયસાર**-(કવિ બનારસી કૃત. રચ્યો ૧૬૯૩)
(૭૬) **દાન-શીલ-તપ-ભાવનો રાસ**-(સમયસુંદર કૃત ૧૬૬૨)
(૭૭) **કર્મપ્રકૃતિ**-(નેમીચંદ્ર સિદ્ધાંત ચક્રવર્તિકૃત. રચ્યો ૧૬૪૧)
(૭૮) **કર્મવિપાક રાસ**-(પં. ગણેશજી લિખિત. રચ્યો ૧૮૩૪)
(૭૯) **અમરદત્તનો રાસ**-(ભટ્ટારક જયકીર્તિ કૃત. રચ્યો ૧૬૮૬)
(૮૦) **ગર્ભાખ્યાન** (રત્નભૂષણ ભટ્ટારકકૃત)
(૮૧) **મહાવીર રાસ** (શુભચંદ્રાચાર્ય કૃત. રચ્યો. ૧૬૦૯ લખ્યો. ૧૭૭૧)
(૮૨) **ગૌતમસ્વામીનો રાસ** (શ્વેતાંબરી. રચાયો ૧૪૧૨ શેઠ મગનભાઈ ધરમચંદ ઉદેચંદ ઝવેરી તરફથી પ્રાપ્ત.)
(૮૩) **રૂષિમંડળ સ્તવ** (ધર્મઘોષસુરી કૃત., શ્વે. રચાયો. ૧૭૬૧ ઉપલોજ ગૃહસ્થ તરફથી મળેલો)
(૮૪) **જંબુપૃચ્છા રાસ** (રાજચંદ્રસુરી કૃત. શ્વે.) " "
(૮૫) **ઘણાજ બારીક અક્ષરોનો સંસ્કૃત ગ્રંથ દરેક પાનામાં આસરે અઢી હજાર** અક્ષર છે.

नकशाओनो संग्रह.

(૮૬) પટકુલાચળ પર્વતનો પટ (કાગળ ઉપર)
(૮૭) ગણત્રીનો મોટો નકશો (બહુજ ઝીણા અક્ષરે કાગળ ઉપર)
(૮૮) જંબુદ્વીપનો પટ (રંગીન)

(૮૯) શ્રુતસ્કંધ યંત્રનો નકશો. (રંગીન)
(૯૦) નક્ષત્રગણોની મેરૂની પ્રદક્ષિણાનો નકશો.
(૯૧) જંબુદ્વીપની ગણત્રીનો નકશો.
(૯૨) પદ્માવતીયંત્રનો પ્રાચીન નકશો.
(૯૩) હનુમાનનું યંત્ર (પ્રાચીન)
(૯૪) તેરહદ્વીપનો સાથીયો કપડા ઉપર.
(૯૫) અઢીદ્વીપનો નકશો રંગીન (નાનો)
(૯૬) શ્રવણ બેલ્ગુલ (જૈનબિદ્રિ-મુડબિદ્રિ)નો મોટો નકશો, શ્રી ગોમ્મટેશ્વરની ૫૨ ફુટ ઉંચી મૂર્તિના ચિત્ર સહિત).
(૯૭) શ્રી સમ્મેદશિખરજી તીર્થક્ષેત્રનો રંગીન નકશો (કાટી ઉપર, પ્રાચીન.)
(૯૮) ઐરાવત હાથી અને તીર્થંકરના જન્મકલ્યાણકના દેખાવનો અપૂર્વ, જીર્ણ અને પ્રાચીન રંગીન નકશાનો તખ્તો—

આ નકશો અતિ પ્રાચીન હોઇ મહુવાના શાસ્ત્રભંડારમાંથી મળી આવ્યો છે, જેમાં તીર્થંકરના જન્મ પછી ઇંદ્ર-ઇંદ્રાણી તેમને ઐરાવત (દરેક સૂંઢ ઉપર એકેક કમળ એવી ૧૦૮ સૂંઢવાળા) હાથી ઉપર બેસાડી મેરૂપર્વત ઉપર જન્મકલ્યાણક કરવા લઇ જાય છે તથા પાંડુકશિલા ઉપર જન્મકલ્યાણકનો થતો દેખાવ આપેલો છે. હાથીની ૧૦૮ સૂંઢો બરાબર જણાય છે અને આવું ઐરાવત હાથીનું ચિત્ર હાલ જોવામાંજ આવતું નહોતું તે મળી આવ્યું છે. ચિત્રાયાનો સંવત નથી, છતાં પણ એની જીર્ણ અવસ્થા તથા એનો કાગળ જોતાં એ ચિત્ર ચારસો પાંચસો વર્ષ ઉપરનું તો હોવુંજ જોઇએ એમ અનુમાન થાયછે.

(૯૯) સમવસરણનો મોટો રંગીન પટ-(આ કપડા ઉપરનો રંગીન પટ ઘોઘામાં ચંદ્રપ્રભ ચૈત્યાલયમાં સં. ૧૫૫૦ માં ચિત્રાયલો પ્રાચીન છે, જેનું ચિત્રકામ ઉત્તમ છે. સમવસરણની રચનાનો દેખાવ આબેહુબ રીતે ચિત્રેલો છે. (મહુવામાંથી પ્રાપ્ત.)

(૧૦૦) ત્રણ લોકનો મોટો સચિત્ર નકશો—[જૈનમતાનુસાર લોકસ્વરૂપ]

આ નકશો કાગળ ઉપર જીર્ણ અવસ્થામાં મહુવામાંથી પં. માણેકલાલ મોહનલાલ પાસેથી મળી આવેલો, તેને કપડાં ઉપર મઢી લઇ મોટા પડદારૂપે બનાવેલો છે, જેમાં ઉર્ધ્વ, મધ્ય અને અધોલોકનો દેખાવ આપેલો છે અને ઉપરથી જોતાં (૧) સિદ્ધગતિમાં જે અવસ્થાથી ગમન થાય છે. તેની અવગાહના, (૨) પાંચ અનુત્તર વિમાનનો દેખાવ, (૩) જઘન્ય, મધ્યમ અને ઉત્કૃષ્ટના ભેદથી નવ ગ્રૈવેયકનો દેખાવ, (૪) સોળ સ્વર્ગનો દેખાવ. (૫) મધ્ય લોકનો દેખાવ, (૬) સાત નર્કનો દેખાવ, (૭) નિગોદનો દેખાવ. આ આખો દેખાવ મનુષ્યાકારે હોઇ એક બાજુએ સંસારવૃક્ષ (મોહરસ સ્વરૂપ)નું તથા બીજી બાજુએ ષટ લેશ્યા સ્વરૂપનું એમ બે મોટાં, આકર્ષણીય અને અતીવ બોધપ્રદ ચિત્રો છે.

(૧૦૧) જંબુદ્વીપનો નકશો.
(૧૦૨) અઢીદ્વીપનો નકશો.
(૧૦૩) અઢીદ્વીપનો મોટો નકશો (રંગીન)

(૧૦૪) અઢીદ્વીપનો નકશો (ઘણોજ મોટા પડદારૂપે) આ નકશો અમારા **શ્વેતાંબરી** બંધુ રતનચંદ ખીમચંદ કાપડીઆ માર્ફતે મળેલો છે.

(૧૦૫) **હનુમાન** યંત્ર (નવીન) [શ્વે. બંધુ શેઠ મગનભાઇ ધરમચંદ તરફથી મળેલું.)

(૧૦૬) સૂર્યમંડળ યંત્ર (રંગીન) " " "

ધાર્મિક ચિત્રોનો સંગ્રહ

(૧૦૭) કલ્પવૃક્ષના ૩ અને બે સ્ત્રીઓના મળી **૫ ચિત્રોનું** આલ્બમ.

(૧૦૮) **રૂષભનાથસ્વામીના જીવનકાળના ૭ ચિત્રોનું** ચિત્રકામની અપૂર્વ કારીગીરીવાળું **આલ્બમ.—**

આ ચિત્રમાં નીચેના દેખાવો છે-(૧ રૂષભનાથનો જન્મ, નાભીરાજા જન્મોત્સવની ખુશાલીમાં અને **વૃષભના શીંગડાંમાંથી દૂધની ઝરતી ધારાઓ.** (૨) રૂષભનાથસ્વામીની ૫૬ કુમારિકા દેવી સેવા કરે છે. (૩) ઇંદ્રાણી રૂષભનાથની સ્તુતિ કરે છે. (૪) ઇન્દ્ર રૂષભનાથીની સ્તુતિકરેછે. [૫] રાજસભામાં **નિલંજસા અપ્સરાનો થતો નાચ** અને તેના અચાનક મૃત્યુથી રૂષભનાથને **વૈરાગ્ય** ઉત્પન્ન થવો. (૬) રૂષભનાથસ્વામી. (૭) શ્રેયાંસરાજા રૂષભનાથસ્વામીને ૬ માસ ઉપવાસ અને ૭ માસ આહારની અંતરાય એમ ૧ વર્ષના તપ પછી **ઇક્ષુરસનો (શેરડીના રસનો) આહાર** આપે છે, વગેરે દેખાવો.

(૧૦૯) **નેમનાથસ્વામી અને રાજુલમતીના જીવનકાળના ૬ ચિત્રોનું** આલ્બમ—

આ ચિત્રમાં નીચેના અપૂર્વ દેખાવો છે-(૧)-શ્રી કૃષ્ણની આયુધશાળામાંથી નેમનાથ સ્વામી શંખ લાવીને વગાડે છે, જેની અજબ શક્તિ જોઇ કૃષ્ણ વગેરે નેમનાથને પરણાવવાનો વિચાર કરે છે. (૨) નેમનાથસ્વામીના લગ્નનો વરઘોડો, પશુઓનો પોકાર અને પાછા ફરવું. (૩) રાજુલમતી મૂર્છાવસ્થામાં. (૪) નેમનાથ સ્વામી અને રાજુલમતીનું દીક્ષા લઇ ગીરનાર ઉપર વિચરવું. (૫) રાજુલમતી ભગવદ્‌ભક્તિમાં લીન (૬) ઉગ્રસેનરાજા રાજુલમતીને આહાર આપે છે.

(૧૧૦) તીર્થંકરની માતા સ્વપ્નાવસ્થામાં અને **૧૬ સ્વપ્નો** વગેરે ૫ ચિત્રોનું આલ્બમ.

(૧૧૧) **મહારાજ ચંદ્રગુપ્તનાં ૧૬ અશુભ સ્વપ્નોનું આલ્બમ—**

આ ૧૬ સ્વપ્નો અને તેનું ફળ જાણવાયોગ્ય હોવાથી અત્રે જણાવીએ છીએ—(૧) સૂર્ય અસ્ત થઇ રહ્યો છે-ફળ-દ્વાદશાંગનો જાણવાવાળો કોઇ નહિં રહેશે. (૨) રત્નનો ઢગલો ધૂળમાં પડ્યો છે-ફળ-યતિઓમાં ઐક્યતા નહિ રહે. (૩) કલ્પવૃક્ષની ડાળ ટૂટી પડી. ફળ—ક્ષત્રિય જૈનધર્મને માનશે નહિ. (૪) સમુદ્ર મર્યાદા રહિત થયો (ઉભરાઇ ગયો). ફળ—રાજા નીતિવાન નહિ થશે. (૫) બાર ફેણવાળો સર્પ જોયો. ફળ—બાર બાર વર્ષ સુધી દુકાળ પડશે. (૬) દેવતાઓનું વિમાન ઉંધું થઇ ગયું. ફળ—દેવતા ભારતભૂમિ ઉપર નહિ આવશે. (૭) રાજપુત્ર ઊંટઉપર ચઢેલો છે. ફળ—રાજા મિથ્યાત્વી ધર્મનો અનુયાયી થશે. (૮) બે કાળા હાથી માંહોમાંહે લડે છે. ફળ—વારંવાર વર્ષાદ ઓછો થશે. (૯) ગાયનાં નાનાં નાનાં વાછરડાં ગાડીમાં જોડેલા છે. ફળ—તરૂણાવસ્થામાંજ ધર્મ થશે. (૧૦) વાંદરો હાથી ઉપર ચઢેલો છે. ફળ—ક્ષત્રિય નીચ વૃત્તિ કરશે અને શુદ્ર રાજા થશે. (૧૧) પ્રેત નાચ કરે છે. ફળ-કુદેવની પૂજા હવે વધારે થશે. (૧૨) સોનાના વાસણમાં કૂતરો ખીર ખાય છે. ફળ—ધનિકોના ધનથી દુષ્કર્મો અધિકથશે. (૧૩) આંગીઓ દેદીપ્યમાન

થઈ રહ્યો છે. ફળ-હવે જૈન ધર્મ પોતાના પ્રભાવનો ઉદ્યોત ઘણો ઓછો કરશે. (૧૪) તળાવ સુકાઇ ગયું છે. ફળ-દક્ષિણ દેશમાં વર્ષાદ ઓછો થશે અને એજ દેશમાં જૈનધર્મ અધિક માન્ય થશે. (૧૫) ધૂળમાં કમળ ખીલ્યું છે. ફળ-બ્રાહ્મણ જૈનધર્મ રહિત થશે અને વૈશ્ય જૈન થશે (૧૬) ચંદ્રમામાં કેટલાંક છિદ્રો જોયાં. ફળ-જૈન મતમાં ભેદાભેદ થશે.

(૧૧૦) કાળ ભૈરવનું રંગીન ચિત્ર—આ ચિત્રની કારીગીરી અતીવ ઉત્તમ છે.

(૧૧૧) ઘોડાનું ચિત્ર (ડબલ) શરીરના લક્ષણ—વર્ણન સહિત.

(૧૧૨) ઘોડાનું ચિત્ર (ડબલ) બીજું. શરીરના લક્ષણ—વર્ણન સહિત.

(૧૧૩) પંડિત શીવલાલજીએ પોતાને હાથે ચીતરેલો પોતાનો રંગીન ફોટો (મહુવામાંથી પ્રાપ્ત)

(૧૧૪) અકબર બાદશાહ અને હીરવિજયસુરીનો નાનો રંગીન તખ્તો—

આ તખ્તો બીકાનેરના શાસ્ત્રભંડારમાંના ચિત્ર ઉપરથી ઉતારો કરેલો છે. અને અત્રેના શ્વે૦ બંધુ શેઠ મગનભાઇ ધરમચંદ ઉદેચંદ ઝવેરી તરફથી પ્રાપ્ત થયો છે. જેમાં સં. ૧૬૨૯ માં આગ્રા શહેરમાં અકબર બાદશાહ અને હીરવિજયસુરીના મેળાપનું આબેહુબ ચિત્ર છે. અને એ તખ્તામાં નીચેનાં ચિત્રો છે—૧. કરમાસાહ કરમચંદ શેઠ, (જૈન) ૨. બીરબલ પ્રધાન ૩. પાદરી અથવા કાજી, (૪) અકબર બાદશાહ (૫) આચાર્ય શ્રી હીરવિજયસુરીજી. (૬-૭-૮) આચાર્યશ્રીના શિષ્યો ચંદ્રસુરીજી, જગમાલજી મહાત્મા અને માલદેવ મહાત્મા. આ ઉપરાંત ઉપલે ભાગે ઓઘો અને ટોપી દેખાય છે. નીચે બકરી અને બે બચ્ચાં છે તેમ એક ગાય ઉભી રાખેલી છે, જેનું વર્ણન નીચે મુજબ છે—

हीरविजयसुरीए अकबर बादशाहने बतावेला चमत्कार.

અકબરના કાજીએ આકાશમાં ઉડાવેલી ટોપીને હીરવિજયસુરી પોતાનો ઓઘો આકાશ માર્ગે ઉડાવી તે ઓઘાવડે ટોપીને નીચી ઉતારે છે તથા એક બકરી આસન નીચે છુપાવી તે આસન ઉપર હીરવિજયસુરીને બેસવાનું કહેતાં આચાર્યસુરીએ કહ્યું કે આ આસન નીચે ત્રણ જીવ છે માટે નહીં બેસું, એટલું કહેતાં ત્રણ જીવની પરીક્ષા કરવા માટે આસનને તપાસતાં અંદર મુકેલી બકરી ગર્ભવંતી હોવાથી તેહેનો પ્રસવ થઇ બે બચ્ચાં **અવતરેલાં** તે સાથે ત્રણ જીવ માલુમ પડવાથી રાજાને શ્રદ્ધા થવી અને ગૌવધ વગેરે હિંસા નહિ કરવાનું તથા તીર્થરક્ષા વગેરેનું ફરમાન કાઢેલું હતું.

(૧૧૫)—અકબર અને હીરવિજયસુરીનો બીજો મોટો તખ્તો. ઉપલાજ ફોટા ઉપરથી એન્લાર્જ કરેલો અને ઉપરનાજ ગૃહસ્થ તરફથી પ્રાપ્ત.

(૧૧૬)—ભટ્ટારક સુરેંદ્રકીર્તિજીનું રંગીન ચિત્ર—સુરતમાં નૃસિંહપરાના કાષ્ટાસંઘી દહેરામાં સં. ૧૭૪૧ માં થયેલા આ સુરેંદ્રકીર્તિજી ભટ્ટારકનું રંગીન ચિત્ર છે, જેમાં સુરચંદ શેઠ ભટ્ટારકજીને પ્રણામ કરી રહેલા છે, તેમ બીજી બાજુએ જુદા જુદા આસન માંડી ૪ શિષ્યો પાઠ કરી રહેલા છે અને તેની નીચે નૃત્યનો દેખાવ છે. આ ચિત્ર અત્રેના ડૉ. ભુખણદાસ પરભુદાસ પાસેથી મળી આવ્યું છે.

(૧૧૭) સુકનાવલીનાં ચીત્રો રંગીન-શુભ અને અશુભ શુકનના આ ૧૦૨ રંગીન ચિત્રોનાં પાનાંઓ છે જે દરેકની પાછળ ચિત્રને લગતો સંસ્કૃત શ્લોક છે. આ ચિત્રપોથી બ્યારાના શાસ્ત્રભંડારમાંથી મળી આવી છે.

(૧૧૮) ૨૪ તીર્થંકરોના શરીરના જુદા જુદા વર્ણવાળા જુદા જુદા ૨૪ રંગીન ચિત્રો દહેરાસરના આકારે.

(૧૧૯) સોળ સ્વપ્ન, તીર્થંકરોનાં ૨૪ લાંછનો, આઠ મંગળ વગેરે રંગીન ચિત્રોની પોથી. આ પોથી કરમસદના શાસ્ત્રભંડારમાંથી મળી છે, જેમાં સોનાનાં ઘણા ચિત્રો છે.

શાસ્ત્રોનાં પ્રાચીન પુંઠાઓ.

(૧૨૦) કસબનું ભરેલું જાંબળી પુંઠું.
(૧૨૧) સ્વદેશી કીડીયાંનું ભરેલું સાથીયાવાળું પુંઠું.
(૧૨૨) કાગળ કોતરેલું લાલ પુંઠું.
(૧૨૩) રેશમની દોરીનું ગુંથેલું લાલ પુંઠું.
(૧૨૪) લાલ-લીલું કાચના ચાંદવાળું ગુંથેલું રેશમી પુંઠું.
(૧૨૫) રેશમી દોરીનું ગુંથેલું અબરખ મુકેલું પુંઠું.
(૧૨૬) રેશમી સફેદ ફૂલવાળું કાચની ચકતીવાળું પુંઠું.
(૧૨૭) રેશમ તથા કસબનું ભરેલું ઘણું પ્રાચીન પુંઠું.
(૧૨૮) સ્વદેશી કીડીયાંનું ગુંથેલું રંગીન પુંઠું.
(૧૨૯) સ્વદેશી કેનવાસ ઉપર રેશમનું ભરેલું પુંઠું.
(૧૩૦) કસબકીકીનું **મોતી-માણેકથી** જડેલું કિંમતી પુંઠું.
(૧૩૧) સોનેરી કસબ ભરેલું લાલ પુંઠું.

શાસ્ત્રનાં પ્રાચીન બંધનો.

(૧૩૨)-રેશમી જાંબળી ગજી ઉપર સફેદ ફૂલો ભરેલું સુશોભિત બંધન (યશોધરચરિત્ર નામે સોનાના અક્ષરવાળા ગ્રંથનું.)

(૧૩૩) **મખમલનું પ્રાચીન બંધન**-આ જુદા જુદાં રંગની **સ્વદેશી મખમલના** કકડાઓનું બનેલું હોઈ વચ્ચોવચ્ચ ગલીચાના જેવું **મખમલનું વણેલું કામ છે,** જે ઘણુંજ પ્રાચીન હોવાથી કેટલીક પુમ ઘસાઈ ગયેલી છે, પણ આ બંધન જોવાથી એમ સ્પષ્ટ જણાય છે કે આ દેશમાં પણ ઉત્તમ કારીગીરીવાળી મખમલ બનતીજ હતી, આ બંધન ઘણુંજ ઉપયોગી જણાય છે.

(૧૩૪)—લીલું રેશમી ભરતકામનું પ્રાચીન બંધન.

(૧૩૫)—રેશમી સફેદ ભરતકામનું કાળું બંધન.

ચિત્રકામના પાટીયાંનાં પુંઠાઓ.

(૧૩૬)—રંગીન તથા સોનેરી ચિત્રકામનું વેલવાળું પુંઠું.
(૧૩૭)—રંગીન-સોનેરી ચિત્રકામનું ચાર ફુલવાળું પુંઠું
(૧૩૮)-પ્રાચીન ચિત્રકામનું પાંચ ફુલવાળું પુંઠું.

(૧૩૯—૧૫૩) **રંગીન અને સોનેરી પ્રાચીન ચિત્રકામના, ધાર્મિક મોટાં ૧૫ પાટીયાંઓ**-અત્રે સૈયદપરા શ્રાવકપોળમાં શ્વેતાંબરી ભાઈઓનું પ્રાચીન દહેરાસર છે જેમાંથી આ ૧૫ પાટીયાંઓ અમને એના વહિવટકર્તા શેઠ ચુનીલાલ સુરચંદ કાપડીયા તરફથી મળી આવ્યા છે, જેમાં નીચેનાં સોનેરી રંગબેરંગી ચિત્રો છે—૧. સનત્કુમાર ચક્રવર્તીની સભા અને મુનિના ઉપદેશથી વૈરાગ્ય થવો. ૨. પૃથ્વીચંદ્ર અને ગુણસાગર મુનિનો ઉપદેશ ૩. ભગવાન મહાવીરસ્વામીને જુદી જુદી રીતે આહાર આપવાનાં ૨૪ ચિત્રો. ૪. ઉત્કૃષ્ટ ૧૭૦ જિનેન્દ્રનું ચિત્ર. ૫ મહાવીરસ્વામીના જુદા જુદા ઉપસર્ગો. ૬. દશાહરણભદ્ર અને મહાવીરસ્વામી, ઇંદ્રની અને દશાહરણની રિદ્ધિ. ૭. વીસ સ્થાનકમાંના ૧ થી ૧૦ સુધીનાં ૧૦ સ્થાનકો. ૮. મહાવીર સ્વામીની દીક્ષા વખતનો વરઘોડો. ૯ દેવોના ઇંદ્રો તથા વિદ્યાધરો. ૧૦. મહાવીરસ્વામીનું નિશાળગણું. ૧૧. પદ્માવતી નગરી અને પદ્મનાભરાજા ૧૨. અકબર **બાદશાહની** સભા અને હીરવિજયસુરીનો મેલાપ. પાલખીમાં બેસીને રાણીનું દર્શન માટે પધારવું

વગેરે આકર્ષણીય ચિત્રવિચિત્ર દેખાવ. ૧૩: વીસ સ્થાનકમાંના ૧૧થી ૨૦ સુધીમાં ૧૦ સ્થાનકો, ૧૪. જગચંદ્રસુરી અને ઉદેપુરના રાણાનો દરબાર. ૧૫. રામરાવણના વખતના ભામંડળના કેટલાંક ચેત્રો.

(૧૫૪)—ચૌદરાજુલોકનું મોટું પાટીઉં (રંગીન. દરેક સમજ સાથે મનુષ્યાકારે.)-આ પાટીઉં બરાબર મનુષ્યના આકારે ચિત્રેલું છે, જેથી જણાય છે ચોદરાજુલોક મનુષ્યાકારેજ છે. આ પાટીઉં પણ સૈયદપરાના શ્વે. દહેરાસરમાંનુંજ છે.

(૧૫૫) જંબુદ્વિપ અને નન્દીશ્વરદ્વીપની ગંજાવર અને પ્રાચીન રચના.

લાકડા ઉપર કોતરકામ તેમ રંગીન તથા સોનેરી ચિત્રકામ કરેલી જંબુદ્વીપ અને નંદીશ્વરદ્વીપની આ ગંજાવર રચના છે, જે પણ સૈયદપરાના દહેરાસરમાંની છે અને ત્યાં વર્ષમાં બે વખત ગોઠવાય છે તે ગાલ્લાંઓ, ટોપલાઓ વગેરેમાં ભરાવી લાવીને એ આખી રચના આ પ્રદર્શનમાં ગોઠવેલી છે, જેમાં વચ્ચે **જંબુદ્વીપની** રચનાના મધ્યમાં **સુદર્શન** મેરૂપર્વત છે તેમ ચારેબાજુએ ફરતી **નંદિશ્વર દ્વીપના ૫૨ ચૈત્યાલયો તથા વડવાનલની** રચના છે, જેમાં વાવો, અંજનગીરી (કાળો) દધિમુખ (સફેત), રતિકર (લાલ) વગેરેના દેખાવો અને ચૈત્યાલયો છે, તેમ જંબુદ્વીપની રચનામાં સમુદ્રો, નદિયો, પર્વતો વગેરેના પણ લાકડાના દેખાવો છે. પહાડોમાં લાલ રંગ ઉપર સોનેરી અને રંગીન ચિત્રકામ પ્રાચીન છે. ઓછામાં ઓછાં ૩૦૦-૪૦૦ વર્ષની બનેલી આ રચના છે, જેનું કોતરકામ, ચિત્રકામ અને દેખાવ આકર્ષણીય છે. (આ જંબુદ્વીપ અને નંદીશ્વરદ્વીપનું સવિસ્તર વર્ણન ચર્ચાશતકમાંથી મળી આવે છે.)

ઉપર મુજબ વ્યારા, મહુઆ, કરમસદ, અંકલેશ્વર અને સુરતના મંદિરોના શાસ્ત્રભંડારોમાંથી શોધખોળ કરીને અમો ઉપલી ૧૫૫ ચીજો આ પ્રદર્શનમાં રજુ કરી શકયા છીએ. અને આથી પણ વધુ પ્રયાસ કરત, તો સોજીત્રા, ઇડર વગેરેના મોટા શાસ્ત્ર ભંડારોમાંથી અનેક ગ્રંથો અને ચિત્રો મેળવી શકત, પણ તે સમયના અભાવે અમો કરી શકયા નથી. અમારા શ્વેતાંબરી ભાઇઓ તરફથી પણ અમોને આ પ્રદર્શનમાં મુકવા માટે પ્રાચીન ચિત્રકામના પાટીયાઓ, તખ્તાઓ, મોટી રચના, ૩ સચિત્ર પુસ્તકો, ૩ ગ્રંથો, એક મોટો નકશો વગેરે મલ્યું છે, જે માટે એ ભાઇઓના અમે અત્યંત આભારી છીએ.

આ ઉપરાંત આ પ્રદર્શનમાં બીજા ભાઇઓ તરફથી શ્વેતાંબરી આમ્નાયના ઘણાંજ પુસ્તકો, તાડપત્રો, તામ્રપત્રો, દસ્તાવેજો વગેરે રજુ કરવામાં આવેલું છે, એટલે આ પ્રદર્શનમાં લગભગ અડધું સાહિત્ય જૈનોતુંજ ગોઠવાયલું નજરે પડે છે, જે જૈનધર્મની પ્રાચીન જાહોજલાલીની સાબીતિ આપે છે.

ખપાટીયા ચકલા, ચંદાવાડી સુરત.
વીર સં. ૨૪૪૧. દ્વી. વૈશાખ વદ ૧
શનીવાર તા૦ ૨૯-૫-૧૫.

નિવેદક—
મૂલચંદ કસનદાસ કાપડીઆ
(ઑનરરી સંપાદક, 'દિગંબર જૈન' અને
ઑ. સેક્રેટરી, જૈન હિતવર્ધક મંડળ.)

इस वर्षके ग्राहकोंक हिन्दी-गुजराती भाषाकी ८-१० पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रकट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

The Digamber Jain.

युतं सुलेखैर्विविधैश्चचित्रैः, दिगम्बरंजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुत्तमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ८ मुं.	वीर सं. २४४१. ज्येष्ठ. विक्र. सं. १९७१.	अंक-८ मो.



श्रुतपंचमी पर्व.

दरेक कार्य कंई पण निमित्त वगर थतु नथी अने निमित्त मळवाथी तेनो उपयोग सारा रुपमा थई शके छे, ते मुजब आपणा शास्त्रोनी सारसंभाळ करवानो पवित्र दिवस ज्येष्ठ सुद ५ नो 'श्रुतपंचमी पर्व' ने नामे निर्माण थयेलो छे, जे आवता शुक्रवारने दिने हाथवेंतमांज आवी पहोंच्यो छे. आ तेज दिवस छे के जे दिने २००० वर्ष उपर श्री पुष्पदंत अने भूतबळी आचार्योए श्री जयधवल अने महाधवल वगेरे सिद्धांतना महान शास्त्रोने लिपिबद्ध लखीने तेनी सर्व संघ समक्ष विधिसहित पूजा करी हती अने त्यारथीज आ दिवस 'श्रुतपंचमी' तरीके प्रसिद्ध थयो हतो, पण काळक्रमे करीने अने मुसलमानी जुलमी राज्योमां शास्त्रो लूटाई जवानी के नाश थई जवानी बीकने लीधे आ पर्व मनातो बंध थई गयो हशे अने शास्त्रो पेटाराओमा के भोंयराओमा केद करी मुकवानो रिवाज पडी गयो हशे, परतु हाल सोएक वर्षथी तो न्यायी ब्रीटीश राज्य होवाथी हरकोई व्यक्ति पोतपोतानो धर्म विना हरकते पाळी शके छे माटे आवा शांतिमय समयमां आपणे, सडी जता, उधइ खाता के पानाओ चोंटीने नाश थई जता संस्कृत, प्राकृत के अन्य भाषाना अमूल्य लिखित ग्रन्थोनुं रक्षण करवानी अत्यंत जरुर छे. हाल तो एवा मुनिओ, भट्टारको के कविओ नथी के जे नवा शास्त्रो रचशे अने आपणे ते उपयोगमा लइशु, पण हाल तो जे जे रह्यासह्या शास्त्रो ज्या ज्यां होय त्यांथी तेनी सारसंभाळ अने तेनो उपयोग वगर-विलंबे करवानी जरुरछे. वळी आ पर्व घणा वर्षोथी तो आपणा प्रमादने लीधे पळातो नहोतो

વગેરે આકર્ષણીય ચિત્રવિચિત્ર દેખાવ. ૧૩. વીસ સ્થાનકમાંના ૧૧થી ૨ ૧૪. જગચંદ્રસુરી અને ઉદેપુરના રાણાનો દરબાર. ૧૫. રામરાવણના કેટલાંક ચેત્રો.

(૧૫૪)—ચૌદરાજુલોકનું મોટું પાટીઉં (રંગીન. દરેક સમજ પાટીઉં બરાબર મનુષ્યના આકારે ચિત્રેલું છે, જેથી જણાય છે ચૌદર છે. આ પાટીઉં પણ સૈયદપરાના શ્વે. દહેરાસરમાંનુંજ છે.

(૧૫૫) જંબુદ્વિપ અને નન્દીશ્વરદ્વીપની ગંજા પ્રાચીન રચના.

લાકડા ઉપર કોતરકામ તેમ રંગીન તથા સોનેરી ચિત્રકામ નંદીશ્વરદ્વીપની આ ગંજાવર રચના છે, જે પણ સૈયદપ છે અને ત્યાં વર્ષમાં બે વખત ગોઠવાય છે તે ગોઠ્વાંએ, ભરાવી લાવીને એ આખી રચના આ પ્રદર્શનમાં ગ વચ્ચે **જંબુદ્વીપ**ની રચનાના મધ્યમાં **સુદર્શન** મેરૂપર્વત છે તેમ ચારે **દ્વીપના ૫૨ ચૈત્યાલયો તથા વડવાનલની** રચના છે, જેમાં વાવે **દધિમુખ (સફેદ)**, રતિકર (લાલ) વગેરેના દેખાવો અને ચૈત્યાલયો રચનામાં સમુદ્રો, નદિયો, પર્વતો વગેરેના પણ લાકડાના દેખાવો છે. પ સોનેરી અને રંગીન ચિત્રકામ પ્રાચીન છે. ઓછામાં ઓછાં ૩૦૦-૪૦ **રચના છે,** જેનું કોતરકામ, ચિત્રકામ અને દેખાવ આકર્ષણીય છે. નંદીશ્વરદ્વીપનું સવિસ્તર વર્ણન ચર્ચાશતકમાંથી મળી આવે છે.)

ઉપર મુજબ વ્યારા, મહુઆ, કરમસદ, અંકલેશ્વર અને સુરતના રોમાંથી શોધખોળ કરીને અમો ઉપલી ૧૫૫ ચીજો આ પ્રદર્શનમાં ર અને આથી પણ વધુ પ્રયાસ કરત, તો સોજીત્રા, ઇડર વગેરેના મોટા અનેક ગ્રંથો અને ચિત્રો મેળવી શકત, પણ તે સમયના અભાવે અમો કરી શ્વેતાંબરી ભાઈઓ તરફથી પણ અમોને આ પ્રદર્શનમાં મુકવા માટે પાટીયાઓ, તખ્તાઓ, મોટી રચના, ૩ સચિત્ર પુસ્તકો, ૩ ગ્રંથો, એક મલ્યું છે, જે માટે એ ભાઈઓના અમે અત્યંત આભારી છીએ.

આ ઉપરાંત આ પ્રદર્શનમાં બીજા ભાઈઓ તરફથી શ્વેતાંબરી પુસ્તકો, તાડપત્રો, તામ્રપત્રો, દસ્તાવેજો વગેરે રજુ કરવામાં આવેલું છે, લગભગ અડધું સાહિત્ય જૈનોનુંજ ગોઠવાયલું નજરે પડે છે, જે જૈનધ જાહોજલાલીની સાખીતિ આપે છે.

ખપાટીયા ચકલા, ચંદાવાડી સુરત.
વીર સં. ૨૪૪૧. દ્વી. વૈશાખ વદ ૧
શનીવાર તા૦ ૨૯-૫-૧૫.

નિવેદક—
મૂલચંદ કસનદા
(ઑનરરી સંપાદક,
ઑ. સેક્રેટરી, જૈન

करवां तथा जो ते ग्रंथोनुं
र होय तो ते तरतज करवुं
ालोने एक उंचा आसन
स्कंधपूजा (शास्त्रपूजा)
जोइए तथा तेज समये
नी कथा याने श्रुतावतार
जैन' अने 'जैन हितैषी'ना
येली छे, ते सर्वे समक्ष
ोइए.
दी पांचमनो दिवस एवी
मठामथी पाळवो जोईए
णवामां आवे के आजे
दिवस छे.
मंदिरोमां जे जे शास्त्रो न
हो ओर्डर आज दिवसे करी
ापेलां न मळतां होय तेने
करवी जोइए अथवा तो
ानी कोशीश थवी जोइए.
संस्कृत–प्राकृत भाषाना
के राजवार्तिकजी, आप्त-
वगेरे अनेक ग्रंथो मळवां
सरकारी युनिवर्सीटीनां
थइ चुक्या छे, जेथी ते
वानी जरुर होवाथी बा-
नालाल बाकलीवाल-
जिनग्रंथमाला' नामे
करी रह्या छे, जेनी
) छे, जेमां आशरे रु. १५)
ुको मळी शके छे, जेथी
द्रव्यथी न बने तोपण
ंडारना द्रव्यथी पण आ
थवानी अत्यंत जरुर
न मळवाथी हाल पं. पन्ना-

लालजी हताश थई मोटा विचारमां पडया छे, ते आथी दूर थई आ ग्रंथमाळानुं अपूर्व कार्य चालु रही शकशे.

५. दरेक जैने दररोज स्वाध्याय करवानो (नियमित रीते दररोज सवारे धर्मग्रंथ वांचवानो) नियम न होय तो जरुर लेवो जोईए. एकेक पानुं वांचतां एक वर्षमां ३६५ पानांओ वंचाई ए प्रमाणे अनेक ग्रंथो धीमेधीमे वांची शकाय छे.

६. जेमने वांचतां न आवडतुं होय तेवा पुरुषो तथा स्त्रीओए बीजा कोई पासे कंई ने कंई शास्त्र दररोज सवारे सांभळवानो नियम लेवो जोईए.

७. जे जे शास्त्रो अव्यवस्थित, नकामा अने सचवाय तेम न होय ते अमारा उपर मोकली आपवा एटले अमो तेनी सारसंभाळ करीशुं अथवा तो आराना जैनसिद्धांत भवनमां मोकली आपीशुं.

८. ज्यां ज्यां जैन वांचनालय अने पुस्तकालय न होय त्यां त्यां ते अवश्य स्थापवुं जोईए.

९. आ पर्वने दिने मिष्ट भोजन करी ए निमित्ते सर्वेए पोतपोतानी शक्तिमुजब शास्त्रदान करवुं जोईए तथा आपणी जाणीती संस्थाओ जेवी के स्याद्वाद महाविद्यालय-बनारस, जैन सिद्धांत विद्यालय-मोरेना, श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम-हस्तीनापुर, वगेरे संस्थाओमां बनी शकती मदद मनीओर्डरथीज मोकली देवानी जरुर छे.

१०. आ दिने सांजे एक जाहेरसभा करी तेमां 'श्रुतपंचमीपर्व अने आपणुं कर्तव्य' ए विषय उपर भाषण अपावी जैन शास्त्रोनो जीर्णोद्धार करवानो प्रबंध करवो जोईए.

उपर मुजब आ पर्वने बनी शकता ठाठथी उजववानी जरुर छे. आ पर्व दरेक स्थळे केवी-रीते पळायो ते समाचार अमोने ज्येष्ठ सुदि १३ सुधीमां सर्वेए मोकली आपवा के जेथी ते आवता अंकमां प्रकट थई शकशे.

* * * *

साहित्यनुं प्रदर्शन. જે માટે ઘણા દિવસોથી હિલચાલ ચાલતી હતી, તે **ગુજરાતી પાંચમી સાહિત્ય પરિષદ અને પ્રદર્શન** સુરતમાં ભરાઇ ગયાં છે અને અમને જણાવતાં આનંદ થાય છે કે આ પરિષદ અને પ્રદર્શનમાં જૈનોએ પણ કંઇક ફાળો આપ્યો હતો ખરો. પરિષદમાં અનેક નિબંધો વંચાયલા તેમાં એક બે નિબંધો જૈનોના પણ હતા તથા પરિષદને અંગે જે પ્રાચીન સાહિત્યનું પ્રદર્શન ભરવામાં આવેલું હતું, તેમાં તો પ્રાચીન **જૈન સાહિત્ય** સારા રૂપમાં રજુ થઇ શક્યું હતું, જે આજ અંકમાં પ્રથમ ૧૨ પૃષ્ઠો ઉપર, પ્રદર્શનમાં અમારા **તરફથી** મુકાયલી **૧૫૫ ચીજોની** વીગત વાંચવાથી સ્પષ્ટ માલમ પડી આવશે. જો કે આ સાહિત્ય સંગ્રહ કરવાને દોઢ મહીના સુધી અમારે પ્રયાસ કરવો પડયો હતો અને તેને વ્યવસ્થા-પૂર્વક તૈયાર કરીને મુકવામાં અમારા મિત્રો ભાઈ છગનલાલ સરૈયા, ભાઈ મટુભાઈ ભાઇદાસ (જૈન પ્રેસના મેનેજર) વગેરેએ ઘણી મદદ કરી હતી, તેઓના અમો અત્યંત આભારી છીએ. માત્ર વ્યારા, મહુવા, સુરત, કરમસદ અને અંકલેશ્વરના શાસ્ત્રભંડારો ઉપલક જોવાથી તેમાંથી અમૂલ્ય ગ્રંથો, ચિત્રો, નકશાઓ વગેરે મળી આવ્યું છે, તો માત્ર **ગુજરાત પ્રાંત**માંના બધાજ શાસ્ત્રભંડારોનુ જો નિરીક્ષણ કરવામાં આવે અને તે દરેક ભંડારનું **સૂચીપત્ર કરાઇને પ્રકટ થાય, તો આપણું ગુજરાતનું સાહિત્ય અજવાળામાં આવી શકે**



સીતવાડામાં સભા:—સીતવાડામાં ગયા માસમાં મફતલાલ કસ્તુરદાસના પ્રમુખપણા નીચે સભા થઈ હતી જેમાં શા. લલ્લુભાઈ રાયચંદ અને ગાંધી જીવરાજ ગુલાબચંદે કેળવણી તથા દારૂમાંસનિષેધ ઉપર ભાષણો કરવાથી ૨૦ ઠાકોરેએ **દારૂ માંસ નહિં વાપરવાની પ્રતિજ્ઞા** લીધી હતી.

काशीमें यज्ञोपवित् संस्कार और दीक्षाविधि—गत ता. ३ मईको काशीमें स्याद्वाद् महाविद्यालयके २७ छात्रोंको बड़ा उत्सवपूर्वक और शास्त्रोक्त विधिपूर्वक ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने यज्ञोपवित संस्कार करवाया था और कारंजानिवासी चिंतामण बनशीगडिकरने ब्रह्मचर्य दीक्षा ली थी और ब्र. ब्रजलालजी शुकल वेदान्ततीर्थने पंचाणुव्रत लिये और निरीह वृत्तिसे जैन जातिकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा की थी। इसी मौके पर ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी, रसायनशास्त्री श्यामसुंदराचार्य, पं. गजाधरलालजी न्यायशास्त्री, पं. उमरावसिंहजी आदिके भी सुललित व्याख्यान हुए थे।

सिरोंजकी पाठशालमें २१ विद्यार्थी पढ़ते हैं, परीक्षाफल संतोषप्रद है परंतु यहांके भाईओंमें अनैक्यता होनेसे पाठशालाको जैसी सहायता चाहिये ऐसी नहीं मिलती है। यहांके भाईओंको इस ओर ध्यान देना चाहिये।

औषधि मुफ्त—निम्नलिखित पतेपर सिर्फ डाक टिकट भेजनेसे नेत्रांजन, बुखार, प्रदर, गर्मीसुजाक, बीछु, डाढ़दांतकी दवा, खांसी आदिकी दवा केवल मुफ्त मिलती है—पं. ठाकुरप्रसाद, जैनी मंदिर, सिरोंज—(टोंक)।

વોલંટીયર મેડલ વેંચાયા:—પાલીતાણામાં ગયા વર્ષમાં મળેલી કોન્ફરંસના ૪૦ વોલંટીયરોને શ્રીમાન્ દાનવીર શેઠ હુકમચંદજી તરફથી ખાસ મેડલો તૈયાર થઈ વેંચવામાં આવ્યા છે. આ મેડલો જે વોલંટીયરોને ન મળ્યા હોય તેમણે શા૦ ચુનીલાલ વેણીચંદ (સનાતન હાઇસ્કુલ, ભાવનગર)ને પત્ર લખી મંગાવી લેવાં.

સુરતમાં સભાઓ:—ગત માસમાં અત્રે પાંચમી ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ અને પ્રદર્શન પ્રસંગે જૈનધર્મભૂષણ બ્રહ્મચારી **શીતલપ્રસાદજી** અને જાણીતા વકતા પં. ફતેહચંદ કપુરચંદ **લાલન** પધારેલા હોવાથી અત્રે જૈનહિતવર્ધક મંડળ તરફથી તા. ૩૧ મીએ એક જાહેર સભા પરિષદના મંડપમાં ડકકન કોલેજ (પુના)ના પ્રોફેસર મી. બળવંતરાય કલ્યાણરાય ઠાકોર બી. એ.ના પ્રમુખપણાનીચે ચયેલી, જેમાં પં. લાલને જૈનધર્મ અને બ્ર. શીતલપ્રસાદજીએ 'જૈનધર્મનું પ્રાચીન સાહિત્ય' એ વિષયો ઉપર ભાષણો આપ્યાં હતાં, જેમાં જૈન તથા અજૈન ભાઇઓની ઘણી સારી સંખ્યા હાજર હતી.; વળી; બીજી જાહેર

સભા તા. ૧લીએ રાત્રે ચંદાવાડીમાં થયેલી, તેમાં બ્ર. શીતલપ્રસાદજીના પ્રમુખપણા નીચે પં. લાલને 'આપણી ધાર્મિક પ્રગતિના માર્ગો' એ વિષય ઉપર ૧॥ કલાક સુધી ઉત્તમ ભાષણ આપ્યું હતું તથા આ પ્રસંગે પં. અર્જુનલાલજી શેઠીપર આવેલી પડેલી આફત સંબંધી નીચેનો ઠરાવ સર્વાનુમતે પસાર થયો હતો, જે પ્રસંગે ત્રણે ફિરકાના જૈન ભાઇઓ સારી સંખ્યામાં હાજર હતા—

"All the members of three sects of Jains of Surat assembled this evening at Chandawadi express their heartfelt grief at the confinement of Pandit Arjunlal Sethi B A. by the Jaipur State without trial over a year ago and as in their opinion, Sethiji is a learned Jain Pandit and a reformer of the community and so is beyond any political suspicions, therefore they request H. H. the Maharaja Jaipur and H. E. the Viceroy to release the Pandit in order to allay the dissatisfaction from the hearts of the Jainas. Copies of this resolution be forwarded to H. H. the Maharaja (Jaipur) and H. E. the Viceroy." (Simla).

Dated 1st June 1915.

"સુરતના ત્રણે ફિરકાના જૈન ભાઇઓની ચંદાવાડીમાં મળેલી મીટીંગ પં. અર્જુનલાલજી શેઠી બી. એ. ને વગરતપાસે એક વર્ષ થયાં જયપુર રાજ્યે જેલમાં નાંખેલા છે તે માટે પોતાના અંતઃકરણપૂર્વક દિલગીરી જાહેર કરે છે કેમકે જૈનોના અભિપ્રાય પ્રમાણે શેઠીજી એક વિદ્વાન જૈન પંડિત તેમજ જાતિસુધારક છે તથા રાજદ્રોહના સંદેહોથી રહિત છે તે માટે તેઓ જયપુરના મહારાજા અને નામદાર વાઇસરોય સાહેબની સેવામાં અરજ કરે છે કે તેઓ પંડિતજીને મુક્ત કરે કે જેથી જૈનોના હૃદયમાં જે અસંતોષ ફેલાઇ રહેલો છે તે દૂર થાય. આ ઠરાવની નકલ જયપુરના મહારાજા અને નામદાર વાયસરાયને મોકલવામાં આવે. તા. ૧-૬-૧૫.

सहायताकी आवश्यकता—श्री जैन-सिद्धांत विद्यालय-मुरेनाकी ओरसे न्यायालंकार पं. मख्खनलालजी और पं. कुंवरसेनजी शर्मा गुजरात-दक्षिणमें परिभ्रमण कर रहे हैं इसलिये जहांर वे आवें वहांके भाईओंने यथाशक्ति सहायता विद्यालयको अवश्य देते रहना चाहिये। आजकल यह विद्यालय बड़ा भारी कार्य कर रहा है और वहां खर्चकी बड़ी जरुरत है।

પ્લેગથી બચ્યા:—ઉમકાથી શા. કાળીદાસ અમથાભાઇ જણાવે છે કે ફાગણ માસમાં અત્રે પ્લેગ ચાલતો હતો ત્યારે માલવા પ્રાં. સભાના ઔષધાલયમાંથી મેં પ્લેગની તથા તાવની દવા મંગાવી હતી તેથી ૮ માણસો પ્લેગથી બચ્યા છે માટે આ (મફત) ઔષધાલયનો લાભ સર્વેએ લેવો જોઇએ.

સુરતમાં સભા—અત્રેની માસિક સભા દ્વિ. વૈશાખ સુદ ૨ને દિને ભાવનગર સ્ટેટના રિટાયર્ડ ન્યાયાધીશ રા. ઠાકોરદાસ નવલચંદના પ્રમુખપણા નીચે ચંદાવાડીમાં મળેલી, તેમાં વૈદ્ય કસ્તુરચંદ નવલચંદે 'ધર્મસેવા.' એ વિષય ઉપર ભાષણ આપ્યું હતું.

સુરતમાં ધર્મશાળા અને વેદી પ્રતિષ્ઠા—અત્રે તાસવાળા વેણીલાલ કેશુરદાસ તરફથી સ્ટેશન ઉપર એક નાની ધર્મશાળા બંધાવવામાં આવી છે તેમાં ઘર દહેરાસર પણ બનાવેલું છે, જેની વેદી પ્રતિષ્ઠા જ્યેષ્ઠ

સુદ ૨ થી ૬ સુધી ધામધુમથી થનાર છે. આ પ્રસંગે મુંબાઇનો કૃત્રિમ ઘોડાનો રથ પણ આવનાર છે. રથોત્સવ પાંચમે અને પ્રતિષ્ઠાનું મુહૂર્ત છઠ્ઠનું છે. આ ધર્મશાળામાં ૬ ઓરડીઓ છે, જેમાં આશરે ૩૦-૪૦ આદમી ઉતરવાની સગવડ છે. આથી સુરત સ્ટેશને ઉતરનારા દિગંબરી યાત્રાળુઓને ધર્મશાળા અને મંદિર બન્નેની સગવડ થઇ છે.

वड़नगरमें प्रतिष्ठोत्सव और अधिवेशन–यहांपर द्वि. वै. सुदि २से ९ तक पंच-कल्याणकपूर्वक प्रतिष्ठामहोत्सव बड़े समारोहके साथ हुआ था जिसमें अनुमान ६०००की जनसंख्या उपस्थित थी और मालवा प्रां. सभाका नैमित्तिक अधिवेशन ता. १८–१९ मईको नसीराबादनिवासी सेठ ताराचंदजी रईसके सभापतित्वमें हुआ था, जिसमें दानवीर सेठ हुकमचंदजी, रा.बा. सेठ कल्याणमलजी, रा. ब. सेठ कस्तूर-चंदजी, सेठ बालचंदजी, सेठ छुन्नालालजी, लाला जम्बूप्रसादजी, ब्र. शीतलप्रसादजी, बाबा भगीरथजी वर्णी, पं. खूबचंदजी, पं. उदयलालजी, पं. मा. दीपचंदजी, पं. लालारामजी, पं. पन्नालालजी गोधा, पं. जवाहीरलाल शास्त्री आदि श्रीमानों और विद्वानों उपस्थित थे और निम्नलिखित १९ प्रस्ताव हुए हैं । (१) युद्धकी शांतिके लिये प्रार्थना । (२) श्रीमान् सम्राट पंचम ज्योर्जने अपने कुटुम्बमें मदिरा निषेधकी आज्ञा दी है इसके लिये हर्ष और ब्रीटीश गवर्नमेंट तथा अन्य राजा महाराजाओंको भी ऐसा घृणित व धर्मविरुद्ध पदार्थको अपने राज्यकुटुंबसे नहीं किन्तु अपने राज्यसे निकालनेकी प्रार्थना । (३) वैद्य फतेहलालजी गोधाको 'जैन वैद्यभूषण' की पदवी प्रदान और वैद्य गनपतिजीको एक मेडल मिलना । (४) इन्दौरमें एक ऐसा सरस्वति भवन स्थापित किया जाय जिसमें सर्व विषयके प्राचीन-अर्वाचीन दि. जैन ग्रन्थों संग्रह किये जायं । (५) रातडिया ग्राममें घोर हिंसा बंद करनेके लिये श्रीमान् रा. ब. बापूरावजी सूबे साहबको धन्यवाद । (६) श्रीयुत देशभक्त गोखलेकी मृत्युपर शोक और ऐसे ही स्वार्थत्यागी विद्वान जैनियोंमें उत्पन्न होनेकी भावना प्रकट करना । (७) सभाके आधीनस्थ जीर्ण व अव्यवस्थित मंदिरोंकी रक्षा व सुव्यवस्थाके लिये एक जीर्णोद्धार फंड स्थापन किया जावे। (८) वागड़ प्रान्तमें प्रत्येक ग्राममें पाठशाला और कन्याशाला स्थापित करनेके लिये प्रयत्न करना और आवश्यकतानुसार विद्या-विभाग द्वारा सहायता की जाय जिसके लिये वार्षिक रु. ३००) पांच वर्षके लिये स्वीकार करना । (९) व्यर्थव्यय बंद किया जाय । (१०) विवाह आदि पर सभाके लिये लाग लगानेकी उपदेशक द्वारा प्रेरणा की जायं । (११) इलाहाबादकी जैनधर्मसभाने विधवाविवाहका प्रस्ताव किया है उसके लिये विरोध और खेद

प्रकट करना। (१२) सभाकी धाकायदा रजीस्ट्री की जावे। (१३) दि. जैन समाजमें प्रतिष्ठाकारक तथा ज्योतिष व वैद्यकके विद्वानों तैयार करनेके लिये प्रत्येक विषयका कमसे कम एक२ विद्यार्थी तैयार किया जाय, जिसके लिये ३०) मासिक तीन वर्ष तक देनेकी स्वीकारता। (१४) वेश्यानृत्यकी प्रथा बंद की जाय। (१५) जैन विद्यार्थीओंके जीवननिर्वाहार्थ मालवामें एक औद्योगिक शाला खोली जावे अथवा दानवीरों सेठ हुकमचंदजी, सेठ कल्याणमलजी और सेठ कस्तूरचंदजीको इन्दौरके हुकमचंदजी महाविद्यालयमें एक औद्योगिक कक्षा खोलनेके लिये प्रार्थना। (१६) कन्नोजकी बिरादरीमें दो तड होनेसे कई महीनोंसे मंदिरोंमें तालें पडे हैं जिससे अविनय और धर्मघात होता है इसलिये महासभाको उचित प्रबंध करनेके लिये सूचित करना। (१७) पं. श्री. अर्जुनलालजी सेठी बी. ए. को एक वर्ष हुए जयपुर राज्यने विना किसी अपराध निर्णय किये हिरासतमें डाल रखा है तथा समाजकी ओरसे अनेक प्रार्थना होनेपर भी मुक्त नहीं करते इसलिये खेद प्रकट करना और महाराजा जयपुर, तथा वाइसरायको पुनः प्रार्थना करना। (१८) देश—व्यापार वृद्धि तथा परस्पर प्रेम बढानेके लिये समस्त भारतवर्षमें एक ही भाषा और लिपिकी आवश्यकता है और वह भाषा नागरी हो सकती है इसलिये नागरी भाषा और लिपिके प्रचारका प्रयत्न करना। (१९) उपदेशक और औषधालयविभागको धन्यवाद और जनरल फंड खोलकर आधा सभामें और आधामेंसे मथुरा—काशी-मुरैना विद्यालय, रुषभ ब्रह्मचर्याश्रम और बागड़ प्रान्तकी पाठशाला ऐसी पांच संस्थाओंमें दिया जाय।

अपील होते ही सेठ हेमराजजी घन्नालालजीने रु. ६०१) और सेठ ताराचंदजीने रु. १०१), सेठ हुकमचंदजीने रु. ५१) और फुटकल मिलकर रु. १००३॥ का जनरल फंड हुआ था और रु. ७५) की सहायता औषधालयको मिली थी और सेठ हुकमचंदजीने ४) मासिक औषधालयको देना स्वीकार किया और सभाके १४ नवीन सभासद हुए थे।

मदद मळी—श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमने मार्च मासमां रु. १३७६)=॥नी मदद मळी हती.

निमाया—मुंबाई दि. जैन प्रांतिक सभाना स्थायी सभापति तरीके शेठ हीराचंद नेमचंद दोशी (सोलापुर) नीमाया छे.

महिला परिषद्—बड़नगरके मेलेमें भारत दि. जैन महिला परिषदका नै. अधिवेशन सौ. गुलाबबाई—इन्दौरके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें रु. १९०)

बम्बई श्राविकाश्रमको मिले थे और वैराग्य, शीलकी महिमा, कुरीति निवारण, चार आश्रमों, विद्या, स्त्रीशिक्षा, गंभीरता आदि विषयोंपर श्रीमती लक्ष्मीबाई, श्री.सुभद्राबाई, रामदेवीबाई आदिके व्याख्यान हुए थे।

नवीन पांच तीर्थ थया—कलकत्ता संस्कृत युनीवर्सीटीमां सौथी उंची तीर्थ परीक्षा छे, जेमां काशीमां मैदागिनमां रहीने भणता त्रण विद्यार्थीओ पं. गजाधरलाले, प्राचीन न्यायतीर्थनी परीक्षा मध्यम वर्गमां आपी युनीवर्सीटीमां बीजे नंबरे पास करी छे, जेथी जैनोमां प्रथम न्यायतीर्थ आ पंडित थया छे, तेम पं. श्रीलाल काव्यतीर्थनी प्रथम श्रेणीमां—१५० विद्यार्थीओमां बीजे नंबरे पास थया छे तथा पं. मुन्नालालजी पण काव्यतीर्थमां १३०मां पहेले नंबरे पास थया छे. वळी स्याद्वाद् महाविद्यालयना बे विद्यार्थीओ अभयचंद्र तथा गोविन्दराय पण काव्यतीर्थनी परीक्षामां पास थया छे. प्रथम ३ विद्यार्थीओने घणुं करीने सरकार तरफथी स्कोलरशीप पण मळनार छे.

સોલાપુરમાં મહાવીર જ્ઞાનજયંતી—સોલાપુરમાં જૈનસિદ્ધાંત પાઠશાળા મોરેના તરફથી પં. મખ્ખનલાલજી તથા પં. કુંવરસેન શર્મા ભ્રમણ કરતા ગયા માસમાં પધારેલા હતા ત્યાં તેઓને સારો આવકાર અપાઈ બેત્રણ વ્યાખ્યાન-સભાઓ થઈ હતી તથા દશ દશ રૂપિયા માસિકની બે સ્કોલરશીપો શેઠ હરીભાઈ દેવકરણ તથા શેઠ હીરાચંદ અમીચંદ તરફથી મળી હતી તેમજ વૈ. શુદ ૧૦ને દિને મહાવીર જ્ઞાનજયંતી ઉત્સવપૂર્વક ઉજવાઈ વ્યાખ્યાનો થયાં હતાં, તથા એક સ્ત્રી સભા પણ થઈ હતી,

પ્રતિષ્ઠા અને પરિષદ—વંથલી (જુનાગઢ) માં શેઠ દેવકરણ મૂળજી તરફથી ગંજાવર પ્રતિષ્ઠોત્સવ જેઠ શુદ ૨ થી ૬ સુધી થનાર છે તેમાં ત્રણ દિવસ જૈનપરિષદ ભરાનાર છે, જેમાં ત્રણે ફિરકાના વિદ્વાનોને આમંત્રણ થયું છે. દરેક પ્રતિષ્ઠા ઉત્સવ પ્રસંગે આવીજ સભાઓ થવાની જરૂર છે.

त्रण हजार वर्षनुं प्राचीन जैन मंदिरः—मी. सी. एस. नैनर आर्कोनम (Mr. C S. Nainor, Arkonam.) पोतानी मार्च मासनी वीझीटमां जणावे छे के मद्रासथी पचास माइल उपर ट्रुनी (Trutani) स्टेशनथी ४ माइल उपर अरुंगनम (Arunganam) नामे गाममां एक प्राचीन जैन मंदिर छे जे ३००० वर्ष उपरनुं बंधायलुं जणायुं छे. सरकार तरफथी कंइक जग्या अपायली छे तेनी उपजमांथी नित्य-पूजन थाय छे. अत्रे जैनोनी वस्ती नथी, पण अजैनो मंदिरनी पूजा करे छे. अत्रे २५ मी जुने मोटुं पूजन थवानी गोठवण थइ छे.('Jain Gazette' April 1915.)

तीर्थक्षेत्र कमीटीए कोई विद्वानने मोकली आ प्राचीन मंदिरनी प्रतिमानी तपास कराववी जोईए के जेथी जैन धर्मनी प्राचीनता संबंधमां अनेक बाबतो अजवाळामां आवी शकशे.

आ वर्षनी भेटो संबंधी खुलासोः—आ वर्षना ग्राहकोने हिंदी-गुजराती भाषानां ओछामां ओछा ८ पुस्तको भेट आपवाना छे, ते पैकी प्रथम भेट 'श्री जिनचतुर्वि-

शांति काव्य' चैत्रना अंक साथे मोकलवामां आवी छे अने बीजी भेट नामे "जीव विचार" आ अंक साथे ईडरनिवासी कोठारी पुंजीराम उदेचंद तरफथी पोताना पुत्र अने पौत्रना स्मरणार्थे वहेंचवामां आवी छे ते ग्राहकोए संभाळी लेवी. तेमज भेटनो हिंदी महान नवीन ग्रंथ 'श्री सागारधर्मामृत' शास्त्र (मूल हिंदी टीका सहित, पूर्वार्द्ध पृष्ठ ३९०) छपाई चुक्यो छे अने बाईन्डींग थाय छे तथा बीजा बे त्रण भेटना ग्रंथो छपाय छे जे तैयार थशे एटले त्रण के चार भेटना ग्रंथोनुं भेगुं बुकपोस्ट लगभग एक मासमां रवाना करवामां आवशे, माटे भेटना पुस्तको संबंधी ग्राहकोए अधीरा थई वारंवार पत्रव्यवहार करवानी तस्दी लेवी नहीं, कारणके बधांज पुस्तको नवीनज छपाववानां छे. आश्विन मास सुधीमां आ वर्षमां आपवानी बधी भेटो ग्राहकोने घेर बेठां पहोंची जशेज ते माटे निश्चित रहेवुं.

स्वीकार—समालोचना स्थानाभावने लीधे आवता अंक माटे मुलतवी.

स्वर्गीय दानवीर सेठ माणेकचंदजीका जीवनचरित्रके लिये

आवश्यक विज्ञापन.

सर्व जैनी भाइयोंको विदित होयहीगा कि स्वर्गवासी दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंद हीराचंद झवेरी जं. पी. की अमूल्य जीवनीको चिरस्मरणीय रखनेके वास्ते इस 'दिगंबर जैन' पत्रने एक स्मारक फंड खोला था जिसमें आजतक रु. १३९१–९–० हुए है जिससे सबसे पहले उक्त सेठजीका एक बड़ा विस्तारपूर्वक सचित्रजीवन चरित्र निकालनेका पक्का विचार दृढ कर लिया गया है।

हर्षकी बात है कि 'जैन मित्र' के सुयोग्य संपादक जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने इस जीवनचरित्रको लिखनेकी प्रार्थना किये जानेपर अपनी स्वीकारता दी है, परंतु इस चारित्रके लिये बहुत कुछ सामग्रीके इकट्टा करनेकी जरूरत है अतएव—

सर्व बोर्डिंग, विद्यालय, पाठशाला, सभाके मंत्रियोंकि व सर्व नगरके प्रतिष्ठित व परोपकारी भाइयोंकी व सर्व तीर्थोंके व्यवस्थापकोंकी सेवामें सविनय निवेदन है कि वे अपनी २ संस्थाओंकी उन रिपोर्टोंको जिनमें उक्त सेठजीने संस्थाके साथ क्या २ उपकार किया व कहां कहां क्या २ जातिसुधार किया व अनैक्यताओंको मेटा व झगडे मिटाएं व दुरस्ती कराई उस सर्वका हाल मुझे शीघ्र भेजें तथा सेठजीके जिन हस्ताक्षरी पत्रोंमें कोई उपदेश, शिक्षा व योग्य सम्मति लिखी गई हो उन पत्रोंको भी असलमें ही भेजदे। नकलके बाद वे लौटा दिये जावेंगे।

इसके सिवाय और जो कोई हाल किसीको मालूम हो वे मुझे सूचित करें। उक्त सेठजीने जैनसमाजके साथ जो २ उपकार किया वह वचन अगोचर है उसको ध्यानमें लेकर सर्व भाई मुझे शीघ्र मदद करें, तो जीवनचरित्र बहुत उत्तम और बहुत शीघ्र प्रकट हो सकता है।

जैन समाजका सेवक—
मूलचंद किसनदास कापड़िया
C/o. 'दिगंबर जैन' ऑफिस–सूरत।

स्वर्गीय दानवीर शेठ माणेकचंदजीनी
उच्च मनोभावना.

(ગયા અંકથી ચાલુ.)



બુદ્ધિબળ.

સામાન્ય રીતે બુદ્ધિના બે પ્રકાર નજરે પડે છે. એક પ્રકારની બુદ્ધિ જ્ઞાનના દરેક પડમાં ઘુસી જઈ, તેની બધી બાજુઓ તપાસી નાંખે છે એટલે જે વસ્તુ જોવામાં આવે અથવા કોઈ પુસ્તક વાંચવામાં આવે, તો તેનો પાકો અભ્યાસ કરી તેનું પાકું જ્ઞાન સંપાદન કરે. કોઇ વિષય હાથમાં લીધો તો, તેનું પુરું જ્ઞાન મેળવવા ઇચ્છા કરે. બીજા પ્રકારની બુદ્ધિ જ્ઞાનની ઉપરની સપાટી ઉપર ઉતાવળથી પસાર થઇ જાય છે એટલે જે જે જોવા-દેખવા, સાંભળવા, વાંચવામાં આવે તેનો ભાવાર્થ સમજી ઘણી બાબતોનું ઉપરટપકેનું કામચલાઉ જ્ઞાન મેળવી સંતોષ પામે છે. પ્રથમ પંક્તિનું જ્ઞાન વિસ્તારમાં થોડું, પરંતુ ઉંડું હોય છે જ્યારે બીજા પ્રકારનું જ્ઞાન મોટા વિસ્તારવાળું અને ઘણા વિષયો ઉપર રાજ્ય કરે છે. પહેલા પ્રકારના જ્ઞાનથી અમુક વિષયમાં પ્રવીણ શાસ્ત્રી કે વેત્તા તૈયાર થાય છે ત્યારે બીજા પ્રકારના જ્ઞાનથી મોટા તત્ત્વવેત્તાઓ અને દુનિયાને ઉપયોગી વિદ્વાનો પેદા થાય છે. મહૂંમ શેઠ માણેકચંદજીની બાબતમાં ખરી રીતે એક પ્રકાર પુરા રૂપમાં લાગુ પડતો નથી. **આ શેઠે ગુજરાતી ત્રણ ચાર ધોરણનું કામચલાઉ શિક્ષણ** લીધેલું હોવાથી તેમને કંઈ પ્રથમ પુસ્તકવાંચનનો શોખ નહોતો, પરંતુ દુનીઆના વિષયોમાં ચંચુપ્રહાર પણ થાય તો ઠીક તેવી ધારણાથી જ્યાંત્યાંથી પ્રસંગ મળ્યે માહીતિ મેળવતા. મુંબઇ જેવી મનોહર અને વિશાળ નગરીમાં ઘણી જાતની પ્રવૃત્તિઓ ચાલી રહેતી, તેની ખબર રાખતા. બનતા સુધી લોકોપયોગી અને સામાજિક લાભની મીટીંગોમાં ભાગ લેતા. મીટીંગના વિષયો ઉપર મનન કરતા, અન્ય કોમો પોતાની કોમને કેમ લાભ કરી શકે છે, તે ઉપર ઘણું ધ્યાન આપતા. પોતે મીટીંગમાં પ્રથમ બોલી શકતા નહીં, પરંતુ ઉમરે આવતાં અને અનુભવ મેળવતાં પુસ્તક વાંચવાનો શોખ વધ્યો અને શક્તિ અનુસાર બોલવાની કળા પણ શીખવા લાગ્યા. તેઓ જે જોતા તેના ઉપયોગી લક્ષણ તરફ તરત દૃષ્ટિ દોડાવતા. **ખાસ કરીને કેળવણીનો પ્રસાર કેમ થાય તે ઉપર ઘણું બારીક નજરથી લક્ષ આપતા.** પોતાનું જ્ઞાન બોહોળું નહીં, પરંતુ બુદ્ધિ ચંચળ હતી, તેથી તથા અનુભવે કરીને એમને એમ ધૂન લાગી કે **કોમની કેળવણી વધારવી.** આના પરિણામરૂપ પ્રથમ **મુંબાઇની શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજી જૈન બોર્ડિંગ સ્થપાઈ.** મુંબઇ ઇલાકામાં બોર્ડિંગનો વિચાર મહૂંમ દેશભક્ત નર શેઠ **ગોકળદાસ તેજપાળે સન ૧૮૮૦**ના અરસામાં ગોવાલીઆ ટેન્કરોડ ઉપર એક એવી સંસ્થા સ્થાપી બાહાર પડયો, પરંતુ તેનું અનુકરણ હીંદુઓમાં પ્રથમ સન ૧૯૦૦ની સાલમાં મુંબઈની શેઠ હી. ગુ. જૈન બોર્ડિંગ સ્થાપી ઉક્ત ઝવેરી શેઠ માણેકચંદજી અને તેમના ભાઇઓએ કર્યું. તે બાદ સન **૧૯૦૩માં અમદાવાદ** માં શેઠ પ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડિંગ સ્કુલ સ્થાપી ગુજરાતને દાખલો દેખાડયો કે કોમની કેળવણી વધારવાનો પ્રથમ ઉપાય બોર્ડિંગ છે, જેનો દાખલો લઇ તે બાદ ઘણી બોર્ડિંગો અન્ય કોમોની અમદાવાદ-ભાવનગર-પાલીતાણા વીગેરે સ્થળોએ સ્થપાઈ. એમની **ચંચળ બુદ્ધિની છાપ** એમની **સ્મરણશક્તિ** ઉપર સારી રીતે પડી હતી. મીટીંગોમાં જે જે સાંભળતા તથા જે જે ગૃહસ્થો અને વિદ્વાનોના પરીચયમાં આવતા તે સર્વને લાંબી મુદતે પણ સારી રીતે

ઓળખી શકતા. ઉમરે પહોંચતાં દરરોજ કરવાના કામની નોંધ રાખતા. સ્મરણશક્તિનો ગુણ ઝવેરાતના વેપારમાં સારો કેળવાયો હતો. **એક વખત જોયેલો માલ બીજી વખત જલ્દી પરખી શકતા.** આવી રીતે હોવાથી **તીર્થક્ષેત્રકમીટી**ના મહામંત્રી, **પ્રાન્તિક સભા**ના પ્રમુખ, **મહાસભા**ના પ્રમુખ તરીકે વીગેરે ઉપયોગી અને જોખમી હોદ્દા ઉપરનાં કાર્યો કરવામાં આ શક્તિ વધારે ઉપયોગી થઈ પડી હતી, કેમકે પોતાને લખવાની બાબતમાં એટલો બધો શોખ નહોતો પરંતુ મગજમાંથી ઘણી બાબતો કાઢી બીજા પાસે ઘણું કામ લેતા અને ધીરજ, ખંત અને ચોકસ કામ કરવાની ટેવને લીધે **હાથમાં લીધેલું કાર્ય કોઇ પણ પ્રકારે ચોકસાઈથી પુરૂં કરતા.**

"જેનું જેવું હૃદય, અવરનું પર્ખે તેવું;
નિર્મળ અંતર હોય, અન્યનું નિર્ખે તેવું;
નિજ મન કોમળ હોય, અન્યને કોમળ લેખે;
આપ મલિન જો હોય, અવરને તેવા પેખે;
જે સત્ય સારગ્રાહી ગુણી, ભલું જગત તે ભાળતા;
એ આપ સમા સૌને ગણી, સેવક-સુતપણ પાળતા."

સદ્વર્તન

હૃદયની શુદ્ધતા સાથે સદ્વર્તનને ગાઢો સંબંધ છે. જ્યાં એક હોય છે ત્યાં અન્યને સ્થાન મળે એટલુંજ નહીં, પરંતુ એકના કારણથી બીજું પરિણામરૂપે બહાર પડે છે. વ્યવહારમાં કેળવાયલા વર્ગમાં આ ગુણ વધારે પ્રમાણમાં હોય એમ મનાય છે, પરંતુ ચાલુ જમાનાની કેળવણી લીધેલી નહીં છતાં પણ શુદ્ધ અંતઃકરણ હોવાથી પોતાનું વર્તન સાફ રાખતા હતા. બોલીમાં, ચાલીમાં કે અન્ય રીતે કોઇ સાથે પ્રસંગ પડતા વિવેક મર્યાદાથી વર્તતા, પ્રમાણીકપણું સજતા નહીં, તેમની બીજી ટેવો નિયમિત હતી. એશઆરામ જેવા દુર્ગુણે તેમનામાં પ્રવેશ સરખો કર્યો નહોતો. ફક્ત કર્તવ્યનિષ્ઠા તરફ દૃષ્ટિ રાખતા. પોતાનું કર્તવ્ય દુનીઆંમાં શું છે તે સમજવું, તે ગુણ વધુ પ્રમાણમાં મેળવવો અને તેને દૃઢતાથી પાળવો એમાં મગ્ન રહેતા. પ્રમાણિકપણું સાચવી કર્તવ્ય કરવું એમ હર વખતે દરેકને ઉપદેશ કરતા. કર્તવ્યથી જે લોકો દૂર રહે છે તેમના તરફ કુદરતી રીતે એમને અભાવ રહેતો એઓ સમજતા કે દરેક માણસ દરેક સ્થીતિમાં દરેક સ્થળે કર્તવ્ય કરી શકે છે.

હૃદયની શુદ્ધતા.

ચંચળ બુદ્ધિ સાથે હૃદયની શુદ્ધતા, એ મનુષ્યની જીંદગીના ઉત્તમ સાધન છે. હૃદયની શુદ્ધતાવાળો મનુષ્ય મનમાં જે પ્રમાણે ધારે તેજ પ્રમાણે બાહ્યજીવન રાખે. તે મનુષ્યની જાહેર તેમજ ખાનગી વર્તણુક ડાઘ વિનાની દેખાશે. બાહ્ય જીવન અને આન્તર જીવનની ઐકયતા એ આ હૃદયની શુદ્ધતાને ખાસ આભારીછે. **વિશુદ્ધ હૃદય એ સર્વ સદ્ગુણોનો મૂળ પાયો છે.** દુનીઆમાં ઘણા મોટા કહેવાતા મનુષ્યોમાં થોડે ઘણે અંશે દંભ, આડંબર, અહંતા દૃષ્ટિગોચર થાય છે, અને તેના પરિણામે તે જે કાર્ય કરે તેમાં તેના પ્રતિસ્પર્ધીઓને શંકા સ્થાન રહે.

શ્રીયુત્ શેઠ માણેકચંદજીના હૃદયમાં શુદ્ધતાનો ગુણ ઘણો પ્રબળ જોવામાં આવતો, તેમને દંભ કે આડંબર હતોજ નહીં, એ તેમના પરીચયમાં આવેલા દરેકને અનુભવ સિદ્ધ છે. આનો પ્રત્યક્ષ દાખલો એમના ટૂંક ચરિત્રમાં દશ્ય થાય છે. મુંબાઈ—અમદાવાદ, રતલામ—કોલ્હાપુર વીગેરે સ્થળોએ બોર્ડિંગો, મુંબઇનો હીરાબાગ, ખાનગી સ્કોલરશીપો વીગેરે વિષયોમાં મળી પોતાના કુટુંબની કમાણીનો સદ્ઉપયોગ કરવા લગભગ ૧૦-૧૨ લાખ

રૂપીઆનો વ્યય કર્યો છતાં તેમણે જીંદગીમાં સરકારી ખીતાબો કે અન્યરૂપે માનઅકરામ લેવામાં જરા પણ ધ્યાન આપ્યું નથી, જ્યારે અન્ય દંભી પુરૂષો ફક્ત એકાદ બે લાખનો ખરચ કરી સરકારમાંથી રાવબહાદુર, રાવસાહેબ સી. આઈ. ઈ વીગેરે માની ખીતાબો મેળવી શકે છે. તેમના મનમાં કોમનું કોઈ પણ પ્રકારે ભલું કરવું અને કોમની સેવા કરવી એમાંજ મોટું માન સમજતા હતા. ઘણી વખત વાતમાં કહેતા કે આ જમાનામાં લોકોમાં હૃદયની મલીનતા ઘણી જોવામાં આવે છે. ખાસ કરીને તેઓ તેમના ધંધાની લાઈનમાં અન્ય પ્રતિસ્પર્ધીઓ, જેઓ તેમના કુટુંબ તરફ જરા કરડી નજરથી જોતા તેમને માટે ઘણી દીલગીરીથી જણાવતા કે **શેઠ પ્રેમચંદ રાયચંદ અને મહૂંમ શેઠ ફકીરભાઈ જેવા** ચોખ્ખા અંતઃકરણવાળા નરો જૈનોમાં ઘણા થોડા થશે કેમકે બીજા ઘણાઓ એવા ચોખ્ખા અંતઃકરણવાળા દેખાતા નથી, જેના પરિણામે શ્વેતાંબર-દિગંબરનો કજીઓ ચાલુ થયો અને ચાલુ રહ્યો છે. આ નીચેની લીટીઓમાં એમને સત્સ લાગતું હતું. મુંબાઈ બોર્ડીંગનું નામ આપતી વખતે આ ગુણ વધારે સારા રૂપમાં પ્રકટી નીકળ્યો છે કેમકે જ્યારે જૈનના અન્ય ફિરકાઓમાં બોર્ડીંગો પોતાનાજ ફિરકા માટે છે, ત્યારે આ ગૃહસ્થે મુંબાઈ જેવી ઉદ્યોગી અને અલબેલી નગરીમાં પોતાના કુટુંબના ખરચે સ્થાપેલી બોર્ડીંગને 'દિગંબર જૈન' જેવા એક ફિરકાને ઉપયોગી શબ્દથી નહીં પણ **સર્વે જૈન કોમને ઉપયોગી 'જૈન'** શબ્દથી સંગીત કરી **શ્રી શેઠ હી. ગુ. જૈન બો. સ્કુલ નામ આપ્યું.** આ એમની આન્તરશુદ્ધિનું પરિણામ છે એ કોણ નહીં કહી શકે ?

આનો એક દાખલો સર્વને વિદિત છે કે **શ્રી શીખરજીના કજીઆ સબંધીની** બાબતમાં શ્રી શીખરજી વીગેરે દેશાવર જવામાં ટાઢ તડકો કે વરસાદની જરાપણ તેમણે દરકાર રાખી નથી. એક વખત ચોમાસામાં શીખરજી જઈ આવી શરીરે માંદા પડયા ત્યારે એમ કહેતા કે **'મને મરણ આવશે તેની ચિંતા નથી, પરંતુ તેમ થવાથી મારૂં શરીર કર્તવ્ય કરવામાંથી અને કોમસેવા કરવામાંથી દૂર થશે એ વિચારેથી મને દિલગીરી થાય છે.'** સદ્વર્તનના બળ અને બંધારણના પેટા ભાગો તરીકે **ટેવ અને કામ** એ બે બાબતો તરફ લક્ષ આપવાની જરૂર છે.

ટેવ-કામ. દુનીઆ માત્ર ટેવની ગુલામ છે. કુદરતના નિયમો એ પણ કુદરતની ટેવો છે. દરરોજની જે હાજતો નિયમિતરીતે પુરી પાડીએ છીએ, તે દરરોજની ટેવ છે. ટેવનું **જોર એટલું બધું છે કે કોઇ વખતે બીજી ઉપયોગી વસ્તુઓનું ભાન ભૂલી જઇએ છીએ.** તેનો કાબૂ માનસિક અને શારીરિક બંનેમાં જબરો હોય છે. એક કેળવાયલા સોલ્જર વિષે કહેવાય છે કે એક વખતે તે ખાણું ખાતો હતો તેવામાં તેનો એક મિત્ર મશ્કરીમાં **'Attention'** (સાવધાન) એવો કવાયતનો શબ્દ મોટેથી બોલ્યો. સોલ્જર આ શબ્દથી એટલો બધો ટેવાયલો હતો કે તે શબ્દ સાંભળતાં ખાણું ભુલી ગયો અને જાણે પરેડના વખતે સફ સમાલી ઉભો રહેવા જતો હોય તેવો સજ્જ થઇ ગયો. તે ખાણું પડતું મુકી તેમાંજ મગ્ન થઇ રહયો અને જ્યારે મિત્રે તેનું ધ્યાન ખેંચ્યું ત્યારે તેને માલમ પડયું કે તેની મશ્કરી થઇ. ટેવનું કેટલું પ્રાબલ્ય !

આ ટેવ સારી પાડી હોય તેને તે સન્મિત્રની ગરજ સારે છે અને **નઠારી ટેવવાળાને**

તે દુશ્મનની ગરજ સારે છે. યુવાવસ્થાનો સમય આ માટે વધારે અનુકુળ ગણાય છે આપણે અનુભવીએ છીએ કે કેટલાક માણસોને તમાકુ જેવાં વ્યસનો વળગાડવાની ટેવ એટલી બધી પડી ગઇ હોય છે કે તેમના શારીરિક બંધારણને નુકશાનકર્તા લાગે છે છતાં તે તે ટેવોના દાસરૂપે રહે છે અને ટેવ છોડતા નથી. શરીર ખરાબ કરે છે અને આખરે આ દુનીઆનો જલ્દી ત્યાગ કરે છે. આ ઉપરથી સમજવાનું કે મનુષ્યમાત્રે યુવાવસ્થામાંથીજ સારી બાબતોની ટેવો પાડવી કે જે પોતાના માનસિક કે શારીરિક બંધારણને હાનિકારક ન હોય. **સાચું બોલવાની** ટેવ, લાંચ લેવાની કે નહીં લેવાની ટેવ, કામ કરવાની ટેવ, વહેલા ઉઠવાની ટેવ, બીજાના ગુણો કે છિદ્રો જોવાની ટેવ–આ બધા ટેવોના પ્રકાર છે, અને જે જે ટેવો પડી ગઇ હોય છે, તેમાં **નઠારી ટેવોને બદલી સારી ટેવો પાડવાનો પ્રયત્ન** કરવો તે મન ઉપર વધારે કાબૂ બતાવે છે અને જેનું મનોબળ નબળું હોય છે તેઓ તેવા પ્રયત્નોમાં નિષ્ફળ નીવડે છે.

કામ કરવું એટલે ઉદ્યોગી રહેવું, આને કામ કરવાની ટેવ કહેવાય છે જે માણસ ઉદ્યોગી હશે તેને પરનિંદા કરવાનો સમયજ નહીં મળે. કેટલાક ઉદ્યોગી પુરૂષો વિષે એમ અનુભવીએ છીએ કે તેમને અમુક વખતે કામ નથી હોતું અથવા નવરા પડી રહે તો માથું દુઃખી આવે અથવા બેચેની ઉત્પન્ન થાય છે, માટે **મનુષ્યમાત્રે ઉદ્યોગના દાસ થવું** જોઇએ. આ ગુણ યુરોપીઅનોમાં વધારે કેળવાયલો દેખાય છે, જેના પરિણામે તે દેશ જ્ઞાન, લક્ષ્મી, કળાકૈશલ્યતામાં દુનીઆના સર્વ દેશો કરતાં ચઢીયાતા છે. આવી કામ કરવાની ટેવ આપણા ઝવેરી શેઠને બહુજ હતી. પોતે કેટલાક વર્ષોથી વ્યાપાર ધંધામાંથી ફારગત થઈ નિવૃત્તિમય જીવન ગાળતા હતા, પણ મનમાં ધર્મની પ્રભાવના વધારવા માટે ઉત્તમ જિજ્ઞાસા હતી, તેથી દરરોજ નિયમીત રીતે **હીરાબાગ**માં જઈ શ્રી ભારતવર્ષીય તીર્થક્ષેત્ર કમીટીના કામકાજ ઉપર તેમ પ્રાન્તિક સભાના કાર્ય ઉપર પાકી દેખરેખ રાખતા હતા. તે નિયમ છેક મરણના દિવસ સુધી તેમણે પાળ્યો હતો. કોઇ દિ. જૈન કોન્ફરન્સમાં એમણે ખાસ કારણ વિના ભાગ લીધો નથી કે કોઈ સારી ધાર્મિક કે પરોપકારી સંસ્થાને એમણે તન, મન કે ધનની મદદ કરી નથી એવા દાખલા થોડાજ મળી આવશે. હંમેશ ઉદ્યોગી રહેવાને તેઓ દરેકને પ્રેરતા હતા.

આ ઉપરાંત ધીરજ, સ્વાર્થત્યાગ, સંતોષ, સત્યનિષ્ઠા, પ્રમાણિકપણું વીગેરે ઘણા ઉચ્ચ ગુણોએ એમના અંતઃકરણમાં દૃઢ રીતે વાસો કર્યો હતો, જેની સુગંધમય વાસના તેમની સાથે પરીચયમાં આવનાર દરેકને પરીચયના પ્રમાણમાં વધારે ઓછી હજી પણ તાજી સુગંધ આપતી હશે.

વાંચકવર્ગ ! આ **પુણ્યશાળી જીવના** જીવનમાંથી ઘણી ઘણી સારી બાબતો મળી આવે છે અને સારા સારા ગુણો દેખાઇ આવે છે, છતાં તે બધા ગુણોનું વર્ણન યથાસ્વરૂપમાં બહાર પાડવું એ એક મોટા લેખક સિવાય બનવું મુશ્કેલ છે, તોપણ છેવટમાં એટલુંજ કહીશ કે મનુષ્યનું જીવન સુખી કે દુઃખી, સારૂં કે નરસું નીવડવું એ તેના પોતાનાજ હાથમાં છે. એ પ્રમાણે આપણા શેઠ અંતઃકરણથી માનતા હતા અને તેવો ભાવાર્થ કાઢવો. એ આ લેખનો મુખ્ય સિદ્ધાન્ત છે. એક ઇંગ્રેજ કવિએ નીચેની લીટીઓમાં તે સિદ્ધાન્ત સમજાવ્યોછે તે મનન કરવા જેવોછે.–

"Man is his own star, and the soul than can
Render an honest and a perfect man,

Commands all light, all influence, all-fate;
Nothing to him fares early or too late,
Our acts our angels are, or good or ill,
Our fatal shadows that walk by us still."

ભાવાર્થ કે:—મનુષ્યનું ભાવી તેના પોતાના હાથમાંછે, અને જે મનુષ્ય પ્રમાણિક અને પરિપૂર્ણ ગુણોવાળો નીવડે છે તે માણસ જ્ઞાન, બળ અને નશીબ ઉપર બરોબર કાબૂ ધરાવે છે. તેવા મનુષ્યને ન કંઇ વહેલું ને ન કંઇ મોડું લાગે છે. આપણાં કૃત્યો આપણા ફીરસ્તા છે, સારાં અથવા નરસાં, અને આપણે જ્યાં જઇએ ત્યાં આપણી સાથે અમુક રહેનાર આપણી છાયા છે. તથાસ્તુ!!! **L. P.**

जन्म सुफल कब होय?

'जैनसिद्धांतभास्कर' उवाच–
ग्रन्थोंको भन्डार जो, हो रहैं जीर्ण सोय
उन सबका उद्धार हों, जन्म सुफल तब होय॥१॥

'जैनहितैषी' उवाच–
विद्याकी हो उन्नति, जातिहित जब होय;
जिनबानी प्रचार हो, जन्म सुफल तब होय॥२॥

'जैनतत्वप्रकाशक' उवाच–
जिनमतमें शंका करें, ताको भ्रम दे खोय
जैनतत्व प्रचार हों, जन्म सुफल तब होय॥३॥

'जैनमित्र' उवाच–
जैन जातिकी द्वेषता, जावें शीघ्रही खोय;
मिले परस्पर प्रेमसे, जन्म सुफल तब होय॥४॥

'दिगम्बरजैन' उवाच–
प्रगटें भानू जैनका, मिथ्यामतको खोय
जैनसाहित्यकी हो उन्नति, जन्म सुफल तब होय॥५॥

'जैनप्रदीप' उवाच–
जैन ज्ञातिमें ऐक्यता, नित्यप्रति वृद्धी होय।
रास्ट्र धर्म जिनधर्म हों, जन्म सुफल तब होय॥६॥

हिन्दी 'जैन गजट' उवाच–
जैन जातिमें कलहकी, नितप्रति वृद्धी होय
पर्दे न छापे ग्रन्थको, जन्म सुफल तब होय॥७॥

प्रेमी, हजारीलाल जैन–आगरा

श्रुतपंचमीके बारेमें–
मित्रसंवाद।

टेकचंद–जयचंदभाई, जुहारू।

जयचंद–जुहारु, भाई साहेब, जुहारु। कहो कोई नवीन समाचार है क्या? तुम तो आजकल दिखते भी नहीं हो, कदाचित् सहांरग (लग्नसारणी) का समय है इसीसे अवकाश न मिलता होगा।

टेक०–जयचंदभाई, लग्नसारणीका समय तो ठीक है, परंतु और और वर्षोंके समान न तो विक्री ही है न आमदनी ही है, तो भी आशा तो अमर है, चाहे विक्री हो व न हो पर दुकान पर बैठना ही पड़ता है।

जय०–यह बात तो ठीक है, परंतु एक ही ओर दृष्टि रखनेसे तो काम नहीं चलता है, व्यापार तो शरीररक्षा व कुटुम्बपालनके लिये द्रव्यका साधन है, सो तो करना ही चाहिये, परंतु मनुष्य-जीवनका उद्देश्य तो यह नहीं है, उद्देश्य तो धर्मपूर्वक अर्थ उपार्जन करके उदय-जनित कर्मफल (कामभोगादि) को भोगते हुवे चतुर्थ पुरुषार्थ मोक्षका साधन करना है।

टेक०–आपका कहना तो ठीक है, परंतु "जब पड़े पेटमें दाना, तब दिखे अपना बिगाना, अरु भूखे पेट न्हाय, तो कैसे

धर्म सुहाय ? ” भाई पहिले, आजीवका पीछे धर्म।

जय०—हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि तुम आजीवका ही मत करो। नहीं नहीं, तुम आजीवका करो, और टाटा जैसे बड़े व्यापारी बनो, द्रव्योपार्जन करो, परंतु जिसप्रकार तुम्हारा व्यापार चल रहा है, इसमें तो परिश्रम और समय अधिक लगने पर भी लाभ कम मिलता है, किन्तु कहना चाहिये कि यह तुम्हारा धंधा केवल सराफी या दलाली ही है, या रकमका रुपया डेढ़ रुपया सैंकड़ेका व्याज ही कठिनतासे उत्पन्न होता है। और यदि घाटा हुवा तो लेनेके देने पड़े, तब क्या इसे व्यापार कहना चाहिये ?

टेक०—व्यापार तो क्या है, पर ठाले बैठेका गोरखधंधा है, बालबच्चोंका तो पेट किसीप्रकार भरना ही पड़ता है। करे क्या ? धंधा तो कुछ दीखता ही नहीं है, यह तो मजूरी करना है, इतने पर भी पेट नहीं भरता है। दादाजी कहते थे कि पहिले समयोंमें धंधेमें दूने अढाई गुने और तीन गुणे अर्थात् १ के तीन तक होते थे, पर आज तो रकमका व्याज आया कि बहुत समझा जाता है, कभी कभी तो दामके दामपर भी उलटफेर करना पड़ता है। भाई साहब, परिश्रम करनेतक ज़ोर है और यदि परिश्रम करनेसे भी न मिले तो क्या करे ! लाचार हैं।

जय०—भाई, केवल मात्र परिश्रमसे ही तो काम नहीं चलता है, उसमें बुद्धिकी भी तो आवश्यकता है, परिश्रमका मूल्य इतना नहीं जितना बुद्धिका होता है। देखो, एक मजूर दिनभर अविश्रांत परिश्रम करके चार आनेसे अधिक नहीं कमाता, परंतु एक वकील बुद्धिके बलसे मिनीटोंमें हजारों रुपया कमा लेता है। इसीप्रकार बुद्धिहीन कठीन परिश्रमी व्यापारी जितने समयमें भोजन मात्र नहीं कमा सकता है उतने ही समयमें बुद्धिमान थोडीसी पूंजीसे उलटफेर करके हजारोंके उवारे न्यारे कर लेता है।

व्यापारीको चारों ओर लक्ष रखना पड़ता है, कि आजकल किस वस्तुकी खप है, वह कहांसे आती है, अपने यहांसे कौन वस्तु अन्यत्र जाने योग्य है, इत्यादि।

यह कुछ आवश्यक नहीं है कि अपने बापदादे कपडा बेचते आये हैं तो अपन भी कपडा ही बेचें। नहीं नहीं, यदि कपडेका धंधा नहीं चलता तो अनाजका सही, अनाज नहीं तो बिसातखाना सही, तात्पर्य, जिस व्यापारमें विशेष हिंसा न हो और जिससे धर्मका घात न होता हो ऐसा व्यापार स्वदेश विदेशादिमें जहांसे हो सके क्यों नहीं करना चाहिये ? जापान, जर्मनी, आष्ट्रिया, इंग्लेन्ड, फ्रान्स आदि देशोंने

• देखो शिल्प विज्ञान द्वारा नये नये आविष्कार करके व्यापार द्वारा अपने अपने देशोंको कुबेरका भंडार बना डाला, और अपना देश जिसे सभी देशोंके लोग Golden bird (सोनेकी चिड़िया) कहते थे, आज भिखारी हो रहा है।

भाई, यथार्थमें हमलोग प्रमादी हो रहे हैं, हमें और तो क्या अपने पड़ौसअड़ौसकी भी खबर नहीं है, कि क्या हो रहा है, तब भला कहो कैसे व्यापार बढ़े? यथार्थमें यह दशा हो रही है कि-" दुविधामें दोऊ गये, माया मिली न राम " अर्थात् न द्रव्य ही हाथ आया और न धर्म ही साथ रहा, तात्पर्य दोनों ओरसे गये।

टेक०—जयचंदभाई, बातें तो सभी कर लेते हैं परंतु कार्य रूपमें लाना टेढ़ी खीर है, भला आप ही बतावो हम क्या करें, अपने धंधेको कैसे बढ़ावें?

जय०—भाई, नाराज़ मत होवो, स्थिर होकर विचार करो, विचारों पर ही सब बात निर्भर है। किसी कार्यके आरंभ करनेके पहिले उसपर पूर्ण विचार कर लेनेसे ही उसमें सफलता होती है, और विचारशक्ति जभी बढती है, जब हम दूसरोंके विचारों और कार्यप्रणालीको अपने साम्हने रखकर अपने विचारोंसे मिलान करके निर्णय करते हैं।

टेक०—अच्छा भाई, अब व्याख्का समय हुवा है इसलिये जाना चाहता हूं फिर मिलूंगा। परंतु यह तो बतावो कि श्रुतपंचमी कब है, और उस दिन क्या करना होगा?

जय०—श्रुतपंचमी ज्येष्ठ सुदी ५ गुरुवार ता. १७ जुनको होगी, और उसमें करना क्या है? रूढिके बंधे लोग अष्ट द्रव्योंसे पूजन कर लेवेंगे अथवा विशेष कोई उदार हुवा तो ग्रन्थोंको निकाल कर वेष्टन आदि बदल कर पीछे रख देवेगा, सो तुम भी यही करना और क्या?

टेक०—वाह भाई! खूब कहा! यह तो होता ही है। इसे तो बच्चे बच्चे जानते हैं, सो भला आपने नवीनता क्या की? आपका यह कथन तो उपेक्षा रूपसे है, क्या पूजन नहीं करना चाहिये? क्या वेष्टन आदि नहीं बदलना चाहिये?

जय०—भाई, यह तो आवश्यक है ही, क्योंकि यदि यह भी न होगा तो जैसे ईडर, नागौर आदिके भंडारोंको दीमकने अपने उदरमें रख लिया उसीप्रकार शेष सारदाभंडार भी निःशेष हो जावेंगे इसलिये कुछ न होनेसे तो इतना होना भी अच्छा है, परंतु इतनेहीसे तो कार्य नहीं चलेगा। भोजन तो भोजनशालामें तैयार है, परन्तु खाये विना क्या पेट भर जायगा?

टेक०—जी महाराज, पेट तो न भरेगा इसी लिये तो पूछता हुं कि क्या करना

चाहिये ? तब शीघ्रतासे बतलाते क्यों नहीं?

जय०–भाई साहेब, अब आप भूखे हो रहे हैं, इसलिये अभी आपको मेरी बात समझमें नहीं आ सकेगी। ये बातें जल्दीकी नहीं है किन्तु गंभीरतासे विचारनेकी हैं। सो यदि आपको घरपर सिवाय ब्यालूके और काम न होवे, तो ब्यालू यहीं कर लीजियेगा, मैं रामावतारसे घरपर कहलाये देता हूं, ताकि कोई आपके लिये अटका न बैठा रहे। (रामावतारसे) देखो रामवतार, तुमने टेकचंद बाबूका घर तो देखा है न ? हां, उनके घर जाकर कह दो–बाबू आज जयचंदके यहां ब्यालू करेंगे और देखो अन्दर जाकर दो थालियां लगा दो, जल्दी करो।

रामावतार–बाबू, थाली तो लगी है आप पधारें, हम जाके कहे आवत हैं, और पान तो न चांही तो लेत अइ हैं।

जय०–हां छूटे पान दो, पैसेके लेते आना जावो, (टेकचंदसे) चलो टेकचंद भाई, अपन जीमते जीमते बात करेंगे।

टेक०–चलिये, अन्नदाताजी (हंस कर दोनों जीमने जा बैठे।)

जय०–(जीमतेजीमते) सुना भाई टेकचंदजी, अंगुली पकड़कर हथेली पकड़ी जाती है। जब बैठनेको जगह मिल जाती है तो धीरे २ सो भी सक्ते हैं। श्रुतपंचमी को यह पूजा करना, और ग्रंथोंकी सम्हाल करना, केवल मात्र अंगुलीका पकड़ना है। अभी आप यह पूजा करना और उत्तमोत्तम वेष्टनोंमें शास्त्रोंको बांधना मात्र उसी प्रकार है जैसे किसी वृद्धा स्त्रीको खूब वस्त्राभूषणोंसे अलंकृत करके उसे एक स्वर्ण निर्मित मणिजड़ित उच्च सिंहासनाशीन करके छत्र, चमर फिराना और उसके सन्मुख जयकार शब्द करते हुवे साष्टांग दण्डवत् करना, परंतु भोजन करने नहीं देना। ऐसी अवस्थामें क्या यह आशा की जा सकती है कि वह वृद्धामाता अधिक समय तक जीवित रह सकेगी ? नहीं कदापि नहीं, कदापि नहीं।

टेक०–भाई, आपका दृष्टांत समझमें नहीं आया।

जय०–जी सुनिये, वृद्धामाता यही हमारी जिनवाणी हैं, इसके अन्तिम जन्मदाता पिताश्री वीर भगवान तो सिद्धालयमें अचल रूपसे स्थित होगये और हमलोग पुत्र उसकी खबर भी नहीं लेते हैं, कितने एक तो उसे लोहके बड़ेबड़े तालोंके भीतर कैद करके ही रखते हैं, कितने एक उक्त प्रकार पूजनादि करके कृतकृत्य होजाते हैं परंतु उसके सच्चे पुत्र बनकर उसकी सच्ची सेवा (स्वाध्याय) कदाचित ही कोई करते हैं, यही स्वाध्याय करना, पढ़ना, पढ़ाना, प्रचार करना, यही तो उस माताका भोजन है। सो जब

स्वाध्यायकी प्रथा उठ जावेगी, तो भला उसमें कथित गूढ तत्वविषयको कौन समझ सकेगा ? आजकल जो थोड़ा बहुत दीपक टिमटिमा रहा है वह स्वाध्याय और चर्चा (ज्ञानगुदरी) का ही प्रभाव है।

टेक०–स्वाध्यायकी प्रथा व चर्चा क्यों उठ गई ?

जय–इसके कई कारण हैं, (१) धर्मके विद्रोहियोंके कारण शास्त्रसभा व चर्चायें खुले तौरसे न हो सकीं (२) इस भयसे कि कहीं कोई विद्रोही हमको पढ़ते देख द्वेषवश लेजाकर ग्रन्थको नष्ट न कर दे जैसा कि शंकराचार्य आदिके द्वारा किया गया है। (३) अभिमानवश कि यदि सभी पढ़ लेंगे तो हमारी पूछ न रहेगी। (४) लोभवश कि इसीके आश्रित लोगोंसे द्रव्यकी प्राप्ति होगी।

टेक०–भाई, यथार्थ है, आज प्रथमके दो कारण तो आज कल नहीं है। इंग्रेज सर्कारके न्यायी राज्यमें सभी धर्मवालों विना किसी अड़चनके अपने अपने धर्मका पालन करते हैं, परंतु पिछले दो कारण तो अब भी दृष्टिगोचर होते हैं। मास्टर दीपचंदजी उपदेशककी रिपोर्टसे विदित हुवा था कि गुजरात आदि प्रांतोंमें जहां भट्टारकोंका दण्ड चलता था कोई भी गृहस्थ स्वाध्याय नहीं करने पाते थे, केवल भट्टारक या उनके पालतू शिष्य आदि ही चातुर्मास करके कहीं कोई रास या कथा सुनाया करते थे, और विदाई लेते थे। यहां तक कि तत्वार्थसूत्रके सुनानेकी १०) दश रुपया फीस बंध गई थी, उन्होंने गृहस्थोंसे (जैनगृहस्थों ही से) स्वाध्याय व अष्ट द्रव्यसे पूजाका अधिकार छीन रक्खा था।

टेक०–यह तो बीसपंथियोंकी बात है। परन्तु शुद्धाम्नायी तो ऐसा नहीं करते हैं, उनमें पूजा स्वाध्याय और चर्चाका प्रचार है।

जय०–जी है तो सही, परंतु ये भी उनके ही बड़े नहीं तो छोटे भाई अवश्य हैं, इनके मन्दिरोंके दर्शन भी जैनेतर नहीं कर सक्ते हैं। न जैनेतर इनके ग्रन्थोंका अवलोकन ही कर सक्ते हैं, और जैनियोंमें वेही स्वाध्याय कर सक्ते हैं, जो शुद्धाम्नायका सर्टिफिकेट पाये हों, अर्थात् वे दश पांच मिनट श्रीमंदिरजीमें बैठ कर ही धोती आदि बदल कर बांचें।

टेक०–तो इसमें क्या हानि हुई ? यह तो विनय है, जितनी शुद्धता होसके उतना ही अच्छा।

जय०–खूब कहा, "न नै मन तेल होय न राधा नाचें" न इतनी क्रिया बने न स्वाध्याय किया जाय, न मंदिरमें बैठनेका अवकाश मिले न पढ़ सकें। यद्यपि इसप्रकार शुद्धतासे पठनपाठन करना अच्छा और विशेष फलप्रद है, तो भी क्या हरएकसे

ऐसा हो सकना संभव है ? भाई साहेब, नियम तो सर्व साधारणसे पालन हो सकें इसप्रकार होना चाहिये, क्योंकि महावीर प्रभुका उपदेश किसी व्यक्ति विशेषके लिये नहीं किन्तु सर्व साधारणके लिये है और तो क्या समवशरणमें पशुवोंने भी उनकी वाणीसे लाभ उठाया है, भील चाण्डालादिने भी लाभ लिया है। देखो, कथाग्रन्थोंमें क्या लिखा है ? क्या ये ग्रन्थ केवल पढ़ लेने मात्रसे ही कल्याण हो जायगा ? क्या अहिंसा या दया दया कहनेसे जीवोंकी दया (रक्षा) हो जायगी ?

टेक०---नहीं, न होगी, तब क्या जो लोग पढ़ते हैं, वह सब निरर्थक है ?

जय---सर्वथा निरर्थक तो नहीं है, परंतु ग्रन्थोंका उलटफेर होने या सम्हाल होते रहनेके सिवाय कुछ भी विशेष लाभ नहीं है, क्योंकि पढ़नेवाले जबतक तर्क वितर्कके साथ न पढ़ेंगे, जबतक पठित विषय कौन विचारेंगे, और धर्मके अनुसार यथाशक्ति चलने, तथा धर्मशास्त्रोंसे विरुद्ध हानिकारक प्रथावों (रूढ़ियों) कौन छोड़ेंगे तबतक यथार्थ लाभ न होगा। पढ़नेंका मतलब ही यही है कि उससे कुछ लाभ उठाया जाय । देखो, हमारे देशके अनेक ग्रन्थ (जिनमें जैनग्रन्थ भी बहुत हैं) विदेशोंमें गये और उनको पढ़ कर विदेशी लोगोंने अपने आपको उन्नतिके शिखर पर चढ़ा लिया और हम लोग ऊंघते ही रह गये ।

टेक०--क्या धर्मग्रन्थोंको पढ़नेसे हमारे व्यवहारिक कार्योंमें भी सहायता मिल सकती है ?

जय०--निसन्देह, क्योंकि हमारे ग्रन्थोंमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थोंका वर्णन है, और हमारे ग्रन्थ मोक्षके साधक और धर्मसे अविरुद्ध व्यवहारके विरोधी नहीं हैं, न हमारे धर्ममें कोई बात दण्ड नीतिसे किसीके पीछे लगाई जाती है किन्तु जिससे जितना होसके यथाशक्ति पालन करे। धर्मग्रन्थ व गुरू तो वस्तुका यथार्थ स्वरूप बतला देते हैं, परन्तु प्रेरक नहीं होते हैं।

टेक०--तब अबकी श्रुतपंचमी पर हमारा क्या कर्तव्य होना चाहिये ?

जय०--भाई साहेब, हमारी तो राय यह है कि इस उत्सव पर प्रत्येक स्थानमें एक एक वांचनालय (जिसमें समस्त जैन और सर्वोपयोगी अजैन पत्र मंगाये जायं) और पुस्तकालय (जिसमें जैनग्रन्थोंके सिवाय अन्यान्य उपयोगी पुस्तकें जीवनचरित्र, इतिहासादि भी रहें) खोले जायं जिससे स्वदेश विदेशके समाचार प्रत्येक प्रकारके विदित होते रहें, और जीवनचरित्र व इतिहासोंसे अपनी उन्नतिके विचारोंको व्यक्त करनेका अवसर आवे-अनुकरण करनेका अवसर आवे। इससे हमारे

विचारोंमें फेरफार होगा, ज्ञानकी वृद्धि होगी और व्यापारादिकी भी वृद्धि होगी, मनोरंजन भी होगा और सभ्यता व शिष्टता भी बढ़ेगी।

टेक०—भाई, जैन पत्र व पुस्तकें रखना तो ठीक है परन्तु अजैन रखनेसे क्या लाभ?

जय०—लाभ तो बहुत है, प्रथम तो यही बात है कि जिन बातोंको हम सत्यार्थ मानते हैं, क्या उन्हें और भी कोई मानता है या नहीं? इससे हमारे मतकी पुष्टि होती है। दूसरे हमारे मतका यदि कोई विरोधी है तो वह किस युक्तिसे विरोध करता है यह जानकर हम अपने पक्षके मंडन और परपक्षके खंडनका उपाय सोच सक्ते हैं। तीसरे यदि कहीं हम ही समझनेमें भूलकरगये होवे तो अन्य विद्वानोंके विचारोंसे हम अपने विचारोंको सुधार सकते हैं। चौथे इसी निमित्तसे हमारे धर्मग्रन्थोंको अजैन विद्वान पढ़कर अपने विचारोंको बदलेंगे और वे जो अबतक विना समझे हम लोगों व हमारे धर्मसे घृणा करते हैं सो जब वे हमारे ग्रन्थोंमें यथार्थ बातको देखेंगे तब घृणा करना छोड़ देंगे इससे परस्पर मैत्रीभाव बढ़ेगा। पांचवे जब कि हम उन्हें (अजैनोंको) लाभ पहुंचानेकी चेष्टा करेंगे, तो वे भी आपके कार्योंमें विरोधी न होकर उल्टे सहायक होंगे, और व्यवहार व व्यापार परस्परके मेल विना चल नहीं सकता है, इसलिये मेल भी बढ़ेगा इत्यादि और भी अनेक लाभ हैं।

टेक०—क्या ऐसी कोई संस्थाएं कहीं खुली हैं?

जय०—जी हां, खंडुवाके जैनबालकोंने, नरसिंहपुरकी जैनहितैषणीसभाने और रतलामके मानिकचंद पानाचंद दि. जैन बोर्डिंग हाउसने हालहीमें खोली हैं और भी अनेक स्थानोंमें ऐसी संस्थाएं खुल रही हैं।

टेक०—भाई, अब तो जाउंगा, कुछ काम भी आवश्यक है। देखो, आप कुछ जल्दी आना, अपनको अभी बहुत काम करना है, मंडलविधान पूरना है, शास्त्रोंको सम्हालना, वेष्टन बदलना, जीर्ण पत्रोंको सुधारना व नये लिखकर रखना, गिन्ती मिलाना, सुरक्षित करके रखना, सूची तैयार करना इत्यादि, जिससे दिनके दिनको सब काम तैयार रहे। उस दिन प्रातःकाल श्री जिनवाणी माताकी पूजा व कीर्तन करेंगे, सांझको सभामें उपदेश करके पुस्तकालय तथा वांचनालय स्थापित करनेके लिये निवेदन करेंगे, और भी कुछ कहना है तो कहिये।

जय०—कहना तो बहुत है, परन्तु जो हो जाय सो ठीक है०।

टेक०-होना होगा सो तो होगा ही, परन्तु अपने कहनेमें क्या जावे, आज न सुनाई होगी तो कल होगी, परसों होगी, कभी तो होगी, न भी होगी तो पुण्यबंध तो अपनको होगा ही, क्योंकि अपने भाव तो अच्छे हैं, उद्योग तो अच्छा है—

जय०-हां, इसमें क्या सन्देह है। अच्छा, तो एक प्रस्ताव जैनग्रन्थप्रकाशिनी संस्थाओंकी सहायतार्थ भी रखना चाहिये, जैसे माणिकचंद हीराचंद जैन पुस्तकमाला—बम्बई, सनातनजैनग्रन्थमाला—काशी, इत्यादि और दूसरा प्रस्ताव यह भी कि जैनपत्रोंके विशेष प्रचारार्थ उपहार देने इत्यादिका भी कुछ विचार किया जाय, क्योंकि उन्नतिके साधक समाचार पत्र विशेषरूपसे होते हैं। तात्पर्य तो यह है कि जिस प्रकार हो सके हमें जिनवाणीका प्रचार करना चाहिये इससे उभय लोकका सुख निज परको प्राप्त होता है।

टेक०-बहुत अच्छा, अब मैं जाता हूं, जुहारू।

जय०-जुहारु, भाईसाहेब जुहारु।

नोट—दोनों मित्रोंकी कैसी प्रेमपूर्वक वार्तालाप हुई है इसपर पाठकगण विचार करेंगे और कुछ लाभ उठावेंगे।

भवदीय सेवक—
दीपचंद परवार—नरसिंहपुर (C. P.)



विद्यार्थी अने तेनी स्थिति.

હિંદુસ્તાનની શિક્ષણ પદ્ધતિ અને ઇંગ્લાંડની શિક્ષણ પદ્ધતિમાં તેમજ સમાજના રીતરિવાજોમાં ઘણો ફેર છે. ઇગ્લાંડની વાત નહીં કરતાં એટલુંજ કહેવાનું કે અહીં જે ઇંગ્લીશ એજ્યુકેશન (કેળવણી) આપવામાં આવે છે. તેમાં કેટલીક પડતી મુશ્કેલીઓ તેમજ સાધારણ રીતે જ્ઞાન મેળવવામાંજ ઘણી મુશ્કેલીઓ પડે છે. વિદ્યાર્થીની ઉમર જ્યારે આશરે ૧૮ વર્ષની થાય છે ત્યારે તેના માબાપો તેને કમાતો અથવા પરણેલો જોવા ઇચ્છે છે. જો કે ઘણી વખત તો પરણવાની બાબત તેમના હાથમાં હોવાથી તેમની મરજી પ્રમાણે વહેલાં કરી દે છે, પરંન્તુ તેને ૧૮ વર્ષના ઉમરમાં મેટ્રીક પસાર કરેલી હોય છે જે ફક્ત ભાષાનુંજ જ્ઞાન હોય છે, એમાં વિચારની તેમજ કલ્પનાની શક્તિ ખીલતી નથી, તેથી ઘણાખરા તો ગરીબ ઘરના હોય તો ત્યાંથી મુકી દેવું પડે છે પછી તેમની સ્થિતિ ધોબાનો કૂતરો નહીં ઘરનો કે નહીં ઘાટનો ” એવી થાય છે. અઢાર વરસની ઉમર થઈ ત્યાં સુધી તેઓ વ્યાપાર એટલે શું એટલું પણ સમજતા નથી. ગુજરાતી ભાષાનું તો ભાન કયાંથી હોય, કારણકે સીક્સ્થ્ અને સેવન્થ્ જે વખત ભાષાજ્ઞાન મેળવવાનું યોગ્ય થાય છે ત્યારે તેમને ઇંગ્લીશ એકરદ્ધા ચોપડીઓ વાંચવી પડે છે એટલે ગુજરાતી સાહિત્યનું તો બીલકુલ નામજ દેવાતું નથી ત્યાર પછી કોલેજ લાઇફમાં તો નેવેજ મુકવાનું. આથી સાહિત્યની વૃદ્ધિ થતી અટકે છે. આથીજ ગુજરાતી સાહિત્ય, સાક્ષર અને કવીઓની ખોટ પડે છે. આમાં તેઓ બિચારા શું કરે, દરેક પ્રકારનું જ્ઞાન ઇંગ્લીશ ભાષાદ્વારા અપાય છે. જ્યારે તેઓની ઉમર

૧૮ વર્ષની થાય, ત્યારે તેઓને વેપારની સુજ નહીં, પોઝીશન જાળવવાની મોટી બીક, ઉદ્ધતાઈ તો સ્વભાવિકજ હોય, તેમજ અંતમાં તો હાડકાં પ્રથમથીજ ખોટાં હોય એટલે પછી રૂ. ૧૫ કે ૨૦ની નોકરી સિવાય તેમને બીજું કાંઇ સુઝતું નથી. ધારો કે કોઈ છોકરો ઉદાર ગૃહસ્થની મદદે મેટ્રીકથી આગળ વધે, તોપણ શું એ શહેર બહાર નિકળે, ફરવા નિકળે, કોલેજમાં જવા નિકળે, ત્યારે પણ એના મનમાં પૈસા કેમ કમાવા, આપણા બૈરી છોકરાં તથા માબાપનો ખરચ કેમ પૂરો પાડવો, એ વિચારમાં ગુંચાયલો રહે છે. ઘણી વખત તો વાંચતા વાંચતા તેમજ ક્લાસમાં ધ્યાન આપતાં પણ એ વિચાર ચાલ્યા આવે છે. હવે એ બિચારો પોતાના આ વિચારને શાંત કરવામાં અથવા તો, પોતાની યાદદાસ્ત સાથે અથવા કલ્પનાશક્તિ ખીલવવામાં ધ્યાન આપે. આથી તેઓનું મગજ ખવાઇ જાય છે અને ઉત્તમ પ્રકારની કેળવણીને માટે નાલાયક બનતું જાય છે. એ પછી ગમે તો દિવસના ૧૮ કલાક વર્ક કરી બી. એ.માં સેકન્ડકલાસ આવે પરન્તુ કેળવણીથી જે લાભ થવો જોઇએ તે થતો નથી. તેમની સ્થિતિ ઘણી વખત જેમને મેટ્રીક પસાર કરી અભ્યાસ છોડી દીધો હોય છે, તેનાથી વધારે ખરાબ થાય છે કારણકે એ વધારે જંજાળી હોય છે. મગજ હંમેશાં શાંત, હલકું અને નિર્દોષ હોય ત્યાં સુધી આગળ સુધારવામાં તેમજ જ્ઞાનમાં વધી શકે છે. કેળવણી મેળવી શકે છે. આ પ્રમાણે સાધારણ રીતે મુસ્કેલીઓ નડે છે. પછી એમ પણ બને છે કે "Poverty is the Mother of invention કેટલોક વખત તેઓ એટલી બધી ખંતથી મહેનત કરે છે કે તેઓ પોતાની અદ્રશ્ય પામેલી શક્તિઓને પાછી મેળવી શકે છે, પરન્તુ તેનું પ્રમાણ ઘણું થોડું છે. ઘણા ગ્રેજ્યુએટોને તો દુનિયાદારીનું ભાન પણ હોતું નથી. એનું કારણ નહીં કે તેઓ ફીલોસોફર છે, પરન્તુ તેઓ ફકત બુક વર્મ તરીકે કામ કર્યા કરે છે અને પછી જ્યારે કોલેજ લાઇફ પુરી કરે છે ત્યારે એમની બુદ્ધિને અથવા તો વિચારોને **નોકરી સિવાય બીજું કાંઈ સાધન સુજતું નથી.** કોલેજો તેમજ સ્કુલો જો ન નીકળી હોત તો કલાર્કની ઘણી ખોટ પડત. આ રીતે **આર્થિક સ્થિતિમાં પડતી** આવે છે. જે લોકો કેળવાયલામાં ખપે છે તેઓ વેપાર એટલે શું એ સમજતા નથી. જેઓ વેપારી તરીકે ઓળખાય છે તેઓ જ્ઞાન એટલે શું અથવા તો વેપારની કેળવણી કેવી રીતે થાય એનું ભાન હોતું નથી. ફકત તેઓ માંહોમાંહે લડી મરી એકબીજાનું છળ કપટથી મારી ખાય છે. કારણ કે તેઓને પરદેશ એટલે શું? પરદેશ સાથે વેપાર એટલે શું? વગેરેનું ભાન હોતું નથી. આ રીતે આર્થિક સ્થિતિની પડતી થવાનું એક કારણ આ પણ થઈ પડે છે. ત્યાર પછી સમાજની સ્થિતિ પણ બગડવામાં કેટલીક વસ્તુઓ કારણભૂત થાય છે. જો કે **હાલમાં અપાતી કેળવણી તદ્દન તુચ્છકારી કાઢવાની નથી પરન્તુ હિન્દુસ્તાનને માટે યોગ્ય નથી.** "ના મામા કરતાં કાણાં મામા હજાર દરજ્જે ઉત્તમ છે." અંગ્રેજ લોકના સમાજના રીવાજ તથા કેળવણીની પદ્ધતિ પણ ઘણી ફેરફારવાળી હોય છે. તેઓમાં લગ્નની છુટ, જોઈન્ટ ફેમીલી સીસ્ટમનો અણબચાવ તથા માબાપોએ કલ્પેલી છોકરાઓની વિદ્યાર્થી અવસ્થા તેમજ ફરજ્યાત કેળવણી એ ઘણે દરજ્જે આવા પ્રકારની કેળવણીને અનુકૂળ છે. બલ્કે અઢાર વર્ષ સુધી તેઓને **ફરજ્યાત કેળવણી** તેમજ માબાપોની લગ્નની બાબતોની છુટ પણ ઘણી હોય છે. માટે એ તેમને માટે લાયક છે. બીજું તેમને માતૃભાષામાં શિક્ષણ મળે છે અને જેટલું આપણે બી. એ. થઈને જ્ઞાન મેળવીએ છીએ એટલું તેઓ મેટ્રીક સુધીમાં મેળવી શકે એમ છે. આપણો વાંચવાનો ઘણોખરો વખત ભાષા સમજવામાં જાય છે, તેથી કરીને તેઓને બી. એ. થતાં સુધીમાં પોતાના સાહિત્યનું તેમજ બીજા પ્રકારના સાયન્સ ઇત્યાદિનું જ્ઞાન સારૂં થાય છે.. આપણું અને તેમનું સાહિત્ય, કવિની સંખ્યા તેમજ સાક્ષરોની સરખામણી કરીશું. તો આનું પરિણામ જણાઈ આવશે.

D.

उपदेशक पं. पिताम्बरदासजीका रिपोर्ट।

(ता. ९ फरवरीसे १५ अप्रेल तक।)

पिपरई-जन सं. १६५ है। एक व्याख्यान सभा की। स्वाध्याय तथा अष्टद्रव्यसे पूजन करनेका नियम १५ भाईयोंको है। जैन पाठशाला स्थापित करनेकी ओर पंचायतीका चित्त आकर्षित किया।

पछार-जन सं. ५०० है। दो व्याख्यान-सभायें और एक शास्त्रसभा की, जिनमें निम्न विषयोंपर व्याख्यान किये-विद्यादान, अहिंसा-धर्म और सदाचार। स्वाध्यायका नियम ५० को और अष्ट द्रव्यसे पूजन करनेका नियम २० भाईयोंको है। पढ़नेयोग्य लड़के ४० व १२ लड़कियां हैं। बड़ेही खेदकी बात है कि पंचायतीका ध्यान जैन पाठशाला स्थापित करनेकी ओर कईवार दिलाया गया पर वह किसी भी रूपसे सफल नहीं हुआ। ६ भाइयोंसे ६) मोरेना पाठशाला के सहायतार्थ प्राप्त हुए तथा पंचायतीने 'जैन मित्र' और एक भाईने 'दिगंबर जैन' मगाना स्वीकार किया।

साडोरागांव—जन सं. १३४। शास्त्रसभा तथा दूसरी व्याख्यानसभा की जिससे १५ भाइयोंने नहाकर रसोई कराना स्वीकार किया और १२ ने स्वाध्यायका नियम लिया। जैन पाठशाला स्थापित करनेके लिये प्रेरणा की तो १२) मासिक चंदा स्वीकार हुआ, इसलिये अध्यापककी यहां जरूरत है। १) मोरेना पाठशालाको अन्ना।

बजरंगगढ—जन सं. २२५ मंदिर ३। दो व्याख्यान सभायें और एक शास्त्रसभा की। स्वाध्यायका नियम २५ भाइयोंको है। पाठशालाका निरीक्षण किया। फल भी सामान्य रूपसे अच्छा है। यहां श्री शांतिनाथस्वामीका विस्तीर्ण मंदिर है जिसमें ३ प्रतिबिम्ब कायोत्सर्गासन शान्तिनाथ, कुंथनाथ और अरहनाथके बड़े ही वैराग्य पथ प्रदर्शक हैं। इन मूर्तियों और मंदिरकी प्रतिष्ठा वि. सं. १२०० में शेठ पाडासाजी परवारने कराई है। यह स्थान अतिशयक्षेत्रके नामसे इस प्रान्तमें प्रसिद्ध है।

गुना—जन सं. ४०० मंदिर २। दो व्याख्यानसभायें की जिसमें स्वध्याय और सदाचारप्रचार पर व्याख्यान कहे। स्वाध्यायका नियम ३० भाईयोंको है तथा कई ग्रहणियोंने स्नान कर रसोई करना स्वीकार किया। यहां जैन पाठशाला स्थापित है। अध्यापक, मंत्री तथा भाई घासीलालजी पाठशाला स्थापित करनेके कार्यमें प्रशंसनीय है। पंचायतीसे ७) उपदेशक फंडको प्राप्त हुए।

रुठयाई—जन सं. २५। दो शास्त्रसभायें की। स्वाध्यायका नियम ६ भाईयोंने स्वीकार किया।

राघोगढ—जन. सं २५० मंदिर १। एक शास्त्रसभा और दूसरी व्यायख्यानसभा की, जिसमें स्वाध्याय और संस्कार विषय पर व्याख्यान कहा।

स्वाध्यायका नियम ३५ भाइयोंको है तथा कई श्राविकाओंने स्नान कर रसोई करना स्वीकार किया। यहां खीचीवाड़ा प्रां.सभाका दफ्तर व उसके मंत्री शेठ हीरालालजी रहते हैं तथा आप की तरफसे एक जैन औषधालय भी स्थापित है। जैन पाठशालाका निरीक्षण किया। पढाई बाल-

योध जैनधर्मकी है, अध्यापक पं. हरिश्चंद्रजी धर्मोत्साही हैं।

धनोंवदा–जन सं ७० । शास्त्रसभा और दूसरी व्याख्यानसभा की। कुरीति त्याग और स्वाध्याय प्रचार पर लोगोंका चित्त आकर्षित किया जिससे एक भाईने शास्त्र पढना और ८ने श्रवण करना स्वीकार किया तथा दो गृहणियोंने स्नान कर रसोई करना व दुहरे छनेसे पानी छानना स्वीकार किया—

छबरा–जन सं १००, मंदिर १। दो व्याख्यान कुरीति त्याग व स्वाध्याय प्रचार पर कहे। स्वाध्यायका नियम १२ भाइयोंको है। पाठशाला स्थापित करनेकी पंचायतीसे प्रेरणा की तो १२) मासिक पर अध्यापक तजवीज कर पाठशाला खोलना स्वीकार किया। दो भाईयोंसे २) उपदेशक फंडको प्राप्त हुए।

बारां–जन सं. २७५ मंदिर ३। शास्त्र सभा और दूसरी व्याख्यान सभा की। स्वाध्याय का नियम ४० भाइयोंको है। वहां जैन पाठशाला स्थापित है, जिसमें १५ लड़के व १० श्राविकायें पढती हैं। अध्यापक विधर्मी ब्राह्मण होनेसे धर्मशिक्षण देनेमें वह लाचार है। दो भाइयोंसे २) मोरेना पाठशालाके सहायतार्थ आये। बारां श्री कुन्द २ स्वामीका पवित्र स्वर्ग स्थान है। वस्तिके बाहर नशियां व मंदिर है जिसमें श्री कुन्द २ महा मुनिकी पद्मासन शान्त मूर्ति प्रतिष्ठित है।

मांगरोल–जन संख्या २५। शास्त्रसभा और दूसरी आमसभा की, जिसमें होली और भारतिय हिन्दू इस विषय पर व्याख्यान कहा, जिससे सर्व साधारणों पर कुरीति त्यागका अच्छा असर पडा तथा महाराजसिंह नामके आर्यसमाजी महाशयने जैनधर्मके सिद्धांतो पर कई शंकायें प्रगट की जिसके समाधान भी भले प्रकार किये गये। पंचायती द्वारा ३॥≈ उपदेशक फंडके सहायतार्थ आये।

अतिशयक्षेत्र चांदखेडी-खीचीवाड़ा प्रां. सभाके वार्षिकोत्सवमें शामिल हुआ। पं. लक्ष्मीचंदजी, कुंवर दिग्विजयसिंहजी आदि विद्वानोंके व्याख्यान तथा शास्त्रसभायें हुईं। सभाकी दो बैठकें देखी और कई प्रस्ताव उपस्थित किये गये परंतु अमलमें लाने योग्य कोई भी प्रस्तावका रूप दिखाई नहीं दिया। वेश्यानृत्य जैसी स्थूल कुरीतिके दूर करनेका सभाने प्रश्न ही दूर कर दिया अतएव सभाके संचालकोंको फिजूलखर्ची और उसकी जननी कुरीतियोंके त्याग पर हमेशा ध्यान देना चाहिये। त्यागी मुन्नालालजीका केशलोंच हुआ और इसी समय त्यागीजीकी प्रेरणासे अनुमान १२००) का चंदा चांदखेड़ीजीमें पाठशाला खोलनेके लिये स्वीकृत हुआ। खीचीवाड़ा सभासे ११) उपदेशक फंडके सहायतार्थ प्राप्त हुए।

झालरापाटन छावनी–ऐलक चन्द्रसागरजीके केशलोंच उत्सव पर मैं तथा कुंवर दिग्विजयसिंहजी, पं. रामनाथ शर्मा, बाबू गेंदनलालजी भी उपस्थित हुए। कुंवर सा. के और मेरे ३ व्याख्यान आमसभामें हुए तथा सनातनी और आर्यसमाजियोंकी ओरसे आयी हुई शंकाओंके समाधान कुंवर सा. ने भले प्रकारसे किये। ऐलक चन्द्रसागरजीके समक्ष कुंवर दिग्विजयसिंहजीने ब्रह्मचर्य प्रतिमा अवलम्बन की और ऐलकजीने मुनिमुद्रा (लंगोट त्याग) प्रगट करते हुए केशलोंच किया तथा झालरापाटनके राज्यमें चहूं ओर ३२ मील विहार करनेका दिग्व्रत धारण किया। पंचायतीसे ११) उपदेशक फंडमें आये।

झालरापाटन–जन सं. ५७५ मंदिर ४। कुंवर दिग्विजयसिंहजीका तथा मेरा व्याख्यान हुआ। स्वाध्यायी भाई १५० के हैं। यहां सेठ हीरालालजी जैनसिद्धान्तोंके अच्छे विद्वान हैं। तथा श्री शान्तिनाथस्वामीका बृहत् मंदिर वि. सं ११०३ का है जिसमें ७ हस्तप्रमाण कायोत्सर्ग प्रतिबिम्ब है। श्री शान्तिनाथ विधा-

लय, औषधालय, सरस्वतिभवन स्थापित हैं। श्रीमती शंकराबाई आनरेरी तौरसे कन्याशालामें धर्मशिक्षण देती है। बाईजीका यह कर्तव्य सराहनीय हैं। सेठ लालचंदजी नवयुवक और धर्मानुरागी प्रतीत होते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि ये धर्मशास्त्रका अभ्यास करने लगे तो थोड़े ही समयमें सुवर्ण और सुगन्धके चरितार्थको प्रगट कर सकते हैं।

पंचपहाड़–स्टेशन पर ३–४ दूकान सिर्फ जैन भाईयोंकी हैं। रातको 'पांच पापका त्याग ही सच्चा धर्म है!' इस विषयपर एक सार्वजनिक व्याख्यान किया। २) मोरेना पाठशालाको आये तथा एक भाई ' दिगंबर जैन ' का ग्राहक हुआ।

भानपूर–जन सं. २५५। यहांके रथोत्सवमें शामिल हुआ। तीन व्याख्यान सभायें की। मि. अम्बलनेर कर मुन्सिफ द्वारा जैनधर्म पर किये हुए प्रश्नोंके उत्तर जाहिर सभामें भले प्रकार दिये गये। यहां जैन पाठशाला स्थापित है। श्रीमती भूरीबाई इन्दौर इस पाठशालाके स्थापित करानेमें सहायनीय है स्थानीय और मेलेके भाइयोंसे २८) श्राविकाश्रम बम्बईके सहायतार्थ तथा १) संकट निवारण फंडको प्राप्त हुआ, बाबू रेशमीलालजी और सुखसंपत्तिराय भंडारी उत्साही सज्जन है।

गरोठ–जन सं. १५० मंदिर २। रातको 'ग्रहस्थके षट् नित्य कर्म' पर व्याख्यान कहा जिससे ८ भाईयोंने स्वाध्याय करना स्वीकार किया और एक शास्त्र सभा और की। पंचायतीसे श्राविकाश्रमके सहायतार्थ ४॥) प्राप्त हुये। एक भाई ' दिगंबर जैन ' का ग्राहक हुआ।

महत्पुर–जन सं. ७१। दो व्याख्यान सभायें और एक शास्त्रसभा की। स्वाध्यायका नियम १५ भाइयोंको है। यहां जैन पाठशाला स्थापित है। परीक्षाफल सामान्य है। पंचायतसे ८) तथा एक वर्षके लिये १) मासिक सेठ हजारीमल मेघराजजीकी ओरसे श्राविकाश्रम बम्बईको सहायता स्वीकार हुई।

खाचरोद–जन सं. ५० मंदिर २। रातको मिथ्यात्व त्याग व स्वाध्यायप्रचार पर व्याख्यान कहा जिससे ५ भाईयोंने स्वाध्याय करना स्वीकार किया। एक भाई ' दिगंबर जैन ' का ग्राहक हुवा।

दोहद–गृह सं. १० जन सं. २५०। दो व्याख्यान सभायें की। स्वाध्यायका नियम २५ भाइयोंको है। यहांकी पाठशाला अध्यापक न होनेसे बंद है इसलिये प्रा. सभाको अध्यापक भेजना चाहिये।

सूरत–गृह सं. ९० जन सं. ३०० मंदिर सं. ७। रातको चंदावाडी धर्मशालामें एक व्याख्यानसभा की। स्वाध्यायका नियम २५ भाइयोंको है। वर्तमान महावीरजयन्ती उत्सवमें एक जैनहितवर्द्धक मंडल स्थापित हुवा है जिसमें तीनों संप्रदायके जैन भाई सामिलित हैं। फूलकोर कन्याशालाका निरीक्षण किया। परीक्षाफल संतोषजनक है। बालिकाओंके उत्तेजनार्थ सम्पादक ' दिगंबर जैन ' की ओरसे पुस्तकें पारितोषकमें दी गई। 'दिगंबर जैन' पत्रकी आफिस देखी। प्रायः सब ही कार्य उसके आनररी सम्पादक थोडे खर्चसे अच्छे कर रहे हैं। यह सब ठीक होते हुये भी यहांके दिगम्बर समाजमें धार्मिक रुचि न्यून व अनैक्यता भरपूर है।

विशेष–खीचीवाडे प्रान्तकी परवार जाती व राजपूतानेकी बघेरवाल और खंडेलवाल जैन जातिमें सदाचार की हीनता दिन प्रतिदिन होती जा रही है। यहांतक कि ये लोग न्हाना धोना भी भूलते जा रहे हैं, धर्मज्ञानकी न्यूनता और आर्थिक दरिद्रता तथा कुसंस्कारोंसे इतनी अधिक पीडित हैं कि शूद्र जाति जैसी प्रवृतियां इन लोगोंमें पाई जाती हैं, अतएव जगह २ की पंचायतियोंको उचित है कि जातीय दबाव डालकर इन कुप्रथाओंके दूर करनेका प्रयत्न करें। समाज सेवक—

ठाकोरदास भगवानदास झवेरी
मंत्री, उपदेशक विभाग, जौहरीबाजार-मुंबाई.

इस वर्षके ग्राहकोंको हिन्दी-गुजराती भाषाकी ८ पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रकट थतुं मासिक



The Digamber Jain.

युतं सुलेखै विविधैश्चचित्रै, दिगम्बरंजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुच्चमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ८ मुं.	वीर सं. २४४१. आषाढ. विक्र. सं. १९७१.	अंक-९ मो.



चातुर्मास-कर्तव्य.

वर्षना बार महिनाना त्रण विभाग पडेला छे, जेमां प्रथम शियाळो (शीतरुतु), पछी उन्हाळो (ग्रीष्मरुतु) अने ते पछी चोमासुं (वर्षारुतु) आवे छे, तेमा वर्षारुतुना एटले अषाड, श्रावण, भाद्रपद अने आश्विन मास ए चार महिना एवा छे के जे दिवसोमा दरेकने घणु करीने अवकाश होय छे केमके आ रुतुमा जळवृष्टिने लीधे पृथ्वी नरम थवाथी जीवमयी थई जाय छे, जेथी आ महिनामां लग्न, प्रतिष्ठा महोत्सव, रथोत्सव वगेरे कार्यो थतां नथी तेम व्यापार-धंधाथी पण दरेकने फुरसद होय छे. वळी आपणा केटलांक व्रतो जेवां के अष्टानिका, दशलक्षणिका, षोडशकारण, रत्नत्रय वगेरे व्रतो त्रणे रुतुमां करवाने शास्त्रकारोए फरमावेलुं छे, छतां पण मात्र अष्टानिका सिवाय ते मानवानो खास रिवाज वर्षारुतुमां पडी गयो छे, जेनुं खास कारण सर्वेने मळती फुरसदने लीधेज हशे. हवे आ चार मासमां जळवृष्टिने लीधे पृथ्वी नरम थई जवाथी तेमां सूक्ष्म जीवोनी उत्पत्ति घणीज थाय छे, तेने बचाववा खातर आपणा मुनि, त्यागी, भट्टारको, ब्रह्मचारीओ वगेरे एकज स्थळे [illegible] तेओए अषाड सुद ८ [illegible] सुधी एकज गाममा रही धर्मध्यानमां अने श्रावकोने उपदेश आपवामां पोतानो समय व्यतीत करवानो छे, त्यारे आजकाल तो एम मालूम पडे छे के मुनि, त्यागी तो गण्यागांठ्या छे, भट्टारको तरफथी उपदेशनी आशा भाग्येज रखाय छे अने ब्रह्मचारीओनी संख्या पण विशेष नथी तेमा केटलाक साधारण जाणकार होवाथी मात्र अमुक ब्रह्मचारीओद्वाराज उत्तम उपदेश अपातो जोवाय छे एटलेके आपणामां गामेगाम धर्मोपदेश आपनारनी घणीज न्यूनता छे, जेथी श्रावकोनेज पोतानुं रगस्युं गाडुं गमेतेम चलाववुं पडे छे.

લાલજીની જીંદગી સહિસલામત રાખવા માંગતા હો અને તેમની અબળા ગુલાબબાઇ અને કુમળાં બાળકોની દયા આવતી હોય, તો 'નિદ્રાનિદ્રામાં' ફસાયલા સમાજહિતૈષીઓ જાગો! "આળસુપણાથી અને બહુ નિદ્રાની ઇચ્છાઓ કરવાથી દર્શનાવરણીય કર્મ બંધાય છે, નિદ્રાથી આત્માનો ઉપયોગ વૃથા જાય છે, નિદ્રા એ જીવતાની મરણાવસ્થા છે." જૈન શાસનમાં વર્ણવાયલી આ ભયંકર નિદ્રામાં શું કોઇ પણ જૈનને પડી રહેવું યોગ્ય છે? **'જીવતાને મરણાવસ્થા'** બનાવનારી નિદ્રા અર્જુનલાલનો અંત કાળ આવશે ત્યાં સુધી શું નહીંજ મુકાય? જુઓ, જુઓ! **મહર્ષિ દાદાભાઈ શું કહે છે-'માંગો, મળશે'** વળી લોકવાયકા શું કહે છે? **'માંગ્યા વગર તો માએ ન પીરસે'** આ સુવર્ણ વચનોને શીરસાવંદ્ય ગણી મારૂં તારૂં મૂકી દઇ **'હિંમતે મરદા તો મદદે ખુદા'** એ ઉક્તિ પર શ્રદ્ધા રાખી આળસુપણું અને નાહિંમતપણું મુકી દઈ ઉઠો! જાગો! અને કુંભકર્ણની નિદ્રામાં પડેલા આપણા [illegible] જાગૃત કરો અને [illegible]नामा कुथलीओ गमे तेम [illegible] नांहे अने पोतानो समय धर्म-[illegible]नमांज व्यतीत थई शकशे, जेथी पुण्य-प्राप्ति थइ शकशे.

[illegible]द।

ॐ ॐ ॐ [illegible]मंदिर

केटलाको कहे छे के अमारी पासे पुस्तको नथी ते शुं वांचीए! तेमने जणाववानुं के पोतानी पासे न होय तो ते खरीद करवुं अथवा देहेरासरमांथी के कोई बीजा पासे मांगी लावीने पण वांचवुं जोइए। वळी 'दिगंबर जैन'ना वाचको जो दीर्घदृष्टि दोडावी जोशे तो तेमने जणाशे के तेमनी पासे तो पुस्तकोनो भंडार थयलो छे, केम के 'दिगंबर जैन'ना आठ वर्षनी फाइलो तथा भेटनां पुस्तकोनो ढगलो वाळवामां आवे अने तेज जो क्रमवार वांची जवामां आवे तो 'घेर

શેઠ, સવાઇસીંઘઇ તથા સીંઘઇ પદ્વીના ધારીઓ વગેરેને નમ્ર વિનંતિ કે આપનાથી એક જણ પણ આગળ પડી જરા પણ વિલંબ ન કરતાં એક ડેપ્યુટેશન નામદાર જેપુર મહારાજા પાસે લઇ જાઓ અને ત્યાં દાદ ન મળે તો પછી નામદાર વાઇસરાય પાસે પણ જાઓ, તોજ જૈનો ઉપર આવેલા મહાભારત કલંકનું નિરાકરણ થઈ જશે.

ॐ ॐ ॐ



ગુજરાતી 'ચિત્રમય જગત્'-વિલાયતમાં ચાલુ પ્રસંગોના અનેક ચિત્રોવાળાં અનેક રોજીંદા, અઠવાડિક તથા માસિકો નીકળે છે તેની ઢબ ઉપર પુનાના ચિત્રશાળા પ્રેસ તરફથી 'ચિત્રમય જગત્' નામે સચિત્ર માસિક પાંચેક વર્ષ થયાં મરાઠી અને ત્રણ વર્ષ થયાં હિન્દી ભાષામાં નીકળે છે અને હાલમાં વળી **ગુજરાતી ભાષામાં** પણ એ સચિત્ર માસિક ત્રણ માસ થયાં પ્રકટ કરવા માંડયું છે, જેના માર્ચ-એપ્રીલ-મેના અંકો અમોને મળ્યા છે, જે જોતાં જણાય છે, એમાં યુરોપના રણસંગ્રામની પ્રથમથી અત્યાર સુધીની સચિત્ર હકિકતો નકશા વગેરે સાથે છે તથા અનેક પરીષદોનાં ચિત્રો તથા સચિત્ર નાટકોના લેખો તથા મહાન પુરૂષોના સચિત્ર જીવનચરિત્રો, સચિત્ર વિવાહ વિધિ, સચિત્ર વાર્તાઓ વગેરે અનેક ઉપયોગી વિષયો છે અને દરેક અંકમાં ૨૫-૩૦ ચિત્રો છે. મોટી સાઈઝનું આવું સચિત્ર માસિક ગુજરાતી ભાષામાં આ એકજ છે, જેને દરેક ગુજરાતી બંધુએ ઉત્તેજન આપવું જોઇએ. એના સંપાદક રા.રા. તુળજાશંકર ગૌરીશંકર યાજ્ઞિકછે વાર્ષિક મૂલ્ય ગ્લેઝ કાગળના રૂ. ૩ા અને આર્ટ પેપરના રૂ ૫ાા. મળવાનું સ્થળ-મેનેજર, ગુજરાતી ચિત્રમય જગત્-પુના સીટી.

અમદાવાદ શ્વે૦ જૈન બોર્ડિંગનો રીપોર્ટ—આ બોર્ડિંગનો ૧૯૧૨-૧૩ નો આ રેપોર્ટ જોતાં જણાય છે કે એનો લાભ આશરે ૭૫ વિદ્યાર્થીઓ લઈ રહ્યા છે. આશરે ૨૬૦૦૦) નું ફંડ છે પણ ફી તથા બીજી પરચુરણ મદદ સારી આવે છે તેથી આ ખાતું વાર્ષિક આશરે રૂ. ૬૦૦૦) નો ખર્ચ નિભાવી રહેલું છે અને 'બુદ્ધિપ્રભા' નામે માસિક પણ આ ખાતા તરફથી પ્રકટ થાય છે. અમદાવાદની આપણી બોર્ડિંગમાં ફંડ કંઈક વધુ છતાં પરચુરણ આવક બહુજ થોડી થાય છે માટે તે તરફ ગુજરાતના ભાઇઓએ લક્ષ આપવું જોઇએ.

શ્વે. જૈન કોન્ફરંસના રિપોર્ટો-આ કોન્ફરંસની સુજાનગઢમાં મળેલી બેઠકનો તથા ૧૯૬૯-૭૦નો એમ જુદા જુદા રિપોર્ટો છે, જે જોતાં જણાય છે કે, આ કોન્ફરંસના કાર્યવાહકો જાગ્રત થયા છે ખરા અને હવે પાછી શરૂઆતના વખત જેવી જાહોજલાલી આવવાનાં ચિન્હો જણાય છે. ફંડ તો બહોળું છે, ખાતાંઓ પણ અનેક છે પ્રંત ... તેથી તે દરેકને સારી ... જોઇએ. એનું ... हैं कि इस ... હાલ સારી चलानेमें मुझसे जि... ચાલે છે.

—શ્વે સુવર્ણ માળા અંક ૫૨-૫૩—લક્ષ્મી આર્ટ પ્રીન્ટીંગ પ્રેસ, ભાયખલા—મુંબઇથી પ્રગટ થતી માસિક સુવર્ણમાળામાં આ અંકોથી મોટો સુધારો થયો છે. ઐતિહાસિક પુરૂષો જેવા કે અકબર, ટોડરમલ, પૃથ્વીરાજ, જયસિંહ, શાહુ, ચાંદબીબી, શિવાજી, ટીપુ સુલતાન વગેરેનાં ચિત્રો ઉપરથી ડિઝાઇનના પ્રકટ થવા માંડયા છે. ગુજરાતી, હિંદી, મરાઠી, ઇંગ્લીશ એ ચારે ભાષામાં ચિત્રોની સમજુતી હોય છે. વાર્ષિક મૂલ્ય માત્ર રૂ ૨) છે.

સુરતમેં જયંતી મહોત્સવ—શ્વે. મુનિ આત્મારામજી મહારાજની ૨૦મી જયંતી સુરતમાં ભારે ઉત્સાહથી ઉજવાઈ ૩ા કલાક સુધી આત્મારામજીના ગુણોનું વર્ણન થયું હતું તેનો આ ૫૦ પાનાનો હિન્દી રિપોર્ટ છે.

શ્વે. સ્થાનકવાસી ગઢડા જૈનશાળા-કન્યાશાળાનો રિપોર્ટ તથા 'વાંઢનો વિનાશ'

નામે નાનું પુસ્તક-બે વર્ષ થયા આ સ્થપાઇ છે. ૭૦ વિદ્યાર્થી લાભ લે છે, કામ ઠીક ચાલે છે. શા ધારશી જીવન દેશાઇનો પ્રયાસ ઉત્તમ છે.

શ્રાવિકા ધર્મ—લેખક વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ અને પ્રકાશક, 'જૈનહિતેચ્છુ, ઓફિસ-મુંબાઇ કિં ૦)= અને પૃ. ૨૪. આ નાનકડા પુસ્તકમાં શ્રાવિકાઓને શિખામણરૂપ આશરે ૩૦૦ નાનાં નાનાં વાક્યો છે, જે મનન કરવા યોગ્ય છે.

ભૂગોળ શિક્ષક—સુરત શહેર અને ચોર્યાસી તાલુકાની આ ભૂગોળ છે. મૂલ્ય ૦)= પ્રકાશક છગનલાલ મોતીરામ શાહ, શાહપોર-સુરત. એમાં સુરત શહેર અને ચોર્યાશી તાલુકાનું વર્ણન આબેહુબ રીતે દર્શાવેલું છે. જે સ્કુલોમાં ચલાવવા લાયક છે.

तरंगिणी—बनारससे वसंतराय व्यास द्वारा संपादित और प्रकाशित ६४ पृष्ठका नवीन सचित्र हिन्दी मासिक वर्ष १. अं. १. वार्षिक मूल्य २) जैसा अच्छा कहलाता है वैसा यह मासिक निकलने लगा है। इस अंकमें ६ चित्रों और २७ विषयोंके लेख हैं। छपाई सफाई अच्छी, लेख भी अच्छे और चित्रों भी रंगबेरंगी है। हिन्दी साहित्य प्रेमीओंको अवश्य ग्राहक होना चाहिए।

नवजीवन—इन्दौरसे प्रकाशित आर्यसमाजका सचित्र मासिक पत्र। भाग ७ अं. १ पृष्ठ ७२. इसमें लेख, चित्रों आदि ठीक आते हैं। छपाई सफाई भी अच्छी है और वार्षिक मूल्य ३) है।

भद्रबाहु और कल्पसूत्र (संक्षिप्त जैन इतिहास)—लेखक श्वे. मुनि माणेक और प्रकाशक लाला बिहारीलाल, बड़ौत, मूल्य ०)=

शील संरक्षण:—लेखक बाबू बुधमल पाटनी और प्रकाशक मालवा दि. जैन प्रां. सभा कार्यालय—बडनगर। मूल्य सदाचार प्रचार (मुफ्त)। शीलरक्षणका यह निबंध बहुत अच्छा है और हरएक श्राविकाको पढ़नेयोग्य है।

जैन धर्म प्रकाश—लेखक बा. जवाहीरलाल (श्वे.) जैन और प्रकाशक श्री विजयधर्म सुरी मंडळ—आगरा। मूल्य ०)=) इसमें ६९ भजन हैं।

जैन प्रभात—बम्बई (ठाकुरद्वार रोड ४०२) से प्रकाशित मालवा दि. जैन प्रांतिक सभाका नवीन सचित्र मासिक पत्र। संपादक बाबू सूरजमल जैन—हरदा। वार्षिक मूल्य सिर्फ १) इसका प्रथम अंक ४८ पृष्ठका एक चित्र सहित और दूसरा १०० पृष्ठका ३ चित्रों सह प्रकट होचुका है, साईज और लेखनशैली 'जैनहितैषी' जैसी ही है। लेख अच्छे रहते हैं। बाबू सूरजमलजी उत्साही होनेसे यह मासिक बहुत उन्नति कर सकेगा ऐसा दिखता है। मालवा प्रान्तके सभी भाईओंको अवश्य ग्राहक होना चाहिए।

आप्तपरीक्षा—अनुवादक व प्रकाशक पं. उमरावसिंह जैन-स्याद्वाद महाविद्यालय काशी। मूल्य ०।- आने। श्री विद्यानन्दस्वामिविरचित आप्तपरीक्षाका यह मूल सहित भाषानुवाद हिन्दी भाषामें है। अनुवाद अच्छा हुआ है। इसमें वैशेषिक

बौद्ध व वेदान्त आदि दर्शनोंके कर्ताओंमें सत्य वक्ताका लक्षण सर्वज्ञपना व वीतरागपना न पाकर अन्तमें अर्हंतदेवको उपर्युक्त लक्षणसे सत्यार्थ वक्ता सिद्ध किया है।

परीक्षामुख–अनुवादक और प्रकाशक पं. घनश्यामदास जैन स्या. महा विद्यालय–काशी। पृष्ठ ९४ मूल्य ०।=आना। श्रीमत् माणिक्यनन्दिस्वामी विरचित परीक्षामुख (न्यायशास्त्र) ग्रंथका यह मूल सहित भाषानुवाद है जो विद्यार्थीओंको बहुत ही उपयोगी है क्योंकि भाषार्थके साथ भावार्थ भी साथ२ लिखा हुआ है।

जैन पुष्पमाला–(प्रथमगुच्छक)–लेखक और प्रकाशक–पन्नालाल जैन, पार्सल क्लर्क अलवर (कोटा)। इसमें निर्वाणकांड, अकलंक स्तोत्र, राजुलि अष्टक आदि नवीन हिन्दी कवितामें रचा गया है जो पढ़ने योग्य है। डांकव्यय आधा आना भेजनेपर प्रकाशकसे विनामूल्य प्राप्य।

श्रीमती दि. जैन मालवा प्रां. सभाका ११ वां और औषधालयका प्रथम रिपोर्ट–यह सभा बहुत उन्नतिके साथ कदम बढ़ा रही है (जब कि महासभा, बम्बई प्रांतिक सभा, दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा आदिके कार्य शिथिल हो रहे हैं।) सभाके कई अधिवेशन होते हैं, फंड भी अच्छा है। मासिक भी प्रकट होने लगा है। औषधालय द्वारा भी सारे हिन्दुस्थानभरमें विनामूल्य शुद्ध औषधिका प्रचार हो रहा है आदि। यह सब इन्दौरके सेठों रा. ब. दानवीर सेठ हुकमचंदजी, रा. ब. दानवीर सेठ कल्याणमलजी, रा.ब. सेठ कस्तूरचंदजी आदिकी सभाकी तरफ अपूर्व सहानुभूति और सहायताका तथा महामंत्री लाला भगवानदासजीके अपूर्व उत्साहका फल है।

जैनधर्म प्रभाकर–संपादक और प्रकाशक विद्याभूषण दीनानाथ शर्मा-इलिचपुर सिटी (बरार)। वर्ष २ अं. १–२ यह हिन्दी भाषाका मासिक है। लेख कई उपयोगी होते हैं। वार्षिक मूल्य १॥

मालवा प्रां. सभाकी अपूर्व प्रशंसाः–ता. २६–६–१९ को अहिंसाधर्मप्रचारक राय बहादुर सुबेसाहब बापुरावजी उज्जैनने बडनगर पधारकर मालवा प्रां. सभा कार्यालय व औषधालयका निरीक्षण करके अपना हार्दिक संतोष प्रकट किया और कहा कि इस सभाको अपने कार्य चलानेमें मुझसे जिस बातकी इमदाद चाहेंगे वह मदद उनको हमेशा मुझसे मिलती रहेगी और इस तरहपर इस विषयमें जो कुछ सेवा मुझसे होगी मैं उसको गनीमत समझुंगा। लाला भगवानदासजी महामंत्री अपूर्व साहसी और उत्साहभावसे कार्य कर रहे हैं। औषधालयका उपयोग बहुत होता है और स्थान छोटा है इसलिये उसके मकानका अच्छा प्रबंध करना चाहिए आदि। इसी मौकेपर सूबासाहबको एक अभिनंदनपत्र भी दिया गया था जिसमें आपको रातज्या. आममें होती हुई असंख्य मूक पशुओंकी घोर हिंसा बंद करनेके लिये बहुतही धन्यवाद दिया गया था।

श्रुतपंचमी पर्व.

आ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ५ ने दिने नीचेनां स्थळोए श्रुतपंचमी पर्व उजवायाना समाचार मळ्या छे—

झालरापाटन केम्पः—जैनकुमारसभाके उपमंत्री, बाबू सुन्दरलालजी और घासीलालजी बाकलीवाल सूचित करते हैं कि कुमारसभाकी कोशिससे इस वर्ष यह पर्व बहुत ही अच्छी तरहसे मनाया गया था। प्रातः १० बजेसे १ बजे तक दशांगमंडल मांडकर श्रुतस्कंध-पूजन की गई उस वक्त **मुनि श्री चंद्रसाग-रजी महाराज**, बाबा भागीरथजी वर्णी, ब्र. उ-समचंदजी मं[illegible]स्थित थे। १ से ३ बजेतक बाबा भगीर[illegible] श्रुतपंचमीकी कथा सुनाई और ४ से ८[illegible] तक श्री जिनमाताकी सवारी सहित सारे शहरमें **नगरकीर्तन** किया गया और फिर रात्रिको ८ से ११ बजे तक **सभा** की गई जिसमें मास्टर शिवरामसिंहजी शर्माने 'विद्याकी महिमा' प्रकट की और बाबा भागीरथजीने 'सम्यक्ज्ञानकी आवश्यकता' पर व्याख्यान देते हुए कहा कि शास्त्र दूसरोंको विना पढ़नेको दिये जैनधर्मका प्रचार कदापि नहीं हो सकता आदि। रात्रिको ३ बजे तक भी धर्मोन्नतिके **भजनकीर्तन** हुए थे। वास्तवमें जैनकुमारसभाके स्थापित होनेसे झालरापाटनमें उन्नतिके चिन्ह नजर आ रहे हैं।

वडोदराः—शा भोगीलाल नाथाभाई तथा शेठ लालचंद कहानदास जणावे छे के, अत्रे वाटीना तथा नवीपोळना मंदिरमां शास्त्रोने उंचे आसने बिराजमान करी श्रुतस्कंध पूजा, सरस्वति पूजा, स्तवन वगेरे ठीक ठाठथी थयुं हतुं.

बोधेगांवः—बळवंत बापुराव सूचित करते हैं कि इस पर्वमें मंदिरजीको ध्वजा पताका तोरन निशान आदिसे सुशोभित करके ९ से १ बजे तक अभिषेकपूर्वक श्रुतस्कंधपूजन, सरस्वति पूजन आदि किया गया था और रात्रिको मंदिरजीमें रोशनाई करके श्रुतपंचमी-कथा सबको सुनाकर ११ बजे तक भजन-कीर्तन हुए थे।

बड़वानीः—जीवनलालजी लिखते हैं कि इधर श्रुतपचमीके दिन प्रातःकाल पूजनविधान हुआ और सेठ नाथुरामजीकी ओरसे चौसठ रिद्धिका मंडल मंडाया गया था और शास्त्रोंको उत्तम वेष्टनों सहित उच्चासनपर विराजमान करके श्रुतस्कंध विधान, सरस्वतिपूजन, मंडल-विधान आदि हुए थे और पं. हजारीलालजीने श्रुतपंचमीकी कथा भी सुनाई जिससे पुस्तकों खरीदनेके लिये रु. १०) सेठ कालुराम, ५) भीलाजी चांदुलालजी, २) नाथुरामजी कस्तुर-चंदजी और ३) अन्य महाशयोंके मिलकर २०) आये हैं। आनंद तो ठीक रहा परंतु जातिविद्रोहके कारण अलग २ मंदिरजीमें पूजन हुई थी।

ओराणः—शा. लल्लुभाई रायचंद जणावे छे के, आ पर्व पूजन, अभिषेक तथा गानतान-पूर्वक सारी रीते उजवायो हतो. लिखित तथा छापेलां शास्त्रोनी संभाळ लेवामां आवी हती. पाक्षिक सभानी मीटींग रात्रे ११ सुधी थयेली तेमां 'शास्त्रो अने समाचारपत्रोथी थता फायदा' ए विषे व्याख्यान अपायुं हतुं.

झांसीः—विरधीचंदजी लिखते हैं कि शास्त्रोंको समालकर उच्चासन पर विराजमान करके श्रुतस्कंध पूजन हुआ था।

लाकरोडाः—शेठ माणेकचंदजी पुस्तकालयना सेक्रेटरी जणावे छे के अत्रे शास्त्रोनुं सूचीपत्र करी पूजन करायुं हतुं तथा शास्त्रसभा करी ए दिवस त्हेवार तरीके पाळ्यो हतो.

सीमलाः—जैनसभाके मंत्री नेमीदासजी लिखते हैं कि इधर इस वर्ष झालरापाटननिवासी श्रीयुत् भवरलालजी शेठी होनेसे श्रुतपंचमी पर्व प्रथम ही बहुत ठाठसे मनाया गया था। प्रातःकाल शास्त्रोंको उचासन पर विराजमान करके पूजन हुई और रात्रिको शास्त्रसभा भी हुई थी जिसमें दिगंबरी श्वेतांबरी सभी भाई सामिल थे और बाबू सुन्दरलालजी बैनाड़ाने श्रुतस्कंधकी महिमाके उपर व्याख्यान दिया था जिससे बहुत भाईओंने स्वाध्यायके नियम लिये और भजन गान भी हुए थे। सभाभवन बहुत अच्छा सजाया गया था।

खंडवाः—दि. जैन पुस्तकालयके मंत्री लिखते हैं कि यह पर्व बहुत आनंदके साथ मनाया गया था। शास्त्रोंकी समाल करके पूजन आदि हुआ था और रु. २५) ग्रंथ मगानेके लिये एकत्रित हुए थे। जहां २ यह पर्व नहीं मनाता वहां २ 'जैन भाईओंसे नम्र प्रार्थना' ऐसा छपा हुआ फार्म श्रुतपंचमीके लिये भेजा गया था।

सनावदः—लक्ष्मीचंदजी पाटनी लिखते हैं कि इधर जैन पुस्तकालय तो ज्येष्ठ वदी १३ को खुला गया था और श्रुतपंचमीके दिन एक कन्याशालाकी स्थापना हुई है।

इडर–भाई नाथालाल अध्यापक जणावे छे के अत्रे आ पर्वने दिने शास्त्रोनुं पूजन करवामां आव्युं हतुं तथा रात्रे १० सुधी सभा थई हती जेमां श्रुतपंचमी महात्म्यनुं विवेचन थया बाद विद्यार्थीओने उपदेश अपायो हतो अने कोठारी पुंजीराम उदेचंद तरफथी मीठाई तथा पुस्तको वेंचवामा आव्यां हतां.

इसप्रकार अंकलेश्वर, नैराद (ग्वालियर), फतेहपुर (जैपुर), बम्बई, इन्दौर, अटेर, नदिगामा (आगरा) आदि स्थानोंमे भी यह पर्व पूजनविधानपूर्वक मनाया गया था जिसमें नैरादमें २५) जिनवाणीकी भेटमें आया, महापुराण आदि ग्रंथ नवीन मगाये गये और व्याख्यानसभामें ३०० जैन अजैन भाई एकत्रित हुए थे और कुछ महाशयोंने रात्रीभोजन–परस्त्रीत्यागका नियम लिया था। फतेहपुरमें २०) दानमें आये थे। बम्बईमें नवीन मंदिरजीमें बहुत ही सुशोभित मंडप बनाकर पूजन की गई थी और पं. धन्नालालजीका व्याख्यान हुआ था। इन्दौरमें कंचनबाई श्राविकाश्रममें गाजेबाजेके साथ पूजन हुई और १ से ३ बजेतक दानवीर सेठ हुकमचंदजीकी सुपुत्री रतनबाई तथा सौ. भागवतीबाईके व्याख्यान हुए जिस वख्त सौ. रतनबाईजीने १००) और अन्य महिलाओंने १०१) शास्त्र लिखानेके लिये प्रदान किये थे।

सुरतमां जैनहितवर्धक मंडळनी जेठ सुद २ ने दिने थयेली सभामां नगरशेठ बाबुभाइ गुलाबभाइना प्रमुखपणा नीचे डॉ. अमीचंद छगनलाल शाहे 'धर्म रक्षा अने ज्ञाति भेद' उपर भाषण आपवा उपरांत प्रदर्शनमांनुं प्राचीन जैन साहित्य बतावायुं हतुं.

ननामुं माटे नकामुं—वैशाख मासमां गुजरातमां दशाहुमड भाइओमां केटलांक लग्न थयेलां ते बाबतनी कंइक चर्चानो लेख ननामो मळ्यो छे, जे प्रकट थवाथी केटलोक फायदो थवा संभव छे, माटे ते लखनार जो अमारी खानगी जाणुं माटे पोतानुं नामठाम लखी मोकलशे तो ए लेख आवता अंकमां प्रकट करवा विचार छे.



रामपुर स्टेटमें यज्ञोपवित् संस्कार और अमरोहाकी सभाका उद्योगः—गत् ज्येष्ठशुक्ल ८ को रामपुरमें १६ व्यक्तिओंका यज्ञोपवित् संस्कार जैनपद्धति अनुसार बड़ी धूमधामसे हुआ था जिसमें जैनधर्मसंरक्षणीसभा अमरोहाके सभापति पं. बीहारीलालजी, लाला सिपाहीलालजी, लाला बाबूरामजी (दिल्ली) आदि पधारे थे और ग्रहस्थाचार्यका पद पं. विष्णुदत्त शर्माने ग्रहण किया था और मंडपकी शोभा ला. सिपाहीलालजीने बहु मूल्य चंदोये, छत्र, चंवर, वेदी, कवली, स्तंभादिसे खूब ही की थी। और यज्ञोपवित् धारण करनेवालोंको अष्ट मूलगुणधारण, सप्तव्यसन त्याग, अष्टमी व चतुर्दशीको हरित्कायका त्याग आदि नियम श्री जिनेन्द्रदेवके समक्ष स्वीकृत कराये गये। अन्तमें इस संस्कारकी आवश्यकता तथा उपयोगीताके विषयमें पं. विष्णुदत्त शर्माका एक व्याख्यान भी हुआ था और लाला फकीरचंदजी बजाजने अपनी और अमरोहाकी बिरादरीमें मोदक बांटे थे। इस कार्यमें रामपुरस्टेट निवासी श्रीमान् लाला स्नेहनलालजी व श्री. ला. अशर्फीलालजी वकीलका परिश्रम सराहनीय था और ऐसा ही जैन संस्कारोंके विषयमें उद्योग करते रहा करेंगे यह आपका कहना है। इसी अष्टमीकी रात्रिको पं. बीहारीलालजीने शास्त्र वांचा और सर्व उपस्थित महाशयोंको अनेक प्रश्नोत्तरद्वारा परम आनन्द प्राप्त कराकर संतुष्ट किया था। अमरोहाकी सभाका यह उद्योग सराहनीय और दूसरी सभाओंको अनुकरणीय है।

जैन पद्धतिसे विवाह—गत मासमें अमरोहासे दो बारातें ज्योही और मुरादाबाद गई थी जिसमें अमरोहा सभाके सभापति, मंत्री आदि भी पधारे थे। ग्रहस्थाचार्यका कार्य पं. विष्णुदत्त शर्माने कराया था और लाला बांकेलालजी और सोहनलालजीने कई जैन संस्थाओंको दान किया था। इन दोनों विवाहोंमें वेश्यानृत्य, आतशबाजी, बागबिहारी आदि व्यर्थ व्यय और कुरीतियां नहीं की गई।

वीसा मेवाडा भाइओनुं पंच श्रावण मासमां आणंदमां मळनार छे, तेमां अमुक मेम्बरोने बोलावनार छे तेम न करतां आखुं पंच बोलाववानी जरुर छे वगेरे. आवुं एक चर्चापत्र अमोने मळ्युं छे.

લગ્ન પ્રસંગની ખુશાલીમાં નેળના શા છગનલાલ ગંગાદાસે વડોદરાની પાઠશાળા અને કન્યાશાળામાં રૂા. ૧૦) આપ્યા છે. આ પાઠશાળામાં ૧૩ વિદ્યાર્થીઓ અને કન્યાશાળામાં ૨૮ ઓને લાભ લે છે; પણ પુરતું ફંડ ન હોવાથી આ પ્રમાણે યથનોનપત મદદ આપવાની જરૂર છે.

ઇડરની ગાદીના ભટ્ટારક માટે ફરી વિરોધઃ—સ્યાદ્વાદ મહાવિદ્યાલયના **પં. ઉમરાવસિંહજી** એક પત્રદ્વારા અમોને જણાવે છે કે-"મોતીલાલ (વિજયકીર્તિ) ભટ્ટારકના સંબંધમાં **ફરીથી ઝઘડો** શરૂ થયો છે. અને ઘણા લોકો મોતીલાલજી **વિરૂદ્ધ હસ્તાક્ષર** (સહીયો) કરી રહેલા છે. અને 'દિગંબર જૈન' માં છપાવવા ચાહે છે. એ લોકોનો અભિપ્રાય એવો છે કે **મોતીલાલજીને ગાદીએથી ઉઠાડી મુકી ઇડરની ગાદીપર એક જૈન પ્રેસ અને સંસ્કૃત વિદ્યાલય ખોલવું !!!** અને તેનો વહિવટ એક ટ્રસ્ટ કમીટીના હાથમાં રાખવો તથા પ્રેસ અને વિદ્યાલયના સંચાલક કોઇ વિદ્વાન કે બ્રહ્મચારીને કરવા (!). આ કારણથી આપને સૂચના છે કે આપ દરેક અંકમાં મોતીલાલજીના વિષયમાં લેખ પ્રકટ કરતા રહો અને હુમડ ભાઇઓને એ કામમાં મદદ આપતા રહો અને હમણાના અંકમાં એવું પ્રકટ કરો કે—**મોતીલાલજીને ભટ્ટારક તરીકે માનવા કે નહીં માનવા તે બાબતની સહી દરેકે 'દિગંબર જૈન' ઑફિસ ઉપર મોકલવી.** આપની પાસે નહીં માનવા બાબતની ઘણી સહીઓ આવશે વગેરે."

હવે આ બાબતમાં શું હિલચાલ ચાલી રહેલી છે તેની અમને કશી ખબર નથી, પણ એમાં કંઇક તો સત્ય સમાયલું હશેજ, માટે જે પંચે બ્રહ્મચારી મોતીલાલજીને ભટ્ટારક તરિકે બેસાડી દીધેલા છે તેમની ફરજ છે કે એ બાબતનો વીગતવાર ખુલાસો તાકીદે પ્રકટ કરવો. દક્ષિણમાં લાતુરની ભટ્ટારકની ગાદીપર બધાની સંમતિ વગર ભટ્ટારક બેસાડવા માટે હાલજ કેવો મામલો બન્યો છે, તે ગયા અંકમાંજ જણાવેલું છે, માટે આ બાબત નિડરપણે આગળ પડી ખરો ખુલાસો પ્રકટ કરવાની જરૂર છે. બેસાડતાં પહેલાં અમોએ તો બહુએ લખ્યું હતું કે યોગ્યાયોગ્યનો વિચાર કરીને અને બધાની સંમતિ મેળવીનેજ કાર્ય કરો. પણ તે વખતે તો આંખમીંચામણા થઇ ડુંગરપુરમાં તાકિદે બેસાડી દીધેલા એટલે હવે આ બાબત અમે વધુ લખીએ તે કરતાં **ઇડરની પંચે તથા અગ્રેસરોએ ખરો ખુલાસો અમોને લખી મોકલવો** જોઇએ કે જે અમે 'દિગંબર જૈન' માં ખુશીની સાથે પ્રકટ કરીશું.

મદદ મળી—શ્રાવિકાશ્રમ (મુંબાઈ) ને મે માસમાં રૂ. ૧૦૦) શેઠ રોડમલ દયાલચંદ કલકત્તા, ૩૦) શ્રીદેવી કુમારિકા, ૧૦) શેઠ લખ્મુમલજી હીપુર, ૧૦) શેઠ રામચંદ્રજી હીપુર, ૧૦) મુન્નાલાલ રાજકુમાર જબલપુર તથા બીજા મળી રૂ ૧૭૯)ની મદદ મળી હતી.

जैनकुमारसभाकी स्थापना—झालरापाटन केम्पमें 'जैनकुमारसभा' की स्थापना हुई है जिसका उद्देश जातिमें फैली हुई कुरीतियोंका मूंह काला करके जैनधर्मका प्रचार करनेका है। मेम्बरफी सिर्फ ०)॥ मासिक है। जैनके अतिरिक्त ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्री, कायस्त व स्पर्शशुद्र भी साधारण मेम्बर हो सकते हैं। मेम्बरोंको तीन प्रतिज्ञाएं लेनी पडती हैं जिससे सभासदीका सर्टिफिकेट मिलता है। यह उद्योग बहुत ही सराहनीय है और हरएक ग्रामके भाईओंको और खास करके झालरापाटनके आसपासके भाईओंको इसमें सामिल होना चाहिए। ज्यादे परिचयके लिये पत्रव्यवहारका पता—मैनेजर, जैनकुमारसभा—झालरापाटन केम्प।

ભૂલ સુધારો—ગયા અંકમાં વેંચાયલા 'જીવવિચાર' પુસ્તકમાં ત્રીજે પાને પશુકાય ૧૪००००० લખેલા છે તેને બદલે ४०००० સુધારી લેવા.

આ અંક સાથે—સસ્તી જૈનગ્રંથમાળા અને ભક્તામર મહાત્મ્યની વેંચાયલી જાહેર ખબરો તરફ વાંચકોનું લક્ષ ખેંચવામાં આવે છે.

ફાયદો થયો—વડોદરાથી શા. વીરચંદ ત્રીકમલાલ લખે છે કે માળવા પ્રાં. સભાના ઔષધાલય (બડનગર) માંના ઔષધથી અત્રે ૧૫ પુરૂષોને આરામ થયો છે માટે આ ઔષધાલયનો મફત લાભ દરેકે લેવો જોઇએ.

શ્રી સમ્મેદશિખરજીપર શ્વેતાંબરીનો ભારે ઉપદ્રવઃ—જો કે હજુ શ્રી સમેદશિખરજીના પહાડનો પટ્ટો દિગંબરી કે શ્વેતાંબરી ભાઇઓને મળ્યો નથી અને તેને લગતા કેસો ચાલીજ રહેલા છે, તેમાં દિગંબરીઓએ સરકાર સામે પટ્ટાનું સાટું રદ કરવાને જે કેસ માંડેલો છે, તેમાં હાલ શ્વેતાંબરી ભાઇઓ તરફથી કોર્ટને એવી સુચના થયેલી કે આપે મે. માસમાં પહાડ ઉપર પધારી નિરીક્ષણ કરવું. હવે આપણા એ ભાઇઓ પહાડ ઉપર ઘણો ફેરફાર કરી રહેલા છે તે એટલે સુધી કે ગૌતમસ્વામીની ટૂંક ઉપર નવો દરવાજો કરી દીધો હતો. (જેને દિગંબરી કોમના આદમીઓદ્વારા કાઢી નાંખવામાં આવ્યો છે), તથા બધી ટૂંકો ઉપર પણ દરવાજા થવાની તૈયારી ચાલે છે!! વળી જે કોઇ ભાઇઓ આ તીર્થરાજની યાત્રાએ ગયા છે તેઓ તો સારી રીતે જાણેજ છે કે જલમંદિરમાં સામસામી બે ઓરડીઓમાં, જે દિગંબરી પ્રતિમાઓ હતી, પણ તેને બધીને ઉપાડી નાંખીને કોણ જાણે ક્યાં સંતાડી દીધી છે તે માલમ પડતું નથી. આ જાણી ક્યા દિ. બંધુની લાગણી નહી દુખાય! આ બાબત જાણવામાં આવતાંજ મુંબાઇથી ભારત. દિ. જૈન તીર્થક્ષેત્ર કમીટીના મહામંત્રી લાલા પરભૂદયાળજી તા ૨૭ જુને ગીરીડી ગયા અને ત્યાંથી બંશીધર અને મૌજીલાલજીને લઇને મધુવન ગયા અને ત્યાંથી સંકટાપ્રસાદ ભંડારી (તેરાપંથી કોઠી), મૂલચંદ પૂજારી તથા કોઠીના બે સીપાઇને લઇને તા. ૫મી જુને રાત્રે એક વાગતા પછી પહાડપર ચઢવા માંડ્યા તે તા. ૬ઠીએ સવારે પાંચ વાગતે પહાડપર કુંથનાથની ટુંકે પહોંચતાંજ જોયું કે ત્યાં શ્વેતાંબરી ભાઇઓ તરફથી આશરે ४२ આદમી બંદુક, તરવાર, ભાલા, બરછી, તીરકામઠાં તથા ડંડાઓ લઇને જોવામાં આવ્યા. તેમણે કહ્યું કે અમારા માલિકનો હુકમ છે માટે તમને દર્શન કરવા જવા નહીં દઇએ, એમ કહી સંકટાપ્રસાદને ખેંચીને નીચે લઈ ગયા અને તેને ખૂબ માર્યો તેમ આ લોકોને જવા ન દીધા ત્યારે ડાકબંગલાને રસ્તે નિમિયાઘાટ તરફ નીકળીને ત્યાંથી મહામુશીબતે છેક રાત્રે ૭॥ વાગતે મધુવન પહોંચ્યા. હતા. સંકટાપ્રસાદને તો ઘણા ઘાયલ કરેલા છે જે ગીરીડીની હોસ્પીટાલમાં પડેલા છે અને પોલીસમાં જાહેર થયું છે, વગેરે હૃદયવિદારક સમાચાર 'જૈનમિત્ર' થી જણાયા છે. હવે ગીરીડી અને હઝારીબાગવાળા સાથે મળીને લાલા પરભૂદયાળજી ખટપટ કરી રહેલા છે એ માટે ભારે શ્રમ અને મદદની જરૂર છે; જેથી દિગંબરી તરફથી સરકારને તારો તથા પત્રો લખવાની જરૂર છે તથા દરેકે પોતાથી બનતી મદદ આપવી જોઇએ.

विवाहोत्सव पर दान—अवागढमें सेठ शिखरीप्रसादजी रईस (मोहमदाबाद) ने विवाहोत्सव पर ७००) का दान किया जिसमें १०७) विद्यादानमें और शेष मंदिरों आदिमें दिये।

પરીક્ષા થશે—આ વર્ષે મુંબાઇ દિ. જૈન પરીક્ષાલય તરફની પરીક્ષા શ્રાવણ વદ ૮થી લેવાશે; માટે એમાં બેસનારે મંત્રી, રાવજી સખારામ (સોલાપુર)ને લખી ફોર્મો મંગાવી ભરી મોકલવા જોઇએ.

અનુકરણીય દાન—કલકત્તામાં બે શેઠીયાઓએ મારવાડી વિદ્યાલય માટે રૂ. ૧૧૨૦૦૦)ની સખાવત કરી છે. આવી સ્થાયી મદદ આપણા સ્યાદ્વાદ મહાવિદ્યાલય બનારસ, જૈનસિદ્ધાંતવિદ્યાલય—મુરૈના અને બ્રહ્મચર્યાશ્રમને ક્યારે મળશે ? દિગંબરી ભાઇઓમાં ક્યાં લક્ષાધિપતિઓનો ટોટો છે, માટે આ દરેક સંસ્થાને એક એક લાખ રૂપિયા આપનાર જો કોઇ શ્રીમાન્ નીકળે તો કેવું સારૂં ?

देहलीके विद्यालयको ६०००)का दान—देहलीनिवासी लाला सोहनलालजीने अपने पिताके स्मरणार्थ 'हीरालाल जैन विद्यालय' कई वर्षसे खोला है जिसके लिये १६०००) की इमारत खरीद करके उसका प्रवेश-मुहूर्त ता. ६ जुनको हुआ था। आजतक इस विद्यालयको आप ४००००) दे चुके हैं और इस मौकेपर ६०००) और दिया है। धन्य है आपके विद्याप्रेमको।

प्रतिमा नीकळी-नेमीनाथस्वामीना जन्मस्थान बटेश्वर(सीकोहाबाद)मां जमुनाजीमांथी चार प्रतिमाओ नीकळी छे जे संवत १२०९ ज्येष्ठ शुक्ल १२नी अने मनोज्ञ छे.

जीर्णोद्धारके लिये १५५१का दान—बडवाणीमें श्री बावनगजाजीका जीर्णोद्धार आदिके लिये लाला जम्बूप्रसादजी सहारनपुरने रु. १५५१) दिये है।

आफीसर हुए—मुझफरनगर निवासी मेजर रायबहादुर लाला घमंडीलालजी भारत सरकारके कमसरिया मुहकमेमें सातवीं डिवीझन मेरठके सप्लाई रिजर्व डिपो आफीसर ७००) मासिक पर नियुक्त हुए है। यह पद भारतभरमें इस मुहकमेका दूसरे नम्बरका पद है।

સોલાપુરમાં જાહેર જૈન પુસ્તકાલય અને વ્યાયામશાળાની સ્થાપના:-સોલાપુરમાં શેઠહીરાચંદ નેમચંદ ઓ. મેજીસ્ટ્રેટ તરફથી પોતાના પિતાશ્રીના સ્મરણાર્થે '**દોશી નેમચંદ નાહાલચંદ પુસ્તકાલય**" બેલગામ નિવાસી એ. પી. ચૌગુલે વકીલને હાથે તથા દોશી જીવરાજ ગૌતમચંદ તરફથી પોતાના પિતાના સ્મરણાર્થે '**ગૌતમચંદ નેમચંદ વ્યાયામશાળા**' જ્યોતિબા લક્ષ્મણ પિરાજે (બેલગામ) ને હાથે મોટો મેળાવડો કરીને તા. ૨૭ મી જુને ખુલ્લાં મેલવામાં આવ્યાં છે. આથી સોલાપુરમાં સ્થાયી જૈન પુસ્તકાલય અને કસરતશાળાની સગવડ થઇ છે.

"दिगंबर जैन"के उपहार कब मिलेंगे?—इस वर्षके ग्राहकोंको कुल ८ पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी, जिसमें दो उपहार भेजचुके है और तीसरा उपहार बालशिक्षा इस अंकके साथ भेजा गया है और बड़ा भारी उपहारग्रंथ श्री सागारधर्मामृत (पूर्वार्द्ध पृ. ३१०) तथा श्राविकासुबोध यह दो उपहार अलग् बुकपोस्टद्वारा अषाड सुदी १५ तक अवश्य रवाना किये जायंगे। ग्राहकगण! धैर्य रखिए। उपहारके लिये बारबार तकाजा न लिखिए। अश्विन मास तक आपको उपहारकी सभी पुस्तकें घरबैठे पहुंचु जायगी।

સોલાપુરમાં વિદ્યાદાનની વર્ષા:-કુંથલગીરીના 'કુલભૂષણ વિદ્યાલય'ના સ્થાપક પાર્શ્વસાગર બ્રહ્મચારી હાલમાં સોલાપુર પધારેલા ત્યાં સભા થઈ એ વિદ્યાલયના ફંડમાં શેઠ હીરાચંદ નેમચંદ ૨૫), શેઠ નાથા રંગજી ૨૫), શેઠ હરીભાઈ દેવકરણ રૂ. ૬૦) અને શેઠ મોતીચંદ પરમચંદે ૨૫) એમ રૂ. **૧૩૫) ની વાર્ષિક મદદ** આપવા કબુલ્યું છે. વળી બ્રહ્મચારી શીતલપ્રસાદજી તથા પં. ઉમરાવસિંહજી ત્યાં પધાર્યા હતા, જ્યાં વૈશાખ વદ ૧૧ ને દીને ધર્મોપદેશની આવશ્યકતા ઉપર મંદિરમાં તથા રિપન હોલમાં Principals of Religion એ વિષય ઉપર જાહેર ભાષણો એમ બે ભાષણો બ્રહ્મચારીજીએ આપ્યાં હતાં, જ્યારે સ્યાદ્વાદ મહાવિદ્યાલયને ૬૦૦) ની મદદ મળી હતી. વળી શેઠ મોતીલાલ રાવજીએ સ્યાદ્વાદ મહાવિદ્યાલયમાં એક સરસ્વતિભવન ખોલવા માટે ૧૧૦૦,ની મદદ આપી છે. આરાના સિદ્ધાંતભવનને કાશીમાંજ સ્થાયી તરીકે લાવવામાં આવે તો તે ઘણાજ સારા પાયાપર જાહેરમાં આવી તેનો લાભ પણ વધુ લઈ શકાય.

ઉદેપુરમાં ડૉ. ટેસીટોરી:—ગત માસમાં પં. હર્ષચંદ ભૂરાભાઇને દીક્ષા આપવાનો ભારે ઉત્સવ થયેલો તેમાં ઇટાલીયન ડૉ. ટેસીટોરીએ ખાસ પધારી હર્ષચંદને દીક્ષા સમયે તિલક કરી શ્રીફળ આપેલું હતું તથા તે સમયે એક ભાષણ હિંદી ભાષામાં કરી જૈન ધર્મનાં ભારે વખાણ કર્યા હતા.

કયસરે હિંદનો ચાંદ મેળવનાર જૈન બાનુ—રાધનપુરનિવાસી શ્રીમતી ગુલબીબાઈ કે જેમણે ત્યાં હોસ્પીટાળ સ્થાપવા ૩૦૦૦૦)તથા ૨૦૦૦૦) હિંદુ અને જૈન વિદ્યાર્થીઓને ઉત્તેજન માટે આપ્યા છે તથા બીજી પણ સખાવતો કરી છે તેમને હાલમાં નામદાર સરકાર તરફથી કયસરે હિંદનો રૂપાનો ચાંદ મળેલો છે. જૈનોમાં આવો ચાંદ મેળવનાર આ બ્હેન પ્રથમજ છે જેમને ઠેકઠેકાણેથી એ માટે માનપત્રો મળી રહ્યાં છે

સાહિત્ય પરિષદ્ અને પ્રદર્શનમાં જૈનોનો ફાળો—અત્રે ભરાઈ ગયેલી પાંચમી ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ્‌માં નિબંધો મોકલનાર તથા પ્રદર્શનમાં ગ્રંથો, ચિત્રો વગેરે મુકનારાઓને ચાંદો, સર્ટીફીકેટો વગેરે આપવાનો મેળાવડો તા. ૧૧મી જુને સુરતમાં મહારાજ શ્રી બીરત્નલાલજીના પ્રમુખપદે થયો હતો. જેમાં વંચાયલા રિપોર્ટથી જણાય છે કે, પરિષદમાં જૈનો તરફથી પાંચ નિબંધો (૧. પ્રાચીન ગુજરાતી સાહિત્ય જૈનો પાસેજ છે. ૨. જૈન સાહિત્ય ૩. જુના લખાણોમાં ગુજરાતી ભાષા. ૪. કવિ રૂષભદાસ ૫. પાટણના ભંડારો અને તેમાં રહેલું અપભ્રંશ તથા પ્રા ગુજરાતી સાહિત્ય) રજુ થયા હતા, તથા પ્રદર્શનમાં પ્રાચીન ગ્રંથો, સોનેરી ગ્રંથો, સચિત્ર ગ્રંથો, તાડપત્રના ગ્રંથો, ચિત્રો, નકશાઓ વગેરે આશરે ૫૦૦ની સંખ્યામાં મુકવામાં આવ્યા હતા, તેની ઉત્તમતા વગેરે માટે આમોદના ગોરજી ચંદ્રવિજયજીને રૂ. ૫૦)નો, મૂલચંદ કસનદાસ કાપડીયા (સુરત)ને રૂ. ૨૫)નો, ભાવનગરવાળા શેઠ પ્રેમચદ રતનજીને રૂ ૨૫)નો એટલા સોનાના ચાંદો તથા રૂ. ૫)નો શ્રીયુત મોહનલાલ દલીચંદ દેશાઈ (મુંબાઈ)ને અને રૂ. ૧૫)નો ચાંદ સુરતના ચીમનલાલ ખુશાલચંદ મોદીને મળ્યો છે. પ્રદર્શનના બન્ને સેક્રેટરીઓ શ્રીયુત હરગોવનદાસ ઇશ્વરદાસ પારેખ તથા શ્રીયુત મણીભાઇ ઓંકારભાઇ વ્યાસે પ્રદર્શનમાં જૈન સાહિત્ય સારા રૂપમાં ગોઠવીને જૈનો ઉપર ભારે ઉપકાર કર્યો છે અને તેથી આ પ્રદર્શનમાં જૈન સાહિત્યની ભારે પ્રશંસા થવા પામી છે, જે માટે એ બંને મહાશયોના આપણે ઉપકારી છીએ.

सस्ती जैन ग्रंथमालाना प्रथम मणकानो नमुनो.

चैतन-कर्म चरित्र

प्रकरण १ लुं.

राजा चैतन्यसिंहनो पीछान.

શ્રી જિન ચરણે કરી પ્રણામ,
ભક્તિભાવ અતિ ઉરમાં આણ;
ચેતન ચતુર કર્મ દુઃખખાણ,
કહું ચરિત્ર જન કરો પીછાણ.

આ અતિશય વિસ્તારવાળી સૃષ્ટિમાં અસંખ્ય દ્વીપ તથા સમુદ્રો શોભી રહ્યા છે, જેની મધ્યમાં અતિ રમણીય મહા મનોહર અને પોતાના જમ્બુ નામને દેદિપ્યમાન કરવાવાળો જમ્બુદ્વીપ છે. એમાં અનેક નદીઓ, પર્વતો, દેશો, સમુદ્રો તથા અરણ્યો આવેલાં છે. એ દ્વીપના જુદા જુદા વિભાગો ખંડને નામે ઓળખાય છે, તેમાં આ અનુપમ આત્માનું સંપૂર્ણ સાર્થક કરવાવાળો અને સ્વર્ગ તથા મોક્ષલક્ષ્મીને મેળવવા માટે યોગ્ય એવો આર્ય નામે ખંડ છે. એ આર્યખંડમાં અનેક મોટા મોટા દેશો તથા શહેરો વિસ્તારથી વસેલાં છે તથા કેટલાક દેશો કાળના પ્રભાવથી હાલમાં છિન્નભિન્ન થઇ ગયાં છે. જે દેશોમાં ચતુર્થ કાળમાં અનેક મહાત્મા પુરૂષો ઉત્પન્ન થયા હતા, અને જેનો વિસ્તાર સેંકડો અને હજારો યોજનોનો શાસ્ત્રકારોએ વર્ણવેલો છે, તે દેશો આજે વેરાન જેવા થઇ પડયા છે. એજ આર્યખંડમાં તીર્થંકર, સામાન્યકેવળી, ચક્રવર્તી, નારાયણ, પ્રતિનારાયણ, બલિભદ્ર, કામદેવ વગેરે ઉત્પન્ન થયા હતા, અને જેના આગળ ઇંદ્રપુરી પણ લજ્જિત થઇ જાય એવું મહાન્ સૌભાગ્ય આ દેશને પ્રાપ્ત થયું છે. કાળના પ્રભાવે હાલમાં એવા મહાત્મા પુરૂષો ઉત્પન્ન થવા દુર્લભ છે, છતાં પણ જીવ માત્રને ઉચ્ચ ગતિ પ્રાપ્ત કરવા માટે આ આર્યખંડ એક ખરેખરૂં સાધન છે, એમાં લેશ માત્ર પણ શક નથી.

पुद्गलपुरनो राजा चैतन्यसिंह.

હવે આ અનુપમ આર્યખંડમાં અસંખ્યાત નગરોમાં એક પુદ્‌ગલપુર નામે નગર અતિ રમણીક અને મનોહર શોભી રહેલું છે, જેમાં અનેક ધર્માત્મા, પુણ્યાત્મા, સમ્યક્ત્વી, તપસ્વી, અને સભ્ય નરનારીઓ વસે છે. એ નગર ઘણુંજ વિસ્તારવાળું છે, જેમાં અનેક જિન મંદિરો, ઉપાશ્રયો, મહેલો, બગીચા તથા નાનાં મોટાં ઘરો મનોહર આકૃતિનાં બનેલાં છે. વળી જ્યાં મોટા મોટા બજારોમાં ધનાઢ્ય વ્યાપારીઓની દુકાનો હારકટાર આવી રહેલી છે તથા હજારો અને લાખોની ઉથલપાથલ દરરોજ ચાલે છે, એવા અનુપમ અને દિવ્ય નગરનો મુકુટસમાન તેજસ્વી, ન્યાય શાસ્ત્રમાં નિપુણ, અપૂર્વ બળનો ધારક, મહાપરાક્રમી, વિચારવંત, ધર્મનો અનુરાગી, વિદ્યારૂપી લક્ષ્મીનો ભંડાર, અને સુંદર તેજોમય શરીરને ધારણ કરવાવાળો એવો ચૈતન્યસિંહ નામનો રાજા સંપૂર્ણ સત્તાથી રાજ્ય કરતો હતો, જેમના સલાહકારપ્રધાન મંત્રી જ્ઞાનસિંહ બહુ ઠરેલ સ્વભાવના, ન્યાયી અને યોગ્યાયોગ્યનો વિચાર કરવાવાળા તથા રાજાને યોગ્ય વિચાર દર્શાવી રાજ્યભારનું કાર્ય બહુ કાળજીથી કરતા હતા.

सरलस्वभावी सुबुद्धि.

રાજા **ચૈતન્યસિંહ** બહુ દીર્ધદર્શી અને ધર્મચુસ્ત હતા અને સુભાગ્યે કરીને એઓના **લગ્ન** શ્રદ્ધાનપુરીના **ધર્મસિંહ** નામના વિદ્વાન રાજાની અતિ ચતુર, શાંત, સરલ પરિણામી અને સદ્‌વર્તનની ધારક, સ્વરૂપમાં દેવાંગનાઓને પણ લજાવે એવી, તથા શીયળરૂપી શણગારથી શોભિત, કામરૂપી મસ્તાનને કચડીને વિજય જેણે મેળવ્યો છે એવી, સત્યની શોખીન અને જૂઠને ઝેર સમાન જોનારી, એવા એવા મહાન ગુણને ધારણ કરવાવાળી **સુબુદ્ધિ** નામની રાજપુત્રી સાથે થયાં. યોગ્ય સ્ત્રી મળવાથી રાજાનું મન હમેશાં પ્રફુલ્લિત રહેતું. સ્ત્રીઓ પુરૂષને અર્ધાંગના સમાન છે. કાય પ્રસંગે સદ્‌ગુણી સ્ત્રીઓની સલાહ બહુ સહાયકર્તા થાય છે અને તેવીજ રીતે આપણા આ ચરિત્રના નાયક ચૈતન્યસિંહને **સુબુદ્ધિ મહારાણી** બહુ સહાયક થઈ પડયાં.

રાજ્યકારભાર બહુ સંતોષકારક રીતે ચાલી રહ્યો છે. રાજ્યમાં અન્યાય, અસત્ય કે અહંભાવ સ્વપ્ને પણ સંભળાતો કે દેખાતો નથી. **રાજા પોતેજ અસત્યનો કટ્ટો શત્રુ હોય તો તેના રાજ્યમાં અસત્ય રહેવા પામેજ કેમ?** જ્યાં સૂર્યનો પ્રકાશ છે ત્યાં અંધકાર કેમ હોઈ શકે? અને જ્યાં ન્યાયનું સમતોલન હોય અને ધર્મરૂપી દીપક હમેશાં પ્રકાશિત હોય, ત્યાં અધર્મી નાપાકો પોતાનો મઠ કેમ જમાવી શકે? મિલ્કતનો માલિક જાગ્રત હોય, ત્યાં ચોર લોકો કેવી રીતે ફાવી શકે? કદીજ ન ફાવી શકે.

આવી રીતે ચૈતન્યરાજા સંપૂર્ણ સુખમાં અને ભોગવિલાસમાં પોતાનો કાળ નિર્ગમન કરી રહ્યા છે અને સંસારમાં દુઃખ હશે કે નહીં એનો સ્વપ્ને પણ ખ્યાલ આવતો નથી, તેમજ સૂર્યસમાન કાંતિની ધારક અને શીળવ્રતની પાળક સુબુદ્ધિ મહારાણી સાથે આનંદમાં સંસારરૂપી સાગરમાં નિડરતાથી પોતાનું નાવ ચલાવી રહ્યા છે.

पापरुपी पलीत.

સંસારી જીવોને **કર્મરૂપી શત્રુ** હમેશાં પૂંઠે લાગેલાજ હોય છે અને જ્યાંસુધી એ નાલાયક, અદેખા અને ઘાતકી સેતાનનો નાશ પુરેપુરો થયો નથી, ત્યાંસુધી એ નફ્ફટ નાપાક જીવનો કેડો છોડતોજ નથી. તક સાધીને પૂંઠે પૂંઠે ભમ્યાજ કરે છે. જીવનું જરાએક પણ પ્રમાદીપણું જોયું કે તરત પોતાનો પાપી પંજો જમાવી દે છે અને ક્રમક્રમે સર્વસ્વ હરણ કરવાની પણ તક લે છે. જેવી રીતે કપાસનો એક મોટો ઢગલો શાંતિથી રહેલો હોય છે, પણ તેમાં એક બારિક તલ માત્ર પણ અગ્નિનો સંયોગ થાય તો, તે આખો ઢગ થોડાજ વખતમાં નાશને પ્રાપ્ત થાય છે, તેવીજ રીતે સંસારમાં પણ સમ્યક્ત્વી અને દૃઢ પ્રતિજ્ઞા તથા ધર્મના ધારી જીવોએ પુણ્યરૂપી ઢગ મહા મહેનતે એકત્ર કરેલો હોય છે, તેમાં **પાપરૂપી અગ્નિની એક ચીણગારી** પડતાંજ તેનો નાશ થાય છે અને તેથીજ આગમો (શાસ્ત્રો) આજ્ઞા કરે છે કે, હે ભદ્રિક જીવો! તમો **પાપરૂપી પલીતથી** દોઢ ગાઉ દૂરજ રહેજો, કદિ પણ એનો વિશ્વાસ કરતા નહીં, તમારા અથાગ પરિશ્રમથી મેળવેલાં ધનરૂપી પુણ્યનો એ ચતુર ચંડાળ એક ક્ષણ માત્રમાં નાશ કરી નાંખશે અને **ચોર્યાસી લાખ જીવયોનિમાં** રખડાવી રખડાવીને તમામ પાયમાલી કરી નાંખશે. તમારા સુવિચાર અને ધર્મપ્રીતિ જોઇ એ અદેખા સેતાનો બળાપો કરે છે અને તમોને ચલાયમાન કરવાને તમારી પૂંઠે પૂંઠે ભમ્યાજ કરે છે. અને લાગ સાધી તમોને સજ્જડ છક્કડ ખવડાવે

છે તથા ભ્રમમાં ભૂલાવી ધર્મરૂપી નિસરણી ઉપરથી ગબડાવી જમીનપર પાડી **પાપરૂપી નર્કના દરવાજામાં** હડસેલી દે છે અને ત્યાં અસંખ્યાત કાળ સુધી **દુઃખરૂપી દરિયામાં** ડુબાડી મુકે છે, જ્યાંથી પાછા નીકળવાનો વારો લાંબે સમયે અથવા કવચિત્જ મળે છે, માટે ચેતો! ચેતો!! હે ભોળાઇમાં ભૂલી રહેલા ભદ્રિક જીવો! કદિપણ એ પાપી મિથ્યાત્વી પલીતના પ્રેમમાં ફસાઇ જશો નહીં, એ કપટકળાના ભંડાર, કાળસમાન અતિ નિર્દય પરીણામી **રાગ, દ્વેષ, ક્રોધ, માન, માયા, મોહ, લોભ** વગેરે હમેશાં તમારી બારિક દેખરેખ રાખે છે, અને રાત્રિ દિવસે તમારાં છિદ્રો શોધ્યાજ કરે છે. મારા સારાં કૃત્યોમાં પણ કાંઇને કાંઇ ખામી લાવવા પ્રયત્ન કર્યા કરે છે. સત્યતાનો માર્ગ બહુ સાંકડો છે અને તેના ઉપર ચાલતા સરળ પરિણામી જીવોને નીચ, અધર્મી, ધુતારા, અસત્યવાદી, મિથ્યાત્વી ઠગરૂપી પાપના દૂતો હડસેલો મારી ગુલાટ ખવડાવે છે અને **ચતુર ચૈતન્યને** બાવરું બનાવી શાંતિના સાહિત્યમાં આગ લગાડી મુકે છે, અને પોતાના ધારેલાં કુકૃત્યો પાર પાડવાને સામર્થ્યવાન બનેછે.

જેવી રીતે લુચ્ચા લોકો ચોરી કરવાની લાલચથી હમેશાં સાહુકાર લોકોની દેખરેખ રાખ્યાજ કરે છે અને લાગ મળતાં તરત પોતાનો પંજો મારી જાય છે તેવીજ રીતે **કર્મરૂપી** ઠગો ચૈતન્યની પૂંઠે હમેશાં લાગેલાજ રહે છે.

પ્રિય વાચકો! આપણી વાર્તાના નાયક **ચૈતન્યરાજા** આટલો સમય કર્મરૂપી શત્રુથી દૂર હતા. અથવા એમ કહો કે કર્મરૂપી શત્રુની નજર એમના તરફ બગડી નહોતી, પણ **કાળની ગતિ ગહન** છે, ભાવી મિથ્યા થતું નથી, સુખ અને દુઃખ વારાફરતી આવ્યાજ કરે છે, ઉદય છે તેનો અસ્ત પણ છે, સૂર્યના પ્રકાશનો લોપ થયેલો જોવાને રાત્રિનો અંધકાર તાકીજ રહેલો હોય છે, તેમ આ ચૈતન્યરૂપી દીપકને ઝાંખો પાડવાને અથવા કહો કે બુઝાવવાને **અજ્ઞાનરૂપી અંધકાર** તૈયારજ હોય છે.

प्रकरण २जुं.

मिथ्यात्वपुरीना मोहराजा.

આ બેહોળા વિસ્તારવાળા પૃથ્વીતળને વિષે અસંખ્ય પ્રદેશો છે, તેમાં **અજ્ઞાનદેશ** એક અંધારી દિશામાં આવેલો છે. એ દેશમાં અનેક ગ્રામો, નગરો તથા શહેરો વિસ્તારથી વસેલાં છે. દેશના નામ પ્રમાણે નગરો પણ તેવાંજ લાયક! નામનાં શોભી રહેલાં છે, જેમાં એક ખાંચરેની ખુણમાં **મિથ્યાત્વપુર** નામનું અતિ મનોહર! શહેર વસેલું હતું અને તેમાં મહા આડંબર સહિત **મોહરાજા** રાજ્ય કરતા હતા. શહેર દેખાવમાંજ વિશેષ તેજસ્વી નહોતું કેમકે જ્યાં રાજા પોતેજ અન્યાયી, પ્રમાદી તથા અધર્મી હોય તે નગર સુધરતાને કેવી રીતે પ્રાપ્ત થાય તે વાંચનાર સહેજે સમજી શકે તેવું છે. કહેવત છે કે **"અંધેર નગરી આળસુ રાજા, દુષ્ટ અધર્મી રહે ત્યાં તાજા"** તે પ્રમાણે નગરનું કાર્ય અને વ્યવસ્થા ચાલતી હતી. મૂળ પ્રથમ શહેરનું નામજ **મિથ્યાત્વપુર**, તો પછી ત્યાં ધર્મ અને ન્યાય કેવી રીતે આવીને વસેલા હોય? અને વળી જે નગરનો રાજ્યાધિકારી રાજા પોતેજ **મોહરાજા**, ત્યાં વળી **ન્યાય** અને **સત્યસેનનું** શું કામ હતું! તેઓને તો ભૂલેચૂકે પણ નગરમાં પેસવાની મનાઇ હતી, તો વળી નગરમાં આવીને વાસો તો

કરેજ કયાંથી ? નગરમાં લુચ્ચા, કપટી, ઠગ, જુગારી, વ્યસનખોરો, હરામખોરો વગેરે તસ્કરમહાસો સારી રીતે ફાવી ગયેલા હતા, અને ફાવે તેમાં પણ કાંઈ નવાઈ જેવું નહોતું, કારણકે કોઇના ઉપર રાજ્ય તરફથી દેખરેખ હતીજ નહીં, અને તે હોયજ કયાંથી ? કેમકે રાજા પોતેજ અમાસના અજવાળા ! જેવા ઉજળા, અને છતે દીપકે અંધારા જેવા હતા. નગરને ફરતો મજબુત કોટ અજ્ઞાનરૂપી પાકા કાળા પથ્થરનો બાંધેલો હતો કે જે તોડવાને મહા મુશીબતે પ્રતિપક્ષી શુરવીરોને વેઠવી પડે એવી ધારણા રાખવામાં આવી હોય એમ લાગતું હતું.

विषसमान विषयाराणी.

મહારાજાધિરાજ ! મોહરાજાના શુભ લગ્ન મદનપુરના મહા બળવાન અને પરાક્રમી રાજા લોલુપસિંહની એક પુરા લાડમાં ઉછરેલી, સુંદર સ્વરૂપવાન, વિદ્યાકળામાં નિપુણ (કપટકળાની ભંડાર !), મદનની માયામાં મસ્તાન, કામવિકારનો ખજાનો, અને વિષયના વિષથી ભરેલી વિષયા નામની તરૂણ કુમારીકા સાથે થયાં હતાં. મોહરાજાને આ ચતુરાઇમાં ચકોર ! પટરાણી વિષયારાણી બહુ પ્રિય થઇ પડયાં હતાં, કેમકે જેને જેવું જોઇએ તેવું તેને મળ્યું હતું. કહેવત છે કે:-

દુષ્ટોને દુર્જન ભલા, કપટી ભલો કુછંદ;
સજ્જનને સદ્ગુરૂ ભલા, પામે પરમ આનંદ.

મોહરાજા પૂર્ણ યુવાવસ્થાને પામ્યા હતા અને મહારાણી વિષયા પણ તેજ હદપર આવી પુગ્યાં હતાં. પતિપત્નિ બંન્ને પ્રેમમાં આશક્ત થઇ ભોગવિલાસ કરી રહ્યા હતા. જેવી રીતે મધુકર (ભ્રમર) કમળપુષ્પના પ્રેમમાં (સુગંધીમાં) આશક્ત થઇ રાત્રિદિન ગુંજારવ કર્યા કરે છે, તેમ મોહરાજા વિષયારાણીની નેત્રકટાક્ષ, હાવભાવ અને કામવિકારોની ઉપજતી છોળમાં લીન થઇ રહ્યા હતા. રાજ્યમાં શું થાય છે તેની દરકાર રાખ્યા વિના માયારૂપી મસ્તાન મદનની મમતામાં મોહાંધ થઈ કાળ વ્યતિત કરતા હતા.

मंत्री रागसेन अने द्वेषसिंह.

હવે મોહરાજા જ્યારે આવી રીતે સ્ત્રીના પ્રેમપાસમાં પડી રહી આનંદ માને છે ત્યારે રાજ્યની, નગરની, રૈયતની અને તસ્કરોની તપાસ કોણ રાખતું હશે એવો વિચાર વાચકોને સહજ ઉત્પન્ન થશે, પરંતુ આપણા પરાક્રમે બહાદુર મોહરાજા એવા કાંઇ છેક ભોળાભા જેવા નહોતા. તેમના રાજ્યના બહોળા કાર્ય માટે બહુ. હોંશીયાર, દુશ્મનોનું દૈવત દાબી દેવામાં દુરઅંદેશીવાળા, પોતાના સૈન્યની સંભાળ રાખવાવાળા, મહા શૂરવીર, રણક્ષેત્રમાં કદિ પાછા નહીં હઠે એવા, હિંમતવાન સલાહકાર મંત્રીઓ હતા જેવી રીતે રથને હાંકવા માટે કાબેલ સારથીની જરૂર છે તેવીજ રીતે રાજ્યરૂપી રથ ચલાવવાને માટે અક્કલબાજ અને પ્રવીણ મંત્રીની રાજાને જરૂર હોય છે, તેમ આપણા મોહરાજાએ પણ બહુ પ્રયાસ કરીને અંધારામાંથી વિના દીપકે પોતાને અનુકુળ પડતા બે મંત્રીઓ પસંદ કર્યા હતા, જેઓના નામ રાગસેન અને દ્વેષસિંહ હતા.

सैन्यना शूरवीर सरदारो.

આ બંને મંત્રીઓ મોહરાજાની આજ્ઞાથી પ્રજા (જીવ) ઉપર હુકમ ચલાવી રહ્યા છે. એઓના હાથ નીચે પુષ્કળ સૈન્ય સોંપાયલું છે, જેમાં અસંખ્ય યોદ્ધાઓ જોડાયલા છે. તેઓ મહા બળવાન અને કળાબાજ છે રાત્રિ દિવસ હોંશીઆરીથી માલિક મોહરાજાની નોકરી નિમકહલાલીથી બજાવે છે. રાજાનું

જરા અપમાન થતું જોઇને તેઓ તીકની માફક ટૂટી પડે તેવા સંપીલા છે. મંત્રીએએ કટક (લશ્કર)ના મુખ્ય કમાન્ડર (સૈન્યાધિપતિ) તરીકે શૂરવીર અને પરાક્રમી સાત **સરદારોને** નીમ્યા છે અને એ સાતે સરદારોના હાથ નીચે **અસંખ્ય સુભટો** સોંપી દીધા છે, જેઓ પોતાના ઉપરી અમલદારનો હુકમ થતાંજ તરત ખડા થઈ જાય એવા અને પોતાના જાનની પણ દરકાર કરે નહીં એવા હિંમતવાન છે. એ સાત સરદારોના નામ—**જ્ઞાનાવરણસિંહ, દર્શનાવરણસિંહ, વેદનીયસેન, આયુસેન, નામસેન, ગોત્રસેન,** અને **અંતરાયસિંહ**, એ મુજબ છે.

જ્ઞાનાવરણસિંહ સરદારના હાથ નીચેની લશ્કરની **પાંચ** ટુકડી પાડેલી છે અને તે ટુકડીના સરદાર તરીકે પાંચ યોદ્ધાઓ **મતિજ્ઞાનાવરણ, શ્રુતિજ્ઞાનાવરણ, અવધિજ્ઞાનાવરણ, મનઃપર્યયજ્ઞાનાવરણ અને કેવલજ્ઞાનાવરણ** છે.

દર્શનાવરણસિંહ સરદારના હાથ નીચેના લશ્કરની નવ ટુકડી પાડેલી છે અને તેના સરદાર તરીકે-**ચક્ષુદર્શનાવરણ, અચક્ષુદર્શનાવરણ, અવધિદર્શનાવરણ, કેવલદર્શનાવરણ, નિદ્રા, નિદ્રાનિદ્રા, પ્રચલા, પ્રચલપ્રચલા** અને **સ્ત્યાનગૃદ્ધિ** છે.

વેદનીયસેન સરદારના હાથ નીચેના લશ્કરની ટુકડીના બે ભાગ પાડેલા છે તેના સરદાર **સાતાવેદનીય**અને **અસાતાવેદનીય** છે.

મોહનીયસિંહ (મોહરાજા)ના પોતાના હાથ નીચેના ખાનગી સૈન્યના બે વિભાગ પાડેલા છે અને તેના મુખ્ય સરદારો **દર્શનમોહનીય** અને **ચારિત્રમોહનીય** છે. દર્શનમોહનીયસિંહના હાથ નીચેના ત્રણ સરદારો, **મિથ્યાત્વ, સમ્યકમિથ્યાત્વ** અને **સમ્યક્પ્રકૃતિ** છે. અને **ચારિત્રમોહનીયસિંહ**ની હકુમત નીચે બે સરદારો **કષાયસિંહ** અને **નોકષાયસિંહ** છે અને એ સરદારોના હાથ નીચે અસંખ્ય યોદ્ધાઓ છે.

આયુસેન સરદારના હાથ નીચેના લશ્કરની **ચાર** શાખા પાડેલી છે, જેના સરદારો **નરકાયુ, મનુષ્યાયુ, તિર્યંચાયુ** અને **દેવાયુ** છે.

નામસેન સરદારના હાથ નીચેના બહોળા કટકના ત્રાણું (૯૩) વિભાગ પાડેલા છે—**ચારગતિ** (નરક, તિર્યંચ, મનુષ્ય, અને દેવ), **પાંચ જાતિ** (એકેન્દ્રિય, બેઇન્દ્રિય, ત્રિઇન્દ્રિય, ચતુરઇન્દ્રિય, અને પંચેન્દ્રિય), **પાંચ શરીર** (ઔદારિક, વૈક્રિયક, આહારક, તૈજસ, કાર્માણ,) ત્રણ **આંગોપાંગ** (ઔદારિક, વૈક્રિયક, આહારક,) **એક નિર્માણ કર્મ, પાંચ બંધનકર્મ** (ઔદારિકબંધન, વૈક્રિયકબંધન, આહારકબંધન, તૈજસબંધન, કાર્માણબંધન,) **પાંચ સંઘાત** (ઔદારિકસંઘાત, વૈક્રિયકસં०, આહારક સં०, તૈજસ સં०, કાર્માણ સં०,) **છ સંસ્થાન** (સમચતુરસ્ર સંસ્થાન, ન્યગ્રોધપરિમંડળ સંસ્થાન, સ્વાતિ સંસ્થાન, કુબ્જક સં०, વામન સં०, હુંડક સં०), **છ સંહનન** (વજ્રર્ષભનારાચ સંહનન, વજ્રનારાચ સંહનન, અર્દ્ધનારાચ સંહનન, કીલક સંહનન અસંપ્રાપ્તાસ્ટપાટિકા સંહનન), **પાંચવર્ણ કર્મ** (કૃષ્ણ, નીલ, રક્ત, પીત, શ્વેત), **બે ગંધકર્મ** (સુગંધ, દુર્ગંધ), **પાંચ રસકર્મ** (ખાટો, મીઠો, કડવો, કષાયલો, ચર્પરો), **આઠ સ્પર્શ** (કઠોર, કોમળ, હલકો, ભારી. ઠંડો, ગરમ, ચીકણો, લુખો), **ચાર આનુપૂર્વ્ય** (નરક, તિર્યંચ, મનુષ્ય, અને દેવાનુપૂર્વ્ય), **એક અગુરૂલઘુ, એક પરઘાત, એક આતાપ, એક ઉદ્યોત, બે વિહાયોગતિ** (મનોજ્ઞ, અમનોજ્ઞ), **એક ઉશ્વાસ, એક ત્રસ, એક**

સ્થાવર, એક બાદર, એક સૂક્ષ્મ, એક પર્યાપ્ત, એક અપર્યાપ્ત, એક પ્રત્યેક, એક સાધારણ, એક સ્થિર, એક અસ્થિર, એક શુભ, એક અશુભ, એક સુભગ, એક દુર્ભગ, એક સુસ્વર, એક દુઃસ્વર, એક આદેય, એક અનાદેય, એક યશઃકીર્તિ એક અયશઃકીર્તિ, અને એક તીર્થંકર નામકર્મ-આ પ્રમાણે ૯૩ યોદ્ધાઓ નામસેનના હુકમ પ્રમાણે કાર્ય કર્યા કરે છે અને એઓના હાથ નીચે બીજા પણ ઘણા યોદ્ધાઓ છે.

ગોત્રસેનના હાથ નીચે માત્ર બેજ સરદારો છે જેઓ ઉચ્ચગોત્રસેન અને નીચગોત્રસેનના નામે ઓળખાય છે.

અંતરાયસિંહ સરદારની હકુમત નીચે પાંચ સુભટો તાબેદારી કરે છે, જેઓ દાનાન્તરાય, લાભાન્તરાય, ભોગાન્તરાય, ઉપભોગાન્તરાય, અને વીર્યાન્તરાય છે.

ઉપર જણાવેલા મુખ્ય આઠ સૈન્યાધિપતિઓમાં (આ વાર્તામાં) જે ચાર સરદારોને સિંહના પૂછડાં! લગાડવામાં આવેલા છે તેઓ ઘાતિયા કર્મ કરનારા છે અને બીજા ચાર સરદારોને સેનના પૂછડાં જોડેલાં છે તેઓ અઘાતિયા કર્મ કરનારા તરીકે ઓળખાય છે.

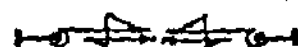
कुनेहवान कामदेव.

મોહરાજાનો ખાનગી મિત્ર (સલાહકાર) તરીકે એક બહુ ખટપટીઓ, ભલભલાને ભમાવી ભાગ્યપર હાથ દેવડાવે તેવો, લાખોને લલચાવી લૂંટાવી લાચાર બનાવે તેવો, કરોડોને કાળાં ધોળાં કરી કાયર કરે તેવો, અસંખ્યોને અણધાર્યા સપડાવી અઘટિત આચરણ કરાવે તેવો, કપટકળાનો ખજાનો અને વાત કરી વંઠાવવામાં મજનો, સદાચરણી અને શીળવાનોના સત અને શીળનો ખજાનો લૂંટી લેવામાં શાણો! એવો મહા પ્રવીણ! અક્કલબાજ! કામદેવ નામનો મિત્ર હતો, જે રાજાનું હરકોઇ કામ ત્વરાથી બજાવતો, તેથી રાજા એને ગમે તેવાં મહાભારત ગુંચવણભરેલા કામ હોય તે સોંપતા અને તેવે સમયે સલાહ પણ એનીજ લેવાનું વ્યાજબી વિચારતા હતા!

(વધુ માટે 'ચેતનકર્મચરિત્ર' ગ્રંથ વાંચો.)

नोट-आ अंक साथे 'सस्ती जैन ग्रंथमाला': मे लगती नथी जाहेरखबर वेंचवामां आवी छे तेमांनो जडावबाईस्मारकनो प्रथम ग्रंथ- 'चेतन-कर्म चरित्र' के जे आवां २७ प्रकरणोवाळो २१० पृष्ठनो होई तेमां रमुजी वार्तारुपे जैनसिद्धांतनी अनेक बाबतोनुं रसीली शैलीथी निरुपण करेलुं छे अने हालमांज तैयार थयो छे, जे गुजराती भाषा जाणनार दरेक बंधुने अवश्य वांचवालायक होवाथी प्रथम तेनो नमूनो पण दरेकने मळी शके ते माटे तेमांना १२ पृष्ठोनो उतारो उपर आपेलो छे, ते मनन करी आ घणोज सस्तो ग्रंथ अवश्य मंगाववा दरेक बंधुने भलामण करीए छीए. छुटक किं. मात्र चारज आना छे (पोस्टेज जुदुं), ज्यारे सस्ती जैन ग्रंथमाळाना स्थायी ग्राहक थनारने पोस्टेज साथे मात्र आठ आना भरवाथी, आ २१० पानांनो ग्रंथ अने ते पछी प्रकट थये एवोज बीजो २०० पानांनो ग्रंथ मळशे एटले ४०० पानांनुं वांचन पोस्टेज साथे मात्र आठ आनामां दरेकने घेर बेठां मळी जशे, माटे आ अपूर्व लाभ लेवा सत्वर तैयार थाओ अने पत्र लखी ग्राहकमां नाम नोंधावो.

संपादक.



श्राविकाओने आमंत्रण.

લેખકઃ-જૈનમહિલારત્ન શ્રીમતી મગનબાઈ-મુંબઈ.

આ અસાર સંસારમાં મનુષ્ય માત્ર પોતાની ભાવી ઇચ્છાઓ પુરી પાડવા માટે અનેક પ્રકારના પ્રયત્નો કર્યા જાય છે, અને તેઓને તેમના **પુરૂષાર્થ પ્રમાણે ફળ** પણ મળેજ છે. જેઓ ગૃહસંસાર વિસ્તારવાળો કરવા ધારે છે તે તેને વધારી શકે છે, જેઓ વ્યાપારમાં ઉન્નતિ વધારવા ધારે છે તે વ્યાપારમાં વધે છે, જેઓ વિદ્યામાં વધવા માંગે છે તે તેમાં વધે છે, જેઓ ચારિત્રમાં વધવા માંગે છે તેઓ ચારિત્રમાં અને જેઓ પ્રભુધ્યાનમાં યોગ-સમાધિ કરવા ધારે છે તે તેમાં વધે છે; એમ અનેક ઇચ્છાઓથી અનેક કાર્ય થયા જાય છે, તેમજ જે પ્રાચીન કાળમાં રાજા મહારાજાઓ તેમજ શેઠસાહુકારો પોતાની રૂપગુણવતી વિનયવાન, પુત્રીઓને, પુત્રોની સમાન ગણી સન્માન આપી વિદ્યા, કળા-કૌશલ્યમાં સંપૂર્ણ બનાવવાની અને ભેદ-ભાવ વિના સ્ત્રીધર્મના સૂત્રોનું અધ્યયન-કરાવવાની ઇચ્છા રાખતા હતા ત્યારે તેમની પણ તે ઇચ્છા પૂર્ણ થતી. તેનાં ઉદાહરણો ઘણી સુશીલ સતીઓ જેવી કે **સીતા, મંદોદરી, સાવીત્રી, ચંદના, અનંતમતી, બ્રાહ્મી, સુંદરી, કૈકેયી, રાજુલદેવી,** વગેરેની આજે આ વર્તમાનકાળમાં પણ સ્તુતિ થાય છે માટે તેનું અનુકરણ કરીનેજ આજે જૈનસમાજના નેતાઓ-વિદ્વાનો-પંડિતો, શેઠ સાહુકારો અને દીનગરીબ વર્ગ સર્વે એક અવાજે ભેદભાવના, સ્વાર્થપરાયણતા છોડી દઇ અમારા સ્ત્રીવર્ગની ઉન્નતિ કરવા ઇચ્છા કરે તો અવશ્ય અમે પણ પ્રાચીન કાલની દેવીઓની ઉપમાને યોગ્ય બની શકીએ.

જો કે જૈનસમાજમાં આજકાલ એક **આની ઉત્સાહ થયો** છે કે આપણી બ્હેનોને પણ શિક્ષણ આપવું, તેથી કેટલેક ઠેકાણે કન્યાશાળાઓ, શ્રાવિકાશાળાઓ અને આશ્રમો સ્થપાયાં છે; પણ તેમની દશા એક માસના બાળક જેવી નિર્જીવ છે, માટે હવે મારા **ધર્મબંધુઓને તેમજ ભગિનિયો (બ્હેનો)ને વિનતિ** કરૂંછું કે જો તમે તમારા ધર્મની, ગૃહસ્થાશ્રમની અને આત્મિક સુખની પ્રાપ્તિ કરવા ઇચ્છતા હો, તો તમારી ધનવાન નિર્ધન બ્હેનોને વિદ્યા આપવા ચૂકતા નહીં, તેને માટે ઉત્તરમાં **મુરાદાબાદમાં એક શ્રાવિકાશ્રમ** છે, બીજું **મુંબાઈમાં શ્રાવિકાશ્રમ** છે અને ત્રીજું ઇંદોરમાં હાલજ ઉઘડેલું છે. આ ત્રણે જગ્યાએ સમર્થ કન્યાઓ સધવાઓ પાસે જુજ ખર્ચ લઇ દાખલ કરવામાં આવે છે અને તેમને ઘરસંસાર-સંબંધી શિક્ષણ આપવામાં આવે છે તથા **ભવિષ્યની માતાઓ** થનાર કન્યાઓને પતિપરાયણ રહી કુટુંબ સેવામાં તત્પર રહે અને પોતાનું આત્મ-કલ્યાણ કરી પરંપરાય મોક્ષ માર્ગનું સાધન થાય તેવું શિક્ષણ આપવામાં આવે છે. અને જે સર્વ પ્રપંચોથી મુક્ત થયેલી પતિવિહીન **વિધવાઓ** છે તેમને વૈરાગ્યમય, લોકસેવાર્થ, આત્માનુભય જીવન ગુજારી શકે માટે ગરીબ **વિધવાઓને ઉપદેશ આપવાનું** તેમજ સ્ત્રી સમાજમાં જ્ઞાનવૃદ્ધિ કરવા શિક્ષકનું કામ શીખવવા ધાર્યું છે. અને જે સમર્થ વિધવાઓ છે તેમણે દેશ વિદેશ જઇ સ્ત્રી સભાઓ કરી બ્હેનોના મન કોમળ બનાવવા ઉદ્યોગ કરવો. વિધવાઓને આશ્રમને ખર્ચે રાખવામાં આવેછે.

આ પ્રમાણે અમારૂં કાર્ય ચાલતુંજ છે, પણ શોક એટલોજ કે હજી અમારો વર્ગ ઘણોજ અજ્ઞાન છે, વિધવા કે કન્યાઓને દેશ પરદેશ મોકલવા ડરે છે, માટે એ ખોટો ભય દૂર કરી સંસાર પાર કરવાનું સાધન એવા આશ્રમોમાં એકવાર મનની શાંતિ કરવા અવશ્ય આવો ! આવો ! આવો ! અસ્તુ !!



(संसारकी क्षणभंगुरता बतानेवाला दिलचस्प उपन्यास।)

[लेखक-गोपीलाल गोधा—लश्कर।]

प्रथम परिच्छेद।

रात्रि आधीसे अधिक जान पड़ती है, चारों तरफ सन्नाटा छा रहा है। शीतल मंद सुगंध पवन बह रही है। पूर्णमासीका चंद्रमा पूर्ण रुपसे आकाशमें अपनी छटा दिखा रहा है। कुमोदिनी खिल रही है। वन उपवनके वृक्ष इत्यादिकोंकी शोभा कैसी मनोहर मालूम पड़ती है। इस छटाको देखकर दर्शकोंका दिल प्रफुल्लित हुए बिना नहीं रहता। चकवाचकवीकी विरहकी आवाज कानोंमें सुनाई पड़ती है। कामीजनोंको काम सता रहा है, वे उसमें मग्न हो रहे हैं। साधुजन रात्रिको कम रही जानकर भगवत्‌भजनमें मग्न हो रहे हैं। सच है जो लोग आत्महित चाहनेवाले हैं उनको ऐसा शांतिका समय और कब मिल सकता है? इस समय वे लोग ईश्वराध्ययनमें मग्न हो रहे हैं। इसी शांतिके समयमें एक आवाज़ इस प्रकार सुनाई दी:—

" तू अकेला है, अकेला ही आया है और अकेला ही जायगा। यह संसार क्षणभंगुर है, कोई किसीका साथी नहीं। सब एक दिन कालके ग्रास बनेंगे चाहे कोई देव हो या दानव, मनुष्य हो वा पशु, धनवान हो या कंगाल, पुरुष हो वा स्त्री, वृद्ध हो वा बालक और मूर्ख हो वा विद्वान्, एक न एक दिन सबको उस परले घर जाना होगा। इन मोहोंमें पड़कर सुख चाहना ऐसा ही है जैसा अग्निपर घी डालकर बुझाना, अथवा अथाह जलमें कूद कर बचनेकी आस करना। यह देह जिसे तू खिलाता, पिलाता और इतनी खातिर करता है कदापि तेरा साथ न देगी। अब समय बहुत थोड़ा है इसे आत्मानंदमें लगा, बाह्य झगड़ोंमें मत पड़ जिससे तेरा कल्याण हो। अगर यह समय निकल गया तो फिर हाथ आना दुर्लभ है, इससे तेरे लिये यही आवश्यक है कि संसारी झगड़ोंको छोड़ और निज शक्ति द्वारा कर्मोंको मार भगा और स्वतंत्र राज्य प्राप्त कर "।

* * * *

सुकुमाल अपने शयनागारमें सो रहा था, यकायक उसकी आंख खुल गई, और उक्त वचन उसके कानोंमें सुनाई पड़े, वह उनको ध्यानसे सुनता रहा, और जब वे बंद हो गये तो यकायक वह विचारमें पड़ गया और अपने दिलमें कहा—" क्या वास्तवमें मैं अकेला हूं। नहीं! कदापि,

इस वर्षके ग्राहकोंको हिन्दी–गुजराती भाषाकी ८ पुस्तकें उपहारमें मिलती हैं।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रकट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

The Digambar Jain.

युतं सुलेखै र्विविधैश्चचित्रै, र्दिगम्बरंजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुच्चमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ८ मुं. | वीर सं. २४४१. श्रावण. विक्र. सं. १९७१. | अंक–१० मो.



रक्षाबंधन पर्व.

आपणा केटलाक धार्मिक दिवसो एटला प्रचलित थई गया छे के जेने आखी हिंदु कोम पवित्र त्हेवार तरिके माने छे. आवा त्हेवारमां एक तो अंतिम तीर्थंकर श्री महावीरस्वामीनो निर्वाणदिवस दिवाळी पर्वने नामे सर्वत्र प्रचलित छे, तेमज रक्षाबंधन (बळेव) नो पर्व पण जैनोमांथीज उद्भवेलो छे, जे हाल जगत्प्रसिद्ध सार्वजनिक त्हेवार थई गयो छे ए जैन कोमे खुशी थवा जेवुं छे. हालमां श्रावण सुद १५ ने दिने आ रक्षा-बंधननो पवित्र दिवस आवी पहोंच्यो छे, जे एज दिवस छे के जे दिने श्री अकंपनाचार्यादि ७०१ मुनिओने बळीराजाए करेलो घोर उपसर्ग, श्री विष्णुकुमार महामुनिए विक्रिया ऋद्धिना बळवडे निवार्यो हतो, तेथी ए दिने मुनिओनी रक्षा करवामां आवेली होवाथी ए दिने ते शहेरमां लोकोए रक्षानो दोरो बांध्यो हतो अने पछी दर वर्षे ए रिवाज प्रचलित थई गयो अने हाल तो व्हेन पोताना भाईने आवी रक्षा बांधे छे. हवे आ रक्षाबंधननी कथा (सलूनापूजन सहित) जे ' दिगंबर जैन ' नी भेट तरीके वीर. २४३९ ना वर्षमां वहेंचवामां आवी हती ते कथा ए दिने सर्वे समक्ष अवश्य वांची संभळाववी जोइए तेमज ए दिने विष्णुकुमार महामुनिनुं पूजन याने सलूनापुजन दरेक मंदिरजीमां थवुं जोईए. तेमज सभा भरी आ पर्वनी उत्पत्ति जैनोमांथीज उद्भवेली छे एवुं जाहेरमां प्रकट करवुं जोईए. आ त्हेवार सर्वे स्थळे केवी रीते पळायो तेना समाचार अमोने मोकली आपवा सर्वेने मला मण करवामां आवे छे के जे आवता अंकमां प्रकट करवामां आवशे.

शीतळासातेमनो मिथ्या पर्व.

आपणा गुजरात प्रांतमां अन्यमती भाईओनां सहवासने लीधे तेमज उपदेशना अभावे आपणा जैन भाईओ पण धर्मविरुद्ध अने पापना पोटलांरुप केटलाक त्हेवारो मानवा मंडी जाय छे तेमांनो एक त्हेवार शीतला सातेम याने टाढीशीळी पण छे जे कोई श्रावण सुदी ७ने दिने तो वळी कोई श्रावण वदी ७ ने दिने माने छे एवो आ विचित्र त्हेवार छे. अन्यमती भाईओ ए दिने असंख्य जीवजंतुना स्थानभूत एवा नदी तलावोनां अणगळ पाणीमां न्हाई पवित्र थईने ! नदी कांठे मंटोडाना वनावेला शीतळामातानी अने पोताने घेर रांधवाना चूलानी पूजा !!! करीने ते दिने आगला दिवसनी रांधी मुकेली टाढी रसोई जमे छे अने ए दिने चूलो सळगावता नथी! आवो अंधश्रद्धानो अने पापना कारणभूत आ मिथ्यापर्व छे. जैनशास्त्रमां सवारनुं रांधेलुं सांजे खावामां पण दोष कहेलो छे त्यारे आगला दिवसनुं रांधी मुकेलुं के जे बीजे दिवसे सांज सुधीमां तो केटलीक वखते गंधाई पण उठे छे तेवुं अन्न खावामां आपणा केटलाक भाईओ अने व्हेनो पूण्य समजे छे अने अन्यमती भाईओनी देखादेखीथी एने पवित्र त्हेवार तरिके माने छे ए अजब जेवुं छे. वैद्यकशास्त्र पण टाढुं खावाने मनाई करे छे छतां पण आवो विचित्र त्हेवार अन्यमती भाईओए टोकी बेसाड्यो छे जेने जैनोए पोते न मानी बीजाने ते न मानवा माटे उपदेश आपवो जोईए. सुज्ञ जैन बंधुओ अने व्हेनो ! तमे जो आ त्हेवार मानता हो, तो आ वर्षथीज एवा खोटा व्हेमने निडरपणे दूर करी पापनां पोटलांरुप ए मिथ्यापर्वने मानवानुं छोटी देजो अने पुण्यने बदले शरीरने नुकशानकारक तेमज धर्मविरुद्ध टाढी रसोइ (वासी ढूंचा !) जमीने पापनां पोटलां बांधवामांथी बचजो अने बीजाओने बचाववा प्रयत्न करजो.

✠ ✠ ✠ ✠

षोडशकारण पर्व.

आपणो महान् श्री पर्व षोडशकारण-भावनानो पर्व श्रावण वद १ थी भादरवा वद १ सुधी आवी प-होंच्यो छे. हवे आ पर्वनुं व्रत एक महिनानुं छे, के जेमां १६ पोषधोपवास विधिपूर्वक करवा पडे छे तेमज दहेरासरोमां दररोज पंचपूजा, सहस्रनाम, तत्वार्थ सूत्रनुं वांचन, षोडशकारण पूजा वगेरे थाय छे पण अमारा जाणवा अने जोवा मुजब घणे ठेकाणे ते मात्र पोपटीया ज्ञानानी माफकज थाय छे एटले के तेनो अर्थ न समजावतां मात्र मूळ पाठज अने ते पण वळी दोडादोडीथी भणवामां आवे छे जेथी अशुद्ध वंचाय छे तेम अर्थ पण समजातो नथी, जेथी पर्वनुं महात्म्य जाणवामां आवतुं नथी, माटे आ पर्वमां दररोज तत्त्वार्थ सूत्रनी टीका (हिंदी के गुजराती) थोडी थोडी वांचीने ते महीने पुरी करवी जोइए तेमज षोडशकारण पर्वनी दर्शनविशुद्धि, विनयसंपन्नता आदि १६ भावनाओनुं वर्णन, जे श्री रत्नकरंडश्रावकाचार के बीजा शास्त्रोमां वर्णवेलुं छे तेमांथी ते सर्वे समक्ष अवश्य वांची संभळाववुं जोइए तेमज सर्वेए पोतपोतानी शक्ति मुजब आ व्रत आदरवानी जरुर छे.

✠ ✠ ✠ ✠

विलंब केम ?

जैन कोमने जीवन अर्पण करनार पं. अर्जुनलाल शेठी उपर वगर न्याये आवी पडेली असह्य आपत (केद) मांथी मुक्त करवाने जयपुर महाराजा अने नामदार वाइसरोयने अनेक तारो अरजीओ करी करीने जैनो कंटाळ्या तेमज जैन अजैनपत्रकारो पण पुष्कळ आर्टिकलो

लखी लखीने थाक्या, तोपण अजब जेवुं छे के एक खुलासो सरखो पण जयपुर राज्य बहार पाडतुं नथी, जेथी जैनोनी लागणी दुखाई छे, अने छेवटनो एक रस्तो एक वगवालुं डेप्युटेशन जयपुर महाराजा अने नामदार वाइसरोय पासे लई जवानो छे, जे माटे पण घणुं लखावा छतां एवुं डेप्युटेशन हजु तैयार थई जतुंज नथी ए पण अजब जेवुं छे ! कोई पण अग्रेसर थईने नीकळ्या वगर मात्र वातो करवाथी कंई कार्य करातुं नथी. ज्यारे पत्रद्वारा के पेपरोद्वारा कंई खुलासोज मळतो नथी तो एक वखत मोंढामोंढ मळी खुलासो पूछवानी तो अत्यंत आवश्यकता छे. अमारा धारवा मुजब इंदोरमां हाल ब्र. शीतलप्रसादजी छे तथा हाईकोर्ट जडज मी. जुगमंदिरलाल जैनी एम. ए. बेरिस्टर पण त्यांज छे तेमज दानवीरो शेठ हूकमचंदजी, शेठ कल्याणमलजी, शेठ कस्तुरचंदजी वगेरे त्यांज छे, तो आ बाबत ब्रह्मचारीजीए खास खटपट करी तेमज लखनौरथी बाबू अजितप्रसादजीने बोलावी डेप्युटेशन माटेनुं नकी करी तेमां मुंबाई, कलकत्ता, अजमेर, सीवनीछपरा वगेरेना वगवाळा जैन श्रीमानोने सामेल करी जेम बने तेम घणीज त्वराए जैपुर महाराज अने नामदार वाईसरोय पासे डेप्युटेशन लई जवानी जरुर छे. आ छेक छेवटनो उपाय छे ते अजमाववानी जरुर छे अने तेमां न फवाय तो पछी वडी धारासभामां अने विलायतनी पार्लामेंटमां आ बाबतनो खास सवाल पूछाववानी जरुर छे केमके आ सवाल जेवो तेवो नथी, पण जैनकोमने माथे एक महाभारत नादकतुं कलंक चोंटेलुं छे ते दूर करवानी दरेक जैन बंधुनी फरजज छे. आ बाबत माटे खास कोशीश करवाने ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी अने श्रीयुत् बाबू जुगमंदरलाल जैनी (बेरिस्टर अने हाईकोर्ट जडज) ने खास आग्रह करीए छीए.



जिनेंद्रपंचकल्याणकमंगलः–अनुवादक और प्रकाशक–कुन्दनलाल जैन चंदावाडी, गीरगाम-बम्बई। पृ. ६२ मूल्य ०)≡ जैन समाजमें प्रचलित कवि रुपचंदजी पांडेकृत पंचकल्याणकका हिन्दी अनुवाद आज तक नहीं प्रकट हुआ था जिसकी पूर्ति इस पुस्तकसे हो गई है। इसमें मूल कविताके साथ शब्दार्थ और भावार्थ देकर फिर हरएक कल्याणकका सारांश भी दिया गया है और हरएक कल्याणकके साथ प्रश्नावली भी रखी गई है। विद्यार्थीओंके लिये यह पुस्तक बहुत अच्छी प्रकट हुई है। हरएक पाठशालामें प्रवेशकरने योग्य है। प्रकाशक और हमारे पुस्तकालयसे भी मिल सकती है।

द्वादशानुप्रेक्षाः–लेखक बाबू दयाचंद्र गोयलीय बी. ए. और प्रकाशक सद्बोधरत्नाकर कार्यालय–सागर। मूल्य ०।" इसमें श्री रत्नकरंडश्रावकाचारके आधारपर अनित्य, अशरण, संसारादि बारह भावनाका वर्णन बहुत सरल भाषामें लिखा गया है। प्रकाशक और हमारे पुस्तकालयसे भी प्राप्य।

आराधना–कथाकोष दूसरा भागः–– प्रकाशक 'जैनमित्र' कार्यालय, हीराबाग–बम्बई। ब्र. नेमीदत्तरचित संस्कृत आराधना-कथाकोषके हिन्दी अनुवादका प्रथम भाग

प्रकट हो चुका है और यह २५से ६२ तककी कथाओंका ४०० पृष्ठका दूसरा भाग है, जो 'जैनमित्र' के ग्राहकोंको उपहारमें दिया जाता है और अलग् मूल्य १।≈) है। संस्कृत कथा भी साथमें दी गई है। इसमें मृगसेन धीवर, राजा वसु, नीली, चारुदत्त, पारासर, सात्यकि, सागरदत्त, कुबेरदत्त, वशिष्ठ तापसी, मरिचि, द्वीपायन मुनि, सगरचक्रवर्ति, परशुराम, सुकुमाल मुनि, गजकुमार, भद्रबाहु, सुकोशल, भीमराजा आदिकी ३८ कथाओंका संग्रह है जो हरएकके पढ़ने योग्य है। प्रकाशक और हमारे पुस्तकालयसे भी प्राप्य।

मोक्षमार्ग निरुपण- लेखक और प्रकाशक-रायसाहब बाबू नानकचन्दजी बी.ए., हेडमास्टर, सेठ तिलोकचंद जैन हाईस्कूल–इन्दौर। २६ पृष्ठकी इस छोटीसी पुस्तकमें कर्मोंके क्षयका तथा शुद्ध दर्शन ज्ञान चारित्रके प्राप्त होनेका संक्षेपरूपमें सरल भाषामें वर्णन किया गया है। विद्यार्थीओंको पढ़ानेयोग्य है।

जैनमत नास्तिक नहीं है-प्रकाशक–आत्मानंद जैन ट्रेक्ट सोसायटी–अंबाला शहर। मूल्य एक पैसा। यूरोपियन जैन मी. हर्बर्टवोरनके लेखका लाला मुन्शीलाल एम. ए. कृत यह हिन्दी अनुवाद है, जो जैन अजैन सभीको पढ़ने योग्य है।

जैनतत्वसार-प्रकाशक–जैनज्ञानप्रसारक मंडल, सिरोही (रजपुताना)। श्वे. आम्नायके अनुसार इसमें हिन्दी भाषामें जैन तत्वोंका सुलभ रीतिसे व्यान किया गया है। सेठ केसरीमलजी मुताजीकी सहायता मिलनेसे ही मुनिराजों, सभा, पुस्तकालयादि संस्थाओंको विनामूल्य और अन्यको पांच आनेमें मिलती है। पृ. १४० और पक्की जिल्द है।

(१) साध्वी नीली (२) प्रभुजन्मोत्सव-गीत–लेखक अने प्रकाशक–कवि दत्तात्रय भीमाजी रणदिवे–कसबा पेठ–पूना। मूल्य ०)≈ अने ०)०।।। विषयो नामथीज प्रकट थाय छे. कविताओनां आ पूस्तको मराठी भाषामां छे.

उपदेशरत्नमाळाः—प्रकाशक मोजराज उर्फ मोतीलाल रावजी गांधी, शुक्रवार पेठ–सोलापुर. पृ. १४० किं. ०।। आ पुस्तक एज नामना एक बंगाळी पुस्तकनो मराठी भाषामां अनुवाद छे, जेमां शारीरिक, नैतिक, अने धार्मिक एवा ४२ विषयोनो समावेश छे, जे दरेक विद्यार्थीने वांचवा लायक तेमज मराठी पाठशाळाओमां अवश्य दाखल करवायोग्य छे.

साक्षात् मोक्ष अथवा मोक्षमार्ग देनहार मित्रः–प्रकाशक-जैनज्ञानप्रसारक मंडल–सीरोही। मू. ०)≈ हिंदी भाषा।

श्री महावीर जैन विद्यालयः—आ नामनी एक उत्तम संस्था हाल मुंबाइमां मुनि श्रीवल्लभविजयजीना प्रयासथी आपणा श्वेतांबरी

ભાઇઓ તરફથી સ્થપાઇ છે, જેના ધારાધોરણ વગેરેનું આ પુસ્તક શ્રીયુત મોતીચંદ ગીરધરલાલ કાપડીયા સોલીસીટર, (પ્રીન્સેસ સ્ટ્રીટ-મુંબાઇ) એ પ્રકટ કર્યું છે, જે જોતાં જણાય છે કે એ ઉત્તમ સંસ્થામાંથી ગ્રેજ્યુએટ થયા પછીનો ઉંચો અભ્યાસ કરનારને ઉત્તેજન, સ્કોલરશીપ તથા દૂર દેશમાં અભ્યાસ વધારવા જનારને મદદ, ઇનામના મેળાવડાઓ કરવા, સંસ્કૃત પ્રાકૃત ભાષાના પ્રચાર માટે તથા ઉંચા અભ્યાસ માટે કોલેજ સ્થાપવી વગેરે કાર્યો થનાર છે, તેમ બોર્ડિંગ પણ ખોલાઇ છે. દશ વર્ષ સુધી દર વર્ષે રૂ. ૯૪૫૨) તથા સ્થાયી મદદ રૂ ૮૯૮૦) તથા ૩૦૦૦) મકાન ફંડમાં ભરાયા છે અને હજુ વધુ પ્રયાસ ચાલુ છે. આવી ઉત્તમ સંસ્થા સ્થાપવા માટે આપણા શ્વેતાંબરી ભાઇઓને ધન્યવાદ ઘટે છે. જો આ વિદ્યાલય શરૂઆતના ઉત્સાહ પ્રમાણે બરાબર ચાલશે તો આખી જૈન કોમમાં આ સંસ્થા ઉત્તમ નીવડયા વગર રહેશે નહીં.

નડીઆદ-હિંદુ અનાથાશ્રમનો રિપોર્ટઃ—નડીઆદના આશ્રમનો આ ૧૯૧૩-૧૪ નો રિપોર્ટ જોતાં જણાય છે કે દિનપરદિન આ સંસ્થામાં મોટો સુધારો વધારો થતોજ જાય છે અને મદદ પણ પુષ્કળ મળવે છે, જે નિયમિતતા અને અડગ પ્રયાસનુંજ ફળ છે. આ એક વર્ષમાં આ આશ્રમ રૂ. ૧૮૯૮૧) નું દાન મેળવી રૂ. ૧૨૬૯૨) ખરચ કરી શકયું છે. હાલ ૮૮ અનાથો એમાં પળાય છે. આ રિપોર્ટમાં આશ્રમનાં ૬ ચિત્રો પણ છે. આખો રિપોર્ટ કાર્ડ લખવાથી મફત મળે છે.

લઘુ અભિષેકઃ—પ્રકાશક ડાહ્યાભાઇ શીવલાલ કરમસદ (ખેડા) કિં. ૦)ના કાષ્ટાસંઘી અને મૂળસંઘી બધા ભાઇઓને ઉપયોગી આ લઘુ અભિષેકમાં અષ્ટક, વિનતિ આરતી વગેરે પણ છે. છપાઇ સફાઇ સારી છે. કુન્દનલાલ જૈન, ચંદાવાડી ગીરગામ-મુંબાઇ તથા અમારી પાસેથી પણ મળી શકે છે.

સુરત જીલ્લાનો ભૂગોળ શિક્ષકઃ—પ્રકાશક છગનલાલ મોતીરામ શાહ, શાહપોર સુરત. કિં. ૦)ના એમાં સુરત જીલ્લાની ભૂગોળ સમજ સાથે આપેલી છે, જે સ્કુલોમાં ચલાવવા લાયક છે.

જીવદયા ફંડઃ—મુંબાઇના જીવદયાજ્ઞાન પ્રસારક ફંડનો ૭ માસનો આ રિપોર્ટ જોતાં જણાય છે કે એ અરસામાં જીવદયાના સિદ્ધાંતનો પુસ્તકો હેંડબીલો દ્વારા પુષ્કળ પ્રચાર કરી અનેકને વનસ્પત્યાહારી બનાવ્યા છે, જે એના બાહોશ સેક્રેટરી શેઠ લલ્લુભાઇ ગુલાબચંદ ઝવેરીનેજ આભારી છે.

સુકવિ-સમિતિઃ—પ્રકાશક છોટુભાઇ દાજીભાઇ દેશાઇ, શારદાવિહાર-સુરત. પૃ. ६४ કિં. ૦। આ નવીન પુસ્તકમાં નાટકરૂપે સેંભાગુ કવિઓની બનાવટ કરવામાં આવી છે જે વાંચવાથી કવિતાના રચનારાઓને બોધ મળે તેમ છે.

આદર્શ જીવનઃ—તંત્રી વાડીલાલ મૂળજીભાઇ સંઘવી-લીંબડી. વર્ષ ૧ અં. ૧ માત્ર ૨૪ પાનાનું ત્રિમાસિક અને વાર્ષિક મૂલ્ય આઠ આના. અભિપ્રાય હવે પછી.

સૂર્યપ્રકાશ—સુરતથી પ્રકટ થતું અઠવાડીક વર્તમાન પત્ર. વર્ષ ૪૭ અં. ૩૨મો. આ પત્રમાં આ અંકથી **નવું જીવન** આમેજ થયું છે એટલે લખાણશૈલી તથા પૃષ્ઠોમાં સારો સુધારોવધારો થઇ લવાજમ પણ બેને બદલે **માત્ર સવા રૂપીઓ** કરાયું છે એટલે પોસ્ટેજ સાથે ૨)- છે. છપાઇ સફાઇ સારી છે તેમ જાહેરખબરથી પણ પાનાં ભરવામાં આવ્યાં નથી. ચાલુ ખબરો મેળવવા માટે આ એક સસ્તું સાધન છે. સુરતના આ સૌથી જુના પત્રના ગ્રાહક થઇ એના કાર્યની કદર

કરવા ખાસ કરીને સુરત તથા બીજા શહેરોના ભાઇઓને ભલામણ કરીએ છીએ.

'તીર્થક્ષેત્ર કમીટીનો રિપોર્ટ'—ભારત-દિ. જૈન તીર્થક્ષેત્ર કમીટીનો વીર સં. ૨૪૩૯નો આ ૧૧ મો રિપોર્ટ મહામંત્રી લાલા પ્રભુદયાળજીએ પ્રકટ કર્યો છે, જે જોતાં જણાય છે કે પ્રકટ કરવાની તા૦ ૧૫-૫-૧૫ હોવા છતાં પણ એમાં એના સ્થાપક તથા એ માટે તનતોડ મહેનત કરનાર **સ્વર્ગીય મહામંત્રી દાનવીર શેઠ માણેકચંદજી**ના સ્વર્ગવાસનો ઉલ્લેખ અને તે માટે કમીટીને ગયેલી ખોટનો ઠરાવ સરખો પણ કરવામાં આવ્યો નથી એ શોચનીય છે. કમીટીએ એ વર્ષમાં ઘણુંજ સારૂં કાર્ય બજાવ્યું હતું. જુદા જુદા તીર્થોના આશરે દોઢ લાખ રૂપિયા આ કમેટીમાં જમે છે, જેની યોગ્ય દેખરેખ રખાય છેજ તોપણ સ્પીશીએક ભાગવાથી રૂ. દશહજાર શેરમાં અને દશ હજાર ડિપોઝીટમાં સંડોવાયા છે (પણ આ શીખામણ ! મળવા પછી બીજા નાણાં તો સંડોવાવાનો હવે. ભય નથી.) જે દૈવાધિન છે. આ રિપોર્ટમાં ઘણા તીર્થોનો વીગતવાર હિસાબ પ્રકટ કરેલો છે, તેમ દરેક તીર્થની જાણવા લાયક હકીકત પણ આપેલી છે. એટલે યાત્રામાં પણ સાથે રાખવા લાયક છે. આપણે ઇચ્છીશું કે લાલા પ્રભુદયાળજી વીર સં. ૨૪૪૦ નો રિપોર્ટ પણ હવે તાકીદે બહાર પાડશેજ. વળી હાલ આ કમીટીના સ્થાયી પ્રમુખ તરીકે રા. બ. દાનવીર શેઠ હુકમચંદજી નીમાયા છે એટલે હવે આ કમીટીનું કાર્ય પગભર થયા વગર રહેશે નહિ.

· શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજીની સંસ્થાનો રિપોર્ટ:-સ્વર્ગીય દાનવીર જૈનકુલભૂષણ શેઠ માણેકચંદજી અને એમના કુંટુમ્બીઓના તન મન ધનના અતુલ્ય ભોગથી સ્થપાયલી સંસ્થાઓનો એટલે **હી. ગુ. જૈન બોર્ડિંગ-મુંબાઈ, પ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડિંગ-અમદાવાદ, માણેકચંદ પાનાચંદ દિ. જૈન બોર્ડિંગ—રતલામ** અને **હીરાબાગ ધર્મશાળા—મુંબાઈ**; આ ચારે સંસ્થાઓનો સં. ૧૯૬૩-૬૪ નો સંયુક્ત રિપોર્ટ છે, જે જોતાં જણાય છે કે આ બધી સંસ્થાઓ ઉત્તમ કાર્ય કરી રહેલી છે. વળી આ સંસ્થાઓના ટ્રસ્ટ ફંડને બીજાં પણ કેટલાંક ફંડોની વ્યવસ્થા સોંપાયલી છે એટલે આશરે **રૂપિયા બે લાખની રકમનો** વહીવટ એ કમીટી કરી રહી છે. મુંબાઇ બોર્ડિંગમાં ત્રણે ફિરકાના આશરે ૪૦, અમદાવાદ બોર્ડિંગમાં આશરે ૩૫, તથા રતલામ બોર્ડિંગમાં આશરે ૪૦ વિદ્યાર્થીઓ લાભ લઇ રહ્યા છે. તેમજ મુંબાઇની હીરાબાગ ધર્મશાળાનો તો જૈનો ઉપરાંત આખી હિંદુ કોમ ઉત્તમ રીતે લાભ લઇ રહી છે. બે વર્ષમાં **૨૨૩૬૪ યાત્રાળુઓએ** એનો લાભ લીધો હતો. વળી એ સાથે ધર્માદા દેશી ઔષધાલય સ્થાપાયલું છે જેનો લાભ પણ એ બે વર્ષોમાં **૫૩૨૮૧ દર્દીઓએ** લીધો હતો. અમદાવાદ બોર્ડિંગ તરફથી "**દિગંબર જૈન**" માસિક (આજ પત્ર) પ્રકટ થાય છે તેનો ૨૪૩૯-૨૪૪૦નો ઉપજ ખરચનો હિસાબ પણ આ રિપોર્ટમાં સામેલ છે. સને ૧૯૦૦માં **પ્રથમજ મુંબાઇની બોર્ડિંગ સ્થપાયા** પછી હાલ ૧૫ વર્ષમાં દિગંબર જૈનોમાં અનેક બોર્ડિંગો, પાઠશાળાઓ, સભાઓ, તથા અન્ય સંસ્થાઓ સ્થપાઇ છે જે દરેક હીરાચંદ ગુમાનજીની આ ધાર્મિક સંસ્થાને આભારી છે. દાનવીર શેઠ માણેકચંદજીના તન મન અને ધનના અતુલ્ય ભોગેજ હાલ ૧૫-૨૦ વર્ષ થયાં દિગંબર જૈન કોમમાં પ્રગતિના કિરણો ઝળકી રહ્યાં છે.

श्वे. जैन तेरापंथी सभाकी रिपोर्टः— फलकत्ताकी इस सभाका यह दूसरा रिपोर्ट

देखनेसे विदित होता है कि ईसमें रु. ५००००)का तो स्थायी फंड है। जिस द्वारा सभा पुस्तकालय आदि कार्यों बहुत ही उत्तमतासे किया जाता है। इस वर्षमें रु. ४०२९॥। का खर्च किया गया था। कलकत्ताके श्वे. जैन तेरापंथी भाईओंकी इस बृहत् सभाका अनुकरण हरएक सभाको करना चाहिए। इसके सुयोग्य मंत्री केशरीचंद कोठारी, ७१ क्लाईव स्ट्रीट-कलकत्ता हैं।

अकोला जैन बोर्डिंगनो रिपोर्ट—वहाड शिक्षण प्रसारक दि. जैन बोर्डिंग [अकोला] नो आ पांचमो रिपोर्ट मी. जयकुमार देवीदास चवरे वकीले प्रकट कर्यो छे, जे जोतां जणाय छे के हाल एनो १८ विद्यार्थीओ लाम लई रहेला छे. फंड मोटुं नथी तेथी ए खातुं वधी शकतुं नथी माटे वहाड प्रांतना भाईओए आ बोर्डिंगने मदद करी, एने मोटा पायापर लाववी जोइए. मी. चवरे वकील ए खातुं उत्तम रीते चलाववाने अनेक रीते लायक छे; पण एमने सहायकोनी जरुर छे.



ભાવનગરની પાઠશાળાઃ—મુનિમ ધરમચંદજી જણાવે છે કે અત્રે સંતોકબ્હેન પાઠશાળાની ત્રિમાસિક પરીક્ષા મેં ગયા માસમાં લીધી હતી, જેથી જણાય છે કે આ શાળામાં દશ માસમાં સારૂં શિક્ષણ અપાયું છે. છોકરા છોકરી મળી ૨૫ વિદ્યાર્થી છે જે દરેક દર્શન, પૂજા, સ્વાધ્યાય, જાપ વગેરે નિત્ય કરે છે અને તે બદલ તેમને ઇનામ મળે છે, એટલે સારૂં ઇનામ મેળવવાને તેઓ ઘણા ઉત્સાહથી કાર્ય કરે છે. આ રીતે શાળાના સાધનથી જ્ઞાનમાં વધારો થાય છે અને અજ્ઞાની પણ સમજુ થઇ ખરાબ આચરણ છોડી દે છે. જો આવી પાઠશાળાઓ ગામેગામ થાય તો આપણી સ્થીતિ અવશ્ય સુધારી શકીએ અને કુરિવાજો કે જે નાબૂદ કરવા માટે આપણી કોન્ફરન્સો વગેરે મંડળો પુષ્કળ ખટપટ કરી રહેલાં છે તે છતાં જોઇતો સુધારો થતો નથી, તે આવા ટૂંકા ખર્ચથી અને સુગમતાથી થઇ શકે માટે દરેક નાના ગામમાં પણ પાઠશાળા તો થવીજ જોઇએ, તોજ કુરિવાજો અનાયાસે બંધ થાય. બીજા પ્રસંગોમાં જમણ વગેરેમાં અથવા યશ માનની ખાતર મોટા કહેવરાવવામાં નકામો ખર્ચ નહીં કરતાં પોતાને અને પોતાની ફરજનને માટે થોડી રકમ આવી પાઠશાળા સ્થાપવા માટે કાઢવી જોઇએ. જેથીજ ધર્મનો, કોમનો તેમજ દેશનો ઉદય છે. આ શાળામાં એ દિને મેળાવડો કરી ઇનામો વેંચાયાં હતા તથા કેળવણી વિષે વ્યાખ્યાન થયું હતું.

પ્રાચીન પ્રતિમા અવ્યવસ્થિત સ્થીતિમાં:—મખીઆવ (આણંદ)ની પાસે ધોળકા નામે ગામમાં એક ભોંયરામાં ત્રણ ફીટ ઉંચી સફેત પાષાણની શ્રી રૂષભનાથ સ્વામીની પ્રાચીન પ્રતિમા છે તે વસ્તી વગર તદ્દન અવ્યવસ્થિત સ્થિતિમાં અંધારામાં પડી રહેલી છે, જેની યોગ્ય વ્યવસ્થા કરવાને શા છગનલાલ કુબેરદાસ મખીઆવ (આણંદ) દિ. જૈન તીર્થક્ષેત્ર કમીટીને સૂચના કરે છે. કોઇ સ્થળે જરૂર હોય ત્યાં આ પ્રતિમાજી પધરાવવાની જરૂર છે.

વલાસણ (આણંદ)ની પંચ જણાવે છે કે અત્રે રૂ. ૩૦૦૦) ખરચી દહેરાસર બંધાવ્યું હતું, તે પાણી ઉતરવાથી પડી જવાથી હાલ રૂ. ૧૦૦૦) નો ખરચ કરવાની જરૂર પડી છે તે માટે પંચ તરફથી બે આદમી ટીપ કરવાને ગુજરાતમાં ફરનાર છે, તો સર્વે ભાઇઓએ આવા કાર્યમાં બનતી મદદ કરવી.

भूल थई छे–' जैनप्रभात ' अने ' सत्यवादी ' पत्रमां सुरतमां केटलाक श्वे. जैनो आगाखानी धर्ममां वटलवानी विगत प्रगट करी छे जे तद्दन भूल छे केमके मात्र केटलाक वैश्नवोज ते धर्ममां गया छे.

વડોદરાની પાઠશાળાને ઉત્તેજન:-માસ્તર નાનચંદ પૂંજાભાઈ બી. એ. જણાવે છે કે અત્રેની વાડીની પાઠશાળામાં એક સભા તા. ૧૫-૭-૧૫ ને દિને રા. દલપતભાઈ કેવળદાસ એલ. સી. ઇ.ના પ્રમુખપદે થયેલી, તેમાં વિદ્યાર્થીઓની પરીક્ષા લઈ ધાર્મિક શિક્ષણનો ફેલાવો વધુ થવા સંબંધી અસરકારક વિવેચન કરી, શ્રાવિકા પાઠશાળાને પોતાના તરફથી એક વર્ષ સુધી માસિક રૂ. ૭) આપવા જાહેર કર્યા તથા રૂ ૫) પાઠશાળામાં ભેટ આપ્યા હતા. વળી અત્રે શ્રાવિકા પાઠશાળાને અંગે તા. ૧૧-૭-૧૫ થી ભરતગૂંથણનો વર્ગ ઉઘાડવામાં આવ્યો છે, જેમાં મોટી ઉમરની સ્ત્રીઓ બપોરના ટાઇમે કોરો, રૂમાલ, ટોપીઓ વગેરે ભરતાં શીખે છે. આ એક નવીન સાહસ છે અને એનો દાખલો બીજા ગામવાળાઓ લેશે એવી આશા છે.

रथोत्सव और मेलावडा:–वर्धासे पं. जयचंद्र श्रावणे सूचित करते हैं कि इंधर ता. २८-९-१५ के वार्षिक रथोत्सव और उसके पहिले पांच दिन तक तेरहद्वीप पूजन होगा तथा ता. २९ को दि. जैन बोर्डिंगका तीसरा वार्षिकोत्सव होनेवाला है जिस मौकेपर कई विद्वानोंके व्याख्यान भी होंगे इसलिये सब भाईओंको अवश्य पधारना चाहियें। वर्धा जी. आई. पी. रेल्वे नागपुर लेनमें खास स्टेशन है और इधरसे मुक्तागीरी, भातकुली, रामटेकजी तीर्थ भी समीप ही हैं।

श्री रूषभ ब्रह्मचर्याश्रमका भ्रमण:–ब्रह्मचर्याश्रमका इस सालका वर्षाती दौरा ता. २-८-१५से शुरु हुआ है। इसवार श्री सम्मेदशिखरजीकी यात्रा होगी और मार्गमें कलकत्ता, कानपुर, ईलाहाबाद, बनारस आदि स्थानोंपर आश्रमका भ्रमण होगा। सभी ब्रह्मचारीगण साथमें हैं और व्याख्यानकार पंडित भी साथ२ हैं। दो मास तक यह दौरा रहेगा। जहां२ ब्रह्मचर्याश्रमका आगमन हो वहांके जैनोंकी फर्ज है कि आश्रमका पूर्ण आदर कर व्याख्यानादि कराकर लाभ उठावें।

आवश्यक्ता—संस्कृत, अंग्रेजी और वैद्यकके जानकार अध्यापककी आवश्यक्ता है। वेतन ३०) से ४०) मासिक तक। पत्रव्यवहारका पता—रामलाल सौलाल, चीनी पट्टी नं. १) कलकत्ता।

दानवीर शेठ माणेकचंदजीनी जयंतीः— आमोदमां स्वर्गीय दानवीर जैन कुलभूषण शेठ माणेकचंदजीनी जयंति अषाड वद ९ नी रात्रे वकील कृष्णलाल बळवंतराय देशाईना प्रमुखपणा नीचे सारी रीते उजवाई हती, जेमां रा. हरजीवनभाई रायचंद तथा बीजा भाईओए माणेकचंद शेठनी उदारता अने धार्मिक कार्यो करवानी खूबीनुं वर्णन करी तेमने पगले चालवानी सर्वेने सूचना करी हती. वळी आ जयंती अलाहाबाद बोर्डिंगमां पण बाबू शीवचरणलाल बी. ए. वकीलना प्रमुखपदे मनाई हती अने पं. दीपचंदजीए शेठ माणेकचंदजीना गुणोनुं वर्णन कर्युं हतुं तेमज रतलाम, कलकत्ता अने नरसिंहपुरमां पण आ जयंती मनाई हती.

संप थयो—आकलुजथी गांधी भाईचंद ताराचंद जणावे छे के अत्रे वीसा हुमड ज्ञातिमां १२ वर्ष थयां बे तड पडेलां हतां ते ज्येष्ठ मासमां शेठ नाथा रंगजीने त्यां लग्न प्रसंगे शेठ रामचंद नाथाना प्रयासथी एकत्र थई संप थयो छे. आ प्रमाणे सोलापुर, वगेरे घणा स्थळोए ज्ञातिओमां नजीवां कारणोए तडो पडेलां छे अने तेणे गंभीर रुप लीधेलुं छे, जेथी व्यवहारिक साथे अनेक धार्मिक कार्योमां विघ्नो आव्यां करे छे, माटे आवां तडो ज्यां होय त्यांथी ते नाबूद थवानी जरुर छे.

सोजीत्राथी પં. સોમાભાઇ જણાવે છે કે અત્રે ભટ્ટારક શ્રી સુરેંદ્રકીર્તિજીએ ચાતુર્માસ કર્યો છે જેનો વરઘોડો અષાડ વદ ૨ પર ધામધુમથી નીકળ્યો હતો. અત્રે રોજ સાંજે શાસ્ત્ર વંચાય છે. સોજીત્રાની આસપાસના ભાઇઓએ આ ચાતુર્માસમાં શાસ્ત્રશ્રવણનો લાભ લેવો જોઇએ.

મુંબઈમાં ફરતી લાયબ્રેરીઃ—મુંબઈમાં ભૂલેશ્વર આગળ લાલબાગમાં મુનિ મોહનલાલજી સેંટ્રલ લાયબ્રેરી ઘણુંજ સારા પાયા ઉપર ચાલી રહેલી છે, તેમાં એક નવો વધારો એ થયો છે કે મુંબઈમાં રહેતી જૈન સ્ત્રીઓને ઘેરબેઠાં વાંચનનો લાભ મળી શકે તે માટે ફરતી લાયબ્રેરીની યોજના અમલમાં મુકાઈ છે અને એ માટે સારૂં ફંડ પણ થયું છે. આ ફરતા પુસ્તકાલયની પેટી ઘેર બેઠાં વગર લવાજમે પહોંચાડવાની ગોઠવણ થઇ છે. આ યોજના ઘણીજ ઉત્તમ છે અને એથી જૈન બ્હેનો (અને તેમના ઘરના પુરૂષો પણ !) એનો લાભ ઘણીજ સારી રીતે લઇ શકાશે. આ ફરતી લાયબ્રેરીના નિયમો વગેરે અમને પ્રકટ કરવા માટે મળ્યું છે પણ તે સ્થાનાભાવને લીધે પ્રકટ ન કરતાં જણાવીશું કે એ સંબંધી પત્રવ્યવહાર લાયબ્રેરીઅન સાથે કરવાથી સર્વે ખુલાસો મળી શકશે.

યુદ્ધ અને તા. ૪થી ઑગસ્ટ— આપણી ન્યાયશીલ બ્રીટીશ સરકારને માત્ર ન્યાયને ખાતર જર્મની સામે તા. ૪થી ઑગસ્ટે લડાઇ શરૂ કરવી પડેલી તેને એક વર્ષ પૂર્ણ થયું તેની યાદગીરી નિમિત્તે ગઇ તા. ૪થી ઑગસ્ટનો દિવસ આખા હિંદમાં ભારે

ઉત્સાહથી પળાઈ અનેક સભાઓ થઇ હતી તેમાં જૈનો તરફથી પણ અનેક સ્થળે સભાઓ થઇ બ્રીટીશ રાજ્યનો જય અને યુદ્ધની શાંતિ ઇચ્છવામાં આવી હતી. ઈંદોરની તીલોકચંદ જૈન હાઇસ્કૂલમાં આવી સભા થયેલી તેમાં રાયસાહેબ બાબૂ નાનકચંદજીએ અંગ્રેજ સરકાર અને મિત્ર રાજ્ય માત્ર જર્મનીનો અન્યાય રોકવાને માટેજ લડી રહ્યા છે, એ સાબીત કરી બતાવ્યું હતું.

माळवा सभाका औषधालयः—मालवा दि. जैन प्रांतिक सभाका मुफ्त औषधालय खुलनेको सिर्फ एक वर्षही हुआ है परंतु इतने समयमें इस औषधालयने बड़ी भारी उन्नति की है। ११० प्रकारके रोगोंकी दवाई हरसमय तैयार रहती है। हैजा और प्लेगके भयंकर रोगोंकी दवाएं अत्युत्तम हैं। हर्षका विषय तो यह है कि औषधालयकी ८९ ग्रामोंमें ब्रान्च खुल चुकी हैं, जहांसे भी दवाई विना मूल्य भेजी जाती है। जहां २ यह ब्रान्च खुली है वहांके भाईओंको इस औषधालयका लाभ लेना चाहिए और अन्य महाशयों नीचे लिखे पतेसे हरएक प्रकारकी औषधियां केवल डांकव्ययके वी. पी. से मगा सकते हैं—लाला भगवानदास, महामंत्री मालवा दि. जैन प्रां. सभा औषधालय बड़नगर (मालवा)।

ઠગારાથી ચેતજો:—દુગનિવાસી મોહનલાલ શેઠી તથા ચોથમલ પાદાડાના પત્રથી જણાયું છે કે આશરે ૩૦-૩૫ વર્ષની ઉમરનો એક પંચમ જૈન પોતાને મોતીસાગર નામે ક્ષુલ્લક ત્યાગી બતાવી ગામેગામ ફરે છે તથા પોતાની સાથે વર્ધા બોર્ડિંગની રસીદબુક ચોરીને રાખેલી છે તથા 'દિગંબર જૈન'ના અંકો પણ સાથે છે તે તદ્દન ઠગ માલમ પડયો છે માટે તેથી સાવચેત રહેવું. (આજ ઠગ જેઠ માસમાં મુંબાઈ, સુરત વગેરે સ્થળે આવ્યો હતો અને કહેતો હતો કે હું તો શીખરજી જઇને નિગ્રંથ મુનિની દીક્ષા લેવાનો છું વગેરે).

સુરતમાં સભાઓ—અત્રે જૈનહિતવર્ધક મંડળની માસિક સભામાં જેઠ સુદ ૨ ને દિને વૈદ્ય કસ્તુરચંદ નવલચંદનાં પ્રમુખપણા નીચે શા. સાંકેરચંદ મગનલાલ જરીવાળાએ "જૈન જીવન" ઉપર તથા અષાડ સુદ ૨ ની સભામાં માસ્તર વનમાળીદાસ અંદરજીએ ભાવનગર સ્ટેટના રીટાયર્ડ ન્યાયાધીશ શ્રીયુત્ ઠાકોરદાસ નવલચંદના પ્રમુખપણા નીચે 'મંડળ અને આપણું કર્તવ્ય' એ વિષય ઉપર ભાષણો આપ્યાં હતાં.

ત્યાગીઓના ચાતુર્માસ:—બ્ર. શીતલપ્રસાદજીએ ઈંદોરમાં, બ્રહ્મચારી હેમસાગરજીએ ચોપડા (ખાનદેશ) માં, ભ. સુરેંદ્રકીર્તિજીએ સોજીત્રામાં, ભ. વિજયકીર્તિજીએ બાકરોળ (મોડાસા) માં ચાતુર્માસ કર્યો છે. શ્રીમાન ત્યાગી ઐલક પન્નાલાલ, ક્ષુલ્લક મનાલાલજી વગેરે ત્યાગીઓએ જ્યાં ચાતુર્માસ કરેલો હોય ત્યાંના ભાઇઓએ અમોને ખબર લખી મોકલવી જે આવતા અંકમાં પ્રકટ કરવામાં આવશે.

મુંબઇનું જીવદયાજ્ઞાનપ્રસારક ફંડ જીવદયાને લગતું ઉત્તમ કાર્ય કરી રહેલું છે, જેણે હાલમાં કેટલાક દેશી રાજ્યકર્તાઓ ઉપર એક અરજપત્ર મોકલી જાનવરો ઉપર ગુજરતું ઘાતકીપણું અટકાવવાનો કાયદો કરવાનો તથા માંસાહાર બંધ કરી વનસ્પત્યાહારજ કરવાને સૂચનાઓ કરી માંસાહારથી થતા નુકસાન અને વનસ્પત્યાહારથી થતા ફાયદાઓને લગતા સાહિત્યનાં પુસ્તકો જેટલાં જોઇએ તેટલાં પુરાં પાડવાની અરજ ગુજારી છે.

जैनसंस्कारविधि––सिरोंज (टोंक)में पं. गीरवरदासजीके दो पुत्रोंकी कर्णवेध और केशवाय विधि ज्येष्ठ मासमें जैनसंस्कारविधिसे हुई थी । हर्षका समाचार है कि पं. गीरवरदासजीने जहां कहीं भी ५३ संस्कारोंमेंसे कोई भी विधि करानी हो तो विना कुछ लिये सिर्फ मार्ग खर्च मात्रसे जानेके लिये बीडा उठाया है।

ભટારકજીનો વૈભવ:—સાંભળવા મુજબ ભ. વિજયકીર્તિજી પાસે હાલ ૮ ભોઇ પાલખી ઉંચકનાર, ૬ પોલીસ, ૧ સેક્રેટરી, ૬ હવાલદાર, ૧ ઉપાધ્યાય (૩૦ માસિકનો) ૧ હજામ, ૨ રસોઇયા, ૨ પંડિત, ૩ ખાસ દાર (ઘોડાઓની બરદાસ કરનાર) ૧ કામદાર મળી ૨૬ માણસો અને ૫ ઘોડા અને ૧ વછેરો છે ! ! જેનો રોજનો ખર્ચ કોને માથે છે તે વાંચકોએજ સમજી લેવું. સાંભળી હાલ ગયેલા ત્યાં માત્ર ૨૫–૩૦ ઘરવાળાઓને એક માસમાં દોઢ બે હજાર રૂપિયા ખર્ચ બધુ મળીને ભટ્ટારકજી નિમિત્તેજ થયેલ હતો, એ પણ પંચમ કાળની બલિહારી છે? છે કાંઇ ખામી આ રાજવૈભવમાં?! ઇડર રાપરેશની પંચની આંખ કેંઇ ખુલશે કે? આ મુજબ એક વર્ષમાં પંદર વીસ હજાર રૂપિયાનો ઉડી જતો ખર્ચ વિદ્યાદાનમાં થાય તો ગુજરાતનો કેટલો ઉદ્ધાર થાય!!!

शंका-समाधान––एक भाई शंका करते है कि सुतार, सुनार आदि प्रक्षाल व स्वाध्याय कर सकते हैं या नहीं? इसका समाधान इस प्रकार है कि–जो शूद्र वर्ण वाले हैं वे प्रक्षाल स्वाध्याय नहीं कर सकते हैं और शेष वर्णवाले अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य प्रक्षाल स्वाध्याय कर सकते हैं। सुनार सुतार तो अस्पृश्य शूद्र है ये तो नितान्त ही दूर है॥

खातेगांवमें जैन पाठशाला स्थापन हुई है। २२ विद्यार्थी पढ़ते हैं।

सहायता मिली–श्री स्याद्वाद महाविद्यालयको अप्रेल, मई, जून यह तीन मासमें १९४५)≈ की और रूषभब्रह्मचर्याश्रमको १६ मईसे १५ जून तक रु. ९९४)०॥ की सहायता मिली थी। आश्रमका मईमाहका खर्च रु. ८१९॥≈ हुवा था। विद्यालय और इस आश्रमको हर समय सहायता देते रहना चाहिए।

रु. ३००) ब्रह्मचर्याश्रमने सोंप्या:–पालीताणावाळा धर्मानुरागी मुनिम धरमचंदजीए आ देहने क्षणभंगुर जाणी रु. ३००) रूषभ ब्रह्मचर्याश्रमने ऐवी सरते सोंप्या छे के मारी जीदंगी दर्म्यान एनुं व्याज आश्रममां खरचवुं. कंई खास कारणसर हुं मांगुं तो ए रुप्या पाछा आपवा तथा मारी हयाति बाद एमांथी १००) ब्रह्मचर्याश्रमने, १००) स्याद्वाद महाविद्यालयने अने रु. १००) ब्रह्मचर्याश्रम कमीटिनी इच्छा मुजब विद्याप्रचारना कार्यमां वापरवा. आपणा श्रीमन्तो आनुं अनुकरण करशे के? हाथे तेज साथे.

परतावगढमां धर्मभावना–जून मासमां ब्रह्मचारीजी शीतलप्रसादजीए परतावगढ, देवगढवगेरे स्थळे करेला भ्रमण दरम्यान

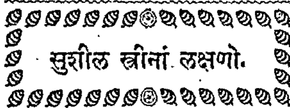
अनेक जाहेर व्याख्यानो करवा उपरांत घणी प्राचीन शोधखोळ चलावी हती जेथी जणायुं छे के देवगढमां स. १७७४मां ८०० घर हूमडोना हता त्यारे हाल नवज छे. मोटा मोटा राज्याधिकारीओ हूमडो थई गया छे. परतावगढथी १॥ कोस उपर ब्रह्मोत्तर गाममां शांतिनाथस्वामीनुं अति प्राचीन मंदिर छे, जेमां अंदरनी वेदीमां चारे हाथ उंचो २४ भगवाननो एक पट छे जे उपर सं. १०३ नो लेख छे वगेरे.

जन्मोत्सवकी खुशालीमें ३००००) का दानः—इन्दौरमें रा. ब. दानवीर सेठ हुकमचंदजीका जन्मदिन आषाढ शुक्ल १ को था उसी दिन महाविद्यालयमें बड़ा उत्सव मनाया गया था और एक सभा श्रीयुत् बाबू जुगमंदरलाल जैनी एम. ए. बेरिस्टर, जडज हाईकोर्टके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें सेठजीको एक अभिनंदन पत्र दिया गया था उसी वक्त सेठ हुकमचंदजीने अपने महाविद्यालयके ध्रौव्य फंडमें तीन वर्ष तक दस २ हजार रुपये देना स्वीकार किये थे ।

तत्त्वार्थसूत्रनुं इंग्लिश भाषांतरः—श्रीयुत् बाबू जुगमंदरलाल जैनीना विशेष आमहथी ब्र. शीतलप्रसादजीए आ वर्षे इन्दौरमां चातुर्मास कर्यो छे अने आ प्रसंगे केटलाक धर्मग्रंथोनो अंग्रेजी भाषामां अनुवाद तैयार करनार छे जेमां प्रथम तत्त्वार्थसूत्रनुं इंग्लिश भाषांतर करवानुं शरु थयुं छे. ब्रह्मचारीजी साथे पत्रव्यवहार करनारे उदासीनाश्रम, तकोगंज-इन्दोर ए सरनामेथी लखवुं.

शिखरजी केसः—श्री समेदशिखरजीना पटा संबंधी दिगंबरी जैनो तरफथी पालगंजना राजा उपर जे फरियाद मांडवामां आवी छे ते केस कलकत्तानी हाईकोर्टमां चलाववाने पालगंजना राजा तरफथी रुल मांगवामां आवी हती ते बन्ने बाजुनी तकरार सांभळी नामदार जडज मी. चौधरीए रुल काढी नांखी छे, जेथी हवे आ केस हजारीबागनी कोर्टमांज चालशे. आ प्रसंगे पालगंजना राजा तरफथी मी. प्युए जे भाषण समेद-शिखरजीनां वर्णन अने हक्क संबंधी आप्युं हतुं ते केटलुंक सत्यथी वेगळुं जणाय छे.

इस वर्षके उपहारः—'दिगंबर जैन'के ग्राहकोंको ईस वर्षमें ८ पुस्तकें उपहारमें दी जावेंगी, जिसमेंसे श्रीजिनचतुर्विंशति काव्य, जीवविचार और बालशिक्षा गत अंकोंमें भेज चुके हैं और बड़ा उपहार श्रीसागारधर्मामृत पूर्वार्द्ध, श्राविकासुबोध और हिन्दी भक्तामर-प्राणप्रिय काव्य ऐसी ३ पुस्तकें अलग बुकपेकेट द्वारा गत् मासमें भेजी जा चुकी हैं और 'रूपसुंदरी' नामका उपहार इसी अंकके साथ भेजा गया है सो ग्राहकगण संभाल लीजिये। सब मिलकर ७ पुस्तकें आपको मिल चुकीं। सिर्फ ८वां उपहार रहा, सो भी आगामी अंकके साथ रवाना किया जायगा।



सुशील स्त्रीनां लक्षणो.

પતિવ્રતા, સાધ્વી અને સતી સ્ત્રી એજ છે કે જે હમેશાં પોતાની ઈંદ્રિયો વશ રાખી, પોતાના પતિપર નિર્મળ પ્રેમ રાખે છે તથા તેમની ઇચ્છાનુસાર ચાલી તેમની આજ્ઞાનું પાલન કરે છે અર્થાત્ તન, મન અને કર્મથી પોતાના પતિની સેવા સિવાય બીજી ઇચ્છા કરતી નથી, ઘર બહારથી અને અંદરથી સ્વચ્છ રાખે છે, પોતાના પતિનેજ પોતાના સુખદુઃખના સાથી સ્હમજી, તેમની આજ્ઞા વિના ઘર બહાર જતી નથી, વિના કામે કદિપણ બહાર જતી નથી, સાસુને પોતાની માતા સમાન, સસરાને પિતા સમાન સ્હમજી બન્નેની તન, મન અને કર્મથી હમેશાં સેવા કરે છે, નણંદને પોતાની બ્હેન સ્હમજે છે, પતિના સુવા પછી સુવે છે અને ઉઠયા પહેલાં ઉઠી સ્વચ્છતાથી બધાં કામ કરે છે, પતિને નિયમપૂર્વક પ્રથમ ભોજન કરાવી પછી પોતે જમે છે, ગૃહકાર્ય કરતાં બચત રહેતાં વખતને જ્ઞાન ગ્રહણ કરવામાં વિતાવે છે, પતિનો વિયોગ કદિ સહન કરી શકતી નથી અર્થાત્ જે પ્રમાણે પાણી વિના માછલી રહી શકતી નથી તેવી રીતે પતિવિયોગમાં તે રહી શકતી નથી, પતિના પ્રિયજનોને સન્માન આપે છે, સાસુ, નણંદ તથા સખીના સંગાથ વિના એકલી કોઇ પણ જગ્યાએ જતી નથી, નીચી દૃષ્ટિએ ઘરના કામ કરે છે; અન્ય પુરૂષ સાથે વ્યર્થ વાતચીત કરતી નથી, લજ્જા—આબરૂ છોડી કોઇની સાથે ઉંચા સ્વરે બોલતી નથી, પતિના શ્રમનું હરણ કરે છે, પતિથી છાનું કોઇપણ કામ કરતી નથી, સત્શાસ્ત્ર અને સદ્‌ગુરૂનો ઉપદેશ સાંભળી તે પ્રમાણે વર્તે છે, પતિને ધર્મ સંબંધી તથા વ્યવહાર સંબંધીના કાર્યોમાં ઉત્સાહ અને હિમ્મત આપી, તન, મન અને કર્મથી મદદ કરે છે, સંતાનનું પ્રેમથી પાલણ—પોષણ કરી, ધીર, વીર, ધાર્મિક, સર્વગુણસંપન્ન, અને વિદ્વાન બનાવવાનો હમેશાં પ્રયત્ન કરે છે, પતિ જે કાંઇ લાવી આપે છે તેને સંભાળપૂર્વક ઘરમાં સાચવે છે, કદાચ કોઈ દુષ્ટ પુરૂષ કામેચ્છાથી પોતાની સ્હામે જુએ અગર મધુર (!) વચનોદ્વારા રીઝાવે, અથવા ઘણાજ માણસોની ભીડમાં, બહુ જરૂરી કામ આવી પડવાથી જવું પડે અને તે વખતે અન્ય પુરૂષનો સ્પર્શ થઇ જાય તથાપિ મનમાં જરા પણ વિકાર લાવતી નથી, પરપુરૂષ સ્હામે સ્થિર દૃષ્ટિથી જોતી નથી, પરંતુ કદાચ જોવાનો પ્રસંગ પડે તો ભાઈ, અને બાપ સમાન સ્હમજી જુએ છે, કદાચ કર્મયોગે પતિ રોગી તથા દુર્ગુણી મળ્યો હોય, તોપણ તેમને દેવ પ્રમાણે પ્રિય સ્હમજી હમેશાં પ્રસન્ન રહે છે, પતિ સિવાય બીજા કોઇની પણ ગરજ રાખતી નથી, યદિ કોઇ દ્રવ્યાદિનો લોભ દેખાડે તોપણ પોતાના મનને ચલાયમાન કરતી નથી, કોઇ કામી પુરૂષ પોતાની દુષ્ટેચ્છા, નમ્રતાથી અથવા જબરાઇથી કરે અગર વસ્ત્ર અને આભૂષણ વિગેરેનો લોભ જણાવે તેમજ જો તે દેવ કે ગંધર્વ સમાન રૂપવાન, ગુણવાન તથા દ્રવ્યવાન પણ કેમ ન હો તથાપિ લાલચ ન કરતાં ત્હેને ધિક્કારી દૂર કરે છે, પતિ સિવાય બીજા કોઇને ભજતી નથી, પરપુરૂષ સાથે પોતાનું શરીર અડકી જાય એવી રીતે વર્તતી નથી, જેથી મર્યાદાનો ભંગ થાય એવું એક વસ્ત્ર પહેરી ફરતી નથી, પરંતુ જેથી પગની પીંડી અને પેટ વિગેરે શરીરના સર્વ ભાગ સારી રીતે ઢંકાઈ રહે એવું વસ્ત્ર પહેરે છે, વસ્ત્ર કાઢી અર્થાત નગ્ન થઇ કદિ પણ સ્નાન

કરતી નથી, ધીમી ચાલથી ચાલે છે, પોતાનું મુખ હમેશાં હસમુખું રાખે છે, ઉંચા સ્વરથી હાસ્ય કરતી નથી, અન્ય સ્ત્રી—પુરૂષની ચેષ્ટા જોતી નથી, સૌભાગ્યદર્શક કંકુનો ચાંલ્લો તથા મંગળસૂત્ર વિગેરે સાધારણ શ્રૃંગાર કરે છે, અલંકાર વિગેરેથી શરીર શોભાવવાને બદલે સદ્‌ગુણોથી શરીર શોભાવે છે વગેરે શુભ લક્ષણો સતી અર્થાત્ પતિવ્રતા સ્ત્રીમાં હોય છે.

સદ્‌ગુણી સુશીલ બ્હેનો ! ઉપર જણાવેલા સદ્‌ગુણોને તમારા હૃદયમાં સ્થાન આપી, પતિનો, કુટુંબનો અને દેશનો આશીર્વાદ મેળવો તથા કીર્તિ અને અમર નામ જગતમાં મુકી જાઓ. મનુષ્ય ભવ પામી જીવનનું સાર્થક કરવું હોય તો જરૂર આ મંગળસૂત્ર વાંચો અને કંઠમાળ તરીકે પહેરી અખંડ, અવિનાશી સત્યસુખના ભાગી બનો ! અસ્તુ ! !

આ. મ. શાહ.

सप्तव्यसन निषेध।



त्यागो सप्त विसन बदकार, सत्यानाश मिटानेवाले॥टेक॥

संपति जुआ खेलि गमाई, इज्जत मिट्टीमें मिलवाई,
पांडव पीछेंते पछिताई, वन वन वने भटकनेवाले ॥१॥

खायो बकराजाने मांस, कीयो जाय नरकमें वास,
करिकें सुरापान अभ्यास, जादव जरे द्वारिका वाले॥२॥

वेश्या जाहिर नरक निशानी, लीनी चारुदत्त बहु हानी,
जगमें अवलों प्रगट कहानी, इज्जत हुरमत खोनेवाले॥३॥

नृप ब्रह्मदत्तने मारे, जंगलके चरने वारे,
सो संकट सहे अपारे, बने नरकोंके जानेवाले ॥४॥

शिवभूति चोरई कीनी, परनारि दशानन लीनी,
खोटी गति तिनने लीनी, जगमें हंसी करानेवाले ॥५॥

देखो ! एक हुवो दुखदाई, सातोंकी कहा चलाई,
पंना त्यागो सबही भाई, कहते नाम मिटानेवाले ॥६॥

कंई लाखो निराशामां
अमर आशा छूपाई छे



મનુષ્ય અમુક કામ કરે છે અને પછી તેના પરીણામની ફળપ્રાપ્તિ માટે તે અત્યંત ઉત્સુક બને છે, તે ફળપ્રાપ્તિ તરફ પોતે પ્રેમની મજબુત લાગણી દર્શાવે છે, તેમાં કંઇ આડે આવે તો, તેથી તેની લાગણીઓ દુભાય છે, આવી જે ઉત્કંઠાભરી અભિલાષા તેને **આશા** કહે છે.

હરેક મનુષ્ય પોતાની મહેનતનું ફળ જાણવા ઇચ્છા ધરાવે છે, મહેનતના પ્રમાણમાં તેના ફળ માટે તે ઉત્કંઠિત અને અધીરો બને છે અને કાર્યસિદ્ધિની આશા રાખે છે. એમ કહેવામાં આવે છે કે પોતાના કરેલાં કાર્યની-પોતાની મહેનતની ચોક્કસ ખાત્રી નહિ હોવાથી તે અધીરો અને ઉત્કંઠીત બની આશા દ્વારા તુરંગોના હવાઇ કિલ્લાઓ બાંધે છે.

આશા હમેશાં આગામી પરીણામ માટે હોય છે. આશા ફરજ્યાત નથી, પણ સ્વાભાવિક રીતેજ આપણું ચંચલ મન તે તરફ દોરવાઈ જાય છે. આશા કૃત્રિમ નથી પણ કુદરતી છે અને આજ સબબે આશાભરી અવસ્થા આપણને અત્યંત સુખદાયક અને પ્રિય લાગે. છે ઘરડા, જુવાન અને એક નાનામાં નાના બાળકને પણ અમુક વસ્તુની પ્રાપ્તિ યા તો પરિણામ માટે આશા થાય છે. આશા માણસની માનસિક તેમજ શારીરિક સ્થિતિપર એક અદ્વિતીય છાપ પાડે છે. તેનું શરીર આશાના ઉમંગથી હૃષ્ટપુષ્ટ થઇ આનંદ હીંચોળે ચઢે છે. મન અનના ઉચ્ચ અને ઉમદા તેમજ અસંખ્ય તરંગોના અમૃતરૂપી

મોજાઓમાં અત્યંત પ્રેમથી, આજુબાજુની અન્ય સ્થિતિના બેભાનથી, સ્વચ્છન્દે, કોઇ પણ પ્રકારના બાધ વિના સ્નાન કરે છે, તેની છોળોથી આમતેમ અથડાય છે, પાછો પડે છે વળી મહેનત કરી ઉંચો ચઢવા પ્રયાસ કરે છે, વળી ચઢે છે .અને પડે છે; આ પ્રકારે શુભાશુભ પરિણામની ખબર છે નહિ ત્યાં સુધી આનંદસાગરમાં તે નિમગ્ન રહે છે, પોતાને-કરેલા કામને અને પરિણામની વસ્તુને આશારૂપી મજબુત સાંકળથી દૃઢ રીતે બાંધી દે છે, નવરાશની વખતે પણ તેનાજ વિચાર અને રાત્રિએ પણ તેનાંજ સ્વપ્નાં! કંઇ પ્રતિઘાત થયો કે તેનોજ વિચાર. અહાહા ! ખરેખર મનુષ્યની જીંદગીની આ અવસ્થાનો ત્યાગ અત્યંત સુખકર અને આનંદદાયક હોય છે.

આ સમયે મનુષ્ય પોતાને અત્યંત સુખી સમજે છે, પણ આ અવસ્થાની પરિસીમા પરિણામ જણાતા પહેલાંની છેલ્લી સેકન્ડ હોય છે, પણ શુભાશુભ પરિણામની ખબર પડયે બધું રૂપ એકાએક પલટાઈ જાય છે.

શુભ પરિણામની જાણ થયે તે અમુક ટૂંક વખત હર્ષઘેલો થઈ નાચવા લાગે છે, પણ તે પારસીમાની અવધિ સાંજ પૂર્ણ થઇ જાય છે. વખત જતાં તે તરફની પ્રેમની લાગણી યા તો જિજ્ઞાસા ધીમેધીમે ઘટતી જાય છે અને વખત ગયે કશું હતું ન હતું થઇ વિસરાઈ જાય છે.

પરંતુ જ્યારે "મનુષ્ય ધારે છે કંઇ અને થાય છે કંઇ" એ સૂત્ર પ્રમાણે બાજી ઊંધી વળે છે-પરિણામ અનિષ્ટ આવે છે ત્યારે અહા! જે શરીર હૃષ્ટપુષ્ટ થઈ અને પ્રફુલ્લિત થઇ આનંદહીંચોળે ચઢયાં હતાં તે નરમ થઇ ગાત્રો શિથિલ થવા માંડે છે-ચિંતા પ્રેમનું સ્થાન લે છે—દૈનિક કાર્ય તરફ દુર્લક્ષ રહે છે. પ્રથમની પ્રેમી વસ્તુ અને પ્રેમદાયક પરિણામ એક બીજાનો ગાઢ મૈત્રીભાવનો દાવો તજી દઇ કટ્ટી દુશ્મનાવટ ધારણ કરે છે. જે આશાએ પ્રેમી વસ્તુ, પ્રેમી પરિણામ અને પોતાને દૃઢ સાંકળથી બાંધ્યા હતા તે એકાએક વીજળીક વેગે ફ્રોફ્ટ છુટા પડી જાય છે અને કેટલીક વાર આખરે એવું પણ અનિષ્ટ પરિણામ આવે છે કે જીંદગીની ખુવારી થાય છે.

પણ હે મનુષ્ય ! આવી લાગણી થવી હરેકને માટે સંભવિત છે, છતાં પણ વગર વિચારે સાહસ કરતાં અટક. વિચાર અને તપાસ કે કવચિત્ તું ત્હારા અહંકારના પરિણામની યા તો આળસ, અનિયમીતતા, લુચ્ચાઇ, કપટ અને બેદરકારપણાના પરિણામની રાહ તો જોતો નહોતો અને જો આ વાત શાંતપણે નિર્પક્ષપાતે વિચારતાં માલુમ પડે તો યાદ રાખજે કે તેણે તને છેતર્યો છે, તું તેથી ફત્તેહ પામ્યો નથી અને પામીશ પણ નહિ. એમ સમજી ત્હારા તે દુર્ગુણોને તું સદાને માટે નમસ્કાર કરી નમ્રતા, વિવેક અને વિચાર સદ્ગુણ ધારણ કર અને પુનઃ એકવાર નિયમસર કાર્ય આદરી અન્યપર સરસાઈ ભોગવ-પરંતુ જો ખરા અંતઃકરણથી ધ્યાનપૂર્વક ઉત્સાહ અને ખંતથી મહેનત કરેલા કાર્યનું અનિષ્ટ પરીણામ આવ્યું હોય તો તું તેથી બિલકુલ નાસીપાસ થઈ ગભરાતો ના! ઊંધા અને નહિ ઇચ્છવા યોગ્ય કાલ્પનિક વિચારો ઘડતો ના, પરંતુ જરા ધીરજ લાવી ડૉ. એટરબરીના એક અમૂલ્ય સૂત્રનું મનન કરજે. "What God chooses is better than what I choose;" "**મારી પસંદગી કરતાં પરમેશ્વરની પસંદગી વધારે માન્ય છે**" વળી કેટલીક વખત એમ પણ બને છે કે સમૃદ્ધિવાન્ આબાદ અને સાંસારિક સુખમાં રચ્યાપચ્યા

રહેતાં મનુષ્યને જ્યાં સુધી દુઃખનો કાંટો વાગ્યો નથી ત્યાં સુધી દુઃખ શું હોય છે તેનું તેને બિલ્કુલ ભાન હોતું નથી અને આથી અન્યના દુઃખને હસી કાઢે છે–તિરસ્કારી કાઢે છે અને અહંમન્ય રહે છે. આવા પ્રસંગે તેને દુઃખ યા તો પીડા શું ચીજ છે તેનું ભાન આપવા કુદરતથી કંઈ આવા પ્રકારની નીરાશી મળે છે. આ નિરાશી તેને અત્યંત દુઃખકર થઇ પડે છે. પુનઃ કરેલું કાર્ય આરંભવા નાખુશી દર્શાવે છે, પરંતુ સુજ્ઞ મનુષ્યે આ પ્રસંગે એક ગુર્જર કવિના સૂત્રનું મનન કરવું યોગ્ય છે. કહ્યું છે કે 'કંઈ **લાખો નિરાશામાં અમર આશા છુપાઈ** છે' કદાપણ પ્રકારની ભીતિ નહીં રાખતાં પુનઃ ધૈર્યથી કાર્ય આદરો અને મળેલી નાસીપાસીનાં હરેક ચિન્હો ભૂસી નાખી હર્ષાનંદના ઘોષ ગજાવો. નાસીપાસી કદિ નબળાઇ યા તો ઉત્સાહ ભંગ કરનારી કદાપિ ન હોવી જોઇએ, પરંતુ ઉત્સાહના પુનઃ અને પુનઃ વૃદ્ધિ કરનારી હોવી જોઇએ અને ભવિષ્યની હરેક આશાઓ ફલીભૂત થવી જોઇએ. આશા એક અદ્દશ્ય હકસલીના નરવીગર જેવી ઉત્સાહક વસ્તુ છે જેનો અખૂટ ઝરો આ નાશવંત દેહના નાશ પર્યંત ચિરસ્થાયી રહે છે. આશા એક પ્રકારનું ગુરુત્વાકર્ષણ છે.

હિંમતલાલ વરજીવનદાસ
હી. ગુ. જૈન બોર્ડિંગ-મુંબાઈ.

शिक्षा।

(कस्तूरीबाई वि. श्राविकाश्रम-बम्बई॥)

(१)

माता पिताके गेह रह, सीता जो तुमने नेह है।
मिथ्या तथा दुःख देनहारा वह तुम्हारा नेह है॥
इस लाड़ने ही है बनाया मूर्ख तुमको बेटियो।
पढ़ना औ लिखना नहिं सुहाता बस इसीसे बेटियो॥

(२)

श्रीमान माताकी सुता, सुकुमार होती नेमसे।
कड़वे स्वभाव हुए उन्हींके मूर्खताके प्रेमसे॥
हाय फिर वे तरुणवस्था उत्पन्न हुई जब बेटियां।
आने लगीं झट मूर्खता वश अनेकों आपत्तियां॥

(३)

रोने लगे माता पिता, सुन हाय बेटिकी दशा।
क्या हुआ क्यों दुःख दिया इस सोचमें खोई निशा॥
भोर होनेके प्रथम कुछ नींद आई नेमसे।
क्या देखते हैं स्वप्नमें कोई कह रहा है प्रेमसे॥

(४)

क्यों सेठजी चिन्तित हुए हो नींद तक लेते नहीं।
क्या इस तरहके खेदसे, आताप मिट सकता कहीं॥
सोचो जरा तुमने सुताको पढ़ाया कुछ है यहां।
कर्तव्य पालन पाठ क्या तुमने बताया था यहां॥

(५)

जब नहिं बताया नहिं पढ़ाया निज सुताको भी यहां।
क्या सुखी होना चाहते संतान रख मूरख यहां॥
क्या जानते तुम हो नहीं दुःख बाद सुख मिलता सदा।
यह प्राकृतिक सिद्धान्त है विख्यात है जग सर्वदा॥

(६)

सेठजी बोले उसी क्षण किया हमने पाप है।
संतानको मूरख बना जीवन किया बरबाद है॥
हे बंधुवो! कोई न रखना मूर्ख निज संतानको।
चाहे सुता हो पुत्र हो भगिनी तथा निज नार हो॥

मित्र सम्वाद।

चांदनीचौकमें एक छोटीसी हवेली है, जिसमें सवाई सिंघई टेकचंदजी रहते हैं, (यह वही टेकचंद, जयचंदजीके मित्र हैं, जिनका परिचय पाठकगण इसी पत्रके पहिले अंकोंमें पा चुके हैं)। इनके बापदादे बहुत श्रीमान् थे। परंतु ये कर्मयोगसे साधारण स्थितिके ही रह गये हैं। घरमें दो तीन बचेबची हैं। पिताका देहान्त हो चुका है, केवल एक बुढ़िया माता है, आज भादों सुदी दोयजका दिन है। अब जैनियोंके दशलक्षणपर्व (पर्यूषण) के केवल दो दिन और रह गये हैं। आजकल भदैयां जैनियों (जो केवल इन्हीं दश दिन व्रतोंमें श्री जिनमंदिरमें आते हैं) के यहां तैयारियां हो रही है। घरोंघर भांतिभांतिके पट्रसयुक्त भोजन (हलवा, पूरी, दूधपाक, खीर, पकौड़ी, कचौरी, मोहनभोग, पूरनपूरी, बर्फी, मोदक मल्क आदि) नित नये बन रहे है। कूंजड़े भटयारोंने शाक, भाजी, फल, आदि भी बहुत मंहगे (अधिक मूल्यपर) कर रखे हैं। क्योंकि जैनियोंको सुदी पंचमीसे १४ तक दश दिन तो हरी शाक खरीदना नहीं है। उन्होंने तो चार महिना पहिलेसे ही शाकभाजी सुखा कर रख ली है। इसीलिये कूंजड़ोंको मनमाना दाम लेनेका यही अवसर है। दर्जियों और सुनारोंकी भी खूब ही चटकी है। क्योंकि जैसे मुसलमानके यहां ईदके लिये तैयारी होती है। वे उस दिन बढ़ियांसे बढ़ियां कपड़ा पहिरते, आभूषण पहिरते, खाना (भोजन) बनाते, खाते और अपने सम्बन्धियोंकी दावत (निमंत्रण) करके खिलाते, मित्र बांधवोंसे मिलते हैं। उसी प्रकार जैनी भी इन दिनोंमें बढ़ियां बढ़ियां मूल्यवान दिखाऊ कपड़े पहिरते, आभूषण (दागीने) पहिरते, अंजन, मंजन, इतर, फूलेल लगाते, केवल हरीको छोड़कर सब प्रकारकी सूखी शाक और पुष्ट स्वादिष्ट भोजन खाते, अपने सगे सम्बन्धियोंसे मिलते हैं। परस्पर निमंत्रण करके जिमाते हैं इत्यादि इत्यादि। इसीसे दर्जी और सुनारोंको अवकाश नहीं है।

बिचारे टेकचंदजी भी कुछ गहना (दागीना) लेकर सुनारके घर फिर आये, परन्तु उसने टालटूल बता दी। घरमें आये तो अन्नपूर्णा (स्त्री) जी यह सुनकर कि आभूषण नहीं साफ हुवे हैं, एक कौनेमें जा बैठी, माता बिचारी घरका काम कर रही है। बचे दद्दा दद्दा कह कर अंगरखा, कोट, टोपी, कड़े, कूंडल मांग रहे हैं। टेकचंदजी समझा रहे हैं। अरी मोतीकी मां! सुनो तो सही, तुम इतनी उदास क्यों हो गयीं? कल सवेरे ही तो सब बनकर आ जावेगा। क्या किया जाय? उसे (सोनी) अवकाश ही नहीं है।

मोतीकी मां (दुलारीबहू)—जब तुम्हींको अवकाश बनवानेका नहीं है, तब सुनारको कहांसे आवेगा? तुम्हें क्या है? बैठ गये इधर उधरकी बातें मारने, यहां तो चार लुगाइयोंमें बैठनेमें लाज आती है, सब तो रंगबिरंगे कपड़े और आभूषण पहिरेंगी, तब मैं वहां भूतनी सी भला अच्छी लगूंगी? न तो ओढ़नीमें ही गोटा लगा न जालीका पिछौरा ही आया, न जेवर ही धुला, न बचोंके कपड़े बने, औरोंके

लड़के सजे फिरेंगे मेरे भिखारी सरीखे उनका मुँह देखेंगे।

टेकचन्द–देखो मोतीकी मां ! आजकल व्यापार धंधा तो है नहीं, खर्चका हाल तुम जानतीही हो, सालोंसाल अकाल पड़ रहा है। भला यह तो बतावो रुपया कहांसे आता है ? पर्सुवा सुनार (सोनी) अपना आसामी है, वहांसे अपना काम योंही निकल जावेगा। तुम्हें इतनी फिकर क्यों पड़ गई, अभी तो तीन दिन बाकी हैं!

दूलारीवहू–मैं सब जानती हूं, इतने बहानेबाजी मैं क्या नहीं समझती हूं ? तीन दिन छोड़ तीन वर्षमें भी नहीं बननेके। तीन दिन बाद फिर कोई बहाना तैयार होगा। भला मेरे लिये तुम्हारे घरमें कहांसे कुछ आवेगा; सदा कंगाली रहेगी।

टेकचन्द–मोतीकी मां, तुम्हें नहीं मालूम है कि मुझे अभी बाजारका क्या देना है ? और क्या व्यापारका ढंग हो रहा है। कहनेको दिसावरकी खरीदपर दो आना रुपया लेता हूं, परंतु दो पैसा रुपया भी हाथ नहीं आता है, और उधारवाले खा जांय सो अलग, देना है सो सच्चा। रेल, चुंगी, पल्लेदार, आढ़त, दलाली, व्याज और स्टेशनपर व रस्तेमें माल निकल जाने आदिके कारण, साहूकारकी रकम भी कठिनतासे खड़ी होती है। इस साल हिसाब लगाये रु. ३००)का घाटा रहा। पर क्या करें अपना रूप रखना पड़ता है। इसीलिये घी खाना पगड़ी बचाना। तुम तो स्यानी चतुर हो, फिर हठ करनेसे क्या लाभ है ? धीरज धरो, मैं सब कुछ बनवा दूंगा।

दुलारी वहू–हां मुझे सब मालूम है। व्यर्थ बातें बनाकर मेरा जी मत भुलावो, जावो, नहीं तो व्यापारमें घाटा आ जावेगा। ऐसा कहकर ठुसक फुसक रोने लगी, बच्चे भी मांको देखकर रोने लगे। टेकचंदने देखा कि यह नहीं मानती है। तो भयभंजन (लाठी) उठाकर दुलारीकी ओर क्रोधके आवेशमें बढ़े ही थे कि उधरसे जयचन्दजी आते दिखाई दिये। देखते ही भयभंजन एक ओर फेंककर चुपसे बाहर निकल आये और जुहार कहकर जयचन्द सहित बागकी ओर चले गये। बागमें टहलते हुवे जयचन्द बोले।

जयचंद–कहो भाई आज भयभंजन कैसा उठा था ? और उदास क्यों हो रहे हो ?

टेकचन्द–भाई साहेब, कुछ मत पूछो, घरमें (स्त्री) बड़ी हठीली है। वह अवसर नहीं देखती है, न किसीकी आपत्ति विपत्तिका बिचार ही करती है। जो मुंहसे निकला, कि तुरंत हो जाना चाहिये, भला आप ही बतावो कि यह कैसा कठिन समय है। जिसमें मनुष्यको अपना रूप रखकर भोजनखर्च चलाना भी कठिन है। तिस पर, पाहुनापरी (महमान), धर्मादा, व्याहशादी, व्यवहार लग रहा है। ऐसी दशामें नये नये वस्त्र और बहुमूल्य आभूषण कहांसे बनवाये जा सकते हैं ! आज उस दुष्टनी (स्त्री) ने घरमें टंटा मचा रक्खा है। क्या करूं ! मेरी तो नाकों दम हो रही है।

इतनेमें सामनेसे मूछोंपर हाथ फेरते हुवे मौजीलाल भी आ पहुंचे।

मौजीलाल–क्यों सिंघईजी (टेकचंद) साहेब ! क्या हो रहा है ? जुहार।

टेकचन्द–भाई कुछ तो नहीं, बैठे हैं। और अपने कर्मको रो रहे हैं।

मौजी०-अरे यार! कर्मको रोना क्या? उसे तो खो ही देना अच्छा है। कहो बालबच्चे कहां है? (भीतर देखकर) भावीजी, ए भावीजी, कुछ उत्तर नहीं, पुनः भावीजी! अरे खिलाना पिलाना मत, सुखा ही बोल लेवो। कहो व्रतों (पर्यूषण) की क्या क्या तैयारी हुई है? हैं कुछ माल मशाले?

दूलारीबहू-(उदास हो कर) यहां काहेके माल मशाले हैं? और काहेकी तैयारीयां हैं? लालाजी यही कहे तो बुरी हूं, जो बाजारवाले (जयचन्द) न आते तो भयभंजन तो उठ ही चुका था, भगवान बेटाबेटियां न देता, तो ही अच्छा था। अपना मुंह लिये घरमें पड़ी रहती, पर क्या करूं इन बच्चोंके पीछे चारमें आना जाना पड़ता है। सो भला तुम्हीं कहो कि ऐसी ही डांकिनसी कैसे जाऊं आऊं? व्रतोंमें दस लुगाई यहां वहांकी आवेंगी। पहिरें ओढ़ेंगी, तब क्या मैं उनमें शोभा पाऊंगी? औरोंके घरमें नयी नयी ओढ़नी आदि आवें, नये नये गहने बनें, तब मेरे पुराने कपड़े व गहने भी न सुधरें। भली है लाला लुगाइयोंके कर्म ही ऐसे है, कहकर फिर आंसू बहाने लगी।

मौजीलाल-(बाहर आकर) भाई टेकचन्द, तुम सचमुच टेकचन्द ही रहे। और जबसे जयचन्दकी संगति की है तबसे तो निरे ऊंटके पाद बन रहे हो। यदि लुगाई (स्त्री) लड़के अच्छे नहीं लगते हैं। उन्हें पालन नहीं कर सकते हो। तो बनमें जाकर ध्यान करो। व्यर्थ किसीको तरसाना अच्छा नहीं है। नहीं तो मुझे हुक्म देवो मैं लिवा जाऊं। भावीजीको साड़ी और गहनेसे पूर दूंगा। (हंसकर) क्यों?

टेकचन्द—बस भाई, तुझे तो हंसी ही हंसी सूझती है। किसीकी बात तो कुछ समझता नहीं, रखी है बापकी कमाई, सो खाना और गपशप उड़ाना, कुछ कमाते तो खबर पड़ती।

मौजीलाल-यह भी तो पुण्यका उदय है। कि विना कमाई खाना और मौज उड़ाना, पर भाई, देखो बातोंमें काम न चलेगा। भावीके लिये नई पूनाकी साडी और सरजेवाली नथनी लेना ही पडेगी, नहीं तो पंचमीका उपवास आजहीसे आरंभ है। और अकेली भावी ही उपवास न करेंगी, तुम्हें भी करना पड़ेगा। कारण अन्नपूर्णा (भावी) जी उपवास करेंगी। तब माताजी भी करेंगी। और बच्चे गांयगे गीत (रोंयगे), तब आपको भी ढोल बजानेका अवसर आयगा। बन्दा खड़ा मौज देखेगा। हां, भावीजी ठीक, तुम यदि अबल होवो जो साड़ीन मंगा लो। हमारे यहां गोपीकी माने, खड़े२ मंगा ली थी।

टेकचन्द-तू आ कहांसे गया? चल यहांसे। व्यर्थ यहांकी वहां जुझाना।

मौजी०-क्या मुझे भी बुलाना पड़ता है? यदि ऐसा न करें तो भला मौज ही क्या? (अहा हा हा अहा हा हा अहा हा हा!)

टेकचन्द-(कुछ नाराज होकर) बाद क्या, अच्छे लगते हो?

मौजी०-तो और अच्छे कैसे लगते हैं (हंस कर)।

जयचन्द—(कुछ हंसकर) सुनो भाई मौजीलालजी, मनुष्य अपने सद्गुणोंसे, विद्यासे, बुद्धिसे, चतुराईसे और सुआचरण-सुशीलतादिसे अच्छा लगता है।

मौजी०—जी महाराज, यह तो ठीक, परंतु जिसमें विद्या, बुद्धि, चतुराई सुशीलतादि

गुण न हों वह काहेसे अच्छा लगता है ?

जयचन्द—बिना सद्‌गुण कोई भी अच्छा नहीं लगता है न आदर पाता है।

मौजी०—नहीं भाई, आप भूलते हो ! वह (मूर्ख) अच्छे अच्छे वस्त्राभूषण पहिरनेसे, अंजन मंजन लगानेसे, शरीरको सजानेसे, गुल गपाड़े मारनेसे, ऊटपटांग बोलनेसे, शोभा पाता है।

जयचन्द—(जोरसे हंसकर) अहा हा हा हा अहा हा हा हा ! ठीक कहा भाई ठीक कहा ! निसन्देह मैं भूल गया था। यथार्थमें मूर्ख मनुष्यकी वस्त्राभूषण आदि शरीरकी सजावट व ऊपरी सजधजसे अपने आपको बड़े मानते हैं।

मौजी०—तब महाराज, हमारी भावी (मोतीकी मां) क्या पढ़ी लिखी सुशीला बुद्धिवान, चतुर गृहणी है जो वह वस्त्रभूषण न मांगे ?

जयचन्द—तब क्या वह मूर्खा है ?

मौजी०—तब क्या पढ़ी लिखी है ? भला बताइये तो सिंघईजीने उसे कब पढ़ाया है ? और उसका बाप तो काला अक्षर भैंस बराबर ही जानता है। यदि वह पढ़ी लिखी होती, तो जैसे सिंघईजी लेन देन, घाटे, नफे, आदिकी बातें करके उसे भूलाया करते हैं। तब वह तुरंत ही वहीखाता उठाकर हिसाब देखकर सच झूठकी परीक्षा न कर लेती ? समाचारपत्रोंको पढ़कर समाजकी वर्तमान अवस्थाका विचार न कर लेती ! अपने अपने छोटेछोटे शिशुवोंको वस्त्राभूषणोंसे सजानेकी अपेक्षा, विद्याभूषणसे अलंकृत न कर देती ? पुराणोंको पढ़कर सती द्रौपदी, सीता, मैना, चेलना, ब्राह्मी, सुन्दरी, अंजनी, आदिके चरित्र पढ़ कर अपने आपको उक्त सतियोंके सद्‌गुणोंसे भूषित न कर लेती ? सुशीला होती तो सिंघईजीको भयभंजन क्यों उठाना पड़ता, वह पतिकी इच्छा विरुद्ध क्यों किसी बातकी हठ करती, और सासुको काम करती देखकर भी रिसा कर क्यों बैठती ? इत्यादि बातोंसे ही तो विदित होता है कि भावीजी सद्‌गुणशून्य है। तब वे वस्त्राभूषणका हठ क्यों ना करें ? अवश्य ही करना चाहिये।

वाह वाह! भावीजी ठीक किया! पढ़े लिखोंको विद्याका मान और शृंगार, अपनेको तो वस्त्राभूषणों और गपशप, चटकमटक, अंजन, मंजन, आदिहीका बल है। समझे महाराज जयचन्दजी, हमारी भावीजी क्या कुछ कम समझदार है ? यदि आज साड़ी व नथनी न आई तो समझ लो निराहार उपवास ही होगा। भला भावीजी, बात रख लेना।

दुलारीबहू—मौजीलालकी ऐसी हास्ययुक्त कटाक्ष सुनकर बहुत शर्मा गयी और उसी दिनसे उसने हठ करना छोड़ दिया, इतना ही नहीं वह टेकचन्दजीसे अपने पढ़ानेका आग्रह करने लगी। जो कुछ भी हो मौजीलालकी इस समयकी मौज काम आ गयी। मौजीलाल भी इस प्रकारसे बातें बनाकर रस्ते पड़े। यहां जयचन्द और टेकचन्दकी इस प्रकार बातचीत होने लगी।

टेकचन्द—भाई जयचन्द, मौजीलाल कुछ भी अवसर नहीं देखते, केवल हंसीदिल्लगीही उन्हें दिखा करती है।

जयचन्द—भाई यह तो ठीक है। परन्तु कभी कभी ऐसी ही बातोंमें शिक्षा लग जाती

है। आजकी बातका प्रभाव भावीके ऊपर बहुत अच्छा पड़ेगा। क्योंकि मौजीलालने मिलकर भीतरी मार मारी है। भिन्न भिन्न प्रकृतिके जीवोंको शिक्षा भी भिन्न भिन्न प्रकारसे दी जाती है। आप जानते हैं आजकल क्यों उपदेशकोंके उपदेशोंका प्रभाव लोगों पर नहीं पड़ता है? बड़ी २ सभाओंमें लम्बी २ स्पीचोंका कुछ भी फल नहीं होता, अनेक युक्तिपूर्ण उपदेश और सत्य उपदेश भी निष्फल जाते हैं इतना ही नहीं, परंतु उपदेशदाताओंकी अनभिज्ञतासे सत्य धर्मकी भी हसी उड़ जाती है। लोगोंपर कभी२ उसका उल्टाही प्रभाव पड़ जाता है। जिससे वे उपदेशकका उपकार माननेके बदले उल्टे उनके तीव्र द्वेषी (शत्रु) बन बैठते हैं। और फिर यथातथा उनकी हंसी उड़ाकर अपमान करनेका प्रयत्न भी कर डालते हैं। इसका कारण यदि विचारा जाय, तो उपदेशकोंकी अनभिज्ञता ही है। उपदेशकका कर्तव्य है, कि प्रथम पात्रकी प्रकृति देखे, फिर क्षेत्र व कालकी आवश्यकताको देखे, तब अपने उद्देश्यको छोड़कर तदनुकूल उपदेश देवे, जैसा कि पूर्वकालमें हमारे ऋषि मुनि करते थे।

देखिये, केवल कागका मांस छुड़ाकर ही सम्पूर्ण मांसका त्यागी बनाकर उत्तम गतिको पहुंचाया था। पत्थरको। छुड़ाते हुवे सर्वथा आरंभत्यागी बनाया था इत्यादि। इसी प्रकार भाई साहेब, अवसर और पात्र व क्षेत्र देखकर उपदेश देना उचित है। इंग्रेजीमें कहावत् है-Don't throw your pearls before swine (कुपात्रको उपदेश देना व्यर्थ है)। मौजीलालकी ऐसी ही बातोंमें लोगोंका मन लग जाता है। और वे कुछ मान भी लेते हैं। आपकी कथामें तो लोग ऊंघ ऊंघके गिरते हैं। सिवाय दो चार बुड्ढे-ढुड्ढोंके भला कोई बाल या युवक भी बैठते हैं? और तो क्या भावीजी जो आपके आधीन हैं उन्हें भी आप नहीं समझा सकते तो दूसरोंकी क्या बात है? भाई साहेब, भयभंजनसे काम नहीं चलता है। मान लो कि मारके भयसे कोई कदाचित् तुम्हारे कहनेके अनुसार चले भी, तो भी क्या उसके मनमेंसे वह बात निकल जावेगी? नहीं, नहीं, कभी नहीं। इसलिये मनुष्य मात्रका कर्तव्य है कि वह किसी भी बातको विना युक्ति, प्रमाण, व साक्षीके अथवा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावका विचार किये विना न कहे। नहीं तो व्यर्थ ही अनर्थ बढ़ जाता है कारण यह परीक्षाका समय है। अब अंध श्रद्धा करनेवाले पुरुष बहुत ही थोड़े होंगे जो शीघ्रही निःशेष होनेवाले हैं। आजकल बच्चे बच्चे तकके चित्तपर प्रश्नोंका जमाव जम रहा है। वे भी कौन, क्या, क्यों, किस प्रकार किस लिये, कब, इत्यादि पूछनेसे खाली न रहेंगे। केवल कह देने मात्र पर विश्वास न करेंगे। जबतक कि ठीक ठीक उनका समाधान न हो जावे।

टेकचन्द-भाई, आपने तो व्याख्यान दे डाला, कहीं पत्थर भी पिगलता है? समझदारके पास ही युक्ति प्रयुक्ति चलती है न कि मूर्खोंमें, वहां तो भयभंजनहीका काम है।

जयचन्द-नहीं, आप भूलते हो अच्छा आप स्वयम् ही आजकी बातका प्रभाव देखेंगे।

टेक०-देखा जायगा। हां परीक्षाकी बात कैसी? क्या प्रत्येक बात कौन? क्या? इत्यादि लगानेसे सिद्ध हो सकती है? क्या सभी बातोंमें कौन और क्या लगाना चाहिए? क्या पूर्वजोंकी बातोंपर विश्वास करना योग्य नहीं है? क्या शास्त्रोंमें भी कुछ अलीक (झूठ) लिखा है? यदि नहीं तो शंका (प्रश्न)की क्या आवश्यकता है?

जय०-भाई, जरा सावधान हो कर सुनो। परीक्षा विना जो कोई भी कार्य किया जाता है वह केवल विना नींव (बुनियाद=foundation) को दीवाल सरीखा होता है। आप एक पैसेकी हांडी भी तो विना परीक्षा नहीं खरीदते हैं इसलिये परीक्षा तो प्रधान ही है। प्रत्येक विषय कौन और क्या इत्यादि प्रश्नोंके द्वारा सिद्ध हो सकते हैं। और सभी विषयोंमें प्रायः कौन क्या लगाकर समझ लेना चाहिए। कारण पूर्व पुरुषों व शास्त्र पुराणादिकी बातें सर्वथा सत्य होनेपर भी विना परीक्षा (विना तर्क वितर्क द्वारा समझे) परम्परानुसार श्रद्धा कर लेनेसे प्रतिवादीके साम्हने लज्जित (निरुत्तर) होना पडता है। अपना श्रद्धान भी डगमगा जाता है। क्यों दूसरे आदमी केवल आप व आपके शास्त्रको प्रमाण न मानेगा वह युक्ति प्रमाण ही प्रमाण मानेगा। सिवाय इसके कई बातें ऐसी हैं। जो केवल समाजसे सम्बन्ध रखती हैं। परंतु पूर्वजोंने समयकी आवश्यकतानुसार उन्हें धार्मिक रीतिसे बताकर चलाई है जिससे लोग निःसंकोच उन बातोंको मान लेवें। और सामाजिक बातें (नियम) समयानुसार बदलते रहते हैं। तब ऐसी अवस्थामें यदि परीक्षा न करके केवल "बाबा वाक्यम् प्रमाणम्" करते जानेसे लोग उन सामाजिक प्राचीन बातों पर विवाद तो कर न सकेंगे और उन्हें धार्मिक समझकर शायमें धर्मको भी छोड बैठेंगे। ऐसी अवस्थामें परीक्षा करके धार्मिक विषयसे सामाजिक विषय भिन्न करके यह देखना चाहिये कि धार्मिक विषय तो सदा एकसे ही रहे हैं और रहेंगे भी, किन्तु जो सामाजिक विषय हैं वे आजकल हमारे अनुकूल पडते हैं या प्रतिकूल? यदि प्रतिकूल पडते हैं, तो धर्मके अविरुद्ध उन्हें अवश्य ही फेरफार करना चाहिए। हां, कितने ऐसे भी विषय मिलेंगे, कि जो न अनुकूल ही हैं, न प्रतिकूल ही, केवल किसी अवसरपर उचित समझकर, चलाये गये थे। तो ऐसे विषयोंपर विचार करके यदि वे निरर्थक हैं, तो बिलकुल ही उठा देना चाहिए। व्यर्थ ही समाजको बोझसे क्यों संतत करना चाहिये। इत्यादि२ बातोंका विचार विना परीक्षा व विना कौन क्या लगाये नहीं हो सकता है। इसलिये परीक्षा करना अत्यावश्यक है।

टेकच०-भाई ठीक है, यह तो मैंने माना कि परीक्षाप्रधानी होना आवश्यक है और धार्मिक तत्वोंके सिवाय सामाजिक बातोंमें फेरफार भी होना आवश्यक है। तथा उपदेश भी द्रव्य क्षेत्र काल भावसे भिन्न होकर तदनुकूल देने ही से लाभ हो सकता है। आपका कहना यथार्थ है कि आजकलके छोटे छोटे बच्चे भी बात बातमें कौन और क्या लगाते हैं। सभी जीवोंको एक ही व एक ही प्रकारसे उपदेश नहीं लगता है। निसंदेह आजकल शास्त्रसभाओंमें कभी कभी तो वक्ताजी स्वयम् मुंहसे वकृत्व, और कानों श्रोतृत्वका काम कर लेते हैं। या कोई बुड्ढा, बुढिया, व कोई परस्पर मिलनेकी इच्छासे दो एक स्त्रियां आ बैठती हैं। जो कि बैठते ही टुकरियापुराण (घर बाहरकी चर्चा) करने लगती हैं। श्रोता सुनते२ वृद्ध हो गये। परन्तु उन्हें त्रस व स्थावर तकका ज्ञान नहीं आया इत्यादि। तब भाई, हमको कौनसा उपाय करना चाहिए? ताकि लोगोंको उपदेश रुचिकर हो, धर्मकी ध्वजा फहराये। सदाचार, सद्विचारकी प्रवृत्ति हो यह महावीर भगवानका शासन सबको समानतामें लाभदायक होवे।

जयचन्द-भाई टेकचन्दजी, समय बहुत हुआ है। आज कुछ विशेष बातचीत नहीं होने

पाई तो भी आजकी वातोंमें कुछ कम लाभ भी नहीं हुवा है। विचार तो बहुत कुछ करना था परंतु धूप कड़ी हो रही है। यदि शामको टहलते हुवे घर तरफ आवो तो बैठकर कुछ चर्चा करेंगे। देव गुरु धर्मके प्रसादसे माताजी व सुशीलकुमारकी माताका चित्त भी अब इन वातोंमें लगने लगा है। वे व्यर्थकी वातें नहीं करती है। किन्तु जब मैं बैठता हूं तो अनेक प्रकारके प्रश्न करके **धर्मचर्चा** करती हैं। आज शामको कुछ पर्यूषणके विषयमें ही चर्चा होनेवाली थी। इसीकी सूचना देने मैं आया था परंतु यहां तो भयभजनकी कथा हो पड़ी। चलो, जो हुवा सो अच्छा हुवा। अच्छा, मैं अन्दर भावीजीको भी कह दूं और फिर जाता हूं। आप अवश्य ही उन्हें लेकर आइयेगा।

टेक०-मैं किसीका जिम्मा नहीं लेता हूं। पर मैं अवश्य आऊंगा।

जय०-कुछ चिंता नहीं। आप उनसे कहिये भी तो, वे कभी नाहीं न करेंगी, अवश्य आवेंगी।

टेक०-बहुत अच्छा, जुहारु।

जयचन्द भी जुहारु कहकर अन्दर गये और दुलारीवहूको पुकारकर बोले-भावीजी, शामको आप माताजी व बालबच्चोंको लिवाकर भाई साहेबके साथ अपने यहां पधारिये। आपकी देवरानी व माताने बहुत बहुत करके बुला भेजा है। मैं यथार्थमें इसी लिये आया था परंतु क्या कहूं? बाहर ही वातोंमें फस गया जिससे देरी हो गई। अच्छा आज्ञा हो तो मैं अब जाता हूं। जल्दी आइयो। कह कर चल दिया।

दीपचन्द परवार (नरसिंहपुर)।



All India Jain Eductional and Industrial Conference.

(भारतीय जैन शिक्षा समिति)

यह बात निश्चित ही है कि कोई जाति उस वक्त तक उन्नति नहीं कर सकती जब तक कि उसमें शिक्षाका प्रचार न हो जाय। और कौमका बच्चा२ विद्यारूपी देवीका पुजारी न बन जाय। विद्या प्रचारके लिये उपयोग करनेकी आवश्यकता है। साधारणतः तो सभी इसके इच्छुक हैं। परन्तु विचार यह करना है कि इसका प्रचार किस तरहसे हो। इस लिये एक ऐसी समितिकी आवश्यकता है कि जिसमें भारतके बङ्गाल, पंजाब, दक्खिन, राजपूताना, आदि सभी प्रान्तोंके जैन शिक्षित सम्मिलित होकर शिक्षाप्रणालीपर विचार करें। इस समितिके साथ२ इन्डस्ट्रीयल शिल्प शिक्षा-प्रचारिणी समिति भी हो। जिसमें भिन्न२ प्रकारकी शिल्प कलाओंके विषयमें विचार किया जावे। इस समितिमें सर्व जैन स्कूलोंके मास्टर बोर्डिङ्ग-हाउसोंके मैनेजर सुपरिन्टेन्डेन्ट जैन पाठशालाओंके अध्यापक कन्या पाठशालाओंकी मंत्रिणी और अध्यापिका गुरुकुलोंके अधिष्ठाता व प्रधान अध्यापक और अन्य संस्थाओंके कार्य्यकर्ता सम्मिलित हों। पंडितगण धर्म्म और संस्कृत शिक्षापर विचार करें। अंग्रेजी स्कूलोंके मास्टर वा अन्य शिक्षाविभागके नेता साधारण वातोंपर विचार करें। स्त्री-

शिक्षाप्रचारिकासमिति स्त्री शिक्षापर अपने विचारोंको प्रगट करें। इस कान्फ्रेन्समें दिगम्बर श्वेताम्बर स्थानकवासी, तीनों संप्रदायोंके जैन सम्मिलित हों। और सब एकत्र होकर इस प्रकारका पठनक्रम (कोर्स) नियत करें जो तीनोंके लिये पृथक् २ हो। और साधारण बातोंमें एकसा हो। इस कामके वास्ते तीनों आम्नायोंकी तरफसे तीन मंत्री नियत होने चाहिए। जो कि अपने आम्नायकी आवश्यकताओंकी पूर्ति करके जिम्मेवार समझे जावें। ऐसा करनेसे आपसमें काम करनेकी शक्ति आयगी। पारस्परिक द्वेषभाव कम होगा। तीनों फिर्के एकताके सूत्रमें बंध जायगें यह ही महामन्डलका मुख्योद्देश है। अब हमको केवल जुबानी ही लपालपी नहीं करनी चाहिये। देखो अन्य जातियोंकी एजुकेशनल कान्फ्रेन्स मौजूद हैं। मुसलमानोंकी सिया सुन्नियोंकी संयुक्त कान्फ्रेन्सको देखो, कितने अल्प समयमें उसने उन्नति करली है।

जन साधारणकी सेवासे बढ़कर और कोई पुन्यका कार्य्य नहीं है। इस लिये आओ, प्रत्येकको शिक्षित बनानेकी कोशिश करें। जिससे देश अकाल और दरिद्रसे मुक्त हो। अगर हम अभीसे कोशिश करें तो दिसम्बर सन् १९१५ ई० एक आल इन्डिया जैन एज्युकेशनल भारतीय जैन शिक्षा समिति और इन्डस्ट्रियल कान्फ्रेन्स बड़ी भारी स्कीमके साथ नजर आ सकती है। हम सब शिक्षित जैनियोंको अपने दिमागोंको इस ओर लगाकर इस इमारतको बहुत जल्दी खड़ीकर देना चाहिए। फिर देखियेगा इसकी छायामें सबको किस प्रकार आराम मिलता है।

यह कान्फ्रेन्स तमाम पाठशालाओंके कोर्स बनाया करेगी और उत्तम पुस्तकें नियत किया करेगी। सब पाठशालाओंको एक प्लेटफार्मपर होनेकी कोशिश करेगी, कन्याओंके वा अनाथोंके लिये दस्तकारी सिखानेका प्रबन्ध करेगी। यह कान्फ्रेन्स जैन विद्यार्थियोंको अन्य देशोंमें टेकनीकल और इंजनीयरिङ्गकी शिक्षाके लिये भेजा करेगी और भारतवर्षमें भी ऐसी संस्थाओंके खोलनेका प्रयत्न करेगी। समय २ पर शिक्षा संबन्धमें भी गवर्नमेन्टसे भी पत्र-व्यवहार करती रहेगी। अतः जितनी और जिस २ प्रकारकी संस्थायें हैं उनके कार्यकर्ताओंसे प्रार्थना है कि सब इस कान्फ्रेन्सके मेम्बर बनें और अपनी राय प्रगट करें। इस समय तीनों संप्रदायोंमेंसे मुख्य २ सभ्योंकी एक कमेटी होनी चाहिए। इस लिये महाशय! अपने शुभ नाम और रायकी सूचना मेरे पास भेजनेकी कृपा करें। वह जिनवाणी माताकी सच्ची सेवा करनेमें हिस्सा लेंगे। हरएक पंडित, अध्यापक, टीचर, अध्यापिका, स्कूल मास्टरको अति शीघ्र अपने नाम मेम्बरोंकी सूचीमें लिखाना चाहिए।

जातिसेवक—चम्पतलाल जैन, सी० टी०
मंत्री, शिक्षाविभाग भारत जैन महामंडल
अजिताश्रम, लखनऊ.



जैनियोंका कर्तव्य।



ऐ जैन जातिवीरो! अपनी दशा संवारो।
कैसे थे पूर्वमें तुम कैसे हो अब विचारो॥
था विश्व व्याप्य प्यारो विख्यात यश तुम्हारा।
क्यों लोप हो गया है कारण बताओ सारा॥
बुध वीर धीर स्वामी जिनमें थे जन्म पाते।
कि मूर्ख हीन बलके सर्वत्र हैं दिखाते॥
थे कोटिभट्ट स्वामी जिनमें प्रभावशाली।
मुख हैं मलीन उनके जाती रही है लाली॥
थे श्रेष्ठि लक्ष्मि धारी दीनार कोटि छप्पन।
सहस्रों हैं उनमें ऐसे जिनको मिले न कफ्फन॥
छात्राश्रम खुले थे मिलती थी वृत्ति उनको।
माँगेसे अब न मिलती अत्यन्त शोक हमको॥
परस्वार्थ सिद्ध करना जिनकी प्रधान शिक्षा।
निज स्वार्थमें रमे हैं वसुधैव जिनकी इच्छा॥
उपसर्ग गुरुजनोंपर वृथा जो कोऽपि करता।
हो कर एकत्र तत्क्षण सबसमाज हरता॥
थे अष्ट अंगधारी सम्यक्त ज्ञानशाली।
हा! हा! अब रहा है उनमें ठपाल खाली॥
कारण अनैकता है इक मुख्य दुःखदायक।
उत्थान कैसे होवे लड़ते हैं जब कि नायक॥
लोभादि शत्रु भारी उनको ग्रस रहे हैं।
होकर क्लीव मनमें आरतमें फंस रहे हैं॥
कर दो विकाश विद्या देकर महान् धनको
आ जाओ वीर बनके स्थिर बनोंके मनको॥
जातीका मान रख लो बांधो कमरको कसकर।
जो हैं हितू हमारे उनको छुटाओ बढ़कर॥
प्रसिद्ध नीति तुमरी गुरुजनकी रक्षा करना।
जीवन था मृत्यु तुल्यम् जिस बिन जगत्में सड़ना॥
अभिमान जाति रखकर निःकलंक वीर स्वामी।
रक्षणको धर्मवीरो कीनी थी प्राण हानी॥
हो कर सन्तति उनकी छी छीहो भीरु होते।
अपमान सहष्णु बनकर किं धैर्य धनको खोते॥
क्यों नाम पूर्वजोंका वृथा लजा रहे हो।
हंसना नहीं है रोना क्यों मुस्करा रहे हो॥
रखते हो वीर रस जो आओ कदम बढ़ाकर।
"सेठी" को तुम छुटाओ डंका बजा बजाकर॥
निर्दोष वोह पड़े हैं बन्दी तुम्हारे नायक।
सर्वस्व त्याग जो थे तुमको हितोंके दायक॥
नयनाग्र जो हमारे उनकी दशा हो ऐसी।
जीवनसे मृत्यु उत्तम सोचो यह बात कैसी॥
होवे न न्याय जबतक पीछे कदम न धरना।
मर्दोका कौल येही इज्जतपे सर रगड़ना॥
माताका दुग्ध तुमने रचंकभी जो पिया है।
कहते हैं मान किसको यदि ध्यान कर लिया है॥
जो सांच गुणके पालक उनको न आंच होती।
होवें जो लक्ष शत्रू होती न बात खोटी॥
दैवी सहाय मिलती पूरा है कार्य्य होता
है स्वर्गलब्धि उसको सत् पर जो प्राण खोता।
संनाह न्याय धारण कर करके आप आओ।
"सेठी" हितू हमारे जल्दी उन्हें बचाओ॥
कर्तव्य एक येही तुमको अभी है करना।
जारज क्लीव हो कर अच्छा नहीं है मरना॥
पुर्वज का नाम प्रकट करदो जगत्में प्यारो।
हैं सत्य वीर हम भी कहदो न डरको धारो॥
पशुवत् है तुच्छ जीवन विन कीर्ति जगमें मरना।
अतएव आओ बढ़ कर निज धर्म रक्षा करना॥
रहती है बात केवल जगमें न कोई रहता।
प्रभावना बढ़ेगी बच जायेगा जो नेता॥
है हस्तमें हमारे इज्जत बनानी अपनी।
कहता खड़ा है "मौजी" सुन लो हमारी कथनी॥

जैन जातिसेवक—
मौजीलाल—कायमगंज।

विज्ञापनकी नकल।

जो कि हिंदी और बंगलामें २००० छपाकर वितरण कर रहे हैं।

इसे भी वांच लिजिये।

अजैन विद्यार्थीयोंके लिये मासिकवृत्ति।

आगामी वर्ष सन् १९१६ की सालमें कलकत्ता संस्कृत यूनिवर्सिटीके पठनक्रममें दिगंबर जैनाचार्यकृत न्यायग्रंथोंमें परीक्षा देकर उत्तीर्ण होनेवाले अजैन विद्यार्थीयोंको नीचे लिखे नियमानुसार मासिकवृत्ति इंदोरनिवासी रायबहादुर सेठ हुकुमचंदजी दानवीर आदि महाशयोंकी तरफसे इस संस्थाकी मारफत मिलेगी। इसके सिवाय नीचे लिखे जैनन्याय ग्रंथोंमें परीक्षा देनेवाले विद्यार्थी संस्कृत यूनिवर्सिटीका फारम भरकर नीचे लिखे ठिकानेसे हमारे पास भेजने पर पाठ्यग्रंथ विना मूल्य डांक खर्च मात्रके वी. पी.से भेज दिये जांयगे। जिनको परीक्षा देना हो कलकत्तासे या हमारे पाससे परीक्षा फारम मँगाकर भरके शीघ्र ही हमारे पास नीचे लिखे ठिकाने पर भेज दें। परीक्षाका जो स्थान (केंद्र) अपने पास हो, वहींसे दे सकते हैं।

परीक्षाके ग्रंथ।

दि. जैनन्यायकी प्रथमापरीक्षामें।

प्रथम प्रश्नपत्र–न्यायदीपिका और परीक्षामुखसूत्रार्थ।

द्वितीयपत्र–संस्कृतसे मातृभाषामें और मातृभाषासे संस्कृतमें अनुवाद तथा पाठ्यविषयक कुछ रचना भी।

मासिकवृत्ति–प्रथमश्रेणिके प्रथमविद्यार्थीको ६) रु. मासिकके हि. कुल ७२)। दूसरे विद्यार्थीको ५) रु. हि. से ६०)। तीसरेको ४) रु. हि. से ४८)। चौथेको ३) रु. हि. से ३६)।

दि० जैनन्यायकी द्वितियापरीक्षामें।

प्रथमप्रश्नपत्र–आप्तपरीक्षा और प्रमेयरत्नमाला अथवा आप्तपरीक्षा और आप्तमीमांसा।

द्वितीयप्रश्नपत्र–संस्कृतसे मातृभाषामें और मातृभाषासे संस्कृतमें अनुवाद तथा पाठ्यविषयक रचना भी।

मासिकवृत्ति—प्रथमश्रेणीके प्रथम विद्यार्थीको १२) रु. मासिकके हि. से १४४)। दूसरे विद्यार्थीको १०) हि. से १२०) तथा तीसरे विद्यार्थीको ९६)।

दि० जैनन्यायतीर्थपरीक्षाकी प्रथम श्रेणीमें प्रथम पास होनेवालेको एक मुस्त ५००)।

यह इनाम कलकत्ताके विद्यार्थियोंको नहिं दिया जायगा।

न्यायतीर्थके ग्रंथोंका व्यौरा।

प्रथमप्रश्नपत्र—अष्टसहस्री (विद्यानन्दिस्वामि विरचिता)।

द्वितीयप्रश्नपत्र–प्रमेयकमलमार्तण्ड पूर्वार्द्ध अथवा श्लोकवार्तिक पूर्वार्द्ध।

तृतीयप्रश्नपत्र–प्रमेयकमलमार्तण्ड उत्तरार्द्ध अथवा श्लोकवार्तिक उत्तरार्द्ध।

चतुर्थप्रश्नपत्र–मौखिकपरीक्षा (ग्रन्थव्याख्यामात्रजिज्ञासा)।

प्रार्थी–पन्नालाल जैन, जनरल सेक्रेटरी,
भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्था
पोष्ट–बनारस सिटी।



धार्मिक उन्नति.

ગુજરાતના વીસા મેવાડા ભાઇઓએ આગળ ભરેલું એક સ્તુત્ય પગલું.

આજના જમાનામાં ધાર્મિક શિક્ષણની ઘણી જરૂર છે એમ સર્વ કોઇ કબુલ કર્યા વગર રહેશે નહિ. પહેલાં જ્યારે આ દેશમાં હિંદુઓનું અથવા જૈન રાજાઓનું રાજ્ય ચાલતું હતું, હજારો મુનિઓના સંઘ દેશેદેશ વિહાર કરી ધર્મોપદેશ કરતા હતા તે વખતે ધાર્મિક કેળવણી લેવા ગૃહસ્થોને કોઈ ખાસ ઉપાય યોજવાની જરૂર જણાતી નહોતી. વળી છાપખાનાં નહોતાં, કાગળો નહોતા તે સમયે શાસ્ત્રજ્ઞાન મેળવવું ઘણુંજ દુર્લભ થઈ પડતું. આજના જમાનામાં મુનિઓનો અભાવ થવાથી સાધુ—ધર્મોપદેશકો ઓછા હોવાથી, શ્રાવકોની ધર્મ પ્રત્યેની રૂચી ઓછી થવાથી કયો ધર્મપ્રેમી એમ કહેશે કે ધાર્મિક શિક્ષણની જરૂર નથી. શાસ્ત્રો છપાવવાનો દુરાગ્રહ ઓછો થવાથી ઘણાં પુસ્તકો જુજ કિંમતે સર્વ કોઇને મળી શકે છે તો કયો ડાહ્યો પુરૂષ ધર્મજ્ઞાનથી વિમુખ રહેવા ઇચ્છા કરશે?

અંગ્રેજી ભાષા તથા તે દેશના આચાર-વિચાર શીખવાની સાથે સ્વધર્મજ્ઞાન રહિત રહેવાથી શું એકદેશીય કેળવણી લીધી એમ નહિં કહેવાય? એમ થવાથી શું ખરૂં જૈનત્વ દિવસે દિવસે લોપ નહિં થઇ જાય? માટે દીર્ઘદૃષ્ટિથી વિચાર કરતાં માલુમ પડે છે કે આજના જમાનામાં નાના છોકરાઓમાં જેમ બને તેમ ધાર્મિક શિક્ષણ વધારે ફેલાય, તેવા ઉપાય યોજવાની સવિશેષ જરૂર છે. સ્વધર્મની માહીતિ મળ્યા પછી ભલે ને ગમે તે વાંચે, ગમે ત્યાં ધંધાર્થે ફરે, પણ તેની શ્રદ્ધા ઓછી થવાનો સંભવ રહેશે નહિં.

ઉપરોક્ત હેતુ પાર પાડવા ગત વૈશાખ માસમાં સોજીત્રામાં ગુજરાતના વીસા મેવાડા જ્ઞાતિના સંમેલન વખતે જે પગલું ભરવામાં આવ્યું છે તે ઘણુંજ પ્રશંસનીય છે. આ ઉત્તમ કાર્યના આગેવાન ભટ્ટારક શ્રી સુરેંદ્રકીર્તિજી છે. તેઓશ્રીની આગેવાની નીચે એક જુજ પણ તાત્કાલીક ફંડ કરવામાં આવ્યું હતું. તે વખતે આખી મેવાડા જ્ઞાતિમાંના જે વિદ્યાર્થીએ એ **ધાર્મિક પરીક્ષા** આપવા ઇચ્છા બતાવી હતી તેવા પાંત્રીસેક વિદ્યાર્થીઓની તેઓશ્રીએ **પરીક્ષા** લીધી હતી. તેમાં ઉત્તીર્ણ થનારાઓને આ ફંડમાંથી પારિતોષિક અપાયા હતાં. આગામી વર્ષોમાં આ નિયમાનુસાર ફંડ વધારી નિયમિત રીતે પરીક્ષા લેવામાં આવે અથવા વિષયવાર નિબંધ લખાવવામાં આવે તો ઉછરતા જુવાનીઆઓમાં ધર્મની સારી રૂચિ ઉત્પન્ન થાય.

શ્વેતાંબર જ્ઞાતિમાં **હરીફાઇની પરીક્ષા** લેવાય છે તેમાં એકથી હજાર રૂપીઆ સુધીનાં ઇનામો હોય છે. મોટા મોટા શહેરોમાં દર વર્ષે સવાલપત્રો મોકલાવી પરીક્ષા લેવામાં આવે છે, તેવીજ રીતે સનાતન ધર્મ તરફથી આવી હરીફાઇની પરીક્ષા દરવર્ષે શહેરોમાં લેવાયછે. હાલમાં બનારસમાં ભારતીય જૈન-સિદ્ધાંત પ્રકાશિની સંસ્થા તરફથી અજૈનમાં આપણા ધર્મનું જ્ઞાન ફેલાવવા, અમુક ગ્રંથમાં પાસ થનાર વિદ્યાર્થીને ઇનામ તથા સ્કોલરશીપ આપવાનું શરૂ થયું છે.

આ બધી સંસ્થાઓ તો અજૈનમાં આપણા ધર્મનું જ્ઞાન ફેલાવવા પ્રયત્ન કરી રહી છે, પણ આપણા ગુજરાત પ્રાંતમાં તો પહેલવહેલું આવું પગલું હમણાંજ ભરવાની જરૂર જણાઈ છે તે કેટલું સખેદાશ્ચર્ય છે! આ કાર્યની કદર જો સુજ્ઞ ધર્મપ્રેમી બંધુઓ બરાબર કરી નાણાં અને બુદ્ધિથી મદદ કરશે તો ઘણોજ લાભ થવા સંભવ છે.

ધર્મગુરૂઓની પહેલી ફરજ એ છે કે શ્રાવકોને ધર્મોપદેશ કરી જૈન ધર્મની પ્રભાવના વધારવી. परोपकाराय सतां विभूतयः આવું બધા જાણતા છતાં અત્યાર સુધીમાં આપણામાં આ માર્ગ કોઇએ ગ્રહણ કર્યો હોય તો તે મર્હુમ દાનવીર શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદજી હતા અને હાલ આવી ઇનામી યોજના શરૂ કરવાનો પ્રયાસ નવીન ભટ્ટારકજી સુરેંદ્રકીર્ત્તિજીએ કર્યો છે તે આદરણીય છે, તો આ ઇનામી સંસ્થા સાથે તેઓશ્રી પોતાનું નામ જોડી એક સારી **સ્થાયી રકમ** પોતેજ જુદી કાઢે ! તો શ્રાવકોના પૈસાનો ઉત્તમોત્તમ ઉપયોગ થયો કહેવાશે અને બીજાઓને અનુકરણીય થઇ પડશે ! तथास्तु !

એક વીસા મેવાડા જ્ઞાતિ શુભેચ્છક.

નોટ—દરેક જ્ઞાતિમાં આવા ઇનામ ફંડો સ્થપાવાની જરૂર છે કે જેથી જ્ઞાતિના વિદ્યાર્થીઓને વખતોવખત ઇનામો વહેંચી શકવાથી વિદ્યાર્થીઓનો ઉત્સાહ ધર્મશિક્ષણ લેવામાં વધારી શકાશે.

સંપાદક



इडरनी गादीना भट्टारकनो प्रतिज्ञापत्र अने मारुं निवेदन.

રાયદેશની અને વાગડ પ્રાંતની સમસ્ત પંચના બંધુઓ ! આપણું કોઇપણ ધર્મકાર્ય ભટ્ટારકગુરૂ વગર ચાલી શકતું નથી, એ કારણથી આપ લોકોએ ઇડરની ગાદી ઉપર કોઇ એવા યોગ્ય વિદ્વાનને ગુરૂ બનાવવાનો વિચાર કર્યો કે જે તમારા દેશમાં ધર્મવિદ્યાનો પ્રચાર કરી તમોને ધર્મમાર્ગમાં પ્રવર્તાવે, પરંતુ આપને યોગ્ય વિદ્વાન ન મળવાથી આપે મને લખેલું કે કોઇ વિદ્વાન ગાદીને માટે શોધી આપો, ત્યારે મોતીલાલ બ્રહ્મચારીએ બનારસના ભેલુપુર જૈન મંદિરમાં મને વિનંતિ કરી કે જો મને આ કાર્ય માટે યોગ્ય ધારો, તો મને આજ્ઞા આપો ! આપ જેમ કહેશો તે પ્રકારે હું ગાદીનો ઉદ્ધાર કરીને જૈનધર્મનો પ્રચાર કરીશ. ત્યારે મેં કહ્યું કે જો તમે શાસ્ત્રોક્ત રીતિથી ધર્માચરણ કરીને નિયમ મુજબ કામ ચલાવો તો ગુજરાત વાગડ દેશ ઉપરાંત સમસ્ત દેશના શ્રાવકો અને ભટ્ટારકોને તમારા અનુયાયી બનાવી શકો, ત્યારે એમણે નીચે લખેલું પ્રતિજ્ઞાપત્ર મને લખી આપ્યું અને મંદિરજીમાં શ્રીજીની સામે હાથ જોડીને પ્રતિજ્ઞા કરી કે આ 'પ્રતિજ્ઞાપત્ર પ્રમાણેજ હું સર્વ કાર્ય કરીશ.

આ પછી મેં રાયદેશની પંચને એક કાગળ લખ્યો કે-"બ્રહ્મચારી મોતીલાલજી તૈયાર છે તેમને બોલવી પરીક્ષા કરીને પસંદ પડે તો ગાદીનું તીલક કરો." આથી પછી પંચે વધુ પરીક્ષા ન કરતાં તરતજ ગાદીનું તીલક કરી દીધું! હવે ગાદીએ બેસવા પછી ભટ્ટારકજીએ પોતાની પ્રતિજ્ઞા પ્રમાણે ચાલવાનું તો દૂર રહ્યું, પણ પહેલાંના કેટલાક ભટ્ટારકો કરતાં પણ વિશેષ વિરૂદ્ધ આચરણ ચલાવવા લાગ્યા, ત્યારે અનેક ભાઈઓ મને દોષ દેવા લાગ્યા કે એમણે સારો વિદ્વાન નહિ શોધી આપ્યો. તો બંધુઓ, એમાં મારી શું કસુર છે ? મેં તો નીચે લખેલ પ્રતિજ્ઞાપત્ર લખાવીને એમને સૂચના માટે કરી હતી, જેથી હવે તો ભટ્ટારકજીનુંજ કર્તવ્ય છે કે તેમણે મંદિરજીમાં લીધેલી પ્રતિજ્ઞા પ્રમાણે ચાલવું અને તેમ ન ચાલે તો આપ રાયદેશની પંચને અધિકાર છે કે તેમને ગાદી ઉપરથી દૂર કરી બીજા વિદ્વાનને બેસાડી શકો. એ પ્રતિજ્ઞાપત્રની મૂળ નકલ અને તેનો ગુજરાતી સારાંશ નીચે મુજબ છે.-

भट्टारकजीनो प्रतिज्ञापत्र.

તા. ૨૪-૫-'૨.

શ્રીમાન પૂજ્ય ગુરૂજીની સેવામાં પતિજ્ઞાપત્ર.

હું પ્રતિજ્ઞા કરૂં છું કે ભટ્ટારકપદને પ્રાપ્ત કરીને નીચે લખેલાં સર્વે ધર્મકાર્યો કરીશ અર્થાત્ જાતિહિતેષી વિદ્વાનોનો સંસર્ગ પ્રાપ્ત કરીને સૌથી પ્રથમ તો હું એ ગાદીનો શાસ્ત્રભંડાર તથા સાગવાડા વગેરેના પ્રાચીન શાસ્ત્રભંડારોનો જીર્ણોદ્ધાર કરીને તેની રક્ષા તથા તેનો પ્રચાર કરવાને ખર્ચ પણ કરીશ. તે પછી એ કાર્યની સાથે સાથે ગુજરાત, વાગડ, મેવાડ-પ્રાંતના જે જે ગામના જૈન ભાઇઓ ઇડરની ગાદીના છે તે સર્વે ગામોમાં એક એક કબાટ મુકીને તેમાં જૈનશાસ્ત્રો બિરાજમાન કરીશ અને એકેક પાઠશાળા સ્થાપના કરવાનો તેમજ કરાવવાનો પ્રયત્ન કરીશ. એ સિવાય સદાચારી, વિદ્વાન ઉપદેશકો દ્વારા તથા વર્તમાનપત્રો (માસિકપત્રો, પાક્ષિકપત્રો વગેરે) અને ગ્રંથમાળાઓ દ્વારા સર્વે સ્થળે ન ધર્મનો પ્રચાર કરીને જૈન ધર્મના મહત્વનો પ્રકાશ કરીશ.

જો હું ઉપર મુજબ સર્વે કાર્ય ન કરૂં અને ગાદીના ધર્મદ્રવ્યનો દુરૂપયોગપૂર્વક ધર્મવિરૂદ્ધ અને નીતિવિરૂદ્ધ કાર્યમાં વ્યય કરૂં તો, મને ત્રણ વખત ચેતવણી આપવા છતાં પણ જો હું ન સુધરૂં તો, આપણી પંડિત સભા અને ગચ્છદેશની

પંચ મારે માટે જે દંડવિધાન (ઠરાવ) **કરશે તે હું સહર્ષ સ્વીકારીશ** અને ઉપરોક્ત ધર્મકાર્ય યથાશક્તિ કરીશ.

આ **પ્રતિજ્ઞાપત્ર** મેં મારા કર્તવ્યની રક્ષાને માટે રાજીખુશીથી લખી આપ્યું છે તે મને કબુલ છે.

બ્રહ્મચારી મોતીલાલ.

હવે જ્યારે મારી પાસે ભટ્ટારકજીના વર્તન સંબંધી ફરિયાદો આવવા લાગી, ત્યારે મેં આ પ્રતિજ્ઞા પત્રની એક નકલ ભટ્ટારકજીના મુનિમ પાસે અને એક નકલ છઠરની પંચ ઉપર મોકલી, જેમાં લખ્યું હતું કે "જો ભટ્ટારકજી એ પ્રતિજ્ઞાપત્ર પ્રમાણે ન ચાલે, તો આપ તેમને ત્રણવાર ચેતવણી આપો અને તેથી પણ જો ન સુધારે તો તમે તેમને ગાદી ઉપરથી અલગ કરી શકો એમ છે."

પંચના સર્વે બંધુઓ ! આપે વિચારવું જોઇએ કે ભટ્ટારક એ શું ચીજ છે ? એમને ગાદી ઉપર બેસાડીને એમની આજ્ઞા પ્રમાણે આપણે ચાલવું જોઇએ કે આપણી આજ્ઞા પ્રમાણે ભટ્ટારકજીએ ચાલવું જોઇએ ? જો આપ વિચાર કરશો તો આપને જણાશે કે કાળદોષથી આપણને ધર્મમાર્ગનો ઉપદેશ આપવાવાળા પરમ નિર્ગ્રંથ ગુરૂ તો રહ્યા નહી, ત્યારે આપણને ધર્મમાર્ગમાં કોણ પ્રવર્તાવે, ત્યારે તે પરમ નિર્ગ્રંથગુરૂઓની જગ્યાએ યોગ્ય વિદ્વાનોની સ્થાપના કરીને ધર્મમાર્ગ ચલાવવો જોઇએ એટલે તેમને **પાંચ મહાવ્રત** ધારણ કરાવે અને તેઓ એક વસ્ત્રધારણપૂર્વક મુનિપદના વ્રતોને સાધન કરે અને આચાર્યપદનું કાર્ય કરીને પોતાના બ્રહ્મચારી શિષ્યોને તથા શ્રાવકોને મુનિ પ્રમાણે ઉપદેશ આપીને ધર્મમાર્ગમાં ચલાવતા રહે આ પ્રકારે **મુનિના આચરણ** કરતાં કરતાં જ્યારે પૂર્ણ વૈરાગ્ય પ્રાપ્ત થય, ત્યારે પરમ દિગંબરી દીક્ષા ધારણ કરી લે અર્થાત્ **ભટ્ટારકનું પદ મુનિનું પૂર્વ રૂપ છે, તે મુજબજ પ્રથમના ભટ્ટારકો વર્તતા હતા.** તેઓ ન તો પૈસા રાખતા અને **ન પાલખી** ઉપર ચઢતા હતા (કોઇ ગામની પંચ પાલખીમાં બેસાડી નગરપ્રવેશ કરાવતા તો તેનો ત્યાગ નહેતો) તેમજ રથ ઘોડા વગેરે પરિગ્રહ પણ રાખતા નહોતા, પણ પોતાના તથા શ્રાવકોના કલ્યાણને માટે શાસ્ત્રદાન લઇને શાસ્ત્રભંડારનો સંગ્રહ અવશ્ય કરતા હતા, પરંતુ કાળદોષથી આપણા લોકોએ તેમના અન્યાય આચરણો તરફ ન ખ્યાલ કરીને તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે હામાં હા મેળવીને તેમને પૈસા વગેરે આપવા માંડયા અને તેઓ પોતેનો અધિકાર ભૂલી ગયા! **મંદિર, આપણું, ગ્રંથો પણ આપણા અને ભટ્ટારકજીને ધન આપીએ છીએ તે** શાસ્ત્રસંગ્રહ, વિદ્યાપ્રચાર વગેરે માટે **આપણેજ આપીએ છીએ** વળી આપણેજ ભટ્ટારકજીને ગાદીપર બેસાડયા અને આપણને ધર્મમાર્ગે ચલાવી આપણાં પૈસાનો વ્યય ધાર્મિક ઉન્નતિમાં કરવાનો અધિકાર આપ્યો છે. **જો તેઓ આ સર્વે ધર્મકાર્ય ન કરે તો આપણને અધિકાર છે કે-આપણે** દિલ્હી, જૈપુર, ઇંદોર વગેરેની માફક ગાદી ઉપરથી અલગ કરીને કયાં તો બીજા યોગ્ય વિદ્વાનને બેસાડીએ, કયાં તો ગાદી ખાલીજ રાખીએ, સામાન્ય રીતે આ નિયમ પ્રચલિત છે.

પંચના ભાઇઓ ! જરા વિચાર તો કરો કે રાજાને રાજગાદી ઉપર આપણે અને આપણા પ્રતિનિધિ રાજમંત્રીગણજ બેસાડે છે. જો રાજા અન્યાય કરે, તો પ્રજા તેને રાજગાદીથી ઉઠાડી શકે છે, તો આ ભટ્ટારકજી તો આપણી આખી કોમને ધર્મમાર્ગે ચલાવવાવાળા ગુરૂની જગ્યાના અધિકારી છે. જો એઓ આપણા પ્રાચીન રીતરિવાજ મુજબ

ન ચાલે અને શાસ્ત્રાનુસાર અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય, વગેરે પાંચ મહાવ્રતોને ન પાળી અન્યાય માર્ગે ચાલે તો તમે તેમને અલગ કેમ ન કરી શકો? અવસ્ય કરી શકો. આ ભટ્ટારકજીએ તો પોતાનેહાથે પ્રતિજ્ઞાપત્ર લખીને મંદિરજીમાં પતિજ્ઞા કરીછે તે છતાં તેઓ એ પ્રતિજ્ઞા પ્રમાણે ન ચાલે, તો રાયદેશની પંચસભાને તેઓએજ કહેલું છે કે **મને ત્રણવાર ચેતાવીને ગમે તે દંડ કરી શકો**, તો આવી આજ્ઞા ભટ્ટારકજીની પોતાનીજ છે, તો આપ શા માટે ડરો છો ? **ભટ્ટારકજીના હાથમાં શું કંઈ રાજ્ય કે કંઈ લશ્કર છે ?** કે આપને કેદ કરશે ? રાયદેશના એક જૈની બાળકને પણ અધિકાર છે કે જો ભટ્ટારકજી **કોઇપણ કાર્ય શાસ્ત્રવિરૂદ્ધ, ધર્મવિરૂદ્ધ તેમજ લોકવિરૂદ્ધ કરે તો** તેમને કદિપણ ન માનવા તથા ભોજન ન આપવું જોઇએ.

આ સમયે ગુજરાત વાગડમાં **દેશકાળ સુજબ** ભટ્ટારકજીનું કર્તવ્ય **નીચે મુજબ** હોવું જોઇએ—

૧. **પાલખી**, ઘોડા, બળદ, ગાડી વગેરે કદપિણ સવારીના સાધન ન રાખવાં. કોઈ ગામની પંચ આદરથી પોતાના ગામની પાલખીમાં બેસાડીને લઈ જઈ શકે અથવા તો પગે ચાલીને જવું જોઇએ અને દરેક નાના મોટા ગામોમાં રહીને ઉપદેશ આપતા જવો જોઇએ. **શ્વેતાંબરી સાધુઓ** એજ પ્રમાણે કરે છે. તેઓ રેલ ગાડીમાં પણ બેસતા નથી.

૨. **ભેટ વગેરેમાં જે પૈસા મળે તેના અધિકારી પંચ મહાજન છે.** તેઓજ એક **કમીટી** નીમીને તેના મુનિમ મારફતે તેનો હિસાબ રાખે અને પગારદાર પંડિત અને બ્રહ્મચારીઓના ખર્ચ તથા ભ્રમણનો ખર્ચ થાય તે તેમાંથી કરીને **બાકીના પૈસા સરસ્વતિ ભંડારના જીર્ણોદ્ધારમાં** અને **ગ્રંથસંગ્રહમાં** લગાવવા તથા **ધર્મગ્રંથોનું ભાષાંતર** કરાવી, તેને છપાવીને પ્રકટ કરાવી **ધર્મનો પ્રચાર** કરવો.

૩. દરેક ગામમાં જૈન અજૈનોના પાંચ પણ છોકરાઓ ભણવાલાયક હોય તો ત્યાંની પંચને ઉપદેશ આપીને પાંચ રૂપ્યા સુધીના એક અધ્યાપકને રાખીને **પાઠશાલા** સ્થાપન કરવી અને એક **કબાટમાં** ભાષાના છાપેલા ગ્રંથો રાખી **જાહેર લાયબ્રેરી** ખોલવી, તથા ઈડર તેમજ **અમદાવાદમાં એક મોટી પાઠશાળા** સ્થાપન કરવી, કે જેમાં ગામોની પાઠશાળાઓના વિદ્યાર્થીઓને ઉંચા દરજ્જાનું શિક્ષણ આપી શકાય.

૪. જ્યાં સુધી બને ત્યાં સુધી પંચ મહાવ્રતમાં દૂષણ ન લગાવીને દરેક પ્રાણીને **ધર્મોપદેશ** આપતા રહેવું. પંચ કમીટીની સલાહથી સારા સારા **વિદ્વાનોનો સંમાગમ** કરીને **ધર્મવિદ્યાનો પ્રચાર** કરાવવો.

જો ક્રમાનુસાર આ પ્રકારનું કાર્ય ન કરે અને વિરૂદ્ધ આચરણ કરે તો એવા ભટ્ટારકોની આપણને જરૂર નથી. એ અપેક્ષાએ તો વિનાગુરૂએ રહેવુંજ ઠીક છે. મને આશા છે કે રાયદેશ તથા વાગડની પંચના ભાઇઓ મારી આ **પ્રાર્થના** ઉપર ધ્યાન આપીને ધર્મનું કાર્ય યથાયોગ્ય ચલાવશે.

આપનો હિતૈષી—

પન્નાલાલ બાકલીવાલ.

સદાજિત જૈનમંદિર—**બનારસસીટી.**

નોટ—આ લેખ પં. પન્નાલાલજી બાકલીવાલે **હિંદી** ભાષામાં લખી મોકલ્યો હતો અને તેનું **ગુજરાતી** ભાષાંતર કરીને પ્રકટ કરવાની અમને **ખાસ સૂચના** કરવાથી અમે તે પ્રકટ કર્યોછે, જે તરફ બારીકીથી લક્ષ આપવા અમો **ઇડર, રાયદેશ તથા વાગડની પંચને આગ્રહ કરીએ છીએ.**

સંપાદક.

प्रभावनानुं एक अंग.



પ્રિય વાચક !

જૈનધર્મનો મુખ્ય સિદ્ધાંત " **अहिंसा परमो धर्मः** " આજના આવા ન્યાયના જમાનામાં કેવી રીતે પળાય છે તે તરફ દષ્ટિ ફેરવીએ.

અહિંસાધર્મથી શારીરિક, માનસિક, અને તેની સાથે આત્મિકશક્તિનો વિકાશ અવશ્ય થાય છે. લોકોક્તિ "**અન્ન તેવો ઓડકાર**" મુજબ જ્યારે હિંસામયી ખોરાક શરીરમાં જાય છે, ત્યારે તે મુજબજ મનુષ્યની બુદ્ધિ થાય છે અને અહિંસામય આહારથી શુદ્ધ નિર્મળ બને છે,

બંધુઓ ! આ વર્ષનો **ચાતુર્માસ** આપણે જૈનો કેવી રીતે અહિંસાધર્મ પાળી દુનિયાને સિદ્ધ કરી બતાવીશું કે, અહિંસા ધર્મજ શ્રેષ્ઠ છે. ચાલુ ચાતુર્માસમાં દરેક જીવની એટલે કે, નાના મોટા દરેક **પ્રાણીની રક્ષા** સાથે આત્મરક્ષા પણ કરીશું. **આત્મરક્ષા** યાને આત્માને નિર્મળ કરવા માટે વ્રતનિયમથી, તેની હરકોઈ ચીજ—વસ્તુપરની અનુરક્તતા કમીકરાવી **આત્મધ્યાન**માં મશગુલ રહી આત્મસ્વરૂપ ઓળખવા પ્રયત્ન કરીશું. પર્યુષણ જેવા મહાન્ કલ્યાણકારી પર્વમાં સ્વધર્મી બંધુઓને અન્ય હિંસામયી ક્રિયાઓથી બચવાનો ઉપદેશ આપીશું અને જૈન ધર્મનો ઉદ્યોત ખરા રૂપમાંથાય, તેવા મહાન્ પ્રયત્નો કરીશું.

પર્યુષણ જેવા પર્વમાં પ્રથમ એ વાતપર ધ્યાન આપીશું કે, હાલમાં જે વડે **પ્રભાવના** થાય—મનાય છે, તેનાથી ફાયદો છે કે નુકશાન ? જો નુકશાન માલુમ પડતું હોય, તો તેને અટકાવવાનો ઉપાય યોજીશું. પ્રથમ **પતાસાની** પ્રભાવનાથી જે ઉન્નતિ મનાય છે તેનાથી ફાયદો તો છેજ નહિ બલ્કે હિંસા તો સહજ થઇ જવાની વકી છે કારણકે આજકાલ સર્વ ઠેકાણે "નિર્દયીય અને અપવિત્ર વસ્તુઓની બનેલી ખાંડનાં પતાસાં આપણા પવિત્ર તહેવારોમાં વપરાય એ શું બુદ્ધિને ભ્રષ્ટ કરનાર નથી ? અવશ્ય છેજ. માટે તેના બદલે જનસમાજને યથાયોગ્ય જ્ઞાન મળે એવાં **સાહિત્યોની પ્રભાવના—નાનાં મોટાં પુસ્તકોની પ્રભાવના** કરવી જોઇએ, અને એ સાધનો આજકાલ સઘળે સ્થળે, વિના પરિશ્રમે અને થોડા મૂલ્યે-કહો કે પતાસાં કરતાં પણ ઓછી કિંમતે મળી શકે તેમ છે, તો તેવાં પુસ્તકોની **લ્હેણી-પ્રભાવના** કરવી જોઇએ, જેથી પતાસાથી થતું નુકશાન અટકી ધર્મનો ઉદ્યોત થશે અને દરેક જીજ્ઞાસુને તેનો લાભ અવશ્ય મળશે.

બંધુઓ ! વિચારશો કે **પુસ્તકો** આ **જમાનાના દેવો** છે અને **તે દેવોજ આપણા ધર્મના ઉદ્યોતકારી થાય** છે, માટે અવશ્ય આ બાબતમાં ધ્યાન આપી પુસ્તકોની પ્રભાવના કરવાનો આ ચાતુર્માસથી અરે આજથીજ નિયમ કરો અને **ધર્મના સિદ્ધાંતનાં પુસ્તકો વિના મૂલ્યે સ્વધર્મી બંધુઓમાં ફેલાવો.** તેમાં જે કોઇ યોગ્ય લાભ લેશે અને તેથી જે પુન્યબંધ થશે તેમાં તમે પણ હક્કદાર બનશો.

યાદ રહેવું જોઇએ કે, "**આજે નહિ કાલે, આજે નહિ કાલે**" એમ કરતાં કરતાં વર્ષો અને યુગો પણ ચાલ્યા જશે, છતાં તેમાં જો સુધારો અને ખરો રસ્તો ગ્રહણ નહીં કરીશું, તો આપણી ઉન્નતિ અને અક્ષય અમર આશાને ધૂળમાં મેળવીશું. જોઇએ છીએ કે, આ વર્ષના ચાતુર્માસમાં કેટલા મહાશયો આ અને બીજા યોગ્ય સુધારા કરે છે !

છોટાલાલ ચુનીલાલ સમઢીવાળા,
વડોદરા.

નોટ—આ લેખ ઉપર લક્ષ આપવા તથા આ વર્ષે પ્રભાવનામાં કરેલા સુધારાના સમાચાર અમોને લખી મોકલવા દરેક વાચકને ખાસ ભલામણ કરવામાં આવે છે.

સંપાદક.

नियमपरिवर्त्तन।



सज्जन महाशयो ! सनातनजैनग्रंथमालामें छपे हुये संस्कृत ग्रंथ जो २६।।।≈) के ग्रंथ १४) में और २६८।।।) की १० सीटें १००) रुपयों लुटाते थे सो अब किसीको भी इस न्योछावरसे नहिं दिये जांयगे। अब सबसे नीचें लिखे अनुसार न्योछावर ली जायगी। इसके सिवाय अब सनातनजैनग्रंथमालामें सब ग्रंथ प्रायः भाषाटीकासहित छपैंगे तथा पहिलेकी तरह अंक न निकाल कर सब ग्रंथ पूरेपूरे छपैंगे और चुन्नीलालजैनग्रंथमालामें भी केवल ट्रेक्टें ही न छपकर छोटे बडे सबतरहके ग्रंथ हिंदी वा बंगभाषामें छपते रहेंगे।

जो दानी महाशय इस धार्मिक संस्थामें एक मुस्त ५०) रुपये प्रदान करके इस संस्थाके दानी सभासद बनेंगे उनको अबसे छपनेवाले सब ग्रंथोंकी एक एक प्रति विना मूल्य पोष्टेज मात्र के वी. पी.से भेजते रहेंगे और जो महाशय १) रु. डिपाजिटमें जमा कराकर स्थायी (पक्के) ग्राहक बन जांयगे उनको सनातनजैनग्रंथमालामें छपे हुये ग्रंथ तौ पौणी न्योछावरसे और चुन्नीलाल-जैनग्रथमालामें छपे हुये ग्रंथ आधी न्योछावरसे वी. पी. द्वारा भेजते रहेंगे। जो महाशय एक रूपया देकर पक्के ग्राहकोंमें नाम न लिखावेंगे उनसे पूरी २ न्योछावर ली जायगी।

विक्रयार्थ पहिलेके छपे तैयार ग्रंथ–

आप्तपरीक्षासटीक व पत्रपरिक्षामूल २), समयप्राभृत दो संस्कृत टीका सहित ५) तत्त्वार्थराजवार्त्तिकजी पूर्वार्द्ध ५) रु. उत्तरार्द्ध ५) पूर्ण ९), आप्तमीमांसा-अकलंकभाष्य वसुनंदीटीकासहित और प्रमाणपरीक्षा २) शब्दार्णवचंद्रिका (सटीकजैनेंद्रव्याकरण) पूर्ण ५) उत्तरार्द्ध ३।।), शब्दानुशासनसटीक (शाकटायनव्याकरण) प्रथमखंड २), जैनेंद्रप्रक्रिया पूज्यपादगुणनंदिस्वामीकृत १।।), शाकटायनधातुपाठ।≈), जिनशतक–संस्कृत भाषा दो टीका सहित चित्र काव्य।।), धर्मरत्नोद्योत दोहाचोपईबंद १), धर्मप्रश्नोत्तर–(प्रश्नोत्तर श्रावकाचार) वचनिका २), महावीरचरित्र –), न्यायदीपिकामूल।) अजैन विद्वानों व विद्यार्थीयोंको सब ग्रंथ विनामूल्य भेजे जाते हैं।

आगामी तैयार होनेवाले ग्रंथ–

परीक्षामुख हिंदी और बंगानुवाद सहित।), न्यायदीपिकाबंगानुवादसहित, संस्कृतप्रवेशिनी ४ भाग हिंदी सहित, समयसारकलशे संस्कृत तथा भाषाटीकासहित, सुभाषितरत्नसंदोह भाषा-टीका सहित, क्षत्रचूडामणि टिप्पणी सहित।

जैनसमाजका दास–

पन्नालाल जैन, महामंत्री, भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्था।

ठि. मदागिनजैनमंदिर पोष्ट–बनारससिटी।

રક્ષા સાથે જ છે. જરૂર મંગાવો!

રક્ષા યાને આત્મા નિર્મળ કરવા માટે વ્રત નિયમથી, તેની હરકોઇ ચીજ-વસ્તુપરની અનુરક્તતા કમીકરાવી આત્મધ્યાનમાં મશગુલ રહી આત્મસ્વરૂપ ઓળખવા પ્રયત્ન કરીશું. પર્યુષણ જેવા મહાન્ કલ્યાણકારી પર્વમાં સ્વધર્મી બંધુઓને અન્ય હિંસામયી ક્રિયાઓથી બચવાનો ઉપદેશ આપીશું અને જૈન ધર્મનો ઉદ્યોત ખરા રૂપમાં થાય, તેવા મહાન્ પ્રયત્નો કરીશું.

પર્યુષણ જેવા પર્વમાં પ્રથમ એ વાતપર ધ્યાન આપીશું કે, હાલમાં જે વડે પ્રભાવના થાય—મનાય છે, તેનાથી ફાયદો છે કે નુકશાન? જો નુકશાન માલુમ પડતું હોય, તો તેને અટકાવવાનો ઉપાય યોજીશું. પ્રથમ પતાસાની પ્રભાવનાથી જે ઉન્નતિ મનાય છે તેનાથી ફાયદો તો છેજ નહિ બલ્કે હિંસા તો સહજ થઇ જવાની વકી છે કારણકે આજકાલ સર્વ ઠેકાણે "વિદેશીય અને અપવિત્ર

કાલે, વર્ષો અને જો સુધારો કરીશું, તો આપણી અક્ષય અમર આશાને પૂર્ણ થયેલી જોઇએ છીએ કે, આ વર્ષે નામનું પાકું. કેટલા મહાશયો આ અને સુધારા કરે છે।

છોટાલાલ ચુનીલાલ સમર્થ

નોટ—આ લેખ ઉપર લક્ષ આપી આ વર્ષે પ્રભાવનામાં કરેલા સુધારાના રીપોર્ટ અમોને લખી મોકલવા દરેક વાચકને ખાસ સૂચના કરવામાં આવે છે.

સંપાદક. મૂલચંદ કિસનદાસ કાપડીઆ.

इस वर्षके ग्राहकोंको हिन्दी-गुजराती भाषाकी ८ पुस्तकें उपहारमें मिलती हैं।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रकट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

The Digambar Jain.

युतं सुलेखैः विविधैश्चचित्रैः, दिगम्बरंजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुत्तमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ८ मुं. | वीर सं. २४४१. भाद्रपद. विक्र. सं. १९७१. | अंक-११ मो.



आपणो महान पर्व श्री दशलक्षणपर्व याने पर्युषणपर्व हाथवेंतमां आवी पहोंच्यो छे. जैनोमां आखा वर्षमां पवित्रमां पवित्र दिवसो जो कोई मनाता होय तो ते आ पर्युषणपर्वना दिवसोज छे तेम आ दिवसोमां आपणां अनेक व्रतो जेवां के त्रण चोवीसीव्रत, पुष्पांजली, आकाशपंचमी, निर्दोषसप्तमी, षोडशकारण दशलक्षण, सुगंधदशमी, रत्नत्रय, अनंतव्रत, वगेरे व्रतोना दिवसोज आवे छे, जेथी आ उत्तम दिवसोमां जेटलो समय धर्मध्यानमां व्यतीत थाय तेटलो थोडोज छे, एटले के आ अनेक व्रतोना दिवसोमां सर्वेए पोतपोतानी शक्ति मुजब व्रतो

पर्युषण पर्वमां शुं करशो ?

आदरी, दररोज सवारे सामायिक प्रतिक्रमण करी व्रतोनुं पूजन, अभिषेक, तत्वार्थ-भक्तामर पाठ [अर्थ सहित] थई तत्वार्थसूत्रना दशे अध्यायमांथी एकेक अध्यायनुं अर्थ साथे विवेचन पोते वांचवुं जोईए अथवा कोई पंडित पासे सर्वेने संभळाववुं जोईए तेमज जे दिवसे जे व्रत आवतुं होय तेनी कथा पण सर्व समक्ष संभळाववी जोईए. वळी आ उपरांत दररोज सांजे सर्वेए एकत्र मळी सामायिक, प्रतिक्रमण, दर्शन, आरती वगेरेथी परवारी जे कोई त्यागी, ब्रह्मचारी के पंडित होय तेमनी पासे अथवा ते कोई न होय तो कोई विद्वान श्रावक पासे शास्त्रसभा करावी तेमां प्रथम दररोज दशलक्षणधर्मना एकेक धर्मनुं विवेचन दाखला दलीलो साथे विस्तारथी कराववा उपरांत कोई पुराण अथवा चरित्र वंचाववुं जोईए. दशलक्षण धर्मनुं विवेचन करवा माटे गत वर्षमांज " दशलक्षणधर्म " नामे भेटनो ग्रंथ वेंचायलो छे, तेमांथी अथवा तो रत्नकरंड-श्रावकाचार वगेरेमांथी दश धर्मोनुं विवेचन मळी आवे छे. वळी आज अंकमां " दशल-

क्षणपर्व और मित्रोंका वार्तालाप " ए नामनो एक संवाद प्रकट करेलो छे ते वांचवा सर्वेने आग्रह करीए छीए.

ø ø ø ø

हवे एटलुं तो निश्चय छे के आ पर्वदिवसोमां शुद्ध द्रव्यज वापरवानी जरुर छे, छतां पण हजु आपणा भोळा भाईओ प्रमाद अने मोहने वश थई पूजन वगेरेमां अस्पर्श पदार्थोना भेळसेळवाळी विलायती भ्रष्ट खांड, अशुद्ध केशर, कपुर वगेरे जाणीजोईने वापरे छे ए शोचनीय छे. हवे तो स्वदेशी केशर, खांड, कपुर वगेरे शुद्ध अने विलायतीना भावेभाव मळी शके छे माटे पूजन, नैवेद्य, प्रभावना, स्वामीवत्सल वगेरेमां शुद्ध खांडनो अने पूजनमां शुद्ध केशर, कपुरनो उपयोग करवा सर्वे बंधुओने सूचवीए छीए. वळी आपणा भाईओ सारी रीते समजे छे के आ पर्वदिवसोमां जीवहिंसा जेटली न थाय तेटली काळजी राखवी जोईए तो प्रभावना माटे पतासां बनाववाने जीवहिंसानो खास व्यवहार थाय छे, तो आ प्रभावनाओमां पतासांने बदले बदाम, सोपारी, नाळियेर, सुकां फळो वगेरे अथवा तो बनी शके त्यां सुधी नानां नानां पुस्तको जेवां के सामायिकपाठ, दर्शनपाठ, पंचकल्याणकपाठ, बाळबोध जैनधर्म, नियमपोथी, आलोचनापाठ, प्रतिक्रमण, निर्वाणकांड, प्रातःस्मरण मंगलपाठ, जिनचतुर्विंशतिकाव्य वगेरे प्रभावना तरीके वेंचवानी आवश्यकता छे अने तेथीज धर्मनी खरी प्रभावना थइ शकशे

ø ø ø

हवे आ महान पर्वमां सर्वेए शीलव्रत पाळी जेटलो बनी शके तेटलो ओछो परिग्रह राखवो जोइए अने तेमां विशेष करीने चामडांनां बूट, पाकीट, लीलोत्री, गाडीघोडा वगेरेनो उपयोग न करी जेम बने तेम जीवहिंसा अटकाववा पूरती काळजी राखवानी आवश्यकता छे तथा दरेके पोतपोतानी शक्तिमुजब व्रत, अपवास, एकभुक्त, के दररोज चौवीहार तो करवाज जोइए तेमज आपणा अनेक भाइयो अने व्हेनो आ पर्वदिवसोमां पांच अथवा दश अपवास करे छे तेमने खास आग्रहपूर्वक सूचवीशुं के ए व्रतनी खुशालीनिमित्ते अमुक रकम शास्त्रदान अने विद्यादान माटे जुदी काढवी, अने तेमांनी विद्यादाननी रकम आपणी संस्थाओमां तथा शास्त्रदाननी रकम 'दिगंबर जैन' ऑफिस उपर मोकलवी जोइए. जो दश दश के पांच पांच अपवास करनार दरेक बंधु के व्हेन शास्त्रदान माटे पच्चीस पच्चीस रुपयाज मोकली आपे तो तेथी कंइ नहि तो बसो चारसो रुप्या एकत्र थइ शके अने तेमांथी एक मोटो शास्त्रीय ग्रंथ नवीन छपावी विनामूल्ये वहेंची शकाय, माटे आ बाबत उपर लक्ष आपवा व्रत आदरनार दरेक बंधुने सूचना करीए छीए. निमित्त वगर कार्य थतुंज नथी, माटे आ पर्वनिमित्ते तो शास्त्रदान-विद्यादाननी रकमो सुगम रीते एकठी करवाने दरेक मंदिरे एकेक धर्मादा पेटी मुकी राखवी अने तेमां दरेके कंई ने कंई नाणुं नांखवुं अने ते पेटी पुनेम उपर खोलीने तेमां एकठुं थयेलुं द्रव्य आपणी जाणीती संस्थाओने मोकलावी देवुं जोईए.

ø ø ø ø

वळी हाल एवो समय आवी पहोंच्यो छे के त्यागी, भट्टारक के ब्रह्मचारीनी संख्या अति न्यून होवाथी उपदेश माटे स्वयं अध्ययन

करवानी अनेक स्थळे जरुर पडे छे, जेथी दरेक मंदिरमां दरेक शास्त्रनी एकेक नकल होवानी जरुर छे माटे जे जे मंदिरोमां जे जे शास्त्रो न होय ते पोताना द्रव्यथी के पछी मंदिरना भंडारना द्रव्यथी मंगाववां जोइए; तेमज दरेक मंदिरना शास्त्रभंडारनुं सूचीपत्र तैयार करवुं जोईए. आवुं सूचीपत्र तैयार करवा माटे भादरवा सुद १४ नो दिवस घणोज सुगम छे, केमके ए दिने लगभग बधाज भाइओ अने ब्हेनो अपवास करे छे, जेथी ए बाबत मंदिरजीमां गमे तेटलो समय व्यतीत करी शकाशे.

वळी आ पर्वमां बनी शके तेटलो परिग्रह ओछो राखवा उपरांत रागद्वेष बिल्कुल नज करवो जोइए तथा जो कंइ लडाइ झघडो मंदिर के न्याति संबंधी होय तो ते उत्तमक्षमाभाव धारण करी पताबी नांखवो जोइए अने पर्व पूर्ण थया पछी वद १ने दिने सर्वेए मांहोमांहे उत्तमक्षमा मांगवी तथा बहारगाम रहेतां सगांस्नेहीओ उपर उत्तमक्षमावणीना पत्रो लखवा जोइए तेमज आ पर्व सर्वे स्थळे केवी रीते केटला उत्साहथी पळायो, कोणे कोणे केटलां व्रतो आदर्यां, केटली सभाओ थइ, शास्त्रोनुं सूचीपत्र करी नवीन शास्त्रो केटलां मंगाव्यां, शास्त्रदान विद्यादानमां केटलुं द्रव्य खर्चायुं, प्रभावनाओमां शुं शुं वेंचायुं तेमज शुं शुं कार्यो नवीन थयां ते सर्वे हकीकत आवता अंकमां प्रकट करवा माटे अमोने भादरवा वदी ५ सुधीमां मोकली आपवाने दरेक बंधुने सूचवीए छीए.

जैनकोमने जीवन अर्पण करनार पं. अर्जुनलाल शेठी बी. ए.ने वगर तपासे कंइ पण न्याय वगर जयपुर राज्ये कारागृहमां नांखी मुकवाने दोढ वर्ष थया

आ कलंक ते क्यारे टळशे?

आव्युं अने आखी जैन कोम तो शुं पण जैन अजैन सर्वे पत्रकारोए ए माटे उहापोह करी जयपुर राज्यने अनेक रीते आजीजीओ करी के भले, अर्जुनलाल अपराधी होय तो तेमने केद करो पण आम वगरन्याये, वगरतपासे कारागृहमां ! नांखी मूकवा अने एमने छोडवा संबंधीना आवेला सेंकडो तारो, पत्रो अने अर्जीओ तरफ 'आंख आडा कान' करवा अने जैन कोम उपर नाहकनुं कलंक उभुं राखवुं ए जयपुर राज्यने कोई पण प्रकारे योग्य नथी. हालमांज ता. ३ जी सप्टेंबरे नामदार जयपुर महाराजानी वर्षगांठ हती ते निमित्ते आ बंधुने छोडवा माटे जैन कोम तरफथी मुंबाई, सुरत, अमदावाद, अंकलेश्वर, वडोदरा, आमोद, वाकरोल, इन्दौर, अलाहबाद वगेरे अनेक स्थळेथी अनेक तारो अने पत्रो मोकलाया हता तथा ता. १ लीए आखा हिंदना जैनो तरफथी, इन्दौरथी जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी वगेरेनी ११००० सही साथेनी एक लंबाण अरजी मोकलवामां आवी छे, तेमां जूदा जूदा १७९ गामो अने शहेरोनी ३ थी ते ३७० सुधीनी सहीयो छे अने आ अरजीमां पण आ जन्मगांठ उपर शेठीजीने छोडवा माटे खास आग्रह करवामां आव्यो छे, पण आ आर्टिकल लखती वखते ता. ९ मी थई छे छतां पण ए संबंधी कंईपण समाचार जयपुर राज्य तरफथी प्रकट थया नथी ए अजब जेवुं छे ! हवे तो छेवटनो रस्तो एक डेप्युटेशन जयपुर महाराजा अने नामदार वाइसरोय पासे लई जवानो छे, जे माटे अग्रेसरोए ब्हीक अने आळस तजी दई आगळ पडी ए कार्य उपाडी लेवुं जोईए अने त्यारेज आ विना अपराधे दोढ दोढ वर्ष थतां कारागृहमां रीबाता धर्मबंधुनो छूटको थई शकशे.

દિ. જૈન પ્રાન્તિક સભા જાગશે કે ?

આપણી મુંબાઈ દિ. જૈન પ્રાન્તિક સભા, એના પ્રમુખ સ્વર્ગીય શેઠ માણેકચંદજીના વિયોગ પછી એના કાર્યો પૈકી જૈનમિત્ર-પરીક્ષાલય અને ઉપદેશક વિભાગ સિવાય બધુંજ ઠંડુંગાર થઈ ગયું છે અને અજબ જેવું છે કે આ આખું વર્ષ પસાર થવા આવ્યું પણ આ વર્ષે **વાર્ષિક બેઠક** સરખી પણ કોઇ સ્થળે થઈ નથી. નવીન પ્રમુખ શેઠ **હીરાચંદ નેમચંદ દોશી** (સોલાપુર), શેઠ માણેકચંદજીની માફક જો સભાની દેખરેખ રાખે, તોજ એ સભા જેવીને તેવી સ્થીતિ ભોગવી શકેજ; નહિ તો પછી ધીમે ધીમે બધાંજ કાર્યો ઠંડાંજ પડી જવાનાં. સૌથી મુખ્ય કાર્ય વાર્ષિક આધિવેશનનું છે માટે આ વર્ષ તો કોરૂ જ ગયું, પણ આવતે વર્ષે કાર્તકથી માહા માસ સુધીમાં ગમે તે સ્થળે વાર્ષિક બેઠક કરવા માટેની ગોઠવણ અત્યારથીજ નક્કી થવી જોઇએ અમારા ધારવા મુજબ મહુવા (સુરત), અમદાવાદ, કુંથલગીરી, આબુજી, કે ગીરનારજી આમાંથી કોઇ પણ સ્થળે અધિવેશન થવું જરૂરનું છે, અને એ માટે કાર્યકર્તાઓને કોશીશ કરવા અમો આગ્રહ કરીએ છીએ.

ø ø ø

જીવનચરિત્ર માટે તૈયારીઓ.

સ્વર્ગીય દાનવીર જૈનકુલભૂષણ શેઠ **માણેકચંદજીનું નામ અમર રાખવા માટે** આ પત્રે એક સ્મારક ફંડ કરેલું છે, જેમાંથી પ્રથમ આ દાનવીર પુણ્યાત્મા નરનું એક **બૃહત્ સચિત્ર જીવન ચરિત્ર** અતિ જૂજ કિંમતે બહાર પાડવામાં આવનાર છે, તે લખવાનું કાર્ય ઇંદોરમાં **બ્ર. શીતલપ્રસાદજીએ** જો કે શરૂ કર્યું છે તોપણ આ જીવનચરિત્ર માટે અનેક જાતની સામગ્રીની જરૂર છે, જે માટેની બાતમીઓ માટે અમોએ પુષ્કળ પત્રવ્યવહાર કર્યો, છતાં પણ અજબ જેવું છે કે માત્ર ગણત્રી ગ્રહસ્થો સિવાય કોઇએ પણ એ બાબતની કંઇ પણ માહીતિ કે સૂચનાઓ અમને લખી મોકલી નથી. માણેકચંદ શેઠ સાથે જેમને જેમને ગાઢ પરિચય હતો તેમણે પોતાના પરિચયનો ઇતિહાસ લખી મોકલવાની જરૂર છે તથા જે જે ગામ કે શહેરમાં માણેકચંદ શેઠ ગયા હોય, જ્યાં સભા, પાઠશાળા ખોલી હોય, ખોલાવી હોય, કંઈ મદદ કરી હોય કે ન્યાતિ ઝગડાઓ પતાવ્યા હોય કે ન્યાતિ સુધારાની સૂચનાઓ કરી હોય તેમજ જ્યાં જ્યાં આ શેઠને માનપત્રો, અભિવંદનપત્રો મળ્યાં હોય તે તેમજ આ શેઠના પરિચયથી જેમને જે જે લાભ થયો હોય એ સર્વે હકિકત આ બૃહત્ જીવનચરિત્રમાં દાખલ કરવામાં આવનાર છે માટે આવી હકિકતો ઘણીજ તાકીદે અમોને લખી જણાવવા માટે સર્વે જૈનબંધુઓને ખાસ આગ્રહપૂર્વક સૂચના કરીએ છીએ. વળી શેઠ માણેકચંદજીના કુટુંબીનું મૂળ વતન **ભીંડર** (મેવાડ)ના ઇતિહાસની જરૂર છે, માટે જો કોઈ બંધુ ભીંડરની ૧૦૦ વર્ષ પહેલાંની અને હાલની સ્થીતિનું ટૂંક વર્ણન લખી મોકલશે તો તે આભારપૂર્વક સ્વીકારવામાં આવશે.

ø ø ø

લડાઇનો ગભરાટ! નડશે કે ?

ગત વર્ષે તો આમંત્રણપત્રિકાઓ કાઢયા પછી આપણી **અમદાવાદ બોર્ડિંગ** અને **રતલામ બોર્ડિંગના** કાર્યકર્તાઓને **લડાઈનો ગભરાટ!!!** નડવાથી વાર્ષિક મેળાવડાઓ બંધ રાખ્યાં હતા, જેથી ગત વર્ષે આ મેળાવડાઓ જે દર વર્ષે થતાજ હતા તે થયા નહોતા, પણ આ વર્ષે તો આવો ગભરાટ!! કાર્યકર્તાઓને નહીજ નડશે અને આવતા માસમાં આ બંને બોર્ડિંગના વાર્ષિક મેળાવડાઓ ભરવા યોગ્ય તજવીજ કરશેજ એવી આપણે આશા રાખીશું.



श्री आदिपुराण ग्रन्थ-इस महान ग्रन्थ पं. लालारामजी द्वारा खुले पृष्ठोंमें पुष्ट कागजों पर छप रहा है जिसके ७२४ पृष्ठ तो प्रकट हो चुके थे और यह ७२५से १०२४ तकके पृष्ठ हैं। इन्दौरमें अब बहुत शीघ्रतासे छपता है। हरएक मंदिरजीमें इस महान ग्रन्थकी एक२ प्रत तो अवश्य होनी चाहिए। सैंकडों रुपये खर्च करते भी जो नहीं मिलता था वह अब १५) में पूर्ण ग्रन्थ मिल जायगा। ७०० पृष्ठके ५) के हिसाबसे मूल्य है और १०२४ पृष्ठ अभी १०) और पोस्टेजके वी. पी. से मिल सकते हैं। मंगानेका पता-पं. लालाराम जैन, मल्हारगंज-इन्दौर।

ब्रह्मचर्याश्रम वगेरेना फोटाओः-सोलापुर-निवासी जैन फोटोग्राफर श्रीयुत् हीराचंद अमुलख दोशी, यात्रा दर्म्यान पोतानी साथे फोटोग्राफीनो सामान लई गया हता अने घणी संस्थाओना जुदा जुदा फोटाओ लई आव्या हता जेमांना आ मोटा ८ फोटाओ छे, तेमां हस्तीनापुरना श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमना विद्यार्थीओ तथा कार्यकर्ता, हस्तीनापुर मंदिरनो विशाळ अने उत्तम कारीगरीनो दरवाजो, आश्रमनुं स्थान, तथा कृषिकर्म करता विद्यार्थीओनो देखाव ए ४ चित्रो तथा मथुरा महाविद्यालयना विद्यार्थीओना त्रण ग्रुपो तथा जैन अनाथाश्रम दिल्हीनो ग्रुप फोटो छे. आ फोटाओ साफ अने सारी गोठवणथी लेवायला छे, जे मोटी साईझना होवा छतां पण दरेक फोटो छुटक आठ आने मळी शके छे. मळवानुं स्थळ-एच. एम. दोशी फोटोग्राफर सोलापुर.

कुन्जविलास (जैनपदसंग्रह)-प्रकाशक-बाबू कुंजीलाल जैन-काशी। इसमें ५२ पृष्ठोंमें जैनपदोंका संग्रह है। छपाई अच्छी नहीं है और अशुद्धि भी है। मूल्य ०)≈ है परंतु 'दिगंबर जैन' के ग्राहकोंको ०)॥में भेजनेको लिखते है। मिलनेका पता-दुलीचंद तोलासाजी जैन--बडवाह (इन्दौर)

स्वामी दयानन्द और जैन धर्मः—रचयिता-पं. हंसराज शास्त्री। मूल्य आठ आना। मध्यस्थवादग्रंथमालाका यह १५० पृष्ठका प्रथम पुष्प है जिसमें आर्यसमाजी स्वामी दयानंद सरस्वतिने जैनधर्मपर जो जो आक्षेप और शंकाएं कीं थीं उन सबका बहुत अच्छी तरहसे खंडन सभ्य भाषामें दृष्टांतपूर्वक किया गया है। आर्यसमाज और जैनधर्मका मिलान करनेके लिए यह पुस्तक अवश्य वांचने योग्य है। मिलनेका पता-पं. हीरालाल शर्मा, मैनेजर आत्मानंद जैन सेन्ट्रल लायब्रेरी-अमृतसर (पंजाब)

जयाजीप्रतापः—ग्वालियरसे 'जयाजी प्रताप' नामका साप्ताहिक पत्र सरकारकी ओरसे प्रकट होता है जिसका यह शिक्षा-प्रचारका विशेष अंक है जिसमें ग्वालियर राज्यमें शिक्षाका प्रचार पहेले कैसा था और अब कितना हुआ है और कैसी २ शिक्षाकी आवश्यकता है, अन्य देशोंने उच्च शिक्षासे कैसी २ उन्नति की है इत्यादि विषयोंके अंग्रेजी और हिंदी भाषाके कोई ४१ विषयोंके लेख ७५ पृष्ठोंमें हैं। छपाई सफाई अच्छी है और ग्वालियरमें शिक्षाप्रचारके पथप्रदर्शक १

महाशयोंके चित्र भी हैं। यह पत्र कम मूल्यमें बहुत लाभ पहुंचाता है इसमें तो कुछ शंका नहीं है।

(१) गौतम पृच्छा (धर्मअधर्मका फल), (२) सुबुद्धसुशिक्षा रास, (३) श्री नाकोडा पार्श्वनाथः—यह तीनों पुस्तकें श्वे. यति इन्द्रविजयजीने लिखी है। हरएकका मूल्य एक आना है। मिलनेका पता-मन्नालाल चोपडा, राजेंद्राभ्युदय पुस्तकालय आफिस—रतलाम।

महेन्द्रकुमार नाटकः-जैपुर निवासी पं. अर्जुनलाल सेठी जब शिक्षाप्रचारक समीतिका कार्य तीन वर्ष पहिले बहुत उत्तमतासे चला रहे थे उसी वख्त आपने इस नामका एक धार्मिक नाटक रचा था और जैपुरमें विद्यार्थीओंद्वाराही तीस-चालीस हजार जनसमूह समक्ष खेलागया था जो जैन अजैन सभीको बहुत पसंद हुआ था। इस नाटकके एक पात्र अमीचन्द जैन रईस (विद्यार्थी) थे, उन्होंने ही यह नाटक 'प्रेममाला' प्रथम पुष्पके नामसे प्रकट किया है जिसमें पं. अर्जुनलालजी सेठी जो विना अपराध जैपुरकी जेलमें राज्यकी ओरसे रखे गये है और जिसकी कुछ सुनाई भी नहीं होती है उनका फोटो भी है। छपाई सफाई अच्छी, पृष्ठ ७२ और मूल्य आठ आना है। ऐसी पुस्तकका मूल्य तो इससे कम रखना उचित था। मिलनेका पता-अमीचन्द जैन रईस-गोहाना (रोहतक)।

श्रीमद् आत्मारामजीका संक्षिप्त जीवन और क्या ईश्वर जगत्का कर्ता हैः—यह दोनों पुस्तकें आत्मानंद जैन सभा-अंवाला शहरसे विनामूल्य मिलती हैं।

व्यापारी—जुही, कानपुरसे प्रकट होता हुआ नवीन हिन्दी मासिक। वर्ष १ अं. ४. वार्षिक मूल्य १।) इसमें व्यापार संबंधी अच्छे लेख रहते है।

सार्वजनिकहित भाग ५वां-लेखक-मुनि माणेक और प्रकाशक बाबू उमरावसिंहजी, देहली। मूल्य ०)= इसमें बनारसमें स्थापित होनेवाले हिन्दुविश्वविद्यालयमें धार्मिक अभ्यासक्रम कैसा रखना चाहिए, इस बारेमें ३८ विषयोंद्वारा सूचना की गई है जो हरएकको बांचनेयोग्य है। मिलनेका पता-लाला बिहारीलाल गिरिलाल जैनी-बिनौली (मेरठ)।

वर्धा बोर्डिंगका रिपोर्ट-वर्धामें स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणेकचंदजीकी प्रेरणासे और उन्हींके हस्तसे तीन वर्ष हुए दिगंबर जैन बोर्डिंगकी स्थापना हुई थी जिसकी यह नियमावली और दो वर्षका रिपोर्ट है जो देखनेसे विदित होता है कि इसमें ३२ विद्यार्थी पढ़ते हैं। फंड अंदाज.२००००)का है। १९७०-१९७१में १२५७।≈ का खर्च हुआ था, बोर्डिंगकी नवीन इमारतका काम शुरु है इसलिए ज्यादे रुपयोंकी बड़ी आवश्यकता है। मंत्री जयचंद श्रावणे अच्छे उत्साहसे कार्य करते है। वर्धाप्रांतके भाईओंकी फर्ज है कि इस बोर्डिंगका फंड कमसे कम ५००००) का बना देवें।

સુબોધક કથાપંચક—લેખક અને પ્રકાશક-શ્રીયુત્ ચુનીલાલ વર્ધમાન શાહ અમદાવાદ. આ પુસ્તકમાં જૈન સાહિત્યમાંથી સંશોધન કરીને રાજા શશીશેખર, મત્સ્યોદય કુમાર, અમરકુમાર, રાજા શુદ્ધિમતિ અને મંગળકળશ કુમાર, આ પાંચેની કથાઓ રસીલી અને બોધદાયક ભાષામાં રજુ કરી છે તેમજ દરેક કથાના અંતમાં રચા રૂનિ રત્નચ્દ્રજીએ સારાંશ અને બોધ લખેલો છે, જે દરેક

અવશ્ય વાંચવા લાયક છે. છપાઈ સફાઈ સારી, પૃષ્ઠ ૧૩૫ અને પાકું પુઠું છતાં પણ કિં. માત્ર પાંચ આનાજ છે. પ્રકાશક પાસેથી મળી શકે છે.

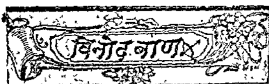
જૈનધર્મ પ્રસારક સભાનો રિપોર્ટ–આપણા શ્વેતાંબરી બંધુએમાં જુનામાં જુની અને ઉત્તમ કાર્ય કરતી કોઈ સભા હોય તો તે ભાવનગરની શ્રી જૈનધર્મ પ્રસારક સભા છે, જેને સ્થપાયાને ૩૪ વર્ષ થયાં છે અને તેનો આ ત્રણ વર્ષનો રિપોર્ટ છે, જે જોતાં જણાય છે કે એમાં ૨૨૭ મેમ્બરો છે. સ્થાયી ફંડ તો આશરે ૩૦૦૦)નુંજ છે છતાં પણ આવક બહુ સારી છે, જેથી આ સભ દ્વારા લાયબ્રેરી, શાસ્ત્રી દ્વારા અપાતું ધાર્મિક તથા વ્યવહારિક જ્ઞાન, જૈન ગ્રંથો પ્રકટ કરવાનું ખાતું અને 'જૈન ધર્મ પ્રકાશ' માસિક સારી રીતે ચલાવાય છે. સભાનું બંધારણ એટલું ઉત્તમ છે કે જેથી આટલાં વર્ષો થયાં આ સભા ટકી રહી નિર્વિઘ્નપણે કાર્ય કરી જાય છે. અમારા દિગંબર ભાઈઓ જાણીને અજબ થશે કે એના પુસ્તક૦સિદ્ધાખાતાંએ આજ સુધીમાં સંસ્કૃત અને માગધી ભાષાના નાનાં મોટાં ૩૨ ગ્રંથો તથા ભાષાના ૨૮ ગ્રંથો સસ્તી કિંમત પ્રકટ કર્યા છે અને એના માસિકના દરેક અંકમાં નવીન છપાતા, નવીન છપાતા, નવીન લખાતા અનેક ગ્રંથોની જાહેરાતો ચાલી આવે છે અને તેને અનેક ભાઈઓ મદદ પણ આપ્યાજ જાય છે. આવી ઉત્તમ સંસ્થા દિગંબર જૈનોમાં કયારે થશે? વાંચનનો શોખ અને ધર્મરૂચિ વધી છાપાના વિરોધીઓનો સડો સમૂળગો દૂર થશે ત્યારેજ!

જીવદયા જ્ઞાનપ્રસારક ફંડની અપીલ:–પર્યુષણ પર્વ પ્રસંગે મુંબાઈના જીવદયા જ્ઞાનપ્રસારક ફંડે અનેક પ્રકારની અપીલ બહાર પાડી જીવદયાના આ ઉત્તમ ખાતાને મદદ કરવા સૂચવ્યું છે જે વાસ્તવિક છે. આ ખાતું ચ૨ વર્ષમાં ઉત્તમ કાર્ય કરી રહેલું છે અને એણે જીવદયાના લાખો પુસ્તકોનો વિના મૂલ્યે પ્રચાર કરી હજારો જીવોનો જાન બચાવ્યો છે માટે દરેકે આ ખાતાને બનતી મદદ મોકલવાની જરૂર છે સેક્રેટરી શેઠ લલ્લુભાઈ ગુલાબચંદ ઝવેરી (ઝવેરી બજાર-મુંબાઈ) છે.

પાચોરા પાઠશાળાનો રિપોર્ટ:–પાચોરાની જૈન પાઠશાળાનો આ ત્રિવાર્ષિક રિપોર્ટ છે, જે જોતાં જણાય છે કે એનો લાભ ૬૫ છોકરા છોકરીઓ લે છે. ફંડ આશરે ૧૦૦૦૦)નું છે. વ્યવહારિક અને ધાર્મિક બંને શિક્ષણ અપાય છે શાળા સાથે લાયબ્રેરી અને બોર્ડિંગ પણ છે કાર્ય સારૂં ચાલે છે, પણ વધુ મદદની જરૂર છે. એ વિભાગના ભાઈઓએ એને મદદ કરવી જોઇએ.

ચુડા સ્વયંસેવકઃ–ચુડામાં એક સ્વયંસેવક સમાજ સ્થાપન થઇ છે જેણે દિવસ તથા રાત્રિએ શિક્ષણ આપવાની મફત શાળા ખોલી છે, જેમાં સર્વ ધર્મના ૫૦ વિદ્યાર્થી ભણે છે. મફત પુસ્તકાલય ખોલાયું છે તથા બીજા અનેક કાર્યો આ સમાજ કરવાને જણાવે છે. એને સ્વયંસેવકો (મેમ્બરો)ની જરૂર છે. એ સંબંધી પત્રવ્યવહાર–ગુલાબચંદ મુળચંદ બાવિશી, દાદાવાડી, ભાવનગર સાથે કરવો.

समयसार नाटकः—प्रकाशक–जैन औद्योगिक कार्यालय चंदावाडी, गीरगाम–बम्बई। पृ. १३१ और मूल्य आठ आना। इसमें स्वर्गीय कविवर बनारसीदासजी कृत समयसार नाटकके मूल कवित हैं। छपाई सफाई अच्छी है और इस ग्रंथके सवैये सभीको कंठस्थ करनेयोग्य हैं क्योंकि इसमें जैनधर्मके सिद्धांतोंका गूढ रहस्य कविता-रूपमें अच्छी तरहसे दर्शाया गया है। प्रकाशक और हमारे पुस्तकालयसे भी प्राप्य।



દર્શને પધારજો !

ઓહ ! મારા ગુજરાતી દિગંબરી ધર્મપ્રેમી ભોળા બંધુઓ ! મારા આમંત્રણને માન આપી આપણા પેલા મહાન્ વિજય વાવટો ફરકાવનાર ભટ્ટારક મહારાજ **મોતીના લાલ** અથવા **વિજયની કીર્તિ** ! પ્રસરાવનાર ખુદ પોતે હાલ બાકરોળ (મોડાસા)માં ચાતુર્માસ મઝા કરવા બિરાજે છે ત્યાં તેમના પાદ પ્રક્ષાલ અને દર્શન પૂજન કરવા જલ્દી **થોડા ઘણા રૂપીયાની પોટલી બાંધી પધારજો!** કેમકે એઓ રાજન્ કે રાજા સાહેબને નજરાણું તો કંઈ નજર ભરાય તેટલું મુકવું પડશેને અને વળી એવણ મહાન્ **વિદ્વત્તાના ભંડાર!** સમાન પોતાનો ઉપદેશ આપશે તે વેળા તમારે પણ કાંઈ ત્યાગ કરવો પડશેને તે માટે જરૂર તૈયાર થઇ પાંચ પચીસ માણસનો સંગાથ લઈ પધારજો ! !

ત્યાગ વળી કેવો જોઇએ ?

અરે ! પણ ભૂલ્યો, **એવણ સાહેબ પોતેજ ક્યાં ત્યાગ કરી બેઠા છે** કે તમારી પાસે ત્યાગ કરાવશે ! ઘોડા, ગાડી, પાલખી, બોઈ, સીપાઇ, જમાદાર, હવાલદાર, હજામ, ધોબી, પગચંપીદાર, વીગેરે એમની હજુરમાં તૈયારજ છે, તો તમને શું કહેશે ? ખાસા ગરમાગરમ લચપચતા ઘીથી તરબોળ શીરા લાડવા અને અનેક સામગ્રી પોતાના રસોઇયા પાસેજ તૈયાર કરાવાવી મિષ્ટાન્ન ઉડાવે છે તો તમારી પાસે શું છોડાવશે ! પૈસા પણ પોતે ક્યાં નથી રાખતા ? કે પૈસાપરથી પણ મોહ છોડી દાન કરવાનું તમને કહી શકશે ? બસ ! કંઇ નહિં, માંડુજ સમજોને ! ! !

ભારી ઉન્નતિ ! !

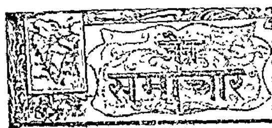
પણ ત્યારે ભોળા ભક્તો પાસે **દરરોજ પચ્ચાસ ત્રીસ રૂપીયાનું ગાબડું** કઢાવી ધર્મની ઉન્નતિ શું કરે છે તે તપાસો. **પચ્ચીસ મોટા જીવો પેટ પુરતું ખાઈ મઝા કરે છે.** પાંચ સાત ઘોડાઓ ઘાસ ચણા ખાઇ આશીર્વાદ આપે છે અને ખુદ પોતે પણ પૈસાની પોટલી અને પેટ પુરતું મિષ્ટાન્ન દબાવી યજમાનને આશીર્વાદ આપે છે. એજ ભારી ઉન્નતિ ! !

મીંડુંજ ક્યાં છે ?

બોલો ત્યારે હવે એથી વધારે તમારે ધર્મની ઉન્નતિ કેટલી કરવી છે ? નકામા સંપાદકજી સાહેબ, એ બિચારા દયાળુ મહારાજ સાહેબના હાથ દસ્કતનો **પ્રતિજ્ઞાપત્ર** છાપીને લોકોને ઉંઘમાંથી જાગૃત કરવા કોશીશ કરે છે ! એતો એમજ ચાલે. કહેવત છે કે **"અંધેર ગામમાં એરંડો પ્રધાન"** તેમ મહારાજ જેમ કરે તેમ ખરૂં માનનારાનો જ્યાં ટોટો નહીં ત્યાં સંપાદકજી ટેં ટેં પેં પેં કરે તે ક્યાં ચાલવાનું છે ? એઓ ભલેને પાનાંના પાનાં ભરીને ચીતર્યા કરે તેમાં લોકોનું જાય છે શું ? લખેલું વાંચે છેજ કોણ ? અને વાંચે તોપણ તેનો અમલ કરવાનું મીંડું પણ કોનામાં છે? થયું ત્યારે **ન બોલ્યામાંજ નવ ગુણ** ! ! !

કિંમતજ નહિં ત્યાં શું ?

પણ સંપાદકજી ! તમો જાણતા નથી કે આપણા **ગુજરાત**ના દિગંબરી ભાઇઓને **વાંચનનો શોખ એકડા વગરના મીંડા જેવો** બાહોળો છે ! તો પછી નકામા **સસ્તી જૈન ગ્રંથમાળા** અને સસ્તી શાસ્ત્રમાળા છપાવી ભોળા અને કામકાજવાળા બંધુઓના મગજને કંટાળો આપવા અને પૈસા કઢાવવા ખોટી આશા શા માટે રાખો છો ? જેને શોખજ નહિં તેને મોઘું કે મોઘું ગમે તેવું અમૃત ધરો પણ કિંમતજ નહિં ત્યાં કહેવત છે કે **"ખચ્ચર પીઠે ઇંટ લાદો કે સોનું લાદો"** તેમ થઈ પડે. માટે મફતની મહેનત જવા દો ! **વિનોદી.**



समेदशिखरजी माटे मीटींगः—महान तीर्थक्षेत्र श्री समेदशिखरजी बाबत सरकार तथा आपणा श्वे. भाइओ साथे अनेक प्रकारना झघडा चाली रहेला छे, जे संबंधी सर्वे प्रबंध करवाने भारत. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमीटी तरफथी आखा हिंदना दि. जैनोनी एक मीटींग घणुं करीने आवता मासमां इन्दोरमां मळनार छे.

रथोत्सव और अधिवेशनः—वर्धामें आसोज वदी ९ ता. २८-९-१५को रथोत्सव और ता. २९ को वर्धा दि. जैन बोर्डिंगका तृतीय वार्षिक अधिवेशन होनेवाला है जिस मौकेपर बड़े बड़े श्रीमान् और विद्वान पधारनेकी उम्मेद है इसलिए सभीको अवश्य पधारनेकेलिए मंत्रीकी ओरसे आमंत्रण किया जाता है।

નનામું માટે નકામું—નવીન ભટ્ટારક વિજયકીર્તિ (બ્ર. મોતીલાલજી)એ બાકરોળ (.મોડાસા) માં ચાતુર્માસ કરેલો છે, જેમની સાથે ૨૫ માણુસ છે। અને ખર્ચ બહુ ભારે છે તથા ત્યાં માત્ર દિ. ૩૦ ઘર છે તેથી ચાર મહિના સુધી એ ખર્ચ કેવી રીતે નીભાવાય વગેરે બાબતોવાળું એક ચર્ચાપત્ર મોડાસાની છાપનું મળ્યું છે, જે નનામું હોવાથી પ્રકટ કરી શકતા નથી, પણ બાકરોળનો કોઇ દિ. બંધુ બધી વીગત નામ સાથે લખી મોકલશે તો તે આવતા અંકમાં પ્રકટ કરીશું. દરેક લેખકે કે ચર્ચાપત્રીએ અમારી ખાનગી જાણ માટે પણ પોતાનું નામ જણાવવું જ જોઇએ.

प्रतिबिंब मिलाः—मेरठ सदरकी पुलिसको श्री पार्श्वनाथजीकी एक धातुकी प्रतिमा छह अंगुलकी मिली है इसलिए जहां कहींकी यह प्रतिमा हो यहांके भाइओंने आकर यह प्रतिमा पुलिससे प्राप्त कर लेना चाहिए।

સુધારીને વાંચવુંઃ—ગયા અંકમાં ૮ મે પાને વલાસણ (આણંદ)ના દહેરાસર બાબત સમાચાર છપાયા છે તે ગામ વલાસણના નહિ, પણ વલાસણા (સાદરા) ના મંદિર માટેની ટીપ સંબંધી છે.

जैन विधिसे विवाह और दानः—फरुखनगरवाले आयुर्वेद मार्तंड ज्योतिषरत्न पं. जैनी जियालालजी चौधरी राजवैद्य रईस, जो जैन असली पंचांगके कर्ता है। उन महाशयसे जैन समाज अच्छी तरहसे परिचित है। आपने वैश्य महासभाके चतुर्थ अधिवेशनमें यह प्रण किया था कि मैं अपने पुत्रका विवाह उसकी १६ वर्षकी उमरसे प्रथम नहीं करूंगा और रंडी भडवोंका नाच, आतशबाजी, फुलवाडी बखेर आदि व्यर्थव्यय नहीं करुंगा। तदनुसार आपके पुत्र शिखरचंद्रका विवाह १७ वर्षकी आयुमें आषाढ कृष्ण ८ को पं. वृजवासीलाल द्वारा जैन रीतिसे हुआ था और मंदिरमें भी ४ घंटे तक गाजेबाजे

सहित पूजन किया था और आपने २०१) मंदिरों तथा विद्यालयोंमें दान दिया जिसमें ७५)जैन मं.कुताना, ३१।) जैन मं.फरुखनगर और मेरठ मंदिर--कन्याशाला--बोर्डिंग, वैश्य यतिमखाना, वैश्य महासभा, मथुरा महासभा, ब्रह्मचर्याश्रम, तीर्थक्षेत्र कमेटी, देहली अनाथाश्रम, मुरैना विद्यालय, स्याद्वाद महाविद्यालय, और जैनमित्र, दिगंबर जैन, जैन गजट, जैन प्रदीप, जैन प्रचारक आदिको २) तककी सहायता दी गई थी। इस ईलाकेमें यह नवीन बात हुई कि दुल्हाने अपने द्रव्यसे स्वतः पूजन किया था।

ઇતિહાસની જરૂર છે:-વીસા મેવાડા રાયકવાળ અને સંઘપરા આ ત્રણ જ્ઞાતિની ઉત્પત્તિ કયા સ્થળે, કયા રાજાના વખતમાં કયા વર્ષમાં થઇ, એનાં ગોત્રો દેવી વગેરે શું છે, હાલ કયાં કયાં કેટલી કેટલી વસ્તી છે તથા હાલ કેટલા જૈન ધર્મ છોડી અન્ય ધર્મમાં ગયા છે, અને તે શા કારણથી વગેરે ઇતિહાસની જરૂર છે એ જેમને ખબર હોય, તેમણે તે ભટ્ટારક સુરેંદ્રકીર્તિજી-સોજીત્રા (પેટલાદ) એ સરનામે લખી મોકલવી.

પેથાપુરમાં પાઠશાળાની સ્થાપના થઇ છે.

शिक्षाविभागका दफ्तर:--भारतजैनमहामंडलके शिक्षाविभागका दफ्तर लखनउसे देहलीमें आ गया है। इसलिए आगामी पत्रव्यवहार इस पतेसे करना-चम्पतलाल जैन सी. टी. मंत्री, भारतजैनमहामंडल शिक्षाविभाग, पहाडी धीरज-देहली।

आवश्यकता-भारत. लमेचू जैन विद्यालय करहलके लिए अंग्रेजीमें एन्ट्रन्स तथा संस्कृतमें प्रवेशिका परीक्षा पढानेवाले जैन अध्यापकोंकी आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। पत्र व्यवहार--बाबू उल्फतराय उपमंत्री, करहल (मैनपुरी)। और जैन पाठशाला गोहाना के लिए भी एक अध्यापककी आवश्यकता है। पत्रव्यवहारका पता-- पारसदास जैन, मैनेजर, जैन पाठशाला--गोहाना (रोहतक)

शास्त्रभंडारोंकी सूचीकी आवश्यकता:--वर्तमानमें इस बातकी बड़ी आवश्यकता है कि हरएक स्थानोंके जैनशास्त्रभंडारोंकी सूची तय्यार हो, जिससे प्राचीन ग्रन्थोंका पता और उनकी रक्षा हो सकेगी और यह भी मालूम होगा कि अमुक ग्रन्थ अमुक स्थानपर है, इसकेलिए मालवा प्रां. सभाकी तरफसे एक सरस्वतिभंडारविभाग स्थापित है उसके द्वारा सूची वगैरह संग्रह करनेका कार्य चल रहा है। इसलिए उत्साही सज्जनोंकी सेवामें प्रार्थना है कि अपने २ यहांके शास्त्रभंडारकी सूची लिखकर भेजनेकी कृपा करें और इतनी बातें भी अवश्य लिखना चाहिए--स्वाध्यायकर्ता और उनके ग्रन्थका नाम, जैनियोंकी गृहसंख्या, जैनपत्र (अखबार) कौन२से आते हैं। शास्त्रसभा या व्याख्यानसभा होती है या नहीं आदि। पत्रव्यवहार--मंत्री, सरस्वतीभंडारविभाग कार्यालय---नशियां, इन्दौर।

मदद मळी—श्री स्याद्वाद महाविद्यालय काशीने जून जुलाई ए बे मासमां कुले मदद रु. २१९९॥ नी तथा श्री ऋषभ-ब्रह्मचर्याश्रम-हस्तीनापुरने ता. १ जूनथी १९ जुलाई सुधीमां रु. १६५८॥ नी मदद मळी हती.

अनुकरणीय दानः—कुचामनमें चैनसुखजी गंभीरमलजीने अपनी माताका परलोकवास आषाढ कृष्ण ४से हुआ जिनके स्मरणार्थ जैन मंदिरों और जैन संस्थाओंको रु. १९८६) का दान दिया है जिसमें १०१) कुचामन जैन पाठशाला, ९१) कलकत्ता दि. जैन पाठशाला, ९१) ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम, ९१) जैनसिद्धांत-भवन आरा, ५१) कंचनबाई श्राविकाश्रम-इंदौर, ३१) श्राविकाश्रम-बम्बई, ३१) स्या. महाविद्यालय-बनारस, ३१) महाविद्यालय-मथुरा और अन्य कई पाठशालाओं और सभाओंको रु. २१) तककी सहायता दी गई है।

जोधपुरमें दि. जैनोंका मंदिर न होनेसे एक नवीन मंदिर बनवानेकी नींवका उत्सव गत् मासमें हुआ था जिसमें महाराजा फतेहसिंहजी (जोधपुर) के सभापतित्वमें बड़ी भारी सभा हुई थी जिसमें अजमेरनिवासी रा.ब. शेठ नेमीचंदजी खास पधारे थे और आपकी बड़ी भारी मदद थी। आपनेही अंदाज रु. १००००)की मदद की है, ७००) जमा हुए थे और १५०००) की आवश्यकता है जिसमेंसे ७०००) भरगये है और ८०००) की और आवश्यकता है।

લાભ લીધોઃ—મુંબઈની હીરાબાગ ધર્મશાળાનો ગયા ૭ મહીનામાં કુલ્લે ૪૬૪૭ યાત્રીઓએ લાભ લીધો હતો, જેમાં ૧૬૫૨ જૈનો હતા તથા ઐલક પન્નાલાલ જૈન ઔષધાલયનો ૧૬૯૫૯ રોગીઓએ લાભ લીધો હતો.

બડવાહ બોર્ડિંગપરના દાવાનો સંતોષજનક ચુકાદો—બડવાહમાં ખ્યારચંદસા-દિ. જૈન બોર્ડિંગ ખોલવાને શ્રીમતી ભાગાબાઈ રૂ ૧૦૦૦૦) નું ટ્રસ્ટ કરી ગયા હતા અને એ બોર્ડિંગ પણ ચાલુ થયેલી છે, પણ એ ૧૦૦૦૦) ઉપર હક્ક કરવાને એ બાઈના કુટુમ્બીઓએ ઈન્દોર કોર્ટમાં દાવો કરેલો હતો જેનો ફેંસલો શ્રીયુત બાબૂ જુગમંદિરલાલ જૈની એમ. એ હાઈકોર્ટ જડજે એવો કર્યો છે કે બાઈએ કરેલું ટ્રસ્ટ કાયદેસર છે. આ જડજમેંટ ૮૭ પાનાંનો છે, જેમાં જૈનલૉનું પુસ્તક પ્રકટ કરવા તથા તે સરકારમાં રજીષ્ટર કરાવવા સબંધી અગત્યની સૂચનાઓ છે, જેથી તે બાબૂ અજીતપ્રસાદજી પ્રકટ કરનાર છે.

नागपुरमें—ब्र. चिंतामणीजीके उपदेशसे नवीन पाठशालाकी स्थापना हुई है।

રક્ષાબંધન પર્વઃ—શ્રાવણ સુદ ૧૫ને દિને કુશલગઢ, બોધેગાંવ, બોરાવ, વડોદરા, મેંદરગી વગેરે સ્થળે આ પર્વ સારી રીતે ઉજવાઇ સલૂનાપૂજન કરવામાં આવ્યું હતું તેમજ રક્ષાબંધનની કથા વંચાઇ હતી

ત્યાગીઓનો ચાતુર્માસઃ—શ્રી. ત્યાગી ઐલક પન્નાલાલજીએ સ્યોપુર Sheopur (Gwalior), ત્યાગી ક્ષુલ્લક મન્નાલાલજીએ ચંદરાવલગંજ, મુનિ ચંદ્રસાગરજીએ ઝાલરાપાટન છાવણી, ત્યાગી આનંદીલાલજીએ ગોહાના (રોહતક), આદીમતી આર્જિકાએ સમેદશિખરજી, બ્ર શાંતિદાસજીએ શાહપુર અને બ્ર. ચિંતામણીજીએ વર્ધામાં ચાતુર્માસ કર્યો છે.

आठवां उपहारः—इस वर्षके ग्राहकोंको ७ पुस्तकें तो उपहारमें भेज चुके हैं और आठवाँ उपहार आगामी अंकके साथ भेजा जायगा।

नियमपरिवर्तन।

सज्जन महाशयो ! सनातनजैनग्रंथमालामें छपे हुए संस्कृत ग्रंथ जो २६।॥≈)के ग्रंथ १४) में और २६८।॥) की १० सीटें १००) रुपयों लुटाते थे सो अब किसीको भी इस न्योछावरसे नहीं दिये जांयगें। अब सबसे नीचे लिखे अनुसार न्योछावर ली जायगी। इसके सिवाय अब सनातनजैनग्रंथमालामें सब ग्रंथ प्रायः भाषाटीकासहित छपैंगे तथा पहिलेकी तरह अंक न निकाल कर सब ग्रंथ पूरेपूरे छपैंगे और चुन्नीलालजैनग्रंथमालामें भी केवल टेक्ट ही न छपकर छोटे वडे सबतरहके ग्रंथ हिंदी वा वंगभाषामें छपते रहैंगे।

जो दानी महाशय इस धार्मिक संस्थामें एक मुस्त ५०) रुपये प्रदान करके इस संस्थाके दानी सभासद बनैंगे उनको अबसे छपनेवाले सब ग्रंथोंकी एक एक प्रति विना मूल्य पोष्टेज मात्रके वी. पी. से भेजते रहैंगे और जो महाशय १) रु. डिपाजीटमें जमा कराकर स्थायी (पक्के) ग्राहक बन जांयगे उनको सनातनजैनग्रंथमालामें छपे हुये ग्रंथ तो पौणी न्योछावरसे और चुन्नीलालजैनग्रंथमालामें छपे हुये ग्रंथ आधी न्योछावरसे वी. पी. द्वारा भेजते रहैंगे। जो महाशय एक रूपया देकर पक्के ग्राहकोंमें नाम न लिखावेंगे उनसे पूरी २ न्योछावर ली जायगी।

विक्रयार्थ पहिलेके छपे तैयार ग्रंथ–

आप्तपरीक्षासटीक व पत्रपरीक्षामूल २), समयप्राभृत दो संस्कृत टीका सहित ५), तत्वार्थराजवार्त्तिकजी पुर्वार्द्ध ५) रु. उत्तरार्द्ध ५) पूर्ण ९), आप्तमीमांसा–अलंकभाष्य, वसुनंदीटीकासहित और प्रमाणपरीक्षा २), शब्दार्णवचंद्रिका (सटीकजैनेंद्रव्याकरण) पूर्ण ५) उतरार्द्ध ३॥), शब्दानुशासनसटीक (शाकटायनव्याकरण) प्रथमखंड २), जैनेंद्रप्रक्रिया पूज्यपादगुणनंदिस्वामीकृत १॥), शाकटायनधातुपाठ ०।≈), जिनशतक–संस्कृत भाषा दो टीका सहित चित्र काव्य ॥), धर्मरत्नोद्योत दोहाचोपाईबंद १), धर्मप्रश्नोत्तर–(प्रश्नोत्तर श्रावकाचार वचनिका २), महावीरचरित्र –), न्यायदीपिकामूल ।) अजैन विद्वानों व विद्यार्थीयोंको सब ग्रंथ विनामूल्य भेजे जाते हैं।

आगामी तैयार होनेवाले ग्रंथ–

जिनेन्द्रमतसार—स्वर्गीय पं. महाचन्द्रजी कृत भाषा टीका सहित, अर्थप्रकाशजी वचनिका, हरिवंशपुराण मूल सरल वचनिका सहित, सुदृष्टितरंगिणी, गोमट्टसारजी स्वर्गीय पं. टोडरमलजी कृत वचनिका सहित, पांडवपुराण वचनिका, तत्त्वार्थसार वचनिका सहित।

परीक्षामुख हिंदी और वंगानुवाद सहित), न्यायदीपिका वंगानुवादसहित, संस्कृतप्रवेशिनी ४ भाग हिंदी सहित, समयसारकलशे संस्कृत तथा भाषाटीकासहित, सुभाषितरत्नसंदोह भाषा-टीका सहित, क्षत्रचूडामणि टिप्पणी सहित।

जैनसमाजका दास:–

पन्नालाल जैन, महामंत्री, भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्था।

ठि. महागिनजैनमंदिर पोष्ट—बनारससिटी।

कन्याविक्रयनी क्रूरता
अने
'मारी दुःखी जींदगीनो हेवाल.'

શાર્દૂલવિક્રીડિત.

કન્યાવિક્રય જે કરે ધન લઈ, ધિક્કાર તેને ઘરો,
કીર્તિના કદી લોભથી કુળ જુએ, તે પાપી પુરો ખરો;
કીર્તિ દ્રવ્ય તણો કશો જગત્‌માં, જે સ્વાર્થ સાધે નહિ,
કન્યાના સુખનો વિચાર કરશે, તે પુણ્યશાળી સહી

આ વિષયપર ઘણું બોલાયુ છે તેમજ હજારો ફીટકાર દેવામાં આવ્યા; છતાં આપણા જ્ઞાતિભાઇઓમાં તેની કંઇપણ અસર થઈ હોય એમ જણાતું નથી. આ ચાલ સારો છે, એમ કહી કોઇ તેની હિમાયત કરવુ નથી તેમ તે બંધ પાડવાને પણ કોઇ તૈયાર થતું નથી.

સાધારણ રીતે જોતાં પુત્રીના પૈસા લઇ લગ્ન કરવું તેને કન્યાદાન નહિ પણ કન્યાવિક્રય કહી શકાય.

આવી રીતનો અતિ નીચમાં નીચ જે અધમ ગતિને પ્રાપ્ત કરાવનારો આસુરી રિવાજ ઊચ ગણાતી આપણી દયાળુ કોમમાં ઘણેક અંશે જોવામાં આવે છે. મુંગા **પ્રાણીઓપર દયા રાખવી** યા તેને માટે પાંજરાપોળો ખોલવી એ તો **આપણો** ધર્મ છે; તો મનુષ્ય જાતને તેથી પણ અધમ ગણી પાપી પિતા પોતાના સ્વાર્થની ખાતર પોતાની પુત્રીને તેનું હિત યા અહિત શામાં સમાયલું છે તેનો લેશ માત્ર પણ વિચાર કર્યા સિવાય એક ઢોરની માફક ક્રૂરપણે **લીલામ** કરી કુવામાં હડસેલવાને તૈયાર થાય છે તે જૈન કહેવાતા કોઈપણ માણસને લાયક નથી. જો તમે સાચા જૈન હો! અહિંસા ધર્મનો મૂળ સિદ્ધાંત જીવદયા સમજતા હો તો આવી રીતે કન્યાવિક્રય કરનારને મદદ નહિ કરો, તેમજ તેની સાથે **ભોજન વ્યવહાર** પણ **નહિ** રાખો. આવા દયાહીન નરાધમ રાક્ષસોએ અનીતિ અને ક્રૂરપણે સંપાદન કરેલા પૈસાનો સદુપયોગ ધર્મ કાર્યોમાં પણ નહિ કરો! હે પૂજ્ય મુનિ મહારાજો! અને પૂજ્ય આચાર્યો (ભટ્ટારકો)! તમે કન્યાવિક્રય કરનારને ત્યાંથી આહારપાણીનો પણ ત્યાગ કરો! હે પૂજ્ય ધર્માચાર્યો! તમો જૈનોને ઉપદેશ કરી વ્રત નિયમ આદિ બાધા આપો છો, પણ તેથી શું કલ્યાણ થયું? કારણ કે જે અતિ દુષ્ટ અને અધમમાં અધમ કન્યા વિક્રય કે જે કરવાથી જૈન શાસનની સ્થળે સ્થળે નિંદા થાય છે, વીરશાસન વગોવાય છે અને અન્યદર્શનીઓમાં જેની નિંદા થાય છે, તે રિવાજને સત્વરે બંધ કરવાને માટે લોકોને બોધ આપી પ્રતિજ્ઞા લેવડાવવામાં આવશે તોજ જૈન શાસનનો ઉદ્ધાર થશે.

આવી રીતે પાપી પિતા પોતાના સ્વાર્થની ખાતર "મડે મીંઢળ" બાંધી પોતાની પુત્રીના સુખદુઃખનો વિચાર કર્યા સિવાય જે માણસ વધારે રૂપીઆ આપે તે ખરીદ કરી લઇ જાય છે, ચાહે તો પછી તેની દીકરીના ઘરમાં ખાવાનું રહે કે ન રહે; તે સાસરે જઇ શું ખાશે, એટલુંજ નહિ, પણ હું જેની સાથે લગ્ન કરૂં છું તે વર અભણ છે કે ભણેલો તેમજ લાયક છે કે નહિ, તેની બિલ્કુલ તપાસ કર્યા સિવાય ફક્ત ધનના લોભથી સ્વાર્થી પિતા પોતાની પુત્રીનાં લગ્ન કરે છે. આવી રીતનો બુરો રિવાજ આપણી કોમમાં કેટલેક અંશે જોવામાં આવે છે.

પુત્રીને જ્યારે તેના સાસરામાં ખાવા પીવા અને વસ્ત્ર વિગેરેનાં કેટલીક જાતનાં દુઃખ પડે છે તેમજ **કજોડાં અને બાળલગ્નથી** પુત્રીનો સૌભાગ્ય દૂર થાય છે, ત્યારે તેના માબાપો ઘણોજ પશ્ચાતાપ કરે છે અને ગરીબ બિચારી નિરાધાર બાળાએ, માબાપો પ્રત્યે

ધિઃક્કારની લાગણી દર્શાવે છે તેમજ ઘણીજ દુઃખી થાય છે. આ વિષે એક દુઃખી અબળાએ **" મારી દુઃખી જીંદગીનો હેવાલ "** એ હેડીંગનો લખેલો લેખ આ સ્થાને દાખલ કરીશું, તો તે અયોગ્ય ગણાશે નહિ.

મારી દુઃખી જીંદગીનો હેવાલ.

પ્રિય વાચકવૃંદ ! બંધુ અથવા બ્હેન ! તમે જે કોઇ હો, તે મારી અભાગણીની કથા વાંચશો નહિ. અરે! આ **કર્પીણ કહાણી** લખતાં મારો હાથ ધ્રૂજે છે મારી આંખોના ચોધાર આંસુ લોહીને બેચાર લીટી લખું છું. અભાગીઓ પ્રાણ ખોળીયું છોડી નીકળતો નથી, મારાં હાડકાં ચામડીથી બહાર નીકળી પડ્યા છે. કલમ પકડવાની શક્તિ પણ રહી નથી, તોપણ મારા નસીબની વાત આજે ખુલ્લી મુકી મારા દુઃખનો ઉભરો સમાવું છું. **મારૂં નામ** પણ તમોને શા માટે આપું ! તેથી કાંઇ મારૂં દુઃખ ઓછું થવાનું નથી. મારા પિતાનું નામ પણ આપીશ નહિ, કેમકે તેની અપકીર્તિ કરવા કરતાં આવીજ સ્થિતિમાં મરી જવું એજ બહેતર છે. ટૂંકામાં હું જણાવું છું કે **મારો જન્મ** ગુજરાતના એક ભાગ-ચરોતર વિભાગમાં એક નાના ગામડામાં એક નાની તેમજ બીન કેળવાયલી જૈન કોમમાં થયો છે, મારા પિતાને હું એકની એક પુત્રી છું, હું જ્યારે ચાર વરસની હતી ત્યારે મારી મા ગુજરી ગઇ. મારા પિતાએ **ફરીથી લગ્ન કર્યું** તે વખતે તેમની **ઉમર ૫૦ વરસની** હતી. હું મારા બાપની જાનમાં ગઇ હતી, તે મને હજી યાદ છે. મારા બાપના ખોળામાં બેસી ધોળી મુછો તાણતી, ત્યારે મને તરતજ બાપા ચુંબન લઇ બે હાથ વચ્ચે દાબી ઘણીજ પ્રેમ બતાવતા, મા મરી ગયા પછી બાપા મને કોઈ દિવસ કચવાવતા નહિ. જે જોઇએ તે લઇ આપતા, પણ **નવી મા** આવ્યા પછી મારી અવદશા બેઠી. નવીને હું નવીજ કહેતી, કાંઇક ભૂલ થાય તો **ટપ ટપલો મારી સેંકડો ગાળોનો વરસાદ વરસાવતી** અને બાપાં આવે ત્યારે ત્રણના તેર કહી સંભળાવતી અને બાપા પણ ખૂબ તાણીને ધમકાવતા, તેમ સારી ચીજ પણ હવે હેતથી કોઇ આપતું નહિ. ખાવામાં ટાઢા ટૂકડા, તેમજ મેણાં-ટુણાં સાંભળી ધીરે ધીરે હું મોટી થઈ. **ઉકરડીને અને દીકરીને વધતાં વાર લાગે નહિ,** હું હવે સાધારણ રીતે કેટલુંક સમજવા લાગી હતી, પણ મુગું મોઢું કરી રોઇને બેસી રહેતી. અરેરે ! મા વગરની દીકરીની આવી દશા કયાંય હશે કે નહિ તે હું જાણતી નહોતી, પણ નવી મા પાસે મેં જે દિવસો કાઢ્યા છે તે દુશ્મનને પણ દેખાડીશ નહિ.

બરાબર મને ૧૨ વરસ થયાં, ત્યારે હું ન્હાને ઘડે પાણી ભરતી, ઘરનું કેટલુંક કામ હું વહેલી ઉઠી કરી નાંખતી હતી. **હવેથી નવી** પણ કાંઇક મારા ઉપર **પ્રસન્ન** રહેતી, બાપા પણ બેટા બેટા કહી બોલાવતા, આ બધાનું **કારણ ઊંડું** હતું, મારા બાપે પરણતી વખત એકેએક ચીજ વેચીને પૈસા ભરી લગ્ન કર્યું હતું. તેમ તેથી ખૂટતા પૈસા માટે કેટલુંક **દેવું** પણ કર્યું હતું, જે વધીને માથાના મોવાળા જેટલું થવા આવ્યું છે એમ કહી તે દરરોજ કકળાટ કરતા, પણ વળી મારા સામું જોઇ જાણે બધું ભૂલી ગયા હોય તેમ મોઢું મલકાવીને કહેતા હતા કે છોકરી તું હવે મોટી થા!

હું બરાબર **ચૌદ વરસની** થવા આવી. વાચક ભાઇ ! તે દિવસના આનંદના હજુ પ્રતિબિંબ મારા હૃદયમાંથી નીકળી ગયા નથી. મારી કેટલીક સખીઓ મારે ઘેર આવતી, નવી મા તથા બાપા મને હવે કોઇ રીતે એક પણ શબ્દ કહેતા નહિ. નવી જાણે હવે નવી ઓરમાન મા નહિજ, બાપનો સ્વભાવ પણ હવે

કેટલીક રીતે શાંત થયો હતો; આગળથી પણ તે વધારે હેત બતાવતા. હવે મારા દુઃખના દીવસો ઝટ નીકળી ગયા. મારી એક બહેનપણી પાસેથી સાધારણ રીતે કેટલુંએક લખતાં વાંચતાં શીખતી કારણ કે મને તેનો શોખ હતો, સમય મળતો, તો હું પુસ્તક લઇનેજ બેસતી. એક સમયે **પૂર્ણીમાની રાત્રિએ** હું મારા રહેવાના મકાનની અગાશી ઉપર ચઢીને સૃષ્ટિ શોભા જોવા ઘડીભર ઉભી રહી, વાર્તાની ચોપડીના પાનાં વચ્ચે આંગળી રાખી ચારે દિશામાં મેં મારી દ્રષ્ટિ ફેરવી, આહા હા ! કેવી અનુપમ શોભા થઇ રહી હતી ! કર્પુર કુન્દેન્દુ ધવળ નીમેંઘ નક્ષત્રો તથા ઉજ્વલ આકાશમાં ચંન્દ્રોદયનો મનોહર દેખાવ જોઈ પ્રાણી માત્રનું હૃદય પ્રફુલ્લ થઈ જાય તેવું હતું. ગામની એક બાજુ સામે એક સુન્દર તળાવ હતું તે તરફથી મધુર મંદમંદ પવન વાતો હતો, તેમ સર્વત્ર આનંદ આનંદ થઈ રહ્યો હતો. જ્યાં દ્રષ્ટિ નાંખું ત્યાં પ્રફુલ્લતા જોઈ રહેતી, પ્રફુલ્લ ચંદ્ર-પ્રફુલ્લ નક્ષત્ર માલા પ્રફુલ્લ-સમીરન-પ્રફુલ્લ આમ્રશાખા, સીન, પપૈયાનો કંઠ, સર્વત્ર પ્રફુલ્લતા છાઇ રહી હતી. હુંજ માત્ર અભાગીનિ, કર્તવ્યહીન, ઉદ્દેસ્યહીન, એક અદૂર દ્દષ્ટ માર્ગમાં નિસંગ જાત્રી હતી.

મારા **ચક્ષુમાંથી** અશ્રુધારાઓ વહેવા લાગી, હૃદયમાં અંગાર બળવા લાગ્યો, મસ્તક ભમવા લાગ્યું અને ક્ષણુવારમાં તો ભૂમિ ઉપર ઢળી પડી, પુનઃ આંખો ખોલી ત્યારે તો હું એક બીછાનામાં હતી, બાજુમાં બાપા મા અને એક વૈદ્ય બેઠા હતા. વૈદ્યને હું સાધારણ રીતે ઓળખતી હતી. તેને જોઇને મેં બાપાને પૂછ્યું, કેમ બાપા; કોણ માંદું ? મારા પિતાએ ઉત્તર આપ્યો-કંઇ નહિ, પુત્રી, તને જરા ઠીક નહોતું તેથી વૈદ્યરાજને બોલાવ્યા છે. મને ખબર પડી કે અગાશીમાંથી બેશુદ્ધ થયા પછી મારી આ સ્થિતિ છે. મેં બાપાને જરા હિંમત આપી અને સારૂં થયા પછી હું મારા કામમાં ગૂંથાઇ ગઇ. મારા પિતા **મારી સગાઇ** કરવાના પ્રયત્નમાં હતા, અને થોડા દિવસમાં કરી પણ નાંખી. હવે આગળ બીના લખતાં મારૂં હૃદય ફાટી જાય છે. હું આટલેથીજ સમાપ્ત કરૂં તો ઠીક, પણ ખરી હકિકત તો હવેજ લખવાની છે. નિષ્ઠુર હૃદયના મારા પિતાતથા પાષાણ હૃદયની મારી માતાએ **રૂ. ૫૦૦૦** લઇ એક **૬૦ વર્ષના બુઢ્ઢા** સાથે મારૂં સગપણ કર્યું, એમ મેં જ્યારે સાંભળ્યું ત્યારે મારા દીલની અંદર કેવી હોળી સળગી ઉઠી તેનો ભયાનક ચિતાર હું આપી શકીશ નહિ. લજ્જા તેમજ શરમને હવે આવે સમયે ગણકારવી એ મૂર્ખતાજ હતી, કારણકે જીંદગી પર્યંત જેની ભાર્યા થઇને રહેવું તે ભરથારનો સ્વભાવ, ઉમર અને વિદ્વતા જાણ્યા પહેલાં **આંખ મીંચી ભાવી સંસારમાં ઝીંપલાવવું તે એક ઘણું નિર્દય સાહસ કહેવાય.**

પૈસો એ એવી ચીજ છે કે હાલના જમાનામાં દરેક પવિત્રમાં પવિત્ર સંબંધને ભૂલાવી દે છે. મારા માતપિતાએ પૈસાની લાલચમાં મારા ભાવિ સુખદુઃખને નહિ ગણકારતાં માત્ર પોતાનીજ ઇચ્છા પરિતૃપ્ત કરવા મને જીવતી જાગતી ચિતામાં હોમી-એમ મેં વિચાર કર્યો ત્યારે મારા શરીરમાં કંપારી છુટી. વાતપર વાત લાવી મેં મારી માને ખુલ્લું સંભળાવી દીધું કે તમોએ મારૂં જેની સાથે સગપણ કર્યુંછે **તેની ઉમર બાપા કરતાં પણ મોટી** છે અને મારે પણ તે બાપ સમાનજ છે. હું ભીખ માંગીને પેટ ભરીશ અથવા ઝેર પીને પ્રાણ ત્યાગ કરીશ, પણ તે ઘરડાને કદિ પરણનાર નથી, પણ મારા માતપિતાએ પોતાની સ્વાર્થને લીધે મારી હઠની થોડી કાળજી રાખી. આડોસી-

નહિ કરતાં ઘેટાંનાં ટોળાંની માફક કરીએ છીએ એટલે આપણે પ્રત્યક્ષ રીતે કુવાને દેખીને તેમાં ઝંપાપાત કરીએ છીએ અને પછી કુવામાં અંદર પડી બુમો પાડીએ છીએ. ત્યારે દયાભાવથી તે પોકાર સાંભળી કાઢવાને આવે તો તેને ગાળો દઇએ છીએ, બલ્કે તેના પર જુદા આક્ષેપો મુકી તેને પણ ડુબાડવાની કોશેશમાં ફરીયે છીએ, તો પછી ઉન્નતિની આશા " न भूतो न भविष्यति " માની લેવાનું છે.

બંધુઓ ! છેવટમાં મારે ટૂંકાણમાં જણાવવાનું કે આપણી કોમે જે જ્ઞાતિબંધારણનું મજબુત દોરડું પકડી રાખેલું છે, તે દોરડું જમાનાને અનુસરી ઢીલું મુકી સાર્વજનિક ઉન્નતિના સમયે એકમત થઇ એકજ વીરભગવાનના પુત્રો છીએ એ માફક ભ્રાતૃભાવ ફેલાવવાની જરૂર છે તેમજ નામદાર શ્રીમંત સરકાર ગાયકવાડ મહારાજે કૃપાવંત થઇ વડોદરા રાજ્યની ધારાસભામાં પ્રજાહિતને માટે બાળલગ્ન તથા કન્યાવિક્રય પ્રતિબંધ કાયદો બહાર પાડવા માટે જે ઇચ્છા દર્શાવી છે તેનું અનુકરણ કરી જ્ઞાતિના ૠ ભાગે તે નામદારને અરજ કરી આ રીવાજ નાબુદ કરાવવો જોઇએ. તથાસ્તુ !

જ્ઞાતિશુભેચ્છક.

श्रीपालचरित्र और 'जैनहितेच्छु'-की कड़ी समालोचना।

" जैनहितेच्छु " मासिक (सप्टंबर-अक्टूबर १९१९) में " श्रीपालचरित्र भाषा " की बहुत कड़ी दृष्टिसे समालोचना की गई है। इस चरित्रको मास्टर दीपचंदजीने हिन्दी भाषामें लिखा और सम्पादक " दिगंबरजैन " ने प्रकाशित किया है। श्रीपाल और मैनासुंदरीकी कथा दिगंबर और श्वेतांबर दोनोंमें अति प्रसिद्ध है तथा संस्कृतमें भी पाई जाती है। एक कथा श्री शुभचंद्राचार्यकृत भी पाई जाती है। " जैन हितेच्छु " के लेखक वाडीलाल मोतीलाल शाहने इस कथाको कायरता, अनीति और अधर्मको सिखानेवाली कही है।!! मैं तो इस कथनमें बहुत ही अतिशयोक्ति देखता हूं। श्रीपालके विषयमें कथाकारने यह लिखा है कि थोड़े दिनोंमें अनेक विद्या सीख गया इस कथनकी बहुत ही दिल्लगी उड़ाई गई है सो यह अनुचित है। अति तीव्र बुद्धिके बालक अनेक अध्यापकोंके पास अनेक प्रकारकी विद्याएं व कलाएं पांच सात वर्षमें सीख सकते हैं। जिनका ज्ञानावरणी कर्मका क्षयोपशम तीव्र होता है वह एक पाठको एक दफे सुन करके ही कंठकर ले सकते हैं। अब भी ऐसे बालक मिल सकते हैं।

इस वर्षके ग्राहकोंको हिन्दी–गुजराती भाषाकी ८ पुस्तकें उपहारमें मिलती हैं।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रकट थतुं मासिक.

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBER JAIN.

युतं सुलेखैः विविधैश्चित्रैः, दिगम्बरंजैन मिदं सुपत्रम्।
प्रभो! महावीर!! तव प्रभावात्, समुत्तमामुन्नतिमातनोतु॥

वर्ष ८ मुं. वीर संवत २४४१. अश्विन. विक्रम सं. १९७१. अंक १२ मो.



खम्मामि सव्व जीवाण सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ति मे सव्व भूदेसु वैरं मज्झ न केण वि॥

उत्तमक्षमा रावेता मुजब आपणो महान पवित्र पर्व श्री दशलक्षण पर्व याने पर्युषणपर्व पूर्ण करी आजे अमो उत्तमक्षमानी याचना करवा उपस्थित थया छीए. एक जाहेर पत्रकारनुं कार्य स्वतंत्रताथी अने निडरपणे कोइनी पण शरमरखावट वगर चलाववुं पडे छे अने तेम करता जो आ वर्षमा अमाराथी कोइने कदापण अघटीत लखवामां के करवामां आव्युं होय तो ते माटे अमो सर्वे वाचकवर्गनी क्षमा चाहीए छीए अने एज इच्छीए छीए के सर्वे बंधुओना हृदयमां उत्तमक्षमारुपी महा मंत्रनो अहर्निश वास थाओ। वळी आ मासिक तरफ पूज्यभाव दर्शावनार अनेक स्नेहीओ तथा सधर्मीओ तरफथी उत्तमक्षमावणीना पत्रो अमोने मळ्या हता ते सर्वेना पृथक् पृथक् उत्तर आपी न शकावाथी आ स्थळे अमो ते सर्वे स्नेहीओनो उपकार मानीए छीए.

⚜ ⚜ ⚜

વર્ષાંતે આ પત્રનો આ આઠમા વર્ષનો બારમો અંક છે એટલે આ અંકે આઠમુ વર્ષ પૂર્ણ થાય છે એટલે આવતા અંકથી આ પત્ર નવમા વર્ષમા પ્રવેશ કરશે આ આઠમા વર્ષમાં ગ્રાહકોને કેટલો બધો લાભ અપાયો છે તેનો જો દરેક ગ્રાહક સરવાળો કરશે તો માલૂમ પડશે કે આ વર્ષે વીરનિર્વાણ સચિત્ર ખાસ અંક, અને બીજા અંકો મળી આશરે ૬૦૦ પૃષ્ઠનું નિયમીત વાચન પુરૂ પડવા ઉપરાંત ચાર હિંદી ભાષાના અને ત્રણ ગુજરાતી ભાષાના મળી લગભગ ૭૫૦ પાનાંના રૂ. ના૱) નાં પુસ્તકો તો

ભેટ તરીકે (મફત) અપાયાં છે અને આ વર્ષની ભેટનું એક પુસ્તક બાકી છે તે પણ વળી આવતા ખાસ અંક સાથે ગ્રાહકોને મોકલવામાં આવશે એટલે એકંદરે આ વર્ષે પણ **માત્ર રૂપ્યા પોણાબેના લવાજમમાં 'દિગંબર જૈને'** ૧૩૦૦ પૃષ્ઠનું વાંચન પુરૂં પાડી લગભગ પાંચ રૂપ્યા જેટલો લાભ આપ્યો છે કે જેવો લાભ આજ સુધીમાં કોઇ પણ જૈન કે અજૈન પત્રે આપેલો આપણા જાણવામાં નથી. વળી આ વર્ષે **હિંદી ભાષાના લેખો** તથા કેટલાક ગુજરાતી ભાષાના લેખો બાળબોધ લીપીમાં વધુ પ્રમાણમાં અપાયા છે, જેથી ગુજરાતી વાંચકોમાં બાળબોધ લીપી અને **હિંદી ભાષાનો પરીચય** વધતો જવા ઉપરાંત હિંદી ગ્રાહકોને પણ વિશેષ સંતોષ મળતો ગયો છે જેથી આ પત્ર આખા હિંદુસ્તાનમાંથી સારી ગ્રાહકસંખ્યા મેળવવા ભાગ્યશાળી થયું છે, જે જણાવતાં અમને આનંદ થાય છે.

⚜ ⚜ ⚜

ખાસ અંક ક્યારે મળશે?

જે પ્રમાણે 'દિગંબર જૈન' નિયમીત કાર્ય બજાવ્યું જાય છે તેમ એનું લવાજમ પણ વર્ષ બેસતાંની સાથે અગાઉથીજ વસુલ સેવાય છે, માટે આવતા (નવમા) વર્ષનું લવાજમ રૂ. ૧-૧૨-૦ દરેક ગ્રાહકે **દિવાળી સુધીમાં મનીઓર્ડર દ્વારા** મોકલી આપવાની તસ્દી લેવી કેમકે જેમનું લવાજમ દિવાળી પહેલાં મનીઓર્ડરથી આવી જશે તેમનેજ **વીર નિર્વાણ સચિત્ર ખાસ અંક** અને જૈન તીથિદર્પણ બહાર પડતાંની સાથે પ્રથમજ રવાના થશે અને તે પછીજ 'દિગંબર જૈન' ઓફિસ અને પોસ્ટ ઓફિસની સગવડ મુજબ બાકીના ગ્રાહકોને રૂ. ૧-૧૩-૦ ના વી. પી. થી ખાસ અંક કંઇક મોડો મોકલવામાં આવશે કેમકે આ વર્ષે ૧૭૦૦ વી. પી. કરવાં પડયાં હતાં અને આવતે વર્ષે એથી પણ વધુ થવાનો અડસટ્ટો છે, જેથી તે તૈયાર થઈ રવાના થતાં ઘણો સમય લાગી જાય છે માટે **સૌથી સરસ રસ્તો** એજ છે કે દરેક ગ્રાહકે ખાસ ફુરસદ મેળવી આવતા વર્ષનું લવાજમ રૂ. ૧।।। દિવાળી પહેલાં મનીઓર્ડરથીજ મોકલી આપવું. એકજ ગામના ગ્રાહકો લવાજમની રકમ એકઠી કરીને મોકલશે તો મનીઓર્ડર ખર્ચમાં ફાયદો થશે. પણ દરેક ગ્રાહકને **ખાસ સુચના** કરવાની કે મનીઓર્ડરના કુપન ઉપર પોતાનું નામ, ગામ, ગ્રાહક નંબર તથા નવો કે જુનો ગ્રાહક એટલું લખવા અવશ્ય ચુકવું નહિ.

⚜ ⚜ ⚜

ઓર્ડિંગના મેળાવડા

અમદાવાદની શેઠ પ્રે. મો. દિગંબર જૈન બોર્ડિંગનો વાર્ષિક મેળાવડો આ માસમાં નહિ પણ આવતા માસમાં એટલે કાર્તિક સુદ ૮ ને દિને થનાર છે, જે પ્રસંગે ખાસ હાજરી આપવાને અમો દરેક મેમ્બર તેમજ બોર્ડિંગ તરફ હિત ધરાવનાર દરેક જૈન બંધુને આગ્રહ કરીએ છીએ, કેમકે આ મેળાવડા પ્રસંગે એના સ્થાપક સ્વર્ગીય દાનવીર જૈન કુલભૂષણ **શેઠ માણેકચંદજીના** વિયોગ માટે યોગ્ય ઠરાવો થવા ઉપરાંત બોર્ડિંગના કાર્યભારમાં નવીન સુધારો વધારો કરવાની સૂચનાઓ રજુ થનાર છે. વળી આ બોર્ડિંગની વિઝીટર્સ કમીટીના **મેમ્બરોને** સુચના કરવાની કે ૧૯૧૫ ની **મેમ્બર ફી રૂ. ૩)** અમોને **મનીઓર્ડરથી** મોકલવા અથવા તો મેળાવડા પ્રસંગે ભરી દેવા કેમકે જેમની મેમ્બર ફી આવી ગઇ હશે તેમનેજ ખાસ અંક સૌથી પ્રથમ રવાના થશે અને બાકીનાને ૩)-ના વી. પી. થીજ ખાસ અંક મોકલી શકાશે. વળી રતલામની

शेठ माणेकचंद पानाचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग माटे रतलाममां **नवीन मकान** खरीदवामां आव्युं छे, जेमां सुधारो वधारो थई तेनुं प्रवेश मुहूर्त करती वखते एनो वार्षिक **मेळावडो लगभग माहा मासमां थनार** छे माटे रतलाम बोर्डिंगनी विझीटर्स कमीटीना मेम्बरोए पण **मेम्बर फी रु. २)** मनीआर्डरथीज ताकीदे मोकली आपवी एटले खास अंक वहेलो मळी जशे अने जेमनुं लवाजम दिवाळी पहेलां नहि मळे तेमने खास अंक २)-ना वी. पी. थीज मोकलवामां आवशे.

⚜ ⚜ ⚜

लातुरनी श्री विशाळकीर्ति भट्टारकनी गादीपर पं. रामभाउ वगेरे

नादान भट्टारक!! ए बधानी संमति वगर एक चार वर्षना अज्ञान छोकराने भट्टारक तरीके ठोकी बेसाड्यो छे अने तेने मनाववानो ममत लई बेठेला छे जे बाबत अमो अगाउ जणावी गया छीए. तेम वळी आ नादान भट्टारक! नो-नादान छोकरानी रमत जेवा पट्टाभिषेक वखतनो फोटो पण पुनाना 'चित्मय जगत्' मां प्रकट कराव्यो छे, जे पण दिगंबर जैन कोमने केटलुं लांछनास्पद छे? आ बाबत वर्धा वगेरे स्थळेथी अमने अनेक पत्रो मळ्या छे, जेथी जणावीए छीए के ए गादीने माननाराओए भूलेचूके फसाई जईने कदी पण आ नादान भट्टारकने मानवो नहि अने भट्टारक नामने कलंक लगाडनार एने बेसाडनाराओनी पुरेपुरी खबर लेवी जोईए.

⚜ ⚜ ⚜

योग्य मददने अभावे जिनवाणीभक्त बाळ

ब्र. पं. पन्नालालजी वा-

फरी जाग्रत थशे. कलीवाल द्वारा जैन सिद्धांतना ग्रंथो प्रकट करवानी चालती संस्था बंध थवानी तैयारीमां हती एटलामां आ पंडितजीए हताश न थई खास श्रम वेठी भ्रमण करवाथी तेमां सफळता मेळवी छे, जे आज अंकमां '**हमारा दौरा और सफलता**' ए लेख आखो वांचवाथी वांचकोने स्पष्ट मालूम पडशे. आ संस्थाने सोलापुर वगेरे स्थळेथी घणीज भारे मदद मळी छे, जेथी हवे अनेक संस्कृत अने हिन्दी ग्रंथोनो उद्धार थई शकशे. आवा कार्यमां श्रीमानोनी मददनी जरुर छे तो हजु पण बीजा श्रीमानो आ संस्थाने मदद करशे, तो पं. पन्नालालजीना उत्साहमां वधारोज थशे.

⚜ ⚜ ⚜

आ मासमां मथुराजीमां श्री जंबुस्वामीना मेळा उपर महासभानी

मथुराजीमां मेळो. बेठक थवा उपरांत **भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ-**क्षेत्र कमीटीनी वार्षिक बेठक पण आ मासमां ता. २६-२७-२८ अक्टोबरे थनार छे जे प्रसंगे आपणा परमपूज्य तीर्थ श्रीसम्मेदशिखरजी संबंधी चालता अनेक केसो संबंधी खास विचारो रजु थनार छे तथा तीर्थक्षेत्र कमीटीनी व्यवस्था संबंधी अनेक कार्यो थनार छे माटे आ प्रसंगे आखा हिंदना दि. जैनो तरफथी गामेगामथी प्रतिनिधीओ मोकलवानी खास जरुर छे.

⚜ ⚜ ⚜

કોન્ફરંસ ક્યારે મળશે?

આપણી મુંબઇ **દિ. જૈન પ્રાંતિક કોન્ફરંસની** વાર્ષિક બેઠક આ વર્ષે થઈ નથી તેથી હવે તાકીદે થવાની જરૂર હોવાથી **અમદાવાદ બોર્ડિંગનો** આ મેળાવડો બંધ રાખી માગસર માસમાં કે એ પછી અમદાવાદ માંજ રથોત્સવ કરી આ કોન્ફરંસની બેઠક ભરવા માટે અમોએ પર્યુષણ પછી કેટલીક હિલચાલ અને પ્રયત્નો કર્યા હતા; જેથી ગુજરાતમાંથી અનેક ભાઇઓની સંમતિ એનીજ મળી છે કે એ પ્રમાણે થવાની ઘણીજ જરૂર છે, પણ હાલ તુરત તેની ગોઠવણ થઇ શકી નથી, માટે બોર્ડિંગનો મેળાવડો જે કાર્તક સુદ ૮ ઉપર અમદાવાદમાં થનાર છે, જે પ્રસંગે આ બાબત ખાસ લક્ષ આપવા અમો દરેક કાર્યકર્તાને સુચવીએ છીએ. જો **અમદાવાદમાં એક વખત કોન્ફરંસ થશે, તો તેથી બોર્ડિંગને અનેક લાભો થવા ઉપરાંત અમદાવાદમાં દિગંબર જૈન ધર્મની પ્રભાવના પણ થઈ શકશે.**

❧ ❧ ❧

वीरनिर्वाण उत्सव.

आश्विन वदी १४ नी पाछली रात्रे (एटले वद ०)) ना प्रभाते आपणा अंतीम तीर्थंकर श्री महावीरप्रभु निर्वाणपद पामेला होवाथी ए दिवस दीपावली एटले दिवाळीना नामथी सर्वत्र प्रचलित छे अने आ प्रसंगे वीरनिर्वाण उत्सव मोटे ठाठथी उजवाय छे, जे प्रसंगे दरेक मंदिरमां संक्षिप्त महावीरचरित्र खास वंचावानी जरूर छे. वळी आ पर्वमां जे सरस्वति याने शारदापूजन करवामां आवे छे ते पण अन्य दर्शी मुजब न करतां "दीपमालिकाविधान' पुस्तक प्रमाणे जैनविधिथीज दरेक स्थळे थवुं जोईए तथा आ पर्व निमित्ते दरेके कंईने कंई रकम व्यापारना नफामांथी **धर्मादा फाळा** तरीके जुदी काढी तेनो उपयोग **विद्यादान** तथा **शास्त्रदानमां** करवो जरूरनो छे तेम ज्यां ज्यां हजु हिसाबना चोपडाओने **चामडानां पुठां** वापरवामां आवतां होय ते बंध करी **कपडानां पुठांज** वापरवानी शरुआत करवी तथा आपणा महावीरप्रभू मोक्षपद पाम्याने केटलां वर्ष थयां ते जाणवाने तथा **जैन संवत** प्रचलित करवाने दरेके पोतपोतानां चोपडाओमां तथा पत्रव्यवहारमां आवता वर्षथी **महावीर निर्वाण संवत २४४२** लखवानुं भूली जवुं जोईए नहि. भले, **विक्रम संवत** तारीख वगेरे लखवुं पण ते साथे वीरनिर्वाण संवत लखवानी टेव तो जरुर राखवी जोईए.

❧ ❧ ❧

વિલંબનું કારણ.

આઠ વર્ષ થયાં આ પત્ર નિયમિત પ્રકટ થયાંજ કરે છે, પણ આ અંક પ્રકટ કરવામાં વિલંબ થવાનું કારણ એજ છે કે અનેક સ્નેહીસંબંધીની વારંવાર સૂચના ઉપરથી અમોએ ખાસ ગોઠવણ કરી ને અત્રે સુરતમાં મોટા પાયા ઉપર **"જૈન વિજય" નામનું પ્રીન્ટીંગ પ્રેસ** (છાપખાનું) અશ્વિન સુદી ૨ થી ખોલ્યું છે. જેમાં નવીન ગોઠવણો કરવાની હોવાથીજ આ અંક આટલો મોડો પ્રકટ થયો છે, પણ ખાસ અંકનું કાર્ય હવે ઘણુંજ ત્વરાથી શરૂ કરવામાં આવ્યું છે, અને લગભગ કાર્તક સુદ ૧૫ ઉપર ખાસ અંક પણ પ્રકટ થઇ જશે અને એ પછી બધા અંકો નિયમિત મળ્યાજ કરશે. ખાસ અંકથી આ પત્રમાં અનેક પ્રકારના સુધારા વધારાઓ કરવામાં આવશે તેમ આ નવીન પ્રેસમાં પણ

મોટો સ્ટોક વધારી દરેક જાતનાં પુસ્તકો ઉત્તમ રીતે પ્રકટ કરવાનો તથા અન્ય સ્થળોનું દરેક જાતનું કામ વાયદાસર અને ઉત્તમ રીતે તૈયાર કરી આપવાનું સાહસ અમોએ ઉપાડયું છે, જેને સર્વે બંધુઓ યોગ્ય ટેકો આપશેજ એવી અમોને આશા છે.

हिन्दी ग्राहकोंको निवेदन

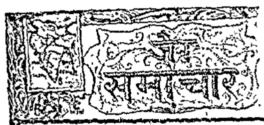
हमारे कितनेक हिन्दी ग्राहकोंकी तरफसे अनेक प्रकारकी शिकायतें आती रहती हैं इसलिये इस वर्षमें हिन्दी ग्राहकोंको कितना लाभ दिया गया है वह प्रकट करते हैं:—

इस वर्षमें खास अंक और शेष ११ अंकों मिलकर अंदाज ३०० पृष्ठके हिन्दी भाषाके लेख और बहुतसे समाचार देवनागरी लीपिमें ही प्रकट किये गये थे और इस वर्षके उपहारकी पुस्तकोंमेंसे ४५० पृष्ठकी चार पुस्तकें तो हिन्दी भाषाकी ही दी गई हैं तोभी कितनेक ग्राहकों गुजरातीके स्थानमें हिन्दी भाषाकी पुस्तकें मंगाते हैं उनको सूचित किया जाता है कि 'दिगंबर जैन' द्वारा इतना लाभ पहुंचाया जाता है कि—यदि आपको गुजराती लेखों और गुजराती भाषाकी पुस्तकें निरुपयोगी हो तौभी आपका वार्षिक मूल्य रु. १-१२-० कुछ मारा नहीं जाता है। यदि एक रुपयाका खास अंक और सभी अंकोंको अलग निकाल दीजिये तौभी उपहारकी चार हिन्दी पुस्तकोंका मूल्य ही रु. १।।≈।। होता है!

नवीन वर्ष कार्तिकसे ही प्रारंभ होता है इसलिये नवीन वर्षका पेशगी वार्षिक मूल्य रु. १-१२-० दिवाली पहिले मनीऑर्डरद्वारा शीघ्रही भेज देना चाहिये जिससे खास अंक आदि प्रकट होतेही मिल जाय। जिन२ ग्राहकोंका मूल्य दिवाली पहले नहीं मिलेगा उनको खास अंक वार्षिक मूल्य रु. १-१३-०के वी. पी.से भेजा जायगा। इतना बड़ा भारी लाभ देते हुए भी जिस किसीको नवीन वर्षमें ग्राहक रहना स्वीकार न हो तो हमको एक कार्डद्वारा सूचित करना जिससे वी. पी. खर्च मारा नहीं जाय।

'दिगंबर जैन'के जितने ज्यादे हिन्दी ग्राहक होवेंगे उतना ही ज्यादा लाभ हिन्दी ग्राहकोंको मिलता रहेगा इसलिये एक२ नवीन ग्राहक बनानेके लिये भी सभी हिन्दी ग्राहकोंको सादर सूचना की जाती है। हमने अभी ही 'जैन विजय' नामका नवीन प्रेस खोल दिया है इसलिये ही इस अंक कुछ विलंबसे प्रगट हुआ है परंतु आगामी अंक नीयत समयपर प्रकट होते रहेंगे। इस नवीन प्रेसमें सब प्रकारके हिन्दी ग्रंथ उत्तमतासे और शुद्धतासे छापं देनेका सुभीता किया गया है इसलिये यदि आपको कोई पुस्तक आदि छपाना हो तो हमसे अवश्य पत्रव्यवहार करना। अब हम सब प्रकारका प्रबंध कर देवेंगे।

મદદ મળી—પર્યુષણ પર્વમાં શ્રીમતી લલીતાબાઈ શ્રાવિકાશ્રમ તરફથી ભ્રમણ માટે ગયા હતાં જે પ્રસંગે કેટલાક વ્રત નિયમો આપવા ઉપરાંત ડોકમાણા રૂ.૩૧ા।≈, સંસર રૂ. ૮), કોપરગાંવ રૂ. ૪૨) અને નાંદગાંવમાંથી રૂ. ૫૩ા મળી ૧૭૬)≈ ની મદદ શ્રાવિકાશ્રમને મળી હતી.



हर्षके समाचारः—महामंत्री लाला भगवानदासजी सूचित करते हैं कि श्रीमान् दानवीर रा. बा. सेठ हुकमचंदजी, रा. ब. सेठ कल्याणमलजी और रा. ब. सेठ कस्तूरचंदजीकी ओरसे ईन्दौरमें विशाल नवीन मंदिर तैयार हुआ है जिसकी बिम्ब प्रतिष्ठा माघ शुक्लमें होनेवाली है जिस अवसरपर मालवा दि. जैन प्रां. सभाका वार्षिकोत्सव करनेका भी आमंत्रण हुआ है। यह उत्सव बड़े महत्वका और आदर्शनीय होगा। अभीसे तैयारीयां हो रही हैं। रेलकिराया कम होनेका प्रयत्न भी अभीसे चल रहा है। क्या ही अच्छा हो यदि इसी अवसरपर भारतवर्षीय दि. जैन महासभाका वार्षिकोत्सव करके महासभाको पुनः उन्नति पथपर लानेका प्रबंध किया जाय ?

पारितोषिकमें अनुकरणीय सहायताः—सुसारीनिवासी सेठ रोडमलजी मेघराजवाले बडे विद्याप्रेमी हैं। आपकी तरफसे कई पाठशालाएं और बोर्डिंगोंको सहायता मिल रही है और बम्बई परीक्षालयके पारितोषिक फंडमें आप हरएक वर्ष सहायता देते हैं और इस वर्ष मालवा प्रां. सभाने नवीन परीक्षालय शुरु किया उसमें भी आपने पारितोषिकके सब रु. २४॥ चौवीस विद्यार्थीओंको बांटनेके लिये भेज दिये हैं।

'दिगंबर जैन'को सहायताः—श्रीयुत् हीरालाल मेलापचंद गोटावाला जयपुरकी तरफसे रु. ४) सहायतार्थ मिला है जो आभार सहित स्वीकार किया जाता है।

मंदसौरमें अपूर्व आनंदः—श्रावण शुक्ल ७ से पचीस दिन तक मन्दसौरमें बृहत् त्रैलोक्यपूजनविधान गांधी रतनचंदजी सुपुत्र भगवानदासजीकी तरफसे हुवाथा जिस मौकेपर श्री. पं. लक्ष्मीचंदजीको बुलाये गये थे जिनके कई व्याख्यानोंसे जैन और जैनों पर धर्मका बहुत प्रभाव पडा था और अन्यमतोंके कई प्रश्नोंका समाधान भी हुआथा।

देहलीमें वार्षिकोत्सवः—भादों शुक्ल १२ के दिन जैन बालसभा कूचा सेठ देहलीका वार्षिकोत्सव बाबू रामचन्द्रजीके सभापतित्वमें हुवाथा जिसमें स्या. वा. न्या. वा. पं. **गोपालदासजी** बरैया, न्या. पं. माणिकचन्द्रजी, पं. शिवनारायणजी त्रिवेदी आदिके अनेक व्याख्यान हुयेथे जिस समय आर्यसमाजी और सनातनी आदिके बड़े २ विद्वान पधारे हुये थे।

उपरैली कोठीके मुनीमः—श्रीयुत् डाह्याभाई शीवलाल निवेदन करते है कि मेरी तबीयत नादुरस्त रहेनेसे मैंने बीसपंथी उपरैली कोठी मधुवन (सम्मेदशिखरजी) से अपना संबंध छोड दिया है इसलिये

जिसकिसीको कोठीके निस्बत पत्रव्यहवहार करना हो या कोई रकम उपकर्ण भेजना हो अब दुलीचंद मुनीम उपरैली कोठी मधुवन पोस्ट पारसनाथके पतेसे भेजे।

निरीक्षण और सहायताः—स्याद्वाद महाविद्यालय काशीको श्री. सेठ केदारमल दत्तुमलजी छपरानिवासी १००) वार्षिक सहायता तो देते ही हैं और ता. ३०-८-१५ को विद्यालयका निरीक्षण करके १०००) रुप्या नकद भेट किये जिस उदारताके उपलक्ष्यमें प्रबंधकों व छात्रोंने एक सभा की जिसमें दानका महात्म्य व विद्यालयकी व्यवस्था दिखलाई गई और सेठ साहबको धन्यवाद दिया गया। आशा है अन्य उदार महाशय भी उक्त सेठका अनुकरण करेंगे।

भोजनशाला खुलीः—ब्यावरमें वैश्य भोजनशाला खुली है जिसमें कमानेसे कमजोर हो उनको भोजनवस्त्र दिया जाता है। सहायता भी ली जाती है। देखरेख केसरीमल वोहरा कालुराम काकरियाकी है।

मिल गईः—मेरठकी पुलिसको पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा बदमाशोंसे मिली थी वह मिल गई जिससे श्री बड़े मंदिरजीमें विराजमान की गई है। प्रतिमाजीकी उंचाई मय सिंहासन पौने तीन इंच है। जहांकी, यह प्रतिमा हो मालूम होनेपर वह ले सकते हैं—लखमूल जैनी सदरबाजार दालमंडी—मेरठ।

साहित्य सम्मेलनः—षष्ठ हिंदी साहित्य सम्मेलन ता. १५-१६-१७नवम्बरको लाहौरमें होनेवाला है।

लायब्रेरीके लिये सुभीताः—बनारसी उर्फदास जैन अध्यापक जैन पाठशाला रामपुर मनहारानखास (सहारानपुर) सूचित करते हैं कि जहां कहींके सज्जन महाशयोंको अपने स्थानपर पब्लीक लायब्रेरी खोलनेकी तथा जैन पुस्तकालय स्थापित करनेकी आवश्यकता जान पडती हो वे हमसे जवाबी कार्ड भेजकर पत्र व्यवहार करें। हम उन्हें बहुत कुछ सहायता दे सकेंगे और सभी सुभीता बतावेंगे।

ऐतिहासिक शोधः-पटनेके पदमकुएके पास जो खुदाई हो रही है उसमें महाराज चन्द्रगुप्तके समयकी कई ऐतिहासिक बातें प्रकट हुई हैं।

जैन मूर्त्तियां निकलीः—रीवां राज्यके रिनगोड परगनेमें जमीनसे एक वेदी जैन मूर्त्तियोंके साथ नीकली है। यह प्रतिमाएं छह सातसौ वर्षकी प्राचीन और चमत्कृत मालूम होती हैं। महाराज रीवां वहांही मंदिर बनवाना और शहर बसाना चाहते हैं जिसके लिये महाराजने ५ एकड जमीन व १२५) रु. वार्षिक पूजाखर्चके लिये प्रदान किया है। धन्य है आपकी धार्मिक उदारताको!

जज साहबका व्याख्यानः—पर्युषण पर्वमें इन्दौरमें नवीन मंदिरजीमें लाला जुगमंदरलाल जैनी एम. ए, बेरिस्टर-जज हाई-

कोर्टका व्याख्यान 'जैन धर्मकी आवश्यकता' पर हुआ था। जिसमें आपने कहा कि-"जैन धर्म मनुष्यकी उन्नतिके लिये अतिशय आवश्यक है। मौर्य चन्द्रगुप्तके समय जब सिकन्दर भारतमें आये उस वक्त भी उसकी खूब कदर थी। वह समय स्वामी भद्रबाहु श्रुतकेवलीका था तब दिगम्बर श्वेताम्बर दो फिरके नहीं हुए थे किन्तु मगधमें दुष्काल होनेसे जैनाचारमें शिथिलता आ गई थी। उसके ३१० वर्ष बाद दो फिरके हुए। यह जैनधर्म जैसा पहले अनमोल था वैसा अब भी है। सत्यके खोजीने इसकी खूब कदर की है। आचार्योंने इसको अच्छी तरह अनुभव किया है। सर्व प्राणी मात्र सुख चाहते हैं। सुखको देनेवाला यह धर्म है। बस, इसीसे उनको जैनधर्मकी जरूरत है इत्यादि"।

अंतरीक्षजीका मुकदमा।—यह मुकदमाकी तारीख आपसमें निकाल करनेके लिये ता. २९-९-१५ नियत की गई थी परन्तु उस तारीख तक दोनों ओरका निकाल न होनेसे आगे पुरावा करनेके लिये ता. ३-१-१६ नियत हुई है। इस बीचमें दूर दूरके साक्षीदार कमीशन उपर साक्षी लेनेका हुकुम हुआ है और इसलिये श्वेताम्बर जैनियोंकी तरफसे साक्षीकी ता. ९-१०-१५ दाखिल करनेका और दिगम्बर जैनियोंकी ओरसे जिरह करनेके लिये ता. २३-१०-१५ दाखिल करनेका हुकुम मिला है।

मालवा प्रां. सभाका अपूर्व औषधालय:-महामंत्री लाला भगवानदासजीके उद्योगसे इस औषधालयका कार्य बहुत ही बढ़ गया है। सब प्रकारकी शुद्ध दवाएं मुफ्त बंटवानेके लिये भारतमें ८५ ब्रान्च आफिस खोल दी हैं जिससे १०० में ९० रोगी हैजा, प्लेग, दम आदिसे बचे हैं। आजतक हजारों रोगियोंको इससे आराम हुआ है। इस औषधिदानप्रणालीकी जितनी तारीफ की जाय उतनी कम है। जिसकिसीको कोई भी रोगकी दवाकी आवश्यक्ता हो या कुछ सहायता भेजना हो तो निम्न लिखित पतेसे लिखना—लाला भगवानदासजी, महामंत्री मालवा प्रां. सभा औषधालय—**बड़नगर**।

अधिवेशन—दक्षिण महाराष्ट्र खंडेलवाल पंच महासभाका वार्षिक जलसा कार्तिक सुदी १४-१५को श्री क्षेत्र **कचनेरा**में होगा।

कमीशनथी जुबानीनी शरुआत—श्री सम्मेदशिखरजी (पूजा)ना केस माटे हजारीबागनी कोर्ट तरफथी गामेगाम कमीशनथी दिगंबर जैनोनी जुबानी लेवानी शरुआत ता. ८-१०-१५ थी थई चुकी छे जेमां प्रथम कमीशन बनारसथी परतावगढ, लखनऊ, सहारानपुर, मेरठ, अम्बाला, दिल्ही, जयपुर, इन्दौर, कानपुर वगेरे २६ स्थानोपर जुबानी लेशे जेनी साथे बाबू मोहनीमोहन मुकरजी वकील अने बाबू जुगमंदरदासजी जैन इन्सपेक्टर (बाराबंकी) छे. तेमज बीजुं कमीशन कलकत्ताथी आरा सुधीनुं नीकल्युं

छे, जेनी साथे बाबू रजनीकांतराय वकील अने बाबू मौजीलालजी छे.

जम्बूस्वामीका मेलामें महासभा और तीर्थक्षेत्र कमेटी–मथुराजीमें जम्बूस्वामीके मेलेपर ता. ३० नवम्बरको भारत दि. जैन महासभाका वार्षिक अधिवेशन भी हो जायगा! इसी मौकेपर ता. २६ से २८ तक भारत. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीका वार्षिक अधिवेशन भी होनेवाला है। इस अधिवेशनमें इसवार नियमावली संशोधन, समेदशिखरजी कोठीयों और मुकद्मोंके यथार्थ प्रबंध आदि अनेक आवश्यक और विचारणीय कार्य हैं। सब भाइयोंको और खास करके सभी तीर्थोंके प्रबंधक महाशयोंको तो येनकेन प्रकारेण अवश्य हाजिर होना चाहिए अगर कोई सज्जन कारणवशात् न आ सकेंगे तो निर्णय हुए कार्योंमें बहु सम्मातिमें उनकी भी सम्मति समझी जायगी। कृपया इस अवसर पर जरुर २ आप लोग पधारनेकी कृपा करें। आपका दर्शनाभिलाषी–भागमल परभूदयाल, महामंत्री, तीर्थक्षेत्र कमेटी।

अलमोनियम धातुसे हानि–आजकल बहुधा इस धातुके वर्तनोंका व्यवहार हलकेपन और सस्तेपनके कारण बढ़ रहा है परंतु हालमें डाक्टर हर्वर्टने इस धातुके विषयमें पता लगाया है कि इसके वर्तनोंका व्यवहार स्वास्थ्यके लिये अत्यन्त हानिकर है। क्योंकि भक्ष्य पदार्थोंमें नमकका होना आवश्यक है और नमक–अलमोनियमके संसर्गसे क्लोराईड नामक विष पैदा हो जाता है जो सब तरहसे हानिकर है। इसलिये ऐसी धातुके वर्तनोंका व्यवहार बंद करना चाहिए।

कार्तिक मासनी वधघट:–खास अंक साथे वहार पडनार जैनतीथिदर्पण मळतां जरा विलंब थशे माटे जणावीए छीए के कार्तिक मासमां सुद २-३ (एकठी) मंगळवारे छे तेमज वद ७ बे (रवी–सोम) छे. बाकीना दिवस बरावर छे.

पावापुरीका मेला:–श्रीमहावीरस्वामीके निर्वाणस्थान श्री पावापुरीमें इस वर्ष भी कार्तिक कृष्ण अमावास्याको वार्षिक मेला होनेवाला है जिसमें पधारनेके लिये मैनेजर घासीरामजी सभीको आमंत्रण करते हैं।



दशांग धूप:–यह धूप सुगन्धिमें बहुत अच्छा है और हरएक मंदिरजीमें वापरने योग्य है। मूल्य १। रुप्या रतल। मिलनेका पता-दशांग धूप कार्यालय-बडनगर [मालवा]

'શ્વે. સ્થા. કોન્ફરંસ પ્રકાશ'નો ખાસ અંક:-પર્યુષણ પર્વ પ્રસંગે અજમેરથી પ્રકટ થતા અઠવાડિક પત્રે પ્રકટ કરેલો આ મોટો સચિત્ર ખાસ અંક આશરે ૧૭૫ પૃષ્ઠનો અને શ્વે સ્થાનકવાસી કોમના અગ્રેસરો, દાની પુરૂષો તથા જાહેર સંસ્થાઓના ૪૯ ચિત્રોથી ભરપુર છે; જેમાં ગુજરાતી, હિંદી અને અંગ્રેજી ભાષાના ૯૦ લેખો જુદા જુદા વિષયો ઉપર

છે જેમાંના કેટલાક લેખો ઘણા ઉપયોગી અને વાંચવા લાયક છે. જો કે છપાઈ સફાઇ જોઇએ તેવી નથી તોપણ આ અંક પ્રકટ કરવા પાછળ ગંજાવર જહેમત અને ખર્ચ ઉઠાવેલો જણાય છે જે માટે એના ઉત્સાહી સંપાદક ધન્યવાદને પાત્ર છે. આવા મોટા પોથાની છુટક કિં. માત્ર ૭ આનાજ છે જ્યારે એ હિંદી-ગુજરાતી અઠવાડીક પત્રના ગ્રાહકોને મફત મળે છે. મહારાજ ચંદ્રગુપ્ત અને નગ્નંદારાંતિક સાધુ એ વિષયના બે લેખો દિગંબરી ઉપર આક્ષેપાત્મક છે, જેનો યોગ્ય ઉત્તર "જૈનસિદ્ધાંત ભાસ્કર" દ્વારા પ્રકટ થવાની જરૂર છે.

Samayak Path (सामायिक पाठ):-श्री अमितगतिकृत संस्कृत सामायिक पाठके हरएक श्लोकका ईंग्रेजीमें अनुवाद 'Jain Gazette' के संपादक बाबू अजितप्रसादजी एम. ए. एलएल. बी. लखनोरने किया है जिसको कुमार देवेंद्रप्रसादजीने संस्कृत श्लोकसहित वहुत ही उत्तमतासे प्रकट किया है। ईंग्रेजी पढ़े लिखे भाईओंको यह पाठ अवश्य देखना चाहिए। मूल्य ०)= और मिलनेका पता-कुमार देवेंद्रप्रसाद जैन, धी सेन्ट्रल जैन पब्लीशींग हाउस—आरा Arrah।

Jainism-not Atheism & the Six Dravyas of Jain Philosophy by Mr. H. Warren, London. price-A careful persual. Presented by Koomar Devendraprasad Jain-Arrah.

"જૈન શ્વે. કોન્ફરંસ હેરલ્ડ" ખાસ અંક:-મુંબાઈથી પ્રકટ થતા આ માસિકે ચાર અંક બંધ રાખી! આ જૈન ઈતિહાસ-સાહિત્યનો મોટો ખાસ અંક આશરે ૩૨૫ પૃષ્ઠનો પ્રકટ કર્યો છે જેમાં જૈન ઇતિહાસ અને પ્રાચીન જૈન સાહિત્ય વિષયના હિંદી ગુજરાતી અને અંગ્રેજી ભાષાના આશરે ૪૦ લેખો તેમજ ૮ ચિત્રો છે. "જૈન શાકટાયન" અને દિગંબર "સંપ્રદાયકે સંઘ" એ બે હિંદી લેખો શ્રીયુત નાથુરામજી પ્રેમીના પણ વાંચવા લાયક છે. એકંદરે આ ખાસ અંક જૈન ઈતિહાસ અને સાહિત્ય ઉપર વિશેષ અજવાળું પાડે છે. આવો અંક દરેક જૈન બંધુએ વાંચવાની અને સંગ્રહ કરી રાખવાની જરૂર છે એના લેખો સંગ્રહ કરવા પાછળ એના તંત્રી શ્રીયુત મોહનલાલ દલીચંદ દેશાઈ બી. એ. એલ.એલ. બી. એ જે પ્રયાસ સેવ્યો છે તે અતિશય પ્રશંસાપાત્ર છે. આ માસિકના ગ્રાહકોને તો આ ગંજાવર પોથો મફત મળે છે, જ્યારે છુટક મૂલ્ય બાર આના છે. મળવાનું સ્થળ-શ્વે. જૈન કોન્ફરંસ ઑફિસ—પાયધુની-મુંબાઈ.

સ્વામી વિવેકાનંદ—સદુપદેશ ભાગ ૨ જો-સસ્તું સાહિત્ય વર્ધક કાર્યાલય (અમદાવાદ)ની વિવિધ ગ્રંથમાળાનો આ ૫૭-૫૯ મો મણકો છે. જે ૪૫૦ પૃષ્ઠનો હોઈ એની કિ. માત્ર બાર આના છે જ્યારે એના ગ્રાહકોને તો આઠ આનેજ પડે છે. આ પુસ્તકમાં સ્વામી વિવેકાનંદના જુદા જુદા પ્રસંગોના ૪૫ જાતના ઉપદેશનો મોટો સંગ્રહ છે, જે દરેક વાંચવા તથા સમજવા લાયક છે આ કાર્યાલય ઉત્તમોત્તમ પુસ્તકો સસ્તી કિંમતે પ્રકટ કરી રહ્યું છે એમાં તો જરાએ શક નથી. આ ગ્રંથમાળાનું વાર્ષિક મૂલ્ય માત્ર બે રૂપ્યા છે.

પાવાગઢ દિ. જૈન સિદ્ધક્ષેત્ર કોઠીનો રિપોર્ટ:-આ તીર્થ માટે કમીટી નીમાયા પછી કામ સારૂં ચાલે છે અને જુનું દેવું વસુલ થતું જાય છે. ૨૪૩૯-૪૦ એ બે વર્ષનો આ રિપોર્ટ છે. ઉપજના પ્રમાણમાંજ ખર્ચ કરવા ભલામણ કરીએ છીએ. એના મંત્રી શેઠ લાલચંદ કહાનદાસ ધર્મપ્રેમી અને ખંતીલા છે.

વધુ માટે પુઠાં ઉપર જુઓ.

सचित्र खास अंक

कब और कैसे मिलेगा ?



"दिगंबर जैन" का वीरनिर्वाण सचित्र खास अंक और जैनतिथिदर्पण जिन २ ग्राहकोंका वार्षिक मूल्य रु. १-१२-० दिवाली पहले मनीऑर्डरसे आ गया होगा उन्हीको कार्तिक शुक्ल पूनम तक खास अंक तैयार होतेही रवाना किया जायगा और जिन२ ग्राहकोंका वार्षिक मूल्य नहीं आया होगा उन्होंको सचित्र खास अंक रु. १-१३-० के वी. पी. से भेजा जायगा।

वी. पी. करनेके लिये अब अलग् कार्डसे सूचना नहीं दी जायगी।

वी. पी. स्वीकार करनेका जिनका ईरादा न हो उन्होंको उचित है कि अभीसे हमको एक कार्डद्वारा सूचित करें।

मैनेजर.

સચિત્ર ખાસ અંક ક્યારે મળશે ?

"દિગંબર જૈન"નો વીર નિર્વાણ સચિત્ર ખાસઅંક અને જૈન પંચાંગ જે જે ગ્રાહકો અને મેમ્બરોનું લવાજમ આવી ગયું હશે તેમને કાર્તક સુદ ૧૫ના અરસામાં તૈયાર થતાંની સાથેજ રવાના કરવામાં આવશે.

જેમનું લવાજમ નહીં આવ્યું હોય તેમને એટલે—

૧ ગ્રાહકોને રૂ. ૧-૧૩-૦ ના વી. પી. થી
૨ અમદાવાદ બોર્ડિંગના મેમ્બરોને રૂ. ૩-૧-૦ વી. પી. થી અને
૩ રતલામ બોર્ડિંગના મેમ્બરોને રૂ. ૨-૧-૦ ના વી. પી. થી આવતા માસમાં ખાસ અંક વગેરે મળશે માટે જે જે ગ્રાહકો અને મેમ્બરોને ખાસ અંક વી. પી. થી મળે, તે તેમણે સ્વીકારી લેવો. એ માટે હવે છુટા કાર્ડથી ખબર અપાશે નહીં.

વી. પી. લેવાનો વિચાર ન હોય તેમણે અત્યારથીજ એક કાર્ડથી અમને ખબર આપવી.

મેનેજર.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

શેઠ પ્રેમચંદ મોતીચંદ દિ. જૈન બોર્ડિંગ-અમદાવાદ.

મહેરબાન સાહેબ,

વિ. વિ. કે આ બોર્ડિંગનો બારમો મેલાવડો વીર સં. ૨૪૪૨ના કાર્તક સુદ ૮ રવીવાર તા. ૧૪-૧૧-૧૫ ની પ્રભાતે ૮॥ વાગતે બોર્ડિંગના ભવ્ય મકાનમાં થનાર છે તે માંગલિક પ્રસંગે આપ આપના કુટુંબ અને મિત્રમંડળ સહિત પધારવા તસ્દી લેશોજી.

લી૦ સેવક.
લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદ ચોકસી,
સેક્રેટરી.

સલાપોસરોડ
અમદાવાદ
તા. ૨૧-૧૦-૧૫

क्षमावनीका दिन।

क्षमावनीका दिन अश्विन कृष्णा द्वितियाका दिन है, इस दिन षोड़सकारण व्रत भी पूर्ण होता है अर्थात् जो श्रावक श्राविका षोड़सकारण व्रत पालते हैं वे प्रतिपदाका अंतिम उपवास करके इस दिन पारणा करते हैं।

पूर्नों पड़िमा और दोयज ये तीनों दिन ऐसे हैं कि जिनको प्रती श्रावक श्राविका क्रमसे दशलक्षण (पर्यूषण) रत्नत्रय और षोड़सकारण आदि व्रतोंसे छुट्टी पाते हैं।

यद्यपि सदैया (सदा देवपूजा, स्वाध्याय, गुरुसेवा, संयम, तप और दान यथाशक्ति करनेवाले) जैनियोंके लिए तो नित्यही पर्व है, परन्तु भदैयां (जो केवल भादोंहीमें जिनमंदिरमें सुशोभित होते हैं) जैनियोंको अवश्यही छुट्टी मिलती है, मानों कि उनका तो १ वर्षका बोझ कम हुवा। वे कहते हैं 'कर दोयजके पारने अरु गये मंदीरके वारने' अर्थात् फिर जीवन शेष है और कोई विघ्न बाधा न आई तो फिर भादोंजीमें मंदिरजीमें मिलेंगे, साल किसने देखा है? क्या जाने क्या हो? कौन बचे कौन जाय? इत्यादि सोचकर ही ये लोग इस दिन प्रातःकाल स्नान कर वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित होकर, घरमें खूब मालताल तैयार कराकर, मय बचे बच्चीयोंको लिये हुए श्री जिनमंदिरको आरहे हैं, ताकि परस्पर सब लोगलुगाई मिलकर क्षमाप्रार्थना करें और आपभी क्षमा करें, तथा एक वर्षके लिये छुट्टी भी मांगलें।

कुछभी हो चाहे लोग इसे रूढ़ि ही क्यों न कहें परन्तु हम तो इसे अच्छा समझते हैं, क्योंकि परस्पर मिलने और प्रार्थना करनेसे राग द्वेष कम होता है, और मेल बढ़ता है।

यों तो भादोंके प्रारंभसेही कमसे कम प्रातःकाल मंदिरमें कुछ जनसंख्या सदासे विशेष दिखाई देने लगती है, परंतु भादों सुदी पंचमीसे तो अवश्यही मंदिरोंमें जगह की कमी प्रतीत होने लगती है। शंका होने लगती है कि मंदिरके मंडपके आगे औरभी मंडप बनाना पड़ेगा क्या? परंतु यह शंका हमारे परम दयालु सद्विवेकी अपने आपकी गणना सुधारकोंमें करानेवाले कुछ पाश्चात्य विद्याभ्यासी बाबूगणोंने निर्मूल कर दी है। अर्थात् उन्होंने इन दिनोंमेंभी मंदिरका आना छोड़साही दिया है। जब वे न आयेंगे तो उनकी सन्तान तो उनसे एक कदम आगे चलनेवाली, वह भला क्यों आने लगी, बस अब भला फिरभी मंदिरमें जगहकी कमी रह सकती है? और अबतो ऐसी शंका करनाही भूल है, क्योंकि प्रथमतो बारह महीने इतने लोग

मंदिर आतेही नहीं और जो आते हैं वे आगे पीछे आ जाते हैं, इन दिनोंमें भी जो आते हैं, सो समझ लीजिए, कि उनकी कितनी कितनी अवस्था हो चुकी है, कुवेमें जब पानीकी झर बंद हो जावे और पानीका खर्च बराबर व उससे अधिक होने लगे तब क्या कुवा कभी भी न सूखेगा?

इसी प्रकार देखो, जब मंदिरोंमें अब नई सन्तान तो आवेगी नहीं और पुराने आदमी जिन्हें कुलधर्मकी खबर हैं वे आते हैं सो भी दिनोंदिन कम हो रहे हैं। तब अवश्य है कि एक दिन ऐसा आवेगा, कि जैसे सम्पूर्ण कर्मोंकी निर्जरा होनेपर जीव मोक्ष हो जाता है और फिर वह शांति अवस्था धारण कर लेता है उसी प्रकार ये मंदिर भी मनुष्योंसे रहित (मोक्ष) होकर शांतिभवन बन जांवगे !

मनुष्योंने जैनधर्म बहुत दिन सेवन किया है। अब पक्षियोंकी बारी आई है, इसीसे देखो उन्होंने (पक्षियों)ने मंदिरोंमें अपना घर बनाना आरंभ कर दिया है। मंदिरोंमें टंगी हुई हांडी फानूसें ही उनके घरका काम दे देती हैं, ऊपर पक्षिराज और नीचे मूसराज (ऊंदड़) बीच (मध्य) बिल्ली और उसका शत्रुभी आ पहुंचता है। यह भी तो दयाका काम है कि चाहे आप धर्मसेवन न भी कर सकें परंतु पशुपक्षियोंको अवसर अवश्य दिया जाय। दूसरी एक बात यह है कि सब लोग नित्य मंदिरोंमें आवे तो विचारे तिर्यंचोंको दूसरा घर बनाना पडता है। विचारे आभूषणोंकी झनकार, कपडोंकी फटकार, मनुष्योंकी पुकार, व्रतियोंकी डकार, प्रबन्धकोंकी झिड़कार, बच्चोंकी खिलवाड़, नरनारियोंकी दिखवाड़ और मालियोंकी पौवाड़के मारे भागेभागे फिरते हैं।

इसीसे हमारा नवीन सुधारक दल दया करके अपने अपने घरोंमें नहीं, न नया घर बनवाकर, किन्तु उन्हीं बने हुवे मंदिरोंमें उन विचारे (तिर्यंचों) को आश्रय देना चाहते हैं।

यही कारण है कि आज हमारे नवीन शिक्षित महाशय यहां नहीं दिखाई देते हैं। हां अनन्तचतुर्दशीको अवश्य ही कुछ लोग आये थे सो भी कौतुकवश या जैनियोंकी संख्यामें गणना करानेके लिए। अस्तु यहि महिरबानी बहुत है। एक बात यह भी तो है कि वे आकर क्या करें? उनके मनोनुकूल सभ्यता तो (पाश्चात्य लोगोंके समान) यहां दिखाई देती नहीं, न स्वच्छंदता ही यहां है, यावत् बैठो तावत् चुपचाप बैठो, न यहां कुर्सी न मेज, बहुत हुवा तो फर्श जाजम चटाई दरी। भला बैठें तो कैसे बैठें? पलाठी लगाकर पैर सिकोड़ कर तो बैठ ही नहीं सकते हैं। भला, यह कौनसा न्याय है कि भट्टारकजी तो दो हाथ ऊंचे सिंहासन पर नरम नरम गदियां बिछाकर बैठें जो गुरु

ब्रह्मचारी कहे जाते हैं और सेठ लोग भी रुईके मोटे मोटे गद्दोंपर बैठें जो कि उनके शरीरके अनुकूल पड़ते हैं, तब विचारे बाबूवोंने क्या बिगाड़ किया है जो उनके सुभीते के अनुसार कुर्सी मंदिरमें न लग सके। क्या जबरदस्ती नहीं है ? बस इसीसे उन्हें यह गड़बड़ पसंद नहीं। वे शांतिप्रिय होते हैं, शोरगुल पसंद नहीं करते और यहां तो शोरगुल बात बातमें होता हैं, यह मेल कैसे बने ? इसके सिवाय एक अड़चन मंदिरमें जानेमें और होती है, वह यह कि वहां जाने पर कोई कहता है पूजन करो, कोई दर्शन की प्रतिज्ञा कराता है, कोई हरी कंदमूल त्याग करवाता है, कोई उपवास इकाशना करने, नीरस खाने इत्यादिका उपदेश करता है, कोई छापेकी निंदा। कोई वर्तमान सभ्यतापूर्ण पाश्चात्य ड्रेसकी निंदा, कोई खड़े होकर लेक्चरबाजीकी निंदा, कोई उक्त ज्ञानशून्य व्रतादिक न पालनेवालोंकी निंदा करता है। अब कहिये कि वहां कषाय उत्पन्न होनेका प्रत्यक्ष कारण मिलता है तो जाकर क्या करें ? स्वतंत्रता खोवें और कर्मबंध करें ? अरे ! मूर्ख होय तो न समझे परंतु ये डिगरियां पाकर भी न समझे तो फिर सब पढ़नाही व्यर्थ गया। समझे, इसीसे आज प्रतिपदाके पश्चात् क्षमावनीमें ये लोग नहीं आये, न अपराध करें, न क्षमा मांगे। ठीक है यही नियम। हम भी यही कहते हैं कि सब प्रकार अंतर बहारके दोषोंसे रहित हो जावो तब क्षमाकी आवश्यकताही न पड़ेगी।

यह तो हुवा, कोई आये चाहे जाये, परंतु नथ कि सब लोग आज नवीन वरवधूके जैसे श्रृंगारयुक्त दिख रहे हैं और इसी प्रकार सब पर्वदिनोंमें रहते व रहे हैं तब ये स्वदश औरत मर्द न जाने कौन है ? जो साधे कपड़े पहिरे आते हैं और सामायिक, पूजा, स्वाध्याय करके चले जाते हैं। न हंसना न बोलना, मन इस जैसे मालूम होता है ये घरके दरिद्र हैं, न जेवर है न कपड़े; पहिरें कहांसे? और कोई दिहाती (ग्रामीन) होंगे, वे क्या जाने बोलना हंसना ! पर यार ये बड़े भक्तिसे पूजा करते हैं उसीमें मस्त हो जाते हैं, सामायिक समय तो निरे पत्थरकी मूर्ति बन जाते हैं, परंतु शास्त्रमें बड़े निपुण दिखते हैं। देखो ना, एक एक बातको कैसे बारीकीसे समझाते हैं, बापरे बाप, बालकी खाल निकालते हैं, आज तक सूत्र (तत्त्वार्थ)जीका अर्थ कहो कौनने समझाया है ? पर वह जवान आदमी देखा उसने तो १० दिनमें १० अध्याय पढे और रोज एक एक धर्म जैसे उत्तम क्षमा फिर उत्तम मार्दव ऐसे दश दिनमें दशों धर्म समझाये, क्रोध कषाय तो इनको छू नहीं निकली। कभी कभी इनमेंसे किसीके भावोंमें कुछ कषाय मालूम पड़ती तो वही आदमी शायद उसे जयचंद कहते हैं सबको "अंतरंग सभावाली बात" कह कर शांत

कर देता था, न जाने यह अंतरग सभा कोई मंत्र है या क्या ? हो न हो वही बात तो नहीं जो "दिगम्बर जैन" में "पर्यूषण पर्व और मित्रोंकी वार्तालाप" करके एक लेख छपा है ? अरे ठीक, ठीक; ये वेही सब लोग हैं जयचंद, टेकचन्द, मनीरामजी, शांतिकुमार और इनहीके पुत्रकलत्र परिवारवाले, अच्छा कपड़े न पहिरे जेवर न पहिरे न सही परन्तु इनके घरोंमें भी इन पर्व दिनोंमें मामूली दिनोंसे भी नीरस लूखा सूखा भोजन बनता रहा है, ये बड़े कंजूस दिखते हैं, परन्तु यदि कंजूस (सूम) होते तो इन्होंने इतनी पुस्तकें बांटीं, कितनेही लोगोंको भोजन कराते रहे, व्रत भंडार इत्यादि भी अच्छा दिया, तो कंजूस कैसे ! हां, समझे गरिष्ट भोजनसे प्रमाद व कषायें बढ़ती हैं, रोग भी घेरते हैं और वस्त्राभूषणोंसे रागभाव बढ़ते हैं, ऐसा शास्त्रोंमें कहा है । इसीसे ये ऐसा करते होंगे ।

आश्चर्य यह है कि ये भी अंग्रेजी मालूम होते हैं । देखो ना एक दिन एक कोई साहेब आया था, तब इन्होंने गिटपिट गिटपिट क्या जाने क्या कहा ! कि उस साहिबने चटसे जूते उतार दिये और टोपी उतार दी फिर पांव धोकर मंदिरमें गया, न जाने उस (साहब)ने क्या कहकर भगवानके साम्हने सलाम किया और 'विल् सी अगेन्' (Will see again) कहकर चला गया, सो अंग्रेजी पढ़े लिखे आदमीकी यह दशा देखकर मुझे आश्चर्य ही होता है ।

बावले कहींके क्या ? सभी इंग्रेजी पढ़े लिखे धर्मसे विमुख हो जाते हैं, और क्या सभी पुराने लोग धर्ममें दृढ़ होते हैं ? अच्छा भाई चलो अब तो **भजन** होने लगा, बोलो जिन माताकी जय ।

सब लोग बाहर निकले और परस्पर गले लग कर मिले, क्षमा की और कराई पश्चात् अपने अपने घरका मार्ग पकड़ा, परंतु ६–७ आदमियोंके जीमें जो ऊपर लिखी बातें कर रहे थे यह बात जम गई कि इन जयचंद टेकचंद आदिकी मंडली बहुत अच्छी है । किसी दिन हम लोग भी इनसे मिल कर इनका उद्देश्य सुने और पूरा परिचय प्राप्त करें, पश्चात् उन्हींकी मंडलीमें सम्मिलित हो जावेंगे ।

नोट–उक्त बातचीतसे यह भाव निकलता है कि यदि कोई मनुष्य सम्यक्ज्ञान सहित थोडा भी चारित्र पालन करे तो वह अपना प्रभाव सब जीवोंपर डाल सकता है, यही कारण था कि निर्ग्रन्थ साधु अपने रत्नत्रयके तेजसे सिंह जैसे क्रूर और सर्प जैसे क्रोधी जीवोंको शांति कर देते थे ।

कार्य दूर भागनेसे नहीं होता है, किन्तु मिलनेसे होता है। धर्मभ्रष्ट कहकर नवयुवकोंको तिरस्कारपूर्वक छोड देना और 'नानसेन्स्' 'ओल्डफूल' कहकर वृद्धोंसे घृणाकर दूर

भाग जाना यही एक मवल उन्नतिका बाधक कारण है।

परस्पर मिलना सीखो, एकान्त छोड़ कर समभावोंसे विचार कर एक दूसरेके सिद्धान्तोंको मनन कर हट छोड़ ग्रहण करो। अपनी बुद्धिसे उन्हें लाभ पहुंचावो और उनके रीति रिवाजोंसे तुम पाठ पढ़ो, अपनी भूल पहिले सुधारो फिर दूसरोंको समझा कर उनकी भूल छुड़ावो तुम सब एक हो। पिता पुत्र भाई भाई हो, जयचंद बाबूसे पाठ सीखो, और फूटको कूट कर भगा दो। आवो परस्पर मिल जावो और सच्चे हृदयसे बोलो—

खम्मामि सव्व जीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्तीमें सव्व भूदेपु वेरं मज्झं न केणवि॥

क्षमाप्रार्थी—

दीपचन्द परवार-नरसिंहपुर (C. P.)

प्राचीन शोधखोळ अने वस्तुशास्त्रनी अगत्यता.

("मोडर्न रिव्यु" उपरथी अनुवाद)

ગયા સીત્તેર અથવા એંસી વર્ષમાં પ્રાચીન વસ્તુની શોધખોળથી જ્ઞાનમાં જે વધારો થયો છે તેનાથી ભારતીય જ્ઞાનની બધી શાખાઓના વિદ્યાર્થીઓ સારી રીતે માહિતગાર છે. પ્રાચીન વસ્તુશાસ્ત્રની લેખિત તેમજ મોંઢાની દંતકથાઓના પ્રમાણ સાબીત થયાં છે અને તેથીજ હિંદનો ઇતિહાસ કથારૂપે લખવાનું મારાથી બની શક્યું છે. સિક્કા, નકશા, ઇમારતો, શિલાલેખ, તામ્રપત્ર, ચિત્રો અને ઘણા પરિશ્રમથી અને નિયમસર ખોદી કાઢેલી અન્ય પુરાણી વસ્તુઓથી ઐતિહાસિક ગ્રંથોની ત્રુટીઓ પૂરી થઇ છે, શંકાશીલ બાબતોનો નિર્ણય થયો છે, અને ક્રમવાર બનાવો લખવાનું કામ પાકું થયું છે.

જૈનોનો શાસ્ત્રભંડાર ઘણો અગાધ છે, ઘણા પરિશ્રમથી તેનું રક્ષણ કરે છે પણ પ્રાચીન શાસ્ત્રોનો ઘણો ભાગ ગુપ્ત પડી રહેલો છે. ઐતિહાસિક દૃષ્ટિથી જોતાં એમના ગ્રંથો ઘણા કામના છે, પણ સાહિત્યની કેટલીક બાબતોમાં જે મતભેદ છે તેનો નિર્ણય કરવા માટે **પ્રાચીન શોધ** કરવાની ઘણી જરૂર છે.

धनवान जैनोनी फरज.

જૈન જ્ઞાતિમાં કેટલાક એવા ધનવાન પડેલા છે કે તેમની જ્ઞાતિના સાર્વજનિક કામમાં ખુલ્લે હાથે પૈસા વાપરી શકે. ભાષા સંબંધી મારૂં જ્ઞાન એટલું બધું થોડું છે કે હું પ્રાચીન શાસ્ત્રો તપાસવા તેમ છપાવવા સમર્થ નથી, માટે જે બાબતની મને માહિતી છે, તે ઉપર થોડુંક લખવા હિંમત ધરૂં છું અને આગળ ઉપર લાભકારી નીવડે એવી કેટલીક સૂચનાઓ કરવા ધારૂં છું. મારી અંતઃકરણની ઇચ્છા એવી છે કે જૈન જ્ઞાતિના અગ્રેસરો અને ખાસ કરી સાર્વજનિક કામોમાં દ્રવ્ય ખર્ચનારા હોય તેમણે આ બાબતપર લક્ષ પહોંચાડવું અને પોતાના ધર્મ અને જાતિ ભાઇઓના ઇતિહાસની શોધખોળમાં ઘણા પૈસાનો ખર્ચ કરવો.

शोधखोळनुं स्थळ.

શોધખોળનું ક્ષેત્ર ઘણું વિસ્તીર્ણ છે. હાલના વખતમાં ઘણા જૈનો રજપુતાના અને પશ્ચિમ હિંદુસ્તાનમાં માલુમ પડે છે, પણ હમેશાં તેમ નહોતું. જૈનધર્મ હાલ જેટલો છે તેના કરતાં અસલ ઘણો ફેલાયો પામ્યો હતો. સાતમાં સૈકામાં પટનાની ઉત્તરે **વૈશાલી**માં

અને પૂર્વ બંગાળામાં જૈન ધર્માનુયાયીઓ ઘણાજ હતા, પણ હાલ ત્યાં બહુજ થોડા છે. અગીયારમા તથા બારમા સૈકામાં બુંદેલખંડમાં જૈન ધર્મ ઘણો ફેલાયલો હોય તેવા પ્રમાણ મેં જાતે ઘણાં જોયાં છે, પણ હાલ ત્યાં એક પણ જૈની નથી. દક્ષિણ (દખણ) માં તથા તામીલ દેશોમાં જૈન ધર્મ કેટલાક સૈકા સુધી મુખ્ય ધર્મ તરીકે ફેલાયો હતો પણ ત્યાં હાલ તદ્દન લુપ્તપ્રાયઃ થઈ ગયો છે.

ચંદ્રગુપ્ત મૌર્ય વિષેની દંતકથા.

ઉપર કહેલી હકીકત ઉપરથી આપણે શોધ કરવાનું એક વિશાળ ક્ષેત્ર જડી આવે છે. ચંદ્રગુપ્ત મૌર્ય ભદ્રબાહુસ્વામીની સાથે શ્રવણબેલગુલ સુધી ગયા અને પછી સમાધિમરણ કરી દેહત્યાગ કર્યો હતો એવી દંતકથા સાબીત કરવા પ્રાચીન શોધ કરવાની ઘણી જરૂર છે. તમારામાંના ઘણા જાણતા હશે કે આ બાબત માટે મી. લેવીસ રાઈસ અને ડૉ. ફ્લીટ વચ્ચે સખત વાદવિવાદ ચાલે છે. જૈનત્વની દ્રષ્ટિથી વિચાર કરી આ વિષયનો નિર્ણય કરવાની જૈન વિદ્વાન માટે આ તક અમૂલ્ય છે, પણ આવા કાર્ય માટે એક ખરેખરા સાક્ષરની જરૂર છે કે જેથી તે માહિતી સાથે વચ્ચે પડી શકે. વિષય પ્રતિપાદન કરવા માટે આજના જમાનામાં સત્યતાની સાથે તર્કવિતર્કથી ભરેલા દાખલાદલીલોની અપેક્ષા વિદ્વાન મંડળી વધારે રાખે છે.

દક્ષિણમાં ધર્મના ઝગડા.

જે દેશોમાં એક વખત જૈન ધર્મનો ઝુંડો ફરકી રહ્યો હતો ત્યાં શા શા કારણોથી જૈન ધર્મની પડતી થઈ તે વિષયની તપાસ કરવી યોગ્ય છે અને વિદ્વાન જૈનોએ આમાં લક્ષ રાખવું જોઈએ.

દક્ષિણના પ્રદેશોમાં ચોલવંશના શૈવધર્મ અને પ્રાચીન રાજાઓના જૈનધર્મ એ બે વચ્ચેનો વિવાદગ્રસ્ત વિષય તેનું સંશોધન બીલકુલ થયું નથી.

વિચારવા યોગ્ય કેટલાક ગ્રંથો.

આવા વિષયોનો નિર્ણય કરવા માટે જૈન સ્તૂપ, મૂર્તિઓ, શિલાલેખો વીગેરેની તપાસ થવાની બહુ જરૂર છે. આવા ઘણા કીર્તિસ્થંભો જમીનમાં દટાઈ રહેલા છે અને કુશળ આદમી દ્વારા ખોદાવવાની રાહ જોઇ રહેલા છે. જે જે કોઈ જૈન પુરાતન વસ્તુઓનું નિરીક્ષણ કરવા માંગતા હોય તેમણે પ્રહેલાંના ચીન યાત્રીઓના ગ્રંથો વાંચવા જોઇએ. અને ખાસ કરી હુયેનસંગ જે ચીન જાત્રાળુ સાતમા સૈકામાં હિંદુસ્તાનની જાત્રાર્થે નીકળ્યો હતો તેણે જૈન શીલાલેખોની જે નોંધ કરી છે તેનો અભ્યાસ કરવો જોઇએ. આવા લેખો આજ નષ્ટપ્રાયઃ થઈ ગયા છે. જે જૈન વિદ્વાન આ પુસ્તક જોવા ઇચ્છતા હોય તેમને જો ચીન ભાષાનું જ્ઞાન ન હોય તો અંગ્રેજી અગર ફ્રેંચ ભાષાનું જ્ઞાન તો હોવુંજ જોઇએ, પણ હું ધારૂં છું કે હાલમાં પોતાના ધર્મનું જ્ઞાન ધરાવવા ઉપરાંત તમામ ઇંગ્રેજી ભાષાનાં પુસ્તકો વાંચવા લાયક જ્ઞાન ધરાવનારા ઘણા હશે અને આવી શ્રીમંત કોમના માણસોએ ગ્રંથોની કીંમત જોઇને ડરી જવું જોઇએ નહિ.

जैन कीर्तिस्थंभोने बौद्ध धर्मना समजवानी भ्रांति.

કેટલેક સ્થળે જે ખાસ જૈનના સ્થંભો છે તેમને ભૂલથી બૌદ્ધના લખવામાં આવ્યા છે. આજથી અઢારસો વર્ષ ઉપર કનિષ્ક રાજાએ પણ જૈનને બદલે બૌદ્ધ સ્થંભ સમજવાની ભૂલ કરી હતી. જ્યારે એના જેવા ભૂલ કરે તો હાલના પુરાતન શોધકો જૈનની કૃતિઓને બૌદ્ધ તરીકે સમજે તો કંઈ નવાઈ જેવું નથી.

હું ધારું છું કે બૌદ્ધની માફક જૈનો પણ સ્તુપ અને વેદીની આગળ પાછળ પથ્થરના કઠેરા હમેશાં બાંધેજ છે એ. મી. અલેકઝાન્ડર કનીંગહામને કદી માલુમ હતું નહીં. જ્યારે જ્યારે આવા કઠેરા અને સ્તુપો તેમના જોવામાં આવતા કે તેઓ બૌદ્ધના છે એમ તેઓ ઠોકી બેસાડતા હતા. જો કદી જીર્ણ સ્તૂપો જોવામાં આવે તો કહેતા કે બૌદ્ધલોકના છે. જો કે મુંબાઇના પ્રસિદ્ધ વિદ્વાન **ભગવાનલાલ ઇંદ્રજી** જાણતા હતા કે જૈનો સ્તુપો બનાવતા હતા અને સને ૧૮૬૫ સુધીનું જે કંઇ એમને જ્ઞાન હતું તે પ્રકાશિત કર્યું હતું, તોપણ મી. કેનોડીએ મીસ્ટ્સે (Qadiamists) એ બાબતપર વિચાર નહીં કર્યો કે જૈન સ્તૂપનો વિષય સંશોધન કરવા યોગ્ય છે. ત્રીશ વર્ષ બાદ સન ૧૮૯૭માં મી. બુલરે (A Legend of the jain stupa at mathura) **મથુરાના જૈન સ્તુપ** નામનું પુસ્તક પ્રકાશિત કરી આ વિષય જાહેરમાં આણ્યો. સન ૧૯૦૧ માં The stupas and other antiquities at Mathura **"જૈન સ્તુપ અને મથુરાની બીજી પ્રાચીન વસ્તુઓ"** નામના મારા ગ્રંથ દ્વારા સર્વ મનુષ્યોને આ બાબતની માહીતિ મળી કે તદન બૌદ્ધોને મળતા જૈન સ્તૂપ અને કઠેરા અસલ બંધા હતાં પણ હજુ મને શંકા છે કે એક પણ હયાત સ્તૂપ જૈનોનો લેખાતો હોય, મારા ગ્રંથમાં દર્શાવેલા મથુરાનો સ્તૂપ બેદરકારીથી, ખોદવાથી તદન નષ્ટભ્રષ્ટ થઇ ગયો. મારી ખાત્રી છે કે હજી જૈનોના સ્તૂપો છે, જો તપાસ કરવામાં તો મળે પણ ખરા. બીજે કોઇ ઠેકાણે હોય તેના કરતાં રજપુતાનામાં વિશેષ મળી શકે તેમ છે,

कौशांबी विषे मतभेद.

મારો એવો મત છે કે અલ્હાબાદ જીલ્લાના **કોશી** ગામમાં જે ખંડીયેર દેખાય છે તે જેમ મી. કનીંગહામ ધારે છે તેમ બૌદ્ધ લોકોનું નહિ, પણ જૈનોનું છે. ખરેખર આ ગામ જૈનોની કૌશાંબી નગરી છે, અને જે જગ્યાએ જૈન મંદિરો છે તે હજુ પણ જૈનીઓનું જાત્રાનું સ્થળ ગણાય છે. બારહીત (Barhit) ની નજીક બુદ્ધ લોકનું કૌશાંબી શહેર એક જુદુંજ સ્થળ છે એવું માનવાને મેં સબળ કારણો આપ્યાં છે. આ સંબંધી મારો **કૌશાંબી અને શ્રાવસ્તીનો નિબંધ** (જર્નલ રૉયલ એશીઆટીક સોસાયટી જુલાઇ ૧૮૯૮) જ્યારે પ્રકટ થયો ત્યારે ડૉ. ફ્લીટે બતાવ્યું હતું કે પાણિનીના મત પ્રમાણે કૌશાંબી અને વન કૌશાંબી એ બે જુદાં જુદાં સ્થાન હતાં. હું ધારૂં છું કે બૌદ્ધ કૌશાંબી વનમાંનું હતું. હું જૈનોને ભલામણ કરૂં છું કે કૌશાંબીની પ્રાચીન વસ્તુઓની તેમણે તપાસ કરવી જોઇએ. આ વિષેની કેટલીક બાબતો અનિશ્ચિત રહી છે એમ સંપૂર્ણ બતાવ્યું છે.

જમીન ઉપરના સ્થંભોનું નિરીક્ષણ.

જૈન શાસ્ત્રોમાં જણાવેલી બાબતો અને ચીનના યાત્રાળુ અને બીજા લેખકોનું કહેવું ધ્યાનમાં રાખી જમીનપરના કીર્તિસ્થંભોનો અભ્યાસ કરવામાં આવે તો ઘણો લાભ થવા સંભવ છે, સંતોષકારક પરિણામ લાવવા માટે સંશોધન અને નિરીક્ષણ કરનારાઓએ ઉપલબ્ધ નકશાઓનો અક્કલથી ઉપયોગ કરવો, આસપાસની વસ્તુઓનું બ્યાન સ્પષ્ટ લખવું, યથાર્થ માપ કાઢી ફોટોગ્રાફનો છુટથી ઉપયોગ કરવો. ખોદવાના કરતાં આવી જાતની તપાસથી જૈન ધર્મનો ઇતિહાસ અને જે જે દેશોમાં પહેલાં જૈનોનો પુષ્કળ જયો હતો ત્યાં કેવી રીતે પડતી થઇ વીગેરે બાબતો બહુજ સ્પષ્ટ થાય.

→→ પુસ્તક લેખન. ←←

મી૦ ગ્રીનોએ જૈનમત વિષે જે કંઈ લખ્યું છે તેનો ખુલાસો ૧૯૦૯ માં મી. સેરૂપેરીસે ફ્રેંચ ભાષામાં કર્યો છે તે જોવાને દરેક સત્ય શોધકને હું ભલામણ કરૂં છું. એનું સવિસ્તર વર્ણન ૧૯૦૯ ના જુલાઈ ઑગસ્ટના ફ્રેંચ એશીયાટીક જર્નલમાં પ્રગટ થયું હતું. ફ્રેંચ ભાષા નહીં સમજનારા માટે મી. ધીનોએ જે સુચી તૈયાર કરી છે તે ઘણી લાભકારી છે.

ખોદાણ—ખોદાણનું કામ ઘણું ગુંચવાડા ભરેલું છે માટે પ્રાંતિક સુપ્રીન્ટેન્ડન્ટ અગર પ્રાચીન વસ્તુશાસ્ત્રના ડીરેક્ટર જનરલની સલાહ સિવાય મોટા પાયા ઉપર ખોદાણનું કામ ઉઠાવવું જોઇએ નહિં. બેદરકારીથી ઘણું નુકશાન થયું છે. હું જણાવી ગયો છું કે મથુરાના જૈન સ્તૂપની બરાબર નોંધ નહીં કરવાથી નાશ પામ્યો હતો. જેમ જેમ ખોદાણ કામ વધે તેમ તેમ દરેક ચીજનું અને દરેક અવસ્થાનું સંપૂર્ણ ધ્યાન લખવું જોઈએ કે જેથી દરેકની જગ્યા બરાબર લખાય અને સંપૂર્ણ નકશી કામની નકલ કરવી જોઈએ. ખોદાણમાં ઘણી અક્કલની જરૂર છે.

કાર્યાનુમતિ-છેવટમાં હું જણાવું છું કે જૈનોએ **પ્રાચીન વસ્તુશાસ્ત્રની એક કમીટી** નીમી બતાવેલી રીત પ્રમાણે શોધન કરવું જોઇએ. એ માટે મોટું ફંડ કરવાની જરૂર છે. આ બાબતમાં કોઈ જૈન સહાયક લાયકાત ધરાવતો ગ્નાતિ તરફથી પગારદાર નીમાય તો સારૂં કામ થાય. વળી સુપ્રીન્ટેન્ડન્ટોની દેખરેખ નીચે બીજા ઘણા આસીસ્ટન્ટ તરીકે કામ કરે, તો વિશેષ લાભ થાય. જો જૈન સમાજને વ્યાજબી લાગે તો બન્ને આની એક નકલ પ્રાચીન વસ્તુશાસ્ત્રવિભાગના જનરલ ડીરેક્ટર તરફ સુચનારૂપે મોકલે.

Modern Review For April 1915

→→ બને પ્રખ્યાત તેથી શું ? ←←

કવ્વાલી.

સુશીલ સુપુત્રને ગ્નાની તણી, મૈત્રિથી રંગાઇ;
રહી અંતર થકી પાપી, બને પ્રખ્યાત તેથી શું ?
હઝારો રૂપીયા મદદે, ગરીબોનેજ આપે તું;
દઇને (લઇને) ધન અનીતિનું, બને પ્રખ્યાત તેથી શું ?

❧ ❧ ❧

બને માસીકનો તંત્રી વળી મંડળ તણો મંત્રી;
આંતરીક પોલ્યમાં ફાવી બને પ્રખ્યાત તેથી શું ?
ભલેને ભાષણો જાહેર જગમાં છૂટથી આપે;
ન અળગો રે કુકૃત્યોથી બને પ્રખ્યાત તેથી શું ?

❧ ❧ ❧

કરીને ત્યાગ અવનિનો બન્યો મહારાજ માનવનો;
કલંક તું કુળને આપી બને પ્રખ્યાત તેથી શું ?
બનીને કારભારી તું પ્રજાનું સુખ ના ચાહે;
કરીને દામ ઉચાપત બને પ્રખ્યાત તેથી શું ?

❧ ❧ ❧

બનેબી.એ. અને એમ.એ. રહે વ્યવહારથી અળગો;
રહી જૈન ધર્મથી વિમૂખ બને પ્રખ્યાત તેથી શું ?
બને સત્તાતણો સાથી ન કર ઉપયોગ હું અવળો;
રીઆવી કુમળા બેજાં બને પ્રખ્યાત તેથી શું ?

❧ ❧ ❧

ખરી શોભા બગીચાની કુસુમ 'ગુલાબ' આપે છે;
બકુલ ખોટા વિકાસીને બને પ્રખ્યાત તેથી શું ?

ગુલાબચંદ મુળચંદ બાવિસી
ચુડા (ઝાલાવાડ)

પશુવધ અટકાવવાને રાજા મહારાજાઓને અરજ.

ગૌબ્રાહ્મણ પ્રતિપાળ, નિરાશ્રિતાધાર, આર્યભૂષણ, પ્રજાપાલક, ન્યાય, દયા, ક્ષમા આદિ ગુણાલંકૃત, ધર્મધુરંધર, મહારાજાધિરાજ, મહારાજજી સાહેબ, શ્રી શ્રી ૧૦૮

ની ખીજમતમાં અરજ ગુજારવાની જે:—

દશેરાના પવિત્ર અને ધાર્મિક દિવસે હજુરના રાજ્યમાં પાડા, બકરાઓનો વધ કરવામાં આવે છે એમ અમારા સાંભળવામાં આવ્યું છે.

આ માંગલિક દશેરાને દિવસે વિજયી, ક્ષત્રિય કુલભૂષણ અને ન્યાય શિરોમણી શ્રીમાન્ રામચંદ્રજી મહારાજ અને મહાન પરાક્રમી પાંડવોએ વિજય મેળવી પોતાની રાજધાનીમાં પ્રવેશ કર્યો હતો અને તેથી કરીનેજ ત્યારથી આ દિવસને રાજભક્ત પ્રજા 'વિજયા દશમી' કહે છે, અને તેહેવાર તરીકે પાળે છે.

આવા મહાન માંગલિક દિવસને આર્ય પ્રજાની ઉન્નતિ અને કલ્યાણ કરવાવાળો ગણીને વિજયને માટે આનંદ પ્રદર્શિત કરવાનો છે, તેને બદલે હાલમાં આ પ્રસંગ ઉપર દેવ દેવીઓને સંતુષ્ટ કરવાના ઈરાદાથી પાડા, બકરા જેવા અનાથ, અવાચક અને નિર્દોષ પ્રાણીઓનો વધ કરવામાં આવે છે, અને તે એવી ખોટી માન્યતાથી કે મહામારી (પ્લેગ), શીતળા, કોલેરા આદિ દુષ્ટ રોગોની આફતોમાં પ્રજા આવે નહિ; પરંતુ કહેવાનું કે જ્યાં જ્યાં દર વર્ષે આવો વધ થાય છે ત્યાં પણ પ્લેગ, કોલેરા, શીતળા, તાવ, દુર્ભિક્ષ (દુકાળ) આદિ આફતો આવ્યાજ કરે છે. રાજાથી રંકસુધીસર્વેને પોતાના પૂર્વ જન્મના કર્માનુસાર સુખ દુઃખ ભોગવવું પડે છે, અને તેમાં એમ સમજાય છે કે આ આફતો માત્ર મનુષ્યના પાપોની શિક્ષારૂપ છે. આ પાપોથી બચવાને વાસ્તે મનુષ્ય જેવી ઉત્તમ ગણાતી જાતિ નિરપરાધી જાનવરોની હત્યા કરે એને કેવા પ્રકારનો ન્યાય કહેવો? અર્થાત્ આવા ન્યાયથી શાન્તિના સ્થાને અશાન્તિ પેદા થાય એમ કહેવું શું ખોટું?

ભારત પ્રજા આવા વ્હેમી રિવાજોને ક્યારે દુર કરશે? જ્યારે રાજા કંઈ કરશે ત્યારેજ તે થશે. राजा कालस्य कारणम् ॥ તે સૂત્ર પ્રમાણે પ્રજાપાલક મહારાજા! રાજાના પગલે પ્રજા ચાલે છે તે એક સાબીત થઈ ચૂકેલ રીતી હોવાથી, વ્હેમી અને અજ્ઞાન તથા અહિત કરતા રિવાજોને આપ શ્રી તરફથી દેશવટો નહિ મળે ત્યારે બીજા કોની તરફથી મળશે? તે આપજ વિચારી જોશો.

નામદાર અંગ્રેજ સરકારના રાજ્યમાં પણ વખતોવખત મરકી (પ્લેગ) વગેરે બીમારીઓ આવે છે અને સ્વભાવિક રીતે નાબુદ થાય છે, પણ આવા રોગોની શાંતિ માટે કંઈ પશુવધ થતો નથી; પરંતુ ન્યાયી દયાળુ સરકાર તરફથી તન્દુરસ્તીના નિયમોને અનુસરતા ઇલાજ લેવામાં આવે છે.

"પશુવધ શાસ્ત્રોક્ત નથી" એવો નિર્ણય મોટા મોટા વિદ્વાન શાસ્ત્રીઓની સભાઓમાં ઘણીવાર થઈ ચૂક્યો છે અને આ પ્રમાણે શાસ્ત્રનાં ફરમાનોને માન આપીને કેટલાક ધર્મિષ્ટ રાજ્યકર્ત્તાઓએ અમારી નમ્ર પ્રાર્થના લક્ષમાં લઇને આ પશુવધ પોતાની વસ્તીમાં સર્વથા બંધ કરાવી નિર્દોષ જાનવરોની નેક દુવા પ્રાપ્ત કરી છે જે આ સાથે મોકલેલા ગામવાર લીસ્ટથી આપ નામદાર જોઇ શકશો. ખરેખર જેઓ ધર્મના નામે અધર્મ પેદા કરનાર વ્હેમી રિવાજોને દેશવટો દે છે તેઓ ધન્યવાદને પામે છે.

આપને એક બીજી અરજ એ છે કે, અનેક રીતે હિંસાના વધી ગયેલા પ્રચારને લીધે

ઘણા નજીક નજીકમાં દુષ્કાળો પડવા લાગ્યા છે એટલુંજ નહિ પણ છેલ્લા ૧૭ વર્ષથી તો ઉત્તરોત્તર દરેક વર્ષ, પાકમાં નબળાંજ જણાતાં ગયાં છે; તો તેનું કારણ જાણવાની-શોધવાની અને તે માટે યોગ્ય ઉપાય લેવાની બહુજ જરૂર છે. અમારૂં આત્મિક દ્રષ્ટિએ એમ માનવું છે નિરપરાધી જીવોનાં કમોતે-નિર્દય રીતે થતાં મરણોની હાયથી પ્રજા તે મહાપાપના ડુંગર તળે દબાતી જાય છે. આર્થિક રીતિએ જોતાં જણાય છે કે છેલ્લા વર્ષોમાં ખેતીવાડીને ઉપયોગી-પ્રજાને દૂધ ઘીનાં આપનારાં એવા પશુઓની સંખ્યા એકદમ ઘટતી જાય છે તેવા આંકડા બહાર પડ્યા છે, વળી ગયા દુષ્કાળે વધારો થવાથી ભય પેદા થાય છે કે ૩-૪ દશકામાં તેવાં પશુઓ અરે! પશુઓની જાતો પણ હયાત હશે કે કેમ?

દેખીતું છે કે હીંદનું ખરૂં ધન ઢોરોજ છે, તેમાં પણ ખાસ નારી જાતિના પશુઓના રક્ષણ ખાતર, દરેક રાજ્યો પોતાની સત્તાનો સદુપયોગ કરી સમર્થ કાયદો નહિ કરે-તેઓના વધારાના ઉપાયો નહિ લે તો તેની ઓલાદ વૃદ્ધિ નહિ પામે, અને તેની વૃદ્ધિ નહિ થાય તો દૂધ-ઘી કે જે અત્યારે પણ ઘણાંજ મોંઘા ભાવે અરે! અસ્વચ્છ-ભેળવાળું-અપવિત્ર આદિ સ્વરૂપમાં,-પ્રજાને મળે છે તેમાં સુધારો થવાનો વખત ક્યાંથી આવશે? સસ્તુ-સ્વચ્છ અને પવિત્ર દૂધ-ઘી જ્યારે પ્રજા મેળવતી હતી ત્યારે તેનો બાંધો વિશેષ પ્રકારે મજબુત હતો; શરીર સુખાકારી વધુ હતી, તેને બદલે અત્યારે જે ખરાબ, અધમ સ્થિતિ આપણા દેશમાં થઇ છે તેનો ઉદ્ધાર કરવા, ઢોર પશુ આદિને બચાવવા પાળવા પળાવવા અને તેની ઓલાદમાં વધારો કરાવવો એ ઉત્તમ ઉપાય છે, તો તે ઉપાય કોઈપણ પ્રકારે અમલમાં થાય એમ કરવા આપ શ્રી યોગ્ય ઉપાય અવશ્ય કરશો એવી અમારી સંપૂર્ણ આશાભરી ખાત્રી છે.

આપ હજુર રહેમ દિલ, બુદ્ધિમાન અને ન્યાયી હોવાથી અમારી નમ્ર અરજ એ છે જે, દશેરાના દિવસે આપના રાજ્યમાં પાડા, બકરા વગેરેનો જે કંઈ વધ થતો હોય તે બંધ કરવાનો હુકમ જારી કરવાની મહેરબાની ફરમાવશો. તેજ રીતે આપની જ્યાં લાગવગ પહોંચે ત્યાં પણ તે માટે યોગ્ય તજવીજ કરશો અને સનાતન આર્ય ધર્મની રક્ષા કરશો, એજ અરજ.

माहिंस्यात् सर्व भूतानि मैत्रायण गतश्चरेत्

"કોઈ પણ જીવની હિંસા કરશો નહિ, અને સૌની સાથે મિત્રભાવે વર્તજો."

આજ સુધીમાં નીચેના ૧૫૨ ગામોમાં થતો પશુ વધ અમારા પ્રયાસથી બંધ થયો છે—

આજોલ, અંકેવાળીઆ, અલવર, આરસોડા, આરસોડીઆ, અવતગડ, અજયગઢ, આગલોડ નાનાવાસ, અનોડીઆ સતવાસ, બારાધીપટી, બરોડા, બીઆવર, ભરતપુર, ભાવનગર, બજાના સ્ટેટ, બારખેડા. બડિ સાદ્રિ. બરચઢી, બગસરા, બોબિલિ, ભાડવડ, ખંભાત, છોટા ઉદેપુર, ચુડા, ચંદાપુર, છતરપુર, જામુ કાશમીર, ધરમપુર, દેહા, ધ્રાંગધ્રા, દીનાપુર, ડેડાણ, દેધરોટા, દેરોલ, દહેગામડા, દાવડ, ધોલપુર, દીનાજપુર, ગોંડલ, ગરોલી, ગજના-દેવી, ગઢા, ગઢકા, ઘોડાસર, ઘોડાદર, ગલાયતા સંગપુર, હૈદરગડ બાસોડા, હાથીપુરા, હિરપુરા, ઇલોલ, ઇચ્છાવર, ઇંદલારા, જાંબુવા, જામનગર, જસદણ, જાલિઆ દેવાણી, જહાંગીરાબાદ, જાલરાપટન, જેતપુર, કરોસણ. કોટડા સાંગાણી, કોટડા પીઠા, કાઠીપોઈ, કોઠારીઆ, કરોલી, કારઠા, કલસીઆ, કીસનગઢ, કુશલગઢ, કોઇ-લોઈ, ખરેદેવરા, કરજુ, ખેરપુર, ખંભલાવ, ખીરસરા, ખુચામન, લખતર, લાયજા મોટા, લિંબડી, લુધાસી, લુનાવાડા, લાઠી, લખમીપુરા, લાદરોડા, મહાદેવપુરા, મોરબી, મેંગણી, મડી,

માંડા, મારી, મોહનપુર, મુલથાન, મગોડી, મહાવડા, મુસોરી, મંડિ, મહેસાણા, માલીઆ, નાગરેચા, પાટ્રી, પાલણપુર, પોરબંદર, પાલાખેડી, પિપલીઆ, પાન્ડેલ, પ્રેમપુર, પેઢામલીના ભેવાસ, પીલવાઈ, રાજકોટ, રનસીપુર, રૂનીજા, રાસ, રાણાવતકા ખેડા, રામનાદ, રણાસણ, રાધનપુર સ્ટેટ, રૂપાલ, રાજુલા, રાજપુર, રાજગઢ, રણુસીપુર, રામપુરા કુવાડા, સરામપુર, સામેરા, સાયલા, સરવણ, સીતલનાથુ. સુની સ્ટેટ, સુથલીઆ, સચીન, સાનોલ, શાહપુરા, શાહપુર, સીતવાડા, સતોદડ, ઉદપુરા, વાંદીઓળ, વણોદ, વાંસદા, વરાહી. વરસોડા, વાવડી, (ગજાભાઇ) વાવડી (મહીકાંઠા), વખતપૂર, વાંકાનેર, વશાવડ, વડીઆ, વાગેલાકા ખેડા, વિજયનગર, વિઠલગઢ, વાજના;

હજુરનો દાસાનુદાસ—

કલ્યાણચંદ સોભાગચંદ.

રેસીડન્ટ જનરલ સેક્રેટરી, શ્રી જૈન શ્વેતાંબર કોન્ફરન્સ-મુંબઇ.

તા૦ ક૦-આપના રાજ્યમાં પશુ રક્ષણાર્થે થોડો ઘણો—જે અંશે કંઇ પણ કાયદો કે રિવાજ આદિ પ્રથમથી હોય, કે આપશ્રીએ કર્યો હોય અથવા આ વિનંતિથી કરવામાં આવે, તેની અમોને જાણ કરી ઉપકારી કરશોજી.

उपदेशक पीताम्बरदासजीके भ्रमणका रीपोर्ट।

(गतांकसे आगे)

कुशलगढ़-गृह सं. १०३ जन सं. ४४९ मंदिर दो। तीन शास्त्रसभायें और २ व्याख्यान सभायें स्वाध्याय और सुरीतिप्रचार विषय पर कीं। जिससे १२ भाइयोंने स्वाध्याय करना और ५ आविकाओंने स्नान कर रसोई करना स्वीकार किया। यहां पहिले जैन पाठशाला स्थापित थी परन्तु अध्यापक पं. सोनपालजीके चले जानेसे हाल बंद है। पंचायती ३०) मासिकका अध्यापक चाहती है। जो भाई आना चाहें मंत्री गेवीलालजीसे पत्र व्यवहार करें। ३) उपदेशकफंडमें आये।

अतिशयक्षेत्र अंधेश्वर-यह स्थान कुशलगढ़से ९ मीलकी दूरी पर है। मंदिर २ तथा एक धर्मशाला है और पूजारी विधर्मी ब्राह्मण है। मुनीम वगैरह न होनेसे भंडारके द्रव्यका सदुपयोग नहीं होता। एक स्त्री मशाल करती हुई देखी जो शायद उस पुजारी ब्राह्मणकी स्त्री हो। कुशलगढ़की पंचायती और ती. क्षे. क. को ध्यान देना चाहिए।

वाघोल—कुशलगढ़से ३ मीलके अन्तरपर है। नदीके तटपर जंगलमें एक जिन मंदिर अव्यवस्थित है जिसमें ६ प्रतिबिम्ब पद्मासन और एक कायोत्सर्गासन विराजमान हैं। मंदिर बहुत ही जीर्णशीर्ण होरहा है। सर्प बिच्छुओंके विल पूजक यात्रियोंको व्याकुलित कर देते हैं। नियमित पूजनके लिये कोई पूजारी आदि मुकर्रर नहीं है। ती. क्षे. कमेटीका कर्तव्य है कि इन प्रतिबिम्बोंको कुशलगढ़की पंचायतीसे प्रेरणा कर अंधेश्वर मंदिरमें पधरा देवे।

झाबुआ-गृह सं. २२ जन सं. ५० मंदिर २। दो व्याख्यानसभायें कीं जिससे ६ भाइयोंने स्वाध्याय करना स्वीकार किया तथा पंचायतीसे एक माते

डायरेक्टरी और २८) के ग्रंथ सरस्वती भंडारमें नवीन मंगाये गए। एक भाई 'जैनमित्र' का ग्राहक हुवा। पंचायतीसे ३) उपदेशक फंडमें और २) मोरेना विद्यालयको प्राप्त हुए।

राणापूर–गृह सं. ३५ जन सं. १४० मंदिर एक। दो शास्त्र सभायें और दो व्याख्यानसभायें कीं। जिसमें 'सुरीति प्रचार' और 'स्वाध्याय' विषय पर लोगोंके चित्त आकर्षित किये जिससे दस भाइयोंने पुनः स्वाध्यायमें चित्त स्थिर किया तथा १२ श्राविकाओंने स्नान कर रसोई करना, जिन दर्शन करना और जूठे वर्तनोंको भस्मसे शुद्ध कर परस्पर वर्तना स्वीकार किया। और पंचायतीने अष्टद्रव्यद्वारा पूजन करनेका क्रम नियमानुसार अपनेर वारेसे जारी किया तथा एक डायरेक्टरीभी मंगाई गई। ७) मोरेना विद्यालयको और ६॥ उपदेशक फंडको प्राप्त हुए। यहां जैनपाठशाला स्थापित है।

कुक्सी–गृह सं. २ मंदिर एक। रातको शास्त्र पढा और भाइयोंसे अष्ट द्रव्यसे नित्य प्रति पूजन करनेका आग्रह किया।

अतिशयक्षेत्र तालनपुर–यह स्थान कुक्सीसे दो मीलकी दूरीपर है। एक दिगम्बरी और एक श्वेताम्बरी मंदिर है। प्रबन्ध सेठ रोडमल मेघराजजी सुसारीवालोंके सुपुर्द है। ब्राह्मण पुजारी और मुनीम आदि कोई नियत नहीं है।

सुसारी–यहां सेठ रोडमल मेघराजजीका एकही गृह है और इन्हींका बनवाया हुवा जिन मंदिर है। एक शास्त्र सभा और दो व्याख्यानसभायें कीं जिसमें उक्त सेठ सा. के धर्मप्रेमी कुटम्बियोंने कुक्सी नगरसे कई प्रतिष्ठित सज्जनोंको बुलवाया तथा ग्रामके अन्य मतावलम्बियोंको सभामें एकत्र किया। 'सच्चा सत्कार' इस विषयपर विवेचन किया तो कई भाइयोंने तमाखू, बीड़ी आदि खाने पीने और भंड गीतोंके गानेका त्याग किया। श्रुतपंचमी पूजनविधानके अतिरिक्त १५) के ग्रंथ सरस्वती भंडारमें नवीन मंगाये गये तथा उक्त सेठ सा. की ओरसे ५) उपदेशक फंडमें और १) मोरेना विद्यालयको आया।

पीपल्यागांव–यहांभी सेठ गोपीलाल जीवनलालजीका एक गृह और चैत्यालय स्थापित है। रातको अन्य मतालम्बी भाइयोंको इकट्ठा कर सभा की जिसमें कृषक लोगोंका अधिक समूह था। जिससे कई लोगोंने हिंसक जीवोंको न मारना तथा तमाखू न पीना और बैलोंको हलगाडी आदिमें जोतते हुए आर न मारना स्वीकार की तथा एक ब्राह्मणने परस्त्रीत्याग व्रत आजन्मको स्वीकार किया। १) मोरेना वि. को और १) उपदेशक फंडको आया तथा आप 'दिगम्बर जैन' के ग्राहक हुए।

लुहारी–जन सं. ६० मंदिर एक। एक व्याख्यान 'स्वाध्याय और सुरीति प्रचार विषयपर कहा। स्वाध्यायी भाई चार हैं। पढ़ने योग्य बालक ५ व बालिकायेंभी हैं परन्तु फूटके कारण धार्मिक

कार्योंमें बड़ी शिथिलता हो रही है। एक भाईसे १) मो. वि. को और दो भाइयोंसे २) उपदेशक फंडमें आये तथा एक भाई 'दिगम्बर जैन'का ग्रा. हुवा।

टेहरी-गृह सं. ३० जन सं. ११० मंदिर १। एक शास्त्रसभा और एक व्याख्यान सभा की जिसमें जैनियोंके कर्तव्य विषयपर विवेचन किया। जिससे १० भाईयोंने स्वाध्याय करना और कई श्राविकाओंने श्रवण करना तथा पढ़ना मंजूर किया। २)उपदेशक फंडमें और १) मोरेना वि. को आया तथा ५) के ग्रंथ सरस्वती भंडारमें स्थापित हुए।

मनावर-गृह सं. ३६ जन सं. १०० मंदिर १। तीन व्याख्यानसभायें कीं जिसमें नगरके प्रतिष्ठित २ सज्जन भी शामिल हुए। मनुष्यकर्तव्य, सुरीति प्रचार और धर्म विषयपर व्याख्यान हुए। स्वाध्यायी भाई १२ तथा तीन श्राविकाओंने शास्त्र पढ़ना और दसने भण्ड गीतोंके गानेका त्याग किया। एक प्रति डायरेक्टरीकी मंगाई गई। एक भाई 'जैन मित्र' का ग्रा. हुवा। ४) मो. वि. को और ३) उपदेशक फंडको आये।

बड़वानी-गृह सं. ह. २ जन सं. १०६ मंदिर १ व चैत्या. १। बाबू देवी सहायजी अकांउन्टेन्टके सभापतित्वमें दो व्याख्यान सभायें कीं जिसमें मनुष्य कर्तव्य और शासन संस्कार विषय पर विवेचन किया तथा यह सिद्ध कर दिखाया कि स्त्रीशिक्षाके विना ही समाजसे संस्कारोंकी प्रथा उठती जा रही है और इसीसे मनुष्यकर्तव्य करनेवाले पुरुषों (बालकों) को मातायें पैदा नहीं कर सकती हैं। बोर्डिंग और पाठशालाका निरीक्षण किया। पढ़ाई बालबोध जैन धर्म और प्रवेशिकाके धर्मशास्त्रकी है। १) मो. वि. को और ११) उपदेशक फंडमें आये।

बावनगजाजी-इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण इन दो महामुनियोंका मोक्ष स्थान है। पर्वतपर जो श्री ऋषभनाथ स्वामीकी बृहत् और विशाल मूर्ति है, बहुत कुछ खंडित होती जा रही है। वर्तमान वर्षातका पानी पहाड़की चोटीसे इकट्ठा होकर इस विशाल मूर्तिके शरीररूप पाषाणमें प्रवेश करता हुवा मूर्तिको कमजोर और खंडित कर रहा है। ती. क्षे. कमेटी और बावनगजाजी जीर्णोद्धार फंडको शीघ्र ध्यान देना चाहिए। मुनीम हजारीलालजी तथा दो पुजारी हैं। प्रबन्ध सेठ रोड़मल मेघराजजी सुसारीवालोंके सुपुर्द है।

अंजड़-गृह सं. १२ जन सं. ५० मंदिर एक। एक व्याख्यानसभा की जिससे तीन भाइयोंने स्वाध्याय करनेकी प्रतिज्ञा की। एक प्रति डायरेक्टरीकी मंगाई। ५) की रसीदें मो. वि. की कटीं तथा २) उपदेशक फंडमें आये।

बांकानेर-गृह सं. २८ जन सं. ६० मंदिर २। एक आमसभा की जिसमें मनुष्य जन्मकी सफलता विषयपर विवेचन किया। यहां भी एक प्रति डिरेक्टरीकी मंगाई गई तथा १) उपदेशक फंडमें आया।

धरमपुरी–गृह सं. ३० जन सं. ७० मंदिर एक। शास्त्रसभा और दूसरी व्याख्यानसभा की जिससे ५ भाइयोंने स्वाध्याय करना स्वीकार किया। १) मोरेना वि. को और १) उपदेशक फंडमें आया।

गुजरी–गृह सं. २ चैत्या. १ विलकुल जीर्णशीर्ण होता जा रहा है। नवीन मंदिरका काम चालू है। रईस सेठ जम्बूप्रसादजी सहारनपुरवालेंने वावनगजाजी जीर्णोद्धारार्थ एकसहस्र और पांचसौ रु. इस मंदिरके वनाने वावत प्रदान किये हैं। उक्त सेठ साहब शतशः धन्यवादके पात्र हैं।

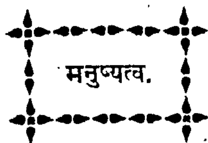
अतिशयक्षेत्र मक्सीजी–कई यात्री उपस्थित पाये। दर्शन, पूजन सानन्द हुवा। मुनीम इन्दौर गये हुए पाये। यात्रीगण भंडारके द्रव्यकी शिकायतें करते हुए देखे। इस क्षेत्रका प्रवन्ध और भंडार (द्रव्य) की व्यवस्था दीर्घकालसे संतोषजनक नहीं है इसलिए तीर्थक्षेत्र कमेटीको शीघ्र ध्यान देना चाहिए।

सीहोरकी छावनी–गृह सं. २५ जन सं. ८० मंदिर एक चैत्या. १। एक शास्त्रसभा और दूसरी व्याख्यान सभा की जिसमें गृहस्थके पद् नित्यकर्मोंपर विवेचन किया। स्वाध्यायका नियम ७ भाइयोंको है। यहांकी पंचायतीमें फूट है। शहरमें जो वड़ा और विशाल मंदिर है उसके पूजन प्रक्षालकाभी यथोचित प्रवन्ध नहीं है। पंचायतीमें एकता होनेकी वड़ी ही आवश्यक्ता है। १) मो. वि. और १) उपदेशक फंडमें आया।

वड़वाह, मह्, मनावर ग्रामोंकी जैन पंचायतीं तीन ब्राह्मण तेरह अंगीठीके चरितार्थको अनैक्यतारूप कुतत्त्व (कुमति) से प्रगट कर रही हैं। यह अनैक्यता कुतत्त्व ऐसा शूद्र (नीच) है कि वड़ी२ प्रतिष्ठित शुद्र और सर्वोच्च समाजोंमें जहां कि इसका नमूना (चिन्ह) पहूंचा उन सवकी सर्वोच्चता, शुद्धता और वलिष्ठताको तितरवितर कर देता है और क्रमसे मानमदका शर्वत पिलाता हुवा परस्पर भाई२ व जाति भाइयोंके खानपानसे मुड़वा देता है। वात्सल्यता, सहनशीलता और एकता सुतत्वके साधनभूत ऐसे सभा, पाठशाला, जिनमंदिर, जिनपूजा और शास्त्रश्रवण आदि कार्योंमें भी फूटकफूटा डालता हुवा सची पंचायतियोंका समाजसे अभाव कर रहा है। हम समाजकी उन बुजुर्ग नवयुवक बुद्धिशाली और अग्रसोची पंचायतियोंको जोश दिलाते हैं कि यदि तुममें सचे मनुष्य समाजका चिन्ह और वीरत्त्व है तो फूटको फोड़ने वाले ऐसे एकता सुतत्त्वको ग्रहण कर प्रत्युत अनैक्यता कुतत्त्वको फोड़नेका प्रयत्न करो।

समाज सेवक–
ठाकोरदास भगवानदास
मंत्री, उपदेशक वि. जोंहरी वाजार
वम्बई





દુનિયામાં દરેક માણસને કાંઇને કાંઇ કામ કરવાનું હોય છે, નકામો તેનો જન્મ નથી. હવે તે શું કામ છે અને તે કેવી રીતે અને ક્યાં સુધી કરવું એ માણસને માણસની વિચાર બુદ્ધિ ઉપર રાખેલું છે. આપણા શાસ્ત્રકારોના વચન પ્રમાણે તો **આપણા જીવનના** નીચે પ્રમાણે ચાર ભાગ પાડી શકાય. (૧) **બ્રહ્મચર્યાશ્રમ (૨) ગૃહસ્થાશ્રમ (૩) વાનપ્રસ્થાશ્રમ અને (૪) સન્યસ્તાશ્રમ.**

હવે જો એનેજ વીચાર કરવો હોય તો તેમ, નહીં તો સૌ સૌની મેળેજ વિચાર કરી લો કે આપણું જીવન શા માટે છે? અને આપણે આપણી જાતને સૌથી વિશેષ ઉમદા કેવી રીતે બનાવીએ, ઇત્યાદિ સવાલોનો પોતેજ વિચાર કરો, પરન્તુ ત્યાં આગળ તમો તમારા આત્માથી વિરૂદ્ધ જતા નહીં. જો તમે આ નિયમને હંમેશને માટે પળે પળે વિચારી રાખશો તો કોઇપણ અસત્ય કાર્ય આપણાથી થશે નહીં. એની કામ કરવાની ગતિ તપાસો. તમો કોઇ પણ અસત્ય કરવા જાઓ છો અને તે કામ કરવાને તમોને અંદરથી ખાનગી રીતે એકજ વખત જે વસ્તુ ચટકો ભરે છે, તે આત્માએ **આપેલો બોધ** છે અને તે એકજ વખત આપણને દશ્ય થાય છે. કારણ કે આપણે આપણી ઇન્દ્રિઓને એટલા બધા વશ થઈ ગયા હોઇએ છીએ કે બીજે વખત સાંભળી શકતા નથી. અને જો તેજ વખતે આપણે આપણી બુદ્ધિમાં આવી મનને સ્થીર કરી સતસાસતનો વિચાર કરવાની ટેવમાં લાગી જઇએ તો દુનિયાના પસ્તાવામાંથી હંમેશને માટે છૂટીએં. આટલી નાની વાત ધ્યાનમાં રાખવાથી આખી દુનિયામાં વહેરો પડતો ભાર ઓછો થઇ જાય છે. તમો આનાથી વચિારો કે કૂકર્મથી આપણને આપણા મગજ ઉપર અને આત્મા ઉપર કેટલો ભાર લાગે છે તો તેમાંથી મુકત થવાનો આ એક સહેલો અને સીધો રસ્તો છે. બસ આ પ્રમાણે તમો તમારી મેળે વસ્તુને બરાબર ન્યાય આપી તમારા જીવનની દોરીનું માપ બાંધી દો અને અમુક કાયદા તેને માટે ઘડી દો કે જેથી ભવિષ્યમાં હરઘડીએ એવા દુષ્ટ સંયોગોમાં પછી ફરીથી વિચાર ન કરવા પડે આનો. વિચાર કરશો અને ચાલશો તો જણાશે કે શાસ્ત્રકારોએ કહેલી વાત તમો જાણો છો અને સહેલાઇથી પાળી શકો છો. દરેક માણસને જ્ઞાન મેળવવા માટે હંમેશાં સામાની મદદની જરૂર છે. એટલે કે સામો કે જેને આપણે આપણી જાતથી વધારે લાયક ગણતા હોઇએ તેના વચન ઉપર સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા મુકે તોજ તેના વચન બરાબર ગ્રાહ્ય થશે તેટલા માટેજ પ્રથમ શાસ્ત્રોમાં અને સંત પુરૂષોમાં શ્રદ્ધા મુકો અને તે પ્રમાણે આચરો તોપછી અંતમાં જણાશે કે જે તે કહે છે તે સત્ય છે. દુનિયા એવી બની ગઇ છે કે માણસને ખરી વસ્તુ સુઝે છે છતાં પણ તે પ્રમાણે કરવા દેતા નથી પરન્તુ આપણે મનુષ્ય ત્યારેજ કે જયારે આપણે દુનિયાને હરાવી સ્વયં જય મેળવીએ માટે જો આપણને સત્ય લાગતું હોય તો દુનિયાના આચારથી કોઇ પણ રીત બીધા વિના ગમે તે દુઃખો સહન કરીને આપણા વચિારને ચોંટી રહેવાની ટેવ પાડવી જોઈએ. દરેક વસ્તુનું ધોરણ આપણી ન્યાય શક્તિ ઉપર આધાર રાખે છે માટે પ્રથમ તો આપણે આપણી ન્યાયશક્તિને બરાબર ખીલવવી જોઇએ. જો તમોને તમારી શક્તિ અને સંબંધમાં પૂર્ણ શ્રદ્ધા ન હોય તો

શાસ્ત્રના વચનમાં શ્રદ્ધા મુકો અને તે પ્રમાણે આચરણ કરો તો તમને તમારા મનુષ્યત્વનો હેતુ જણાશે. દરેક માણસે દરેક પળે પોતાપણું વીસરવું જોઇતું નથી નહીં તો તે અસત માર્ગે દોરાઇ જશે. આ દુનિયામાં દરેક માણસ મોટા એટલે કે કીર્તિવાન થઇ જતા નથી. કેટલાક નાના ગામડામાં તો કેટલાક શહેરમાં તો કેટલાક આખા દેશમાં કીર્તિ મેળવે છે પરન્તુ તેથી દરેક મનુષ્યે એમ નહી ધારવું કે દરેક મનુષ્ય અમુક હદ સુધી જો કોઇને ન મેળવે તો તેનું મનુષ્યત્વ નથી.

ખરેખર દુનિયામાં કોઇ તેના ફાંદામાંથી કોઇપણ માણસ છુટો નથી પરન્તુ તે ન મળે તો નિરાશ થઇ કર્તવ્ય વિમુખ થવું ઘટતું નથી. કીર્તિ લેવા જઇએ તો આવતી નથી અને આવે છે તો જ્યાં આપણી આંખો હાજર હોય છે ત્યાંજ; બકી પાછળ કે આગળ તો જે સત્ય હશે તેજ બોલાશે માટે ખોટા ભ્રમથી બચવા માટે દરેકે પ્રયત્ન કરવો જોઇએ. આથી હું એમ કહેવા માગું છે કે મનુષ્યનો સ્વભાવ આવી રીતે કોઇ તેની મોટી લલચથી લપટાઈ નાનાં નનાં કામ ગણકાર્યાં વિના મોટા કામ કરવના ડોલમાં પડી જાય છે પરન્તુ આથી ભવિષ્ય બગડે છે. પ્રથમમાં પ્રથમ વાત આ શીખવાના છે કે મનુષ્યે દરેકે દરેક પગલે એટલે ચ હેતો નાનું કામ હોય કે મોટું હોય પરન્તુ તેમાં સત્યથી વર્તવું અથવા તો પોતાની જાત કહે તે પ્રમાણે વર્તવું, પોતાની જાતને છેતરવી નહીં નહીતો મોટું વિશ્વાસઘાતીનું પાપ લગે છે. માટે હમેશાં આપણને નાનાં દરેક કાર્યોમાં કાળજી લેવાની ટેવ પાડવી જોઇએ. પછી દરેક વસ્તુના જ્ઞાન માટે માણસનામાં અમુક પ્રકરનો જુસ્સો હોવો જોઇએ. અને બીજું એ કે આપણે કોઇ પણ વાતનો વિચાર કર્યા પહેલાં સામાનો વીચાર ઉઠીનો લેવો જોઇએ નહી. એમ થાય છે કે આપણે જે ન્યાય મનમાં રાખી પુસ્તક અગર કાર્યનો વિચાર કરીએ છીએ,અને તેથી આપણે આપણા ન્યાયમાં પક્ષપાત કરીએ છીએ. જો કે એકંદર રીતે કોઇપણ પ્રકારનો પહેલાંથી જુસ્સો ન હોવો જોઈએ પરન્તુ કોઇપણ વખત સારા જુસ્સાથી વાંચવાથી આપણે ઘણું સારું એકઠું કરી શકીએ છીએ માટે આપણે દરેકે દરેક કાર્ય અથવા તો પુસ્તકમાં આપણા પોતાનો જુસ્સો સાચવવો અથવા તો આપણે આપણું "પોત" ન મુકવું જોઇએ. હમેશા એ જુસ્સાથી પુસ્તક અગર કાર્ય કરવાથી કાર્યમાં ઉત્સાહ અને ઉત્તેજન મળે છે.

હવે કહેવાનું એટલુંજ કે માણસનામાં જેટલી ચીજો હોય તેને બધીને કેળવવી અથવા તો ખીલવવી એટલે કે દરેક પરમાણું તેમજ બીજી વસ્તુઓને બની શકે ત્યાં સુધી સુધારાતી અથવા ખીલવણીની ઉંચામાં ઉંચી ટોચે લઈ જવી અને તે લઈ જવામાં બહાદુરી, મરદાઇ. સત્યતા અને સરળતાથી પગલાં ભરવાં જોઇએ. માણસનામાં જો કોઇ ઉંચામાં ઉંચો ગુણ હોય તો તે સ્વતંત્ર છે. એટલે કે સ્વછંદતા નહી પરન્તુ બીજા ઉપર આધાર રાખવો નહી. આપણે સત્ય કાર્યમાંથી લોકોના મતભેદને લઇને અટકીએ છીએ. કારણકે લોકો આપણા માટે ખોટો અભિપ્રાય બાંધે એ બ્હીકથી અટકીએ છીએ તે શું બતાવે છે કે આપણે બીજા ઉપર આધાર રાખીએ છીએ અને એ સ્વતંત્રતા નથી તેવીજ રીતે દરેક સદ્ગુણ અથવા ગુણનું યથાર્થ સ્વરૂપ સમજવા પ્રયત્ન કરીશું તો તેમાં ઘણું જાણવા જેવું મળશે; એવીજ રીતે મનુષ્યત્વના દયા, ક્ષમા અને પ્રેમના સદ્ગુણો સંપૂર્ણતાથી અને વિના પક્ષપાત ન્યાય દષ્ટિથી અને સુજ્ઞ નેતાની મદદથી જો વિચાર કરીશું તો ઘણું જાણવા જેવી રસુજી બાબતો મળશે. દરેક માણસને મનનશક્તિ, વિચારશક્તિ અને લાગણી સક્તિ અને સુજ્ઞ નેતાની ખાસ જરૂર છે અને તેજ મેળવવામાં મનુષ્યત્વ, ફરજ અને તેનું રૂપ તેમજ મનુષ્યત્વનું રૂપ છે.

D. B. Shah.

स्वर्ग अने नर्क क्यां छे?

વાચક ! વિચાર કરવાથી, ક્ષુદ્ર પ્રાણીથી લઇને મનુષ્ય સુધીના જીવનમાં અલૌકિક વિસ્મયદાયક જીવનયાત્રાની ઘટના મહાન્ રામભક્ત તુલસીદાસે રામાયણમાં કેવું ઉત્તમ લખ્યું છે.

'कर्म प्रधान विश्व करि राखा'

બસ, ચોપાઇના આ એક વાક્યથી આપણા મનની શંકા સમાધ જશે, કે સ્વર્ગ અને નર્ક ક્યાં છે? જ્યારે આપણને નાના નાના તથા બીજા જીવધારી પ્રાણીઓ સાથે કામ પડે છે, ત્યારે કેટલીક વખત આનંદ થાય છે, અને દુઃખ પણ થાય છે. ઉદાહરણ માટે કોઇપણ એક પ્રાણીને લઇએ–શરૂઆતમાં કેટલાક સમય માટે ઘોડાપર વિચાર કરીએ. પ્રાચીન કાળથી આજ સુધીમાં ઘણા રાજ્યના તબેલામાં જે ખાસ ઘોડા રાખવામાં આવે છે કે જેના ઉપર રાજા મહારાજાજ સ્વારી કરે છે અને તેવા ઘોડાનું પોષણ કેટલીક વખત લાડુ, જલેબી, હલવા જેવી મિષ્ટ વસ્તુથી (કે જે કોઇ કોઇ મનુષ્યને પણ મળવું દુર્લભ છે) થાય છે. હવે આપણે ભાડુતી ઘોડા તરફ નજર કરીશું તો માલુમ પડશે કે બિચારાની પીઠ સડી ગઇ છે, પગે લંગડો થયો છે છતાં પણ મજુરી કરવી પડે છે.

હવે આપણે કીડા તરફ નજર કરીએ તો કેટલાક કીડા વિષ્ટામાંજ ઉત્પન્ન થઇ આખરસુધી તેમાંજ જીવન ગાળે છે. કીડાઓમાંની એક જાત કે જે રેશમ પેદા કરે છે તેઓનું પોષણ કેવી સારી રીતે થાય છે. ખાનપાન માટે, જીવન માટે, સર્વ વ્યવસ્થા આપોઆપ મનુષ્યના હસ્તક થાય છે. કયું પ્રાણી કઇ અવસ્થામાં સુખી રહે છે તે કહેવું કઠણ છે, પરંતુ ઉપરનાં દ્રષ્ટાંતથી એવું માલમ પડે છે કે, ફુળ ખાનારા પ્રાણીની જીંદગી સારી રીતે વ્યતિત થાય છે. સ્વભાવના નિયમ પ્રમાણે તેને બુરી વસ્તુ કેમ પ્રિય ન હોય! પરંતુ એટલું સત્ય છે કે બુરી વસ્તુથી દુઃખ તો અવશ્ય થાય છેજ. કર્મગતીના બળથી ઘૃણિત વસ્તુના વશીભૂત થઇ, અભ્યાસ પડવાથી કોઇને એક ખાસ બુરી અવસ્થામાં સુખ માનવું પડે છે અને સુખ થાય છે. આ સાથે અમોલ પ્રાણીઓ કોઇ ખરાબ વસ્તુ તથા મળ, મૂત્રાદિમાં જન્મ લઇ, એમાં પ્રસન્ન કેમ રહેતા હશે, એ વાત જુદી છે.

હવે એવો પ્રશ્ન રહ્યો કે, કદિ પ્રાણીઓ એને ઘૃણીત સમજે તો તેમાંથી નીકળી ઉત્તમ જીંદગી કેમ ન ગાળે? ઉત્તમ જીંદગી કેમ કરી શકે? કર્માનુસાર એને બુરી હાલત ભોગવવીજ જોઇએ. એક કેદી જેલની રીતથી ઘણોજ ગભરાઇને નાશી જાય તો અધિકારી તેને સત્તાથી પકડી લાવી દંડ આપે છે. એ પ્રકારે કુદરત પ્રાણીઓને પ્રકૃતિબંધનથી આ પ્રકારે લાચાર કરે છે કે એને પોતાના કર્માનુસાર ફળ ભોગવવાના બદલે મૃત્યુ રૂપી દંડ ભોગવવો પડે છે.

નજરે જોતાં માલુમ પડે છે કે દુર્વ્યસન કરવાથી મનુષ્યને તકલીફ અને નુકશાનજ મળે છે. ઉદાહરણ તરીકે માછી, અફીણી, અને ગંજેડીની સ્થિતિ જુઓ. અફીણ ખાવામાં બહુજ કડવી વસ્તુ છે, ગાંજો પીવાથી મનુષ્યનું મગજ શિથીલ થાય છે અને ગાંજાનો જો ખેંચીને દમ માર્યો હોય તો એટલું બધું નુકશાન થાય કે ગાંજો ચઢી જઇ માણસને બેહોશ કરે છે તેમજ કેટલીક વખત તાળવાને ફોડી નાંખી શ્વાસ નીકળી જવા સુધીનો ભય રહે છે. જ્યારે નિશા ઉતરી જાય છે ત્યારે દુર્બળતા માલુમ પડે છે પરંતુ કરે શું? આદતથી લાચાર બની જ્યાંસુધી ગંજેરીઓની ટોળીમાં ન પહોંચે ત્યાં સુધી તેને ચેન પડતું નથી, તેમ સારાની સોબતમાં પણ જવાનું પસંદ પડતું નથી.

બસ! આ પ્રમાણે ખરાબ વસ્તુમાં જન્મ લીધો છે તેવા પ્રાણીઓની આ ગતિ થાય છે, કારણકે એને સારી વસ્તુની કલ્પના પણ નથી હોતી, એની માટી ભલેને પવિત્ર હોય, મહેનત ભલે ન પડતી હોય, પણ કુદરતે જે લખ્યું છે તેજ ભોગવવું પડે છે. આટલી બધી વિટંબણા ભોગવવા છતાં પણ એનો અંત કેવા પ્રકારે થતો હશે એ કોણ કહી તથા સમજી શકે છે ?

અહીંઆ કીડાના એક પ્રકારની જાતિની બીજા પ્રકારની સાથે તુલના કરી છે, પરંતુ કોઇ એકજ જાતિના દરેક પ્રાણીઓની દશા એક સરખી હોતી નથી. એમાંથી પણ એક જાતિના દરેક પ્રાણીની દશા જુદીજ માલુમ પડે છે. રેશમ પેદા કરનાર કીડા, જેનું વર્ણન કરી ગયા છીએ, એમાં બધાને પાળવામાં નથી આવતા, એમાંના ઘણાને પોતપોતાનો ખોરાક શોધવો પડે છે અને જંગલમાં જુદીજુદી દિશાઓમાં રહીને જન્મ પુરો કરે છે. મોટા પ્રાણીઓમાંથી દરેક પ્રાણીની દશામાં જેટલો વિચાર કરી શકાયે તેટલો નાના પ્રાણીઓ વિષે કરી શકાય નહીં.

ઘણા હાથી એવા જોવામાં આવે છે કે, જેનું ભરણપોષણ ઉત્તમ ઉત્તમ વસ્તુથી થાય છે, ટાઢ, તડકાથી બચે છે અને કોઇ કોઇ વખતજ સ્વારીના ઉપયોગમાં આવે છે. વળી ઘણા એવા પણ જોવામાં આવે છે કે; જેનાથી તોપો ખેંચવામાં આવે છે, લાકડા, ચુનો, લોખંડી કામની મદદમાં લેવામાં આવે છે, ઘણા હાથીને દાંતની લાલચથી ખાડામાં પાડી નાંખી મારી નાંખવામાં આવે છે, અને ઘણા હાથી જંગલમાં ટાઢ, તડકો, ભૂખ, તૃષા આદિ સહન કરી પોતાની જીંદગી પુરી કરે છે. જો કે જંગલી હાથીને જંગલમાં આનંદ થતો હશે, કેમકે તે સ્વતંત્ર રહે છે પરંતુ કર્માનુસાર દુઃખ પણ થતું હશે! બસ આ પ્રમાણે દરેક વ્યક્તિ અને પ્રાણીની દશા સમજવી!

પ્રાણધારી જીવોની બધી જાતિમાં મનુષ્ય જાતિ સર્વોત્તમ મનાય છે કેમકે એને સારૂં-ખોટું, સુકર્મ-કુકર્મ, ધર્મ-અધર્મને સમજવાની બુદ્ધિ મળેલી છે. કદાચિત્ બીજી યોનીઓની દશાનો પાયો સુધારવા અગર બગાડવા માટે આ મનુષ્યયોની મળતી હશે. બીજી યોનીઓની અંદર સુકર્મ અથવા કુકર્મની બુદ્ધિથી રહિત થવા માટે કર્માનુસાર એક યોનિથી અંત સુધી એવીજ રીતે જીવન વ્યતીત કરવું પડશે, જેનું ફળ મનુષ્ય યોનિથી સારૂં યા બુરૂં શરૂ થઇ ગયું છે. કારણકે બીજી યોનિમાં જઇને પોતાના ભાગ્ય માટે કશું પણ કરી શકવાના નથી. આ માટે આ મનુષ્ય યોનિમાં જન્મ લેવાના કારણ સમજી, એવા કાર્ય કરવાં જોઇએ કે, જેથી સુખ અને શાંતિ મળે અને બીજી જે જે યોનિયોમાં જન્મ લઇએ ત્યાં પણ સુખ અને શાંતિ મળે.

આ પ્રકારે જ્યારે મનુષ્ય જાતિના દરેક ખાસ મનુષ્યનું જીવનચરિત્ર યા એના સુખ-દુઃખની દશાપર વિચાર કરીએ છીએ તો આ જગત્ એક વિચિત્ર સ્થાન માલુમ પડે છે. એકની દશા એકથી મળતી નથી, કર્મ પણ એક મળતાં નથી તેમજ ધર્મ અને બીજી દરેક બાબતો પણ જુદીજ લાગે છે.

યદિ સુખ તરફ નજર ફેરવીએ તો કેટલાક મનુષ્ય દેહથી, સંપત્તિથી, ધનધાન્યથી દેશથી, કુટુંબ ઇત્યાદિથી સુખી જોવામાં આવે છે અને કેટલાક આ સર્વથી દુઃખી માલુમ પડે છે. સારાંશ એ છે કે કોઇ સુખી, કોઇ દુઃખી, કોઇને થોડું સુખ અને બહુ દુઃખ, કોઇને બહુ સુખ અને થોડું દુઃખ, કોઇબચપણમાં સુખી અને યુવાવસ્થામાં દુઃખી, કોઇવૃદ્ધાવસ્થામાં સુખી અને બચપણમાં દુઃખી, કોઇ યુવાવસ્થામાં સુખી અને વૃદ્ધાવસ્થામાં

દુઃખી નજરે પડે છે. કોઇ દરિદ્રતાથી ધનાઢ્ય થઇ જાય છે અને ધનાઢ્ય દરિદ્રતાના દુઃખમાં રિબાય છે, કોઇ બહુજ ધન એકઠું કરે છે પરન્તુ એનો ઉપયોગ કરી શકતા નથી.

દુઃખસુખમાં બહુ પ્રકારના ભેદ છે. કોઇ સર્વ વાતે સુખી હોય તો દેહથી દુઃખી હોય છે એટલા માટે સુખી કહેવાતો નથી. સુખ દુઃખ એક વિચિત્ર વસ્તુ છે અને તેનો સંબંધ મન સાથે છે. કેટલાક મનુષ્ય એવા છે કે જે આ જગતની સર્વ સામગ્રીઓથી પરિપૂર્ણ છે પરંતુ એનું મન સંતુષ્ટ નથી, અને કેટલાક મનુષ્ય એવા પણ હોય છે જે ચાહે તેઓ દરિદ્રી અથવા કમજોર કેમ નહોય ! પરંતુ મનમાં શાંતતા ધારણ કરી સુખી થાય છે. આથી સંસારમાં સુખી અને દુઃખી થવું બહુધા મનની વૃત્તિપર અવલંબી રહે છે, અને મનની વૃત્તિ કર્માનુસાર સારી યા ખોટી બને છે. આથી કોઇપણ ધનવાન યા એશ્વર્ય પ્રાપ્ત થયેલા મનુષ્યને એકદમ સુખી અને કોઇ દરિદ્રી તથા એશ્વર્ય રહિત મનુષ્યને દુઃખી કહી શકાય નહીં.

આ સંસારમાં સર્વ પ્રકારે સુખી બહુજ થોડા હશે કેમકે જેની હાલત જોઇએ અથવા પુછીએ તો એ કાંઇ કાંઇ વાત એવી બતાવશેજ કે એને કોઇપણ જાતનું દુઃખ જરૂર છે; પરંતુ આ સંસાર નિર્વિજ નથી, આમાં સર્વ પ્રકારના લોક વસેછે, એમાંથી ઘણાએ સુખી છે; અગાઉ કહેવાઇ ગયું છે કે સુખ દુઃખ મનની વૃત્તિપર છે અને મનની વૃત્તિ કર્મોપર છે. યદિ વિચાર કરીએ તો માલુમ પડશે કે કર્મ સદાચરણ અને ધર્મ પર અવલંબી રહેલું છે. આથી શરૂઆતથી સાવચેત રહી કાર્ય અને વ્યવહાર એવી રીતે કરવો જોઇએ કે જેથી સુકર્મનો પાયો મજબુત બની રહે.

મોટા મોટા વિદ્વાનો અને પ્રત્યેક મતના ધર્મજ્ઞાતાઓના મ્હોંથી એવું સાંભળવામાં આવે છે કે, આત્મા અમર છે અને એક દેહના પીંજરામાંથી નીકળી બીજા દેહમાં કર્માનુસાર પ્રવેશ કરે છે. વળી એટલે સુધી સાંભળ્યું છે કે એક દેહમાંથી નીકળતાં પહેલા બીજા દેહમાં જવાનું નક્કી થઇ જાય છે. જો આવું હોય તો નર્ક અને સ્વર્ગનો ડેરો અને સુખ દુઃખ ભોગવવાનું સ્થાન અને વખત ક્યાં મળતો હશે ? અથવા એમ માનવામાં આવે કે, સ્વર્ગ અને નર્કનું સ્થાન આ મનુષ્ય લોકથી જુદું છે અને આત્માને કોઇ એક દેહ છોડયા પછી કર્માનુસાર તે લોકમાં જઇ સુખ દુઃખ ભોગવવા પડે છે. તો સુકર્મનો આનંદ અને કુકર્મના દંડનું પ્રાયશ્ચિત રૂપી કષ્ટ મળી જાય છે. જ્યારે પોતાના સવ અપરાધોના ફળ ભોગવી લેઈ પવિત્ર થઇ જાય છે તો ફરીથી આ મનુષ્ય લોકમાં બીજી વખત દુઃખ સુખના ભોક્તા કેમ થવું પડે છે ? અને બધાં પ્રાણીઓની સ્થિતિ એક સરખી કેમ નથી રહેતી ? કોઇને દુઃખ, કોઇને સુખ, કોઇને શાંતિ, કોઇને અશાંતિ કેમ પ્રાપ્ત થતી હશે ? એક પ્રકારના પ્રાણીની જાતિથી બીજા પ્રાણીની દુઃખ સુખમાં તો ભિન્નતા હોય છે, પરંતુ કોઇ એક ખાસ પ્રાણીની જાતિમાંજ એના દરેક પ્રાણીની ગતિ એજ પ્રાણીની જાતિવાળા બીજા જીવથી કેમ જુદી રહે છે ? આથી સમજાય છે કે સ્વર્ગલોક અને નર્કલોક કોઈ ખાસ નિયમિત સ્થળ નથી, કે જ્યાં પોતાના કર્મના ફળ મળતા હોય ? તો સ્વર્ગ અને નર્કલોક ક્યાં છે અને એના ફળ ક્યાં ભોગવવા પડે છે ?

આથી સ્વર્ગ અને નર્કલોક, આ જ છે કે જેને સંસાર તથા મનુષ્ય લોક કહે છે. સત્ કર્મના ફળ (ખોટાની સજા અને સારાનું સુખ) આ સંસારમાં ઉત્પન્ન થઇ મનુષ્યયોનિ તથા બીજી યોનિયોમાં જન્મ લઇને દુઃખ સુખના ભાગી બને છે. આથી નથી કોઇ સ્વર્ગલોક

કે નથી કોઇ નર્કલોક. જે કાંઇ પણ સ્વર્ગ અને નર્કલોકની બાબતમાં સાંભળવામાં આવે છે તેજ આ મનુષ્ય લોક છે; જેમાંના ઘણા ખરા પ્રાણી નર્કથી પણ વધારે દુઃખી થાય છે અને કોઇ કોઇ પોતાના સુકર્મ દ્વારા બ્રહ્માનન્દ સુધીનું સુખ પણ પ્રાપ્ત કરી શકે છે.

આ. અ. શાહ.

हमारा दौरा और सफलता।

विदित हो कि इस **भारतीयजैन-सिद्धांतप्रकाशिनीसंस्था**की तरफसे व 'जैनमित्र', 'दिगंबर जैन' आदिकी कृपासे अनेक इस्तहार अपीलें दानवीर धर्मात्मा श्रीमानोंकी सेवामें छपाई भेजीं परंतु किसीने भी इस संस्थापर दयादृष्टि नहीं की। तब लाचार होकर मैं और न्यायतीर्थ श्रीयुत् भाई **गजाधरलालजी** व काव्यतीर्थ भाई **मुन्नालालजी** दो महिने दौरा करनेके लिये अर्थात् ५०) रुपये देनेवाले १०० **स्थायी सभासद** (सहायक) बनानेके लिये समस्त आवश्यकीय कार्योंको छोड़ कर निकल पड़े सो जैनधर्मके प्रभावसे जहां जहां हम लोग गये, हमारे उदार महाशय बड़े आदरसे हम लोगोंकी सहायता करते रहे। जिससे हम संस्थाको चिरस्थायी करनेमें समर्थ हुए। अब यह संस्था इस वर्ष बड़े उत्साहके साथ कार्य करनेमें तत्पर हुई है। पहिले आप दो महिनेके दौरेका हाल बांच लीजिये और फिर आगेको संस्था क्या २ करेगी सो भी ध्यानसे सुनकर आप सब महाशयोंको जो कुछ सहायता देकर इस संस्थासे लाभ उठाना हो उठाइये।

मैं ता. ४-८-१६ को यहांसे रवाना होकर **जबलपुर** गया। पंडित गजाधरलालजी व मुन्नालालजी भी दो चार दिनमें वहीं अपने २ घरसे पहुंच गये। १२ दिन तक जबलपुरमें रहे। वहांकी विद्वन्मंडली श्रीयुत भाई मुन्नालाल राजकुमार, सिंगई नत्थूलालजी, लक्ष्मीचंदजी, व श्रीयुत बाबू कंछेदीलालजी बी. ए. एलएल. बी. आदिने बड़ा ही संमान किया। शास्त्रसभा उपदेशकसभा चर्चासभासे अहोरात्र हमारे दिन बीते। वहींसे मंगलाचरण हुआ। सबसे पहिले हमारे पुराने हितैषी मित्र श्रीयुत भाई **मुन्नालाल राजकुमारजी** ५०) के मेंबर बने। फिर उनके मालिक व कंछेदीलालजी वकील साहब, पंचमंडली जबलपुर इस प्रकार पांच मेंबर हुए। वहांसे चलकर हम लोग छोटेसे गांव—

पिंडरई आये। वहांपर श्रीयुत् सेठ जसकरनलालजी व सिंगई भुवनचंद मोहनलालजी व नंदकिशोरजी महाशय सभासद बने। दूसरे दिन हम लोग—

सिवनी—पहुंचे। यहां पर रायबहादुर सेठ पूरनसावनी, सिंगई कुंवरसेनजी व जुगराजसावजीने बड़े ही आदर सत्कारसे पेश आये और उम्मेद दिलाई कि यहांसे हमें बारहसौ रुपयोंकी सहायता मिलेगी, परन्तु कई महाशयोंने हमारे कार्यको अच्छा

समस्त छापेके कट्टर विरोधी श्रीमान् सेठ मिट्ठनलालजी आदिको मुखिया बनाकर घर२ व प्रत्येक मंदिरजीमें छपे शास्त्रोंका बहुत प्रचार होनेपर भी पुराने जमानेके छापेके विरुद्ध हस्ताक्षर कराई हुई मिसलको निकलवाकर विघ्न डाल दिया और हम लोगोंको सूखेही वहांसे टरका दिया, जिससे हमारा साहस एकदम टूट गया। और इसी प्रकार और २ जगह भी एक आदि विरोधी महाशय मिलेंगे तो हमारा कार्य सफल होना कष्टसाध्य है परंतु फिर भी साहस करके छिंदवाड़ा नागपुर तक जानेका विचार पक्का करके वहांसे हम लोग–

छिंदवाडा पहुंचे। वहांपर श्रीयुत् सेठ सुखलालजी लालचंदजी पाटणी, १, श्रीयुत बाबू पंचमलालजी तहसीलदार व असिस्टेंट सेटलमेंड आफिसर, २, श्रीयुत उम्मेदचंदजी मुनीम रामलाल शिवलालजी, ३, सिंगई गुलाबचंद कपूरचंदजी पिंडरई वाले, ४, सेठ गणेशलालजी गुलाबचंद बाकलिवाल, ५, सेठ जवाहिरलाल हजारीमलजी पाटणी ६, इस प्रकार ६ मेंबर बने। एक दिन सभा हुई। इन सज्जनोंने हम लोगोका बड़ाही आदर सत्कार किया जिससे हमारा साहस सिवनीमें जो नष्ट हो गया था सो नष्ट होकर द्विगुण साहस हो गया और हम लोग ता. २१–८–१९ को–

नागपुर पहुंचे। नागपुरमें सवाई सिंगई मोतीसाव गुलाबसावजीके सुयोग्य कार्यकर्ता श्रीयुत् कन्हैयालालजी–व सेठ शिवलालजी मोतीलालजी पाटणीके मुनीम सेठ मोतीलालजी तथा रा. रा. श्रीयुत नेमासा सोनासा और पं रामभाऊजी आदि सज्जनोंने हम लोगोंका बड़ाही आदर सत्कार किया। शास्त्रसभा, चर्चासभासे बड़ाही मनोरंजन किया और सवाई सिंगई मोतीलाल गुलाबसावजीने ३००) की ६ मेंबरी व अपने स्वर्गीय पिता दानवीर सवाई सिंगई गुलाबसाव रिखबसावजीके नामसे एक दान ग्रंथमाला निकालनेके लिये एक बड़ी रकम देनेकी स्वीकारता दी तथा रा. रा. सेठ नेमासा सोनासाजीने १५०)की ३ सभासदी और सेठ शिवलालजी मोतीलालजी पाटणी, सोनासा रुखबसा, हीरासा चुन्नीसा, नत्थूसा पासूसा गहानकरी, कालूराम बच्छराज, बापूजी विश्वनाथ गांधी, गोविंदराव शिवरामजी नाकाडे, सुंदरसाव गंगासावजीने सभासद होना स्वीकार किया। वहांसे बड़े आदर सत्कारसे रवाना होकर हम लोग–

वर्धा पहुंचे। वर्धाके भाइयोंने स्टेशनसे बड़े आदर सत्कारसे अभ्यर्थना की। एक दिन जैन मंदिरमें सभा हुई। दूसरे दिन जैन बोर्डिंग हाउसके लेक्चर हालमें वहांके प्रसिद्ध खरे साहब वकीलकी अध्यक्षतामें न्यायतीर्थ पं. गजाधरलालजीका अहिंसा परमो धर्मः इस विषयपर बड़ा भारी प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। सभापति महोदयने मराठी भाषामें उसका सारांश बहुत ही उत्तम-

तासे कहकर अपनी तरफसे अहिंसा धर्म पालन करनेकी बड़ी उपयोगिता प्रगट की। और श्रीमान् लाला चिरंजीलाल-मालिक दूकान कुंदनलाल चंपालालजी बड़जात्या और रामासाव बकारामजी रोड़े पद्मावती पुरवालने एक२ सभासदी स्वीकार की। वहांकी मंडलीमें होनहार श्रीयुत् चिरंजीवी चिरंजीलालजी बड़जात्याका धर्मोत्साह, कार्यतत्परता देखकर हम लोग बहुतही प्रसन्न हुए। वहांका जैन बोर्डिंग इन्हींके उत्साहसे उन्नति पथमें अग्रसर हो रहा है। वहांसे रवाना होकर हम लोग ता. २४-८-१९को-

अमरावती पहुंचे। अमरावतीमें स्वस्ति श्री १०८ **वीरसेन स्वामी** उनकी विद्वान् शिष्यमंडलीमेंसे सज्जनोत्तम लाला नंदलालजी, कन्हैयालालजी, पन्नालालजी व लाला दद्दूलालजी आदिने बड़ाही सन्मान प्रदर्शित किया, दिन भर व रात्रिमें १२ बजे तक ९ दिन अध्यात्मचर्चामें समय व्यतीत हुवा। एक दिन स्वामीजीके सन्मुख आत्मख्यातिसमयसारजी पं. गजाधरलालजीने बांचा उस समय शुद्ध निश्चय नयके विषयमें बड़े आनंददायक प्रश्नोत्तर हुए। स्वामी महाराज भी इस चर्चासे बड़े खुस हुए आशीर्वाद दिया और संस्थाको स्वयं १०१) रुपये प्रदान किये तथा सेठ मानिकलाल धरमदासजी परवार, सिंगई वंशीधर पन्नालालजी परवार, सिंगई नंदलालजी मन्नीलालजी परवार, और कन्हैयालालजी रामचंदजी बजाज भी सभासद (सहायक) बने। वहांसे मिष्टर तनसुखदासजी कालाके साथ-

एलचपुर (सुलतानपुरा परतवाड़ा) गये। सुलतानपुरमें कोट्यधिपति सेठ लालसा मोतीसावालेंके यहां ठहरे। उनके मालिक श्रीमान् सेठ नत्थूसावजी आनरेरी मजिष्ट्रेट व तानासावजीने बड़ी खातिर की। पाठशाला देखी शास्त्रसभा की। दूसरे दिन परतवाड़ा होकर मुक्तागिरीजी सिद्धक्षेत्रके दर्शन किये। परतवाड़ामें मिष्टर तनसुखदासजीके प्रयत्नसे श्रीयुत् सेठ मोतीलाल चंपालालजी, अमरचंदजी हीरालालजी काला, रामचंद्र हजारीलालजी सेठी, सहायक बने। वहांसे फिर सुलतानपुरा आये। १०१) के सेठ लालसावजी मोतीसावजी सभासद बने और एक बड़ी रकम शास्त्रदान खातेमें देना स्वीकार किया। वहांसे रवाना होकर हम लोग-

अंजनगांव आये। अंजनगांवमें उसी दिन सिंगई मोतीसावजीका आत्याबाईका (बुआका) परलोकवास हो गया। इसलिये शास्त्रसभादि कुछ नहिं हुये। केवल श्रीमान् सेठ येसूसिंगई सोनासिंगई व मोतीसिंगई सोनासिंगईजी सभासद हुये। और दूसरे दिन ता. ४--९--१९ को हम लोग-

कारंजा आये। कारंजामें स्वस्ति श्री १०८ स्वामी वीरसेनजीके शिष्य श्रीमान् सेठ पंडित जिनवरसावजी गंगासावजी घवरे, व मदुन्नसावजी चांगासावजी और हीरासावजी आदि विद्वानोंसे तीन दीन तक शुद्ध निश्चयनय

संबंधी चर्चावार्तासे बड़ा आनंद रहा। रात्रिमें प्रमेयकमलमार्तंडकी शास्त्रसभासे भी बड़ा आनंद रहा और देवीदास गंगासावजी चवरे, जिनवरसाव गंगासावजी चवरे, लक्ष्मणसाव भगवानसा मुधलकर, नरसिंहसा रुखवसावजी राऊळ और गुलाबसा रुखवसावजी लाड, ये ५ महाशय स्थायी सभासद बने और चवरे महाशयोंने ५ प्रति आत्मख्याति भाषा समयसारजीकी संस्थाको प्रदानकी। फिर ता. ६–९–१५को स्टेशनपर उक्त महाशयोंने आकर आदरसत्कारपूर्वक विदा किया। कारंजामें संस्कृत पाठशालामें उच्च दर्जेकी संस्कृत विद्या पढ़ाई जाती है उसकी परीक्षा लेनेसे भी बड़ा आनंद हुआ। भट्टारक महाशयोंकी नगरीमें इस प्रकार संस्कृत विद्या व अध्यात्मचर्चाकी मंडलीसे साक्षात् होनेसे जो कुछ आनंद हुवा वह वचनातीत है। वहांसे हम लोग फिर–

नांदगांव–आये। नांदगांवमें एक सभा की। प्रधान सेठ साहब राजाराम बंशीलालजीका इतरपंच मंडलीसे वैमनस्य होनेके कारण उस तरफकी मंडली सभामें आईही नहीं। और न उक्त महाशय सभासदही बने। किंतु सज्जनोत्तम सेठ केवलचंद खुशालचंदजी पहाड्या, व हीरालाल गोविंदरामजी पाटणी पंचमंडलीने सभासदी स्वीकार की और स्टेशन तक बड़े आदर सत्कारसे पेश आये। वहांसे रवाना होकर ता. ९-९-१५ को

बारामती–आये। बारामतीमें सेठ तिलकचंद कस्तूरचंदजी बड़ेही धर्मात्मा सज्जन पुरुष हैं। इन्होंने बारामतीमें हमारे पर्यूषण करानेके लिये एलचपुर कारंजा नांदगांवको कई जवाबी तार दिये। तीन दिन तक यहां रहे। शास्त्रसभा हुई–बड़ा आनंद रहा परन्तु हमारी इष्टसिद्धिकी पूर्ति यहां होना असंभव समझ, इन लोगोंका बहुत आग्रह होते हुए भी हम लोग शोलापुर जानेको लाचार हुये। इन्होंने हम लोगोंके राह खर्चके लिये २५) देकर रवानां किया सो ता. १२–९–१५ को हम लोग–

शोलापुर पहुंचे। स्टेशनपर रा. रा. सेठ रावजी सखारामजी स्वागतके लिये हाजिर थे। शुक्रवारी पेंठ मंदिरजीके सामने धर्मशालामें ठहरे। यहींपर पर्यूषण हुये। १० दिन दशाध्याय सूत्रजीका अर्थ–श्रीयुत् पंडित वंशीधरजी, पाढ्ये गोपालशास्त्री, गजाधरलालजी, मुन्नालालजी व श्रीमान् सेठ हीराचंद नेमीचंदजीने बड़े विस्तारसे दिनमें २ बजेसें ५॥ बजे तक अनेक प्रश्नोत्तरों सहित वांचते रहे। जिसे शोलापुरके समझदार श्रोतागण बड़े आनंदसे सुनते थे। इसी शास्त्रचर्चा आदिके आनंदमें १५ दिन बातकी बातमें बीत गये। संस्थाकी चिरस्थायिताकी नीव भी दृढ़ हो गई। क्योंकि यहांके प्रसिद्ध सेठ हरिभाई देवकरणजीवाले सेठ बालचंद रामचंदजी, हीराचंद रामचंदजी, फूलचंदजी रामचंदजीने संस्थाके उन्नतिकारक कार्यसे प्रसन्न होकर

पांच हजार रुपये अपनी मातुश्री मेनाबाईके स्मरणार्थ शास्त्रदान खातेसे १ हरिभाई देवकरण जैन ग्रंथमाला नामकी ग्रंथमाला प्रकाशित करनेके लिये सहर्ष प्रदान किये और संस्थाके परम संस्थापक व संरक्षक भी बनना स्वीकार किया। इसके सिवाय-श्रीमान् सेठ माणिकचंद रामचंदजीने (सेठ मोतीचंद परमचंदजीवालोंने)१०२५) रुपये स्वर्गीय पंडित रूपचंदजीके स्मरणार्थ शास्त्रदान खातेमें प्रदान किये। तथा स्वयं भी एक रकम दान करनेकी इच्छा प्रगट की। तथा इसी शास्त्रदान खातेमें श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य हीराचंद अमीचंदजीने ५०१) रुपये प्रदान किये जिससे हम लोग कृतकृत्य हो गये। श्रीयुत् सेठ रावजी नानचंदजी व सेठ हीराचंद सखारामजी आदि अनेक दानवीरोंकी सेवामें सहायतार्थ उपस्थित भी न हुये। हां, पचास २ के ९ मेंबर अपनी खुसीसे बने अर्थात् २००) सेठ सखाराम नेमचंदजी दोशी, गौतमचंद नेमचंदजी दोशी, देवचंद हीराचंद गुंजेटीकर, हीराचंद मु. वाग्धरी, पंडिता रखाबाई कोम नानचंद गूजर, गुलाबचन्द नानचंद, अण्णापा नाना लेंगड़े बेलगांव शाहपुर तथा श्रीपायसागरस्वामी उगारकर इनके सिवाय जिनवाणीजीर्णोद्धारकाग्रगण्य प्रसिद्ध दानवीर सेठ नाथा रंगजी गांधीने भी पांचसौ रुपये कुछ विचार करके स्वीकारता देनेकी इच्छा की और धरणगांव (पूर्व खानदेश) निवासी चुन्नीलाल अंबुसा सेठ दिगंबरी बीसा ओसवाल ज्ञातिने समयसार कलसे सटीक भाषानुवाद सहित छपानेके लिये ४५०) रुपये दिये। और पायसागरस्वामीकी मारफत एक मैसूरके महाशयने भी सटीक रत्नकरंड श्रावकाचार भाषानुवाद सहित छाप देनेके लिये द्रव्य देना स्वीकार किया है।

सोलापुरसे पं. गजाधरलालजी तो कार्यवश बंबई चले गये और मैं तथा भाई मुन्नालाल काव्यतीर्थ-एक दिनके लिये श्रीयुत् पंडित लालारामजी व श्रीयुत् ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी, और श्रीमान् जज्ज साहब जुगमंदिरलालजी आदिसे मुलाकात करनेके लिये-

इंदौर गये। इंदौरमें श्रीमान् राय-बहादुर सेठ कस्तूरचंदजी व कल्याणमलजीने भी सौ सौ रुपये देकर संस्थाकी स्थायी सभासदी स्वीकार की। फिर वहांसे रवाना होकर ता. २९-९-१५को-

जबलपुर आये। जबलपुरमें सज्जनोत्तम श्रीयुत् बाबू कंछेदीलालजी बी. ए. एल एल. बी. महाशयका आतिथ्य स्वीकार करके ता. ३०-९-१५ को प्रातःकाल ही ३ बजे राजीखुसी काशी पहुंचे।

संस्थाके आगामी कार्योंकी सूचना-अब यह संस्था बनारसमें नहिं रहेगी क्योंकि बनारसमें शीघ्र २ ग्रंथ निकालनेके लिये प्रेसोंका कुछभी सुभीता नहीं है। जो काम संस्था १ वर्षमें

करती वह काम बड़ी मुश्किलसे ३ वर्षमें कर पाई। इसलिये अच्छे २ उत्तमोत्तम सुंदर भाषा टीका सहित ग्रंथ छपानेके लिये तो एक ब्रांच आफिस सूरत या बंबईमें रहेगा और संस्थाका मुख्य उद्देश्य (बंगालके विद्वानोंमें जैन धर्मका प्रचार करनेका) सिद्ध करनेके लिये हेड आफिस कलकत्तामें रहेगा। संभवतः दीपावलीके शुभ दिनपर हेड आफिसकी स्थापना कलकत्तामें हो जायगी। कलकत्तामें हिंदी बंगला आदिमें ग्रंथ छपेंगे। जरूरत होगी तो एक शुद्ध प्रेस भी कलकत्तामें खोला जायगा। संस्थाकी नियमावली परम संस्थापक आदि महाशयोंकी संमतिसे बन गई है उसको छपाकर शीघ्र ही अन्यान्य कार्य संपादक व सहायकोंके पास स्वीकारार्थ भेजकर पास कराके प्रकाशित की जायगी। और नीचे लिखे ग्रंथ भाषा टीकासहित व केवल भाषाके ग्रंथ शीघ्रही छपानेका प्रबंध किया जायगा।

आगामी वर्षमें छपनेवाले ग्रंथोंके नाम।

अर्थप्रकाशिका भाषाटीका—आदिपुराणजी कैसे बड़े साइज और अक्षरोंमें। जिनेंद्रमतसार–स्वर्गीय पं. महाचंद्रजी कृत चारों भाग, तथा उनके बनाये अन्यान्य ग्रंथ तथा पदसंग्रह वगैरह। गोमट्टसारजी संस्कृत टीका और टोडरमलजी कृत वचनिका सहित. त्रिलोकसारजी संस्कृत टीका और वचनिका सहित। समयसार कलसे संस्कृत टीका व भाषाटीका सहित। तत्त्वार्थसार भाषाटीका सहित। सुदृष्टितरंगिणी भाषावचनिका। सर्वार्थसिद्धि नयी भाषाटीका सहित। अमितगति श्रावकाचार भाषाटीका सहित। पद्मपुराणजी संस्कृत मूलमात्र, हरिवंशपुराणजी संस्कृत मूल मात्र, उत्तरपुराणजी संस्कृत व भाषाटीका सहित। त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र प्राकृत भाषा टीका सहित। सुभाषितरत्नसंदोह भाषाटीका सहित। संस्कृत प्रवेशिनी भाषा सहित ४ भाग। पांडवपुराणजी भाषाटीका सहित। क्षत्रचूडामणि भाषाटीका सहित। स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा नयी भाषाटीका सहित। न्यायदीपिका बंगानुवादसहित। प्रमेयरत्नमाला हिंदी बंगानुवादसहित। आप्तपरीक्षा सटीक विस्तृत हिंदी बंगानुवाद सहित। आप्तमीमांसा हिंदी बंगानुवाद सहित। मोक्षशास्त्र हिंदी बंगानुवाद सहित। जैनशिलालेख संग्रह हिंदी बंगानुवाद सहित। महावीरचरित्र संस्कृत तथा हिंदी, मराठी, बंगला ऐतिहासिकात्मक। आत्मानुशासन बंगानुवाद सहित। पुरुषार्थसिद्ध्युपाय हिंदी बंगानुवाद सहित। रत्नकरंडश्रावकाचार संस्कृत टीका व भाषाटीका सहित। द्रव्यसंग्रह हिंदी बंगानुवाद सहित। इत्यादि २ ग्रंथ क्रमसे छपते रहेंगे। यदि अन्य कोई ग्रंथप्रकाशक महाशय इन ग्रंथोंमेंसे कोई ग्रंथ छपावें तो कृपा करके हमें सूचना देकर

छपावें नहींतो इस धर्मसंस्थाको हानि पहुंचना संभव है।

नये ग्राहक बननेवाले ग्राहकोंके लिये नियम।

जो महाशय ५०) भेजकर इस संस्थाके स्थायी सभासद (सहायक) बनेंगे उनको प्रत्येक ग्रंथकी एक २ प्रति पोष्टेज मात्रके वी. पी. से ग्रंथ तैयार होतेही भेज दी जांयगी। जो महाशय १) एक रुपया डिपाजिटमें भेजकर स्थायी पक्के ग्राहकोंके रजिष्टरमें अपना नाम लिखा देंगे उनको ग्रंथ तैयार होते ही चुन्नीलालजैनग्रंथमालामें छपे हुए ग्रंथ आधे मूल्यसे और शेष सब ग्रंथ पौने मूल्यसे वी. पी. से भेज दिये जांयगे। परंतु सिर्फ एक २ प्रति ही भेजी जायगी। अधिक प्रतियोंके लिये प्रार्थनापत्र आनेपर स्वतंत्र नियम हमारी इच्छानुसार होगा और जो महाशय १) डिपाजिटका भेजकर अपना नाम रजिष्टरमें नहिं लिखावेंगे उनसे सब ग्रंथोंकी पूरी न्योछावर ली जायगी। अजैनी पात्र विद्वानों व अजैनी परीक्षा देनेवाले विद्यार्थियोंको प्रार्थनापत्र आनेपर उचित समझा जायगा तो सब ग्रंथ विना मूल्य भेजे जांयगे। संस्थाके सहायक भिन्न किसी भी जैनी व जैन संस्थाको कोई ग्रंथ विना मूल्य वा स्वतंत्र मूल्यसे नहि भेजा जायगा।

पचास २ रुपये देकर स्थायी मेंबर १०० से अधिक नहिं बनाये जांयगे ८० मेंबर हो चूके अब २० और लिये जांयगे। एक २ रुपये डिपाजिट लेकर पक्के ग्राहक कुल ४०० बनाये जांयगे। इससे अधिक नहिं बनाये जांयगे, अत एव जिनको जैसा सहायक बनना हो दीपावलीसे पहिले २ बन जांय। दीपावली तक उक्त संख्यावोंकी पूर्ति हो जाना संभव है प्रमाद करेंगे पीछे पछतावेंगे।

जैनसमाजका हितैषी दास-
पन्नालाल बाकलीवाले
महामंत्री-भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी-
संस्था पोष्ट-बनारस सीटी।

नोट–जैनसमाजकी यावतीय विद्योन्नतिकारक संस्थावोंकी सहायता पहुंचानेवाली व जैनमतकी नीव दृढ करनेवाली एक मात्र धर्मसंस्था है तो यही है। इसको श्रीयुत् पंडित पन्नालालजी आदिने बडे परिश्रमसे तीन वर्ष तक चलाई और बडे २ प्रभावशाली ग्रंथ छपाकर बंगाल युनिवर्सिटीमें जैनग्रंथ भरती कराकर बडा भारी काम करके दिखाया तो भी हमारे दानवीर सेठोंकी उदारता इस संस्थाके लिये कुंठित रही। जिससे इसके कार्याध्यक्ष प्रायः हताश हो चुके थे परंतु उक्त दौरेसे इसकी सफलता देख हमें बडा ही आनंद हुवा क्योंकि-सोलापुरनिवासी सेठ हरीभाई देवकरणजीवालोंने इस संस्थाकी उपयोगिता समझ इस डूबती हुई परमोपकारिणी संस्थाको हस्तावलंबन देकर संरक्षक बनकर स्थायी कर दिया सो

बहुतही उत्तम योग्य कार्य किया जिसके लिये हम उक्त सेठजीको कोटीशः धन्यवाद देते हैं। परंतु इस रीपोर्टपरसे हमें एक बड़ा भारी संदेह हो गया कि–उक्त सेठजीने पांच हजार रुपयोंसे केवल स्वतंत्र जैनग्रंथमाला ही निकालना स्वीकार किया है वा इस रकमके सिवाय १०–२० हजार रुपये और दे करके परमसंस्थापक व संरक्षकपना स्वीकार किया है। यदि उक्त ग्रंथमालाके लिये ५०००) रु. देनेके अतिरिक्त १०–२० हजार दूसरे देकर परमसंस्थापकता व संरक्षकताका महान पद स्वीकार किया है तो सेठजीने अपने नामानुसार बहुत उत्तम कार्य किया है। हम अहांतक अनुमान करते हैं आपने २०–२५ हजारकी सहायता देना ही स्वीकार किया होगा। आशा है कि श्रीमान् सेठ वालचंद रामचंदजी व हीराचंद रामचंदजी व श्रीयुत पंडित पन्नालालजी साहब हमारे वा जैनसमाज मात्रके इस संदेहको शीघ्र ही दूर करके आनंदित करेंगे।

संपादक।



કંઈ કમાયા કે ભાઈ ઘેરના ઘેર !

ઓહો! પર્યુષણ પર્વતો આવ્યાંએ ખરાં ને ગયાંએ ખરાં. વારૂ! ત્યારે એ લાવ્યા શું અને લઇ ગયાં શું? તેનો હિસાબ તમને બતાવું એ પર્વમાં વધ્યો તમારો ઉમંગ અને ભાવના! મળ્યાં પતાસાં બદામો અને શ્રીફળ! ત્યારે ગયું શું? તમારૂં વર્ષ દિવસનું એકત્ર કરેલું પાપનું પોટલું! પણ પાપનું પોટલું કંઇ પર્યુષણ પર્વ એમને એમ ઉપાડીને નહિં ગયું હોય હોં, એતો તમોએ એકાગ્ર ચિત્તથી, શુદ્ધ હ્રદયથી અને ભરપુર ભાવથી દાન, શીલ, તપ તથા પ્રતિક્રમણ વિગેરે ક્રિયાઓ કરી તમારાં પોટલાં ઢીલાં કર્યાં હશે ત્યારેજ પાપરૂપી દુર્વાસના ઓછી થઇ હશે, બાકી ઉપરની દેખાદેખીની લુખી ભક્તિ કરી હશે તો કંઇ નહિં, ભાઇ ઘેરના ઘેર !

⚜ ⚜ ⚜

ઉત્તમક્ષમા રાખજો !

વારૂ ! એ બધું તો ખરૂં, પણ આ તમારો વહાલો વિનોદી એક તસ્દી આપે છે કે મેં આ વર્ષમાં જો તમોને તમારૂં મન દુખાય એવું *કંઇ ચીતરી માર્યું હોય કે ભૂલમાં લખાઇ–બોલા*ઈ ગયું હોય તો તેને માટે તમારૂં પેટ મોટું કરી, મારી ઉપર ઉત્તમક્ષમા રાખશો અને મારા ને તમારા માનીતા 'દિગંબર જૈન' ને પણ ભૂલતા નહિં હોં !

⚜ ⚜ ⚜

મહાન ઉપકાર.

એ તો ઠીક ! પણ આ વર્ષમાં આપણને સંપાદકજી ભેટનાં સાત પુસ્તકો આપી ચુક્યા, તે બધાં તમોએ વાંચ્યા કે અભરાઇ ઉપર ધુળ ખવાડવા મુકયા છે? વાંચ્યા હશે તો તો સમજ્યા હશો કે સાગારધર્મામૃત તે જાણે એક

અમૃતનો ખજાનોજ છે. શ્રાવકપુત્રે તો જરૂર એ ગ્રંથ વાંચવોજ જોઇએ. આવાં ભારી ધાર્મિક શાસ્ત્રીય અને ક્રિયાના ગ્રંથો પુરા પાડી અધિપતિરાજ આપણા ઉપર ખરેખર મહાન ઉપકારનો અર્ઠીબરજ ચઢાવે છે કેની ! આવાં પુસ્તકો તો જૈન અજૈન જે વાંચે તેને મહાન લાભજ, થાય એમ નિઃશંક કહેવુંજ પડે. ખરેખર સંપાદકજી હદજ કરે છે. ગમે તેમ કરી ગમે તેમ લોકોને ગળે વાત ઉતારી આવું મહાન પુણ્યનું કામ કરી જૈન કોમને મિથ્યાત્વમાંથી ડૂબતી બચાવવા એકલે હાથે અનેક પ્રયત્નો કરે છે એ કાંઇ નાનું સુનું કામ છે ? એતો બા એજ કરે અને એજ ઉંઘ ઉજાગરા વેઠી, અટ્ટટ પરિશ્રમ વેઠી અંતથી આવાં કાર્ય કરે, બાકી મારા જેવા આળસુ ઠોઠ એકલપેટા અને ગાડી લાડીમાં મસ્ત શું કરે ?



અરે ! પણ આ મારો એક લખારો તો જાણે ઠીક ! પણ સંપાદક સાહેબ વળી પાછા હોણુ પણ ખાસ અંક કાઢવાના નગારાં વગાડી રહ્યા છે. બંદો તો વાંચીને ગજબજ થઇ જાય છે કે એ લઇ શું બેઠા છે ! એ દેવાળીઓ ધધો એમને પરવડે છે કેમ ? અને તેમાં વળી મોંઘવારી એટલે દુકાળમાં અધિક માસ, એકનો દોઢો ખરચ ! લાવશે ક્યાંથી ને આપશે કોણ ? પણ એ ફીકર કરવાનું વળી મારે શું કામ અને તમારે શું કામ ? સૌ લાવશેજ તો અને આવશેજ તો. બસો ચારસો ગ્રાહકો વધ્યા કે ખાડો પુરાયો. **મીયાં તુરા ને લેખાં પુરાં.** એ કુદાકુદ તમારા ઉપરજ છે કેની ? મહેનત કરીને ગ્રાહકો વધારી આપજોની એટલે થયું !



પણ એ ખાસ અંક તો જો મનીઓરડરથી લવાજમ મોકલશો તો જલ્દી મળી જશે નહિ તો વી૦ પી૦ ની ગાથાફોડમાં. એમને ઉતારશો તો મળશે મોડો ને પછી તમો વાંચવાને માટે ઉતાવળા થઇ તલપાપડ થયા કરશો તેમાં તમારૂં વળશે શું ? માટે જો વ્હેલો વાંચવો હોય તો એક ફેરો પોષ્ટ ઓફીસમાં ખાઇ લવાજમ જલ્દી મોકલી દો કે ખાસ અંકનો પોથો તૈયાર થયો કે તરત તમારા હાથમાં આવીને ઉભો રહે !



ઉંદરનો જીવ જાય, બીલાડીને હસવું થાય.

આપણા પવિત્ર તીર્થ સમેદશિખર અને અંતરીક્ષજીના કેસો હજી પણ પુરા થયા નથી અને વરસો થયાં લાખોનું પાણી થયાં કરે છે. શું આપણા પરમમિત્ર ! ઉજળા બંધુઓ હજી કાંઇ નહિજ સમજશે ! **"ઘર ફુટે ઘર જાય"** એવું આ તો થાય છે. એ બીલાડીની લડાઇમાં વાંદરાનું કામ થાય તેવો ખેલ ચાલી રહ્યો છે. વકીલ બારીસ્ટરો તમારા સકમાંઇના પૈસાથી તાજા બને છે અને તમારા નજીવાં ઝગડાનો કાગનો વાઘ થઇ લોકોને તમાશો જોવા જેવું થયું છે. પણ સમજે કોણ ! 'જ્યાં મમતરૂપી ભૂત ભરાયું હોય ત્યાં ન્યાયની વાતજ ક્યાં ! એકલાનેજ હજમ કરવું હોય ત્યાં તકરાર કેમ પતે ! અંતરીક્ષજીના કેસમાં. લવાદ નીમાયાનું સાંભળ્યું હતું પણ લવ.દોએ શું કર્યું તે પણ કાંઇ જણાયું નહિ. બસ ! કાંઇ નહિ, મમતમાં પાયમાલી બીજું શું !



ખુશ ખબર.

વાર ! પણ એક ખુશ વધાઇ મને મળી છે તે તમો સાંભળશો તો તમે પણ જરૂર ખુશજ થશો. આપણા સંપાદકજીએ હાલમાં **"જૈન વિજય"** નામનું છાપખાનું મોટા પાયાપર ખોલ્યું છે. અને તેમાં અંગ્રેજી, ગુજરાતી, હિંદી, મરાઠી વગેરે ભાષાનાં પુસ્તકો

વિગરે છાપવાનું કામ ધમધોકાર ચલાવવા માંડયું છે. કેમ ખુશ ખબર ખરી કે નહિ? તમારી અગવડો હવે દૂર થશે કે નહિ? ક્યાં છપાવીએ ને કયાં ખટપટ કરીએ એ વિચાર હવે મુકી દેવા પડશે "ઘેર બેઠા ગંગા" બસ! તમો જેવું ચાહો તેવું કામ ઘેર બેઠા છપાઇને તમારી પાસે તૈયાર આવીને ઉભું રહેશે. કેમ! ઠીક કે નહિં! ત્યારે હવે મદદ કરો અને એમના સાહસને ઉત્તેજન આપો. અન્યોન્ય મદદ કરવી એ મનુષ્યનું કર્તવ્યજ છે, પછી તો જેવી લાગણી!

"વિનોદી"

હાસ્યમંદિર.

કર્તા–રા. બા. રમણભાઈ મહીપતરામ તથા તેમનાં પત્ની સૌ વિદ્યાગૌરી બી. એ. આ પુસ્તકમાં **"હાસ્યરસ"** વિષેનો નિબંધ તથા હાસ્યરસિક લેખો–મનોરંજક વાર્તાઓ-સંવાદો વગેરે ૩૫ લેખો છે. ખાસ તૈયાર કરાવેલાં એ રમુજી ચિત્રો–ડેમી આઠપેજી પૃષ્ઠ ૨૫૦ ઉપર, પુંઠું સોનેરી નામનું પાકુ- **કિંમત રૂ. દોઢ. જ્ઞાનવર્ધકપુસ્તકમાળાના ગ્રાહકોને મ.ટે બાર આના છે. "જ્ઞાનવર્ધક પુસ્તકમાળા."** ના નિયમો મંગાવી વાંચો અને તેના ગ્રાહક થઈ આ પુસ્તક **અર્ધી કિંમતે એટલે માત્ર બાર આને** મેળવો. વિ. પી. પોસ્ટેજના ૦–૩–૦ જુદા. મળવાનું ઠેકાણું:-

જીવનલાલ અમરશી મહેતા.
મેનેજર–પીરમશારોડ,–અમદાવાદ.

पर्युषण पर्व.

આ વર્ષે નીચેના સ્થળોએ પર્યુષણ પર્વ નીચે મુજબ ઉજવાયાના સમાચાર અમોને મળ્યા છે.

વડોદરા–શ્રીયુત્ નાનચંદ પુંજાભાઇ જણાવે છે કે, આ પર્વ રાબેતા મુજબ ઉજવાઇ પૂજન, શાસ્ત્રવાંચન થઇ જલયાત્રાનો વરઘોડો નીકળ્યો હતો તેમજ બન્ને પાઠશાળાનો વાર્ષિક મેળાવડો વદ ૧ને દિને શા. સુંદરલાલ વીરચંદના પ્રમુખપદે થયો હતો જેમાં સામાન્ય તથા ધાર્મિક કેળવણી, પર્યુષણ પર્વનાં કર્તવ્યો, ગૃહકેળવણી વગેરે વિષયો ઉપર અનેક વ્યાખ્યાનો થઇ રાત્રે ૧૧॥ વાગતે સર્વે પાનગુલાબ લઇ એક બીજા સામે ઉત્તમક્ષમા યાચી છુટા પડયા હતા. વળી નવીપોળના મંદિરનો જળયાત્રાનો વરઘોડો પણ સારા ઠાઠમાઠથી નીકળ્યો હતો.

ચોપડા—બ્ર. હેમસાગરજી જણાવે છે કે અત્રે સુખસાતાથી પર્યુષણ પર્વ વ્યતીત થયો છે. પુષ્પાંજલી વ્રત, ષોડશકારણ, અનંતવ્રત પાંચ સાત જણે કર્યાં હતાં. રોજ શાસ્ત્ર વંચાય છે. અત્રે હુમડના ૨૦ ઘર છે તથા ગોલાલારાના ૧૦ ઘર છે તે લોકો સમૈયા એટલે તારનપંથી છે તે પ્રતિમા માનતા નથી. ફક્ત શાસ્ત્રને માને છે તેમને ગુરુ કોઇ નથી. કોઇ કોઇ દર્શન કરવા પણ આવે છે.

લાકરોડા—શા. રેવચંદ હેમચંદ જણાવે છે કે આ પર્વ ૫–૮–૧૧–૧૪ પાખી પળાઇ હતી. જળયાત્રા નીકલી હતી. શાસ્ત્રસભા પૂજા પ્રભાવના પણ થતાં હતાં.

અમદાવાદ-માસ્તર શંભાશંકર જણાવે